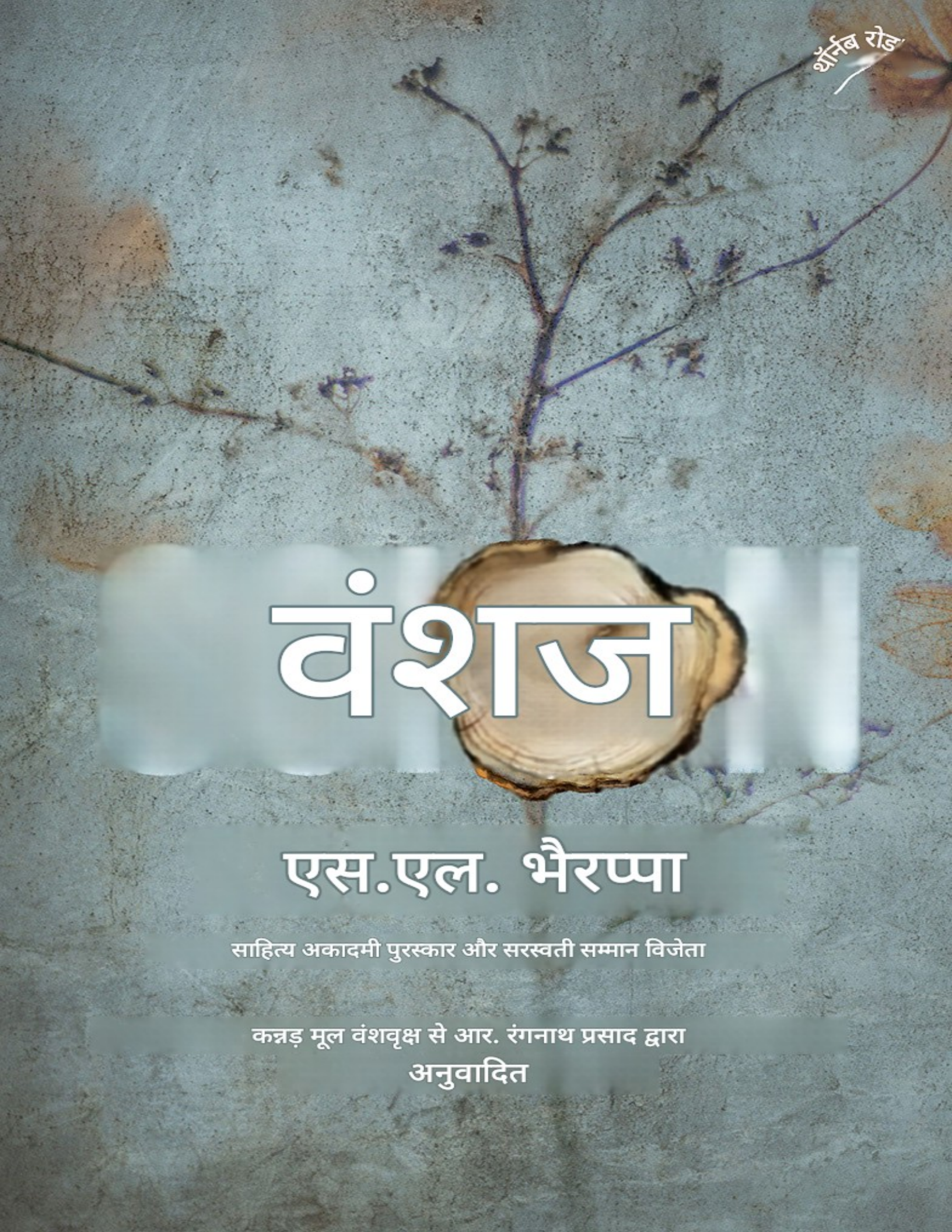

वंशज

एस.एल. भैरप्पा

साहित्य अकादमी पुरस्कार और सरस्वती सम्मान विजेता

कन्नड़ मूल वंशवृक्ष से आर. रंगनाथ प्रसाद द्वारा
अनुवादित

Table of Contents

कवर पृष्ठ
ढकना
शीर्षक पेज
कॉपीराइट
अंतर्वस्तु
प्रस्तावना
अनुवादक के नोट्स
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17
अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22

अध्याय 23
अध्याय 24
अध्याय 25
अध्याय 26
शब्दावली
आभार

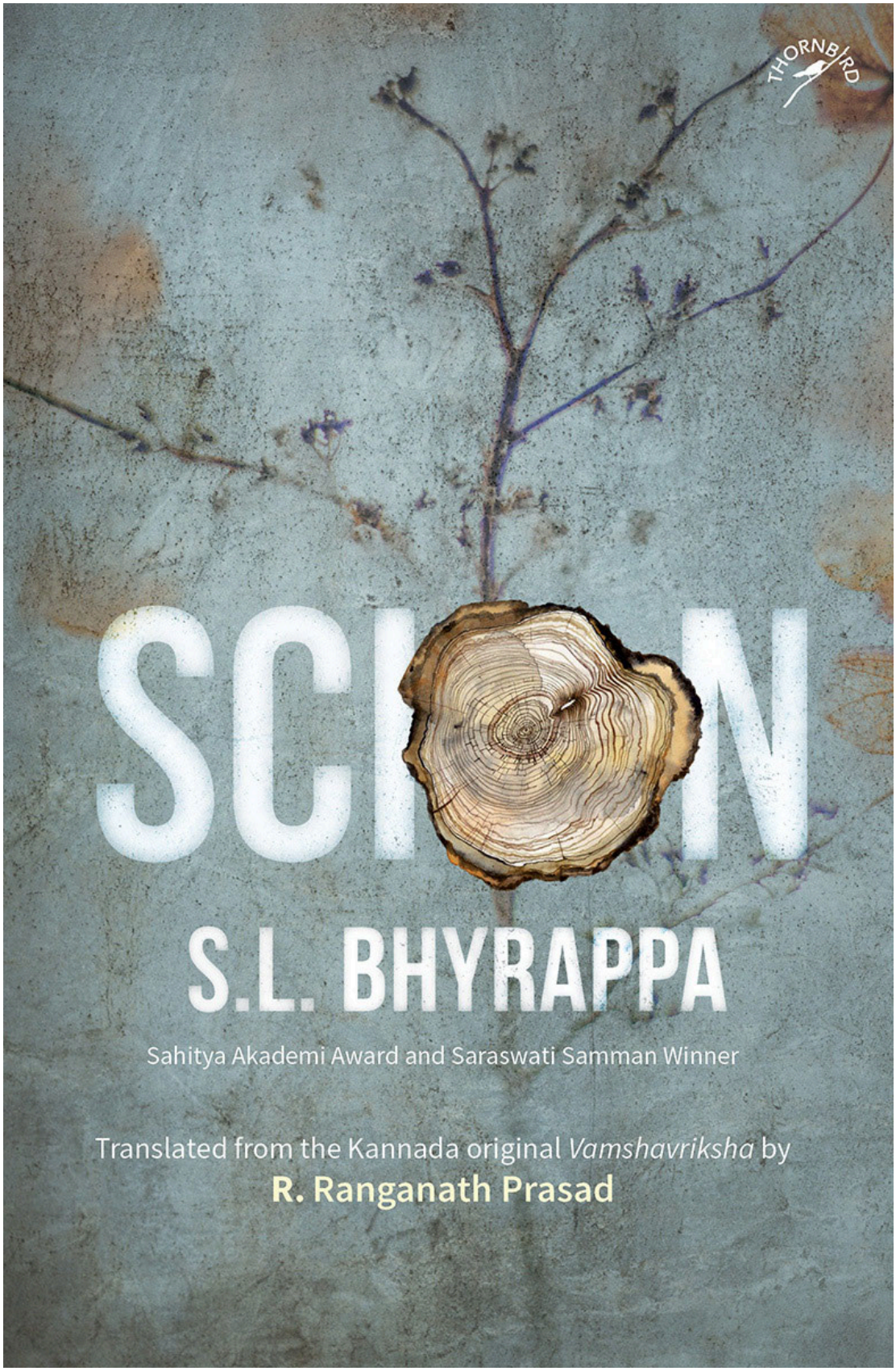
THORNBIRD
SCION
S.L. BHYRAPPA
Sahitya Akademi Award and Saraswati Samman Winner
Translated from the Kannada original *Vamshavriksha* by
R. Ranganath Prasad

SCION

S.L. BHYRAPPA

Sahitya Akademi Award and Saraswati Samman Winner

Translated from the Kannada original *Vamshavriksha* by

R. Ranganath Prasad

THORNBIRD

NIYOGI BOOKS

NIYOGI BOOKS

द्वारा प्रकाशित
ब्लॉक डी, भवन संख्या 77,
ओखला औद्योगिक क्षेत्र, चरण-I,
नई दिल्ली-110 020, भारत
दूरभाष: 91-11-26816301, 26818960
ईमेल: niyogibooks@gmail.com
वेबसाइट: www.niyogibooksindia.com

पाठ © एस.एल. भैराप्पा
अनुवाद © आर. रंगनाथ प्रसाद

Editor: Vibha Chakravarty Kumar
Design: Shashi Bhushan Prasad
कवर: पिनाकी डे

ISBN: 978-93-91125-02-8
प्रकाशन: 2023

यह एक काल्पनिक रचना है। इसमें वर्णित नाम, पात्र और घटनाएँ लेखक की कल्पना की उपज हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति और सहमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक रूप से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली शामिल है, पुनरुत्पादित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

मुद्रित: नियोगी ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत

शास्त्रीय साहित्य की तरह
पूरी दुनिया में, भैराप्पा का
एससीओएन यह भी दर्शाता है कि
अचूक और अपरिवर्तनीय
मानवीय भावनाएँ हैं
समय के साथ एकरूप

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना
अनुवादक के नोट्स
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12

अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17
अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22
अध्याय 23
अध्याय 24
अध्याय 25
अध्याय 26
शब्दकोष
स्वीकृतियाँ

प्रस्तावना

लेखक की मूल प्रस्तावना से:

इस उपन्यास को लिखते समय, मैं इस बात पर विचार कर रहा था कि 'साहित्यिक खोज' क्या होती है।
मेरे मन में कुछ अवचेतन विचार थे जिन्होंने मेरी रचनात्मकता को दिशा दी।
मैंने उन्हें पुनः प्राप्त किया और उन्हें वैचारिक स्पष्टता के साथ एक निबंध में लिखा जिसका शीर्षक था
'साहित्य और मूल्यों की धारणा।'

उनके एक भाषण से:

लेकिन यह उपन्यास उन सभी मानदंडों से परे है।
और यह केवल चित्रण है
एक विशिष्ट स्थानिक-कालिक भारतीय ईडोस।

अनुवादक की टिप्पणी

इस उपन्यास और उनके अन्य उपन्यासों में भी पात्रों के विचारों को व्यक्त करते समय, डॉ. एस.एल. भैराप्पा की यह विशेषता है कि वे उनके मन में उठने वाले प्रतीत होने वाले भिन्न-भिन्न विचारों को एक ही वाक्य में निरंतर पिरो देते हैं। यद्यपि इस 'चेतना प्रवाह' के घटक अर्थ की दृष्टि से लगभग पूर्ण हैं, फिर भी वाक्य रचना की दृष्टि से वे अधिकतर अपूर्ण हैं, संभवतः श्रृंखला के अंतिम भाग को छोड़कर। इस प्रकार संरचित वाक्यों का अनुवाद करते समय, 'प्रवाह' को बनाए रखने और उसे कई वाक्यों में विभाजित करने के बीच संतुलन बनाए रखने का ध्यान रखा गया है ताकि समझने में कोई बाधा न आए। मैंने यह सुनिश्चित किया है कि पहले वाले उदाहरण अंग्रेजी भाषा की विशिष्टता के अनुरूप हों, इसलिए पाठकों के मन में कोई भ्रम नहीं होगा और अर्थ का कोई नुकसान नहीं होगा।
इस लेखक की साहित्यिक शैली की एक और विशेषता यह है कि इसमें वास्तविकता, लेखक का दृष्टिकोण और पात्रों के विचार/भाषण[1] को एक ही वाक्य में समाहित किया गया है। यहाँ भी, मैंने इस शैली को चुनिंदा रूप से ही रखा है। जहाँ कहीं भी इसे रखा गया है, वह समझने में बाधा नहीं डालता। मैं जानता हूँ कि इस प्रकार की संरचना वैध नहीं है, लेकिन मुझे यहाँ यह दो कारणों से उचित लगती है: पहला, यह विज्ञान का कार्य नहीं है, और दूसरा, यह पाठक को उसी प्रकार सौंदर्यबोध प्रदान करता है जिस प्रकार मूल रचना सफलतापूर्वक करने का प्रयास करती है।
नियमानुसार, उपन्यास में शब्दावली जैसी कोई अतिरिक्त सामग्री नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बार-बार उनका संदर्भ लेना पठन-पाठन में बाधा उत्पन्न करेगा। लेकिन यह कहानी भारतीय जीवनशैली के समृद्ध और पारंपरिक परिवेश में रची गई है। अतः, भारतीय परंपरा से संबंधित दार्शनिक और सांस्कृतिक शब्दावलियों की एक शब्दावली (संदर्भतः समझने योग्य शब्दावलियों को छोड़कर) पुस्तक के अंत में जोड़ी गई है।

1. भारतीय काव्यशास्त्र में साहित्यिक अभिव्यक्तियों के तीन प्रकारों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।

अध्याय 1

1

जैसे संगीत धीमी गति से शुरू होकर धीरे-धीरे ऊँचा उठता है, और जैसे ध्वनि की गति अंततः लय की गतिशील गति में परिणत होती है, वैसे ही शांत कपिला नदी, एक बार, अपनी चरम शक्ति तक पहुँचने तक उफान मारती रही। 1924 की भीषण बाढ़ ने नंजनगुड (उच्चारण नंजनगुड) में उसके प्रवाह को पूरी तरह से बिगाड़ दिया। कपिला का रंग, जो पहले हल्का सफेद हुआ करता था, अब भयानक लाल हो गया था। मानो पागलपन से ग्रस्त होकर, कपिला पाँच दिनों तक लगातार उग्र रूप से उफान मारती रही और साथ ही अपना विस्तार भी बढ़ाती रही, जिससे नंजनगुड के लोग दहशत में आ गए। उसकी उग्रता मानो अपने गर्भ को पूरी तरह से शुद्ध करने की इच्छा से उपजी थी। किसी को भी इस बात का स्पष्ट अंदाजा नहीं था कि उसके कारण कितने लोग हताहत हुए, कितनी इमारतें ढह गईं और कितने परिवार बेघर हो गए। शहर के लोगों ने नदी द्वारा मचाई गई तबाही के लिए उसे कोसा, लेकिन श्रीनिवासा श्रोत्री ने ऐसा कुछ नहीं किया। एक मंत्र का जाप करते हुए, जिसमें सभी जल को वस्तुतः पवित्र गंगा, यमुना आदि घोषित किया गया था, उन्होंने मुख्य द्वार की चौखट पर विधिपूर्वक स्वयं को उसमें डुबो दिया था।

बाढ़ का पानी उतरने के बाद, उनके पड़ोसियों ने अपने क्षतिग्रस्त घर छोड़ दिए और धीरे-धीरे नदी के किनारे से ऊपर की ओर बसी एक बस्ती में नए घरों में चले गए। इसके परिणामस्वरूप, स्कूल लेन, नारायण-राव परिसर और मंदिर के आसपास की बाज़ार सड़क—जो आज भी मौजूद हैं—की प्रमुखता कुछ कम हो गई। लेकिन श्रीनिवासा श्रोत्री के लिए, अपने पारंपरिक पैतृक घर को छोड़कर एक नए घर में जाना मानसिक

रूप से असंभव था। उनके घर में पानी केवल टखनों तक ही डूबा था। उनके आठ वर्षीय बेटे नंजुंडा, पत्नी भागीरथम्मा और घर में रहने वाली नौकरानी लक्ष्मी ने उनसे कहा कि बेहतर होगा कि वे घर छोड़ दें, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं मानी। क्या सिर्फ इसलिए कि हमारी माँ एक बार गुस्से में आ गई, हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए कि उन्होंने अब तक हमारा कितना ख्याल रखा है और उनसे मुँह मोड़ लेना चाहिए? वे पैलेस रोड स्थित उसी घर में रहते रहे। उन्होंने महिलाओं से ऊपरी मंजिल पर जाने और वहाँ रसोई में चूल्हा जलाने को कहा।

बाढ़ का पानी उतर गया। संगीत की लय धीमी होने के बाद भी जो शांत गूंज बनी रहती है, ठीक उसी तरह नदी का प्रवाह सामान्य हो गया। मानो यह नदी के जीवन का नियम हो, वह हर साल जून और जुलाई में उफान मारती थी और बाकी समय शांत रहती थी। बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र हर साल बुरी तरह तबाह होते जा रहे थे। अफसोस, तबाही नदी की नहीं थी!

कुछ वर्ष बीत गए। श्रीनिवासा श्रोत्री के पुत्र नंजुंडा श्रोत्री बड़े हो गए। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे मैसूर चले गए। उनका विवाह कात्यायनी से हुआ, जिनसे उनके माता-पिता बहुत स्नेह करते थे। नवविवाहित दंपति के घर जल्द ही एक पुत्र का जन्म हुआ। जब यह बच्चा छह महीने का था, उसी वर्ष जून में कपिला नदी की बाढ़ में नंजुंडा श्रोत्री डूब गए। वे तैरने में निपुण थे। और इस युवक के हाथ-पैर भी कमजोर नहीं थे। वे अपने पिता की तरह लंबे थे, उनकी भुजाएँ भी लंबी थीं। उनका माथा हथेली जितना चौड़ा था। वे मांसल और निर्मल थे। लेकिन उफनती नदी के प्रचंड प्रवाह का सामना कौन कर सकता है? वे उस उफनती नदी में तैरने नहीं गए थे। वे स्नान करने के लिए मणिकर्णिका डेक की सीढ़ियों से सावधानीपूर्वक नीचे उतरे थे, तभी वे पानी में फिसल गए। किनारे तक पहुँचने के उनके सभी प्रयास विफल रहे। किनारे पर खड़े लोगों ने उन्हें पुकारा। उन्होंने भी चिल्लाकर उनका अभिवादन किया। लेकिन वह पल भर में एक भयंकर भंवर में समा गया। किसी को भी शव देखने का सौभाग्य नहीं मिला। उसके सेवकों ने नदी के दोनों किनारों पर टी-नरसिपुरा तक उसकी तलाश की। लेकिन शव का कोई निशान नहीं मिला। उसकी मृत्यु के पाँच दिन बाद बाढ़ का पानी उतर गया। अंतिम संस्कार की रस्में उसी नदी के किनारे संपन्न हुईं।

छह महीने बीत गए।

इन दोनों में से कौन सा दर्द ज़्यादा गंभीर है—अपने इकलौते बेटे को जवानी में खोने वाले ममतामयी माता-पिता का दर्द, या फिर बीस साल की उम्र में अपने प्यारे पति को खोने वाली पत्नी का दर्द? एक दर्द की तीव्रता का आकलन दूसरे के आधार पर करना लगभग नामुमकिन है। अपने इकलौते बेटे की मृत्यु के कारण भागीरथम्मा एक महीने के भीतर ही बूढ़ी हो गईं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे अपने बेटे की मृत्यु पर शोक मनाएं, अपनी जवान बहू के विधवा होने पर विलाप करें, या अपने नन्हे पोते की रुक-रुक कर खिलखिलाती हंसी देखकर फूट-फूट कर रोएं। वे बस रोती रहीं। जब भी उन्हें अपने बेटे की याद आती, वे अपने पोते को गोद में उठा लेतीं। उनके आंसू और भी ज़्यादा बहने लगते। पास में खड़ी उनकी बहू भी सिसकने लगती। खुद को हिम्मत देते हुए, बुज़ुर्ग महिला अपनी बहू के पास जाती और उसे दिलासा देतीं। लेकिन नन्हा पोता अपनी खिलखिलाती हंसी नहीं छोड़ता, मानो उसे खुशी हो या दुख। दरअसल, उस शिशु ने ही दोनों महिलाओं—दादी और मां—को शांत किया!

एक दोपहर, कात्यायनी ऊपरी मंजिल के कमरे में पालने के पास बैठी थीं। बच्चा पालने में सो रहा था। उनका मन एकाग्र हो गया था, जैसे कोई ज़मीनी घोंघा अपने खोल में सिमट जाता है, और वे अपने वैवाहिक जीवन की घटनाओं पर गहराई से विचार कर रही थीं। उनकी शादी को अभी दो साल ही हुए थे। एक ऐसा पति जिसे वे बहुत पसंद करती थीं और जो उनसे बहुत प्यार करता था, प्रतिष्ठित सास-ससुर, एक नन्हा सा बच्चा जो पूरे घर को चाँदनी की तरह रोशन कर देता था—एक ऐसा परिवार जिसमें कोई भी स्त्री संतुष्ट होकर रहना चाहेगी। उनके ससुर की शिष्टता और वेदों एवं शास्त्रों के गहन ज्ञान ने लोगों के मन में परिवार के प्रति सम्मान पैदा कर दिया था। उनके पति का सदा तेजस्वी चेहरा और प्रेममयी स्वभाव उन्हें हमेशा मोहित कर लेता था। 'मुझे और क्या चाहिए,' उन्होंने उत्साह से खुद से कहा था। छह महीने पहले, एक दिन कपिला ने उनके सुखी परिवार को तहस-नहस कर दिया था। तब से उसने जितने आंसू बहाए हैं, उनकी मात्रा कपिला द्वारा धरती पर बरसाए गए जल से कम नहीं है। कभी-कभी वह जीवन के बारे में चिंतन करने लगती थी। लेकिन वह इतनी विद्वान नहीं थी कि बहुत कुछ समझ सके। कात्यायनी ने इंटरमीडिएट से आगे की पढ़ाई भी नहीं की थी। उसने उपन्यासकारों और निबंधकारों द्वारा जीवन पर लिखे गए लेख पढ़े थे। उसे लगता था कि उनमें से कोई भी उसकी विपत्ति का कारण स्पष्ट नहीं कर सकता।

उसे सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी। उसने गर्दन उठाकर देखा; वह उसके ससुर थे। उसने अपनी नज़र नीचे कर ली और पालना झुलाने लगी, इस बात की परवाह किए बिना कि कहीं बच्चा नींद से जाग न जाए। श्रोत्री सीढ़ियाँ चढ़ते हुए भी विचारों में डूबे हुए थे। उन्होंने अपनी बहू की तरफ देखा तक नहीं। वे सीधे उसी मंजिल के दूसरे कमरे की ओर चल पड़े। वह कमरा उनका पुस्तकालय था, जिसमें बर्च की छाल से लिखी कई पांडुलिपियाँ, छपी हुई किताबें और कुछ ऐसी किताबें थीं जिनकी उन्होंने नकल बनाई थी। एक शेल्फ में भुने हुए बाजरे से बनी घर की स्याही और कलम रखे थे। उसके नीचे फर्श पर बैठने के लिए बाघ की खाल की एक बड़ी चटाई बिछी थी, और उस पर दीवार के सहारे टेक लगाने के लिए एक तकिया रखा था। तकिए के सामने एक तह करने योग्य पुस्तक-पीठिका रखी थी। उस पर एक खुली किताब रखी थी। तीस वर्षों से अधिक समय से वे यहाँ वेदों, शास्त्रों, पुराणों, धर्मशास्त्र और आयुर्वेद का अध्ययन करने में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। पुत्र के निधन के दिन से लेकर अंतिम संस्कार तक वे यहाँ नहीं आए—यहाँ तक कि उसके बाद कुछ महीनों तक भी नहीं। वे अपनी पत्नी और बहू के साथ रहकर उन्हें सांत्वना देते रहे। अब उन्होंने अपनी दिनचर्या फिर से शुरू कर दी है। उनकी पत्नी हमेशा घर की नौकरानी लक्ष्मी के साथ रहती हैं। घर की वरिष्ठ महिला अपने पुत्र को याद करके बस रोती रहती हैं। लक्ष्मी, जो अपनी मालकिन के समान उम्र की थीं, चुपचाप शोक मनाती रहीं। कभी-कभार, श्रोत्री अपनी शोकग्रस्त बहू से मिलने का बहाना ढूंढ लेते थे। युवा कात्यायनी अपने पति की याद में गहरे शोक में डूबी रहती थीं। लेकिन उन्होंने अपने ससुर को एक भी आंसू बहाते नहीं देखा। वे जानती थीं कि वे पत्थर दिल नहीं थे। फिर भी, उसकी सहनशीलता की गहराई उसकी समझ से परे थी।

बच्चा शाम पांच बजे तक सोता रहता था। पालने के पास या कहीं और बैठी कात्यायनी अपने असहनीय शोक में डूबी रहती थी। तभी दूर से किसी ने उसे पुकारा, 'बच्ची', लेकिन असल में उसके ससुर उसके ठीक पीछे थे। कात्यायनी उस दिशा में मुड़ी जहाँ से आवाज़ आई थी। श्रोत्री, जो सीढ़ियों की ओर जा रहे थे, वापस उसकी ओर आए और उसके पास एक खंभे के पास बैठ गए। वह खड़ी हो गई। 'बैठो बच्ची,' उन्होंने कहा। चुपचाप कात्यायनी बैठ गई। वह अपने ससुर से बात करने में ज़रा भी संकोच नहीं करती थी। जब से वह इस घर में बहू बनकर आई थी, उनके बीच पिता-पुत्री जैसा सौहार्दपूर्ण रिश्ता था। लेकिन अपने पति की मृत्यु के बाद से वह शायद ही किसी से बात करती थी। श्रोत्री ने पूछा, 'बच्ची, क्या तुम मेरी सलाह पर भगवद्गीता का पाठ कर रही

हो?' उसने न तो सिर उठाया और न ही कोई जवाब दिया। दो मिनट बाद जब उसने वही सवाल दोबारा पूछा, तो उसने कहा, 'मैंने इसे पढ़ने की कोशिश की, लेकिन मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। मैं ध्यान भी नहीं लगा पा रही हूं।'
'चाहे आपको कितना भी समझ आए, इसे पढ़ते रहिए। धीरे-धीरे आप इसे समझ जाएंगे।' एक मिनट की चुप्पी के बाद उन्होंने कहा, 'भगवद्गीता में वर्णित दर्शन मेरी समझ से परे है। कोई भी वेदांत मेरे दुःख को कम नहीं कर सकता। इसे पढ़ने का क्या लाभ?'
उदासी भरी मुस्कान के साथ, श्रोत्री ने सांत्वना भरे स्वर में कहा, "यह सच है कि हमें अपने दुखों को स्वयं ही सहना पड़ता है। कोई ग्रंथ, कोई भी हमें इससे मुक्ति नहीं दिला सकता। लेकिन इन ग्रंथों से आपको इस विशाल संसार में घटित होने वाली घटनाओं के सामने हमारे दुख की तुच्छता का पता चलेगा। तब हमारे शोक को कुछ हद तक नियंत्रित करना आसान हो जाता है। इसलिए, कृपया इनका अध्ययन करने में रुचि दिखाएँ।"
जब श्रोत्री ने यह कहा, तो पालने में लेटा बच्चा जाग गया। वह रोने लगा। श्रोत्री ने कहा, 'इसे चुप कराओ और मेरे पास लाओ,' और सीढ़ियों से नीचे उतर आए। कात्यायनी ने शिशु को पालने से उठाया और उसे दूध पिलाने लगीं। अपनी माँ की गोद में लेटा हुआ, बच्चा दूध पीते-पीते चुप हो गया। दूध पिलाते समय, वह अपने पति को याद करतीं और बच्चे को अपने सीने से लगा लेतीं। उन्हें कुछ राहत मिलती।
जब उसका पेट भर गया, तो बच्चा खेलने लगा। अपनी माँ के गले का हार नाखूनों से खींचते हुए और माँ के चेहरे को निहारते हुए वह मुस्कुराया। पहली बार वह इतनी ज़ोर से हँसा कि घर के हर कोने में सुनाई दिया। यह सुनकर दादाजी ने नीचे से पुकारा, 'चीनी।'
कात्यायनी ने उसे गोद में उठाया और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। दादाजी, जो नीचे बैठक में चहलकदमी कर रहे थे, उन्होंने उसे उठाया, अपने कंधों पर बिठाया और पिछवाड़े में बने पशुशाला में ले गए। कात्यायनी रसोई की ओर चल पड़ी। उसकी सास खाना बना रही थी। कात्यायनी अंदर गई और वहीं खड़ी हो गई। उसे देखकर बुज़ुर्ग महिला बोली, 'बेटी, तुम्हें अकेले नहीं रहना चाहिए। जितना तुम चुप रहोगी, उतना ही तुम्हारा मन उन चिंताओं में उलझता रहेगा। मेरे या लक्ष्मी के साथ रहो। कुछ न कुछ बातें करती रहो। रसोई का कचरा पशुशाला में बने चरनी में डाल दो, या बछड़ों को कुलथी का रस पिला दो, या कोई और काम कर लो।' वह मिट्टी के चूल्हे की ओर मुड़ी

और उबलते पानी में अरहर दाल डाली। उसने करी बनाने के लिए दूसरे चूल्हे पर एक बर्तन रखा और जिस चूल्हे पर चावल लगभग पक चुके थे, उसकी आँच को हल्का सा बुझा दिया। 'आँच पर नज़र रखना। अगर अरहर दाल उबलने लगे, तो मुझे पूजा कक्ष में बुला लेना।' मैं उनकी पूजा की व्यवस्था कर दूंगी और जल्दी ही आपके पास आ जाऊंगी। उनकी शाम की पूजा का समय हो गया है और वे किसी भी क्षण यहाँ आ सकते हैं।' अपनी बहू को कुछ आसान काम सौंपकर भागीरथम्मा पूजा कक्ष की ओर चल पड़ीं।

3

श्रोत्री ने जब तक अपना संध्यावंदन और पूजा पूरी की, तब तक रात के 8 बज चुके थे। संध्यावंदन के लिए अर्पण किए गए जल से भरा पात्र लेकर वे पिछवाड़े में केले के पेड़ की क्यारी में जल डालने गए। पूजा कक्ष में लौटते समय कात्यायनी ने उन्हें पुकारा, 'मैसूर से डॉ. सदाशिव राव आए हैं। वे बैठक कक्ष में बैठे हैं।'
'वह कब आया?'
'लगभग दो घंटे पहले। आपने तब अपना संध्यावंदन शुरू ही किया था।'
वेद मंत्रों का पाठ बंद करते हुए, श्रोत्री ने पूजा कक्ष में पात्र रखे और बाहर निकल गए। डॉ. सदाशिव राव लगभग 35 वर्ष के थे और उनका शरीर सामान्य कद-काठी का था। वे चश्मा पहनते थे और उनके काफी बाल सफेद हो चुके थे। उन्हें पहनावे का ज्यादा शौक नहीं था। बैठक कक्ष में कुर्सी पर बैठे वे संस्कृत की पुस्तक में मग्न थे। श्रोत्री के बोलकर उनका ध्यान आकर्षित करने पर ही उन्होंने पुस्तक से अपनी नज़रें हटाईं।
'मुझे पता चला है कि आप काफी देर से आए हैं। आपको इंतज़ार कराने के लिए क्षमा करें।'
'एक वरिष्ठ नागरिक होने के नाते, आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। मेरे पास कोई और काम नहीं है। मैं यहां फुर्सत में घूमने आया हूं।'
श्रोत्री एक कुर्सी पर बैठ गई और बोली, 'मैं आपकी किताब की प्रगति के बारे में जानने के लिए उत्सुक हूं।'
'इसे लंदन के एक प्रकाशक ने प्रकाशित किया है। मैं आपको इसकी एक प्रति देने आया हूँ।' उन्होंने अपने बैग से 'प्राचीन भारतीय राजनीति की धार्मिक नींव' शीर्षक वाली एक मुद्रित अंग्रेजी पुस्तक निकाली और विनम्रतापूर्वक श्रोत्री को दे दी। यह 100 पृष्ठों

की पुस्तक थी और इसका लेआउट उत्तम था। श्रोत्री ने इसे लिया और मुखपृष्ठ पलटा। शीर्षक पृष्ठ पर कन्नड़ भाषी हस्ताक्षर में लिखा था, 'आदरणीय श्री श्रीनिवास श्रोत्री-सदाशिव राव को सादर प्रणाम।'
'वह श्रद्धा अतुलनीय है,' श्रोत्री ने कहा।
'एक तरह से, आप इस शोध प्रबंध के मार्गदर्शक हैं। मैंने आपसे ही इसमें शामिल बहुत कुछ सीखा है। आपने मेरी कई शंकाओं को दूर किया है। मैंने प्रस्तावना में भी इसका उल्लेख किया है।'
श्रोत्री को अंग्रेज़ी का ज़्यादा ज्ञान नहीं था। वे बस कुछ काम चला लेते थे—बैंक का चेक लिखना, डाक लिफ़ाफ़ों पर पते लिखना, आदि। उन्होंने कहा, 'आपने इतनी बड़ी किताब लिखी है। मैं इसे पूरी तरह पढ़ नहीं सकता। मेरी बहू पढ़ लेगी।' उन्होंने किताब को बैठक में सबसे ऊपर वाली अलमारी में रखते हुए डॉ. राव को एक तौलिया दिया और कहा, 'आइए, अपने पैर धो लीजिए। पहले हम खाना खा लेते हैं, फिर आराम से इस पर चर्चा करेंगे।'
रसोई और पूजा कक्ष के बीच के गलियारे में फर्श पर बैठकर उन्होंने भोजन किया; भागीरथम्मा ने भोजन परोसा। कुछ निवाले लेने के बाद, सदाशिव राव ने अचानक पूछा, 'नंजुंडा श्रोत्री कहीं नज़र नहीं आ रहे। वे कहाँ हैं?'
एक पल के लिए विचलित होने के बावजूद, श्रोत्री ने शांत भाव से कहा, 'भोजन समाप्त होने के बाद बात करते हैं। मैं आपको सब कुछ बता दूंगी।'
डॉ. राव, श्रोत्री के दिवंगत पुत्र के शिक्षक थे। जब कनिष्ठ श्रोत्री बीए कर रहे थे, तब वे उन्हें इतिहास पढ़ाते थे। इसी शिष्य के माध्यम से उनकी मुलाकात कनिष्ठ श्रोत्री से हुई और उन्होंने उनकी विद्वत्ता का लाभ उठाया। श्रोत्री की बातों ने राव के मन में कुछ शंकाएँ पैदा कर दीं। जब वे शाम को पहुँचे, तो कात्यायनी ने द्वार पर उनका स्वागत किया; वे उनकी शादी में शामिल हुए थे। उसके बाद अपनी कुछ मुलाकातों में उन्होंने उनसे कुछ बातें की थीं। उन्होंने बिना किसी झिझक के जवाब दिया था। लेकिन आज, सिर झुकाए, उन्होंने बस उन्हें बैठने के लिए कहा और बताया कि उनके ससुर ने अभी-अभी अपनी शाम की पूजा शुरू की है और लगभग एक घंटे में समाप्त हो जाएगी। इसके बाद वे घर के भीतर चली गईं। उस धुंधले समय में उनका चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था।
रात के खाने के बाद, वे दोनों बैठक कक्ष में लौट आए और पानदानी को अपने बीच रखकर आमने-सामने बैठ गए। श्रोत्री ने कहा, 'मैंने पान खाना छोड़ दिया है। आप इसे

खा लीजिए।' तब राव ने अपने लिए चार पान के पत्ते निकाले। उन्हें चबाते हुए उन्होंने पूछा, 'नंजुंडा श्रोत्री स्टेशन पर क्यों नहीं हैं?'
'नहीं, कपिला तुम्हारे शिष्य को ले गया। वह पिछले जून में नदी में गिर गया था। वह कभी किनारे पर नहीं लौट पाया,' श्रोत्री ने शांत स्वर में कहा।
डॉ. राव यह खबर सुनकर स्तब्ध रह गए। उन्हें इस पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। वे बस सरोत्री को देखते रहे, जिन्होंने उसी शांत स्वर में अपनी बात जारी रखी। "आपके शिष्य की इस घटना से आपको बहुत दुख हुआ है। लेकिन सब कुछ सहजता से स्वीकार करना होगा। उनकी पत्नी और एक साल का बेटा है। आपको यही दुआ करनी चाहिए कि उनके बच्चे को आप जैसा शिक्षक मिले। खैर, आपकी क्या योजना है? आप जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को ही आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए हमारे पूर्वजों के जीवन पर प्रवचन देना चाहिए। वैसे, क्या आपको यहां आए हुए लगभग डेढ़ साल नहीं हो गया है?"
राव श्रोत्री के चरित्र का बहुत सम्मान करते थे, यह तो निश्चित था। लेकिन उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि पुत्र के असमय निधन के गहरे दुःख के बावजूद वे इतने संयमित रह सकते हैं। उनके शब्दों से यह समझते हुए कि श्रोत्री अपने पुत्र के दुर्भाग्य के बारे में चर्चा करने के इच्छुक नहीं थे, राव ने कहा, "इस कार्य ने मुझे बड़ी सफलता दिलाई है। यूरोपीय देशों के विद्वानों ने इसकी प्रशंसा करते हुए मुझे पत्र लिखे हैं। लेकिन मैं केवल इसी एक कार्य से संतुष्ट नहीं हूँ। प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था की धार्मिक नींव पर शोध करते समय मुझे यह ज्ञान हुआ कि धर्म प्राचीन भारत के सभी लोगों का आधार था। इससे मेरे मन में इस राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को इतिहासकारों द्वारा ज्ञात समय से लेकर अब तक विस्तृत रूप से प्रस्तुत करने की इच्छा जागृत हुई। विषयवस्तु इतनी व्यापक है कि इसे पाँच खंडों में प्रकाशित करना आवश्यक है, और मुझे विश्वास है कि मैं इसे 25 वर्षों में पूरा कर लूँगा। इस पुस्तक की तरह, उस ग्रंथ के लिए भी मुझे आपके मार्गदर्शन और आशीर्वाद की आवश्यकता है।"
जब वे दोनों बातचीत में मग्न थे, तभी कात्यायनी दो पलंग लाकर पास-पास बिछा दीं। दोनों पलंगों पर चटाई बिछाने के बाद, उन्होंने पीने के पानी का एक तांबे का कलश और दो गिलास रखे और चली गईं। सोने के बाद भी उनकी बातचीत जारी रही।
राव ने आगे कहा, "इस देश के इतिहास पर कई लोगों ने लिखा है। लेकिन वे सभी राजनीतिक इतिहास हैं। एक-दो रचनाओं ने इसके सांस्कृतिक इतिहास पर प्रकाश डाला है। लेकिन मेरा दृष्टिकोण कुछ और है। भारतीय संस्कृति के घटकों, जैसे कला,

राजनीति और जनजीवन, को सहारा देते हुए धर्म की अंतर्धारा निरंतर प्रवाहित होती रही है और इन सभी को पोषित करती रही है। यह देखा जा सकता है कि ब्राह्मणवाद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे संप्रदायों के उत्कर्ष के समय संस्कृति की संरचना में परिवर्तन आया। मुगल आक्रमण से पहले इन तीनों संप्रदायों के समवर्ती प्रभुत्व के बावजूद इस भूमि की सांस्कृतिक संरचना बिना किसी महत्वपूर्ण क्षति के फली-फूली, इसका कारण यह है कि इन तीनों संप्रदायों का मूल तत्व एक ही स्रोत से आया है। मेरा शोध हमारे सांस्कृतिक आधार पर इस्लाम के प्रभाव और आधुनिक समय में इसके द्वारा ग्रहण किए जा रहे आयामों पर केंद्रित होगा।" इसीलिए, भारत नामक इस भूमि के धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्य आदि का अध्ययन करना आवश्यक है। अब तक मैंने काफी अध्ययन कर लिया है। अब से मुझे आपके साथ कुछ ग्रंथों का अध्ययन करना होगा। इस कार्य में आपके सिवा कोई और मेरी सहायता नहीं कर सकता।
वे आधी रात तक चर्चा करते रहे। श्रोत्री को इस तरह का ग्रंथ लिखने की प्रक्रिया और इसमें आने वाली बाधाओं के बारे में जानने में रुचि थी। राव ने समझाया, "इस तरह के शोध में बहुत समय लगता है। अगर एक-दो सहायक मिल जाएं तो शोधकर्ता को खुद को भाग्यशाली समझना चाहिए। कई स्रोत पुस्तकें हमारे घर में उपलब्ध नहीं होंगी। हमें उन्हें देश भर के पुस्तकालयों में खोजकर प्राप्त करना होगा। इसके लिए ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का दौरा करना और प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक है। और इन सबके लिए धन की भी आवश्यकता होती है। मैंने अपनी प्रकाशित रचनाओं का एक संग्रह महाराजा कृष्णराज वाडियार को एक विनम्र निवेदन पत्र के साथ भेजा है, जिसमें मैंने उन्हें अपनी प्रस्तावित परियोजना के बारे में बताया है। उनके सचिव ने मुझे लिखा है कि मुझे आगामी सोमवार को दोपहर 3 बजे उनसे मिलने का समय दिया गया है। मुझे लगता है कि वे मेरी मदद कर सकते हैं।" श्रोत्री ध्यान से सुन रहे थे। रात के 2 बज रहे थे जब वे सो गए।

4

हमेशा की तरह, श्रोत्री सुबह 4 बजे उठ गए और अपने घर के पीछे 100 गज की दूरी पर बहने वाली गुंडाला नदी की ओर चल पड़े। चूंकि चंद्र माह का दूसरा पखवाड़ा था, इसलिए आकाश में चंद्रमा नहीं था, लेकिन शुक्र ग्रह चमक रहा था। आकाश में चमकते तारों ने उनकी कल्पना को अनंत काल की अनुभूति करा दी। शांत भोर में, वे उन तारों

के नीचे चले, सुबह की रस्में पूरी कीं और गौशाला में आ गए। गौशाला के पास पहुँचते ही गायें स्नेहपूर्वक उठ खड़ी हुईं। उन्होंने बारी-बारी से उनकी गलफड़ों को सहलाया, यह देखा कि किस गाय ने कितनी घास खाई है, उन्हें बाहर ले गए, और जब तक वे घर में दाखिल हुए, भागीरथम्मा उठ चुकी थीं। धोती और कलश लेकर वे बाहर निकले, मंदिर के पास से गुजरे और मणिकर्णिका के चबूतरे की ओर चल पड़े। कपिला नदी अष्टम षड्ज की लय में शांत रूप से बह रही थी। जब तक उसने नदी में स्नान किया, अपनी मैली धोती धोई, कलश में पानी भरा और घर लौटा, तब तक कौवे भोर की सूचना दे रहे थे। भागीरथम्मा स्नान कर चुकी थी, पूजा कक्ष साफ कर चुकी थी, रंगोली बना चुकी थी और पूजा की सामग्री सजा चुकी थी।

डॉ. राव सुबह आठ बजे उठे। यह उनका रोज़ का समय था; इस दिन तो वे रात के 2 बजे तक सोते! उठते ही उन्होंने एक कुर्सी ढूँढी और बैठ गए, तभी कात्यायनी वहाँ प्रकट हुईं और बोलीं, 'वे पूजा कर रहे हैं। आप भी स्नान करके उनके साथ शामिल हो जाइए। मैंने गर्म पानी तैयार रखा है।'

स्नान करने के बाद राव पूजा कक्ष के द्वार पर खड़े हो गए। पूजा समाप्त होने पर श्रोत्री ने उन्हें आरती और तीर्थ भेंट की। राव को उसी दोपहर मैसूर लौटना था। श्रोत्री को नाश्ता करने की आदत नहीं थी, इसलिए केवल राव को ही नाश्ता परोसा गया। सुबह 11 बजे राव से विदा लेकर श्रोत्री कुछ देर के लिए बाहर गए और थोड़ी देर बाद लौट आए। दोपहर के भोजन के बाद जब राव विदा लेने गए, तो श्रोत्री ने उनके सामने पान, सुपारी और नारियल से भरी एक थाली रखी - जो मेहमानों को दी जाने वाली सामान्य भेंट होती है - और कहा, 'कृपया इसे स्वीकार करें।' राव ने देखा और उसमें एक लिफाफा देखकर आश्चर्यचकित रह गए। यह समझकर कि उसमें नोट हैं, राव पीछे हट गए और बोले, 'मैं आपकी कृपा के प्रतीक के रूप में यह भेंट स्वीकार करता हूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि उस लिफाफे में क्या है, इसलिए मैं इसे नहीं लूँगा।'

श्रोत्री ने कोमल स्वर में कहा, “आप एक ग्रंथ लिखने निकले हैं। उस परियोजना के लिए जितना धन मिल सके, उतना चाहिए। ईश्वर ने इस घर को केवल जीवन निर्वाह से कहीं अधिक आशीष दी है। इस अतिरिक्त धन का उपयोग इसके अतिरिक्त किस उद्देश्य से किया जा सकता है? कृपया इसे स्वीकार करें।”

फिर भी, मैं आपसे इस तरह का नहीं, बल्कि किसी और तरह का समर्थन चाहूंगा।

‘मैं भला किसका समर्थन करूँ? जब भी आपका मन करे, बेझिझक यहाँ आएँ। अब, आपको यह स्वीकार करना होगा। यह न तो आपके निजी सामान के लिए है, न ही मैं

इसे दे रहा हूँ। यह धन ऐसे कार्यों के लिए ही खर्च किया जाना चाहिए। यदि दानदाता कंजूस है और अनिच्छा से धन दे रहा है, या यदि वह अपनी पत्नी और बच्चों को कष्ट देकर दान कर रहा है, या यदि वह कुकर्म से कमाया हुआ धन दान कर रहा है, तो ऐसे धन को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए—भले ही वह धार्मिक कार्यों के लिए ही क्यों न खर्च किया जाए। धर्म की एक और सूक्ष्म बात यह है: यदि आप इसे अस्वीकार करते हैं, तो आप धर्म का उल्लंघन करेंगे।' श्रोत्री मुस्कुराईं।

राव बेहद संकोची हो गए और ट्रे लेते समय भी हिचकिचाते रहे। दोपहर की ट्रेन से रवाना होने से पहले उन्होंने भागीरथम्मा से औपचारिक विदाई ली और कात्यायनी को सांत्वना के कुछ शब्द कहे। जब ट्रेन नंजनगुड स्टेशन से निकली, तो उन्होंने उत्सुकतावश लिफाफा देखा। वे दंग रह गए। उसमें 100 रुपये के 10 नोट थे! ट्रेन के मैसूर पहुँचने से पहले ही उन्होंने निवेश योजना बना ली थी—200 रुपये में एक बढ़िया नया टाइपराइटर खरीदना; 300 रुपये में ऐसी किताबें खरीदना जो यहाँ के विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं थीं, और शेष राशि का उपयोग शोध यात्रा के लिए करना।

अध्याय दो

1

हालांकि डॉ. सदाशिव राव सुबह 9 बजे तक जाग गए थे, लेकिन वे अपने शयनकक्ष से बाहर नहीं निकले थे। वे पिछली रात एक किताब में लिखे अपने नोट्स को दोहरा रहे थे। उन्हें बिस्तर पर कॉफी पीने की आदत नहीं थी। वे कॉफी या नाश्ता तभी करते थे जब उनकी पत्नी उन्हें देती थीं। भूख लगने पर भी वे कभी इसके लिए नहीं पूछते थे। जिस किताब को वे अभी पढ़ रहे थे, उसमें कई ऐसे अंश थे जो उन्हें समझ नहीं आ रहे थे। वे अपनी रचना में उन अंशों का विस्तार से वर्णन करना चाहते थे ताकि उनकी खामियों को उजागर कर सकें। जब उनका मन दो सहस्राब्दी पहले के जीवन की कल्पना में मग्न था, तभी उन्हें अपने सिर पर एक ठंडी हथेली का स्पर्श महसूस हुआ। उन्होंने देखा। उनकी पत्नी ने अपने बाएं हाथ में अरंडी का तेल का प्याला पकड़े हुए, थोड़ा सा तेल अपने दाहिने हाथ की हथेली पर डाला था और उनके सिर की मालिश कर रही थीं। उनका चेहरा झुंझलाहट से सिकुड़ गया। 'नागु, आज सुबह क्या कर रही हो?' उन्होंने पूछा।

‘क्या मुझे इसे मौखिक रूप से कहना चाहिए? क्या तुम स्वयं नहीं देख सकते? जल्दी से अपनी कमर के चारों ओर एक तौलिया बांध लो। मैं तुम्हारे पूरे शरीर पर भी अभिषेक करूंगी,’ नागलक्ष्मी ने कहा।

‘सिर्फ़ इसे सिर पर मलना ही काफ़ी है। मुझे जवाब दो। आज सुबह सबसे पहले तुमने यही क्यों किया? मुझे कुछ काम निपटाना है। क्या तुम ज़रा भी सोच सकते हो?’

मुस्कुराते हुए नागलक्ष्मी ने कहा, 'आप अपनी स्मृति में बहुत सी किताबें संजो कर रखते हैं। आपको उंगलियों पर यह जानकारी है कि किसी गुमनाम राजा की युद्ध टुकड़ी में कितने बूढ़े हाथी थे। क्या आपको कल रात अपनी पत्नी द्वारा कही गई कोई बात याद नहीं है? याद कीजिए मैंने कल रात आपको क्या बताया था।'

लाख कोशिश करने पर भी उसे कुछ याद नहीं आ रहा था। उसने रात भर जागकर सुबह 3 बजे तक उस 300 पन्नों की किताब में लिखी सारी बातें रट ली थीं। नागलक्ष्मी ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, 'तुम्हें याद नहीं आ रहा। क्या तुम्हारे जैसे लोग अपनी पत्नियों की ज़रूरतों का ध्यान रखेंगे? छोड़ो। आज तुम्हारा जन्मदिन है। मैंने तुमसे कहा

था कि मैं तुम्हें तेल से स्नान कराऊँगी और हलवा बनाऊँगी। मेरे तेल लगाने पर नाराज़ मत हो। उठो, तौलिए में लिपटो और बाथरूम में मेरा इंतज़ार करो।'
बाथरूम में उनकी पीठ पर अरंडी का तेल लगाते हुए नागलक्ष्मी ने कहा, 'बालों में कंघी करते समय भी आप आईने में नहीं देखते। क्या आपने ध्यान दिया है कि आपके बाल पूरी तरह से सफेद हो गए हैं? आज आप 35 साल के हो गए। इतनी जल्दी बूढ़े हो गए! खैर, क्या आपको अपनी पत्नी की उम्र पता है?'
राव ने मुस्कुराने की अनुमति दी। 'जो भी हो, यह 35 से कम है।'
‘बहुत चालाक। जो अपनी पत्नी पर ध्यान ही नहीं देता, क्या उसकी उम्र मायने रखती है? मैं राजा से दो महीने बड़ा हूँ। वह पिछले पखवाड़े 25 साल का हो गया। अब बताओ मेरी उम्र क्या है।’
‘राजा की उम्र से दो महीने अधिक।’
‘तुम्हारी चतुराई भाड़ में जाए। कम से कम मुझे यह तो बता दो कि मैं तुमसे कितना छोटा हूँ।’
'तुम मुझसे राजा की तुलना में ठीक दो महीने कम छोटे हो।'
नागलक्ष्मी ने अपनी कोमल उंगलियों से उसकी नाक को धीरे से दबाया और कहा, 'अगर तुमने इतना भी नहीं माना तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी। तेल को थोड़ा और अंदर जाने दो। मालिश करते रहो। मैं थोड़ी सी अरहर दाल उबालने के लिए रख देती हूँ और तुम्हारे लिए कॉफी लाती हूँ। जब तक तुम स्नान करके भगवान के सामने प्रणाम नहीं कर लेते, मैं तुम्हें कुछ भी खाने को नहीं दूंगी।'
नागलक्ष्मी रसोई में गईं। उन्होंने पिछली रात घर की अच्छी तरह सफाई की थी और कुछ चुनिंदा जगहों पर रंगोली बनाई थी। उन्होंने पूजा कक्ष की धूल झाड़ दी थी और पूजा का सारा सामान सजा दिया था। उन्हें बस जल्दी से खाना बनाना था। सुबह के 10 बज चुके थे। जब तक चावल और सब्जियां पक गईं और दाल आधी पक गई, उनका चार साल का बेटा पृथ्वी, जो पड़ोस के घर में खेलने गया था, वापस आया और बोला, 'माँ, मुझे भूख लगी है।'
‘आज पापा का जन्मदिन है। दोपहर का भोजन उनके तेल स्नान के बाद ही परोसा जाएगा। अगर भूख लगी है, तो ये लो, खुद खा लो,’ उसने मुट्ठी भर चावल के दानों से उसकी कमीज़ की जेब भर दी। लड़का दौड़कर खेलने चला गया। जब वह बर्तन धोने के बाद बाथरूम गई, तो राव वहाँ नहीं थे। वह देखने के लिए उनके अध्ययन कक्ष में गई। फर्श पर बिछे एक पुराने बोरे पर बैठे राव पिछली रात पढ़ी किताब से नोट्स बना

रहे थे। उनके पास पहुँचकर नागलक्ष्मी ने कहा, 'उठो। तुम्हें पूरे 364 दिन पढ़ना है। जन्मदिन पर पत्नी और बच्चों को लाड़-प्यार करना चाहिए। स्नान करो और भोजन करो। अगर चाहो तो आराम करो। चलो आज शाम वसंतसेना नाटक देखते हैं। लक्ष्मीबाई मुख्य भूमिका निभा रही हैं।'
"अगर समय मिले तो देखते हैं। आज तो आपके शब्दों का ही बोलबाला रहेगा..." जैसे उन्हें कुछ याद आया हो, उन्होंने पूछा, "अभी क्या समय हुआ है?" दीवार घड़ी की ओर देखते हुए राव ने कहा, "ओह, सुबह के 11:30 बज गए हैं। जल्दी से मुझे नहला दीजिए। मुझे दोपहर 3 बजे महाराज से मिलना है।"
'क्या सच में? तुमने तो मुझसे साझा नहीं किया। किसलिए?'
'मैंने नहीं किया? लगता है मैं भूल गया। मैंने इसे अपनी डायरी में लिख लिया है। चलो, मुझे नहला दो।'
'क्या डायरी में लिखना पत्नी के साथ साझा करने के बराबर है? क्या मैं तुम्हारी अंग्रेज़ी डायरी पढ़ भी सकती हूँ? मैं तो एक नासमझ, गाँव की लड़की, कुनिगल रामन्ना की बेटी हूँ।' उसने उसका हाथ पकड़कर उसे बाथरूम में ले गई। उस पर गर्म पानी से भरे जग उड़ेलकर उसने उसका सिर, पीठ और पूरा शरीर अच्छी तरह से धोया। बाद में, पूजा करते समय, उसने उसे भगवान के सामने प्रणाम करवाया। फिर उसने उसे और अपने बेटे को संस्कार दिए। जब तक तीनों ने दोपहर का भोजन किया, दोपहर के 1:30 बज चुके थे। प्लेटें धोकर और बचा हुआ खाना समेटकर, जब वह एक ट्रे में पान, सुपारी और चूना लेकर राव के अध्ययन कक्ष में दाखिल हुई, तो उसने देखा कि वह पूरी तरह से सजे-धजे थे! उस भीषण गर्मी में भी उन्होंने कोट, काली टाई और पगड़ी पहनी हुई थी और जूते पहन रहे थे। उनकी इस जल्दी शुरुआत को देखकर वह हैरान रह गई और उसने उनसे पूछा, 'इतनी जल्दी क्यों जा रहे हो? कम से कम आज तो मेरे साथ पान खा लो!' रुको, मैं तुम्हारे लिए जल्दी से एक सजा देती हूँ।'
'नहीं, नागु, अभी 1:45 हो चुका है। महाराज ठीक 3 बजे प्रकट होंगे। अगर मैं पान खा लूँ, तो मुझे अपने दाँत साफ करने पड़ेंगे क्योंकि मैं अपने दागदार दाँत उनके सामने नहीं दिखा सकता।' वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। थाली को मेज पर रखकर नागलक्ष्मी उसके पास आई, उसके दोनों हाथ अपने हाथों में लिए और बोली, 'मेरी आँखों में देखो।' जब उसने पूरी तरह से उसकी बात मान ली, तो उसने स्नेह से भरे स्वर में कहा, 'जाओ और उनसे मिलो। मैंने अभी जो पूजा की है, वह तुम्हारे लिए शुभ होगी। महाराज तुम्हारा प्रस्ताव अवश्य ही स्वीकार करेंगे।'

2

जब डॉ. सदाशिव राव 10 वर्ष के थे, तब उनकी माताजी का निधन हो गया, जिन्होंने हाल ही में एक बेटे को जन्म दिया था। उनके मामा कुनिगल रमन्ना ने दोनों का पालन-पोषण किया। माताजी के निधन के दो वर्ष बाद उनके पिता भी चल बसे। पिता की ओर से उन्हें कोई संपत्ति विरासत में नहीं मिली। सदाशिव राव अपने मामा की बेटी नागलक्ष्मी से 10 वर्ष बड़े थे। नागलक्ष्मी मात्र पाँच वर्ष की थीं जब सदाशिव राव मैसूर में हाई स्कूल की पढ़ाई करने के लिए एक अनाथालय में रहने चले गए। उनके भाई राजा और नागलक्ष्मी एक ही उम्र के थे। वे साथ में टैग, लुका-छिपी, हॉपस्कॉच आदि खेलते थे।

राव ने 24 वर्ष की आयु में एमए की उपाधि प्राप्त की और महाराजा कॉलेज में इतिहास के व्याख्याता के रूप में अपना करियर शुरू किया। उन्होंने लगभग तुरंत ही पीएचडी की पढ़ाई शुरू कर दी। रामन्ना अपने भतीजे को नागलक्ष्मी से विवाह करने के लिए लगातार परेशान करते रहे। उस समय चौदह वर्ष की, लंबी और आकर्षक नागलक्ष्मी कुंवारी हो चुकी थीं। उनका स्वभाव सौम्य था और वे घरेलू कामों में निपुण थीं। लेकिन बेचारी, वह माध्यमिक विद्यालय से आगे की पढ़ाई करने के लिए पर्याप्त विद्वान नहीं थीं। उनके माता-पिता का मानना था कि उनके लिए पढ़ाई करना व्यर्थ है, और वे भी उनकी इस राय से सहमत थीं। शुरू से ही अध्ययनशील सदाशिव राव ने विवाह या अपनी होने वाली दुल्हन के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। उन्होंने बस अपने चाचा की बात मान ली। विवाह संपन्न हुआ और नागलक्ष्मी उनके साथ मैसूर चली गईं। राजा भी अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए उनके पीछे-पीछे मैसूर चले गए। आज भी नागलक्ष्मी का राजा के साथ अपने पति से कहीं अधिक गहरा संबंध है। यह नहीं कहा जा सकता कि सदाशिव राव अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करते; वे उनसे प्रेम करते हैं। क्या अपनी पत्नी से पूर्ण विवेक और समर्पण के साथ प्रेम करना भी संभव था? स्वभावतः, वे अपनी पढ़ाई, शोध और लेखन में लीन रहते थे। पृथ्वी का जन्म विवाह के छह साल बाद हुआ।

रमन्ना का निधन चार साल पहले हो गया था; और एक साल बाद उनकी पत्नी का भी। नागलक्ष्मी के भाई और उनकी पत्नी गांव में अपनी पुश्तैनी कृषि भूमि की देखभाल करते थे।

अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने और उसी कॉलेज में व्याख्याता के रूप में कार्य करने के बाद, राजा को इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति मिली। यह दो साल पहले की बात है, और जब से वह ऑक्सफोर्ड के लिए रवाना हुए थे, नागलक्ष्मी को अकेलेपन के कारण ऊब महसूस हो रही थी। स्वभाव से वह बहुत बातूनी थीं। उनके अध्ययनशील पति पुस्तकालय में जाते ही अपनी पढ़ाई में खो जाते थे। घर लौटने पर, वह अपने अध्ययन कक्ष में ही रहते और सुबह के शुरुआती घंटों तक पढ़ने-लिखने में मग्न रहते! उनके पास विदेश में रहने वाले अपने भाई को पत्र लिखने का भी समय नहीं होता था। नागलक्ष्मी उन्हें पत्र लिखतीं और राव बस लिफाफे पर अंग्रेजी में पता लिखकर उसे डाक से भेज देते। अब तक, राजा ऑक्सफोर्ड में अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके थे और समुद्र के रास्ते अपने वतन की ओर चल पड़े थे। संभवतः एक-दो दिन में वह मुंबई में उतरेंगे।

पति के महाराज से मिलने जाने के बाद नागलक्ष्मी के पास करने को कोई काम नहीं था; रोज़मर्रा के काम भी ज़्यादा नहीं थे। पति ने उस शाम उन्हें थिएटर ले जाने की सहमति दे दी थी और वह बहुत उत्साहित थीं। महाराज से मुलाकात में कितना समय लगेगा? महाराज होने के नाते, वह कुछ ही शब्दों में अपनी बात खत्म कर देंगे। उन्होंने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि महाराज ने उन्हें मुलाकात के लिए बुलाया है? भला, क्या वह मुझसे कुछ भी साझा करेंगे! उनके लिए और उनके लेखन के लिए ही सब कुछ था; बाकी कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था।

पांच बज चुके थे और वह अभी तक वापस नहीं आया था। नागलक्ष्मी ने अपने बेटे को बुलाया जो पास के घर में खेल रहा था, और उसे और खुद को तैयार करने लगी। उसने एक सुंदर साड़ी पहनी। क्या आज उसके पति का जन्मदिन नहीं था? जन्मदिन वाले को तो इस बात की कोई परवाह नहीं थी, लेकिन वह कैसे हो सकती थी? 'अम्मा, पापा अभी तक नहीं आए। थिएटर नहीं गए?' पृथ्वी ने पूछा। 'रुको, वह किसी भी पल आ जाएंगे,' उसने कहा, लेकिन वह खुद भी उतनी ही चिंतित थी। छह बजने तक भी वह वापस नहीं आया। वह मुख्य दरवाजे पर खड़ी हो गई। दस मिनट में एक डाकिया उसके पास आया, उसके हस्ताक्षर लिए और उसे एक लिफाफा थमा दिया। अंदर सिर्फ तीन शब्दों का एक टेलीग्राम था, और वह समझ गई कि उस पर 'राजा' के हस्ताक्षर थे। और हालांकि वह उन तीन शब्दों का अर्थ समझ गई थी, यानी 'मंगलवार शाम को पहुंचेंगे', लेकिन उसे यकीन नहीं था। किससे पूछें? राजा, जो कन्नड़ में पत्र लिखते हैं, उन्होंने यह

टेलीग्राम अंग्रेजी में क्यों भेजा है? क्या उसे भी मेरी अंग्रेज़ी की अज्ञानता का मज़ाक उड़ाना चाहिए? 'उसे आने दो, मैं उसे सबक सिखाऊँगी,' उसने निश्चय किया।
जब राव रात 8 बजे लौटे, तो उन्होंने टेलीग्राम देखा और कहा, 'राजा कल शाम को पहुंचेंगे।'
'तो, मैंने इसे सही समझा है, है ना?' नागलक्ष्मी ने प्रसन्नता से पूछा।
'हां, तुम होशियार हो। राजा के वापस आने के बाद, उससे ट्यूशन लो और अपनी अंग्रेजी सुधार लो। फिर तुम मेरी मदद कर सकते हो।'
हाँ, बस यही करना बाकी है! मुझे अच्छी तरह पता है कि शिक्षा मेरे नसीब में नहीं है। खैर, आज का नाटक यहीं समाप्त होता है। राजा कल लौट रहे हैं। हम सब परसों उसे देखने चलते हैं। महाराज ने क्या आदेश दिया है, मुझे बताइए।
मैंने पहले ही उन्हें अपनी वह किताब भेजी थी। उन्होंने उसे पढ़ लिया है। मुझे बताया गया कि उन्हें वह पसंद आई। उन्होंने आदेश दिया कि मेरी प्रस्तावित पुस्तक को पूरा समर्थन दिया जाए।
क्या इसी प्रस्ताव के चलते आपकी उनसे मुलाकात हुई थी? और आपने मुझे इस सब के बारे में अंधेरे में क्यों रखा?
'मेरा दिमाग जाम हो गया था इसलिए मैं इसे भूल गया। बहुत देर हो रही है। जाकर देखो कि बच्चा भूखा है या नहीं।'
नागलक्ष्मी पृथ्वी की तलाश में निकल पड़ीं।

3

सदाशिव राव अपने भाई को लेने रेलवे स्टेशन गए। उतरते ही राजा ने अपने भाई के चरणों में प्रणाम किया। घर पहुँचकर नागलक्ष्मी ने राजा को देखते ही कहा, 'तुम्हारा रंग तो थोड़ा निखर गया है, लेकिन शरीर से तुम काफी कमजोर हो गए हो।'
'वहाँ मेरे लिए खाना बनाने के लिए कोई नागलक्ष्मी नहीं थी। मैंने तो रसोई संभालने और मेरी देखभाल करने के लिए किसी स्थानीय व्यक्ति से शादी करने के बारे में भी सोचा था, लेकिन मैंने ऐसा करने से परहेज किया क्योंकि मुझे लगा कि शायद आपको यह पसंद न आए।'
'जैसे कि तुम मेरी हर बात मानते हो! बैठो, खुद ही एक गिलास नींबू का रस ले लो।' उसने मिठाइयों से भरी एक ट्रे आगे बढ़ा दी।

उनके दो दोस्त मिलने आए हुए थे और राव अपने अध्ययन कक्ष में उनसे बातचीत कर रहे थे। पृथ्वी अपने चाचा को भूल चुका था। 'अंकल, अंकल,' जो पहले अपने चाचा को देखकर खुशी से उछल पड़ता था, अब उस 'अजनबी' से दूरी बनाए रखता था। जब राजा इंग्लैंड गए थे, तब पृथ्वी दो साल का था और राव ही हमेशा उस बच्चे का ख्याल रखते थे। वे सभी बच्चों के लाडले थे। उन्होंने अपनी भाभी से पूछा, 'नागु, बताओ तुमने ये दो साल कैसे बिताए? भाई की किताब इंग्लैंड में खूब पसंद की जा रही है। क्या वह तुमसे बात भी करते हैं, या पहले की तरह अपने लेखन में ही मग्न रहते हैं?'

‘क्या उसका स्वभाव परिवर्तन के योग्य है?’ उसने मिट्टी के चूल्हे की लौ को थोड़ा बुझाते हुए पूछा।

लेकिन, जब घर पर अकेली एक स्नेहशील पत्नी हो, तो क्या किसी को उससे थोड़ी बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा?

'जाओ और उससे यह पूछो। अब, मुझे बताओ, तुमने इंग्लैंड में क्या किया? तुमने लिखा था कि तुमने काफी थिएटर देखा। कैसा रहा?'

राजा की एकमात्र रुचि रंगमंच में थी। ऑक्सफोर्ड में बीए की पढ़ाई के दौरान, उन्हें अंग्रेजी रंगमंच देखने और अध्ययन मंडलियों में भाग लेने का भी समय मिल जाता था। उन्होंने कुछ कलाकारों से दोस्ती भी कर ली थी। उन्होंने उन्नत मेकअप और मशीनीकृत मंच उपकरणों से खुद को परिचित कर लिया था। वह उसे सब कुछ बताता रहा। वह सब कुछ समझ नहीं पाती थी। लेकिन वह पूरी तरह से न समझ पाने के बावजूद भी, किसी की भी बात ध्यान से सुनती थी। राजा भी बहुत बातूनी था; और इसीलिए वे एक-दूसरे के अनुकूल थे। नागलक्ष्मी ने कहा, 'एसएसएस थिएटर इस शहर में डेरा डाले हुए है। वे पिछले 15 दिनों से वसंतसेना का मंचन कर रहे हैं। पूरा शहर वहीं इकट्ठा हो रहा है। मुझे बताया गया है कि लक्ष्मीबाई ने मुख्य भूमिका में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। हमने कल इसे देखने की योजना बनाई थी। तभी हमें आपका टेलीग्राम मिला। तब हमने सोचा कि आज आपके साथ इसे देखेंगे।'

हंसते हुए राजा ने कहा, 'नागु, तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने अभी कहा कि वह तुमसे ज्यादा बात नहीं करता था। अब तुम कह रहे हो कि तुम दोनों ने साथ में थिएटर जाने का प्लान बनाया था।'

‘हे भगवान! कल उनका जन्मदिन था, इसलिए मैंने ज़िद की कि हम वह नाटक देखें। शाम तक लौटने का वादा करके, आपका भाई महामहिम से मिलने गया और रात 8 बजे ही लौटा। तब तक मुझे आपका टेलीग्राम मिल चुका था।’

अपने मेहमानों को विदा करने के बाद राव बैठक कक्ष में आए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि किस विषय पर बात शुरू करें, इसलिए उन्होंने अपने भाई की ओर देखकर कहा, 'इंग्लैंड की जलवायु तुम्हारे लिए अनुकूल प्रतीत होती है। तुम पहले से अधिक स्वस्थ और तंदुरुस्त हो गए हो।'
राजा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "नागलक्ष्मी ने अभी कहा कि मैं मुरझा गया हूँ। आप मुझे पहले से बेहतर बता रहे हैं। आप दोनों में से कौन सही है?"
'मैं। मैं सही हूं।' नागलक्ष्मी ने हस्तक्षेप किया।
'हां,' राव ने स्वीकार किया।
जब वे रात का खाना खा रहे थे, राव ने पूछा, 'क्या तुमने मेरी किताब पढ़ी है?'
मैंने इसे सिर्फ पढ़ा ही नहीं, बल्कि इसकी आलोचनात्मक प्रशंसा का साक्षी भी रहा। जब ऑक्सफोर्ड के इतिहास के प्रोफेसरों को पता चला कि मैं लेखक का भाई हूँ, तो उन्होंने मुझसे दोस्ती कर ली। मुझे पता चला कि आप एक ग्रंथ लिखने की योजना बना रहे हैं। आखिर यह सब क्या है?
'तुमसे किसने कहा?'
'मैडेमोसेले नागलक्ष्मी एंड कंपनी द्वारा एक बुलेटिन'
जी हां। मेरी बड़ी-बड़ी योजनाएं हैं। नंजनगुड के श्री श्रीनिवास श्रोत्री ने मुझे सौभाग्य का आशीर्वाद दिया है और 1,000 रुपये दान किए हैं। कल मैंने परम पूज्य से दर्शन किए और उनसे प्रार्थना की। उन्होंने मुझे सहयोग देने का आश्वासन भी दिया है। पिछले छह महीनों से मैं विश्वविद्यालय के अधिकारियों को पत्र लिख रहा हूं। एक बार तो मैं कुलपति से भी मिला था। उनके शब्दों का लहजा कुछ इस प्रकार था: 'आप एक व्याख्याता हैं। व्याख्यान देना तो बस आपके वेतन के अनुरूप है। आपके शोधपत्र से हमारा क्या लेना-देना?' शोध के लिए यात्रा की आवश्यकता होती है। आर्थिक सहायता के बावजूद वे मुझे शोध के लिए पर्याप्त अवकाश देने को भी तैयार नहीं हैं। मैंने अपनी सारी आशा परम पूज्य के सहयोग पर टिका रखी है।
पश्चिमी विश्वविद्यालयों में विद्वानों और शोधकर्ताओं को मिलने वाले प्रोत्साहन को याद करते हुए राजा ने कहा, 'इस देश के विश्वविद्यालयों की यही स्थिति है जिसके कारण कई विद्वान पश्चिम की ओर पलायन कर रहे हैं। यदि आप अपनी लिखी पुस्तक ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में जमा करते हैं और अपनी प्रस्तावित पुस्तक पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करते हैं, तो वे आपकी प्रकाशित पुस्तक की संभावना को

देखते हुए हर तरह से आपका समर्थन करेंगे। भारत का इतिहास लिखने का बीड़ा उठाने वाले व्यक्ति को इंग्लैंड में कहीं अधिक संसाधन और सुविधाएँ मिलेंगी।'
नागलक्ष्मी ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'अगर वह इंग्लैंड चला गया, तो वह अपने परिवार को भूल जाएगा और वहीं स्थायी रूप से बस जाएगा।'
“चिंता मत करो। अगर ऐसे विद्वान वहाँ जाते हैं, तो उनके परिवार के लिए भी रहने का इंतजाम कर दिया जाएगा। वैसे भी, अगर भाई तुम्हें छोड़कर चला गया, तो वह अपने खाने-पीने का इंतजाम कैसे करेगा? तुम्हारे बनाए हुए करी के बिना वह कुछ भी नहीं खाएगा। कृपया मेरे दही-चावल के लिए करी की थोड़ी सी तवी दे दो।”
‘आप तो मंत्रमुग्ध कर देने वाले भाषण देने में माहिर हैं,’ यह कहते हुए उसने ग्रेवी परोसने के लिए करछुल उठाया।
राव ब्रिटिश संग्रहालय के प्रसिद्ध पुस्तकालय और यूरोप के विश्वविद्यालयों के बारे में सोच-विचार में डूबे हुए थे।

4

महज एक दिन में पृथ्वी अपने चाचा के साथ फिर से घुलमिल गया। जब वे थिएटर के लिए निकले, तो वह उनके साथ ही रहा। हालांकि राव नाटक देखने के लिए बहुत उत्साहित नहीं थे, फिर भी वे उनके साथ चले गए। वे चामराजपुरा से शिवरामपेट तक पैदल गए। यह वह दौर था जब संगीत साहित्य साम्राज्य मंडली रंगमंच के जानकारों को मंत्रमुग्ध कर देती थी, और सभी - चाहे शिक्षित हों या नहीं - उसके शो देखने जाते थे। सभागार के द्वार पर पहुँचने से पहले ही राजा को कई परिचितों ने घेर लिया, अभिवादन किया और उनके अच्छे स्वास्थ्य के बारे में पूछा। जब कुछ वरिष्ठ प्रोफेसरों ने राव को परिवार के साथ देखा, तो वे उनके पास गए और बोले, 'जीवन में वापसी। बधाई हो।' कुर्सियों वाले हिस्से में, राव राजा के बाईं ओर और नागलक्ष्मी के दाईं ओर बैठे। पृथ्वी अपने चाचा की जांघों पर चढ़ गया। रंगमंच के मामले में, राजा की रुचि पांडित्यपूर्ण अध्ययन से बढ़कर समीक्षा के स्तर तक पहुँच गई थी। वह महज नाटक देखने आया हुआ कोई शौकीन व्यक्ति नहीं था।
राव का मन विद्वत्ता से ओतप्रोत था। उन्होंने बहुत पहले ऐतिहासिक शोध के दृष्टिकोण से मृच्छकटिकम नाटक पढ़ा था। उनका मन उस युग के परिवेश, सभ्यता, जीवन, सामाजिक परिस्थितियों आदि से भरा हुआ था। जिज्ञासा से विस्मय केवल दो लोगों—

नागलक्ष्मी और पृथ्वी—के मन में उमड़ रहा था। यह पहली बार था जब नागलक्ष्मी अपने पति के साथ रंगमंच देखने आई थीं। जब वे छोटी थीं, तब उन्होंने कुनिगल में शनिमहात्मा, दानाशुरकर्ण और अन्य नाटक देखे थे। उनमें भूमिकाएँ स्थानीय रूप से चुने हुए ग्रामीणों द्वारा निभाई जाती थीं। वहाँ के मंच इतने सुसज्जित नहीं थे। इसके अलावा, उन्होंने पड़ोस की महिलाओं से इस नाटक के बारे में बहुत कुछ सुना था। पृथ्वी अपने चाचा से पूछ रहा था कि स्क्रीन पर वे चित्र क्या हैं। जब हारमोनियम, वायलिन और तबला वादकों के समूह ने शुभ राम जयतु श्रीराम सुनाम बजाया, जो नाटक के प्रारंभ का संकेत था, तो उसने गर्दन उठाकर उत्सुकता से देखना शुरू कर दिया। नागलक्ष्मी उत्तेजना से कांप उठी।

प्रथम अंक में चारुदत्त और विदुषक मंच पर आए। वसंतसेना का पीछा करते हुए राजा के बहनोई शकरा ने कहा, “हे वसंतसेना, तुम मेरे हृदय को आग की तरह जला रहे हो, रात की नींद उड़ा रहे हो, लेकिन अब तुम बेखबर भाग रहे हो कि कहीं ठोकर न लग जाए। अब तुम मेरे बंदी बन जाओगे, जैसे कुंती रावण की बंदी बनी थी। मैं अब तुम्हारा अपहरण कर लूंगा, जैसे हनुमान ने विश्ववासु की बहन सुभद्रा का अपहरण किया था।”[1] यह सुनकर सभी दर्शक ठहाकों से लोटपोट हो गए। हंसी से व्याकुल नागलक्ष्मी ने अपने पति के हाथ पर हाथ रखकर कहा, “देखो, यह खुद को राजा का बहनोई कहता है। क्या यह मूर्ख नहीं है?”

राव सोच में डूबे हुए थे। इतिहास में हमेशा से ही, अधिकारियों के संरक्षण में रहने वाले लोग चाहे मूक ही क्यों न हों, सहायता के पात्र रहे हैं। पत्नी ने उनका हाथ फिर से दबाया। 'लगता है आप नाटक नहीं देख रहे हैं।' 'नहीं, नहीं,' उन्होंने कहा, 'नाटक बढ़िया है।'

शकरा लगातार बड़बड़ाता रहा। 'मैं उसकी माला की हरमा सुन सकता हूँ। लेकिन अंधेरे में डूबी होने के कारण मैं उसके वज्रों की ध्वनि स्पष्ट रूप से नहीं सुन पा रहा हूँ।'

एक बार फिर, दर्शक हंसी की लहर में बह गए; नागलक्ष्मी भी हंसी से लोटपोट हो गईं। लेकिन बार-बार दोहराया जाने वाला यह मज़ाक डॉ. राव के जिज्ञासु मन को संतुष्ट नहीं कर पाया।

अंतराल के दौरान, राजा ने अपनी भाभी से पूछा, 'वे अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, है ना?'

'बहुत बढ़िया। शकरा की भूमिका में कौन सा अभिनेता है?'

‘ये नागेंद्र राव हैं। चारुदत्त की भूमिका सुब्बैया नायडू निभा रहे हैं। ध्यान दीजिए कि वे कितना अच्छा गाते हैं।’

तीसरे अंक में, चोरी करने के लिए चारुदत्त के घर की दीवार में दरार बनाते हुए शार्विलक ने कहा, “इन जली हुई ईंटों को बाहर निकालना होगा। यहाँ की ईंटें अलग-अलग आकार की हैं—कमल के आकार की, सूर्य के आकार की, अर्धचंद्र के आकार की, कुएँ के आकार की, चौड़ी, स्वस्तिक के आकार की और घड़े के आकार की—कुल सात प्रकार की। मैं इन्हें एकदम साफ-सुथरा बाहर निकालूँगा ताकि कल इसे देखने वाले लोग अवाक रह जाएँ।”

इस प्रसंग से नागलक्ष्मी की रुचि बरकरार नहीं रही। उसने सोचा कि एक लुटेरे का इतना धीमा चलना शोभा नहीं देता। लेकिन राव को ये बातें रोचक लगीं। अगर उस समय ईंटों से ऐसी संरचनाएँ बनाई जा सकती थीं जिनसे ढाँचा मज़बूत हो, तो उस समय के लोगों की स्थापत्य कला का स्तर क्या रहा होगा? क्या इन विवरणों का वर्णन शिल्पशास्त्र में मिलता है, अर्थात् मूर्तिकला के विज्ञान में? यदि हाँ, तो शिल्पशास्त्र कब का है? इस विषय का विशेष अध्ययन आवश्यक है। उसने मन में कुछ बातें नोट कर लीं।

राजा ने गौर किया कि इंग्लैंड की तुलना में यहाँ मंच की सजावट भले ही साधारण थी, लेकिन उसका प्रभाव बहुत गहरा था। पृथ्वी को बहुत पहले ही नींद आ गई थी। नागलक्ष्मी ने नाटक को शुरू से अंत तक ध्यान से देखा। जब उसने चारुदत्त को मृत्युदंड दिए जाने की सूचना सुनी, तो वह रो पड़ी। अंततः, जब उसने चारुदत्त को निर्दोष साबित होते और अपने परिवार से मिलते देखा, तो उसका मन आनंद से भर गया। फिर भी, उसके मन में एक क्षणिक विचार आया कि उसकी पत्नी दूसरी पत्नी को कैसे सहन करेगी। जब रोहसेना सोने की खिलौना गाड़ी दिए बिना रोना बंद नहीं कर रहा था, तो नागलक्ष्मी ने राजा की गोद में बैठे पृथ्वी की ओर देखा। नाटक समाप्त होने पर सुबह के चार बज रहे थे और वे घर लौट आए।

इसके एक सप्ताह बाद, राव को विश्वविद्यालय के एक उच्च अधिकारी से एक पद की सूचना मिली। उन्हें न केवल व्याख्याता से सहायक प्रोफेसर के पद पर पदोन्नत किया गया, बल्कि विश्वविद्यालय ने उनके प्रस्तावित ग्रंथ के लेखन के लिए उन्हें प्रति वर्ष 500 रुपये का अनुदान, विश्वविद्यालय पुस्तकालय में उनके लिए एक विशेष कक्ष और अध्ययन यात्रा पर जाने के लिए अवकाश प्रदान करने का भी आश्वासन दिया।

राजा ने कहा, 'महामहिम से की गई अपील का फल मिला है।' राव ने महामहिम के सचिव को पत्र लिखकर आभार व्यक्त किया।

1. ये कथन शास्त्रीय नाटक मृच्छकटिकम् (यहाँ सूचीबद्ध) से लिए गए हैं, जो एक घटिया किस्म के कथन हैं। वे महाकाव्यों के पात्रों का उपमा के रूप में प्रयोग करते हैं, लेकिन उनका हास्यास्पद मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। कुंती और सुभद्रा महाकाव्य महाभारत के पात्र हैं। रावण और हनुमान महाकाव्य रामायण के पात्र हैं। विश्ववासु एक काल्पनिक पात्र है, जो एक शास्त्रीय साहित्यिक कृति से लिया गया है।

अध्याय 3

1

सदाशिव राव पिछले एक महीने से यात्रा पर हैं। अब तक वे भारत के सभी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण कर चुके हैं। उन्होंने अपनी स्मृति को ताजा करने के लिए यह यात्रा की थी और दक्षिण भारत का व्यापक भ्रमण किया। कन्याकुमारी, तंजावुर, मदुरै, चिदंबरम और महाबलीपुरम के दर्शन के बाद वे हैदराबाद होते हुए एलोरा के गुफा मंदिरों के दर्शन के लिए रवाना हुए। तीन दिनों तक एलोरा की भव्य उपलब्धियों को देखने के बाद उन्होंने देवगिरी और औरंगाबाद का दौरा किया। अब वे अजंता पहुंच चुके हैं।
उनके यात्रा सामान में एक मध्यम वज़न का बैग, कपड़ों के लिए एक ट्रंक, पानी की थैली, कंधे पर लटका कैमरा, यात्रा की धूल से बचने के लिए खाकी पतलून, धूप से बचाव के लिए टोपी, आसपास के नज़ारों को विहंगम दृश्य से देखने के लिए दूरबीन, कलम, पेंसिल और कागज़ की शीटें शामिल थीं। वे अजंता गुफाओं के पास फरदापुर के एक गेस्टहाउस में ठहरे और अध्ययन के लिए प्रतिदिन गुफाओं का दौरा करते थे। पहले दिन, वे गुफाओं के बाहर खड़े होकर चारों ओर के सुनसान वातावरण को निहारने लगे। उन्होंने दूरबीन से भी वही दृश्य देखा और इस प्रकार टिप्पणी की: 'पहाड़ी घोड़े की नाल के आकार की है, और गुफाएँ इसके ऊपर तराशी गई हैं। इसके सामने एक और पहाड़ी है; बल्कि, ऐसा लगता है जैसे घाटी एक ही पहाड़ी में विलीन हो गई हो। यहाँ मानव निवास के लिए कोई सुविधा नहीं है। बौद्ध भिक्षुओं ने इस जंगल के बीच इन गुफा मंदिरों का निर्माण क्यों किया? एक कारण यह हो सकता है कि पहाड़ी की चट्टान मंदिर निर्माण के लिए उपयुक्त है।' लेकिन मुझे एक और गहरा कारण सूझता है। भिक्षुओं को एकांत में ध्यान करने की आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मंदिर बनाने के लिए इस सुनसान पहाड़ी को चुना।
एक और बात: 'ये गुफाएँ सातवीं शताब्दी ईस्वी से लेकर 1819 तक मानव जाति से गुम रहीं; यहाँ तक कि आसपास के इलाकों में रहने वालों से भी! यह सिद्धांत कि कुछ ब्रिटिश सेना जनरलों को मानव इतिहास की इस रोचक उपलब्धि को अंततः प्रकाश में लाने के लिए प्रशंसा मिलनी चाहिए, मान्य नहीं है। लोगों की तत्कालीन राजनीतिक

स्थिति और संभवतः धार्मिक रूपांतरण के कारण, आस-पास के निवासियों का गुफाओं में विश्वास कम हो गया होगा। इसी कारण से, उनके लिए इन मंदिरों को अच्छी स्थिति में बनाए रखना संभव नहीं रहा होगा। अंग्रेज़ इतिहासकारों के घमंडी विवरण केवल श्रेष्ठता का भ्रम हैं। क्या कोलंबस के अमेरिका में कदम रखने से पहले वहाँ लोग नहीं थे? कोलंबस से बहुत पहले अमेरिका में हिंदू मूर्तियों के अस्तित्व के प्रमाण मौजूद हैं। कोलंबस से पहले भी दुनिया के लोग अमेरिका के बारे में जानते थे।'

वहाँ की अपनी यात्रा के दूसरे दिन सुबह, राव अधूरी गुफा संख्या 24 में बैठ गए और उसका बारीकी से निरीक्षण कर रहे थे, तभी एक बुजुर्ग दंपति उनके पास आए। पुरुष लगभग 60 वर्ष से अधिक आयु के प्रतीत हुए। उन्होंने सफेद पतलून और कमीज पहनी हुई थी और उनके हाथ में छाता था। उनका रंग सांवला था और वे हष्ट-पुष्ट थे। उनकी पत्नी लगभग 50 वर्ष से कुछ अधिक आयु की लग रही थीं। उन्होंने शुद्ध सफेद साड़ी पहनी हुई थी और जिस तरह से उन्होंने साड़ी पहनी थी, उससे राव ने अनुमान लगाया कि वे सिंहली थीं। पुरुष राव के पास आकर बोले, 'क्षमा कीजिए। आप शोधकर्ता प्रतीत होते हैं। यह गुफा इतनी जर्जर अवस्था में क्यों है? ऐसा लगता है कि किसी अनाड़ी पत्थर मिस्त्री ने इसे खोदा और ऐसे ही छोड़ दिया, है ना?'

राव ने कहा, 'यह एक अधूरी गुफा है। अजंता गुफाओं की खुदाई प्रक्रिया में तीन चरण रहे होंगे। पहले चरण में, अनुभवहीन पत्थर तराशने वालों ने एक बड़ा क्षेत्र खोदा होगा। यह संभवतः किसानों द्वारा धार्मिक कार्य के रूप में किया गया होगा। दूसरे चरण में, कुशल तराशने वालों ने मूर्तिकार के निर्देशों के अनुसार अर्ध-निर्मित स्तंभ, मूर्तियाँ आदि तराशी होंगी। अंतिम चरण में, निपुण कलाकारों ने जटिल कार्यों को पूरा किया होगा और मंदिरों को उनका पूर्ण स्वरूप दिया होगा। इस सब में कई दशक लग गए होंगे। जिस समय इस गुफा का पहला चरण चल रहा था, उस समय कोई राजनीतिक उथल-पुथल रही होगी। या लोगों की आस्था में परिवर्तन आया होगा। संरक्षण में कमी आई होगी। अफसोस, यह गुफा अधूरी ही रह गई।'

उस आदमी ने अपनी पत्नी को भी यही बात समझाई। उनकी भाषा से राव को यकीन हो गया कि वे वाकई सिंहली हैं। राव के कुछ और सवाल थे, और राव ने उनके सभी जवाब दिए। दोनों का एक-दूसरे से परिचय कराया गया। बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा, 'हम कल से आपको देख रहे हैं। आपकी मेहनत देखकर मेरी बेटी ने कहा कि आप शोधकर्ता हैं। हम भी उसी गेस्टहाउस में ठहरे हैं जहाँ आप ठहरे हैं। आपने हमें देखा ही नहीं। हम पश्चिमी श्रीलंका के कलुतारा से हैं। मेरा नाम जयरात्ने है। मेरी बेटी इतिहास की छात्रा है।

वह कैम्ब्रिज से बीए करने के बाद पिछले साल घर लौटी है। वह किसी पुरानी गुफा में बैठकर नोट्स बना रही है।'
राव ने अपना परिचय दिया। तब तक सुबह के 11 बज चुके थे और दोनों काफी थक चुके थे। जयरात्रे ने पूछा, 'क्या आपको दोपहर के भोजन के लिए अपने गेस्ट हाउस जाना है?'
नहीं, एक वेटर इसे यहाँ ला रहा है।
'वह हमारा भी ले आएगा। वह किसी भी क्षण यहाँ आ जाएगा। वह कल भी ठीक इसी समय इसे यहाँ लाया था। आइए, हम वहाँ बैठते हैं।'
वे गुफा संख्या 12 की ओर बढ़े और जल्द ही उन्होंने एक महिला को अपनी ओर आते देखा। लगभग 26 वर्ष की उस महिला ने भी सिंहली शैली में साड़ी पहनी हुई थी। उसका गोल चेहरा विद्वता से जगमगा रहा था। उसका रंग-रूप उसके माता-पिता से मिलता-जुलता था। उसके कानों में हीरे की बालियां चमक रही थीं। उसकी आंखें दमक रही थीं और उसके हाथों में एक नोटबुक और पेंसिल थी। जयरात्रे ने जैसे ही सोचा कि वह उस बुजुर्ग व्यक्ति की बेटी हो सकती है, राव से उसका परिचय कराया। 'यह मेरी बेटी करुणरत्रे है। बच्ची, जैसा कि तुमने सही देखा, वह एक शोधकर्ता है। उसने हमें इन गुफाओं के बारे में काफी कुछ बताया। उसका नाम सदाशिव राव है।'
उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया। करुणारत्रे ने तुरंत कुछ नहीं कहा। ऐसा लगा जैसे वह कुछ याद करने की कोशिश कर रही हों। थोड़ी देर बाद उन्होंने पूछा, 'क्या आप डॉ. सदाशिव राव हैं?'
'हाँ।'
तो फिर आपने ही 'प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था की धार्मिक नींव' नामक पुस्तक लिखी है! मुझे अभी तक इसकी प्रति नहीं मिली है। लेकिन मुझे इसकी मिली सराहना के बारे में सब पता है। ऐसे उत्कृष्ट कार्य के लेखक से मिलकर मुझे खुशी होगी।
जयरात्रे ने कहा, 'चलो कहीं बैठते हैं। हम बूढ़े हो चुके हैं और थक चुके हैं।'
वे चारों गुफा संख्या 10 के प्रवेश द्वार की छाया में आराम कर रहे थे। तभी करुणारत्रे ने पूछा, 'मुझे लगता है कि आप सबने यह सब पहले भी देखा है। तो अब आप इसका विस्तृत अध्ययन क्यों कर रहे हैं? क्या आप कोई नई किताब लिखने की योजना बना रहे हैं?'
'जी हां। मैंने लगभग पांच खंडों की एक विशाल कृति लिखने की योजना बनाई है।'
'क्या मैं शीर्षक जान सकता हूँ, और आप किस दृष्टिकोण को ध्यान में रख रहे हैं?'

तभी गेस्टहाउस का वेटर उनके पास आया। उसने अपने सिर पर एक टोकरी रखी हुई थी। धूप में लंबी पैदल यात्रा के कारण उसके माथे से पसीने की धाराएँ बह रही थीं; उसकी कमीज़ भी पसीने से भीगी हुई थी। टोकरी नीचे रखकर उसने पूछा, ‘साहब, क्या आप सब साथ में दोपहर का भोजन करेंगे? रुकिए, मैं 10 मिनट में पानी लाता हूँ।’ उसने एक बड़ा सा टिन का ड्रम उठाया और नीचे घाटी की ओर चल पड़ा।

2

बाजरे की रोटी, दाल करी, चावल और दही—महाराष्ट्र का खाना स्वादिष्ट था। इसके अलावा, वे सभी बहुत भूखे थे। दोपहर के भोजन के दौरान, उनका एक-दूसरे से और अधिक परिचय हुआ। जयरात्ने महायान संप्रदाय के बौद्ध थे। वे कलुतारा में एक बड़ा व्यवसाय चलाते थे। वहाँ से 15 किलोमीटर दूर एक गाँव में उनका रबर और काली मिर्च का खेत था। उनका बेटा खेती-बाड़ी का काम देखता था। एक धर्मनिष्ठ बौद्ध होने के नाते, उन्होंने भारत के सभी बौद्ध स्थलों की यह यात्रा की थी। उनकी बेटी एक अलग उद्देश्य से वहाँ आई थी। उसने कहा, 'यद्यपि यह सच है कि मैं अपने माता-पिता का साथ देने के लिए यात्रा कर रही हूँ, लेकिन इसमें मेरी अपनी विशेष रुचि है। मैं बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि में सिंहली संस्कृति का अध्ययन करना चाहती हूँ। मैंने अपने देश के सभी ऐतिहासिक स्थलों का दौरा किया है। मैंने काफी जानकारी एकत्र की है। लेकिन मैं बिना मार्गदर्शन के इस लेख को नहीं लिख सकती। फिर भी, मैं अपना सारा खाली समय जितना हो सके उतनी जानकारी एकत्र करने में लगाती हूँ।'
वेटर ने सबको खाना परोसा। करुणारत्ने की माँ ने रोटी नहीं खाई। सबको स्पष्ट था कि उन्हें दाल भी पसंद नहीं थी। उन्हें दही में चावल से ही काम चलाना पड़ा। जयरात्ने ने दो रोटियाँ खाईं; उनके कृत्रिम दाँत थे। करुणारत्ने और राव ने भरपेट खाना खाया। खाना खत्म करते हुए जयरात्ने ने कहा, ‘अजंता में हीनयान और महायान दोनों संप्रदायों की गुफाएँ हैं। मैं यह सिर्फ इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि मैं महायान संप्रदाय से हूँ। हीनयान गुफाओं में बुद्ध की मूर्तियाँ नहीं होतीं। मंदिर की बाहरी नक्काशी की प्रचुरता के बावजूद, हमें ऐसा लगता है कि वह भगवान के बिना का निवास स्थान है। महायान संप्रदाय के मंदिरों में, शांति के साक्षात रूप, धर्मचक्र मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति होती है। हम, जो मंदिर में प्रवेश करते हैं, सुरक्षा और आश्वासन का वादा भी महसूस करते हैं।’

राव ने कहा, “सच है। ऐसा कहा जाता है कि हीनयान बौद्ध धर्म के इतिहास के विकास का पहला चरण है। यह एक नया युग था जब बुद्ध के विचारों की चमक फैल रही थी। “सब कुछ अंततः शून्य में परिणत होगा” इस सिद्धांत के अनुसार, गुरु के प्रति श्रद्धा भी निरर्थक लगती है। लेकिन केवल सिद्धांत ही लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकते। अंततः इसका परिणाम स्वयं बुद्ध की पूजा में परिणत हुआ! कुछ इतिहासकारों का मत है कि यह हिंदू धर्म का प्रभाव है, जिसमें मूर्तिपूजा अत्यधिक प्रचलित है। यद्यपि यह सच है, लेकिन केवल यही महायान संप्रदाय के उदय का कारण नहीं है। ऐसा कोई धर्म नहीं है जो पूजा-अर्चना से अछूता हो। यदि इस पर प्रतिबंध न लगाया जाए और इसे सख्ती से लागू न किया जाए, तो प्रत्येक धर्म धीरे-धीरे किसी न किसी रूप में मूर्तिपूजा को अपना लेगा।”

तब तक उनका दोपहर का भोजन समाप्त हो चुका था। सबके हाथ धोने के बाद, वेटर ने उन्हें सुपारी और सौंफ दी। थालियाँ और बर्तन समेटने के बाद, उसने बुजुर्ग व्यक्ति से पूछा, 'साहब, क्या शाम 5 बजे गाड़ी का यहाँ होना ठीक रहेगा?'

'ठीक है।'

वेटर चला गया। चारों लोग आराम करने के लिए वहीं बैठे रहे। करुणा की माँ एक पत्थर पर लेट गईं। उनके पिता दीवार से टिककर पैर फैलाकर बैठ गए। करुणा ने राव से पूछा, 'क्या अब आपका नोट्स का काम पूरा हो गया है?'

'क्यों नहीं?'

मैं आपके लेखन की पद्धति को जानने के लिए उत्सुक हूं। मैंने अभी तक गुफा संख्या 1 का गहन अध्ययन नहीं किया है। क्या आप उपलब्ध हैं? यदि आप मुझे उन पहलुओं के बारे में व्यक्तिगत रूप से समझा सकें जिन्हें मैं अभी तक समझ नहीं पाया हूं, तो यह मेरे लिए सहायक होगा।

मैंने भी अभी तक उस गुफा के बारे में नोट्स नहीं बनाए हैं। चलो, हम साथ चलते हैं।

‘पापा, हम गुफा नंबर 1 में रहेंगे। आराम करने के बाद आ जाना,’ उसने अपने पिता से कहा। तब तक वह आधी नींद में थे और हल्की खर्राटे ले रहे थे।

धूप बहुत तेज़ थी। राव ने टोपी पहन रखी थी। करुणा ने अपनी साड़ी का पल्लू सिर पर ओढ़ते हुए उनका अनुसरण किया। गुफा में प्रवेश करते ही उन्होंने प्रकाश व्यवस्था संभालने वाले कर्मचारी से कुछ चुनिंदा मूर्तियों और चित्रों को फ्लडलाइट से रोशन करने को कहा। करुणा ने कहा, 'हमें अलग से नोट्स बनाने की ज़रूरत नहीं है। आप बोलिए और मैं लिख दूंगी। मैं आपको इसकी एक प्रति आज रात अवश्य दे दूंगी।'

कुछ देर तक उन्होंने गर्भगृह में रखी तस्वीरों और मूर्तियों का अध्ययन किया। करुणा राव द्वारा बताई गई बातों को लिखती रही। 'गर्भगृह में स्थित विशाल बुद्ध प्रतिमा धर्मचक्र मुद्रा में है। इस मुद्रा में दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली बाएं हाथ की छोटी उंगली के सिरे पर रखी होती है, जिसका अर्थ है कि वे अपने शिष्यों को अपने उपदेशों के प्रत्येक पहलू का वर्णन कर रहे हैं। प्रकाश की दिशा के अनुसार, इस प्रतिमा का चेहरा विभिन्न भावों को दर्शाता है। यदि बुद्ध जिस धर्मचक्र पर विराजमान हैं, उससे ऊपर की ओर प्रकाश डाला जाए, तो उनका चेहरा शांति का साक्षात रूप प्रतीत होगा। यदि प्रकाश बाईं ओर से डाला जाए, तो बुद्ध के चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान आ जाती है। यदि प्रकाश दाईं ओर से डाला जाए, तो चेहरा गंभीरता से परिपूर्ण प्रतीत होगा। यह प्रतिमा कोणीय मूर्तिकला में प्राप्त उत्कृष्ट उपलब्धियों का प्रमाण है।'

जैसे-जैसे राव उस गुफा में मौजूद चित्रों का विस्तृत वर्णन करते गए, करुणा लिखती रहीं —जैसे कि राजकुमार का ऋषि का उपदेश सुनना, उनका स्नान करना, उनका अपनी पत्नी से बातचीत करना, पद्मपाणि-बोधिसत्व आदि। उन्होंने दैनिक जीवन की सामान्य वस्तुओं, आभूषणों, केशविन्यास, पुरुषों और महिलाओं के शारीरिक बनावट आदि के आधार पर अनुमानित संस्कृति, जीवन मूल्यों आदि के बारे में नोट्स बनाए, जो चित्रों से प्राप्त किए जा सकते थे।

जयराव्रे शाम 5 बजे गुफा संख्या 1 पर पहुँचे। परिचारक निर्धारित समय तक प्रकाश सेवा प्रदान करने के बाद जा चुका था। राव टॉर्च से गुफा की बारीकियों का अवलोकन कर रहे थे और नोट्स लिखवा रहे थे। अंदर प्रवेश करते हुए जयराव्रे ने कहा, 'लगता है आपने गुफा की सामग्री के बारे में पूरी तरह से नोट्स बना लिए हैं। अब रुक जाइए। गाड़ी आ गई है और नीचे की ओर खड़ी है। चालक यहीं हमारा इंतजार कर रहा है।'

जैसे-जैसे शाम ढल रही थी, उनके लिए बारीकियों को देखना मुश्किल होता जा रहा था। उन्होंने दिन का काम समेटा और जयराव्रे के पीछे-पीछे निकल पड़े। ढलते सूरज की धुंध में ढलान पर चलते हुए, जब चारों बैलगाड़ी में सवार हो गए, तो जयराव्रे ने कहा, 'हमने गुफा संख्या 26 पहले कभी नहीं देखी थी। यहाँ बुद्ध का महापरिनिर्वाण है। मूर्ति लगभग 25 फीट ऊँची है। वे अपने अंतिम क्षणों की प्रतीक्षा में वहाँ सो रहे हैं। हम दोनों अब तक वहीं थे।'

राव थक चुके थे। उन्होंने गाड़ी की रेलिंग से टेक लगाकर आराम से बैठने की कोशिश की। लेकिन इतने सारे लोगों के होने के कारण पैर फैलाने की जगह नहीं थी। करुणा भी

थक चुकी थी। फिर भी, वह अपने पिता के पास आकर बैठ गई और राव के लिए आराम से बैठने की जगह बना दी। गाड़ी के चलने से वे दोनों हिल रहे थे।

3

जयराव्रे ने अगले दिन जाने की योजना बनाई थी, लेकिन उनकी बेटी ने ज़िद की कि वे दो दिन और रुकें, क्योंकि उन्हें अजंता के बारे में डॉ. राव द्वारा लिखवाए गए नोट्स की उपयोगिता का पता चल गया था। अगले दो दिनों में, दोनों ने सभी प्रमुख गुफाओं का दौरा किया और विस्तृत नोट्स बनाए, जिनके आधार पर वे बीते युग के सांस्कृतिक परिवेश को बुन सके। गुफाओं में, डॉ. राव अवलोकन करते और नोट्स लिखवाते हुए लगातार खड़े रहते थे। करुणा भी खड़ी रहती थीं। शॉर्टहैंड में निपुण होने के कारण, वह तेज़ी से नोट्स लिख सकती थीं और उस दिन उन्होंने तीन किताबें भरकर नोट्स तैयार किए। सिंहली परिवार ने अपनी यात्रा की योजना को अंतिम रूप दिया और अगले दिन बस से जलगाँव और फिर दिल्ली जाने का निर्णय लिया। राव की औरंगाबाद जाने और पुणे होते हुए घर लौटने की योजना थी। मुख्यालय में एक महीने रहने के बाद, उन्होंने फिर से यात्रा करने की योजना बनाई - इस बार उत्तर भारत की।
फरदापुर का गेस्ट हाउस वास्तव में उन चारों के लिए पारिवारिक घर बन गया था। उनके कमरे आमने-सामने थे, इसलिए डॉ. राव और जयराव्रे रात के खाने के बाद कुछ देर बातें करते थे। इतिहासकार से बौद्ध धर्म के बारे में बहुत कुछ सीखने के बावजूद, जयराव्रे की जिज्ञासा अभी भी अधूरी थी। जहाँ अन्य इतिहासकार केवल घटनाओं का कालानुक्रमिक वर्णन करते थे, वहीं बुद्धिमान राव उस समय की अंतर्निहित धार्मिक प्रवृत्ति के दृष्टिकोण से इतिहास का वर्णन करते थे। राव को सुबह जल्दी बस पकड़नी थी, इसलिए जयराव्रे ने उनसे थोड़ी देर सोने के लिए कहा और अपने कमरे में चले गए। राव तुरंत नहीं सोए। जिस अजंता को वे पीछे छोड़ रहे थे, वह अपने पूरे ऐतिहासिक वैभव के साथ उनके मन में समाई हुई थी। चार दिनों से वे एक अलग युग के निवासी थे। कल वे आधुनिक युग की नागरिकता पुनः प्राप्त करेंगे।
रात के 9 बज रहे थे। उस सुनसान जगह पर फैली चांदनी ने उसे अजंता के ब्रह्मांड के समान एक स्वप्नलोक बना दिया था। उन्होंने अनुमान लगाया कि बौद्ध भिक्षुओं और कलाकारों की यात्रा ने ही उन्हें यह सुखद शांत स्थान प्रदान किया था, और चट्टान को तराशने और उसमें जीवन भरने की प्रेरणा दी थी। खिड़की से आती चांदनी के एक छोटे

से हिस्से को देखने के बजाय, उन्होंने पूरी चांदनी में डूबने का सोचा। अतिथिगृह से लगभग सौ कदम दूर टहलते हुए, वे वहाँ एक चट्टान पर बैठ गए। गुफाओं में दिन भर चलने की थकान उनके मन से गायब हो गई थी। उस चांदनी रात में उनका मन प्रसन्न हो गया। प्राचीन भारत का वह इतिहास, जिसे उन्होंने चित्रित करने का प्रयास किया था, उनकी आँखों के सामने स्पष्ट था। कई सहस्राब्दियों की लंबी सांस्कृतिक परंपरा उनकी कल्पना में उस चांदनी की चमक की तरह तैर रही थी। उन्हें उस केंद्र बिंदु को पहचानना था जिस पर उनका प्रस्तावित प्रवचन केंद्रित होगा; अब वे उस केंद्र बिंदु को स्पष्ट रूप से देख सकते थे। लेकिन इस सांस्कृतिक परंपरा का आरंभ बिंदु क्या है? क्या यह वेदों की तरह सर्वज्ञ है? या इतिहासकारों के मत के अनुसार यह 2000 ईसा पूर्व का है? या 3000 ईसा पूर्व का? क्या हम मानव जाति की सांस्कृतिक परंपरा के युग के इतिहास का आकलन मानवविज्ञानियों के दृष्टिकोण से कर सकते हैं? राव गहन चिंतन में लीन थे।

“जिसे कल सुबह पहली बस पकड़नी है, वो अभी तक जागा हुआ है! तुम किन विचारों में खोए हो?” करुणा उसके पीछे से आती हुई दिखाई दी। राव ने पीछे मुड़कर देखा। वह उसके पास आई, उसके करीब बैठी और बोली, “उम्मीद है मैंने आपके विचारों में खलल नहीं डाला होगा।”

नहीं। बैठो।

मैं आपको यह बताने आया हूँ कि नोट्स तीन किताबों में भरे हुए हैं। यहाँ इसकी प्रतिलिपि बनाना असंभव है। अगर मैं इसे आपको दूँ, तो आपको मेरी लिखावट समझने में मुश्किल हो सकती है। इसके अलावा, मैंने इसका काफी हिस्सा शॉर्टहैंड में लिखा है। हम लगभग एक महीने में अपने गृहनगर लौट जाएँगे। मैं इसे टाइप करके आपको डाक से भेज दूँगा। चिंता मत कीजिएगा। मैं इसे अवश्य भेज दूँगा। ठीक है?

कुछ संदेह के साथ, राव कुछ मिनटों के लिए चुप हो गए। फिर उन्होंने कहा, 'आप अच्छी तरह जानते हैं कि मुझे इसकी कितनी ज़रूरत है। इसे भेजना मत भूलना। हे भगवान, आपने मुझे एक अजनबी के हवाले कर दिया है!'

'मैं उसी ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह मुझे इस अजनबी की याद दिलाए,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

वे चुप हो गए। राव का मन अभी भी अपने विचारों में डूबा हुआ था। पांच मिनट की चुप्पी के बाद करुणा ने पूछा, 'मैं कुछ पूछना चाहती हूँ। क्या आप बोलने के मूड में हैं?'

'पूछ लेना।'

‘हर राष्ट्र के इतिहासकार ऐतिहासिक काल को शास्त्रीय युग, आधुनिक युग, प्रागैतिहासिक युग, इतिहास के प्रारंभ की तिथि आदि में विभाजित करने का प्रयास करते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि किसी भी राष्ट्र का इतिहास उन युगों में हुए परिवर्तनों के बारे में कोई सुराग नहीं देगा जिनसे वह गुजरा है। है ना?’

राव चिढ़कर बोले, 'मैं इन्हीं बातों पर सोच रहा था, और देखो, तुमने भी वही बात उठा दी! इतिहास के संदर्भ में, युग शब्द का कालक्रम के लिहाज़ से कोई महत्व नहीं है। किसी सभ्यता के तौर-तरीके उसमें रहने वाले लोगों के मूल्यों के अनुरूप होते हैं। कई बार ये मूल्य सदियों, यहाँ तक कि सहस्राब्दियों तक कायम रहते हैं। किसी विशेष कालखंड के दौरान कला, साहित्य, जीवन की नैतिकता, भौतिक विकास आदि में हुई प्रगति का विवरण तो दिया जा सकता है, लेकिन उसमें कोई मौलिक परिवर्तन नहीं देखा जा सकता। ये तो बस जीवन के मूल्यों के एक निश्चित समूह के ही रूपांतरण होते हैं। एक नए युग की शुरुआत तब होती है जब किसी सभ्यता के मौलिक मूल्यों में स्पष्ट परिवर्तन आता है। तब इतिहास भी एक नया रूप धारण कर लेता है।'

इतिहासकार इस परिवर्तन के चरण की पहचान कैसे करते हैं?

इसके लिए गहन अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है। जो केवल बाहरी परिवर्तनों की पहचान करता है, वह इतिहासकार नहीं है। किसी राष्ट्र की आत्मा में निहित गतिशीलता और उनके जीवन मूल्यों को केवल इतिहास ही नहीं, बल्कि कला, साहित्य और दर्शन भी अपने-अपने तरीके से दर्शाते हैं। इस अर्थ में, इतिहास और साहित्य के बीच कोई खास अंतर नहीं है। इतिहास किसी राष्ट्र की आत्मा और जीवन मूल्यों में व्याप्त गतिशीलता को दर्ज करता है, जबकि साहित्य इसे व्यक्तियों के स्तर पर करता है—चाहे वे वास्तविक हों या काल्पनिक। इतिहासकारों और साहित्यकारों की वे रचनाएँ जो राष्ट्र की आत्मा और जीवन मूल्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाती हैं, एक परिवर्तनकारी दौर का संकेत देकर महान बन जाती हैं। महाभारत उनमें से एक है। यह महाकाव्य की श्रेणी में आता है, और महाकाव्यों में साहित्य, इतिहास और दर्शन समाहित होते हैं।

करुणा लगभग दस मिनट तक चुप रही, राव के शब्दों पर विचार करती रही। आखिरकार, उसने कैम्ब्रिज में इतिहास में उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। यद्यपि वह इतिहास की विशेषताओं और उसके अध्ययन क्षेत्रों से संबंधित कई सिद्धांतों से परिचित थी, लेकिन उसे यह नहीं पता था कि डॉ. राव का यह सिद्धांत उनमें से एक है या नहीं। राव के इस विचार को लेकर उसके मन में संदेह उत्पन्न हुआ: 'आप मानते हैं कि इतिहास को मूल्यों में परिवर्तन के युग की स्पष्ट रूप से पहचान करनी चाहिए, उसके कारण को

बताना चाहिए और उसके प्रभाव का वर्णन करना चाहिए। मूल्यों में परिवर्तन के युग का वर्णन करने वाला इतिहासकार अंततः मूल्यों का ही मूल्यांकन करने लगता है। क्या वह ऐसा कर सकता है? इस दृष्टिकोण से, क्या इतिहास प्रगति-उन्मुख विकास है या मानव जाति की प्रतिगामी निष्क्रियता से उत्पन्न पीड़ा?'

यह कहना कि इतिहास हमेशा प्रगतिवादी रहा है, इसका अर्थ होगा कि हमारे पूर्वजों की संस्कृति हमारी संस्कृति से हीन है। यदि हम यह दूसरा दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो इसका अर्थ होगा कि हम अनिवार्य रूप से पतन की ओर अग्रसर हैं। युगों के वर्गीकरण को देखते हुए, जैसे कि कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग—इसी क्रम में—हम यह सोचने पर विवश हो सकते हैं कि इतिहास प्रतिगामी है, जैसा कि इन युगों में मूल्यों के क्रमिक क्षरण से संकेत मिलता है। लेकिन कलियुग इसका चरम बिंदु नहीं है। इसके बाद, युग-चक्र प्रत्येक बार पुनः आरंभ होता है। कृतयुग की शुरुआत होती है।

'इसका मतलब यह है कि यह चक्र कभी समाप्त नहीं होगा?'

'जिस प्रकार मानव इतिहास की उत्पत्ति को समझना असंभव है, उसी प्रकार इसके अंत को चिह्नित करना भी उतना ही मूर्खतापूर्ण होगा। इस निरंतर चक्र में, मूल्य कभी-कभी कमजोर पड़ सकते हैं; वे फिर से मजबूत हो सकते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो मानव इतिहास को ईश्वर का मनोरंजन कहा जा सकता है! इसलिए, इतिहासकारों को मूल्यों पर निर्णय देते समय सतर्क रहना चाहिए।'

करुणा ने संयमित स्वर में कहा, "हमने अजंता में चार आनंदमय दिन बिताए हैं। आपका अंतर्दृष्टिपूर्ण कथन इस शांत वातावरण में दिया गया है, जहाँ हम वाद-विवाद को भूल जाते हैं। मुझे लगता है कि यह विश्वसनीय है। क्या आप मेरी एक मदद करेंगे?"

मैं भला कौन सा उपकार कर सकता हूँ?

"कैम्ब्रिज से लौटे हुए मुझे एक साल हो गया है। मेरे यहाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने की कोई सुविधा नहीं है। मैं आगामी शैक्षणिक वर्ष में कोलंबो के किसी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य या शोध अनुगामी पद प्राप्त करना चाहता हूँ। यदि मैं इन मामलों में स्पष्टीकरण के लिए आपको पत्र लिखूँ, तो क्या आप उत्तर देंगे?"

'ज़रूर, मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा। कभी-कभी मेरा मूड खराब हो जाता है, इसलिए मुझे माफ कर देना।'

आधी रात बीतने के बाद, चांदनी मंद पड़ने लगी और चांद क्षितिज की ओर बढ़ता हुआ दिखाई देने लगा। वे अपने-अपने कमरों में चले गए। राव ने शुभ रात्रि कहने से पहले कहा, 'कल जाने से पहले मैं तुमसे एक बार फिर मिलूंगी।'

अगली सुबह उन्होंने एक-दूसरे के पते का आदान-प्रदान किया। करुणा के माता-पिता ने हाथ जोड़कर राव को हार्दिक विदाई दी। जब राव बस में चढ़ रहे थे, करुणा ने उनसे हाथ मिलाते हुए कहा, 'मैं चिट्ठियाँ भेज दूँगी। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी इसकी एक प्रति मिल जाएगी।'

अध्याय 4

1

जून-जुलाई का महीना था और हमेशा की तरह उग्र कपिला अपने मनमौजी रवैये पर उतर आई थी। लेकिन इस साल की बाढ़ में कोई हताहत नहीं हुआ। नंजनगुड नगर पालिका ने नदी के किनारे 'यहाँ तैरना मना है' के बोर्ड लगा दिए थे। नंजुंडा श्रोत्री की पहली पुण्यतिथि को एक महीना बीत चुका था। हालाँकि उनके निधन से परिवार में जो गहरा घाव हुआ था, उसे भरना नामुमकिन था, लेकिन समय के साथ शोक की तीव्रता कम हो गई थी। बच्चा अपने दादा-दादी के दिलों में बस गया था। डेढ़ साल के चीनी को अपने पिता की शक्ल-सूरत और शारीरिक बनावट विरासत में मिली थी। जब वह मुस्कुराता था और उसके चारों दाँत, जो अब तक उग चुके थे, दिखते थे, तो ऐसा लगता था मानो नंजुंडा अपने बेटे में पुनर्जन्म ले चुके हों।

श्रोत्री उसे अपने कंधों पर बिठाकर खूब खेलते-कूदते थे। सत्ताईस साल पहले, उन्होंने अपने बेटे नंजुंडा के साथ भी ऐसा ही किया था। वह बच्चा उन्हें 'टैडी, टैडी' कहकर चिढ़ाता और अपने पिता के सिर के पीछे के काले घने बालों को खींचता। 24 वर्षीय भागीरथम्मा बच्चे को खुश करने के लिए उंगलियां चटकातीं। नौकरानी लक्ष्मी बीच-बचाव करती और बच्चे को पिछवाड़े के बगीचे में ले जाती। श्रोत्री अब 55 वर्ष के हो चुके थे, उनके बाल सफेद हो चुके थे और घने बालों की जगह अब छोटे-छोटे बाल रह गए थे। फिर भी, पोता उन्हें खींचता और 'गम्पा, गम्पा' कहकर चिढ़ाता। उनकी बहू कात्यायनी दूर से यह सब देखकर मुस्कुराती।

दिनभर बच्चा अपने दादा-दादी और लक्ष्मी के साथ रहता था। कभी-कभार वह अपनी माँ से बात करने लगता था। रात को वह हमेशा अपनी माँ की गोद में सोता था। कात्यायनी, जो पलंग पर लेटी अपने बेटे को गले लगाती थी, अपने पति के साथ बिताए सुखद पलों की यादों में खोई रहती थी। उसके पति नंजुंडा श्रोत्री विनम्र स्वभाव के थे। वे अपने माता-पिता के प्रति वफादार थे। लेकिन बुजुर्ग दंपति ने कभी भी उन पर या अपनी बहू पर प्रभुत्व नहीं जमाया। उनकी कोई बेटी नहीं थी; कात्यायनी उनके घर में मानो उस कमी को पूरा करने आई थी। श्रोत्री अक्सर अपने बेटे और बहू के साथ हल्के-फुल्के अंदाज में बातें करते और दिल खोलकर हंसते थे। जब भी उनके कस्बे में कोई

थिएटर लगता, वे उन्हें नाटक देखने के लिए प्रेरित करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने अपने बेटे को गृहस्थी में दीक्षित किया और धार्मिक जीवन में लीन हो गए, अपना अधिकांश समय पूजा-पाठ और शास्त्रों के अध्ययन में व्यतीत करने लगे। अपने बेटे की मृत्यु से बहुत पहले, उन्होंने हेज्जिगे, देवरासनहल्ली, अरसिनाकेरे और कलाले स्थित अपने खेतों का दौरा किया था; ठीक तीन साल पहले की बात है। उन्होंने अपने बेटे को खेतों के प्रबंधन के साथ-साथ घर-गृहस्थी संभालने का प्रशिक्षण दिया था। पारिवारिक कार्यों से सेवानिवृत्त हो चुके उन्होंने अनिच्छा से ही सही, सब कुछ नए सिरे से शुरू किया। उन्होंने फसल कटाई के समय खेतों का दौरा करने, बटाईदारों से अपना हिस्सा लेने, भूमि कर चुकाने आदि की दिनचर्या को अपना लिया।

कात्यायनी का दिल अपने सास-ससुर के प्यार और स्नेह से भर उठता था, और साथ ही अपने पति की यादों से भी। वह अपने वैवाहिक जीवन की घटनाओं को याद करती रहती थी: हंसी-मजाक, पति-पत्नी का प्यार, पति का उस पर गुस्सा करना, खेत में देर होने पर दरवाजे पर उसका बेसब्री से इंतजार करना, आदि। नींद न आने के कारण जब वह करवट बदलती, तो उसकी सास पूछती, 'बेटी, नींद नहीं आ रही?'

‘आओ, अम्मा।’ हालाँकि यही जवाब दिया जाता, सास जानती थी कि यह सच नहीं है। उसे अब अपने बेटे की देखभाल करने की हर बात याद आ रही थी। ‘देखो बेटा, बचपन में वह चीनी जैसा दिखता था। वह रात में जाग जाता और पालने में खेलने लगता। मुझे जागकर उसके साथ रहना पड़ता था। नहीं तो वह शिकायत करने लगता। तुम्हारे ससुर ऊपर वाले कमरे में चले जाते थे।’ कात्यायनी जानती थी कि उसके ससुर ऊपर वाले कमरे में क्यों चले जाते थे, जबकि उनकी पत्नी और बच्चा नीचे सो जाते थे। ‘वह पूरी रात खेलता रहता और भोर होते ही सो जाता। तब मैं उठती, नहाती और तुम्हारे ससुर की पूजा-अर्चना की तैयारी करती। कभी-कभी जब मैं जाग नहीं पाती, तो मैं लक्ष्मी को जगाकर उसे उसके हवाले कर देती और खुद सो जाती। बाद में, मैं और लक्ष्मी एक ही कमरे में रहने लगे।’ फिर वह झुंझलाहट में आह भरती और रोने लगती, ‘हम अपना खून बहाते हैं, उन्हें जन्म देते हैं और उनकी देखभाल करते हैं।’ इन सब बातों को नजरअंदाज करने पर भगवान उन्हें अपने पास बुला लेते हैं।

‘खुद को संभालो, अम्मा। हम क्या कर सकते हैं?’ अब सास को सांत्वना देने की बारी कात्यायनी की थी। थोड़ी देर बाद, बैठक में सो रहे अपने ससुर को याद करते हुए उसने कहा, ‘अम्मा, हम ही खोखले हैं। उनकी मृत्यु के डेढ़ साल बाद भी हम शोक मना रहे हैं। पापा ही अकेले हैं जो इतने शांत हैं। जब उन्हें खबर मिली कि उनका बेटा डूब गया

है, तो वे तुरंत वहाँ पहुँचे। हम भी उनके तुरंत बाद वहाँ गए; उनके बेटे का कोई पता नहीं था। उन्होंने हमें कैसे सांत्वना दी और वापस घर लाए! मैं रोने लगी और बैठक में खंभे के पास गिर पड़ी। आप इसी कमरे में बेहोश हो गई थीं। पापा ने कहा, “लक्ष्मी, उसका ध्यान रखो। उसके सिर पर थोड़ा पानी छिड़क दो,” और मेरे पास आए। मैं भी तेजी से बेहोश हो रही थी। वे मेरे पास बैठ गए, मेरा सिर अपनी जांघ पर रखा और कहा, “बेटी, ऐसे ही हालात में हमें अपना धैर्य मजबूत करना चाहिए। भगवान ऐसा हमारी परीक्षा लेने के लिए करते हैं।” उस पल की मेरी निराशा में, उनके शब्द व्यर्थ लग रहे थे। उन्होंने गंभीरता से तो कहा, लेकिन उनमें गजब का संयम था! मैंने आँखें खोलीं और उन्हें देखा। मैं यह देखकर दंग रह गया कि अपने इकलौते बेटे को खोने वाला पिता ऐसा कैसे कह सकता है। अगर हममें उनकी जैसी हिम्मत होती, तो हम किसी भी मुश्किल का सामना कर सकते थे, है ना?

'सच है। फिर भी, उस हद तक! जब दुःख सताता है, तो रोना चाहिए। इससे मन हल्का होता है। पिछले डेढ़ साल से हम चुपचाप अपने दिल में रो रहे हैं; हमें उनकी उपस्थिति में नहीं रोना चाहिए। लेकिन अगर हम उनकी उपस्थिति में रोएं और वे भी रोएं, तो कितनी राहत मिलेगी, है ना?'

तब तक कमरे से खर्राटों की आवाज़ सुनाई देने लगी थी। भागीरथम्मा अपनी बहू से बातचीत करती रहीं। ‘देखो, लक्ष्मी कितनी गहरी नींद सोती है। जब वह छोटा बच्चा था, तो वही उसे गोद में लेकर खेलती-कूदती और उसका मनोरंजन करती थी। वही उसे स्कूल ले जाती थी। वह उसे अपने बेटे की तरह प्यार करती थी। जब वह नदी में डूब गया, तो वह भी रोई। जैसे उसने हम सबके साथ किया, मुझे लगता है तुम्हारे पापा ने उसे भी वेदांत के कुछ उपदेश दिए थे। उसने अपने दुख को काबू में रखा और अपने काम में लग गई! क्या वह बेहतर नहीं है? जैसा तुमने कहा, हमें सुख-दुख दोनों को सहना सीखना चाहिए।’

तब तक कात्यायनी की आँखें खुल चुकी थीं। कभी-कभी, अपनी माँ के बगल में सो रहा बच्चा जाग जाता और रोने लगता। ताकि उसकी बहू को परेशानी न हो, भागीरथम्मा उसे अपने पास ले जाती और उसे वह दूध पिलाती जो उसने पास रखा होता। अगर उसका रोना बंद नहीं होता, तो श्रोत्री बैठक से पुकारते, 'उसे यहाँ लाओ।' मंद रोशनी में अपने दादा का चेहरा देखकर, बच्चा हकलाते हुए 'गम्पा, गम्पा' कहता और जल्दी से उनके पास पहुँच जाता। श्रोत्री अपनी पत्नी से सोने के लिए कहते और बच्चे को पिछवाड़े के बगीचे में ले जाते, चक्कर लगाते और उसे टिमटिमाते तारे दिखाते। थोड़ी देर बाद,

बच्चा उनकी गोद में सो जाता। वह धीरे से अंदर आते, उसे अपने बिस्तर पर लिटाते और उस पर शॉल डाल देते। अगर उन्हें नींद आती, तो वे सो जाते। अन्यथा, वे ऊपर अपने अध्ययन कक्ष में जाकर दीपक जला लेते।

2

दो साल की उम्र तक चीनी को संभालना नामुमकिन हो गया था। लक्ष्मी हमेशा उस पर नज़र रखती थी, फिर भी वह सबको चकमा देकर गली में निकल जाता था। एक दिन वह मंदिर तक गया, और वापस आने का रास्ता न जानने के कारण मंदिर परिसर में ही चक्कर लगाता रहा और रोता रहा। जब तक मंदिर के बाण वादकों ने उसे पहचाना और घर ले गए, तब तक श्रोत्री पूरी गली में उसे ढूंढ चुका था और लक्ष्मी ने घर के पीछे बहने वाली गुंडाला नदी के किनारे भी उसे खोज लिया था। उसके बाद से, वे घर के दोनों दरवाजे बंद रखने लगे ताकि वह दोपहर में चिलचिलाती धूप में बाहर न जा सके।
एक बार मार्च के महीने में वह लापता हो गया। शाम चार बजे तक उसका कोई पता नहीं चला। श्रोत्री चिंतित हो गया, उसे लगा कि वह नदी पर चला गया होगा। वह दौड़कर मणिकर्णिका के डेक पर पहुँचा। पूर्व दिशा में, जहाँ गुंडाला नदी कपिला में मिलती थी, चीनी अपने हमउम्र चरवाहों के साथ रेत पर मेंढक का पिंजरा बना रहा था। जब उसने अपने दादा को देखा, तो वह उनके पास गया और बोला, 'मेरा पिंजरा बहुत बड़ा है,' और अपनी बाहें फैलाकर इशारा किया। दोपहर भर धूप में खेलने के कारण उसे बहुत पसीना आ रहा था। प्यास लगने पर उसने नदी के किनारे बने गड्ढों से चार बार पानी पिया। श्रोत्री उसे उठाकर घर लौट आया। क्रोधित होकर उसने घर की महिलाओं को फटकारा कि उन्होंने बच्चे की ठीक से देखभाल नहीं की। उसने बच्चे को भी चेतावनी दी, 'अगर तुम घर से बाहर गए, तो मैं तुम्हारे पैर बाँध दूँगा।'
अपनी मां के बगल में सो रहे चीनी को रात करीब दस बजे सांस लेने में तकलीफ होने लगी। कात्यायनी ने अपना हाथ उसके माथे पर रखकर अपनी सास का ध्यान अपनी ओर खींचा। “अम्मा, इसे बुखार है, देखिए।” उसे देखकर भागीरथम्मा नीलगिरी का तेल लाईं और उसके माथे, गर्दन और पैरों की मालिश करने लगीं। बैठक में आराम कर रहे श्रोत्री को गैस हुई और वे देखने आए। चीनी सो रहा था। उन्होंने कहा, “कल सुबह दवा दे देते हैं,” और चले गए।

अगली सुबह, श्रोत्री को कलाले जाना था। चीनी का बुखार भी उतर चुका था। श्रोत्री ने उसे कस्तूरी की गोली देने का निर्देश दिया, स्नान किया, दोपहर का भोजन किया और चले गए। चीनी उठकर इधर-उधर खेलने लगा। भागीरथम्मा और कात्यायनी दोनों को राहत मिली कि कल रात की उनकी चिंता अब दूर हो गई थी। बुजुर्ग महिला रसोई में गईं। अपनी सास से उस पर नज़र रखने के लिए कहकर, कात्यायनी चीनी को वहीं छोड़कर पिछवाड़े के कुएँ के पास कपड़े धोने चली गईं। जब वह वापस आईं, तो चीनी वहाँ नहीं था। वह गायब हो गया था! चिंतित होकर, कात्यायनी उसे ढूंढने लगीं। तभी, लक्ष्मी पिछवाड़े से चीनी को साथ लेकर घर में आईं और बताया, 'मवेशियों को चरागाह में ले जाकर वापस आते समय, मैंने उसे गुंडाला नदी के पानी में खेलते हुए देखा।'

गर्मी के मौसम में, गुंडाला नदी नदी के एक किनारे बहती थी और पानी केवल टखनों तक ही गहरा होता था। इसमें बच्चों के डूबने का भी कोई खतरा नहीं था। घर की महिलाओं ने घर के दोनों निकास द्वार फिर से बंद कर दिए। लेकिन दोपहर 3 बजे तक, चीनी को फिर से बुखार आ गया। शाम को जब श्रोत्री वापस लौटी, तब तक बुखार काफी बढ़ चुका था। बच्चे की आंखें लाल हो गई थीं, चेहरा सूज गया था और वह लगभग बेहोश हो गया था।

श्रोत्री तुरंत गांव के वैद्य वेंकटचल पंडित को बुला लाए। पंडित ने उनकी नाड़ी देखकर कहा, 'टाइफाइड है। बुखार 21 दिनों तक रह सकता है। आपको सावधान रहना चाहिए। मैं दवा दूंगा। जान का कोई खतरा नहीं है।'

पंडित जी का आकलन सही था। बुखार कम नहीं हुआ। उसे पूरी तरह होश भी नहीं आया। जब भी उसके दादाजी उसे पुकारते, वह कुछ बुदबुदाता, मानो दूर से कुछ सुन रहा हो। उसे और कुछ महसूस नहीं हो रहा था। न रोता, न मुस्कुराता। अपने घर, दादाजी, दादीजी, माँ और लक्ष्मी से बिछड़कर वह बस एक अचेतन अवस्था में जी रहा था। बस साँस लेने में तकलीफ हो रही थी। बच्चे का शरीर इतना कमजोर हो गया था कि साँस लेने का दर्द भी सहन नहीं कर पा रहा था।

बारहवें दिन तक पीड़ा जारी रही; फिर हालत और बिगड़ गई। घर में किसी को भी यकीन नहीं था कि बच्चा ठीक हो पाएगा या नहीं। लेकिन किसी ने भी इस बात को ज़बान से नहीं कहा। पंद्रहवें दिन की रात को उसकी साँसें अनियमित हो गईं। बुखार के कारण बंद रहने वाली आँखें अब बस थोड़ी सी खुलीं, जिनमें चमक नहीं थी। चेहरे की रौनक भी मिट गई थी। भागीरथम्मा, जो हर समय बच्चे के पास ही थीं, ने अपने पति को पुकारा। श्रोत्री तुरंत दौड़े और बच्चे के हाथ-पैर देखे; उसके पैर ठंडे पड़ रहे थे और माथे

पर पसीने की बूँदें दिखाई दे रही थीं। साँसें अनियमित रूप से निकल रही थीं। अब तो सभी को बच्चे के बचने की उम्मीद नहीं थी। लेकिन श्रोत्री ने उम्मीद नहीं छोड़ी। उन्होंने पास ही खड़ी लक्ष्मी से तुरंत पंडित जी को बुलाने को कहा। फिर उन्होंने अपनी पत्नी से गोबर की राख लाने को कहा।

वह बच्चे के पैरों पर राख मलने लगा, उसे गर्म करने के लिए फुसलाने लगा। उसने हाथों पर भी थोड़ी राख मली। अंत में, उसने बच्चे की कमजोर छाती पर नीलगिरी का तेल लगाया और पंडित के आने की प्रतीक्षा करने लगा। कात्यायनी स्थिति को समझ गई। वह वहाँ और नहीं खड़ी रह सकी। वह सीधे रसोई की ओर चल पड़ी। वह अपने दुख को और नियंत्रित नहीं कर सकी; वह फूट-फूट कर रोने लगी। फिर वह जोर-जोर से रोने लगी। घर के बाहर से आती आवाजों से पंडित के आने का संकेत मिला। श्रोत्री ने अपनी बहू से कहा, 'बच्ची, ऐसे हालात में रोने से कोई फायदा नहीं होगा। जाओ पंडित जी का स्वागत करो और उन्हें सीधे यहाँ ले आओ।'

वहाँ पहुँचकर पंडित ने नब्ज़ जाँची। उन्होंने बच्चे को रगड़ने वाली शिला माँगी। उन्होंने एक गोली निकाली और उसे शहद में भिगोकर शिला पर डेढ़ चक्कर रगड़ा, फिर उसे उंगली पर लेकर बच्चे को चाटने को कहा। बच्चे में न तो चाटने की ताकत थी और न ही होश। यह जानते हुए कि वह लार में मिल जाएगी और गले से नीचे चली जाएगी, पंडित ने उसे बच्चे की जीभ पर मल दिया। पैरों पर राख मलने के असर से ही बच्चे का तापमान बढ़ने लगा। बुखार स्थिर रहा; बढ़ा नहीं। पंडित दो घंटे तक वहीं रहे, एक गोली दी और कहा, 'अब मैं चलता हूँ। हर दो घंटे में इस गोली को शहद में भिगोकर डेढ़ चक्कर उसकी जीभ पर मलते रहना। मैं कल सुबह फिर आऊँगा।'

पंडित जी के जाने के बाद, कात्यायनी ने खुद को सांत्वना दी और अपने बेटे के पास गईं। भागीरथम्मा की आँखों में आँसू तो नहीं थे, लेकिन उनका चेहरा ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें दिल का दौरा पड़ गया हो। लक्ष्मी उनके पास आईं, बैठ गईं और बोलीं, ‘शीनप्पा, मैं बच्चे को अपनी गोद में ले लूँगी। कृपया उसे ध्यान से दीजिए।’ श्रोत्री, जो गहरी सोच में डूबे हुए थे, बोले, ‘नहीं, उसे मेरी गोद में ही रहने दीजिए।’ फिर उन्होंने अपनी बहू की ओर मुड़कर कहा, ‘वह घड़ी यहाँ ले आओ जो बैठक में रखी है। मुझे हर दो घंटे में उसे दवा देनी है। मुझे समय पर याद दिला देना। तुममें से किसी को भी दवा को डेढ़ चक्कर घुमाकर रगड़ने का तरीका नहीं पता। मैं उसे रगड़कर उसे चाटने के लिए कहूँगा।’

भागीरथम्मा कपिला का जल से भरा एक तांबे का पात्र और उसमें एक तांबे का चम्मच लेकर आईं। बच्चे को आराम से लिटाने के लिए श्रोत्री ने उसके अंगों को थोड़ा ढीला किया। श्रोत्री हृष्ट-पुष्ट शरीर के थे; उन्हें दरवाजों से गुजरने के लिए झुकना पड़ता था। लगभग 60 वर्ष की आयु में भी वे पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त थे। वे प्रतिदिन आसानी से 20 मील से अधिक पैदल चल लेते थे। उनका चेहरा चौड़ा था और उनकी आँखों में एक भावपूर्ण चमक थी। अपनी गोद में बैठे बच्चे की परवाह किए बिना, उन्होंने उस पात्र से एक चम्मच पानी अपने दाहिने हाथ की हथेली में भरा और 'जो भगवान विष्णु का स्मरण करता है, वह भीतर और बाहर से पवित्र हो जाता है' मंत्र का जाप करते हुए उसे आसपास छिड़क दिया। फिर उन्होंने - जैसा कि वे अक्सर अपनी दैनिक पूजा और अन्य धार्मिक अवसरों पर करते थे - अपने दाहिने हाथ की हथेली से बारी-बारी से तीन चम्मच पानी अपने होठों तक पहुंचाया और भगवान विष्णु के पर्यायवाची शब्दों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक घूंट को पिया। ऐसा करने के बाद, उन्होंने अपने यज्ञोपवीत (पवित्र धागे) की गांठ को अपने दाहिने हाथ की उंगलियों से पकड़ लिया और मन ही मन गायत्री मंत्र का जाप करने लगे।
कात्यायनी की निगाहें बच्चे के चेहरे पर टिकी हुई थीं। भागीरथम्मा और लक्ष्मी श्रोत्री को देख रही थीं। इन दोनों को कुछ हद तक तसल्ली मिली।

3

श्रोत्री ने सनातन जीवन शैली अपनाई। उनके अटूट विश्वास के अनुसार, पुरुष का विवाह पारिवारिक जीवन की शुरुआत के लिए होता है, पारिवारिक जीवन इस संसार में अपने नियत कर्तव्य का निर्वाह करने का साधन है, और संतानोत्पत्ति वंश वृक्ष को आगे बढ़ाने के लिए होती है। जो व्यक्ति संतानोत्पत्ति किए बिना इस संसार से विदा हो जाता है, वह अपने वंश को समाप्त कर देता है, जिससे एक शून्य उत्पन्न हो जाता है। व्यक्ति का अस्तित्व ही एक विरासत में मिला ऋण है, जिसे केवल संतानोत्पत्ति के द्वारा ही चुकाया जा सकता है।
उन्हें अपने वंश पर अटूट विश्वास था। उनका मानना था कि 'श्रोत्री वंश' 'श्रुति' यानी वेद का पर्याय है। जिस प्रकार हमारे वंश के संस्थापक ऋषियों के कालक्रम को मापना असंभव है, उसी प्रकार किसी विशिष्ट वंश की प्राचीनता का निर्धारण करना भी असंभव है। कोई भी उस वंश की प्राचीनता को पूरी तरह से नहीं समझ सकता जो मनुष्य की

समझ से परे है। फिर भी उनका दृढ़ विश्वास था कि व्यक्ति का मान-सम्मान और गौरव उसके वंश से प्राप्त होता है। हे भगवान, मैं श्री श्रीनिवास श्रोत्री, काश्यप-आवत्सर-नैधृव त्रयी के काश्यप-गोत्र से संबंधित, आश्वलायन सिद्धांतों का पालन करने वाला और ऋग्वेद का अनुयायी, आपके समक्ष नतमस्तक होता हूँ—वे प्रतिदिन संध्यावंदन के दौरान अपने इस पाठ का पाठ करते थे। हर बार उसे एक अलग ही आनंद का अनुभव होता था। वह इस प्रबल जागरूकता के साथ अपनी दिनचर्या में लगा रहता था कि यदि वह अपने पूर्वजों के उस गौरवशाली मार्ग पर चलने में विफल रहा, तो वह पूरे वंश को कलंकित करेगा।

अपने बेटे की शादी के बाद, उन्होंने सेवानिवृत्ति का जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया था। उस बेटे के दुखद निधन के बाद, उन्होंने अपनी सारी आशाएँ अपने पोते पर टिका दीं। उन्होंने अपना नियमित जीवन फिर से शुरू किया और अपने पोते के परिवार बसाने की प्रतीक्षा करने लगे। अपने जीवन में, उन्होंने कभी भी लोभ और लालसा जैसी नीच आकांक्षाओं का सहारा नहीं लिया। फिर भी, वे अपने परिवार को समृद्ध बनाने के लिए समृद्धि की आकांक्षा रखने के हकदार थे, क्योंकि वे चाहते थे कि उनका पोता—जो अंततः अपना परिवार बसाएगा—उनकी संपत्ति का उत्तराधिकारी बने। जब उनके पिता नंजुंडा श्रोत्री सीनियर का देहांत हुआ, तब श्रीनिवासा श्रोत्री 18 वर्ष के थे। उनकी अभी-अभी शादी हुई थी। यह एक चमत्कार ही था कि बीमार वरिष्ठ श्रोत्री इतने वर्षों तक जीवित रहे! बीमार व्यक्ति अपने बेटे की शादी के तुरंत बाद चल बसे, मानो उन्होंने वही देख लिया हो जिसकी उन्हें प्रतीक्षा थी। श्रीनिवासा श्रोत्री की माता का देहांत चार वर्ष पहले हो गया था। अपने पिता के इकलौते पुत्र होने के नाते, उन्हें कुछ संपत्ति विरासत में मिली। और उस संपत्ति से उन्हें अपनी संपत्ति से कहीं अधिक आय प्राप्त हुई। न तो श्रीनिवास श्रोत्री ने अधिक संपत्ति अर्जित की थी और न ही उन्होंने विरासत का कोई अंश बर्बाद किया था। आकस्मिक खर्चों के लिए बैंक खाते में रखी गई कुछ धनराशि को छोड़कर, वे अपनी वार्षिक आय का सारा हिस्सा विवेकपूर्ण तरीके से ईश्वर के नाम पर दान-पुण्य के कार्यों में खर्च करते थे: मंदिर के वार्षिक रथ उत्सव में सभी के लिए भोजन, सहायता चाहने वालों के लिए दान, विद्वानों और संगीतकारों के लिए मानदेय, अकाल के दौरान किसानों को सहायता आदि।

यद्यपि उन्होंने बचपन से ही जीवन में वैराग्य का भाव धारण कर लिया था, फिर भी जब उनके वंश का इकलौता उत्तराधिकारी—उनका पोता—उनकी गोद में बेजान पड़ा था और मृत्यु उन्हें घूर रही थी, तब वे शांत नहीं रह सके। उनका मन गायत्री मंत्र के पाठ में

लीन था, जिससे वे पूर्ण श्रद्धा से मंत्र का जाप नहीं कर पा रहे थे। उनके व्याकुल मन ने प्रार्थना की कि केवल गायत्री मंत्र ही बच्चे को बचा सकता है। भला लाभ की चाह में की जाने वाली प्रार्थना में निस्वार्थ भक्ति कैसे समा सकती है? श्रोत्री, जिन्होंने कभी लाभ की कामना नहीं की, अब इस मध्यरात्रि के समय अपने पोते के जीवन के लिए प्रार्थना कर रहे थे...जब एक दिन बीत चुका था और अगला दिन शुरू हो रहा था।

भागीरथम्मा के बेटे की मृत्यु के बाद, उनका पोता उनके मातृ प्रेम का केंद्र बन गया था। उसे अपना बेटा मानकर, वे प्रसवोत्तर अवस्था में लौट आई थीं। यदि वह भी विस्मृति में खो जाए, तो उनके मातृ प्रेम का पात्र कौन होगा? वे कहतीं, 'हे भगवान, आप हमें किस जन्म के किस पाप के लिए क्या दंड दे रहे हैं?' और भगवान के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करतीं।

विधवा कात्यायनी के लिए अपने पति के साथ बिताए शुभ क्षणों को भूलना नामुमकिन था। बचपन से ही उन्होंने गरीबी झेली थी। उनके पिता श्रीकांतैया श्रीरंगपट्टना में वकील थे। कात्यायनी जब आठ साल की थीं, तभी उनकी मां का देहांत हो गया। उनके पिता ने दोबारा शादी कर ली थी और हालांकि वे अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे, लेकिन उन्हें कभी मां का प्यार नहीं मिला। कात्यायनी रोज़ाना ट्रेन से मैसूर जाती थीं और उन्होंने सफलतापूर्वक इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी की। उन्हें एक होशियार छात्रा के रूप में भी ख्याति प्राप्त थी। श्रीकांतैया ने अपनी बेटी का विवाह नंजुंडा से करवाया, जो उस समय बीए की पढ़ाई कर रहे थे। शादी के बाद उन्होंने परीक्षा दी, लेकिन पास नहीं हो पाए। वे दोबारा परीक्षा देने की तैयारी कर रहे थे कि तभी उनका देहांत हो गया। अपने माता-पिता, पत्नी और बेटे को पीछे छोड़ गए।

जब उनके पति का देहांत हुआ, तो उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय सा लगने लगा। अब उन्हें एहसास हुआ कि उनका भविष्य पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था, बल्कि अनिश्चित सा हो गया था। उनके ससुराल वाले थे, उनका बेटा था, उसे बड़ा होना था, शिक्षा प्राप्त करनी थी, एक आदमी बनना था और अपना परिवार बसाना था—क्या ये सभी पड़ाव भी उनके भविष्य का हिस्सा नहीं थे? अब तक उन्होंने इस भविष्य को अनसुना कर रखा था। दुर्भाग्य से, यह अहसास उन्हें उस समय हुआ जब वह इस भविष्य को भी खोने के कगार पर थीं! दादाजी की गोद में सो रहा बच्चा ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहा था। इससे पहले कि वह फिर से रोने लगतीं, वह जल्दी से वहां से उठीं, रसोई में गईं और जी भर कर रोईं।

उस घर से जुड़ी एक और शख्सियत लक्ष्मी थीं। लक्ष्मी के माता-पिता श्रोत्री के पिता के समय में इस घर में घरेलू नौकरानी का काम करते थे। जब लक्ष्मी 15 वर्ष की थीं, तब श्रीनिवास श्रोत्री ने उनकी शादी का खर्च उठाया। लेकिन शादी के चार साल बाद ही उनके पति की हत्या कर दी गई। विधवा लक्ष्मी श्रोत्री परिवार में लौट आईं। तब तक उनके पिता का भी देहांत हो चुका था। उनकी माता का जन्म के समय ही देहांत हो गया था। तब से लक्ष्मी परिवार का हिस्सा बन चुकी थीं और इस घर के सभी सुख-दुखों में भागीदार थीं। उन्होंने बचपन में नंजुंडा श्रोत्री की देखभाल की थी और अब वे उनके छोटे बेटे की देखभाल कर रही थीं। वह श्रीनिवास श्रोत्री के मन की पीड़ाओं को समझने में सक्षम थीं। अब यह परिवार अपने अंतिम बंधन को खोने की कगार पर था। वह जानती थीं कि अपनी जान जोखिम में डालकर भी इस परिवार की सेवा कैसे करनी है। उन्हें यह भी पता था कि भाग्य को नियंत्रित करने की शक्ति उनके पास नहीं है। लेकिन उन्हें शीनप्पा द्वारा गायत्री मंत्र के पाठ पर पूरा विश्वास था। इन सबमें, वही एक ऐसी शख्सियत थीं जिन्होंने आध्यात्मिक रूप से अप्रभावित रहते हुए इन सब बातों को सहन किया।

4

पूरी रात किसी को नींद नहीं आई; घर में सबके चेहरे बेजान थे। आँखें बकरियों जैसी सूजी हुई थीं। पंडित जी सुबह छह बजे आए, उन्होंने बकरे की नब्ज़ जाँची, उसके पैर और हाथ देखे और बोले, 'खतरा टल गया है। बस बुखार बचा है। नब्ज़ सामान्य है। पैर और हाथ गर्म हैं। आज सोलहवाँ दिन है। पाँच दिन बाद बुखार उतर जाएगा। हिम्मत रखो।'

'सचमुच पंडित जी?' भागीरथम्मा ने संदेह से पूछा। 'जी माता, भगवान नंजुंदेश्वर का आशीर्वाद है,' पंडित जी ने उन्हें आश्वस्त किया। बच्चे को दही और कुछ गोलियां देने की सलाह देकर पंडित जी चले गए। श्रोत्री ने बच्चे को पलंग पर लिटाया, कात्यायनी को पहरा देने के लिए कहा और स्नान करने चली गईं।

हालांकि अगले पांच दिनों तक तेज बुखार लगातार बना रहा, लेकिन उसकी सांसें सामान्य हो गई थीं। बीच-बीच में पिलाया जाने वाला फटा हुआ दूध उसके गले से आसानी से उतर गया। सभी को राहत मिली। इक्कीसवें दिन, बुखार कम हुआ और

अगले कुछ दिनों में उसे होश आ गया। होश आने पर उसका पहला शब्द था 'गम...पा...'।
पास ही खड़ी कात्यायनी ने पूजा कक्ष में अपने ससुर को पुकारा। श्रोत्री ने अपनी पूजा छोड़कर तुरंत बच्चे के माथे पर हाथ फेरा और कहा, 'चीनी!' बच्चे ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसके चेहरे से पता चल रहा था कि उसने अपने दादाजी की पुकार सुन ली थी। अपने बेटे को मृत्यु के मुंह से लौटते देख कात्यायनी की आंखों में आंसू भर आए। यह देखकर श्रोत्री ने कहा, 'बच्चे, जिस प्रकार हम सुख को स्वीकार करते हैं, उसी प्रकार हमें दुःख को भी स्वीकार करना चाहिए। अपने मन को भावनाओं के आवेश में छोड़ना किसी भी प्रकार से सहायक नहीं होगा।'
कात्यायनी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपने बच्चे के पास आई और उसका हाथ थाम लिया। इसके बाद एक महीने तक श्रोत्री ने स्वयं बच्चे के पोषण का ध्यान रखा। वह नियमित रूप से उसे पंडित द्वारा दिए गए आयुर्वेदिक टॉनिक और औषधीय जैम से खिलाते रहे।

अध्याय 5

1

राजा राव के ऑक्सफोर्ड से लौटने पर उनके महाविद्यालय की कला गतिविधियों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। ऑक्सफोर्ड छोड़ने से पहले वे महाविद्यालय के थिएटर संघ के अध्यक्ष थे। वे अपने विद्यार्थियों से सर्वश्रेष्ठ नाटकों का मंचन करवाते थे; उनके द्वारा सिखाए और मंचित नाटकों को काफी सराहना मिली। विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारण उनके सहकर्मी भी उनका बहुत सम्मान करते थे। इंग्लैंड से लौटने के चार महीने बाद ही एक प्रसिद्ध ब्रिटिश शेक्सपियर नाटक मंडली भारत दौरे पर आई। मैसूर में चार नाटक प्रदर्शित होने थे। स्वाभाविक रूप से, रेलवे स्टेशन पर मंडली का स्वागत, मंच की व्यवस्था, दर्शकों की बुकिंग, पहले दिन मंडली और उसके सदस्यों का दर्शकों से परिचय और ऐसे ही अन्य कार्यों की जिम्मेदारी राजा राव पर आ गई। उन्हें इस तरह के काम में भी बहुत रुचि थी। मैसूर में सभी शो बेहद सफल रहे। अंतिम शो के बाद, मंडली के प्रबंधक ने राजा राव को मंच पर आमंत्रित किया, उन्हें फूलों का गुलदस्ता भेंट किया, उनकी सहायता के लिए धन्यवाद दिया और मंच डिजाइन के उनके ज्ञान की भरपूर प्रशंसा की। राजा राव की प्रतिष्ठा में कुछ और वृद्धि हुई।

महाविद्यालय के प्रधानाचार्य भी चाहते थे कि महाविद्यालय पाठ्येतर गतिविधियों में प्रगति करे। उन्होंने न केवल रंगमंच संघ के उपयोग के लिए एक बड़ा कमरा उपलब्ध कराया, बल्कि यह निर्देश भी दिया कि महाविद्यालय भवन के सामने स्थित खुले सभागार में हर महीने एक नाटक का मंचन किया जाए। राजा राव ने एक लाभार्थ कार्यक्रम का आयोजन किया और उससे प्राप्त धन से पर्दे, दृश्यावली और अन्य सामग्रियां खरीदीं।

राजा कभी भी पढ़ाई में गंभीर नहीं थे। यह सच है कि वे विद्वान थे, लेकिन अपने भाई की तरह अपनी विद्वत्ता बढ़ाने या किताबें लिखने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी। वे कॉलेज के थिएटर एसोसिएशन के लिए कुछ नाटक लिखते थे और उन्हें मंचित भी करते थे। वे सफल भी होते थे, लेकिन उन्होंने कभी उन्हें प्रकाशित करवाने की हद तक कदम नहीं उठाया। वे जानते थे कि साहित्य के रूप में उनका मूल्य नगण्य है। इंग्लैंड से लौटने के बाद उन्होंने दो एकांकी नाटक लिखे थे। वे सभी के साथ घुलमिल जाते थे, हर तरह के

लोगों से बातचीत शुरू करने और उनकी रुचि बनाए रखने में माहिर थे। वे मंच पर प्रभावशाली व्यक्तित्वों का परिचय करा सकते थे, धन्यवाद ज्ञापन को भी रोचक बना सकते थे, और भी बहुत कुछ। अंग्रेजी का उनका उच्चारण अंग्रेजों के समान और उतना ही धाराप्रवाह था। वे छात्रों के चहेते बन गए थे।

सदाशिव राव ने उत्तर भारत का अपना दौरा पूरा कर लिया था। अब वे अपने ग्रंथ के पहले खंड को लिखने की तैयारी में जुट गए थे। विश्वविद्यालय में उनके लिए एक सुसज्जित कमरा तय था। उसमें मेज, कुर्सियाँ, आरामकुर्सी, पंखा, किताबों की अलमारी और सभी सुविधाएँ मौजूद थीं। उन्होंने अपना टाइपराइटर खरीद लिया था, लेकिन उन्हें टाइपिंग का उतना अच्छा ज्ञान नहीं था। हालाँकि राजा को टाइपिंग आती थी, पर उसमें रुचि न होने के कारण वह अपने भाई की टाइपिंग में मदद नहीं करता था। अब राव सहायक प्रोफेसर बन चुके थे, इसलिए उनका वेतन बढ़ गया था। राजा भी कमा रहा था —उन्हें पैसों की कोई कमी नहीं थी। राजा के लौटने के बाद से राव घर के सामान से मुक्त हो गए थे। उन्होंने अब तक इस पर ज्यादा ध्यान भी नहीं दिया था। नागलक्ष्मी अपनी क्षमता के अनुसार घर का सारा काम संभाल लेती थीं। कभी-कभी वे उनसे तरह-तरह के मामलों में सलाह मांगती थीं: 'बच्चे को बुखार है। उसे किस डॉक्टर के पास ले चलें?' 'तुम्हारे बिस्तर की चादर फट गई है। चलो, नई ले लेते हैं।' राव उनके साथ डॉक्टर के पास जाते थे। साल में दो बार, वह अनिवार्य रूप से उसके साथ बाजार में तरह-तरह की खरीदारी के लिए जाता था। पृथ्वी को अक्षर सिखाना, अपनी भाभी के लिए साड़ियाँ खरीदना, अपने भाई के लिए लिखने की स्याही और अन्य स्टेशनरी भरना —ये सभी जिम्मेदारियाँ अब राजा पर आ गई थीं।

राव सुबह 9 बजे उठते थे। स्नान करने के बाद, वे कुछ देर बालकनी में धूप में चुपचाप बैठे रहते थे। 10 बजे वे राजा के साथ नाश्ता करते और फिर कॉलेज जाते। उन्हें सप्ताह में कुल चार घंटे से भी कम समय के लिए व्याख्यान देना होता था। अगर उनका व्याख्यान देने का मन नहीं होता, तो वे अपने छात्रों को बता देते और पुस्तकालय में अपने कमरे में जाकर बैठ जाते। किसी पुस्तक का कोई अध्याय पढ़ते; किसी पुस्तक में दिए गए विवरणों के आधार पर इतिहास के किसी विशेष काल के लोगों की जीवनशैली के बारे में नोट्स बनाते; प्राच्य विद्वानों द्वारा लिखित प्रत्येक लेख और पुस्तक को पढ़ते और नोट्स बनाते; प्राच्य अनुसंधान संस्थानों का दौरा करते और बिर्च की पांडुलिपियों की प्रतियां बनाते; विदेशों के विद्वानों को, जिनसे वे व्यक्तिगत रूप से परिचित थे या पत्राचार के माध्यम से, पत्र लिखते और कुछ संशयपूर्ण मामलों में उनसे स्पष्टीकरण

मांगते—उनका कार्यक्षेत्र भारत के इतिहास जितना विशाल था! 3 बजे, परिचारक उनके लिए रेस्तरां से कुछ नाश्ता और कॉफी लाता। इसके बाद, वे फिर से अपने काम में डूब जाते। शाम 7:30 बजे वे घर लौट आते। सुबह से शाम तक लगातार काम करने के बाद, उन्हें कुछ भी याद नहीं रहता था, इसलिए वे किसी से बात भी नहीं करते थे। वे बस बालकनी में रखी कुर्सी पर आराम से बैठे रहते थे। बीच-बीच में थोड़ा आराम मिलता था, जब वे नागलक्ष्मी और पृथ्वी से बातें करते और बढ़िया खाना खाते थे। बाकी समय वे चुपचाप कुछ खाते और अपने अध्ययन कक्ष में चले जाते। उनके घर का अध्ययन कक्ष किताबों से भरा रहता था—उनकी अपनी किताबें, पुस्तकालय और अन्य जगहों से उधार ली गई किताबें। उनका अध्ययन सुबह के छोटे घंटों तक चलता रहता था—2, 3, कभी-कभी 5 बजे तक! सुबह 9 बजे उठकर वे नहाते, नाश्ता करते और पुस्तकालय जाते; वे रविवार को भी वहाँ जाते थे। उन्हें पुस्तकालय की एक डुप्लीकेट चाबी दी गई थी।

2

एक रविवार दोपहर, पृथ्वी को बुखार हो गया। इससे चिढ़कर वह अड़ियल हो गया। 'अंकल, मुझे पापा के पास ले चलो।'
“नहीं बेटा। जब पापा शाम को घर आएंगे, तो वो तुम्हारे साथ होंगे। अब चुपचाप सो जाओ,” राजा ने उसे दिलासा दिया। वह कुछ देर तक अड़ियल रहा, लेकिन बुखार की गर्मी उस पर हावी हो गई और वह सो गया। राजा पृथ्वी के सिर के पास पलंग पर बैठ गया। खाना बनाने के बाद नागलक्ष्मी वहाँ आई और पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठ गई। अपने बेटे और राजा को देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह रोने लगी। राजा ने अपना सिर उठाकर उसे देखा और कहा, “मामूली बुखार के लिए क्यों रो रही हो? चलो आज शाम को उसे डॉक्टर के पास ले चलते हैं। हल्का बुखार है, ठीक हो जाएगा।”
‘मैं इसलिए नहीं रोई थी,’ नागलक्ष्मी ने अपनी साड़ी के पल्लू से अपने आंसू पोंछे।
‘तो फिर और क्यों?’
बुखार आता-जाता रहता है। बच्चा अपने पापा के लिए तरस रहा है। क्या वह कम से कम अब घर पर नहीं रह सकता?

उन्हें पृथ्वी की बीमारी के बारे में पता नहीं है। जब वे आज सुबह निकले थे, तब पृथ्वी ठीक थे। इसलिए, वे हमेशा की तरह अपने कार्यस्थल पर चले गए।
“सब कुछ पहले की तरह चलता रहा!” क्या यह आपके लिए इतना आसान नहीं है? उसे रविवार को भी काम क्यों करना चाहिए? उसे अपनी पत्नी और बच्चे के प्रति जरा भी स्नेह नहीं है।
राजा चुप हो गया। वह अपनी क्रोधित भाभी को और भड़काना उचित नहीं समझता था। नागलक्ष्मी ने वहीं से बोलना शुरू किया जहाँ उसने छोड़ा था। ‘उससे मेरी शादी को 11 साल हो गए हैं। “नागु, नागु”, वह कुछ दिनों तक अपनी नवविवाहित दुल्हन को पुकारता रहता था। फिर वह उसे जल्द ही भूल गया। जब उसने पीएचडी की पढ़ाई शुरू की, तो उसने उसे पूरी तरह से भुला दिया। वह एक और किताब लिखने में लग गया और उसे पाँच साल के लिए भुला दिया। अब यह विशाल महाकाव्य उसके दिमाग में घर कर गया है। मुझे बताया गया है कि यह कई खंडों वाली रचना है, और वह इसे मात्र 25 वर्षों में पूरा कर लेगा। तब तक उसे हमारी कोई ज़रूरत नहीं है। तब तक मैं 50 साल की हो जाऊँगी। पता नहीं इस आदमी का नक्षत्र क्या है! जब उसका प्रस्ताव आया, तो हमारे गाँव के थिप्पा जोइस ने हमारी कुंडली की तुलना की और कहा, “घातक जोड़ी!”’
‘क्यों? क्या अब तुम दोनों के बीच अनबन हो गई है और तुम दोनों झगड़ने लगे हो? अगर तुम दोनों के बीच हाथापाई भी हो जाए, तो भाई तो शांत ही रहेगा और पलटवार नहीं करेगा।’
‘मान लीजिए उसके पास दूसरे विकल्प भी हैं! कहावत है, “बंदूक चलाना तो आता है, लेकिन करछुल नहीं।” आप सब कुछ जानते हैं, लेकिन दिखावा करते हैं। एक नमूना आपका भाई है, दूसरा आप!’
राजा ने अपनी मुस्कान दबाई और चुप हो गए। उनके लिए यह कोई नई बात नहीं थी कि उनके भाई, जिन्होंने भारतीय राष्ट्र पर एक महाकाव्यनुमा मानवशास्त्रीय ग्रंथ लिखने का बीड़ा उठाया था, अपनी पत्नी और बच्चे को, और न ही उन्हें—राजा को—समय दे पा रहे थे। लेकिन राजा ने इसे व्यक्तिगत रूप से नहीं लिया। वे जानते थे कि इंग्लैंड के विद्वान कितना काम करेंगे। वे यह भी जानते थे कि उनके भाई का दृढ़ संकल्प अटूट लगन के बिना कायम नहीं रह सकता। उन्होंने अपनी भाभी से पूछा, 'तो क्या आप नहीं चाहतीं कि उनके भाई वह ग्रंथ लिखें और विद्वतापूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त करें? यदि वे एक योग्य विद्वान के रूप में सम्मान के पात्र हों, तो क्या आप प्रसन्न नहीं होंगी?'

‘मैं खुश क्यों न होऊं? क्या मैंने कभी उनकी साहित्यिक गतिविधियों पर आपत्ति जताई है? लेकिन अपनी पत्नी और बच्चे को क्यों नजरअंदाज किया जाए?’
अफसोस, विद्वानों का यही स्वभाव है। केवल भाई ही ऐसे नहीं हैं। मैंने इंग्लैंड में भी ऐसे विद्वानों को देखा है। इस देश में उनके जैसे विद्वान बहुत कम हैं; भाई जैसे विद्वान तो अपवाद हैं।
‘अगर आपको पता होता कि इंग्लैंड के विद्वान भी ऐसे ही होते हैं, तो आपको यह भी पता होता कि उनकी पत्नियां क्या करती हैं।’ वह अब भी गुस्से से उबल रही थी।
‘उनकी पत्नियों को ऐसी कोई समस्या नहीं होती, क्योंकि...छोड़ो,’ उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी। उसने इंग्लैंड में देखा था कि विद्वानों की पत्नियाँ इतनी पढ़ी-लिखी होती थीं कि वे अपने पतियों के शोध कार्य में उनकी सहायता करती थीं। वे नोट्स बनाने, पुस्तकालय का रखरखाव करने, प्रूफरीडिंग आदि में उनकी मदद करती थीं। वे अपने पतियों की निजी सचिव के रूप में काम करती थीं। राजा को पढ़ाने वाले प्रोफेसर की पत्नी भी ऐसा ही करती थीं। जाहिर है, उनके बीच बहुत संवाद होता होगा। इसके अलावा, पत्नी की सहायता के बिना पति की विद्वतापूर्ण उपलब्धियों में कोई प्रगति नहीं होती। इसलिए, पत्नी के निराश होने या ऊबने का कोई कारण नहीं था। वहाँ की व्यवस्था बिल्कुल अलग थी। व्यक्ति अपनी पसंद-नापसंद और जीवन लक्ष्यों के अनुसार जीवनसाथी चुनने के लिए स्वतंत्र था। आगे चलकर अगर उन्हें पता चलता कि वे अब एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं, तो वे बिना किसी दुर्भावना के अलग हो जाते और नए साथी की तलाश करते। राजा ने यह निर्णय लेने का साहस नहीं किया कि उस देश की व्यवस्था सही थी या इस देश की।
उन्हें अपने भाई और भाभी के बीच बौद्धिक अंतर का वाकिफ थे, और यह भी कि उनकी भाभी किसी भी तरह से अपने पति के विद्वतापूर्ण कार्यों में उनका साथ नहीं दे सकती थीं। शादी के बाद, जब वह उनके साथ मैसूर चली गईं क्योंकि वह अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते थे, तो उन्होंने उन्हें अंग्रेजी पढ़ाने की कोशिश की। उनकी इच्छा थी कि वह किसी भी तरह से मैट्रिक के बाद की पढ़ाई जारी रखें। उनके भाई ने भी उन्हें प्रोत्साहित किया था। लेकिन उन्होंने इसमें जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। उन्हें इसकी जरूरत भी समझ नहीं थी। 'पढ़ाई मेरे नसीब में नहीं है। वैसे भी, मुझे इसकी क्या जरूरत है?' यह कहकर उन्होंने उन दोनों को चुप करा दिया था।
उसकी चुप्पी से चिढ़कर नागलक्ष्मी ने वहीं से बात आगे बढ़ाई जहाँ उसने छोड़ा था।
'तुम चुप क्यों हो?'

‘बिल्कुल नहीं। मेरे भाई जैसे विद्वान हर जगह एक जैसे ही होते हैं। जैसे आप करते हैं, उनकी पत्नियां भी अपने पतियों को बर्दाश्त करती हैं।’
क्या यह सच है? खैर, आप भी अपने भाई की तरह ही पढ़े-लिखे हैं। फिर वह मुझसे आपकी तरह बात क्यों नहीं कर पाता?
वह केवल उसकी बात को टाल सकता था। 'मैं बहुत बातूनी हूँ। वैसे भी, मैंने कोई महान कृति लिखने का काम नहीं लिया है। मेरा मुख्य ध्यान नाटकों के निर्देशन पर है। और वहाँ बातचीत ही मेरा मुख्य काम है। क्या मैं कोई किताब लिखना शुरू करूँ?'
‘अरे! थिएटर पर ही ध्यान दो। लेखक बनने की कोशिश मत करना।’ फिर जैसे उसे कुछ याद आया हो, उसने कहा, ‘अब तुम 25 साल के हो गए हो... शादी के बारे में क्यों नहीं सोचते? घर पर मुझे साथ मिल जाएगा।’
'मेरे लिए शादी नहीं। मैं अभी खुश हूँ। मैं एक पत्नी लेकर आया हूँ और जैसे तुम मेरे भाई के साथ करते हो, वह मुझे ताना मारेगी, "तुम्हारे पास थिएटर के लिए समय तो है, लेकिन मेरे लिए नहीं? क्या मैं उतना भी देखने लायक नहीं हूँ जितना तुम पर्दा देखते हो?"'
पृथ्वी दिनभर बुखार से व्याकुल रहा। शाम पांच बजे राजा उसे डॉक्टर के पास ले गया और दवाइयां दिलवाईं। यह कोई गंभीर बीमारी नहीं थी। डॉक्टर ने बताया कि कल तक बुखार उतर जाएगा और लड़का ठीक हो जाएगा।
जब राव शाम 7 बजे घर लौटे, तो राजा घर पर नहीं थे। उनके आते ही नागलक्ष्मी भड़क उठीं, 'क्या रविवार को भी काम करना अनिवार्य है?'
अपनी आवाज़ का लहजा तय करते हुए राव ने चुप रहना ही बेहतर समझा। जब उसने वही सवाल दोबारा पूछा, तो राव ने कहा, “जब कोई क्रोधित व्यक्ति सवाल पूछता है, तो धैर्यपूर्वक जवाब देने से भी सवाल पूछने वाले का गुस्सा और भड़क उठता है। अगर जवाब भी गुस्से से भरा हो, तो भी असर वही होगा। इसलिए, चुप रहना ही समझदारी है, है ना?”
उसने उसके हाथ पकड़े, उसे उस कमरे में ले गई जहाँ लड़का सो रहा था और कहा, 'उसे दोपहर से बुखार है।'
तापमान जांचने के लिए अपनी हथेली माथे पर रखते हुए राव ने पूछा, 'क्या राजा घर पर नहीं था?'
‘वह था। भला किसे परवाह होती? वह उसे डॉक्टर के पास ले गया और दवाइयाँ भी लाया। लेकिन क्या बच्चे के पिता होने के नाते आपको ऐसा नहीं करना चाहिए?’

राव ने कुछ नहीं कहा। वह बस बच्चे के सिर के पास बैठ गए। अपने पति के चेहरे को दो मिनट तक ध्यान से देखने के बाद नागलक्ष्मी ने कहा, 'बस बैठे रहने के अलावा और कुछ करने का मन नहीं कर रहा?'
मैं क्या करूँ? राजा दवाइयाँ ले आया है। आप उसका अच्छे से ख्याल रख रहे हैं।
'मेरी किस्मत!' नागलक्ष्मी सिसकियाँ लेने लगी। राव शर्मिंदा महसूस करने लगा। उठकर वह उसके पास गया, उसके बगल में बैठ गया, उसकी पीठ पर हाथ फेरा और बोला, 'नागु, मैं तुम्हारी थकान समझ सकता हूँ। खैर, अब से मैं जल्दी घर आऊँगा।'
वह इससे संतुष्ट थी। दो मिनट में ही उसने खुद को तरोताज़ा किया, अपने पति के कंधों को दोनों हाथों से थामा और बोली, 'मुझे तुम्हारी पढ़ाई से कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन अगर तुम्हारी पढ़ाई का फल मेरी संगति से वंचित होना है, तो मैं इसे कैसे बर्दाश्त कर सकती हूँ?'
मुख्य द्वार के खुलने की आवाज़ आई, जिससे राजा के आने का संकेत मिला। नागलक्ष्मी रसोई में चली गई।
उस रात राव ने नागलक्ष्मी को आराम करने के लिए कहा और खुद गहरी नींद में जाने से बच गए ताकि वे अपने बेटे पर नजर रख सकें। बुखार पहले से ही कम हो रहा था।
नागलक्ष्मी को भी नींद नहीं आई। दंपति बच्चे के साथ ही सो गए। राव ने अपनी पत्नी से स्नेहपूर्ण बातचीत शुरू की। बातचीत के विषय सामने के आंगन में खिले चमेली के फूल और राजा द्वारा इस महीने लाए गए हैदराबादी अरहर चने से लेकर पड़ोस के घर में आज काम पर आई नई नौकरानी के गुणों तक फैले हुए थे। राव उनकी बातों को समझते हुए लगातार सहमति जताते रहे। रात 11 बजे तक वह सो गईं। बच्चा भी सो गया था। हालांकि राव के लिए सोने का समय नहीं था; वह धीरे से उठे और अपने अध्ययन कक्ष में चले गए।

3

राव के अजंता से लौटने के दो महीने बाद, करुणा की ओर से एक पंजीकृत डाक उनके पते पर पहुंची। उन्होंने पत्र खोला तो उसमें 60 से अधिक पृष्ठों की टाइप की हुई सामग्री थी। ये वे नोट्स थे जो उन्होंने अजंता में तैयार किए थे। राव ने इसे पूरा पढ़ा। यह अच्छी भाषा में लिखा गया था और विषयवस्तु को उचित कालक्रम में व्यवस्थित किया गया था। हालांकि उन्होंने करुणा को स्पष्ट विवरण लिखवाया था, लेकिन यह असंभव था कि

उनका तात्कालिक वर्णन किसी कालक्रम में हो, क्योंकि वे लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे थे और उन्होंने सब कुछ बातचीत के अंदाज में बताया था। करुणा ने इसकी अच्छी तरह से समीक्षा की थी और इसे एक औपचारिक निबंध के रूप में प्रस्तुत किया था। इसमें एक भी टाइपिंग त्रुटि नहीं थी। कागज पर अक्षरों की एकरूपता से पता चलता है कि यह किसी कुशल और अनुभवी व्यक्ति का काम था।
इसके साथ ही उसने एक पत्र भी संलग्न किया था:
यहां लौटने पर मैंने कोलंबो विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का दौरा किया। मैंने डॉ. गुलाम यज़दानी द्वारा लिखित 'अजंता: फोटोग्राफी पर आधारित अजंता भित्तिचित्रों के रंगीन और मोनोक्रोम पुनरुत्पादन' नामक पुस्तक के चारों खंडों का अध्ययन किया। इसका वर्णन मात्र तथ्यात्मक है। इसमें आपके कार्यों की तरह कोई ऐतिहासिक विश्लेषण नहीं है। इन्हें टाइप करते समय मुझे इन टिप्पणियों का महत्व समझ में आया। यदि इसे संशोधित करके पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया जाए, तो साहित्य जगत इसका हार्दिक स्वागत करेगा। यदि आप अनुमति दें, तो मैं इसमें यथासंभव सुधार करके आपको संशोधित संस्करण भेजूंगा।
इतिहास के प्रति आपकी अवधारणा ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया है। अब मुझे लगता है कि बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि में सिंहली संस्कृति नामक अपनी प्रस्तावित पुस्तक को आपके द्वारा प्रतिपादित इसी दृष्टिकोण से लिखना उचित होगा। भारत के सांस्कृतिक इतिहास को लिखने का आपका संकल्प सराहनीय है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपके इस प्रयास को सफल बनाएँ। मेरे माता-पिता हमेशा आपको याद करते हैं। उन्होंने मुझे उनका प्रणाम आप तक पहुँचाने के लिए कहा है।

राव उस युवती के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहे थे, जो भले ही दूसरे देश की रहने वाली थी और उससे केवल तीन दिनों की ही जान-पहचान हुई थी, फिर भी उसने उनके शोध में काफी रुचि दिखाई थी। उन्होंने टाइप किए हुए नोट्स को एक बार फिर पढ़ा। उन्हें लगा कि इसे युवती के सुझाव के अनुसार एक प्रकाशन योग्य मोनोग्राफ के रूप में विकसित किया जा सकता है। फिर भी, इस पर और ध्यान दिए बिना, उन्होंने इसे एक फाइल में रख दिया। उन्होंने करुणा को एक पत्र लिखकर नोट्स की समीक्षा करने, उन्हें टाइप करने और समय पर भेजने के लिए आभार व्यक्त किया।
राव ने अपनी पुस्तक के पहले खंड की पटकथा तैयार करने के लिए आवश्यक सभी जानकारी एकत्र कर ली थी। उन्होंने लगभग तीन महीने में इसे लिखना शुरू करने का

प्रस्ताव भी रखा था। उन्होंने अपनी पिछली कृति के ब्रिटिश प्रकाशक से पत्राचार किया था और उनसे अपनी प्रस्तावित श्रृंखला को भी प्रकाशित करने का अनुबंध किया था, जिसके फलस्वरूप प्रकाशन कंपनी ने उन्हें रॉयल्टी की एक अच्छी राशि देने का वादा किया था।

पहले खंड की शुरुआत 'भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति और आधार' शीर्षक वाले अध्याय से होनी थी। उस अध्याय में जिस दृष्टिकोण पर चर्चा की जानी थी, वह पाँचों खंडों की विषयवस्तु से बिल्कुल मेल खाता था। उन्होंने अध्याय की रूपरेखा तैयार कर ली थी और जल्द ही उसे अंतिम रूप देने वाले थे। इसी बीच उन्हें करुणा का एक और पत्र मिला।

मैंने आपकी कृति 'प्राचीन भारतीय राजनीति की धार्मिक नींव' पढ़ी। इससे पहले मैंने इसकी एक समीक्षा पढ़ी थी। मुझे कभी पता नहीं था कि यह इतनी उच्च कोटि की कृति है। इस पत्र का उद्देश्य आपको बधाई देना नहीं है। मैं एक बौना हूँ और आप जैसे महान लेखक को बधाई देने का हकदार नहीं हूँ। मैं आपसे एक निवेदन लेकर आया हूँ। मैं अपने प्रस्तावित शोध प्रबंध 'बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि में सिंहली संस्कृति' पर पूरी तरह से आपके मार्गदर्शन में काम करना चाहता हूँ। मैं इसे अपने पीएचडी शोध प्रबंध के रूप में प्रकाशित करना चाहता हूँ। यदि आप सहमत हों, तो मैं आपके मार्गदर्शन में यह शोध करना चाहता हूँ। मेरे माता-पिता और भाई भी इसके लिए सहमत हैं। कृपया मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें। आपकी स्वीकृति मिलते ही मैं यहाँ से अपना कार्य शुरू कर दूँगा।

विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों के लिए ऐसे शिक्षित शोधार्थियों का मार्गदर्शन पाना गर्व की बात थी। हालांकि राव के मन में यह विचार आया कि क्या एक अकेली महिला के लिए शोध कार्य के लिए इतनी दूर जाना उचित होगा, लेकिन उन्हें याद आया कि वह खुद दो साल तक अकेले इंग्लैंड में अकादमिक अध्ययन के लिए रह चुकी हैं। उन्होंने उन्हें लिखा कि उनके मार्गदर्शन में शोध कार्य करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है और वह अपनी सुविधानुसार यात्रा की योजना बना सकती हैं।

एक दोपहर नागलक्ष्मी अपने घर के आंगन में राजसी चमेली के पौधे के पास खड़ी थी, तभी एक तांगा द्वार के पास आकर रुका। सफेद साड़ी पहने एक सांवली रंग की युवती उतरी, उसके पास आई और अंग्रेजी में पूछा कि क्या यह डॉ. सदाशिव राव का निवास है।

नागलक्ष्मी इतना समझ गई थीं। उन्होंने कन्नड़ में 'हाँ' कहा, लेकिन करुणा को समझ नहीं आया। फिर उन्होंने अंग्रेज़ी में कुछ और कहा, जो नागलक्ष्मी को समझ नहीं आया। करुणा जाने ही वाली थीं कि राजा वहाँ आ गए और नागलक्ष्मी से बात अपने हाथ में ले ली। थोड़ी देर बाद उन्होंने मेहमान को अंदर बुलाया, उन्हें आराम से बैठाया और अपनी भाभी से कॉफ़ी बनाने को कहा। कॉफ़ी पीने के बाद उन्होंने पूछा कि क्या उन्होंने दोपहर का खाना खा लिया है।

'हां,' उसने कहा, 'ट्रेन से उतरने के बाद, मैं एक होटल में गई, नहाया, दोपहर का भोजन किया और फिर यहां के लिए रवाना हो गई।'

क्या आपने मेरे भाई को अपने आगमन की तिथि और समय के बारे में सूचित कर दिया था?

'मैंने किया था। उन्होंने भी इस पर प्रतिक्रिया दी थी।'

'वह भूल गए होंगे। वे अपने शोध में इतने मग्न रहते हैं कि सब कुछ भूल जाते हैं। चलिए मैं आपको विश्वविद्यालय पुस्तकालय में उनके कार्यालय ले चलता हूँ।'

रास्ते में राजा और करुणा एक-दूसरे से और ज़्यादा परिचित हो गए। कुर्सी पर झुके हुए राव कुछ नोट्स के बाएँ हाशिये पर लाल स्याही से कुछ लिख रहे थे। मेज़ पर हस्तलिखित पृष्ठ, कलम, पेंसिल और दर्जनों खुली किताबें पड़ी थीं। पूरा कमरा किताबों से भरा हुआ था। दोपहर की तेज़ गर्मी अभी कम नहीं हुई थी, फिर भी राव पंखा चलाना भूल गए थे। करुणा को देखते ही उन्होंने अपने फैले हुए पैर समेटे, थोड़ा उठे और उनका अभिवादन किया। ‘स्वागत है। आइए। मैं आपकी यात्रा की योजनाएँ पूरी तरह भूल गया था। आप कब पहुँचीं?’

जब वह और राजा वहां कुर्सियों पर बैठ गए, तो उसने पूछा, 'क्या आपके माता-पिता स्वस्थ हैं?'

वे ठीक हैं। उन्होंने आपको नमस्कार कर लिया है।

राव का मन अभी भी उस पुस्तक में डूबा हुआ था जिसे वह पढ़ रहे थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि बातचीत को आगे कैसे बढ़ाया जाए। वे बस बैठे रहे। इस चुप्पी से करुणा थोड़ी असहज हो गईं। इसे भांपते हुए राजा ने चुप्पी तोड़ने का फैसला किया। 'आप एक दूर देश में आ गए हैं।'

‘नहीं। आखिर कितनी दूर है?’

राजा ने कहा, ‘सिंहला और भारत के बीच ज्यादा दूरी नहीं है। अगर दूरी ज्यादा होती, तो क्या रावण के लिए बिना यात्रा रोके सीता का अपहरण करना संभव होता?’

करुणा उसकी बात सुनकर हंस पड़ी। राव भी बातचीत में शामिल हो गए। उन्होंने कहा, 'रामायण के ऋषि-लेखक को सिंहली भाषा का ज्ञान अवश्य रहा होगा। हालांकि उन्होंने रावण को राक्षस कहा है, लेकिन वेदों के प्रति समर्पित एक महान ऋषि के रूप में उसकी प्रशंसा भी की है। ये दोनों देश एक ही सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित हैं।'
‘भाई, इतनी लंबी यात्रा करने पर उसका हालचाल पूछने के बजाय, तुम उसे इतिहास पर उपदेश देते हो!’ राजा ने टिप्पणी की।
अपनी गलती का एहसास होने पर राव ने पूछा, 'आप कहाँ ठहरे हुए हैं?'
'एक होटल में।'
आपको होटल में रुकने की कोई ज़रूरत नहीं है। आपको सीधे मेरे घर आना चाहिए था। अभी भी, आप मेरे भाई को साथ लेकर अपना सामान लें, उस होटल से चेक आउट करें और सीधे मेरे घर आ जाएँ। कल आप विश्वविद्यालय में फैलोशिप के पंजीकरण के लिए आवेदन कर दें। कुछ दिनों में आपके लिए महिला छात्रावास में रहने की व्यवस्था कर दी जाएगी।
राजा और करुणा के वहां से चले जाने के बाद, राव वापस पढ़ने में जुट गए। चेक आउट करने के बाद, करुणा राजा के साथ उनके घर वापस आईं और शाम 7 बजे वहाँ पहुँचीं। राजा ने करुणा के गुरु की पत्नी, यानी अपनी साली का उनसे परिचय कराया। करुणा ने जब हाथ जोड़कर अभिवादन किया, तो नागलक्ष्मी ने भी वैसा ही किया। खाना बनाते समय, नागलक्ष्मी राजा से बात करने का मौका ढूंढ रही थीं। उन्होंने कहा, 'शादी करके पारिवारिक जीवन शुरू करने के बजाय, महिलाओं को इतना आगे क्यों जाना चाहिए?'
‘क्यों, पढ़ाई-लिखाई करने के लिए। वो इंग्लैंड जा चुकी है और मेरी ही तरह पढ़ी-लिखी है। अब वो यहाँ भाई के मार्गदर्शन में उच्च शिक्षा प्राप्त करने आई है। मेरे भाई के बारे में आपकी क्या राय है?’
‘क्या वह सिर्फ तुम्हारे लिए भाई है? क्या वह मेरे लिए कुछ भी नहीं है?’ उसने गर्व से पूछा।
‘उससे यह पूछ लेना,’ राजा ने जाते हुए कहा। और जब तक उसका भाई रात आठ बजे घर नहीं आया, तब तक उसने मेहमान का खुशनुमा साथ दिया। उनकी बातचीत का अधिकांश हिस्सा इंग्लैंड और वहाँ की उनकी शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में था।

अध्याय 6

1

लाड़-प्यार करने वाले ससुराल वालों, प्यारे बच्चे और घर की अन्य सुख-सुविधाओं के बावजूद, कात्यायनी को जीवन नीरस लगता था। विधवापन का दुख अब उतना तीव्र नहीं था जितना पहले हुआ करता था। कभी-कभार वह अपने ससुराल वालों से खुशी-खुशी बातें करती। वह अपने बच्चे के साथ घुड़सवारी, लुका-छिपी, टैग आदि खेलती। फिर भी, समय बिताना उसके लिए मुश्किल होता था। घर और आंगन की सफाई करना और रंगोली बनाना उसके घरेलू कामों का हिस्सा था। तब तक उसके ससुराल वाले नहा चुके होते; उसके ससुर पूजा कक्ष में चले गए होते और उसकी सास रसोई में। लक्ष्मी बाकी काम संभालती। कात्यायनी अपने दैनिक काम तब पूरा करती जब वह अपने बच्चे को नहला देती, उसे नए कपड़े पहना देती, खुद नहा लेती, सबके कपड़े धोकर रस्सी पर टांग देती। उसके बाद, उसे मानो समय को धकेलना पड़ता था। कभी-कभी उसकी सास उसे पासा खेलने के लिए बुलाती। लेकिन कात्यायनी को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

पति की मृत्यु के कुछ समय बाद ही कात्यायनी के पिता उसे श्रीरंगपट्टना ले गए थे। वहाँ उसकी सौतेली माँ, जो उससे लगभग आठ वर्ष बड़ी थी, और एक कठोर धार्मिक पिता, जो उसके ससुर से बिल्कुल भिन्न थे, ने उसे असहज कर दिया था। उसके ससुर की परंपरावादिता और उसके पिता की रूढ़िवादिता में गहरा अंतर था। जहाँ श्रोत्री धर्म के सार को समझने का प्रयास कर रहे थे, जो उनके कार्यों को दिशा प्रदान करे, वहीं वकील श्रीकांतैया धर्म के सतही अर्थों का ही पालन करते थे। यद्यपि उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से यह राय व्यक्त कर दी थी कि उनकी विधवा पुत्री प्रथा के अनुसार अपना सिर मुंडवा ले, श्रोत्री ने इस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ ही दिनों बाद वह नंजनगुड लौट आई। कभी-कभी वह अकेले ही पिछवाड़े के बगीचे में पौधों और पेड़ों की क्यारियों से कूड़ा-करकट साफ करती थी। वह पत्तेदार सब्जियों की नर्सरी से खरपतवार निकालती थी। वह पूरे पिछवाड़े की सिंचाई करती थी। वहाँ चमेली और राजसी चमेली की लताओं पर भरपूर सुगंधित फूल खिलते थे। वह इन पौधों को अच्छी तरह सींचती थी। लेकिन जब भी वह पिछवाड़े में काम करती, उसे अपने पति की याद आ जाती। उस समय वे दोनों

मिलकर चमेली की लता को सींचते थे। लता खूब बढ़ गई थी और उसकी शाखाएँ दूर-दूर तक फैली हुई थीं। जब वह फूलों को तोड़ने के लिए अंदर जाती, तो वह अक्सर उसे चिढ़ाता था। हालाँकि वह उसकी बातों पर हँसती थी, पर उसे अच्छा लगता था। ये यादें उसे हर बार पिछवाड़े जाने पर सताती थीं।

घर के पीछे की हरियाली अब हरे-भरे रंग में खिल उठी थी। घर के पीछे धान के खेत, जो पिछली फसल के बाद से बंजर थे, एक बार फिर सुकून देने वाली हरियाली से भर गए थे। हमेशा बंजर रहना न तो प्रकृति का नियम था, न ही ऐसा होना तय था। लेकिन वह इस बात से निराश होकर आह भरती कि उसका मुरझाया हुआ जीवन हमेशा के लिए ऐसा ही रहेगा। लेकिन जब भी उसकी नज़र अपने बच्चे पर पड़ती, उसका मन प्रसन्न हो उठता। पर वह एक बच्चे की देखभाल करने से कहीं अधिक काम कर सकती थी। अगर कभी संयोगवश श्रोत्री वहाँ से गुजरते, जब वह बगीचे में काम कर रही होती, तो वह उसे दिलासा देते, 'इस धूप में इतनी मेहनत क्यों कर रही हो? अंदर जाओ, बच्ची।' जब भी वह अपने ससुर के स्नेहपूर्ण स्नेह में डूबी होती, तो उसके दुखी जीवन में एक नई खुशी आ उठती। कभी-कभी उसे अपने कॉलेज के दिन याद आ जाते। वह रोज़ाना ट्रेन से श्रीरंगपट्टना से मैसूर आती-जाती थी। उसके शिक्षकों ने उसे एक होशियार छात्रा के रूप में सराहा था। इंटरमीडिएट की सीनियर कक्षा में पढ़ते समय, उन्होंने लड़कियों द्वारा मंचित नाटक सावित्री-सत्यवान में सावित्री की भूमिका निभाई थी और इतनी प्रभावी ढंग से निभाई थी कि दर्शक भावुक हो गए थे। मंच पर उन्होंने ही सत्यवान को मृत्यु के देवता द्वारा ले जाए जाने से बचाया था। वास्तविक जीवन में, यम ने शादी के दो साल बाद ही उनसे विवाह कर लिया था। इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी करने से पहले ही उनकी शादी हो गई थी, इसलिए उन्हें बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी। लेकिन उन्हें इसका कभी अफसोस नहीं हुआ। उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई को श्रोत्री जैसे सास-ससुर और नंजुंडा श्रोत्री जैसे पति के योग्य होने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं समझा।

उसके मन में एक नया विचार कौंधा। नंजनगुड की कई लड़कियाँ कॉलेज में पढ़ने के लिए मैसूर जाती थीं। वह भी ऐसा क्यों नहीं कर सकती और बीए की पढ़ाई क्यों नहीं कर सकती? इस आकांक्षा के पीछे एक और उम्मीद उसके मन में जागी। उसके पति पहली बार परीक्षा नहीं दे पाए थे। अगले साल जब उन्होंने परीक्षा दी, तो वे कुछ विषयों में फेल हो गए थे। उन्होंने तीसरे साल में सभी विषयों में पास होने के दृढ़ संकल्प के साथ पढ़ाई शुरू की। उनके माता-पिता भी चाहते थे कि उनका बेटा बीए की डिग्री हासिल करे। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। उनकी किताबें पहली मंजिल पर उस

अलमारी में थीं। कात्यायनी सीढ़ियों से ऊपर गई और अलमारी के अंदर देखा। उनकी सभी किताबें—संस्कृत, अंग्रेजी, इतिहास—सलीके से रखी हुई थीं। सभी हार्डकवर थीं, और मुखपृष्ठ पर एन.एस. नंजुंडा श्रोत्री का नाम लिखा था। कुछ किताबों पर नाम उसने खुद लिखे थे। अपने नाम के बगल में उन्होंने 'काट्टी' लिखा था, और यह अभी भी उसके द्वारा मिटाए जाने का सबूत था।

कॉलेज जाने और शिक्षा प्राप्त करने की उसकी इच्छा दिन-ब-दिन और भी प्रबल होती जा रही थी। हालाँकि उसे संदेह था कि उसके ससुर उसकी इच्छा पूरी करेंगे, फिर भी उसने इस मामले को एक दिन उनसे सुलझाने का फैसला किया। उन्होंने कहा, 'बेटी, समय पर भोजन से समझौता करके रोज़ इतनी दूर क्यों जाना? किसलिए? घर पर आराम से रहो। जब वह बड़ा हो जाए, तो चीनी को उच्च शिक्षा प्राप्त करने दो।'

‘अब तक तो उसने बीए की पढ़ाई पूरी कर ली होती। हमें इस नियति का सामना करना ही था। अगर मैं उसके नाम पर ऐसा करूँगी, तो मुझे कुछ सांत्वना मिलेगी,’ उसने कहा और चुप हो गई।

श्रोत्री का स्वभाव किसी भी बात को नज़रअंदाज़ करने का नहीं था। वे अपनी बहू के हाल के नीरस जीवन के साक्षी थे। उन्होंने सोचा कि कॉलेज की शिक्षा उसके लिए अच्छा विकल्प साबित होगी। फिर भी, उन्होंने उससे कहा, 'मैंने तुम्हें भगवद्गीता पढ़ने के लिए कहा था। औपचारिक शिक्षा के बजाय, भगवद्गीता का पाठ करो। तुम्हें मन की शांति मिलेगी। उसके बाद उपनिषद पढ़ो। मैं प्रतिदिन पूजा के बाद तुम्हें नियमित रूप से पढ़ाऊंगा। आर्थिक तंगी की बात अलग है। भगवान ने हमें हमारी बुनियादी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त दिया है। अगर तुम मेरी राय पूछो, तो तुम्हारे जैसी लड़की के लिए कॉलेज जाने से बेहतर है भगवद्गीता का पाठ करना।'

जब श्रोत्री ने 'तुम्हारे जैसे लोगों के लिए' शब्द कहे, तो उनका इरादा कोई ज़ोरदार आरोप लगाना नहीं था। फिर भी, इससे कात्यायनी के मन में गहरा घाव हुआ और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसके आँसुओं का असली कारण न जानते हुए भी, श्रोत्री उससे प्रभावित हुए और उसे दिलासा देते हुए बोले, 'लेकिन अगर तुम चाहो तो पढ़ाई जारी रखने के लिए स्वतंत्र हो। निराशा में आँसू क्यों बहा रही हो?'

आंसू पोंछते हुए कात्यायनी ने कहा, 'मैंने भगवद्गीता का पाठ करने की कोशिश की। लेकिन रुचि नहीं जागी। मैं क्या करूँ? मैंने ऊपर वाले कमरे में अलमारी में रखी उनकी किताबें पढ़ने की कोशिश की। मुझे वे पसंद आने लगी हैं।'

‘सच है, बच्ची। समय ही सब कुछ तय करता है,’ श्रोत्री ने कहा और चुप हो गई।

2

एक दोपहर, कात्यायनी अपने बच्चे के साथ ऊपरी मंजिल पर सो रही थी। भागीरथम्मा, लक्ष्मी और श्रोत्री भूतल पर बैठक में बातें कर रही थीं। भागीरथम्मा ने कहा, 'कॉलेज! इतना सब कुछ सहने के बाद भी? उसे इस दुनियादारी का क्या पता? वो प्रस्ताव रखती है और तुम उसे ठुकरा देती हो। वो घर में रहकर बच्चे की देखभाल क्यों नहीं कर लेती?'
श्रोत्री उसे समझा रही थी, 'उम्र तो उसके पक्ष में है। वह सारा दिन घर पर रहकर खुद को कैसे व्यस्त रख पाएगी? उसे एक-दो साल कॉलेज जाने दो।'
'क्या मुझे इतनी कम उम्र में उसके इस दुर्भाग्य से दुख नहीं होता? अगर उसने अपना सिर मुंडवा लिया होता, तो उसके पास कितना काम होता, जैसे पूजा कक्ष की सफाई, रंगोली बनाना, मूर्तियों की बार-बार सफाई करना, दीयों के लिए बत्तियाँ तैयार करना, देवी-देवताओं के चित्रों के लिए सूती मालाएँ बनाना, नियमित रूप से मंत्रोच्चार करना आदि। समय तो पलक झपकते ही बीत जाता। आपने उसका साथ देते हुए कहा कि वह आधुनिक युग की लड़की है। ठीक है, मैं भी यही मानता था। लेकिन अगर वह कहती है कि उसे ऊब हो रही है, तो यह बात कैसे जायज़ हो जाती है?'
लक्ष्मी ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'कात्याम्मा कॉलेज इसलिए जाना चाहती है ताकि वह अपने पति के छोड़े हुए काम को आगे बढ़ा सके, है ना? वह अपने लिए नहीं बल्कि उनके नाम पर ऐसा कर रही है। उसे दाखिला लेने दो। तुम्हारा क्या नुकसान है?'
अपनी बहू को बीए की डिग्री हासिल करते देख, जो उनके बेटे को हासिल करनी चाहिए थी, भागीरथम्मा चुप हो गईं। उनकी चुप्पी ने आधी सहमति दे दी। यह देखकर श्रोत्री ने कहा, 'एक युवा विधवा का मुंडन कौन करवाना चाहेगा? लेकिन अगर वह स्वेच्छा से ऐसा करे तो यह सराहनीय है। ऐसी दुर्भाग्यशाली स्त्री को इस प्रथा का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उसे स्वयं यह महसूस करने देना चाहिए कि अब से उसका सजना-संवरना और अलंकरण उसके लिए शोभा नहीं देता, क्योंकि इस उपकार का दाता अब जीवित नहीं है।'
तभी, दरवाजे पर किसी के आने की आहट सुनाई दी। लक्ष्मी देखने गई। वह डॉ. राव थे। लक्ष्मी ने जब यह बात बताई, तो श्रोत्री हाथ जोड़कर उनके पास गईं और अभिवादन किया, 'स्वागत है। क्या आपको देखे हुए डेढ़ साल नहीं हो गए? कृपया अंदर आइए।'

बड़ा चमड़े का थैला लिए राव बैठक में दाखिल हुए और एक कुर्सी पर बैठ गए। श्रोत्री रसोई से मथा हुआ छाछ का एक गिलास लाईं और राव को देते हुए बोलीं, 'क्या आप कुछ खाना चाहेंगे?'
राव ने कहा, 'कम से कम अगले दो घंटे तक नहीं। मैंने दोपहर का खाना खाते ही तुरंत घर छोड़ दिया था।'
कुछ देर तक उन्होंने शिष्टाचार का आदान-प्रदान किया। राव ने महाराज के उदार स्वभाव का वर्णन किया। बाद में, श्रोत्री ने पूछा, 'आप जानते हैं कि मैं आपके ग्रंथ की प्रगति के बारे में जानने के लिए उत्सुक हूं।'
मैं यहाँ बस यही बताने आया हूँ। मैंने पहले खंड के शुरुआती कुछ अध्यायों का मसौदा तैयार कर लिया है। इनमें से पहला अध्याय अत्यंत महत्वपूर्ण है, और मैंने इसे 'भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति और आधार' नाम दिया है। मैं इसमें कुछ पहलुओं पर चर्चा करना चाहता हूँ।
‘ठीक है, लेकिन पहले तरोताज़ा हो जाओ। बाहर ज़्यादा गर्मी तो नहीं थी?’ श्रोत्री राव को बाथरूम ले गए। चेहरा और पैर धोकर राव अपनी कुर्सी पर वापस आ गए और आराम से बैठ गए। फिर उन्होंने अपने बैग से टाइप किए हुए पन्नों का एक सेट निकाला।
‘चलिए मेरे अध्ययन कक्ष में चलते हैं। मैं बूढ़ी हो रही हूँ और आजकल मेरी याददाश्त कमजोर हो रही है। अगर हमें किसी ग्रंथ को देखना पड़े, तो वह वहाँ काम आएगा,’ श्रोत्री ने कहा और आगे-आगे चलने लगी। जब वे सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, कात्यायनी अपने बच्चे को गोद में लिए नीचे उतर रही थी। बच्चा अभी-अभी नींद से जागा था। उसे देखकर राव ने पूछा, ‘कैसी हो?’
‘मैं ठीक हूँ। आप कब आए थे?’ उसने विनम्रतापूर्वक पूछा।
‘कुछ मिनट पहले,’ राव ने सीढ़ियों पर चढ़ते हुए जवाब दिया।
श्रोत्री के अध्ययन कक्ष में प्रवेश करते ही वे दोनों हिरण की खाल से बनी चटाइयों पर आमने-सामने बैठ गए। अपने हाथ में पकड़े पन्नों को पलटते हुए राव ने कहा, “मैंने अपने कार्य का आरंभ इस सिद्धांत से किया है कि भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति और आधार सर्वज्ञ वेद और उपनिषद हैं। आगे के अध्यायों में वर्णित संस्कृति की विभिन्न धाराओं का औचित्य वेद और उपनिषदों में निहित है। मूर्तिपूजा, सर्प पूजा, प्रकृति पूजा आदि जो उत्तरकालीन ऐतिहासिक काल में प्रचलित हुईं, उन्हें कुछ यूरोपीय विद्वान असभ्य संप्रदायों से आयातित विचारधारा मानते हैं, न कि वेद और उपनिषदों की

अंतर्निहित प्रकृति। यदि हम इस तर्क को स्वीकार कर लें, तो मेरे प्रवचन का मूल आधार ही निराधार हो जाएगा। आपका क्या विचार है?"
प्रश्न की गंभीरता को देखते हुए, श्रोत्री ने कुछ देर विचार किया और फिर कहा, "हमें यह क्यों मान लेना चाहिए कि मूर्तिपूजा हीन और असभ्य है? सर्प पूजा, वृक्ष पूजा और ऐसी अन्य प्रथाओं को उचित क्यों नहीं माना जा सकता? वेदों से हमें पूजा के तीन स्तर मिलते हैं: तत्वों की पूजा (जैसे अग्नि), तत्वों के प्रतिनिधि देवताओं की पूजा (अग्नि, अग्नि देव) और सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा (परम सत्ता, जिनकी पूजा अग्नि के रूप में संपन्न होती है)। तत्वों की पूजा, अर्थात् मूर्तिपूजा, जो इसके व्यापक महत्व को समझे बिना की जाती है, विशिष्टता के योग्य नहीं है। प्रकृति की पूजा, जो इस उच्च अर्थ को ध्यान में रखती है, स्वयं वेदों में वर्णित है।"
उनकी चर्चा शाम सात बजे तक जारी रही। बीच-बीच में राव अपनी नोटबुक में नोट्स बना रहे थे। श्रोत्री ने तीनों वेदों के उद्धरण स्मृति से विस्तारपूर्वक सुनाए। कभी-कभी वे राव से संस्कृत पुस्तकों के कुछ पृष्ठ देखने के लिए कहते थे।
रात आठ बजे अपने अध्ययन कक्ष से निकलकर, श्रोत्री ने स्नान किया और पूजा कक्ष में चले गए। राव बैठक कक्ष में गए और चर्चाओं के बारे में सोचते रहे। रात नौ बजे भोजन करने के बाद, वे ऊपर के अध्ययन कक्ष में लौट आए और अपनी चर्चा फिर से शुरू की। आधी रात के बाद जब वे नीचे आए और बैठक कक्ष में बिछे बिस्तरों पर सोए, तब श्रोत्री ने राव को अपनी बहू की पढ़ाई-लिखाई की इच्छा के बारे में बताया। राव ने इसका समर्थन किया। 'इससे उसे फायदा होगा। घर पर समय बर्बाद करने के अलावा वह और क्या करेगी?'
'यह सही है, लेकिन मेरी पत्नी को आपत्ति है। उसे कॉलेज जीवन को लेकर चिंता है।'
'परिस्थिति कैसी भी हो, गुणी लोग तो आसानी से पार पा लेंगे। जो भटकने की प्रवृत्ति रखते हैं, वे तो वैसे भी उसी रास्ते पर चल पड़ेंगे। कॉलेज कोई अवांछनीय जगह नहीं है। क्या मैं खुद ऐसी ही किसी जगह पर नहीं हूँ?'
राव की बातें श्रोत्री को अच्छी लगीं। उन्होंने पूछा, 'गर्मी की छुट्टियों के बाद कॉलेज कब खुलेगा?'
दो सप्ताह बाद। उसे महीने की 24 तारीख को भेज देना। मैं विश्वविद्यालय पुस्तकालय में अपने केबिन में रहूंगा। उसे उस तारीख को केवल प्रवेश के लिए आवेदन करना होगा। कक्षाएं कुछ समय बाद शुरू होंगी।
श्रोत्री ने अपना दृढ़ संकल्प और भी मजबूत कर लिया।

3

मार्केट रोड स्थित डॉ. श्रीपदा राव की पुत्री वासन्ती ने पिछले वर्ष जूनियर बीए की पढ़ाई पूरी कर ली थी और इस वर्ष सीनियर बीए में दाखिला लेने वाली थी। जब उसे पता चला कि श्रोत्री की बहू ने उसी कॉलेज में दाखिला लिया है जहाँ वह पढ़ती थी, तो वह उससे मिलने गई। कात्यायनी खुश थी कि अब उसे रोज़ाना आने-जाने के लिए पास में ही कोई साथी मिल जाएगा। श्रोत्री दंपति को भी राहत मिली। राव ने दाखिले का फॉर्म डाक से भेजा था ताकि वह 24 तारीख से काफी पहले श्रोत्री तक पहुँच जाए। फॉर्म भरने के बाद, कात्यायनी ने 'अभिभावक' के लिए बने स्थान पर अपने ससुर के हस्ताक्षर लिए। फिर, अपनी सास के निर्देशानुसार, उसने फॉर्म को पूजा कक्ष में मूर्तियों के सामने रखा, भगवान के सामने प्रणाम किया, फॉर्म को एक बैग में सुरक्षित रखा और जाने के लिए तैयार हो गई।

उस सुबह से ही कात्यायनी को एक साथ उत्साह और अथाह चिंता महसूस हो रही थी। उसके मन में एक विचार कौंध गया कि घर से दूर रहकर कॉलेज जाने से उसे क्या हासिल होगा। दोपहर का भोजन करते समय भी वह यही सोचती रही कि सुबह 9 बजे से शाम 6:30 बजे तक घर से दूर रहकर और अपने प्यारे बच्चे के साथ कीमती समय गंवाकर पढ़ाई क्यों करनी चाहिए। उस दिन वह अकेले ही दोपहर का भोजन कर रही थी। अगले दो साल तक वह अकेले ही दोपहर का भोजन करेगी। जब उसके विचार इसी तरह चल रहे थे, तभी बाहर खेल रही चीनी अंदर आई और उससे पूछा, 'अम्मा, आप मेरे बिना क्यों खा रही हैं?'

खाना परोस रही भागीरथम्मा ने कहा, 'वह कॉलेज में पढ़ने के लिए मैसूर जाएगी, बच्ची।'

‘आप कॉलेज क्यों जा रही हैं?’ बच्चे के सवाल का जवाब उन्हें सूझ नहीं रहा था। वासंती सुबह 8:45 बजे श्रोत्री के घर पहुँचीं। कात्यायनी ने पहले अपनी सास के चरणों में, फिर अपने ससुर के चरणों में प्रणाम किया और जाने की अनुमति माँगी। जैसे ही वह बाहर निकलीं, चीनी रोने लगा, ‘अम्मा, मत जाइए, मुझे भी साथ ले जाइए।’ उसने उनकी साड़ी खींची। श्रोत्री ने उसे गोद में उठाया और दिलासा देते हुए कहा, ‘अम्मा शाम को लौट आएंगी। तुम घर में ही रहो, बेटा।’ आश्वस्त होकर चीनी ने अपनी माँ से कहा, ‘जल्दी आना।’

अपनी सहेली के साथ रेलवे स्टेशन जाते समय, कात्यायनी का मन किसी अनसुलझे डर से भारी था। रेलवे स्टेशन पैदल मात्र पाँच मिनट की दूरी पर था। सुबह नौ बजे जब वह चामराजनगर से आ रही ट्रेन के महिला डिब्बे में बैठी, तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। 'ज़्यादा चिंता मत करो,' वासंती ने उसे दिलासा दिया। जैसे-जैसे ट्रेन आगे बढ़ती गई, कात्यायनी को लगा कि वह उसे किसी अनजान जगह ले जा रही है। यह ख्याल उसके मन में बिल्कुल नहीं आया कि आज शाम उसे इसी रास्ते से घर लौटना होगा। चामराजनगर-मैसूर ट्रेन में कुछ ही डिब्बे थे और वह धीमी गति से चल रही थी। जून की हल्की बारिश शुरू हो गई थी और कपिला नदी में पानी बढ़ रहा था। जैसे ही ट्रेन दलावई पुल से गुजरी, उसे पुल के दोनों ओर पूर्व की ओर बहती नदी का विशाल विस्तार दिखाई दिया। आधा मील दूर मुख्य देवता नंजुंदेश्वर के मंदिर का अडिग शिखर था। मंदिर के बाईं ओर नदी के स्नान स्थल तक जाने वाली सीढ़ियाँ थीं। ठीक इसी जगह पर, दो साल पहले, सिंदूर की उस हवस की रानी ने डूबकर अपनी जान दे दी थी। वह भी जून का महीना था। उस साल मानसून जल्दी आ गया था और पानी का बहाव अब से कहीं अधिक था।

तब तक ट्रेन कुछ और आगे बढ़ चुकी थी। कंबलीमट से आगे निकलते ही उसकी रफ्तार बढ़ गई। वासंती ने कात्यायनी से बातचीत शुरू की। वे दोस्त तो नहीं थीं; बस एक-दूसरे को जानती थीं। पूरे साल साथ-साथ यात्रा करने से उनकी दोस्ती को और मजबूती मिलनी बाकी थी। कात्यायनी की भावनाओं को ठेस न पहुंचे इसलिए वासंती ने कॉलेज जीवन के बारे में बातचीत शुरू की। 'तुम कौन से विषय चुनोगी?'

इतिहास, अंग्रेजी और संस्कृत।

‘यह तो अजीबोगरीब संयोजन है! आपने ऐसा विचार क्यों सोचा?’

कात्यायनी ने कोई कारण नहीं बताया। ये वही विषय थे जिनका अध्ययन उनके पति अपने जीवनकाल में कर रहे थे। और ये वही पुस्तकें थीं जो उनके संग्रह में थीं। बेशक, इन विषयों को चुनने का कारण केवल पुस्तकों की उपलब्धता ही नहीं था। अब उन्होंने सहज भाव से कहा, 'मैं चाहे जो भी विषय पढ़ूँ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह मेरे लिए केवल एक मनोरंजन है। परीक्षा में पास या फेल होना मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता।'

कडाकोला में ट्रेन के पहुंचने से पहले ही, दाईं ओर चामुंडी पहाड़ी दिखाई देने लगी। दृढ़ और अकेली, यह पहाड़ी आसमान को छूती हुई थी, और कात्यायनी इसके प्रति एक अथाह आकर्षण महसूस करती थी। वह अपने पति के साथ दो बार वहां जा चुकी थी।

उसने चोटी से आसपास के शहर, गांवों, तालाबों और खेतों को देखा था। इन सबसे बढ़कर, इसकी ऊंचाई और भव्यता ही उसके आकर्षण का मुख्य कारण थी। लेकिन अब, जून के बादलों ने इसकी चोटी और ढलानों को ढक लिया था। साफ आसमान में इसकी भव्यता पूरी तरह से प्रकट होती थी, लेकिन इस आंशिक दृश्य में नहीं। वह खिड़की से बाहर देखती रही। पहाड़ी अपनी स्थिति बदलती रही। जो पहाड़ी ट्रेन के दाईं ओर थी, वह अब ट्रेन के सामने आ गई, और ट्रेन रुक गई। दक्षिण मैसूर स्टेशन यहीं था।

दो मिनट बाद, वे चामराजपुरा स्टेशन पर उतरे और कॉलेज की ओर चल पड़े। नंजनगुड और आसपास के इलाकों से बहुत सारे छात्र उस स्टेशन पर उतरे थे। कॉलेज पहुँचकर, वासंती कात्यायनी को लड़कियों के लाउंज में ले गई और बोली, 'तुमने कहा था कि तुम्हें किसी से मिलना है।'

'Dr Sadashiva Rao.'

'अरे, वो व्यक्ति! वो तो सबको जाना-पहचाना है। लेकिन उनसे असल में मिलने वाले लोग बहुत कम हैं। सच तो ये है कि मैं भी उनसे नहीं मिला हूँ।'

मुझे बताया गया था कि वह पुस्तकालय में अपने विशेष केबिन में होंगे।

'चलो, मैं तुम्हें पुस्तकालय ले चलती हूँ। उनसे मिलो, और वहाँ जितना भी समय बिताओ, शाम 5 बजे तक लड़कियों के लाउंज में पहुँच जाना। ट्रेन चामराजपुरा स्टेशन पर 5:30 बजे पहुँचती है।' फिर वे पुस्तकालय के मुख्य द्वार पर पहुँचे। वासंती ने वहाँ मौजूद परिचारिका से कात्यायनी को डॉ. सदाशिव राव के केबिन तक ले जाने को कहा और चली गई।

4

अटेंडेंट द्वारा दिखाए गए फ्लैप वाले दरवाजे को धीरे से धकेलते हुए कात्यायनी अंदर दाखिल हुई। मेज पर एक कुर्सी पर बैठे डॉ. राव, सफेद साड़ी पहने लगभग 26 वर्षीय सांवली रंगत वाली महिला को कुछ लिखवा रहे थे; वह महिला हाथ में नोट्स लिख रही थी। बीच-बीच में राव अपनी मेज पर रखे कुछ कागजों को देखते रहते थे। कमरा किताबों से भरा हुआ था, और केबिन में प्रवेश करते ही छत का पंखा चलने के बावजूद गर्मी महसूस होने लगी। लगभग 10 मिनट तक दोनों में से किसी ने भी कात्यायनी पर ध्यान नहीं दिया। हालांकि कात्यायनी के मन में यह ख्याल आया कि उसे चले जाना

चाहिए, लेकिन यह उचित नहीं होता, इसलिए वह इंतजार करती रही। पांच मिनट बाद, राव अपनी मेज पर रखे कागजों के ढेर में से एक कागज पढ़ने लगे। महिला ने इस अंतराल का फायदा उठाकर अपनी गर्दन के दर्द को कम करने के लिए थोड़ा व्यायाम किया। तभी कात्यायनी ने राव को देखा। उसने राव का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा, 'आपसे मिलने कोई आया है।'

राव ने दरवाजे की तरफ देखा। पूरे दो मिनट तक वह उसे पहचान नहीं पाए। नाक पर से चश्मा उतारकर उन्होंने दोबारा देखा। शर्मिंदा होकर कात्यायनी ने अपना सिर झुका लिया। एक मिनट बाद राव कुर्सी से उठे और बोले, 'आओ, आओ। अरे, आज 24 तारीख है। कब से इंतज़ार कर रही हो? अगर तुम मेरा ध्यान अपनी तरफ नहीं खींचोगी, तो मैं तुम्हें भी अपने हाल पर छोड़ दूंगा! इधर आओ।'

तब तक वह महिला पास में एक कुर्सी खींच लाई। जब कात्यायनी बैठ गईं, तो राव ने दोनों महिलाओं का एक-दूसरे से परिचय कराया। 'ये सुश्री करुणरत्ने हैं। ये श्रीलंका से हैं। इन्होंने यूके के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से बीए किया है और यहाँ शोध परेड कर रही हैं।' फिर कात्यायनी की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा आपको अपने एक गुरु, श्री श्रीनिवास श्रोत्री के बारे में बताता रहता हूँ। ये उनकी बहू हैं। इन्होंने हमारे कॉलेज में स्नातक पाठ्यक्रम में दाखिला लिया है।'

दोनों के अभिवादन के बाद, डॉ. राव कात्यायनी की ओर मुड़े। 'मुझे अपना आवेदन पत्र दीजिए।' पत्र की जाँच करते हुए उन्होंने कहा, 'इतिहास, संस्कृत और अंग्रेजी, वही विषय जो नंजुंडा ने पढ़े थे। मैं भी दुर्भाग्य से एक अच्छे छात्र को खो बैठा। अब मैं बीए की कक्षाएं नहीं पढ़ाता। मेरे एक पूर्व छात्र, श्री होन्नाया, आपके इतिहास के व्याख्याता होंगे। वैकल्पिक अंग्रेजी के कुछ सत्र मेरे भाई लेते हैं। मुझे लगता है कि संस्कृत के लिए नरसिम्हा शास्त्री हैं।' उन्होंने अपनी मेज पर लगी घंटी बजाई; उनका सहायक प्रकट हुआ। 'कॉलेज जाइए और राजा राव को साथ ले आइए,' उन्होंने कहा, फिर कात्यायनी की ओर मुड़कर पूछा, 'आप प्रतिदिन किस समय घर से निकलेंगी?'

'पौने नौं।'

पौने नौ बज रहे हैं। और जब तक तुम लौटोगे तब तक छह या सात बज चुके होंगे। मेरा घर चामराजपुरा में पास ही है। दोपहर के भोजन के दौरान दोपहर 1:30 बजे जल्दी से दोपहर का भोजन करने के लिए रोज़ मेरे घर आना।

नहीं। मैं हल्का लंच पैक कर लूंगी। और मेरे साथ मेरे शहर की कुछ लड़कियां भी हैं।

‘फिर भी ले आओ। लेकिन मुझे यहीं दे दो और मेरे घर में दोपहर का भोजन कर लो,’ वह जोर से हँसा। ‘बिल्कुल भी संकोच मत करो। तुम भी इस घर के ही हो।’
करुणा को समझ नहीं आया कि डॉ. राव इतनी ज़ोर से क्यों हँसे। उनकी बातचीत से उसे कुछ अंग्रेज़ी और संस्कृत शब्द ही समझ आए। राव ने उसे समझाया। तभी राजा आ गया। राव ने कात्यायनी का उससे परिचय कराते हुए कहा, 'आप नंजुंडा श्रोत्री को जानती हैं, है ना?'
'बिल्कुल, मुझे याद है। हम सहपाठी थे। वह अपने सीनियर बीए के लिए अंग्रेजी पढ़ रहा था। मैं अपने ऑनर्स के दूसरे वर्ष के लिए उसी विषय की तैयारी कर रहा था।'
‘ठीक है,’ राव ने कात्यायनी की ओर मुड़कर कहा, ‘तुम उसे आवेदन पत्र और शुल्क दे दो। वह तुम्हें समय पर एक कार्ड भेज देगा, जिसमें कक्षाओं के प्रारंभ होने की तिथि की सूचना होगी। तब तक तुम्हें कॉलेज आने की आवश्यकता नहीं है। अब तुम उसके साथ मेरे घर आओ।’
‘नहीं, मैं...’, राव ने उसकी बात काटते हुए कहा, ‘तुम कभी हमारे घर नहीं आई हो। क्या तुम्हें जान-पहचान नहीं कर लेनी चाहिए? वैसे भी, तुम्हारी वापसी की ट्रेन शाम को है।’
कात्यायनी ने राजा को आवेदन पत्र और शुल्क की राशि सौंप दी। जाने से पहले करुणा ने राजा से पूछा, 'इस साल आपका पहला नाटक कौन सा है?'
‘चंद्रगुप्त मौर्य। मैं इसे बहुत नाटकीय बनाऊंगा और तुम्हारे साथी इतिहासकारों से शपथ दिलवाऊंगा कि यह सब झूठ है।’ वह हंसते हुए बाहर निकल गया, कात्यायनी उसके पीछे-पीछे चल रही थी। चलते-चलते कात्यायनी को असहज महसूस हो रहा था। उसकी झिझक दूर करने के लिए उसने पूछा, ‘तुमने कौन-कौन से विषय चुने हैं?’
इतिहास, अंग्रेजी, संस्कृत।
'अच्छा चुनाव। इतिहास मेरे भाई की विशेषज्ञता है। बाकी दोनों साहित्य के क्षेत्र से संबंधित हैं। क्या मैं आपके इस चुनाव को साहित्य के प्रति आपके लगाव के रूप में समझूँ?'
उसने अनिच्छा से कहा, 'थोड़ा सा।'
‘थोड़ा-थोड़ा करके बहुत कुछ हो जाता है। जब कक्षाएं शुरू हों, तो पुस्तकालय से किताबें उधार लें और पढ़ने की आदत डालें। क्या आपने कन्नड़ उपन्यास पढ़े हैं?’
मैंने दो साल पहले ऐसा किया था। अब नहीं।
वे राजा के घर के द्वार पर पहुँचे। नागलक्ष्मी को श्रोत्रियों के बारे में जानकारी थी। जब राजा ने कात्यायनी का परिचय उनसे कराया, तो नागलक्ष्मी भावुक हो उठीं। नागलक्ष्मी

अभी कात्यायनी की दुर्दशा पर विचार ही कर रही थीं कि राजा ने कात्यायनी से पूछा, 'आज सुबह तुम घर से कितने बजे निकली थीं?'
'पौने नौं।'
‘अच्छा, तो अब दोपहर का भोजन कर लीजिए। मेरी भाभी आपको ठंडे चावल परोसेंगी।’
नागलक्ष्मी नाश्ता बनाने की सोच रही थी, लेकिन अब उसने दोपहर का भोजन करने पर ज़ोर दिया। स्वाभाविक रूप से, कात्यायनी मान गई। दोपहर के भोजन के बाद, राजा ने कहा, 'तुम्हें रोज़ यहीं दोपहर का भोजन करना चाहिए। घर कॉलेज के बहुत पास है।'
कात्यायनी दोनों भाइयों के विचारों की समानता देखकर आश्चर्यचकित रह गई। उसे पूरा यकीन था कि उनके प्रस्ताव उनकी शालीनता का परिणाम थे, और उन्होंने आपस में ऐसा कोई समझौता नहीं किया था। एक अंदरूनी कमरे में जाकर नागलक्ष्मी और कात्यायनी ने काफी देर तक बातें कीं और दोनों एक-दूसरे को पसंद करने लगे। जब कात्यायनी के कॉलेज जाने का समय हुआ, तो नागलक्ष्मी ने कहा, 'रोज दोपहर के भोजन के लिए यहाँ आना। आपको जो भी समय सुविधाजनक लगे, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। छाछ में चावल भी मिल जाएं तो अच्छा रहेगा। यह घर तुम्हारा भी है।'
राजा भी कॉलेज जाना चाहता था। उसने कहा, 'चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें कॉलेज ले चलता हूँ। मुझे एक नाटक का रिहर्सल देखने जाना है।'
राव के भाई और पत्नी के सौहार्दपूर्ण व्यवहार से कात्यायनी को बहुत राहत मिली। सुबह घर से निकलते समय उसके मन में जो चिंता थी, वह दूर हो गई। हालांकि कॉलेज लौटते समय राजा के साथ उसे थोड़ी सहजता महसूस हुई, फिर भी उसने बातचीत शुरू नहीं की। उसे गर्ल्स लाउंज में छोड़कर राजा चला गया। कात्यायनी अंदर गई और एक कुर्सी पर बैठ गई। सात-आठ लड़कियों को छोड़कर—जो सभी अजनबी थीं—वहाँ कोई और नहीं था। वासंती अभी तक नहीं आई थी। उसे जल्दी घर जाने की बेचैनी हो रही थी। कई बार वह वासंती के आने की उम्मीद में दरवाजे तक गई, लेकिन उसका कोई आभास नहीं हुआ। दोपहर के 2 बज रहे थे। उसे पूरा यकीन था कि वासंती 5 बजे से पहले आ जाएगी, इसलिए कात्यायनी अंदर गई और बेंत की कुर्सी पर आराम से बैठ गई। उसका मन अपने पति की यादों से भरा हुआ था। 'जब वह कॉलेज जाता था, तब कहाँ बैठता था? क्या मेरी तरह उसे भी जल्दी घर जाने की बेचैनी होती थी?' जब वह इन विचारों में

खोई हुई थी, तभी वासंती आ गई।

अध्याय 7

1

करुणा के मैसूर आने से राव की पांडुलिपि में नई जान आ गई। अगला अध्याय लिखने से पहले, वे उसे करुणा को सुनाते। करुणा ध्यान से सुनती और उसमें मौजूद उन पहलुओं के बारे में सवाल पूछती जिन पर उसके मन में संदेह होता। राव उनमें से एक सवाल को नोट करते हुए कहते, 'अच्छा हुआ तुमने यह बात उठाई। इस पर पुस्तक में विस्तार से चर्चा होनी चाहिए।' करुणा ने सचमुच राव के लेखन को मजबूत किया था, क्योंकि उसे व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो गया था कि पुस्तकालय की किस पुस्तक में क्या जानकारी है, वर्तमान समय में किन पुस्तकों की आवश्यकता होगी, उन्हें कैसे प्राप्त किया जाए, आदि। कई बार राव अपने नोट्स के आधार पर करुणा को बोलकर लिखवाते। करुणा उसे शॉर्टहैंड में लिखती, अपने छात्रावास में टाइप करती और अगली सुबह उपलब्ध करा देती। वह केवल बोलकर टाइप ही नहीं करती; वह बोलचाल की भाषा को हटाकर और कालानुक्रमिक रूप से पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए अनुभागों को व्यवस्थित करती। राव द्वारा खरीदा गया नया टाइपराइटर अब करुणा के पास छात्रावास में था।

शोध अध्येता के रूप में अपनी योग्यता के अलावा, डॉ. राव की सिफारिश से करुणा को महिला छात्रावास में एक अलग कमरा मिल गया। वह छात्रावास के भोजन की आदी हो गई थी, लेकिन नाश्ते के लिए उसने रोटी और दूध की व्यवस्था स्वयं की थी। वह सुबह 10 बजे दोपहर का भोजन करती और पुस्तकालय जाती। शाम 7 बजे तक उसका काम समाप्त हो जाता, तब तक वह अपनी पढ़ाई करती, नोट्स बनाती और राव द्वारा दिए गए अन्य कार्य करती। दोपहर में वह पुस्तकालय में डॉ. राव के साथ कुछ हल्का नाश्ता करती। रात के समय वह अपने शोध प्रबंध पर काम करती। यहाँ आने से पहले ही उसने अपने शोध प्रबंध के लिए काफी जानकारी एकत्र कर ली थी। बस, उसे यह नहीं पता था कि इसे कैसे विस्तार से प्रस्तुत किया जाए और इसे शोध प्रबंध के प्रारूप में कैसे ढाला जाए। डॉ. राव के साथ कुछ महीनों तक विचार-विमर्श करने के बाद, वह उस मूल बिंदु को निर्धारित कर सकी जिसके इर्द-गिर्द उसका शोध प्रबंध विकसित होना था। अब केवल लेखन कार्य शेष था, और उसे विश्वास था कि वह इसे

सफलतापूर्वक पूरा कर लेगी। इसलिए, उसने अपने मार्गदर्शक की पुस्तक को प्राथमिकता दी। उसने इस महाकाव्य कृति के निर्माण में भाग लेना अपना सौभाग्य समझा, जिसे उसके गुरु ने अपने जीवन का मिशन बना लिया था, और उसने स्वयं को पूरी तरह से उस कार्य के लिए समर्पित कर दिया।

जब पहले खंड की पटकथा लिखने का काम शुरू हुआ, तो राव ने खुद को अपने आसपास की व्यावहारिक दुनिया से अलग पाया। यहां तक कि जब वे रात को 8 बजे देर से घर लौटते थे, तब भी उन्हें घर के किसी भी काम में कोई दिलचस्पी नहीं होती थी। बोलने की इच्छा तभी जागृत होती थी जब कोई उनसे उनके शोध के बारे में पूछता था। अन्यथा, उन्हें न केवल बोलना अनावश्यक लगता था, बल्कि बोलना असंभव सा लगता था।

राजा कभी-कभी पूछा करते थे, 'संकलन में क्या प्रगति हुई है?'

‘पहले खंड का आधा भाग पूरा हो चुका है।’

‘यह काम कब तक पूरा हो जाएगा?’

‘पांडुलिपि लगभग छह महीने में तैयार हो जाएगी।’

इस विषय पर उनकी चर्चा राजा के ज्ञात नाटकों में सबसे छोटे अंक से अधिक लंबी नहीं हो सकती थी; न ही उन्हें गहराई में जाने में कोई दिलचस्पी थी। वैसे भी इतिहास उनकी रुचि का विषय नहीं था... उनका मन किसी नाटक या किसी अन्य पाठ्येतर गतिविधि में लगा रहता था। घर पर वे अपनी भाभी से खुलकर बातें करते या पृथ्वी के साथ खेलते। एकांत में चुपचाप बैठना उनके स्वभाव में नहीं था।

एक रात राव रात 8 बजे घर लौटे, और राजा अभी तक नहीं आया था। पृथ्वी किसी कारणवश अड़ियल हो गया था और अपनी माँ को परेशान कर रहा था। राजा उसे हर शाम साइकिल पर घुमाने ले जाता था। आज राजा को देर हो गई क्योंकि उसे एक नाटक का निर्देशन करना था। अपने पिता को देखते ही पृथ्वी उनसे साइकिल चलाने के लिए ज़िद करने लगा। राव एक कुर्सी पर बैठ गए और उसे बुलाकर अपनी गोद में बिठा लिया। लेकिन पृथ्वी चुप नहीं हुआ। 'मुझे साइकिल पर ले चलो,' उसने अपने पिता की कमीज़ की आस्तीन खींचते हुए कहा और रोने लगा। राव न केवल दिनभर के काम से थके हुए थे, बल्कि उन्हें अपने बेटे को दिलासा देने के लिए कोई शब्द भी नहीं सूझ रहे थे। उनका मन पूरी तरह से इस राष्ट्र के समग्र सांस्कृतिक इतिहास के पुनर्निर्माण में डूबा हुआ था, इसलिए यह स्वाभाविक था कि वे अपने बेटे को दिलासा देने वाले शब्द

नहीं सोच पा रहे थे। वे अकेले रहना चाहते थे, इसलिए उन्होंने कहा, 'बेटा, ज़्यादा हंगामा मत करो। अपनी माँ के पास जाओ।'
जैसे कि उसे अपने पति की इस प्रतिक्रिया का पूर्वाभास हो, नागलक्ष्मी रसोई से झट से बाहर निकली और बोली, 'अपनी माँ के पास जाओ! अपनी माँ के पास जाओ! उसकी देखभाल कौन करता है - उसकी माँ या तुम? जब बच्चा कभी-कभार कोई छोटी सी मदद माँगे, तो उसकी बात मान लेने में तुम्हारा क्या नुकसान है? अगर तुम चाहते तो मैं भी तुम्हारे साथ आती।'
राव में अपनी पत्नी का सामना करने की हिम्मत नहीं बची थी। वह बस एक-दो घंटे अकेले रहना चाहते थे, ताकि रात भर पढ़ने या लिखने के बाद उन्हें थोड़ी राहत मिल सके। उन्होंने एक बार उनकी तरफ देखा और चुप रहे। नागलक्ष्मी निराश हो गईं। आखिरकार उन्होंने पूछा, 'वह हमेशा अम्मा क्यों कहते हैं? क्या वह सिर्फ मेरे बच्चे हैं? क्या वह आपके भी नहीं हैं?'
फिर भी राव ने कुछ नहीं कहा। मानव स्वभाव से भलीभांति परिचित होने के कारण उन्हें पूरा विश्वास था कि क्रोधित व्यक्ति से बहस करने से उनका क्रोध और भड़क उठेगा, इसीलिए वे आरामकुर्सी पर आराम से बैठ गए। मानो स्वयं से ही बड़बड़ाते हुए नागलक्ष्मी ने कहा, “विवाह के इतने वर्षों बाद भी पत्नी में कोई रुचि नहीं, बच्चे की कोई चिंता नहीं! ऐसे ही करते रहो। अगर संयोगवश मैं मर गई, तब तुम मेरी अनुपस्थिति का शोक मनाना सीखोगे।”
राव उस टिप्पणी से नाराज़ हो गए। उन्होंने कहा, 'बुरा शगुन क्यों बोल रहे हो? इधर आओ।' अपनी माँ की तेज़-तर्रार बातें सुनकर बच्चा तब तक चुप हो चुका था। नागलक्ष्मी उसके पास गईं और पूछा, 'क्या?'
‘आओ, यहाँ बैठो,’ उसने उसे उस कुर्सी के आर्मरिस्ट की ओर इशारा किया जिस पर वह बैठा था।
‘कोई बात नहीं। कहते हैं ना, दावत में बुलाए जाने के लिए गिड़गिड़ाना पड़ता है,’ वह एक कदम पीछे हट गई। बच्चा भी अपनी माँ के पास चला गया। राव एक बार फिर चुप हो गईं।
पांच मिनट बाद, नागलक्ष्मी अपने पति के पास गईं और उनकी कुर्सी की भुजा पर बैठ गईं और बोलीं, 'आप हर बात में हद से ज्यादा करते हैं। आप हर रविवार को तेल स्नान क्यों नहीं कर सकते? जाकर खुद को आईने में देखिए, आप आजकल बहुत दुबले-पतले दिखते हैं।'

‘मेरी किताब बढ़ती जा रही है,’ राव मुस्कुराए।
‘किताब! किताब! पत्नी और बच्चे का क्या? तुम खुद को भी नजरअंदाज कर रहे हो! सिर्फ किताब के दीवाने हो। मुझे लगता है कि मेरी मृत्यु के बाद ही तुम्हें सच्चाई का एहसास होगा।’
‘मुंह से अशुभ संकेत क्यों निकलते हैं?’
‘मैं और क्या करूँ? क्या आप कभी मेरी परेशानियों के बारे में पूछते हैं? क्या आप सप्ताह में एक बार भी मुझसे थोड़ी देर बात करते हैं? क्या आप कभी मुझे बाहर ले जाते हैं? अगर आपको मेरी ज़रूरत ही नहीं है, तो मैं क्यों जीऊँ?’ उसकी आँखों में आँसू भर आए। राव का दिल पिघल गया। ‘उठो। चलो टहलने चलते हैं,’ वह खुद उठ गया। उसने कहा, ‘साढ़े नौ बज चुके हैं। राजा किसी भी पल आ जाएगा।’ ठीक उसी समय, मुख्य द्वार पर साइकिल की घंटी सुनाई दी। जहाँ वह बैठी थी, वहाँ से उठकर उसने कहा, ‘कल सुबह उठकर अच्छे से तेल लगाकर सिर धो लेना।’
‘कल नहीं। मुझे बहुत कुछ लिखना है। किसी और दिन,’ राजा के साइकिल पर बैठते ही उन्होंने कहा। नागलक्ष्मी ने अपने सारे सुलह के प्रयासों की निरर्थकता पर आह भरी। मानो अपने चाचा के आने की प्रतीक्षा में, पृथ्वी दौड़कर उनके पास गया और साइकिल के पैडल पर पैर रख दिया।

2

अगली सुबह 10 बजे, राव पुस्तकालय में अपने केबिन में थे और करुणा को लिखवा रहे थे। लिखवाते हुए पांच मिनट बाद ही करुणा ने कहा, 'सर, मुझे लगता है कि आपका मूड ठीक नहीं है।'
'क्यों?'
मुझे लगता है कि आपका वर्णन सुसंगत नहीं है।
‘कोई बात नहीं। बस नोट्स लिख लो,’ राव ने बोलकर बताना जारी रखा।
करुणा ने पांच मिनट बाद राव को फिर से देखा और कहा, 'महोदय, आप सचमुच भ्रमित हैं। आपने कई जगहों पर गलती की है। "भारत के पुराण" कहने के बजाय आपने "कालिदास के नाटक" कह दिए! "भारत की संस्कृति" कहने के बजाय आपने "बेबिलोनियन सभ्यता" कह दी!'
'यह है?'

‘क्या मैं वह पढ़कर सुनाऊं जो आपने बताया?’
‘कोई ज़रूरत नहीं। मैं मानता हूँ। मेरा मूड वाकई खराब है,’ राव ने अपनी कुर्सी पर पीछे झुकते हुए कहा और आगे बोला, ‘आप अपने शोध प्रबंध पर ध्यान दें। मैं ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ।’
करुणा कमरे से बाहर निकली और पुस्तकालय में कुछ किताबें ढूंढने चली गई। राव अपनी रोज़ की कुर्सी से उठे और एक आरामकुर्सी पर बैठ गए। कल रात नागलक्ष्मी के साथ झगड़े के बाद से वे परेशान थे। उनके शब्द, 'मुझे लगता है कि तुम्हें ज्ञान मेरी मृत्यु के बाद ही मिलेगा,' उनके कानों में गूंज रहे थे। वह इतनी कठोर क्यों बोलीं, पहले कभी नहीं बोली थीं? उन्हें कोई कारण समझ नहीं आ रहा था। उन्होंने कई बार ठान लिया था कि उन्हें नागलक्ष्मी को कुछ अच्छा समय देना चाहिए और उनसे ठीक से बात करनी चाहिए। लेकिन सामने मौजूद विशाल कार्य ने उन्हें कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। उनका जीवन और शोध, दोनों ही अपनी-अपनी पहचान खो बैठे थे, यहाँ तक कि भोजन और आराम जैसी नियमित क्रियाएँ भी उनके अवचेतन मन का हिस्सा बन गई थीं और अपने ही समय के अनुसार चलती थीं। अगर वे अपने मन को सामने मौजूद गहन कार्य से ज़बरदस्ती अलग कर लेते और कुछ समय के लिए भी अपनी पत्नी के साथ जानबूझकर कुछ पल बिताते, तो उन्हें लगता कि उन्होंने एक अच्छे जीवन को त्यागकर एक नया जीवन अपना लिया है।
करुणा आधे घंटे बाद किताबों का बोझ लेकर वापस आई, उस पर एक नज़र डाली और बोली, 'महोदय, आप उस कुर्सी पर शून्य मुद्रा में लेटे हुए हैं। आपको कुछ दिनों के आराम की ज़रूरत है। आप बेवजह समय बर्बाद कर रहे हैं। मनुष्य का मस्तिष्क कोई मशीन नहीं है। आप घर जाइए।'
राव को करुणा के सांत्वना भरे शब्द अच्छे लगे। उन्होंने पूछा, 'तुम क्या करोगी?'
मैंने कल रात कुछ स्क्रिप्ट लिखी है। मैं इसकी समीक्षा करूंगा।
चलो थोड़ी देर टहलते हैं।
उसने कुछ देर उसके प्रस्ताव पर विचार किया और फिर कहा, 'यह भारत है!'
‘तो क्या हुआ? चलो चलें। मुझे लगता है दोपहर को कन्नमबाड़ी के लिए ट्रेन है। शाम तक वापस आ जाते हैं। मेरा मूड इतनी जल्दी ठीक नहीं होगा।’
राव ने अपना केबिन बंद किया और करुणा के साथ बाहर निकले। वे कॉलेज के टीले के पास से गुज़रे, वायसराय रोड पर एक तांगा किराए पर लिया और रेलवे स्टेशन चले गए। उन्होंने ट्रेन के तीसरे दर्जे के डिब्बे में प्रवेश किया क्योंकि उस ट्रेन में दूसरे दर्जे का

डिब्बा नहीं था। जब ट्रेन चलने लगी, करुणा ने कहा, 'मैं वृंदावन देखना चाहती थी। इतने महीनों तक समय नहीं मिल पाया। आपके खराब मूड की वजह से आज मैं आ सकी!'
जब धीमी गति वाली ट्रेन बेलागोला से गुज़रकर कन्नमबाड़ी स्टेशन पर पहुँची, तब दोपहर के 12:45 बज चुके थे। ट्रेन से उतरते ही वे सीधे एक रेस्तरां की ओर चल पड़े। नाश्ता और कॉफ़ी के बाद, वे थोड़ी देर टहले और फलों के बगीचे के पार पेड़ों की छाँव में बैठ गए। राव का मन भारत के सांस्कृतिक इतिहास से पूरी तरह अलग हो गया था। उस तंग, कम रोशनी वाले केबिन में जहाँ ताज़ी हवा मुश्किल से मिलती थी, अब तक बंद रहने वाले राव के लिए प्राकृतिक रोशनी और हवा से भरपूर खुला स्थान एक ताज़गी भरा सुकून था। पास के झरने की गर्जना पास के तालाब में ऐसे गूंज रही थी मानो दो तानपुरा ऊँची पिच पर बज रहे हों। पक्षी ऊँचे आकाश में चंचलता से उड़ रहे थे। राव, जो चुपचाप यह सब देख रहे थे, ने करुणा से पूछा, 'लगभग एक साल में तुम्हारा शोध पूरा हो जाएगा, और तुम्हें पीएचडी की उपाधि भी मिल जाएगी। अपने गृहनगर लौटने पर तुम क्या करोगी?'
'मुझे भी यही चिंता है!'
किसी दूसरे विषय में शोध जारी रखें। या फिर, यदि आप दृढ़ विश्वास के साथ मनन करें, तो उसी विषय में एक नया दृष्टिकोण खुल जाएगा; यह आपको हमेशा के लिए उसी राह पर ले जाएगा। यह सब आपकी शोध करने की क्षमता और दृढ़ विश्वास पर निर्भर करता है।
मुझे अकेले ही शोध जारी रखने का बिल्कुल भी भरोसा नहीं है।
‘ऐसी सोच में कभी मत पड़ो। पीएचडी के लिए जो काम तुम अभी कर रहे हो, उससे तुम्हें शोध की पद्धतियों का ज्ञान मिलेगा। असली काम तो उसके बाद ही शुरू होगा।’ मानो कुछ याद करते हुए उन्होंने आगे कहा, ‘या फिर, अगर तुम चाहो तो अपनी परीक्षा की राशि लो, अपने गृहनगर जाओ, शादी करो और खुश रहो। अगर तुम्हें ऐसा जीवनसाथी मिल जाए जिसकी सोच भी तुम्हारे जैसी हो, तो तुम दोनों मिलकर शोध कर सकते हो।’
करुणा ने दबे स्वर में विरोध जताया ताकि वह उसे सुन न सके और आह भरी। उसने आह सुनी और पूछा, 'क्यों, क्या तुम विवाह में विश्वास नहीं रखती?'
'मैं करता हूं।'
'तब?'

करुणा ने कोई जवाब नहीं दिया। विषय बदलते हुए राव ने पूछा, 'इतिहास के अध्ययन और शोध में आपकी रुचि कैसे जागी? क्या आपके परिवार का कोई सदस्य इसमें रुचि रखता है और आपके लिए एक आदर्श रहा है?'

अब करुणा ने अपनी सारी झिझक छोड़कर खुलकर बोलना शुरू किया। 'मेरे परिवार में पढ़ाई को गंभीरता से लेने वाली मैं अकेली हूँ। मेरे दादाजी के समय से ही हमारा परिवार व्यापार में लगा हुआ है। उससे पहले हम पेल्पोला नाम के एक गाँव में किसान थे, जो कस्बे के बहुत करीब है। मैं उस गाँव में रही हूँ। वहाँ हमारे रबर के बागान और काली मिर्च की बेलें हैं। लेकिन परिवार का ध्यान ज़्यादातर व्यापार पर ही रहता था। मेरे भाई ने मेरे कस्बे के एक कॉलेज से बीए किया; मैंने भी। आगे की पढ़ाई करने की इच्छा से मैंने कोलंबो से एमए किया। तभी से मेरे अंदर गंभीरता से पढ़ाई करने की रुचि जागी। वहाँ डी'सिल्वा नाम के एक प्रोफेसर थे। उन्हें सीखने की बहुत ललक थी, लेकिन शोध में उनकी रुचि नहीं थी। जब मैंने उनसे पढ़ाई की, तो मुझे किताबों की लत लग गई। मैंने निर्धारित पाठ्यक्रम से कहीं ज़्यादा पढ़ा। तभी से मैंने बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन करना शुरू किया। हालाँकि मेरे परिवार के सभी सदस्य बौद्ध हैं, लेकिन उनमें से कोई भी इसके बारे में ज़्यादा नहीं जानता। मैं सिंहली भाषा में स्थित सभी बौद्ध स्थलों पर जाती, उनके बारे में उपलब्ध सभी लेख पढ़ती और नोट्स बनाती।'

कोलंबो में एमए की पढ़ाई के दौरान मैंने संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का अध्ययन किया। इन दोनों भाषाओं से परिचित हुए बिना कौन बौद्ध धर्म के बारे में जान सकता है; भारतीय इतिहास के बारे में तो कोई जानेगा ही नहीं। फिर मुझे कैम्ब्रिज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति मिली।

राव ने करुणा की बात पूरी एकाग्रता से सुनी। करुणा ने आगे कहा, "कैम्ब्रिज में मैंने अध्ययन पद्धति के बारे में सीखा। लेकिन आपसे ही मैंने शोध पद्धति सीखी। अगर मैं आपसे न मिली होती, तो यह किताब न लिख पाती। जब मैं आपकी शोध के प्रति समर्पण की छवि अपने मन में देखती हूँ, तो मेरा मन ऐसी ऊँचाइयों को छू लेता है जिनकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती! मुझे यह नहीं पता था कि मेरे जीवन का क्या अर्थ है, और मेरी आत्मा अपनी गहरी आकांक्षाओं को कैसे पहचाने और उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करे। यहाँ आने के बाद, आपने मेरी आत्मा को यह दिखाया।"

करुणा की बातें सुनकर राव प्रसन्न हुए। आज तक किसी ने भी इतनी निःसंकोच और सहजता से उनकी प्रशंसा नहीं की थी। विद्वानों ने उनके कार्यों की प्रशंसा में उन्हें पत्र लिखे थे, उनके बारे में विद्वतापूर्ण समीक्षाएँ प्रकाशित की थीं, लेकिन किसी ने भी गुरु के

प्रति श्रद्धा का भाव नहीं दिखाया था। और तो और, अब उनसे इस प्रकार मिल रही थीं कैम्ब्रिज से पढ़ी एक युवा महिला विद्वान। एक ऐसी प्रसन्नता में जिसे वे स्वयं भी व्यक्त नहीं कर पा रहे थे, और एक प्रकार की अस्पष्ट पीड़ा के भाव से राव बोले, 'करुणा, विद्वता और शोध का मार्ग शैतान के जीवन के समान है। इसमें सबको भूलकर अपने काम में लीन हो जाना पड़ता है। क्या तुम विवाह को पूरी तरह त्याग सकती हो?'

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। शर्म से उसकी चमकती आँखें सिकुड़ गईं। खुद को संभालते हुए, उसने मानो कुछ याद करते हुए कहा, “शादी का प्रस्ताव भी आया था। मेरा भाई नारियल निर्यात का व्यवसाय करता था, जिसमें उसका एक हमउम्र साथी था। वे दोस्त थे और वह कई बार हमारे घर आया था। मैं तब 20 साल की थी और बीए कर रही थी। उसने अभी-अभी बीए पूरा किया था और अपना व्यवसाय शुरू किया था। एक बार जब वह आया, तो उसने मेरे सामने ही मुझसे शादी करने की इच्छा ज़ाहिर की। मैंने कोई इच्छा नहीं जताई। मेरे परिवार ने सोचा कि यह मेरी स्वाभाविक शर्म है। मेरे भाई को उम्मीद थी कि यह प्रस्ताव सच हो जाएगा। वह आदमी सचमुच मेरे लिए दीवाना था। आखिरकार, मैंने कोलंबो जाकर एमए करने की इच्छा ज़ाहिर की। मेरे माता-पिता शादी होने से पहले मुझे जाने नहीं देना चाहते थे, लेकिन जब मैं अड़ी रही तो उन्हें मानना पड़ा।”

वह व्यक्ति इस उम्मीद में इंतज़ार कर रहा था कि मैं अपनी एमए की पढ़ाई पूरी करने के लिए राज़ी हो जाऊँगी। कोलंबो से लौटने के बाद, मुझे अपना भविष्य स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। मुझे एहसास हुआ कि मेरी पढ़ाई-लिखाई और उसके पेशे में ज़रा भी तालमेल नहीं था। मैंने उसे पत्र लिखकर कहा कि उसे कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। उसने मुझे जवाब में लिखा कि वह मेरे बिना नहीं रह सकता और वह मेरी पढ़ाई में किसी भी तरह की बाधा नहीं डालेगा। सच है, उसने मेरी पढ़ाई में बाधा नहीं डाली, लेकिन हम किस आधार पर एक साथ आ सकते थे? मैंने अपनी आज़ादी के लिए जो रास्ता चुना था, वह उसके लिए पूरी तरह से अनजान था। उसका व्यापार, पैसा, सोना और चांदी भी मेरे लिए अनजान थे। यह तय करते हुए कि दो अजनबियों के बीच कुछ भी समान नहीं है, मैंने उसे साफ मना कर दिया। मैंने ऐसा हम दोनों के भले के लिए किया। फिर मैं कैम्ब्रिज चली गई। कुछ और समय तक उम्मीद में रहने के बाद, उसने दो साल पहले दूसरी दुल्हन ढूंढ ली।

वह चुप हो गई। जब भी वह उस प्रस्ताव को टालती, तो उसे वास्तव में पीड़ा होती थी। कई बार उसका मन दुविधा में पड़ जाता था। इससे दूर रहने का उसका संकल्प कई

संभावनाओं से घिर जाता था: पढ़ाई के प्रति यह दीवानगी कब तक चलेगी? क्या एक पारिवारिक मित्र, एक सुंदर और प्रतिष्ठित सामाजिक व्यक्ति, जो मुझसे प्रेम का भीख मांग रहा है, के विवाह प्रस्ताव की कीमत पर इस दीवानगी से चिपके रहना मेरी नासमझी नहीं होगी? वह प्रेम जो हमारे बीच बंधन का काम करेगा, मेरी पढ़ाई को कैसे प्रभावित कर सकता है? क्या गृहिणी होने के कर्तव्य और अपनी पढ़ाई के बीच संतुलन बनाना असंभव है? लेकिन अंततः उसका संकल्प प्रबल हुआ। फिर भी, जब उसे दो साल पहले उसकी शादी की खबर मिली, तो वह अनजाने में ही आंसू बहा बैठी। लेकिन फिर उसने खुद को संभाला, अपने भाई के साथ उसकी शादी में शामिल हुई और उसे शुभकामनाएं दीं। उसने यह बात राव को नहीं बताई।

3

लगभग आधे घंटे तक कोई नहीं बोला। राव उसके दृढ़ संकल्प पर विचार कर रही थी। उसने शादी का प्रस्ताव आने से पहले ही अपने लक्ष्य तय कर लिए थे और उसी के अनुसार अपना रास्ता चुन लिया था। लेकिन राव के जीवन में ऐसा नहीं हुआ था। हालांकि उसने शादी से पहले ही अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया था, लेकिन उसने लक्ष्य और शादी के बीच सामंजस्य की आवश्यकता पर कभी विचार नहीं किया था। उसकी शादी तब हुई जब वह एक ही समय में पढ़ाई के मामले में परिपक्व था, और वैवाहिक जीवन के मामले में किशोर जैसा था। वह इस पर आत्मनिरीक्षण कर रहा था। करुणा ने दो बार कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। राव ने पूछा, 'लगता है तुम कुछ कहना चाहती हो।'
'कुछ भी नहीं।'
'मुझे बताने में कोई बुराई नहीं है। संकोच मत करो।'
‘कुछ खास नहीं,’ उसने कहा, लेकिन कुछ सेकंड बाद उसने सच बता दिया। ‘यह आपका निजी मामला है।’
'मेरे बारे में कुछ भी व्यक्तिगत नहीं हो सकता। बेझिझक पूछें।'
‘आप हमेशा पढ़ाई में लीन रहेंगे। आपकी पत्नी शिक्षित नहीं हैं। क्या आप दोनों एक-दूसरे के अनुकूल हैं?’
‘क्यों पूछ रहे हो?’ उसने शांत भाव से पूछा, जैसा कि उसने खुद पर थोपने का सोचा था।

इसे देखकर करुणा ने कहा, 'कुछ खास नहीं। मैं बस यह जानना चाहती थी कि क्या आपका उदाहरण मेरे भाई के दोस्त के विवाह प्रस्ताव को ठुकराने के मेरे फैसले को और भी पुख्ता करने में सहायक होगा।'
राव मुस्कुराए और बोले, 'इस मामले में शिष्य अपने गुरु से अधिक बुद्धिमान प्रतीत होता है।'
'ऐसा कैसे?'
अनजाने में ही राव ने अपनी शादी की सारी बातें बता दीं। करुणा ध्यान से सुन रही थी। जब सदाशिव अनाथ हुए और अपने चाचा के परिवार के सदस्य बने, तब उनकी उम्र बारह वर्ष थी। यह मेहनती लड़का पढ़ाई में अपने सहपाठियों में सबसे आगे था और उसने माध्यमिक स्तर की परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए। उसे मैसूर में टाटाया के अनाथालय में रहने की जगह मिल गई। उसने मारिमल्लप्पा हाई स्कूल में दाखिला लिया। दरअसल, टाटाया ने ही उसे हाई स्कूल में पढ़ाया था। उन्होंने सदाशिव को अपने संग्रह से मैकाले, जॉनसन आदि के इतिहास संबंधी लेख दिए थे। जब सदाशिव ने बीए किया, तब तक वह अपने लक्ष्यों को लेकर दृढ़ निश्चयी हो चुका था। जब उसने इतिहास को मुख्य विषय के रूप में लेकर एमए सफलतापूर्वक पूरा किया, तो उसे उसी कॉलेज में अध्यापन की नौकरी मिल गई, जहाँ से उसने स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी।
नागलक्ष्मी उनके चाचा की इकलौती बेटी थी। तब वह 13 साल की थी। एमए की नई-नई डिग्री हासिल करने वाला लड़का, जिसे उनके चाचा ने परिवार की तरह पाला था—उनका भतीजा—23 साल का था। जब चाचा ने कहा, 'शिवु, नागलक्ष्मी से शादी कर लो,' तो लड़के ने कोई विरोध नहीं किया। नागलक्ष्मी लंबी और भोली-भाली हो गई थी। उसकी लंबी चोटी और चोटी की सुंदरता से मेल खाती चमेली की मालाओं ने उसे बेहद आकर्षक बना दिया था। वह घर के कामों में भी माहिर थी। राव ने कभी शादी के बारे में या अपनी पत्नी के रूप में किस तरह की स्त्री चाहिए, इसके बारे में नहीं सोचा था। वह बस इतना जानता था कि पढ़ाई पूरी करने और करियर बनाने के बाद शादी करना जरूरी है। कॉलेज में उसकी सहपाठियों में ज्यादा लड़कियां नहीं थीं। अनाथालय में रहने के कारण उसने वहां मौजूद कुछ लड़कियों से भी कभी बात नहीं की थी। वह बस प्रोफेसरों द्वारा सुझाई गई किताबें पढ़ता था, नोट्स बनाता था और विषयों को याद करता था।
अपने चाचा के प्रस्ताव के बाद, जब वह पहली बार उनके घर गया, तो नागलक्ष्मी घर में इतनी सावधानी से चलती थी कि वह उसे देख न सके। लेकिन वह, जो उस घर का एक

सदस्य था, अंदर-बाहर आने-जाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र था। उसकी जवानी, जो अभी-अभी खिल रही थी, उसकी आँखों और मन को मोहित करने में अचूक थी। उसकी चोटी में लगी कीमती चमेली की माला उसकी हर चाल में एक खुशबू बिखेरती थी। और जब वह अपने काम करती थी, तो उसकी कलाई पर पहनी हुई कई कांच की चूड़ियों की झंकार उसके कानों को मधुर लगती थी। राव ने अपने चाचा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

शादी के बाद वे मैसूर चले गए। राजा भी उनके साथ चले गए। तब तक राजा कुनिगल के एक हाई स्कूल में दो साल पढ़ चुके थे। शुरुआत में राव अपनी नई पत्नी के साथ ही रहते थे। उनके प्रोफेसर ने उन्हें पीएचडी करने के लिए प्रेरित किया। प्रोफेसर दो साल में रिटायर होने वाले थे, इसलिए राव को तब तक अपनी थीसिस पूरी करनी ही थी। राजा घर का काम संभालते थे। और यह कुशल पत्नी अपने पति पर आर्थिक बोझ डाले बिना सीमित बजट में घर चलाती थीं। और क्या चाहिए? उन्होंने शोध में जी-जान लगा दिया। दो साल में वे डॉ. सदाशिव राव बन गए। रिटायर होने से पहले प्रोफेसर ने कहा, 'एक विश्वविद्यालय प्रोफेसर के लिए सिर्फ पीएचडी से संतुष्ट रहना काफी नहीं होता। सच्चा शिक्षक वही होता है जो जीवन भर शोध में लगा रहता है। आप एक और किताब लिखिए।' तब तक राव की पीएचडी थीसिस प्रकाशित हो चुकी थी। वे विद्वतापूर्ण लेखन की संतुष्टि और गौरव में डूबे हुए थे। उन्होंने अपने अगले काम की शुरुआत की। उन्होंने इस पर पांच साल तक लगातार काम किया और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया। हालांकि इस नौ साल की अवधि में उन्होंने पृथ्वी को जन्म दिया था, लेकिन उनके जीवन के लक्ष्य, उनकी दिनचर्या और उनकी मानसिक स्थिति में काफी बदलाव आ चुका था। घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी नागलक्ष्मी और राजा पर आ गई थी, और डॉ. राव ने अपना पूरा ध्यान शोध कार्य में लगा दिया था।

राव ने अंततः विवाह के सार के बारे में अपना विचार व्यक्त किया। 'आप चाहे जिस तरह के जीवनसाथी से शादी करें, उसके बीच उत्पन्न होने वाला शारीरिक आकर्षण क्षणभंगुर होता है। मुझ जैसे लोगों का जीवन एकाकी ही होता है।'

अपने गुरु के जीवन के वृत्तांतों को ध्यानपूर्वक और सहानुभूतिपूर्वक सुनते हुए करुणा ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। “ऐसा होना अनिवार्य नहीं है। मैंने कैम्ब्रिज में यह देखा है। मेरे प्रोफेसर की पत्नी अपने पति की बौद्धिक गतिविधियों में भाग लेती थीं और उनकी बहुत मदद करती थीं। जो सहायता मैं अब आपको दे रही हूँ, वही सहायता उन्होंने

अपने पति को दी थी।" और यद्यपि उन्होंने यह अंतिम वाक्य बिना सोचे-समझे कहा था, फिर भी इससे उन्हें शर्मिंदगी महसूस हुई और उन्होंने अपना सिर झुका लिया।
लेकिन राव ने इस पर ध्यान दिए बिना ही जवाब दिया। 'यह सिर्फ मेरी बात नहीं है। भारतीय समाज इस समय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पुराने जमाने में तयशुदा शादियां फायदेमंद हुआ करती थीं। ऐसे समाज में जहां परिवार पेशे को प्राथमिकता देते थे, उसी पेशे से जुड़े परिवार की दुल्हन बहुत काम आती थी। पेशे को प्राथमिकता देने वाली पारिवारिक व्यवस्था का दौर बीत चुका है। अब पेशे व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करते हैं। लेकिन वह समय अभी नहीं आया है जब कोई अपनी पसंद की दुल्हन चुन सके। इस परिवर्तन के दौर में, यह स्वाभाविक है कि कई असंगत विवाह होंगे। इसके अलावा, स्वतंत्र सोच के माध्यम से अनुकूल विवाह करने की प्रथा अभी तक उभरकर स्थिर नहीं हुई है।'
करुणा ने पूछा, 'आज के समय में विवाह की अवधारणा प्राचीन भारत की तुलना में काफी अलग है, है ना?'
प्राचीन काल में यह धारणा थी कि विवाह गृहस्थधर्म का पालन करने और वंश को आगे बढ़ाने के लिए होता है। यद्यपि गृहस्थधर्म का पालन करना अभी भी काफी हद तक प्रचलित है, परन्तु दूसरा अपना अधिकांश महत्व खो चुका है। "वंश को आगे बढ़ाने" की अवधारणा अपनी क्षमता खो रही है। मेरा एक पुत्र भी है, परन्तु मुझे यकीन नहीं है कि वह मेरे वंश को आगे बढ़ाएगा। इसलिए, मेरी प्रबल इच्छा है कि वह ग्रंथ, जिसे मैंने पूरी लगन से संकलित किया है, मेरे जीवन भर मेरी इच्छाशक्ति, बुद्धि, रक्त और कोशिकाओं से ऊर्जा लेकर मेरी संतान का रूप धारण करे और अनन्त जीवन प्राप्त करे। मेरी विधिवत विवाहित पत्नी मेरी इस संतान को कोई भरण-पोषण नहीं दे सकती। इसके बजाय, तुमने इसे अत्यंत लगन से पोषित किया है।
राव के अंतिम शब्द सुनकर करुणा का चेहरा शर्म से एक बार फिर लाल हो गया। चूंकि राव का इरादा ऐसे कथन से कोई आपत्तिजनक संकेत देने का नहीं था, इसलिए उन्हें कोई झिझक नहीं हुई। उन्होंने आगे कहा, "चूंकि इन मामलों में आपकी समझ मुझसे कहीं अधिक गहरी है, इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि यदि आप विवाह करने का निर्णय लेती हैं, तो आप एक उपयुक्त जीवनसाथी का चुनाव करेंगी। चाहे पुरुष हो या स्त्री, पारिवारिक जीवन अनिवार्य है। अन्यथा जीवन नीरस हो जाएगा।" करुणा, जो अनजाने में लगभग 'हाँ' कहने ही वाली थी, जल्द ही उस शब्द के महत्व को समझ गई और खुद को रोक लिया।

तब तक छह बज चुके थे। अगर वे अब भी चलना शुरू करते, तो भी छह:30 बजे वाली ट्रेन नहीं पकड़ पाते। अब उन्हें अनिवार्य रूप से रात आठ बजे वाली ट्रेन पकड़नी ही थी। इसलिए वे आधे घंटे और आराम करते रहे। दोनों अपने-अपने अलग-अलग क्षेत्रों में चिंतन में लीन हो गए। राव ने आज पहली बार अपने जीवन के अकेलेपन को खुलकर व्यक्त किया था। अपने चिंतन में वह इसे और अधिक गहराई से समझ रहे थे। वहीं, हालांकि वह अपने जीवन में किसी पुरुष के आने की कल्पना नहीं कर सकती थी, फिर भी उनके मन में एक पुरुष की आशा थी। सात बजते-बीतते पूरा वातावरण संध्या के अंधेरे में डूब गया। चूंकि यह न तो सप्ताहांत था और न ही कोई विशेष दिन, इसलिए वृंदावन में रोशनी नहीं थी। राव ने कहा, 'हमें शाम ढलने का पता ही नहीं चला! उठो, चलो चलते हैं।'

करुणा उठ खड़ी हुई। फलों के बगीचे और एक नाले पर बने पुल को पार करते हुए, उन्हें रेस्तरां के पास से रेलवे स्टेशन जाना था। चश्मा पहने राव को रास्ता साफ दिखाई नहीं दे रहा था। यह देखकर करुणा ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'आपके लिए चलना मुश्किल है। जब तक हम किसी रोशन जगह पर नहीं पहुँच जाते, मैं आपका हाथ थामे रहती हूँ।' हाथ थामे राव तेज़ी से चलने लगे। लगभग दस कदम चलने के बाद उन्होंने कहा, 'शोध में मैं आपका मार्गदर्शक हूँ। इस अंधेरे में आप मेरी मार्गदर्शक हैं,' और हँस पड़े।

करुणा का मन कहीं दूर भविष्य की कल्पनाओं में खोया हुआ था। फिर भी, उसने उसकी बातें सुनीं। उसका हाथ और मजबूती से पकड़कर वह उसे तेजी से अपने साथ ले गई।

अध्याय 8

1

कात्यायनी की कॉलेज की पढ़ाई सुचारू रूप से चल रही थी। वह रोज़ सुबह 8:45 बजे नाश्ता करती, फिर दही या कौली में चावल और अचार पैक करती, और अपनी किताबें लेकर वासंती के साथ थोड़ी देर बाद रेलवे स्टेशन पहुँच जाती। वह सुबह 9 बजे वाली ट्रेन के महिला डिब्बे में बैठती और चामराजपुरा स्टेशन पर उतरती। वास्तव में, उसके साथ और भी लोग होते थे, क्योंकि वासंती के अलावा, नंजनगुड से सात-आठ लड़कियाँ रोज़ आती-जाती थीं; 30 से ज़्यादा लड़के दूसरे डिब्बों में बैठते थे। सफ़र का समय एक घंटा था, और रोज़ आने-जाने वाले लोग आपस में हँसी-मज़ाक करते और हँसी-मज़ाक में मग्न रहते। किसी लड़की के किसी लड़के से बात करने की गपशप होती रहती! हाल ही में सगाई हुई लड़की को बधाई देने के बहाने खूब परेशान किया जाता। यह सब देखकर नागलक्ष्मी मुस्कुरा देती। इससे रोज़ के सफ़र की नीरसता दूर हो जाती। लेकिन कोई भी उसकी बात नहीं मानता; शायद उसकी विधवा होने की वजह से। या फिर मातृत्व से उनके चेहरे पर आई गंभीरता ने उन्हें उनके साथ छेड़छाड़ करने से रोक दिया होगा।

कॉलेज के खुले सभागार में थिएटर एसोसिएशन हर महीने नाटक प्रस्तुत करता था; कात्यायनी उन्हें देखने के लिए नहीं रुकती थी। नाटक शाम 6 बजे शुरू होते थे और कई लड़कियाँ उन्हें देखकर रात 9 बजे की ट्रेन से लौट जाती थीं। कात्यायनी भी देखना चाहती थी, लेकिन देर रात तक रुकने के डर से उसने ऐसा नहीं किया। इसके अलावा, शाम के बाद अपने बच्चे से मिलने में देरी करना उसके लिए नामुमकिन था। यहाँ तक कि जब वासंती—जो अब पहले से कहीं ज़्यादा मिलनसार और आत्मीय हो गई थी—ने उसे रुकने के लिए कहा, तब भी वह नहीं मानी।

कई बार जब क्लास नहीं होती थी, तो कात्यायनी राव के घर जाती थी। खासकर मासिक धर्म के दौरान, उसे लड़कियों के लाउंज में जाने की बजाय नागलक्ष्मी के घर जाना ज़्यादा सुविधाजनक लगता था। बेहद शर्मीली कात्यायनी, जो सिंदूर नहीं लगाती थी, नागलक्ष्मी की संगति में उन कॉलेज की किशोरियों से कहीं ज़्यादा सहज महसूस करती थी जो खुलकर बातें करती थीं। नागलक्ष्मी को भी कात्यायनी पसंद आ गई थी, क्योंकि

वह न तो घमंडी थी और न ही रूठी हुई, और उसके स्वभाव में गाँव की मासूमियत अभी भी बरकरार थी। इसके अलावा, उसे बातचीत करने की बहुत इच्छा होती थी। कई बार वह उसके लिए गरमागरम नाश्ता बनाती थी। आमतौर पर, कात्यायनी की क्लास दोपहर 3 बजे तक खत्म हो जाती थी, और फिर शाम 5 बजे तक उसका कोई काम नहीं होता था। कभी-कभी राजा घर पर होता था। वह बहुत बातूनी था और कात्यायनी को भी बातचीत में शामिल कर लेता था। वह उसका शिक्षक भी था। वह उसकी कक्षा के लिए सामान्य अंग्रेजी का एक पेपर और वैकल्पिक अंग्रेजी का एक पेपर पढ़ाता था। जनरल इंग्लिश की कक्षा में मैकबेथ के उनके प्रस्तुतीकरण से उनके सभी छात्र मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उनकी ख्याति इतनी थी कि महाराजा कॉलेज के छात्र भी उनके सत्रों में भाग लेने आते थे। रंगमंच से गहराई से जुड़े होने के कारण, वे स्वयं में पात्रों को समाहित करके अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुति देते थे। जिस प्रकार वे अपनी आवाज में बदलाव लाते हुए नाटक का पाठ करते थे, जिससे पात्रों के भय, आश्चर्य, वीरता और अन्य भावों का चित्रण होता था, और जिस प्रकार वे श्रोताओं की कल्पना को इस प्रकार जीवंत कर देते थे कि उन्हें ऐसा लगे मानो उन्होंने कोई वास्तविक नाट्य प्रस्तुति देखी हो, उससे कक्षा में विस्मय का भाव उमड़ पड़ता था।

राजा को कात्यायनी में गहरी दिलचस्पी हो गई थी, जो अक्सर उसके घर आती थी। उसकी परिपक्वता और विनम्रता की चमक ने राजा के मन में एक तरह की सहानुभूति जगा दी थी। एक दिन उसने उससे पूछा, 'क्या तुम अपने खाली समय में कहानियां और उपन्यास पढ़ती हो?'

'मैं पहले पढ़ता था। अब तो मेरे पास मुश्किल से ही खाली समय होता है। फिर भी, मैं थोड़ा-बहुत पढ़ लेता हूँ।'

आपके पसंदीदा उपन्यासकार कौन हैं?

‘Sharat.’

'किस कारण के लिए?'

कात्यायनी को ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे। उसने कहा, 'यह दिलचस्प है।'

‘यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है।’

वह शरत की रचनाएँ पढ़ने वाली महिला पात्रों की बहुत प्रशंसा करती थीं। देवदास की पार्वती, शेषप्रश्ना की कमला और श्रीकांत की राजलक्ष्मी ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया था।

लेकिन वह यह नहीं समझ पा रही थीं कि उन्हें ये पात्र क्यों पसंद हैं। उन्होंने बस इतना कहा, 'मुझे उनकी रचनाएँ पसंद हैं।'

‘शरत की कहानियों में महिला किरदार बेहद स्नेहशील होते हैं। महिलाओं में स्वाभाविक रूप से पाए जाने वाले इस गुण से किरदार बेहद आकर्षक लगते हैं। क्या यही आपके पसंद करने का कारण है?’

इस सवाल का जवाब देने में उसे झिझक महसूस हुई। उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसने अपना चेहरा उससे छिपाने के लिए दूसरी तरफ मोड़ लिया। एक मिनट बाद, उसके चेहरे पर हल्का पसीना आ गया, जिससे वह चौंक गई। वह उठी और नागलक्ष्मी को ढूंढने चली गई।

कात्यायनी को अपनी एक भी यात्रा के दौरान राव उस घर में नज़र नहीं आया। वह जानती थी कि राव हमेशा पुस्तकालय में अपने कमरे में ही रहता था, और इस तरह उसे यह आभास हो गया कि नागलक्ष्मी लगभग एकांतप्रिय थी। लेकिन उन्होंने कभी इस विषय पर बात नहीं की। एक दिन, कात्यायनी ने नागलक्ष्मी से पूछने की हिम्मत की, 'घर पर समय बिताना उबाऊ है। अपने देवर की शादी करवा दो। तुम्हें साथ मिल जाएगा।'

‘औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ बुद्धि का ह्रास होता जाता है। इंग्लैंड जाने से ठीक पहले उन्होंने कहा था, “वापस आते ही मेरी शादी हो जाएगी; दुल्हन का चुनाव आप ही करेंगी।” अब वे कहते हैं कि वे अविवाहित रहना चाहते हैं। “क्या कोई व्यक्ति ब्रह्मचर्य का जीवन नहीं जी सकता?” वे पूछते हैं।’

कात्यायनी को आश्चर्य हुआ कि रंगमंच के प्रति प्रेम रखने वाला, अपने छात्रों का चहेता और एक सफल करियर बना चुका व्यक्ति इस तरह का व्यवहार क्यों करता है! खैर, उसने इस बात को यहीं छोड़ दिया, यह सोचकर कि यह उसका मामला नहीं है।

एक दिन राजा ने उससे पूछा, 'इन दिनों में तुमने एक बार भी मेरा कोई नाटक नहीं देखा। क्या मैं पूछ सकता हूँ क्यों?'

'मेरी इच्छा तो है, लेकिन मुझे समय पर घर पहुंचना है। अगर मैं नाटक देखने के लिए रुकता हूं, तो घर लौटने तक रात के 10 बज जाएंगे।'

‘नांजनगुड की कई लड़कियां नाटक देखने के लिए रुक जाती हैं। तुम्हारी दोस्त वासंती ने तो उनमें से एक नाटक में भूमिका भी निभाई थी।’

वहीं आसपास मौजूद नागलक्ष्मी ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'हां, मैंने किसी को यह कहते सुना कि एक अभिनेता नंजनगुड से है। वह कौन सी भूमिका थी?'

‘गटर्सनाइप गैसकोनाडे में “जीवू” की भूमिका।’

उसने कात्यायनी से कहा, 'राजा हमेशा मुझे थिएटर ले जाता है। तुम क्यों नहीं मेरे साथ चलती हो? वह थिएटर का निर्देशन बहुत अच्छे से करता है।'
मैं अपने ससुराल वालों से पूछूंगी।
श्रोत्री और भागीरथम्मा को पता था कि महीने में एक बार सभी लड़कियाँ नाटक देखने के लिए घर पर रुकती हैं और रात 10 बजे तक लौटती हैं—सिवाय कात्यायनी के, जो हमेशा की तरह तय समय पर घर आ जाती थी। वे कात्यायनी की इस बात की सराहना करते थे कि वह अपनी परिस्थिति की गंभीरता को समझती थी। घर लौटने पर, वह कपड़े बदलती, पैर धोती और अपनी सास की मदद करने लगती। भागीरथम्मा उसे टोकतीं, 'तुम अभी कॉलेज से लौटी हो। इसे मुझ पर छोड़ दो, बेटी।' कभी-कभी श्रोत्री उसे अपनी कृषि भूमि, उससे होने वाली आय और व्यय, किसानों के साथ लेन-देन आदि के बारे में बताते। वे कहते, 'मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। तुम्हें ये सब बातें पता होनी चाहिए, बेटी,' और उसे भूमि के सर्वेक्षण क्रमांक, क्षेत्रफल, कर आदि जैसे आँकड़े बताते। हाल ही में उन्होंने परिवार के सभी भूमि अभिलेखों को ठीक से अलग-अलग करके एक लकड़ी के बक्से में व्यवस्थित रूप से रखा था; उन्होंने कात्यायनी को किसी भी आवश्यक दस्तावेज़ को लाने की ज़िम्मेदारी भी सौंपी थी। वह आगे चलकर उस दस्तावेज़ की मांग का कारण और उससे जुड़े लेन-देन के बारे में विस्तार से बताते। "तुम पढ़ी-लिखी हो। तुम्हें इन सब बातों की जानकारी होनी चाहिए। अगर मैं मर जाऊं, तो चीनी को इन सब बातों की जानकारी कौन देगा?" वह स्पष्ट करते। चीनी भावुक होकर कहती, "अप्पा, ऐसा मत कहिए। ऐसा कुछ न हो।"
एक दिन वासंती अपने घर आई और भागीरथम्मा से मिली। उसने कहा, 'आज एक अच्छा नाटक खेला जाएगा... अंग्रेजी नाटक मैकबेथ। हमें परीक्षा के लिए भी इसका अध्ययन करना है। मैंने आपकी बहू को भी आमंत्रित किया था और वापसी यात्रा में उसका साथ देने का वादा किया था, लेकिन उसने मना कर दिया। कृपया उसे समझा दीजिए।'
हालांकि भागीरथम्मा इसके पक्ष में नहीं थीं, श्रोत्री ने कहा, 'बच्चे, अगर यह तुम्हारी परीक्षा में काम आएगा, तो कृपया उनके साथ रुककर इसे देखो। इसे एक बार देखने से दस बार पढ़ने की तुलना में बेहतर याद रखने में मदद मिलेगी।'
उस दिन कात्यायनी ने पहली बार अपने कॉलेज में एक नाटक देखा। राजा ने स्वयं मैकबेथ की भूमिका निभाई और सभी की प्रशंसा बटोरी। नाटक के बाद, कॉलेज के प्रधानाचार्य मंच पर आए और राजा की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा, 'मुझे आश्चर्य ही

नहीं था कि एक भारतीय अभिनेता शेक्सपियर द्वारा रचित भूमिका को इतनी खूबसूरती से निभा सकता है।'
अगले दिन राजा ने कात्यायनी से पूछा, 'नाटक कैसा था?'
'आपका अभिनय शानदार था। आपने कक्षा में दिए व्याख्यानों में मैकबेथ के किरदार में ऐसी चमक नहीं बिखेरी थी।'
'कल इसे देखने के लिए रुकने के लिए धन्यवाद। अगर आप जैसे लोग इसे नहीं देखते और इसकी सराहना नहीं करते, तो मुझ जैसे मेहनती लोगों को संतोष कैसे मिल सकता है?'
हालाँकि उसे इस बात की खुशी थी कि उसने अपने शब्दों से उसे संतुष्ट किया, फिर भी वह संकोच के कारण चुप रही। नागलक्ष्मी ने बीच में कहा, 'एक भी गीत या नृत्य नहीं। भाषा मेरे लिए अपरिचित है। अंग्रेजी नाटक नीरस है। मैं ऊब गई।'
राजा हँस पड़ा। कात्यायनी भी।

2

कात्यायनी ने स्नातक पाठ्यक्रम का एक वर्ष पूरा कर लिया था। उसे पता ही नहीं चला कि नौ महीने कैसे बीत गए। उसने जूनियर परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया था। हालाँकि उसने गर्मियों की छुट्टियों को रोज़ाना के सफ़र से छुटकारा पाने का अच्छा मौका समझा था, लेकिन छुट्टियाँ शुरू होते ही उसे बोरियत महसूस होने लगी। वह सुबह जल्दी उठती, नहाती और फिर सबके कपड़े धोती; उसका बच्चा तब तक सो रहा होता। दो घंटे वह पढ़ाई में बिताती। अपने पति की किताबों के अलावा, वह पुस्तकालय से उधार ली गई किताबें भी पढ़ती। ट्रेन के सफ़र के दौरान बोरियत से बचने के लिए वह उपन्यास पढ़ती रहती। जब भी उसे खाली समय मिलता, वह गर्ल्स लाउंज में जाकर उसे पढ़ना शुरू कर देती। वह कभी-कभी नागलक्ष्मी के घर भी जाती थी।
छुट्टियां शुरू होने के एक हफ्ते बाद, वासंती कात्यायनी से मिलने आई। उसके चेहरे पर एक नई चमक थी। उसने अपने अंतिम वर्ष की परीक्षाएं पूरी कर ली थीं। कात्यायनी ने पूछा, 'तुम बहुत खुश लग रही हो। क्या खबर है?'
'कुछ नहीं।'
'ऐसा कहकर तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। तुम्हारा चेहरा चमक रहा है। क्या तुम्हें परीक्षा में प्रथम श्रेणी लाने का पूरा भरोसा है?'

‘नहीं यार। फर्स्ट क्लास में कौन सफर करना चाहता है!’
कात्यायनी अपनी प्राथमिकताओं को समझ गई थी। उसने पूछा, 'और क्या?'
दरअसल, वह वहां कुछ खबर साझा करने आई थी। उसने शरमाते हुए कहा, 'बीस दिन बाद आपको हमारे घर में एक भोज में शामिल होना होगा।'
‘सच में! बधाई हो। दूल्हा कहाँ से है?’
‘मैसूर। वह हमारे कॉलेज में एमए की पढ़ाई कर रहा है।’
'मुझे पता चले बिना, तुम चुपके से उससे प्यार करने लगी हो, है ना? अच्छा, बधाई हो।'
शर्म से वासंती का चेहरा गुलाबी पड़ गया। जिस लड़के से वह प्यार करती थी, वह उसी जाति का था; दरअसल, दूर का रिश्तेदार। वे कॉलेज में रोज़ मिलते थे। वासंती फुर्सत के समय कभी भी गर्ल्स लाउंज में नहीं जाती थी। वह अपने मंगेतर के साथ कुक्कराहाल्ली तालाब के किनारे घूमने जाती थी। लेकिन उसने कात्यायनी को कुछ नहीं बताया था। दूसरी लड़कियों को इसके बारे में पता था, लेकिन किसी ने भी गंभीर कात्यायनी को नहीं बताया था।
वासंती के जाने के बाद, कात्यायनी उसके लिए खुश हुई। उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि उसके पति को सुखमय जीवन मिले। वह सुखमय जीवन की ओर बढ़ेगी। उसका भविष्य सुखमय होगा। लेकिन मेरा भविष्य क्या? मैं तो बस एक साल और कॉलेज जाऊंगी। उसके बाद वही पुरानी जिंदगी। अगर मुझे हमेशा घर में ही रहना है, तो कॉलेज जाने का क्या फायदा? मेरे बीए पूरा होने पर मेरे पति को कौन सा सौभाग्य मिलेगा? मेरे बीए से घर और खेत की आर्थिक व्यवस्था चलाने में क्या फायदा होगा? ये सारे विचार कात्यायनी के मन में उमड़ रहे थे। उसने अपने पति की अधूरी पढ़ाई पूरी करने के लिए ही तो इस कोर्स में दाखिला लिया था। लेकिन अब यह विचार उसे उतना आकर्षक नहीं लग रहा था। फिर भी, वह एक साल और कॉलेज जाएगी।
कात्यायनी नागलक्ष्मी को याद करती रहती थीं। जब भी उन्हें नागलक्ष्मी का भोला और सौम्य स्वभाव याद आता, उनके दिल में आत्मीयता का भाव उमड़ आता। पूरे साल कात्यायनी ने डॉक्टर राव को घर पर नहीं देखा था। उन्हें पता चला था कि वे लेखन के जुनून में डूबे हुए थे। वे हमेशा लेखन में ही लीन रहते थे। बेचारी नागलक्ष्मी बहुत परेशान होती होंगी! फिर भी, वे सौभाग्यशाली थीं। कम से कम वे इस बात से संतुष्ट थीं कि उनके पति घर से कुछ ही दूरी पर स्थित विश्वविद्यालय पुस्तकालय में अपने डेस्क पर शोध कर रहे थे। वे प्रतिदिन चोटी में फूल और माथे पर सिंदूर लगाती थीं, साथ ही भौंहों के बीच में केसरिया बिंदी भी लगाती थीं। यह भी किसी सौभाग्य से कम नहीं था!

नागलक्ष्मी की यादों के साथ-साथ राजा राव की यादें भी जुड़ी हैं। क्या प्रतिभावान व्यक्ति थे! शेक्सपियर को उनके जैसा कौन पढ़ा सकता है? कॉलेज का हर छात्र उनकी कहानी सुनाने का दीवाना था। वे नाटकों के निर्देशन और अभिनय में भी निपुण थे। कॉलेज की कई लड़कियां उन्हें आकर्षक मानती थीं। गर्ल्स लाउंज में बैठी लड़कियां झिझक छोड़कर इस तरह बातें करती थीं:

‘आज मैकबेथ कैसा था?’

'सुंदर।'

‘आपको इस तरह प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। आप लेडी मैकबेथ नहीं हैं।’

'अगर मैं लेडी मैकबेथ होती, तो क्या तुम्हें जलन होती?'

‘बेवकूफी! चिंता मत करो। हम आपस में बाँट लेंगे।’

कुछ लड़कियाँ तो प्रोफ़ेसरों के बारे में भी हल्के-फुल्के अंदाज़ में बोलने से नहीं हिचकिचाती थीं। शायद वे कॉलेज सिर्फ़ समय बिताने के लिए जाती थीं, कात्यायनी सोचती। उसकी सोच जारी रहती: फिर भी, राजा राव बहुत ही ज्ञानी, मिलनसार और हंसमुख हैं। कितनी आसानी से उन्होंने मुझे, जो गूंगी हो गई थी, उनसे बात करना सिखा दिया! वे मेरे नाम से पुस्तकालय से किताबें मंगवाते हैं। इतने अच्छे दिखने के बावजूद उन्होंने अविवाहित रहने का निश्चय किया है! ऐसा क्यों? उनसे शादी करने वाली कोई भी लड़की सुखी जीवन जिएगी।

छुट्टियों के दौरान दोपहर में, कात्यायनी पिछवाड़े में फूलों और सब्जियों के बगीचे में पानी देती थीं। भारतीय मूंगा वृक्ष से लिपटी चमेली की लता में पानी देते समय, उन्हें अपने पति की याद आ जाती थी। इसी वृक्ष में पानी देते समय उनके पति ने उनसे बहुत प्रेम निवेदन किया था। यद्यपि उन्हें यह अच्छा लगता था, फिर भी रंगे हाथों पकड़े जाने के डर से वे उन पर नाराज़गी जतातीं और दूसरे पौधे की ओर बढ़ जातीं। वे इतनी चमेली पहनती थीं कि उनकी चोटी उलझ जाती थी; उनके पति उन्हें और अधिक पहनने के लिए उकसाते रहते थे। अब भी, चमेली की लता में काफी फूल लगते थे। इनमें से अधिकांश अब पूजा में उपयोग किए जाते थे। पूजा के बाद, सास लगभग बीस फूल पहनती थीं। बचे हुए फूलों में से कुछ शाम की पूजा में उपयोग किए जाते थे, और शेष उस महिला को दे दिए जाते थे जो उन्हें मांगती थी।

वह कभी-कभी सोचती थी कि फूलों को पहनने के लिए इस्तेमाल करना उचित होगा या पूजा के लिए। उसे पूजा के लिए इस्तेमाल करने में कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन क्या

इसे पहनने से मिलने वाली संतुष्टि की निंदा की जा सकती है? एक दिन उसने देखा कि चमेली की लता जिस भारतीय मूंगा वृक्ष को घेरे हुए थी, वह अंदर से सूख गया था; वह एक पुराना वृक्ष था।
जब उसने अपने ससुर को इसकी सूचना दी, तो उन्होंने एक माली को बुलाया और सावधानीपूर्वक पेड़ कटवाया। चमेली की लताओं को तने से सावधानीपूर्वक अलग करके, लकड़ी को ठिकाने लगा दिया गया। पेड़ के स्थान पर एक बांस का खंभा खड़ा किया गया और चमेली की लता को उस पर लिपट जाने दिया गया। कुछ समय बाद, उन्होंने वहाँ भारतीय मूंगा का एक पौधा लगाया। उन्होंने कात्यायनी को नियमित रूप से पानी देने के लिए कहा। दो सप्ताह के भीतर ही उसमें नई कोंपलें निकल आईं। श्रोत्री ने चमेली की लताओं को नए भारतीय मूंगा के पौधे की ओर मोड़ दिया।
कात्यायनी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि संरक्षक के न होने के बावजूद चमेली की लता पहले की तरह ही खिल रही थी। बिना किसी कारण के, उसने सोचा था कि लता भी उस पुराने सहायक पेड़ की तरह मुरझा जाएगी।

3

डॉ. राव जैसे लोग ही छुट्टियों में भी काम करते हैं। लेकिन राजा के लिए यह समय काफी कठिन था। फरवरी से लेकर अगले शैक्षणिक वर्ष के खुलने के दो सप्ताह बाद तक, कॉलेज में उनका थिएटर संगठन निष्क्रिय रहता था। इस दौरान कोई कक्षा भी नहीं होती थी। परीक्षा के कुछ दिनों के लिए निगरानी का काम होता था। उसके बाद के दो महीने तो वह हमेशा खाली ही रहते थे। लेकिन इस बार की छुट्टियों में उन्हें एक अजीब सी खालीपन महसूस हुआ जिसे वे समझ नहीं पा रहे थे। उन्होंने रोज़ाना व्यायाम करना शुरू कर दिया। दो दिन तो वे कॉलेज के जिम में जाकर पुश-अप्स भी करते रहे; लेकिन तीसरे दिन ही उन्होंने यह सब छोड़ दिया। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेने का सोचा। वे अपने नाटकों में पृष्ठभूमि संगीत जोड़कर उनकी कलात्मकता को बढ़ाना चाहते थे। उन्होंने 15 रुपये प्रति माह शुल्क पर एक शिक्षक ढूंढ लिया। उस संगीतकार ने कहा, 'तुम्हारी आवाज़ को गायन के योग्य बनाने के लिए तुम्हें तीन साल तक स्वर-संयोजन का अभ्यास करना होगा। तुम वाद्य यंत्र क्यों नहीं सीखते?' उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि राजा वायलिन सीख लें। उसी दिन उसने 100 रुपये में एक पुरानी वायलिन खरीदी और उंगलियों पर बने सा-पा-सा खंडों को समझने की कोशिश की।

लेकिन अगले 15 दिनों तक कुछ घंटों का अभ्यास करने के बावजूद, उसकी उंगलियां सही ध्वनि नहीं निकाल पा रही थीं। उसकी रुचि कम हो गई। संगीत शिक्षक आते रहे और जब तक फीस मिलती रही, वे आने को तैयार थे, चाहे उनके शिष्य ने कुछ सीखा हो या नहीं।

राव सोच रहे थे कि ऐसी ऊब, जिसने उन्हें इतने सालों तक कभी परेशान नहीं किया, अब उन पर क्यों हावी हो रही है। कुछ भी रोमांचक नहीं। अपनी भाभी से बातचीत में भी कोई रुचि नहीं, न ही पृथ्वी को साइकिल पर घुमाने ले जाने में। वे अकेले ही सुबह-सुबह हुनसुर रोड पर सात-आठ मील साइकिल चलाते थे। लेकिन इस गर्मी में आसपास की ज़मीनें सूख चुकी थीं और राख के खेतों जैसी लग रही थीं। इससे उन्हें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा: समाज, सिद्धांत, नियम, नैतिकता, निर्देश आदि सब मनुष्य की रचना हैं, और ये जीवन की मूल शक्ति को नष्ट करने वाले अभिशाप मात्र हैं। मुक्ति इन अभिशापों का नाश और जीवन की जीवंतता का अनुभव करना है। क्या ये खेत, जहाँ हरियाली, हरी-भरी सतह और पेड़ों की शाखाओं पर उड़ती चिड़ियों और कोयल की चहचाहट गायब हो चुकी है, और जो अब शांत पड़े हैं, प्रकृति कहला सकते हैं? उन्होंने निश्चय किया कि ये खेत जीवंतता के प्रतीक नहीं हैं। इसके बाद उन्होंने उस सड़क पर सवारी करने से परहेज किया।

उस साल, बरसात के मौसम की शुरुआत में ही कुछ बार बारिश हुई। गर्मी की चिलचिलाती तपिश अचानक कम हो गई। सूखी धरती नम हो गई और उसमें थोड़ी सी रौनक आ गई। कॉलेज के पीछे की ज़मीन पर घास उग आई और वह जीवंत हो उठी। एक हफ़्ते बाद, वह फिर से हुनसुर रोड पर साइकिल चला रहा था। बारिश के 15 दिनों में कितना बदलाव! किसान खेती करने लगे। खेतों की मेड़ें चमकीले हरे रंग की थीं। सड़क के दोनों ओर के पेड़ ताजगी से चमक रहे थे। पक्षी चहचहाते हुए खुशी से उड़ रहे थे। 'यही प्रकृति का मूल गुण है, क्योंकि इसी में वैभव है,' उसने सोचा। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, पेड़ और भी हरे-भरे होते गए। कुछ पेड़ों की शाखाएँ इतनी नीचे लटक गई थीं कि वह साइकिल से उन तक पहुँच सकता था। फिकस के पेड़ों की जड़ें किसी त्योहार के पंडाल की सजावटी लटकनों जैसी लग रही थीं।

आगे बढ़ते हुए उन्होंने देखा कि कुछ किसान सड़क के किनारे लगे पेड़ों पर चढ़कर उनकी डालियाँ काट रहे थे। उन्हें बहुत बुरा लगा। उतरकर उन्होंने छंटाई का काम देख रहे ठेकेदार से पूछा, “पेड़ तो खूब बढ़ गए हैं। इन्हें क्यों काट रहे हो?” बीड़ी पीते और नाक से गाढ़ा धुआँ निकालते हुए ठेकेदार ने कहा, “इन हरामखोर पेड़ों को बढ़ने में

कोई शर्म नहीं है। इनकी लटकती डालियाँ सड़क पर चलने वाली बसों की छतों से टकराती हैं। सरकारी उप-पर्यवेक्षक ने इन्हें काटने का आदेश दिया है।"
ठेकेदार की बातों से राजा को बहुत दुख हुआ, पर वह बेबस था। उसने अपनी साइकिल की दिशा बदल दी। वापस लौटते समय उसे एहसास हुआ कि वह साइकिल से 15 मील दूर ग्रामीण इलाके में आ गया है।
दिनभर ठेकेदार के शब्द उसके मन में गूंजते रहे। यही तो लोगों का तरीका है। वे प्रकृति की सुंदर रचनाओं को कुतरते हैं और अपने नियम थोपते हैं। यह मानवता पर भी प्रहार करेगा, जैसे मानवता को कुचल देना। सभ्यता ऐसे ही अभिशापों का पुलिंदा है। और सभ्यता कितनी बड़ी कीमत वसूलती है! ऐसे अभिशापों से मुक्त हुए बिना जीवन का सार अनुभव नहीं किया जा सकता। उस रात जब वह सोने गया, तो उसका मन प्रकृति को कुतरने के मानव कृत्य और सभ्यता द्वारा व्यक्तियों की खुशियों को कुचलकर अपनी जड़ें जमाने के कृत्य से व्याकुल था... और वह सोच रहा था कि क्या इन सभी को किसी नाटक के पात्रों के रूप में चित्रित किया जा सकता है। उसे अभी तक कोई कथानक, स्पष्ट पात्र और प्रस्तावना-घटना-चरमोत्कर्ष नहीं दिखाई दिया था। संपूर्ण प्रकृति उस नाटक की नायिका थी। संपूर्ण मानव समुदाय उस नायिका पर आक्रमण करने वाला नायक था। यही एक दृश्य था और यही एक अत्याचार था जो उसके मन के मंच पर लगातार घटित होता रहा। रात काफी ढल चुकी थी जब उसे नींद आई, उससे पहले तो उसका भाई भी सो चुका था।
भोर होते-होते उसने एक सपना देखा। उस सपने में भी वही दृश्य था, लेकिन अमूर्तता से रहित, उसमें एक स्पष्ट भूमिका थी। 22-23 वर्ष की एक सुंदर युवती, अपने मोहक अंदाज़ से सबका दिल जीत लेती थी, बिना किसी आभूषण के... उसका शरीर स्वस्थता से दमकता था, उसके गुलाबी पैर रक्त से लथपथ थे, बारी-बारी से उसका भार संभालते हुए, लंबी पतली उंगलियां, जिनके सिरे थोड़े बाहर की ओर मुड़े हुए थे, जैसे केवल चित्रों में ही देखने को मिलते हैं, काले घने बाल उसकी पीठ पर लहरा रहे थे, और उसका चेहरा गंभीर था। उसका हर अंग कोमल नारीत्व की अभिव्यक्ति था, और वह एक फूल के पौधे के नीचे एक चट्टान पर नग्न बैठी थी, उसके पैर लटक रहे थे। वह मानो चांदनी की साक्षात मूर्ति थी, और उसके शरीर की सुंदरता और सामंजस्य तथा उसकी यौवन की गरिमा जीवन से जगमगा रही थी। उसके शरीर पर ऐसा कोई वस्त्र नहीं था जो प्रकृति की निर्मल सुंदरता को छुपा सके। महिलाओं में नग्नता के प्रति स्वाभाविक झिझक ने इस दिव्य स्त्री के सुडौल शरीर को क्षीण नहीं किया था। उसके पास गुलाब के

फूलों का ढेर लगा था। वह दोनों हाथों से एक भव्य माला बना रही थी। पौधे के पीछे लगभग सौ लोग थे जो एक स्वर में चिल्ला रहे थे, 'तुम विधवा हो। हममें से कोई भी यह माला स्वीकार नहीं करेगा।'
सपना वहीं खत्म हो गया। जागने पर उन्होंने उसी विषय पर एक नाटक लिखने का निश्चय किया। उन्हें लगा कि उन्होंने अपने सपनों की उस बेहद खूबसूरत महिला को कहीं देखा है, और उनका मन उसे याद करने की कोशिश करने लगा। उसका चेहरा उनकी स्मृति में स्पष्ट था, लेकिन वे उसे पहचान नहीं पा रहे थे। दो दिन बाद एक सुराग मिला। पता चला कि वह कोई और नहीं बल्कि उनकी शिष्या कात्यायनी थी। यह कैसे! वे दंग रह गए।

4

जिस दिन कॉलेज खुला, राजा सुबह दस बजे अपने घर के आंगन में कुर्सी पर बैठे अपने लिखे नाटक में संशोधन कर रहे थे। उन्होंने इसे अंग्रेजी में लिखा था और इसे साल का पहला नाटक बनाने का निश्चय किया था। वे इसमें कई बार संशोधन कर चुके थे। चूंकि वे इसे आज अपने एक छात्र को टाइप करने के लिए देना चाहते थे, इसलिए वे आखिरी बार इस पर नज़र डाल ही रहे थे कि बाहर का दरवाजा ज़ोर से खुला और कोई अंदर आया। उन्होंने सिर उठाकर देखा; यह कात्यायनी थी! उनके हाथ में एक रुमाल में लिपटी कोई चीज़ थी। खुशबू से उन्हें तुरंत पता चल गया कि यह चमेली है। वे उठे और बोले, 'लो, मुझे दे दो।'
कंपाउंड का दरवाजा खोलते ही उसका सामना होते देख वह लड़की घबरा गई और उसने आवेग में आकर उसे फूल थमा दिए। राजा ने उसे खोलकर देखा। चमेली की एक सुंदर माला! वह खुद भी उत्साहित हो गया। वह सोचने लगा कि घटनाएं इतनी संयोगवश क्यों होती हैं। 'यह किसके लिए है?' उसने पूछा।
नागलक्ष्मी-अम्मा के लिए।
निराश होकर उन्होंने कहा, 'कृपया बैठ जाइए। भाभी पड़ोस के घर गई हैं। वह कुछ ही मिनटों में लौट आएंगी।'
कात्यायनी पास ही रखी एक कुर्सी पर बैठ गईं। राजा ने पूछा कि छुट्टियों में वह अपना समय कैसे बिताती हैं। दोनों की बातचीत के दौरान नागलक्ष्मी अंदर आईं। कात्यायनी उठीं और उनके साथ अंदर चली गईं। राजा ने चमेली की माला अपनी भाभी को सौंप

दी। आधे घंटे बाद जब कात्यायनी रसोई से बाहर आईं, तो राजा ने कहा, 'देखो, मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।'
‘मुझसे!’ कात्यायनी ने आश्चर्य से पूछा।
'जी हां। मैंने एक नाटक लिखा है।'
'सच में! मुझे लगा कि आप सिर्फ उनका निर्देशन करते हैं और उनमें अभिनय भी करते हैं।'
नहीं। मैंने कुछ लिखे हैं। उनमें से कोई भी छपा नहीं है। मैंने अभी एक और लिखा है। आपको उसमें अभिनय करना होगा।
कात्यायनी असमंजस में थी। उसने कहा, 'तुम क्या कहते हो! मैं तो लगभग मर ही जाऊंगी।'
मुझे पता चला कि इंटर के लिए पढ़ाई करते समय आपने इसमें भूमिका निभाई थी।
'तुमसे किसने कहा?'
कोई बात नहीं। कृपया इसमें अभिनय करने के लिए अपनी सहमति दें।
कात्यायनी गंभीर हो गईं। तभी नागलक्ष्मी वहाँ पहुँच गईं। कात्यायनी ने हिचकिचाते हुए कहा, “तब और अब के समय में बहुत फर्क है। लोग इसके बारे में क्या सोचेंगे?”
‘कोई कुछ नहीं कहेगा। क्या हमारी संस्था के नाटकों में कई लड़कियों ने अभिनय नहीं किया है? यह नाटक मैंने लिखा है। मुझे लगता है कि आप इसमें एक भूमिका बखूबी निभाएंगी।’
कात्यायनी ने सहमति नहीं दी। वह कॉलेज चली गई। राजा के कई बार आग्रह करने पर ही वह राजी हुई। पहले भी एक बार उसे मेकअप और नाटक में अभिनय करने का सुख मिला था। अब भी वह इससे प्रभावित थी। उसे चिंता थी कि कहीं उसके ससुराल वालों को पता न चल जाए कि उसने नाटक में अभिनय किया है। यह बात वासंती के ज़रिए तो नहीं फैल सकती थी, क्योंकि वह इस साल कॉलेज नहीं जा रही थी। अब तक उसकी शादी हो चुकी थी और वह मैसूर में रहने लगी थी। कोई और लड़की उसके घर यह खबर नहीं पहुंचा सकती थी।
‘सर, आपने जो नाटक लिखा है वह अंग्रेजी भाषा में है। नहीं, मैं नहीं कर सकता।’
इसके विपरीत, मुझे लगता है कि तुम अच्छा प्रदर्शन करोगी। अगर यह कन्नड़ भाषा में होता, तो मैं किसी और लड़की से यह भूमिका करवा लेता। कई लड़कियां मुझसे भी भूमिका के लिए ज़िद करती हैं। अंग्रेजी के वैकल्पिक विषय की छात्रा होने के नाते, यह भूमिका तुम्हें ही निभानी है।

टाइप की हुई पांडुलिपि उसे सौंपते हुए उन्होंने कहा, 'एक बात याद रखना। यह एक नाटक है; यह कला है। कहानी किसी वास्तविक जीवन के व्यक्ति से हूबहू संबंधित नहीं है। इसमें निभाए गए पात्र केवल सांकेतिक प्रतीक हैं। इस नाटक का महत्व ऐसा है कि पात्र कहानी से परे जाकर गहराई तक जाते हैं। केवल संवाद पढ़ने से कुछ भी समझ में नहीं आता। मैं तुम्हें सारी बारीकियां सिखाऊंगा।'

कात्यायनी मसौदा अपने साथ ले गई। अगले दिन जब वह लौटी तो उसका चेहरा गंभीर था। लेकिन चूंकि वह उसका शिक्षक था, इसलिए उसने विनम्रता से कहा, 'सर, कृपया यह भूमिका किसी और से निभाने को कहें।'

'आपको इसे कला, एक नाटक के रूप में सोचना चाहिए।'

'क्या आपने मेरे बाद वह भूमिका सृजित की है?' उसकी आवाज भारी थी।

'ऐसा कभी नहीं सोचा था। यह मेरे मन में बिल्कुल अलग तरीके से उभरा। नाटक मेरी उस कल्पना का मात्र एक रूपक है।' उन्होंने उसे अपने सपने के बारे में बताया और यह भी बताया कि उन्होंने उसे नाटक में कैसे ढाला। लेकिन उन्होंने यह खुलासा नहीं किया कि सपने में वही थी और वह नग्न थी। नाटक में कुछ पंक्तियाँ कात्यायनी को एक पारदर्शी पर्दे के पीछे से बोलनी थीं, और कुछ पंक्तियाँ उन्हें मंच पर मंद रोशनी में बोलनी थीं। यह नाटक नवीन तकनीकों, नवीन रूपकों और नवीन संदेशों से भरपूर था।

कात्यायनी प्रतिदिन अभ्यास के लिए नागलक्ष्मी के घर जाती थीं; राजा उन्हें वहीं प्रशिक्षण देते थे। नागलक्ष्मी, जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी, बस बैठकर राजा के निर्देशन और कात्यायनी के अभ्यास को देखती रहती थीं। राजा महाविद्यालय के सहभागिता कक्ष में तीनों पुरुष पात्रों को प्रशिक्षण देते थे। नाटक का शीर्षक 'आदिम' था, जिसमें प्रकृति नायिका और आत्माएं नायक थीं। नायक केवल मंच पर प्रकट होता है; उसका कोई अभिनय नहीं होता। उसे बस एक बार कुछ पंक्तियाँ बोलनी होती हैं। अन्य दो पात्रों में से एक इंद्र हैं, जो सत्ता के बल पर संसार पर शासन करते हैं; दूसरे दिव्य गुरु बृहस्पति हैं, जो धर्म की मुहर लगाकर उस सत्ता को पवित्र करते हैं।

1 अगस्त को शाम 6 बजे नाटक का मंचन शुरू हुआ। चूंकि यह साल का पहला नाटक था, इसलिए विश्वविद्यालय के कुलपति भी उपस्थित थे। नए छात्रों के लिए यह जिज्ञासा का विषय था, वहीं वरिष्ठ छात्रों के लिए अपने प्रिय प्रोफेसर राजा द्वारा रचित नाटक को देखने का उत्साह था। खुले रंगमंच में दर्शकों की भारी भीड़ थी।

प्रकृति हरे-भरे शांत वातावरण में विचरण करते हुए फूल चुन रही है। वह कुछ नहीं बोलती, बस एक वॉइसओवर के माध्यम से सारी बातें बताई जाती हैं। फिर वह फूलों की

एक बड़ी माला बनाने लगती है। माला बनाने के बाद, वह उसे प्रशंसा भरी निगाहों से देखती है। तभी एक आत्मा वहां आती है। उस आत्मा से आकर्षित होकर, वह प्रेम भरी बातें करते हुए उसके पास जाती है। वह उस माला को उसके गले में पहनाने ही वाली होती है कि आत्मा अपना हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लेता है। इससे पहले कि वे ऐसा कर पाते, बिजली कड़कती है और चारों ओर अंधेरा छा जाता है।
अगला दृश्य इंद्र के दरबार का है। एक तरफ प्रकृति जंजीरों में बंधी खड़ी है। इंद्र सिंहासन पर विराजमान हैं। गुरु बृहस्पति, जो दूसरे आसन पर बैठे हैं, उनसे कहते हैं, 'तुम पर धर्म का उल्लंघन करने का आरोप है।'
'देवगुरु, मैंने किस धर्म का उल्लंघन किया है?'
'पहले तुम किसी दूसरे पुरुष के साथ संबंध में थीं। मोक्ष प्राप्त करने के बाद, उसने तुमसे संबंध तोड़ लिया और इस दुनिया से विदा हो गया। विधवा होने के बाद, अब तुम किसी दूसरे पुरुष को पुष्पमाला पहनाने के लिए उससे संपर्क कर रही हो। यह धर्म के विरुद्ध है।'
'देवगुरु, क्या सदा-हृदय और जीवंत प्रकृति पर कृत्रिम धर्म थोपना धर्म के विरुद्ध नहीं है? जीवंतता मेरा मूल स्वभाव है। कोई भी धर्म विधवापन थोपकर मन को भाने वाली वनस्पति, मनमोहक दृश्य और समस्त आत्माओं को पोषण प्रदान करने वाले मेरे असीम विस्तार को दूषित नहीं कर सकता। देवगुरु, क्या आप मेरे एक प्रश्न का उत्तर देंगे?'
'यह क्या है?
क्या आत्मा की मुक्ति प्रकृति के साथ एकीकरण के माध्यम से नहीं होती?
'हाँ।'
यदि तुम मुझे विधवापन की सजा देते हो, तो उन असंख्य आत्माओं का क्या होगा जो मुक्ति की तलाश में हैं? क्या उनका उचित रूप से हकदार उद्धार छीनना तुम्हारा धर्म कपटपूर्ण नहीं है?
कोई जवाब न मिलने पर देवगुरु चुप हो गए। प्रकृति आगे कहती है, 'धर्म, नैतिकता, शासन, सामाजिक नियम और लोगों द्वारा लगाए गए आरोप, जो कृत्रिम रूप से मेरे आंतरिक गुणों को दबाते हैं, ये सभी असत्य के पहलू हैं। प्रकृति एक शाश्वत कन्या है। जो धर्म उसकी सुंदर संरचना को दबाने का प्रयास करता है, वह आत्म-विनाशकारी है।'
फिर से गरज होती है और मंच पर अंधेरा छा जाता है। जब हल्की रोशनी आती है, तो इंद्र और बृहस्पति अपने कुकर्मों पर पश्चाताप करते हैं, लंगड़े हो जाते हैं और गिर पड़ते

हैं। रोशनी फिर से आती है और मंच अब रोशन हो जाता है। एक बार फिर, प्रकृति अपनी माला के साथ प्रकट होती है। जब वह अपनी यौवन की अमरता का वर्णन करती है, तो आत्मा उसके पास जाती है। लेकिन इस बार प्रकृति उसे आसानी से माला नहीं पहनाती। आत्मा कहती है, 'प्रकृति, तुम विधवा नहीं हो। तुम शाश्वत शुभ स्त्री हो।' तब प्रकृति उसे माला पहना देती है। आत्मा उसका हाथ थाम लेती है। वह बेजान पड़े इंद्र और बृहस्पति पर क्षमा की दृष्टि डालती है और अपने दाहिने हाथ की हथेली से इशारा करके उन्हें आशीर्वाद देती है। रोगमुक्त होकर वे उठते हैं और उसके सामने प्रणाम करते हैं। मंच की रोशनी धीमी हो जाती है और पर्दा गिर जाता है।
दर्शक जोरदार तालियां बजाते हैं।
ग्रीनरूम की ओर दौड़ते हुए, राजा ने कात्यायनी के दोनों हाथों को मजबूती से पकड़ लिया और कहा, 'शानदार। आपने मेरी रचना को उचित अभिव्यक्ति दी है।'
‘यह सब आपके मार्गदर्शन का ही कमाल है,’ उसने प्रशंसा का जवाब देते हुए कहा। उसे इस बात का जरा भी एहसास नहीं था कि उसके हाथ एक मिनट तक उसके हाथों में ही थे।
तब तक मंच पर एक मेज और तीन कुर्सियाँ लगा दी गई थीं। कुलपति और प्रधानाचार्य मंच पर आए और कुर्सियों पर बैठ गए; राजा तीसरी कुर्सी पर बैठे। सचिव ने सबसे पहले कुलपति को माला पहनाई। पीछे की सीटों पर बैठे कुछ छात्र चिल्लाए, 'आत्मा के लिए माला!' ज़ाहिर है, वे अपने चहेते राजा राव का उत्साह बढ़ा रहे थे। प्रधानाचार्य उठे और बोले, 'छात्रों, कृपया शांत हो जाइए।'
जब दर्शकों में हलचल शांत हुई, तो कुलपति माइक के पास गए और बोले, ‘मैं प्राणीशास्त्र का प्रोफेसर था। मैं नाटक का सार पूरी तरह से नहीं समझ पाया था। श्री राजा राव ने एक उत्कृष्ट नाटक लिखा है। मैं आप सभी की ओर से उन्हें बधाई देता हूँ। मुख्य भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री, सुश्री...सुश्री...’ उन्होंने राजा की ओर देखा और जब उन्हें बताया गया, तो उन्होंने आगे कहा, ‘सुश्री कात्यायनी ने शानदार अभिनय किया है। बाकी तीनों कलाकारों ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है। यह एक बेहतरीन प्रस्तुति थी। प्राणीशास्त्र के छात्र के रूप में, मैं प्रकृति की शाश्वतता को इस प्रकार समझ सकता हूँ: शरीर की कोशिकाएँ मरती रहती हैं। नई कोशिकाएँ बढ़ती रहती हैं। किसी जीव की मृत्यु के बाद भी, शरीर की कोशिकाएँ जीवमंडल में जीवित रह सकती हैं। हमें इस प्रकार संसार को जीवन से परिपूर्ण समझना चाहिए।’ उन्होंने उस क्षण जो कुछ उनके मन में आया, वही कहा और विराम दिया।

जब दर्शक चले गए, तब भी रात के 8:30 बज रहे थे। राजा ने कात्यायनी से पूछा, 'अब शायद आपके साथ कोई नहीं होगा। मैं आपको रेलवे स्टेशन तक छोड़ दूंगा।'
अपना मेकअप उतारकर, कात्यायनी ने अपने सामान्य सादे कपड़े पहने और उनके साथ चल पड़ीं। रास्ते में राजा ने कहा, 'वीसी ने आपको तीन बार 'सुश्री' कहकर संबोधित किया। क्या आपने ध्यान दिया?'
कात्यायनी चुप रही। वह सोच रही थी कि उसे आज वह भूमिका नहीं निभानी चाहिए थी। जब तक वह मंच पर थी, उसने एक सच्चे अभिनेता की तरह अभिनय किया था, यानी अपने आप को भुलाकर। लेकिन प्रदर्शन समाप्त होने के पाँच मिनट बाद ही उसे शर्मिंदगी महसूस हुई। वह रेलवे स्टेशन तक पूरे रास्ते चुप रही। स्टेशन के पास पहुँचकर उसने कहा, 'प्लेटफ़ॉर्म पर नंजनगुड जाने वाले लड़के-लड़कियाँ होंगे। उन्हें कुछ विचार आ सकते हैं। आप लोग अब चले जाइए, कृपया।'
राजा ने कुछ नहीं कहा। वह बस वापस लौट गया।

अध्याय 9

1

पहले खंड का लेखन कार्य पूरा हो चुका था और इसे तीन बार अच्छी तरह से संशोधित किया गया। इसके संकलन में पाँच वर्ष लगने का अनुमान था, लेकिन यह मात्र तीन वर्षों में ही संपन्न हो गया। करुणा के आने तक डॉ. राव ने यह सारा कार्य अकेले ही किया था। करुणा के आने के बाद कार्य में तेज़ी आई। करुणा ने अपना शोध प्रबंध लिखकर विश्वविद्यालय में जमा कर दिया था, लेकिन अपने गुरु के संकलन के पहले खंड की एक साफ़ प्रति तैयार करने की इच्छा से वह वहीं रुक गई। उसने छह सप्ताह तक दिन-रात परिश्रम करके यह कार्य पूरा किया। उसने एक प्रति पैक करके राव के पत्र के साथ इंग्लैंड स्थित प्रकाशक को भेज दी।

अपने जन्मस्थान लौटने की पूर्व संध्या पर राव को पूरी रात नींद नहीं आई। दो साल से अधिक समय से वह उनके शोध कार्य में सहायता कर रही थीं। उनकी पांडुलिपि का विश्लेषण करते हुए उन्होंने उसमें मौजूद त्रुटियों को उनके ध्यान में लाया था। एक वेतनभोगी सचिव से भी कहीं अधिक कुशलता से, एक घनिष्ठ मित्र जैसी आत्मीयता के साथ; और एक विद्वान मित्र की तरह जो अपना बौद्धिक सहयोग प्रदान करता है, उन्होंने स्वयं को इस ग्रंथ के संकलन में समर्पित कर दिया था। 'क्या मैं अगले खंडों का संकलन अकेले सफलतापूर्वक कर पाऊंगा?' राव मन ही मन सोच रहे थे। करुणा अपने वतन लौट रही हैं और उन्हें एक ऐसे ग्रंथ के संकलन के कार्य में अकेला छोड़ रही हैं, जिसमें एक पहाड़ को तोड़कर उसके मलबे को व्यवस्थित रूप से इकट्ठा करके उसी आकार का एक महल बनाने जैसा काम शामिल है। यह सोचते हुए कि करुणा के आने से पहले वह स्वयं इस कार्य को संभालते थे, वह स्वयं से पूछ रहे थे कि यदि करुणा न होती तो क्या वह यह सारा कार्य अकेले ही कर पाते? फिर भी, वह अपनी बेचैनी को नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे।

वह पूरी रात लेटा नहीं; नींद भी नहीं आई। सुबह 4 बजे निकलकर वह उसके हॉस्टल गया। वहाँ आसपास कोई नज़र नहीं आया, लेकिन उसने देखा कि उसके कमरे में रोशनी थी। हॉस्टल के सामने वाले आँगन के चारों ओर बने परिसर के प्रवेश द्वार पर अटेंडेंट सो रहा था। उसे जगाकर उसने अटेंडेंट से कहा कि वह करुणारत्ने मैडम को

बता दे कि डॉ. राव यहाँ हैं। पूरी तरह से जागा न होने के कारण उसने कहा, 'लड़कियों के लिए इस समय बाहर जाने का कोई नियम नहीं है।' उसने उसे पूरी तरह से जगाया और चलने को कहा। करुणारत्ने उसके साथ आईं। राव ने कहा, 'चलो थोड़ी देर टहलते हैं।'

मुझे कमरे का दरवाजा बंद करने दीजिए।

करुणा ने अपना दरवाजा बंद करके वापसी की। वे दोनों साथ में कुक्कराहाल्ली तालाब की ओर चल पड़े। करुणा ने बातचीत शुरू करते हुए पूछा, 'इस समय यह क्या हो रहा है?'

मुझे पूरी रात नींद नहीं आई। क्या तुम आज अपने देश के लिए रवाना नहीं हो रहे हो!

उसने कुछ नहीं कहा। उसने बस अपना हाथ बढ़ाया और उसका हाथ थाम लिया। उसे वृंदावन उद्यान की पिछली सैर के दौरान कही गई उसकी बातें याद आ गईं। चुपचाप चलते हुए वे कुक्कराहाल्ली तालाब के तट पर पहुँचे। एक मंडप के पास रुककर करुणा ने कहा, 'हमें और कितनी दूर चलना चाहिए? चलो यहीं बैठते हैं।'

अभी भोर नहीं हुई थी। पूरा मैसूर शांत था। उनके सामने का तालाब भी एकदम समतल था, उस पर कोई लहर नहीं थी। दोनों को बात करने के लिए कुछ सूझ नहीं रहा था। थोड़ी देर बाद राव ने कहा, 'तुम इतनी सुबह जाग रहे थे!'

‘मुझे भी पूरी रात नींद नहीं आई,’ उसने कहा और अपने हाथ में पकड़े हुए राव के हाथ को कसकर पकड़ लिया। उसकी गहरी चुप्पी ने उसके भीतर के दुख को और बढ़ा दिया था। लेकिन पिछली रात की पीड़ा की यादों ने उसके मुंह से निकले शब्दों का अर्थ गहरा कर दिया और उसके भीतर से एक चीख फूट पड़ी। राव ने उसे दिलासा देते हुए गले लगा लिया। करुणा ने अपना सिर राव की जांघों पर रख दिया।

तीन साल की जान-पहचान ने उन्हें बेहद करीब ला दिया था। वे अपने अंतर्मन की आवाज़ों के प्रति सचेत भी हो गए थे। उनके जीवन का उद्देश्य और दिशा एक ही थी। वे दोनों कभी-कभी अपनी पढ़ाई पर चर्चा से हटकर अपने अंतरंग भावों का आदान-प्रदान भी कर लेते थे।

करुणा के मन की बात पूरी तरह समझकर राव ने पूछा, 'घर वापस जाने के बाद तुम क्या करोगी?'

‘तुम्हें पता है!’ उसने कहा, और कुछ पल की चुप्पी के बाद उसने पूछा, ‘लेकिन तुम्हें जल्द ही दूसरा खंड लिखना शुरू कर देना चाहिए।’

‘आपके बिना यह आगे नहीं बढ़ सकता।’

‘ऐसा मत कहो। अगर मैं तुम्हारे साथ न भी होती, तो भी तुम पहला भाग लिख ही लेते। मैंने तुम्हारी सेवा एक क्लर्क की तरह की। एक टाइपिस्ट रख लो।’ वह कुछ देर चुप रही और फिर बोली, ‘मेरे बिना भी तुम्हारा ग्रंथ पूरा हो जाएगा। लेकिन मेरा मन कहता है कि तुम्हारे बिना, मुझमें जो थोड़ी-बहुत क्षमता है, वह भी सार्थक अभिव्यक्ति नहीं पा सकेगी। पर मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।’
तब तक कौवों ने भोर की सूचना दे दी थी। अंधेरा छंटने लगा था। 'उठो, चलो,' करुणा ने उसका हाथ पकड़कर उसे खींच लिया। जब तक वे छात्रावास पहुँचे, सुबह के 6 बज चुके थे। जैसे ही वह छात्रावास के मुख्य द्वार में प्रवेश करने वाली थी, राव ने कहा, 'ट्रेन 7:30 बजे है, अगर तुम्हें सामान पैक करना है, तो कर लो। मैं तुम्हारा यहाँ इंतज़ार करूँगा और तुम्हें रेलवे स्टेशन तक छोड़ दूँगा।'
‘मैंने पैकिंग पूरी कर ली है। तांगा ढूंढिएगा। बेहतर होगा कि मैं अभी शुरू कर दूं। शुभचिंतक आखिरी समय में आ सकते हैं।’
वे सुबह 6:30 बजे रेलवे स्टेशन पहुँच गए। तब तक ट्रेन खड़ी हो चुकी थी। उन्होंने एक कुली से अपना सामान दूसरी श्रेणी के डिब्बे में रखवाया और उसमें बैठ गए। उनके डिब्बे में कोई और नहीं था। कुछ देर तक कोई नहीं बोला। फिर उसने चुप्पी तोड़ी। ‘पहले खंड की छपाई डेढ़ महीने में शुरू होने की संभावना है। आज ही प्रकाशक को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध करें कि वे प्रूफरीडिंग और इंडेक्सिंग के लिए नमूना मेरे पते पर भेज दें।’
उन्होंने दूसरे खंड के बारे में भी कुछ चर्चा की। तब तक कुछ और लोग भी डिब्बे में अपनी सीटों पर बैठ चुके थे, और ये दोनों कुछ सामान्य बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद घंटी बजी, जो ट्रेन के चलने का संकेत थी। राव उतरे और ट्रेन की खिड़की के पास प्लेटफार्म पर खड़े हो गए। करुणा उनके पीछे दौड़ी और उनके चरणों में गिर पड़ी। गार्ड ने सीटी बजाई। करुणा वापस ट्रेन में चढ़ गई। ट्रेन चलने लगी। खिड़की की ग्रिल से करुणा का हाथ पकड़े राव चलती ट्रेन के साथ-साथ चलने लगे। ट्रेन की गति बढ़ गई और उनके हाथ अलग हो गए, जिससे करुणा की आँखों में आँसू आ गए।

2

राव ने दूसरे खंड के लिए पढ़ाई शुरू कर दी। हमेशा की तरह, वे सुबह 9 बजे पुस्तकालय पहुँचते और देर शाम तक काम करते। लेकिन अब जब वे अकेले ही यह

काम कर रहे थे, तो पहले वाला उत्साह गायब था। संदर्भ पुस्तकें ढूँढना, व्यवस्थित नोट्स बनाना आदि, जो पहले करुणा करती थीं, अब अतिरिक्त बोझ बन गए थे। और इन प्रारंभिक कार्यों में ही समय का एक बड़ा हिस्सा लग जाता था। होन्नैया, जिन्होंने उनके मार्गदर्शन में पीएचडी की थी, अब उसी कॉलेज में पढ़ाते थे। राव ने उनकी सहायता लेने की कोशिश की, लेकिन उन्हें न तो पढ़ाई में रुचि थी और न ही शोध में। एक अच्छी नौकरी मिलने और नई शादी होने के कारण, वे हमेशा अपनी पत्नी के साथ मौज-मस्ती करने में लगे रहते थे। करुणा जैसी योग्यताएँ रखने वाला कोई नहीं था, जैसे कि विद्वत्ता, अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड़, संस्कृत और प्राकृत का ज्ञान, शॉर्टहैंड और टाइपिंग, और काम के प्रति उत्साह। अगर कोई होता भी, तो वह राव की मदद क्यों करता?

फिर भी, राव ने अपना शोध कार्य व्यवस्थित रूप से जारी रखा। उन्हें करुणा से पत्र मिलते रहे जिनमें बताया गया था कि लंदन का प्रकाशक उन्हें पहले खंड की प्रतियां नियमित रूप से भेज रहा है। अंततः, राव को प्रकाशक से सूचना मिली कि छपाई पूरी हो चुकी है और उन्हें प्रस्तावना भेजनी है। उन्होंने प्रस्तावना लिखी, जिसमें उन्होंने महामहिम के संरक्षण और करुणा द्वारा इस खंड के लिए दी गई अनुकरणीय सहायता के लिए स्पष्ट रूप से हार्दिक आभार व्यक्त किया।

यह पुस्तक एक महीने के भीतर प्रकाशित हो गई। यह उन पुस्तकों में से पहली थी जिनके लिए राव ने अपना प्राण, प्राण और बुद्धि समर्पित कर दी थी, और यह उनकी अंतर्मन की आकांक्षाओं का परिणाम थी। पुस्तक का कवर काले रंग का था, शीर्षक था 'भारत का सांस्कृतिक इतिहास: खंड 1', और इसके नीचे सुनहरे अक्षरों में उनका नाम अंकित था। जब उन्हें अपनी प्रति मिली, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने मन ही मन ठान लिया कि 'मृत्यु से पहले शेष खंडों को पूरा कर लेंगे'। उन्होंने उसी दिन करुणा को एक प्रति भेजी। उन्होंने महाराजा के सचिव को लिखा कि वे स्वयं महाराजा कृष्णराज वाडियार को एक प्रति सौंपना चाहते हैं। सचिव ने उत्तर दिया कि महाराजा इस समय अस्वस्थ हैं, और स्वस्थ होने के बाद वे अवश्य ही पत्र लिखेंगे। इसके चार दिन बाद, समाचार पत्रों में उनके निधन की खबर प्रकाशित हुई।

राव का अवचेतन मन इस बात से आश्वस्त रहता था कि उनके कार्य को एक महान आशीर्वाद प्राप्त है। लेकिन अब वह अधिकार समाप्त हो चुका था। उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि यदि कोई बाधा उत्पन्न हो तो वे किससे मार्गदर्शन लें। उन्होंने कॉलेज में आयोजित शोक सभा में बोलने की पेशकश की। यह पहली बार था जब कॉलेज के

सभी छात्रों और नव नियुक्त व्याख्याताओं ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से देखा। दिवंगत प्रभु के गुणों का वर्णन समाप्त करने से पहले ही डॉ. राव ने दो बार अपने आँसू पोंछे।

अपनी पुस्तक के पहले खंड के प्रकाशन के बाद, राव की ख्याति विश्वविद्यालय के साहित्यिक जगत में बढ़ती गई। कई प्रोफेसर फुर्सत के समय में डॉ. राव से मिलना और उनसे किसी विषय पर चर्चा करना उचित समझते थे। वे उनके दूसरे खंड की प्रगति के बारे में पूछताछ करने का शिष्टाचार अपनाते थे। लगभग उसी समय, कॉलेज के इतिहास के प्रोफेसर सेवानिवृत्त हो गए और राव को विभागाध्यक्ष का पदभार संभालना पड़ा। फिर भी, वे पुस्तकालय में स्थित अपने कक्ष से शायद ही कभी बाहर निकलते थे।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, डॉ. राव के लिए करुणा की आवश्यकता और भी तीव्र होती गई। कोई भी शोधकर्ता चिंतन और विवेचन जैसे प्राथमिक कार्यों को ठीक से नहीं कर सकता, यदि उसे असंख्य गौण कार्यों को भी निपटाना पड़े और साथ ही एक सफल शोध को पूरा करना पड़े। छह महीने बीत जाने के बावजूद, दूसरे खंड के संकलन के लिए जरा भी आधारभूत कार्य नहीं किया जा सका था। समय तो केवल संदर्भों और नोट्स बनाने में ही व्यतीत हो रहा था। इसके अलावा, ऐसे किसी सहयोगी की अनुपलब्धता के कारण जो विषयों पर उनके विचारों को ध्यानपूर्वक सुनता और उनके निष्कर्षों पर सक्रिय रूप से चर्चा करता, उनकी स्थिति रेगिस्तान में अकेले यात्री जैसी हो गई थी।

जब उसके लौटने की कोई संभावना ही नहीं थी, तो उसे याद करने का क्या फायदा? खुद को समझाते हुए कि उसे स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए, उसने अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। लेकिन करुणा की ज़रूरत सिर्फ़ एक क्लर्क के छोटे-मोटे काम करने के लिए नहीं थी; यहाँ तक कि एक विद्वान साथी की ज़रूरत भी नहीं थी। अपने जीवन की अपार संभावनाओं को, जिन्हें उसने अपनी पुस्तक में समेटा था, करुणा के दृढ़ संकल्प और लगन ने भी उसमें अपना दिल और आत्मा लगा दी थी। उसे लगता था कि करुणा के पूरक दृढ़ संकल्प के बिना, केवल अपनी क्षमता से होने वाली प्रगति नीरस है।

तब तक करुणा की थीसिस को विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता मिल चुकी थी। उन्हें न केवल पीएचडी की उपाधि मिली, बल्कि परीक्षकों ने थीसिस को प्रकाशित करने की सिफारिश भी की। उन्होंने करुणा को पत्र लिखा। खुशखबरी देने के बाद उन्होंने लिखा:

आपने अपने पिछले पत्र में मेरे काम की प्रगति के बारे में पूछा था। मैं अब 38 वर्ष का हूँ। रात के घने अंधेरे में मेरी दृष्टि कमजोर होने लगी है। मैं 16 वर्ष की आयु से लगातार

पढ़ता आ रहा हूँ। आशा है कि इन पुस्तकों के पूरा होने तक ईश्वर मुझे दृष्टि प्रदान करते रहेंगे। आपके सहयोग के बिना, मेरा सारा समय संदर्भों और अन्य संबंधित कार्यों में ही व्यतीत हो जाता है। आपकी सहायता से ही पहली पुस्तक, जिसके लिए पाँच वर्ष का समय निर्धारित था, तीन वर्ष में पूरी हो सकी। कई अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं ने इसकी प्रशंसा की है। शेष चार पुस्तकों को अकेले पूरा करने की मेरी क्षमता पर विश्वास कम होता जा रहा है। जब तक मैं जीवित हूँ, मैं इसे पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा। विश्राम ईश्वर की इच्छा है। कृपया मुझे बताएं कि आप आजकल क्या कर रहे हैं।

करुणा का जवाब एक सप्ताह के भीतर आ गया।

हालांकि मेरी पीएचडी मेरी मेहनत का नतीजा है, लेकिन इसका श्रेय आपको जाता है। आपकी अद्भुत प्रतिभा के कारण ही यह उपलब्धि इतनी गौरवपूर्ण हो पाई। अगर मुझे वहां जाने का मौका मिला, तो मैं सबसे पहले वह प्रमाण पत्र आपके चरणों में अर्पित करूंगा, उसके बाद ही उसे ग्रहण करूंगा।

मैंने भी प्रथम खंड की समीक्षाएँ पढ़ीं। मुझे गर्व महसूस हुआ। प्रस्तावना में आपने मेरी सेवा की अत्यधिक प्रशंसा की है। मेरी सेवा तो केवल मेरी अपनी संतुष्टि के लिए थी। लेकिन यह आपकी विद्वत्ता की लौ है जो पुस्तक के प्रत्येक वाक्य को प्रकाशित करती है। इसे मुझसे बेहतर कोई नहीं समझ सकता।

आपने पूछा कि मैं क्या कर रही हूँ। दरअसल, कुछ नहीं। मेरी माँ का दो महीने पहले देहांत हो गया। शोक का दुख अभी भी बना हुआ है। मेरे पास कोई साथी नहीं है जो मेरा हौसला बढ़ाकर मुझे खुश कर सके, इसलिए मैं इस द्वीप पर एकांत जीवन जी रही हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि अगर आप सिंहली होते और मेरा पैतृक स्थान आपका घर होता, या मैं मैसूर की होती और वहाँ रहती, तो मैं हमारी किताब के लिए लगातार काम करती रहती। मैं इसे 'आपकी किताब' नहीं कह सकती, इसलिए मैंने 'हमारी किताब' कहा। प्रकाश देख चुकी आत्मा के लिए अंधकार में लौटना सचमुच एक भयानक अनुभव है।

पत्र भेजते रहिए।

जब करुणा ने अपने गुरु से विदा ली और घर के लिए रवाना हुई, तो वह निस्संदेह अपने माता-पिता और भाई से पुनर्मिलन को लेकर उत्साहित थी, लेकिन गुरु से हमेशा के लिए बिछड़ने का कष्ट उससे कहीं अधिक था। उसके पास अपने देश लौटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

अपने घर लौटकर, परिवार के सदस्यों के साथ हुई बातचीत के सिलसिले में वह दो दिन तक व्यस्त रही। अब उसके भाई के दो बच्चे भी थे। उनके साथ खेलकर वह कुछ समय बिता सकती थी। लेकिन उसके बाद वह और बर्दाश्त नहीं कर सकी। पीएचडी की डिग्री मिलने के बाद उसके माता-पिता उस पर शादी का दबाव डालने लगे। उसने साफ कह दिया कि वे दोबारा शादी का प्रस्ताव न रखें, क्योंकि वह शादी नहीं करना चाहती थी। उसकी माँ तब भी नहीं मानी जब उसने कहा कि वह विश्वविद्यालय में अध्यापन का करियर चुनेगी।

वापसी के पंद्रहवें दिन से ही पहले खंड की प्रतियां आने लगीं। लगभग दो महीने तक वह प्रूफरीडिंग, इंडेक्सिंग आदि में व्यस्त रहीं। उनकी इच्छा थी कि राव नियमित रूप से उनके काम को देखें और उसकी सराहना करें। पंद्रह दिन बाद उनकी मां का देहांत हो गया। शोक में डूबकर पढ़ाई में उनकी रुचि कम हो गई। लगभग एक महीने तक वह लगातार रोती रहीं। यह महसूस करते हुए कि पढ़ाई न करने पर उनका शोक कम नहीं होगा, उन्होंने स्थानीय कॉलेज के पुस्तकालय से इतिहास की पुस्तकें लीं और उन्हें पढ़ना शुरू कर दिया। इससे उनका मन मैसूर की ओर खिंचा चला गया! उनके मन में विचार आने लगे: क्या मैं उन्हें लिखूं कि अगर किसी और कारण से नहीं तो कम से कम उनके शोध सहायक के रूप में सेवा करने के लिए मैसूर चली जाऊं? या क्या मैं मैसूर में अध्यापन का करियर नहीं पा सकती? जब तक वह अपने मन को जकड़े इस आलस्य को दूर नहीं करतीं और अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुरूप किसी काम में नहीं लगतीं, तब तक उन्हें शांति नहीं मिल सकती थी। जब वह लगातार ऐसी भावनाओं से जूझ रही थी, तभी उसे राव का एक पत्र मिला।

मैं यह पत्र आपको अत्यंत मानसिक उथल-पुथल से गुज़रने के बाद लिख रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप इसकी उपयुक्तता या अनुपयुक्तता को आम लोगों की तरह नहीं समझेंगे। हमारा रिश्ता गुरु-शिष्य का नहीं रहा है। हम दो आत्माएँ हैं जो एक विशिष्ट कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह कहना उचित होगा कि हम दो भक्त हैं जो एक ही देवी का आह्वान करते हुए अपना जीवन उनकी सेवा में समर्पित करने का प्रयास करते हैं। इस उपासना में हम दोनों के कार्यों को एक दिशा देना आवश्यक है। एक मंत्रों का जाप

करता है, तो दूसरा सामग्री से आराधना करता है। एक अनुष्ठान करता है, तो दूसरा फूल, चंदन, कपूर और अन्य आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करता है। इस प्रकार की समन्वित उपासना के माध्यम से हमारी संयुक्त प्रार्थना निर्बाध रूप से अपने लक्ष्य तक पहुँच सकती है।
वहाँ, अपनी अंतरात्मा की पुकार को दबाकर खुद को कष्ट न सहने दें। यहाँ, मुझे भी बेबसी से पीड़ित न होने दें। जैसे ही आपको यह पत्र मिले, तुरंत यहाँ के लिए निकल पड़ें। आप यहाँ कुछ शोध कार्य करवाने का बहाना बना सकते हैं। यहाँ अपनी आजीविका के लिए परिवार से मदद न माँगें। प्रकाशकों ने मुझे पहले खंड की आधी रॉयल्टी दे दी है। यह इतनी रकम है जिससे आप लगभग चार साल तक अपना गुजारा कर सकते हैं। अगर आप इस व्यवस्था के लिए तैयार नहीं हैं, तो चलिए विवाह कर लेते हैं। इस विवाह से, मेरे मरने से पहले, हम अपनी इच्छित संतान, यानी इस ग्रंथ के खंडों को जन्म दें। उत्तर न दें। बस शुरू कर दें।

अंतिम कुछ पंक्तियों ने उसे पसीने से तर कर दिया। कई बार उन दोनों ने अंतरंगता से बातें की थीं; एक बेहद प्यार करने वाले विवाहित जोड़े से भी कहीं अधिक अंतरंगता से। मैसूर से प्रस्थान की पूर्व संध्या पर, कुक्कराहाल्ली तालाब के तटबंध पर बने मंडप में उसने उसे गले लगाया था। वह अपना सिर उसकी जांघ पर रखकर लेटी थी। इन सभी मौकों पर, उसके मन में कभी भी शालीनता का प्रश्न नहीं उठा था; न ही इस बात का कोई आशय था कि बाहरी दुनिया इस पर क्या प्रतिक्रिया देगी। उन सभी क्षणों में, उसने जो देखा था वह एक विद्वान था जो ज्ञान के विशाल भंडार में एकाकी रूप से विचरण करता था, और जो उसके मार्गदर्शन की तलाश में था। अब भी वह एकाकी था। उसे पहले से कहीं अधिक उसके मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। लेकिन विवाह के बंधन में बंधने के प्रस्ताव ने उसके मन में कुछ शंकाएँ पैदा कर दीं। वह एक परिवार वाला व्यक्ति था, जिसकी पत्नी और पुत्र थे। वह अपनी पत्नी के प्रति उसकी भावनाओं से अनभिज्ञ नहीं थी। फिर भी, उसने सोचा, उस महिला के वैवाहिक जीवन में दखल देना उसके लिए उचित नहीं था। उसने इस मुद्दे पर कभी नैतिक दृष्टिकोण से विचार नहीं किया था; न ही अब। यह महज़ एक समाजशास्त्रीय प्रश्न था। यह उस स्त्री की विनम्रता का प्रश्न था जो अपने पति की बढ़ती उदासीनता के बावजूद पूरी निष्ठा और भक्ति से उसकी सेवा करती थी। जब उसने विचार किया कि क्या उस स्त्री को हटाकर उससे

विवाह करना उसके लिए उचित था, तो उसे याद आया कि उस दंपत्ति के बीच अंतरंग संबंध कई वर्षों से सूख चुका था।
उसने यह भी सोचा कि क्या वे प्रतिद्वंद्वी पत्नियों के रूप में एक ही घर में रह सकती हैं। लेकिन करुणा एक आधुनिक महिला थी; कैम्ब्रिज से पढ़ी-लिखी। उसका आधुनिक मन हमेशा से द्विविवाह से घृणा करता था। जिस प्रकार एक स्त्री के लिए एक साथ दो पुरुषों के साथ वैवाहिक जीवन बिताना अकल्पनीय है, उसी प्रकार एक पुरुष के लिए एक साथ दो महिलाओं के साथ वैवाहिक जीवन बिताना भी असंभव है। मेरे और उसकी वर्तमान पत्नी के बीच, केवल एक ही उसकी साथी हो सकती है। निश्चित रूप से, उसके अपनी वर्तमान पत्नी के साथ कोई अंतरंग संबंध नहीं हैं। यह देखते हुए कि उसके साथ उसका बंधन पहले से ही बहुत कमजोर है, अगर मैं उससे शादी कर लूँ तो क्या उसे किसी भी चीज़ से वंचित होना पड़ेगा?
यह एक जटिल अवधारणा थी, जिसका संतोषजनक समाधान उसकी क्षमता से परे था। जितना अधिक वह इसके बारे में सोचती, उसका सिर उतना ही चकराता। इसके अलावा, न तो उसके पिता और न ही उसका भाई उसकी इस इच्छा से सहमत थे कि वह अपने देश से बाहर जाकर एक ऐसे व्यक्ति से शादी करे जिसकी पहले से ही कानूनी रूप से विवाहित पत्नी हो, जो दूसरे धर्म का हो और विदेश में रहता हो। वह उन्हें यह प्रस्ताव भी नहीं देना चाहती थी, ताकि माँ की मृत्यु के बाद उनके दुख को और न बढ़ाए। उसने अपने पिता से बस इतना कहा: 'आप मेरी प्रवृत्ति से अवगत हैं। अगर मुझे माँ की मृत्यु के दुख से उबरना है तो मुझे गंभीरता से अध्ययन करना होगा। प्रोफेसर ने मुझे पत्र लिखकर अध्ययन छात्रवृत्ति की संभावना के बारे में बताया है। मैं इसे स्वीकार कर रही हूँ और वहाँ जा रही हूँ।'
उसके पिता तुरंत राजी नहीं हुए। यहाँ तक कि उसके भाई को भी यह पसंद नहीं आया, लेकिन वह अपनी बहन की इच्छा और दृढ़ विश्वास से आश्वस्त था। अंततः, भाई मान गया और पिता ने भी उनका साथ दिया। विदाई के समय, जब उसने अपने पिता के चरणों को छुआ, तो उसकी आँखों में आँसू थे। भावुक होकर, पिता ने उसे आशीर्वाद दिया, 'बेटी, तुम्हें मन की शांति मिले।' उसका भाई उसे रेलवे स्टेशन तक छोड़ने गया। भारी मन से उसने कहा, 'तुम्हारे विवाह के लिए अभी देर नहीं हुई है। जब तुम्हारा मन करे, तो मुझे बताने में संकोच मत करना। मैं तुम्हारे लिए एक उपयुक्त दूल्हा ढूँढूँगा।'
उसने उसके पैर छुए, और जैसे ही वह ट्रेन में चढ़ी, उसके मन में चुपचाप यह बात आई, 'शायद मैं इस भूमि पर कभी वापस नहीं आऊंगी।'

अध्याय 10

1

एक नाटक में अभिनय करने के बाद, कात्यायनी का नाम पूरे कॉलेज में मशहूर हो गया। गर्ल्स लाउंज में आने वाली हर लड़की उससे मिलती और अपना परिचय देती। लेकिन कात्यायनी पहले की तरह ही गंभीर स्वभाव की थी, इसलिए वे लड़कियां उससे घुलमिल नहीं पाती थीं। पिछले साल उसकी सहेली वासंती को छोड़कर, कोई भी उसके इतना करीब नहीं आ पाया कि उसे दोस्त कहा जा सके। लेकिन उसने कई लड़कियों से जान-पहचान बना ली थी।

'द प्राइमोर्डियल' नामक नाटक का मंचन अगस्त में हुआ। शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत थी और कक्षा में पढ़ाई करने में किसी की रुचि नहीं थी। कात्यायनी ने एक महीने के भीतर अपने संवाद याद कर लिए थे। नाटक के बाद, उसने अपनी नियमित पढ़ाई शुरू कर दी। उसका मन बीच-बीच में उस नाटक की पटकथा दोहराता रहता था जो उसकी स्मृति में रच-बस गई थी। जब वह पाठ्यपुस्तकें पढ़ने लगी, तो पन्ने पलटते रहे, पर उसे कुछ समझ नहीं आया। उसके मन के रंगमंच पर नाटक के दृश्य विस्तार से चलते रहते थे।

पढ़ाई पर ध्यान न दे पाने के कारण कात्यायनी सीढ़ियों से उतरकर भूतल पर आ जाती। उसके ससुर पूजा कक्ष में होते और उनके द्वारा जपे जा रहे मंत्रों में घंटी की गूंज सुनाई देती। कानों में उस गूंज के कारण नाटक के संवाद धुंधले पड़ जाते। भागीरथम्मा रसोई में खाना बना रही होतीं और चीनी से बातें कर रही होतीं। अगर कात्यायनी उनकी नज़र में आ जातीं, तो वह कहतीं, 'खाना बनाने का काम मुझ पर छोड़ दो। तुम्हें परीक्षा की तैयारी करनी है। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो।' यह जानते हुए कि वापस डेस्क पर जाने का कोई फायदा नहीं है, वह पीछे के बगीचे की ओर चल पड़तीं।

एक सुबह, कात्यायनी पिछवाड़े में थीं। नए लगाए गए केले के पौधे अच्छे से बढ़ गए थे। अन्य पौधों में भी हरियाली की चमक दिखाई दे रही थी। पिछवाड़े का पूरा मैदान हरियाली से भरा हुआ था, जिससे उनका मन प्रसन्न हो गया। उनका ध्यान विशेष रूप से चमेली की लता पर गया। भारतीय मूंगा के नए पौधे की जड़ें मिट्टी में अच्छी तरह जम

गई थीं और कलियाँ दिखाई देने लगी थीं। चमेली की नन्ही सी शाखाएँ भारतीय मूंगा की कोमल शाखाओं से लिपटी हुई थीं। पूरब से सूर्य की किरणें चारों ओर फैल रही थीं। उस पूर्ण प्रकाश में, चमेली चुपचाप अपने आप में मग्न थी, अपने संरक्षक को मजबूती से गले लगाए हुए। उसकी खामोशी से उमंग, आनंद और कृपा का स्पंदन हो रहा था। उन्होंने सोचा कि चमेली के भीतर क्या चल रहा होगा। उन्होंने धीरे से एक लता को छुआ। बाहरी दुनिया के दिखावटी कलंक से अप्रभावित, वह जीवन के मूल स्वभाव की प्रचुरता में मग्न थी। फूलों ने पत्तियों के कोनों से अपने मुस्कुराते चेहरे प्रकट किए। रोजाना फूल तोड़ने के बावजूद, पौधे से काफी मात्रा में फूल प्राप्त हुए।

नाटक की पटकथा उसके अंतर्मन में स्पष्ट रूप से गूंज रही थी। देवगुरु, क्या सदा-हृदय और जीवंत प्रकृति पर कृत्रिम धर्म थोपना धर्म के विरुद्ध नहीं है? जीवंतता से परिपूर्ण होना मेरा मूल स्वभाव है। कोई भी धर्म, विधवापन थोपकर, मन को भाने वाली वनस्पति, मनमोहक दृश्य और समस्त आत्माओं को पोषण प्रदान करने वाले मेरे असीम विस्तार को दूषित नहीं कर सकता।

अब तक कात्यायनी ने इन शब्दों का शाब्दिक अर्थ ही समझा था। चमेली की लता के सामने खड़े होकर वह उसके तनों की गहराई को महसूस कर सकती थी। उस अनुभूति का गहरा अर्थ समझ में आते ही उसका पूरा शरीर सिहर उठा। वह राजा की रचनात्मकता की सराहना करने लगी... उस नाटककार ने कितनी अद्भुत सच्चाई को चित्रित किया है! जल्द ही, राजा का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ गया। शो के तुरंत बाद ग्रीनरूम में राजा ने उसका हाथ पकड़ा था, यह याद करके उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसे यह भी याद आया कि बाद में बोलने वाले कुलपति ने उसके नाम के आगे 'सुश्री' लगाकर उसे संबोधित किया था—जो युवतियों के लिए इस्तेमाल होने वाली उपाधि है। वह एक अवर्णनीय भावना से घिर गई और सिहरन और भी बढ़ गई। इसे सहन न कर पाने के कारण वह ज़मीन पर गिर पड़ी; उसे नहीं पता था कि वह कितनी देर तक वहाँ बैठी रही।

वह अर्धचेतन अवस्था में थी जब उसने अपनी सास को उसे पुकारते हुए सुना, 'तुम यहाँ क्यों बैठी हो? दोपहर के भोजन का समय हो गया है, आओ खाना खाओ।'

वह अंदर गई, लेकिन ज़्यादा कुछ खा नहीं सकी। हमेशा की तरह, उसने अपना बैग और लंचबॉक्स लिया, रेलवे स्टेशन गई और ट्रेन में चढ़ गई। ट्रेन के चलते हुए, उसके मन में प्रकृति की हरियाली के अलावा और कुछ नहीं था। जिस नदी के किनारे ट्रेन रुकी, उसके किनारों पर फैली हरी-भरी वनस्पति और खड़ी फसलों से लहराते खेत,

सब प्रकृति की उमंग से भरे हुए थे। दूर चामुंडी पहाड़ी हरे रंग की साड़ी पहने किसी सुंदर स्त्री की तरह लग रही थी। आकाश में तैरता एक घुमावदार बादल उसे ऐसा लगा जैसे कोई प्रेमी उस सुंदर स्त्री की ओर दौड़ रहा हो।
राजा राव, जिन्होंने पिछले वर्ष उन्हें मैकबेथ पढ़ाया था, इस वर्ष उन्हें अंग्रेजी कविता पढ़ाने वाले थे। अंग्रेजी कविता का पहला सत्र चल रहा था, और अध्ययन के लिए चुनी गई कविता जॉन कीट्स की 'द ईव ऑफ सेंट एग्नेस' थी। राजा राव कविता के पाठ और व्याख्या में इतने मग्न थे कि जो विद्यार्थी इसे रचनात्मक रूप से समझ पा रहे थे, उनके हृदय जीवंत भावनाओं से भर उठे। पूरी कक्षा ध्यान से सुन रही थी, और सन्नाटा छाया हुआ था। कात्यायनी ने सोचा कि उसमें वर्णित वर्णन वास्तव में प्रकृति की मूल भावना की अभिव्यक्ति है। उस दिन वह नोट्स नहीं बना सकी। उसकी निगाहें राजा राव पर टिकी थीं, जो उत्साहपूर्वक कविता की व्याख्या कर रहे थे। केवल वह ही नहीं, पूरी कक्षा उनमें मग्न थी। राजा राव भी, जैसा कि शिक्षकों की आदत होती है, बारी-बारी से विद्यार्थियों को देख रहे थे, लेकिन बीच-बीच में कात्यायनी पर विशेष ध्यान से नजर डाल रहे थे। खासकर आज, उन्होंने सामान्य से अधिक बार उनकी ओर देखा, और उनकी दृष्टि उन पर एक पल के लिए ठहर गई। उस निगाह को सहन न कर पाने के कारण, भले ही वह अपनी नज़रें अपनी मेज पर रखी किताब पर झुका लेती, एक मधुर आवेग के कारण वह धीरे से अपनी गर्दन घुमाकर उस पर एक नज़र डाल लेती।

2

राजा और नागलक्ष्मी बचपन से साथ पले-बढ़े थे। नागलक्ष्मी पहले उनकी बचपन की दोस्त थीं और बाद में भाभी बन गईं। जब राजा ने एमए की डिग्री हासिल कर नौकरी पा ली, तो उन्हें कई वैवाहिक प्रस्ताव मिले। नागलक्ष्मी के मन में यह स्वार्थ था कि शादी से उन्हें एक साथी मिल जाएगा। लेकिन राजा ने हार नहीं मानी। उनका इरादा इंग्लैंड जाने के लिए छात्रवृत्ति हासिल करने का था। उन्हें पूरा भरोसा था कि उन्हें यह अवसर मिल ही जाएगा, इसलिए उन्होंने शादी को कुछ समय के लिए टाल दिया था। जब आखिरकार उन्हें यह अवसर मिला, तो नागलक्ष्मी चाहती थीं कि इंग्लैंड जाने से पहले राजा की शादी हो जाए, लेकिन उनके पति - राजा के बड़े भाई - सहमत नहीं हुए। इंग्लैंड में रहते हुए उन्होंने कुछ समय के लिए विवाह संस्था की सत्यता पर भी सवाल उठाए। मैसूर लौटने के बाद से ही जब से उन्होंने कॉलेज में पढ़ाना शुरू किया, कई

दूल्हों के पिता उनसे मिलने आने लगे। उनके भाई किसी अनिच्छुक व्यक्ति पर शादी थोपने के पक्ष में नहीं थे। दरअसल, अपने शोध कार्य की एकाकीपन और विवाहित होने के बावजूद अपने अकेलेपन को देखते हुए, उन्होंने अपने भाई के अविवाहित रहने के निर्णय का सम्मान किया था। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि यदि उनके भाई का मन बदल जाए और वे शादी का फैसला कर लें, तो वे उनसे मिलने आएंगे। थिएटर एसोसिएशन के आसपास मंडराने वाली कुछ प्रगतिशील लड़कियाँ उनसे शादी का प्रस्ताव रखने के लिए बेताब थीं; उन्हें इस बात का भी पता था। लेकिन उनमें से कोई भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकी। उन्होंने बड़ी चतुराई से यह सुनिश्चित किया कि उनमें से कोई भी उनके सामने इस बारे में बात न करे।

अब तक उसका सारा ध्यान कात्यायनी पर केंद्रित हो चुका था। उसका चेहरा उसकी आँखों में बस गया था। उसके ख्यालों में डूबा रहने के कारण उसे रात को ठीक से नींद नहीं आती थी। उसकी भूख भी कम हो गई थी। थिएटर एसोसिएशन के नाटकों में भी उसकी रुचि घटती जा रही थी। अगर वह कुंवारी होती, तो अब तक वह उसके सामने अपने सारे दिल खोलकर रख देता। लेकिन उसकी स्थिति ने उसे बेचैन कर दिया था। जब उसे पता चला कि वह उसमें कुछ खास दिलचस्पी दिखा रही है, तो उसे थोड़ी तसल्ली मिली। उसने सोचा कि उसे किसी तरह इस दुविधा को तोड़ना चाहिए और कोई न कोई हल निकालना चाहिए।

एक दिन, उसने कॉलेज में उससे संपर्क किया और पूछा, 'कल तुम कॉलेज जा रही हो, है ना?'

कुछ गड़बड़ थी, लेकिन बस एक पल के लिए। उसे याद आया, 'क्या कल छुट्टी नहीं है?'

फिर भी, आइए। मुझे आपसे एक महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा करनी है। मैं थिएटर एसोसिएशन के कमरे में रहूंगा। हम बिना किसी बाधा के चर्चा कर सकते हैं।

‘क्या मैं जान सकता हूँ कि मामला क्या है?’

'यह इतना मामूली मामला नहीं है कि इसे यहां उठाया जाए,' उन्होंने मुस्कुराते हुए लेकिन दृढ़ता से कहा।

अगली सुबह, वह सुबह 10 बजे से काफी पहले थिएटर एसोसिएशन के कमरे में था। उसका मन बेचैन था और एक अनजानी चिंता उसे घेरे हुए थी। उसने काफी सोचा कि इस मामले को कैसे शुरू किया जाए, और सही तरीके से भी, लेकिन उसे कुछ सूझा नहीं। जब उसने अचानक ही बात शुरू करने का फैसला किया, तभी कात्यायनी दरवाजे पर दिखाई दी। हमेशा की तरह, उसके हाथ में किताबें और लंच बॉक्स था।

'अंदर आओ,' उसने उठते हुए कहा। लेकिन वह कुछ देर तक दहलीज पर ही झिझकती रही। जब उसने उसे दोबारा अंदर बुलाया, तो वह अंदर आई और एक कुर्सी पर बैठ गई। बिना एक शब्द बोले, वह चुपचाप बैठी रही, मानो किसी निश्चित प्रस्ताव की प्रतीक्षा कर रही हो। कुछ झिझक भरे प्रयासों के बाद, वह अचानक ही मुद्दे से भटक गया! 'तुम जिस ट्रेन से आती-जाती हो, वह यहाँ कितने बजे पहुँचती है?'
‘सुबह 10 बजे।’
यह पहला अंक था। उसने अगले अंक के लिए एक स्क्रिप्ट तैयार की। 'तुम आजकल काफी दुबली हो गई हो।'
उसने अपना सिर उठाया और उसकी ओर देखा। वह अपनी बातों की निरर्थकता पर हँस पड़ा। उसने भी उसकी बात का समर्थन करते हुए हँस दिया। फिर हिचकिचाहट छोड़कर उसने पूरी गंभीरता से कहा, 'चलिए, बात को घुमा-फिराकर न कहें। क्या आप जानती हैं कि मैं आपको क्या बताना चाहता हूँ?'
'नहीं।'
‘तो फिर तुम झूठ बोल रहे हो। फिर भी, कोई बात नहीं। अब हम दोनों गुरु-शिष्य नहीं हैं। भले ही हमने इसे ज़बानी तौर पर ज़ाहिर नहीं किया है, लेकिन हम दोनों यह जानते हैं, है ना?’
उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। उसने आगे कहा, 'मैंने कभी शादी न करने की योजना बनाई थी, लेकिन अब वह फैसला पूरी तरह से बदल गया है।'
यह सुनकर कात्यायनी को हल्का पसीना आ गया। हालांकि यह अप्रत्याशित नहीं था, फिर भी उसका मन उत्साह, विस्मय और आनंद से भर गया। एक छिपा हुआ भाव अब सामने आ गया। स्थिति की विशिष्टता अब तक उसे पूरी स्पष्टता से समझ नहीं आई थी। उसका बच्चा, उसके सास-ससुर और उसके पति की यादें एक साथ उसके मन में उभर आईं। इसी क्षण उसने अपनी स्थिति के द्वंद्व को गहराई से महसूस किया।
'आप चुप क्यों हैं?'
क्या आपको मेरी स्थिति की पूरी जानकारी है?
'बिल्कुल। मुझे पता है कि तुम्हारा भी एक बच्चा है। मैंने इंग्लैंड में यह सब देखा है; पिछली शादी से बच्चों वाली विधवा महिलाएं दोबारा शादी कर लेती हैं। वे बच्चे अपनी मां के साथ रहते हैं। तुम्हारा पहला बच्चा मेरा भी बच्चा है। मैं उसकी कभी उपेक्षा नहीं करूंगा।'

उन्होंने ठीक उसी दुविधा का समाधान कर दिया था जिसे वह उठाना चाहती थी। लेकिन उनकी दुविधा यहीं खत्म नहीं हुई। उन्होंने कहा, 'मेरे सास-ससुर हैं। मैं उनके वंश के प्रति श्रद्धा, उनके घर में उनके सम्मान आदि के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकती।'

'कात्यायनी, ये कोई नई बातें नहीं हैं, और न ही तुम पहली बार इन पर विचार कर रही हो।' उसने उसके चेहरे की ओर देखा। उसकी आँखों में उसे विश्वास दिलाने की उम्मीद जगी। उसने आगे कहा, 'परिवार की स्थिति का सवाल ही हमारे जीवन में आने वाली सभी परेशानियों की जड़ है। क्या यही मैंने अपने नाटक, 'द प्राइमोर्डियल' में नहीं दर्शाया है?'

कात्यायनी चुप रहीं। इसे उनकी सहमति मानते हुए, वह उनके पास गए, उनके हाथ पकड़े और बोले, 'क्या कहती हो? किसी के मन की मूल प्रवृत्ति के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए। तुम्हारे लिए इसे पूरी तरह समझ लेना ही काफी होगा।'

उसने अपने हाथ नहीं हटाए। इसके बावजूद, वह चुप रही, उसके भीतर अटकलों का बवंडर उठ रहा था। इससे व्याकुल होकर, वह कुछ भी कहने में असमर्थ थी। थोड़ी देर बाद, यह शांत हो गया। अब उसने उसके हाथों को दबाते हुए कहा, 'मुझे तुम्हारा जवाब बताओ।'

उसने कहा, 'मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।'

दोनों के मन में शांति छा गई। मानो दो तूफानों के मिलन ने एक-दूसरे को निष्क्रिय कर दिया हो, उन्हें संतोष का अनुभव हुआ। वे दोपहर 1 बजे तक बातें करते रहे। फिर कात्यायनी ने कहा कि वह नागलक्ष्मी से मिलना चाहती है। 'भाभी को अभी मत बताना,' उसने कहा, कमरे का दरवाजा बंद किया और उसके साथ अपने घर की ओर चल पड़ा।

सारा दिन उसका मन प्रसन्न रहा। पूरी ट्रेन यात्रा के दौरान, प्रकृति आनंद से चमकती हुई प्रतीत हुई। प्रकृति की सुंदरता, जो अब तक केवल उमंग की अभिव्यक्ति मात्र थी, अब एक नया अर्थ प्राप्त कर चुकी थी। नीरस हरे रंग के फलने-फूलने की आशा का समय आ गया था।

लेकिन उस रात खाना खाने के बाद जब वह सोने गई, तो उसका मन एकदम बदल गया। इस साल परीक्षाएं देनी थीं, इसलिए कात्यायनी सोने से पहले पढ़ने के लिए ऊपर वाले कमरे में चली गई थी। चीनी नीचे अपनी नानी के साथ सो रहा था; लक्ष्मी भी वहीं सो रही थी। अचानक कात्यायनी को याद आया कि जब उसने पहली बार पढ़ाई फिर से

शुरू करने का फैसला किया था, तब उसने क्या ठान लिया था। उसने अपने सास-ससुर को समझाया था कि वह सिर्फ अपने पति की अधूरी पढ़ाई पूरी करना चाहती है। कॉलेज के पहले दिन जब वह निकली, तो उसने अपने ससुराल वालों के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया था; उन्होंने उसके इरादे की सराहना की थी और अपने बेटे की याद में उसे आशीर्वाद दिया था। अब एक ऐसी घटना उसके मन में कौंध गई जो उस संकल्प से बिलकुल अलग थी। उसके ससुर ने उसे फीस, किताबें, ट्रेन का किराया आदि जैसे खर्चों के लिए पर्याप्त पैसे दिए थे। हाल ही में, उन्होंने उसे खेत और घर के वित्तीय मामलों को संभालने की जिम्मेदारी भी दे दी थी। चार साल का चीनी अगले शैक्षणिक वर्ष में बालवाड़ी में दाखिला लेने वाला था। पुनर्विवाह करने की उसकी एकमात्र इच्छा इन सभी के विरुद्ध खड़ी थी, और वह इसे अनैतिक मानती थी। उसने सोचा कि उस दिन लिया गया उसका निर्णय उसके ससुर, सास, बच्चे और दिवंगत पति के विरुद्ध अपराध था।

अत्यंत व्याकुल होकर उसने निश्चय किया कि कल से वह राजा राव से नहीं मिलेगी और नागलक्ष्मी से मिलने भी नहीं जाएगी। ठीक आधी रात को वह सीढ़ियों से नीचे उतरी, स्नानघर गई, पैर धोए, पूजा कक्ष में गई और भगवान के समक्ष प्रणाम किया। जब वह सीढ़ियाँ चढ़ रही थी, तभी बैठक में कुछ पढ़ रही श्रोत्री ने उससे पूछा, 'बेटी, क्यों? नींद नहीं आ रही?'

मैं ईश्वर के समक्ष प्रणाम करने गया था।

तो फिर, आराम करो। नींद को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

वह अपने अध्ययन कक्ष में चढ़ गई।

अपने ससुर की पढ़ाई में रुचि देखकर उसने मन ही मन यह निश्चय किया कि परीक्षा के बाद वह उनसे भगवद्गीता और उपनिषदों की शिक्षा लेगी और प्रतिदिन उनका अध्ययन करेगी।

3

पूरे एक सप्ताह तक उसने राजा को नहीं देखा; यहाँ तक कि उसकी कक्षाओं में भी नहीं गई। इस डर से कि वह उसे लड़कियों के लाउंज में बुला लेगा, वह वहाँ भी नहीं गई। एक सप्ताह तक उसने एक अजीब सी पीड़ा झेली। कभी-कभी उसके मन में राजा के पास जाकर उससे बात करने की तीव्र इच्छा उठती थी। लेकिन वह उसे दृढ़ निश्चय से

काबू में कर लेती थी। अब वह अपने आसपास की प्रकृति के बारे में सोचती भी नहीं थी। शांत प्रकृति में हलचल मच गई थी, और उसका मन उस उथल-पुथल का मंच बन गया था। धर्म, समाज और नैतिकता की अवधारणाएँ उसके मन में गहराई तक समा गईं। यह पता लगाने की खोज में जुट जाना कि क्या ये मान्यताएँ रीति-रिवाज के अनुसार थीं या फिर आत्मा की रचना थीं, और फिर सत्य तक पहुँचना उसकी बुद्धि के बस की बात नहीं थी। इसके अलावा, इन परस्पर विरोधी शक्तियों ने उसकी मानसिक शांति भंग कर दी थी।

पूरी रात उसे नींद नहीं आई। धर्म और कर्म के चिंतन ने उसके मन को खाली कर दिया था। उसके अंतर्मन की पुकार ने बाकी सब कुछ मिटा दिया था। वह देर रात उठी, खिड़की के पास बैठ गई और बाहर देखने लगी। दूधिया चाँदनी से पवित्र प्रतीत हो रहे वातावरण में, चमकीली चमेली की लता नए भारतीय मूंगा पौधे से लिपटी हुई थी। वह सुबह 3 बजे तक उसे देखती रही। तब तक उसके ससुर जाग चुके थे। पीछे के दरवाजे से निकलकर वे गुंडाला नदी की ओर चल दिए। कात्यायनी खिड़की के पास ही बैठी रही। उसने उन्हें लौटते और स्नानघर में जाते हुए भी सुना।

अगले दो घंटे उसने बड़ी तकलीफ में बिताए और फिर नीचे चली गई। उस नींदहीन रात में उसने एक फैसला किया। उसने स्नान किया और नई साड़ी पहनी। एक टोकरी लेकर वह पिछवाड़े में चमेली के फूल तोड़ने गई। उसने उन्हें एक लंबी पतली डोरी में पिरोया। उसे केले के पत्ते में लपेटकर उसने अपने रुमाल में बांध लिया। दोपहर के भोजन के बाद जब वह कॉलेज के लिए निकली, तो चीनी के शब्द—'अम्मा, वापस आ जाओ'—उसे साफ सुनाई नहीं दिए। हालांकि ट्रेन अपनी सामान्य गति से चल रही थी, उसने उसकी सुस्ती पर गुस्सा किया, चामराजपुरा स्टेशन पर उतरी और कॉलेज चली गई। अभी भी सुबह के 10:15 बज रहे थे; राजा का सत्र 10:30 बजे था। यह सोचकर कि वह अब तक आ गया होगा, वह व्याख्याताओं के कमरे तक गई और संतरी से राजा राव को बुलाने के लिए कहा। बाहर आकर राजा उसे देखकर रोमांचित हो गया। 'इतने दिनों से...' उसने उसकी बात काटते हुए कहा, 'आज ही छुट्टी के लिए आवेदन कर दो।' चलिए थोड़ी देर के लिए खुद को खो देते हैं और बातें करते हैं।'

'कॉलेज के पीछे मेरा इंतजार करो। मैं दो मिनट में तुम्हारे पास आ जाऊंगा,' उसने कहा और अंदर चला गया।

कुछ ही देर में वह अपनी साइकिल धकेलते हुए वहाँ पहुँच गया। दोनों हुनसुर रोड की ओर चल पड़े। जब वे कुक्कराहाल्ली तालाब के पीछे घने पेड़ के नीचे से गुज़रे, तो उसने

पूछा, 'तुम इतने दिनों से मुझसे क्यों बचते रहे?'
‘अभी कुछ मत पूछो। आगे बढ़ते रहो। मैं तुम्हारे साथ सब कुछ साझा करूंगा। मैं वह गलती दोबारा नहीं दोहराऊंगा।’
सड़क के दोनों ओर हरे-भरे खेत थे और दोनों किनारों पर विशाल पेड़ लगे हुए थे। लगभग आधे घंटे तक पैदल चलने के बावजूद, उन्हें कई पैदल यात्री मिले। तभी उसने कहा, 'साइकिल पर बैठ जाओ। हम तेज़ी से जा सकते हैं। थोड़ा और आगे जाने पर सुनसान इलाका मिलेगा।'
मुझे इसकी आदत नहीं है। अगर मैं गिर गया तो!
‘जब तक तुम मेरी पकड़ में हो, तुम्हारे गिरने का कोई सवाल ही नहीं उठता,’ उसने उसके चेहरे की ओर देखा और मुस्कुराया। हालाँकि उसे डर था कि कोई देख लेगा, उसने उसका हाथ पकड़ा, उसे बार पर बिठाया और पैडल चलाना शुरू कर दिया। पल भर में, कात्यायनी को कई तरह की मिली-जुली भावनाएँ महसूस हुईं। हैंडल पकड़े हुए उसकी बाहें उसके दोनों कंधों को छू रही थीं। पैडल चलाते हुए वह बारी-बारी से आगे झुक रहा था, उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह उसकी छाती से टिकी हुई हो। कुछ राहगीर उन्हें उत्सुकता से देख रहे थे। ‘इस तरह हम कितनी दूर तक जाएँगे?’ उसने उससे पूछा।
'चलो तब तक सवारी करते रहें जब तक हम मर न जाएं।'
एक मील आगे चलकर वे एक गाँव के पास पहुँचे। उसे पार करते हुए वे बरगद के पेड़ों के घने झुरमुट और थोड़ी दूर आगे एक छोटा तालाब के पास पहुँचे। वे लगभग चार से पाँच मील और आगे बढ़े। थोड़ी देर में वे एक नाले के किनारे पहुँच गए और वहाँ कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। पुल के पास उतरकर उसने अपनी साइकिल को झाड़ियों के बीच से धकेलते हुए आगे बढ़ाया। दो फर्लांग चलने के बाद वे नाले के किनारे पहुँचे। अब वे छोटे-छोटे पेड़ों से घिरे हुए थे और वह जगह सचमुच सुनसान थी। साइकिल को ज़मीन पर रखकर राजा ने कहा, 'चलो बैठते हैं।'
कात्यायनी घास पर बैठी थी। उसके बगल में बैठे राजा ने पूछा, 'अब बताओ कि तुमने इतने दिनों तक मुझसे क्यों दूरी बनाए रखी?'
गहरी सांस लेते हुए उसने कहा, 'मेरा मन एक पीड़ादायक विरोधाभास से घिरा हुआ था। कल रात, मैं उससे मुक्त हो गई।'
उसने उसके हाथ पकड़े और पूछा, 'क्या कुछ हद तक यह विरोधाभास अभी भी मौजूद है?'

जब आप मुझे अपनी सुरक्षा में ले लेंगे, तब ऐसा कुछ भी नहीं रहेगा। कृपया मुझे हमेशा के लिए मजबूती से थामे रहें ताकि यह कभी वापस न आए।
उसकी निगाहें उस रूमाल की ओर गईं जिसमें उसने कुछ रखा था। 'यह क्या है?' उसने पूछा, हालांकि वह उसकी गंध से जानता था कि वह क्या है।
‘मैं इसे आपके लिए लाई हूँ,’ उसने कहा, उसे खोला और माला उसके सामने रखी। उसने उसे माला पहनाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उसके बैठने का तरीका, उसकी साड़ी और हाथों में पकड़ी फूलों की माला, सब कुछ एक पल में इस तरह कैद हो गया मानो उसकी आँखें कैमरा हों।
'तुम मुझे जरूर माला पहनाओगी, लेकिन एक पल रुको,' उसने कहा और अपनी निगाहें उस पर टिका दीं।
कात्यायनी एक खूबसूरत महिला थीं। तेईस वर्ष की आयु में, वे अत्यंत आकर्षक थीं। उनका शरीर स्वास्थ्य से भरपूर था। जब वे पैर रखतीं, तो रक्त प्रवाह से उनके पैर चेरी रंग के हो जाते थे। उनका रंग चांदनी की तरह चमकता था। उनकी उंगलियां पतली थीं; उनकी सुंदरता चित्रों में चित्रित सुंदरता जैसी थी। उन्होंने कोई आभूषण नहीं पहना था। उनके बाल लंबे और चमकदार काले थे; सिरों पर घुंघराले थे। गंभीर स्वभाव की होते हुए भी उनका चेहरा सौम्य था। उनके शरीर के सभी अंग नारीत्व की उमंग से परिपूर्ण थे।
आश्चर्यचकित होकर उसने उसे गौर से देखा।
‘यह कैसा खुला हुआ छेद है?’
‘अद्भुत आश्चर्य! मैंने तुमसे कहा था कि मैंने ‘द प्राइमोर्डियल’ को अपने एक सपने पर आधारित किया है। उस सपने में तुम इसी मुद्रा में थीं! मैंने तुम्हारी वही मोहक भुजाएँ, कद-काठी और सार देखा था। तुम्हारे हाथों में ऐसी ही एक माला थी, लेकिन वह लाल गुलाबों की थी। तुम मेरे सामने पूर्णतः नग्न प्रकट हुई थीं। अब तुम इस सफेद साड़ी में लिपटी हुई हो।’
कात्यायनी ने शर्म से अपना सिर झुका लिया। आधे मिनट बाद उसने पूछा, 'क्या मैं उस नाटक की प्रेरणा थी?'
अब मुझे पक्का पता है कि यह तुमने ही किया था।
‘तुमने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि तुम्हारे सपने में मैं ही दिखाई दिया था?’
‘तब हम इतने करीब नहीं थे।’

राजा अब भी उसे निहार रहा था। उसने राजा को माला पहनाई और अपनी आँखें बंद कर लीं। राजा ने उसे कंधों से कसकर पकड़ लिया ताकि वह उसकी जांघों को छू ले और उसे आत्मसंतुष्ट भाव से गले लगा लिया। आसपास के पेड़ सुनहरी हरियाली की चमक से दमक रहे थे। बहती हुई धारा उमंग भरे उत्साह का प्रतीक थी। राजा के गले में शाही चमेली की माला ने उनके दिलों को असीम आनंद से भर दिया। एक युवती के अंतरंग स्पर्श से राजा हल्का सा कांप उठा। मानो प्रकृति आत्मा से प्रेरित हो, उसके सार का मूल तत्व चंचल हो उठा और उसे उसकी सुस्ती से जगा दिया। उसकी सुंदरता को अधमरी निगाहों से देखते हुए राजा ने कहा, 'प्रकृति।'

क्या प्रकृति विधवा है?

'सदाबहार और सदा जीवंत प्रकृति पर कृत्रिम धर्म थोपना धर्म विरोधी है।'

उसके दिल में बस चुकी नाटक की पटकथा उसकी यादों में उभर आई। उन शब्दों के भाव से प्रभावित होकर उसने कहा, "उत्साह से परिपूर्ण होना मेरा मूल स्वभाव है। विधवापन को अपनाकर भला कौन सा धर्म इस मन को भाने वाली हरियाली, आंखों को भाने वाले मनोरम दृश्य और यहां बहने वाली धारा को नष्ट कर सकता है?"

दोनों ने बातचीत बंद कर दी और उमंग से भरी खामोशी में खो गए। दोपहर का सूरज पश्चिम की ओर ढल रहा था। फिर, माला उतारे बिना ही, उसने उसे उसके गले में भी डाल दिया। एक ही माला साझा करते हुए उसने कहा, 'क्या तुम्हारे भीतर का द्वैत अब समाप्त हो गया है?'

वह ऐसी खामोशी में थी जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता था। उसने उसकी ठुड्डी पकड़कर उसका चेहरा ऊपर उठाया और पूछा, 'बताओ, क्या अब तुम्हारा मन शांत हो गया है?'

शांति से आह भरते हुए, उसने अपने अनुभव का सार बताते हुए कहा, "मैंने इस बारे में बहुत सोच-विचार किया है। यह द्वंद्व कभी भी मेरा मूल स्वभाव नहीं रहा। वैवाहिक बंधन पूरी तरह स्थापित होने से पहले ही, जब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिसमें इस बंधन को ठेस पहुँचती है, तो क्या कोई द्वंद्व से प्रभावित नहीं होगा? अब जब मैंने इसे व्यक्त कर दिया है, तो आप मुझे निर्लज्ज समझ सकते हैं!"

नहीं। आगे बढ़ो।

महिलाओं के अधिकारों के रास्ते में अनगिनत बाधाएं हैं। ये सभी पुरुषों द्वारा कृत्रिम रूप से खड़ी की गई हैं। कई बार ये बाधाएं नारी शक्ति के आगे टिक नहीं पातीं। फिर ये पुरुषों के मन में घर कर जाती हैं और कई तरह के भय और डर पैदा कर देती हैं।

नारीत्व के कुछ पहलुओं को कलंकित किया जाता है, और हमें पुरुष संगति से वंचित कर दिया जाता है। वैसे भी, क्या पुरुष हमसे कमजोर नहीं हैं?
क्या यह बात मुझ पर भी लागू होती है?
नहीं। इसीलिए तो हम सब एक साथ आए हैं। क्या तुम कभी कृत्रिम बाधाओं का सहारा लेकर मुझसे झगड़ा करोगे?
'विवाद करना मेरे स्वभाव में नहीं है।'
यह समय और स्थान से परे की अवस्था थी, और वे दोनों बिना किसी चिंता के अपनी परम शुद्धतम अवस्था को प्राप्त कर चुके थे। उस हरे-भरे राज्य में, उनके सामंजस्य में बाधा डालने वाली किसी भी प्रकार की नियमबद्धता का कोई नामोनिशान नहीं था।

4

उस रात कात्यायनी को अच्छी नींद आई। उसका मन, जो हाल ही में एक युद्धक्षेत्र बन गया था, अब एक सुंदर अखाड़ा बन गया था। उस दिन से वह राजा से प्रतिदिन मिलने लगी। एक दिन, उसने विशेष कक्षाओं की घोषणा की और सुबह 7 बजे की ट्रेन पकड़ने के लिए जल्दी घर से निकल गई। वह एक मालगाड़ी थी जिसमें यात्रियों के लिए केवल दो डिब्बे थे। महिलाओं के लिए कोई अलग डिब्बा नहीं था। कुछ किसान उसी डिब्बे में सवार हुए जिसमें वह थी। उस सुबह चारों ओर फैली हरियाली और भी अधिक मनमोहक लग रही थी। कात्यायनी को ऐसा लग रहा था मानो सारा संसार आनंद से झूम रहा हो। डिब्बे में यात्रियों की भीड़ ने उसे परेशान नहीं किया। यहां तक कि यात्रियों की बीड़ियों से निकलने वाला धुआं भी उसे विचलित नहीं कर पाया। खिड़की के बाहर खेतों पर नजर गड़ाए एक किसान ने कहा, 'इस मौसम में बाजरे की फसल बहुत अच्छी हुई है।'
“पौधे तो खूब बढ़ रहे हैं, लेकिन और बारिश की जरूरत है। अगर धरती और आसमान का साथ अक्सर नहीं मिला तो फसलें खराब हो जाएंगी। लगता है आज बारिश होगी; आसमान में बादल छाए हुए हैं,” उनके बगल में बैठे एक अनुभवी बुजुर्ग किसान ने जवाब दिया।
कात्यायनी के कानों ने उस बुजुर्ग व्यक्ति की बातें सुन लीं। उसने खिड़की से बाहर देखा। फसलें पूरी तरह से पक चुकी थीं और सिंचाई के लिए तरस रही थीं। धरती सूखी थी और बारिश की बौछारों के लिए आसमान की ओर देख रही थी। ऐसा लग रहा था

मानो पूरा वातावरण काफी समय से पानी के दर्शन के लिए तरस रहा हो। किसान को कहते सुना गया, 'उम्र बहुत ज्यादा है। बारिश होने वाली है।'
कात्यायनी चामराजपुरा स्टेशन पर नहीं उतरीं। वे सीधे मुख्य स्टेशन चली गईं। सुबह 8:30 बजे अरसिकेरे के लिए एक ट्रेन थी। राजा दो टिकट लेकर उनका इंतज़ार कर रहे थे। लंबी दूरी के यात्रियों की तरह, उनके पास एक बड़ा बैग और एक चमड़े का थैला था। उन्होंने सूट और टाई पहनी हुई थी। दोनों शटल ट्रेन में चढ़े और कन्नमबाड़ी स्टेशन पर उतरे। उनकी किताबें राजा के चमड़े के थैले में रख दी गईं। उन्होंने बैग उठाने के लिए एक कुली किराए पर लिया और वृंदावन के बड़े होटल की ओर चल दिए। राजा ने अग्रिम भुगतान किया और मद्रासी बनकर चेक-इन किया। फिर वे कुली के पीछे-पीछे एक सुसज्जित कमरे में गए।
नाश्ता करते-करते सुबह के 9:45 बज चुके थे। बाहर पहले से ही बहुत गर्मी थी। आसमान के एक हिस्से में बादल छा गए थे। उमस भरे वातावरण के कारण राजा और कात्यायनी को भीषण गर्मी लग रही थी। छत पर चल रहा पंखा भी बेअसर था। बाहर की विशाल धरती भी गर्म हो चुकी थी और बेसब्री से बारिश का इंतजार कर रही थी। जिस धरती पर वनस्पति उगी थी, जिसने उसे शोभा दी थी, अब जड़ों से पोषण न मिलने के कारण मुरझाने की कगार पर थी। धरती का स्वभाव बारिश के लिए सिकुड़ना नहीं है। तब तक पूरा आसमान बादलों से ढक चुका था। धीरे-धीरे बादलों का घनत्व इतना बढ़ गया कि देखने वालों के मन में भय उत्पन्न हो गया कि यदि इतने सारे बादल एक साथ पिघलकर धरती पर उतर आएं, तो उससे उत्पन्न बाढ़ धरती की पूरी हरी-भरी चादर को बहा ले जाएगी और उसका कुरूप रूप सामने आ जाएगा। बादल नीचे नहीं उतरे और झिझक या संकोच के कारण एक ही जगह पर मंडराते रहे। अब सितंबर का महीना था; इस मौसम में धरती को पर्याप्त बारिश मिल चुकी थी। उसने भरपूर हरियाली का आनंद लिया था। बरसात का मौसम बीतते ही धरती ने फिर से बारिश के लिए आसमान की ओर देखा। लेकिन अब जो बादल जमा हुए थे, वे बिल्कुल नए थे और पहली बार बारिश करने के लिए तैयार थे। हालांकि उनमें अपना भार सहने की ताकत नहीं थी, लेकिन उन्हें धरती पर पहले कभी बारिश करने का अनुभव भी नहीं था। उलझन और असमंजस में, बादल अपनी इस नई अवस्था को समझ न पाने की चिंता में निष्क्रिय हो गए थे।
पूरी दुनिया को सुखा देने वाली भीषण गर्मी ने राजा और कात्यायनी को सांस लेने में मुश्किल कर दी। अब बारिश की सख्त ज़रूरत थी। वरना यह गर्मी कम नहीं होती।

कात्यायनी चुपचाप बैठी रही; राजा खिड़की से बाहर देखता रहा। बादल अभी भी असमंजस में थे; वे घने होते जा रहे थे और बिजली चमक रही थी। बादलों की अपनी चमक ने उन्हें प्रकृति की सुंदरता के साथ-साथ पानी की अपनी प्यास का भी एहसास कराया। मानो बादलों का पूरा समूह एक साथ धरती पर गिर पड़ा हो। पानी की प्रचंड शक्ति से सारी दुविधा दूर हो गई और दृढ़ता ने उन्हें प्रेरित किया, और बादल धरती को गले लगा लिया। लगातार बारिश होती रही, और इस बार इसकी विशेषता यह थी कि बिजली का कहर नहीं था, गरज और बिजली की गड़गड़ाहट नहीं थी, और न ही तूफ़ान का कोई प्रकोप था जो बादलों की दृढ़ता को उड़ा ले जाने की धमकी देता।

जब तक बारिश रुकी, दोपहर हो चुकी थी। राजा और कात्यायनी ने जब दोपहर का भोजन किया, तब तक उमस भरी गर्मी छंट चुकी थी और उसकी जगह एक सुकून भरी ठंडक ने ले ली थी। दूर से आती हवा अपने साथ नम मिट्टी की खुशबू लेकर आई थी। वातावरण इतना शांत था कि भोजन करते समय दोनों में से किसी ने भी बात करने का मन नहीं किया। धरती की हरी-भरी चादर को नई जिंदगी मिल गई थी। जब तक उन्होंने अपना भोजन समाप्त किया, बादल फिर से बनने लगे थे। लेकिन अब जो बादल एक साथ आ रहे थे, वे नए नहीं थे। बर्फ पिघलने के बाद बचे हुए बादल इकट्ठा होकर घने हो रहे थे। बारिश से पहले की असहनीय गर्मी गायब थी। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई। मूसलाधार बारिश की चाहत पूरी हो चुकी थी और धरती अब बूंदा-बांदी के कोमल स्पर्श का स्वागत कर रही थी। चारों ओर छाए गहरे भूरे रंग के बावजूद, आकाश में हल्की सी चमक थी।

शाम चार बजे जब राजा और कात्यायनी रेलवे स्टेशन के लिए निकले, तब बारिश रुक चुकी थी। कुली अपना बैग और बैग लिए आगे-आगे चल रहा था। धरती पर अभी-अभी बरसी ताज़गी और नमी की वजह से चमक आ गई थी। सूरज निकल आया था; बादल छंट गए थे। मैसूर स्टेशन पहुँचते-पहुँचते शाम के पाँच बज चुके थे। कात्यायनी नंजनगुड जाने वाली ट्रेन में चढ़ गई। राजा ने उससे विदा लेते हुए कहा, 'कल कॉलेज में मिलते हैं।' उसने सिर हिलाकर सहमति दी। कोई बात नहीं हुई।

अध्याय 11

1

राव अपने कमरे में थे और हमेशा की तरह पढ़ाई कर रहे थे। कमरा अब और भी किताबों से भरा हुआ था। उन्हें जिस किताब की ज़रूरत होती, वे उसे उधार ले लेते और बात खत्म। उन्हें व्यवस्थित ढंग से रखना या समय पर लौटाना उनकी आदत नहीं थी। अगर उन्हें किसी खास किताब को तुरंत देखना होता, तो उनके पास ढेर में से उसे ढूंढने के अलावा कोई चारा नहीं होता था।
करुणा को पत्र लिखे हुए लगभग दो सप्ताह बीत चुके थे; उसकी ओर से अभी तक कोई जवाब नहीं आया था। उसे लगा कि शायद वह कभी आएगी ही नहीं। जितना ज़्यादा वह इसके बारे में सोचता, उतना ही उसका मन करुणा के ख्यालों में खो जाता। करुणा के लिए उसकी तड़प दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी, और वह चाहता था कि करुणा बस इसी क्षण उसके सामने आ जाए।
एक दिन, वह खालीपन की अवस्था में आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। काम करने की उसकी इच्छा खत्म हो चुकी थी। बाएं हाथ में चश्मा पकड़े, उसकी निगाहें घूमते हुए पंखे पर टिकी थीं और वह एक बेजान शरीर की तरह था। उसके पीछे दरवाजे के खुलने की आवाज भी उसके होश में नहीं आई। जब कोई उसके पास आया, तब उसे वह आवाज सुनाई दी। उसने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं। करुणा यहाँ थी! वही करुणा जो कभी उसके साथ काम करती थी, अब उसके सामने अपनी हमेशा वाली सफेद साड़ी और सफेद ब्लाउज में खड़ी थी। 'तुम आ गई!' राव ने खुशी से कहा और उठ खड़ा हुआ।
'हाँ, मैं आ गई हूँ,' उसने कहा, एक कुर्सी खींची और उसके पास बैठ गई।
पांच मिनट तक उसे समझ नहीं आया कि क्या कहे। उसका मन खुशी से झूम रहा था। उसने बस अपना हाथ बढ़ाया और उसका हाथ थाम लिया। बिना कुछ बोले, उसने भी दोनों हाथों से उसका हाथ मजबूती से थाम लिया। आखिरकार उसने पूछा, 'तुम्हारा सामान कहाँ है?'
मैंने इसे रेलवे स्टेशन के क्लॉक रूम में जमा कर दिया है।
चलिए, आपके लिए महिला छात्रावास में ठहरने की व्यवस्था कर देते हैं।
नहीं, मैं हॉस्टल में नहीं रुकूंगा।

“बेशक,” उसने कहा और चुप हो गया। कुछ देर तक उसे समझ नहीं आया कि क्या सोचे। उसने बस इतना कहा, “चलो, पहले दोपहर का भोजन कर लेते हैं।”
वे दोनों हिंदू होटल के रेस्तरां में गए। दोपहर के साढ़े बारह बज रहे थे। हालाँकि उन्होंने दोपहर का भोजन घर पर कर लिया था, फिर भी उन्होंने करुणा के साथ भोजन किया। भोजन करने के बाद, वे पुस्तकालय लौट आए। औपचारिक पूछताछ के बाद, उन्होंने पूछा, 'तुम क्या सोच रही हो?'
'इसमें कुछ भी पूरी तरह से मेरा नहीं है। मैं केवल आपके साथ काम करके आत्मसंतुष्टि प्राप्त करना चाहता हूं। बाकी सब कुछ आप पर निर्भर है।'
'पहले तो हम शादी कर लें।'
अपनी आवाज को काबू में रखते हुए और अपने होंठों को दबाते हुए करुणा ने कहा, 'अगर हम ऐसा नहीं करते तो क्या होगा?'
‘मैंने भी यही सोचा था। हम उस मकसद से शादी नहीं कर रहे हैं जिससे दुनिया परिचित है। हम कब तक ऐसे ही चलते रहेंगे? हमें अपना पूरा जीवन साथ बिताना है। तुम कितने दिन हॉस्टल में रहोगी? अगर तुम अलग घर में रहने लगोगी, तो मैं वहाँ बिना किसी सामाजिक व्यवस्था के कैसे आऊँगा? तुम्हारे लिए मेरे साथ यहाँ सारा दिन काम करना कैसे संभव होगा? लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे? विश्वविद्यालय भी हम पर अनैतिकता का आरोप लगाने से नहीं हिचकिचाएगा। हम शादी नामक सामाजिक नियम का पालन करके उन सभी को चुप करा सकते हैं।’
'क्या लोग आपके इस कृत्य की निंदा नहीं करेंगे, यह देखते हुए कि आप पहले से ही विवाहित हैं?'
‘सिर्फ चार दिनों के लिए। भले ही लोग उन चार दिनों में आपत्ति जताएं, वे हमें अनैतिकता की खाई में धकेलने की हिम्मत नहीं करेंगे। हम नए सिरे से प्रतिबद्धता के साथ अपना काम शुरू कर सकते हैं।’
करुणा के विचार भी लगभग इसी तरह के थे; वह सहमत थी। वह उससे पूछना चाहती थी कि क्या उसने इस बारे में अपनी पत्नी से बात की है, लेकिन यह सोचकर कि यह पूरी तरह से उसी पर निर्भर है, उसने अंतरिम स्थिति का मुद्दा न उठाने का फैसला किया।
वे रेलवे स्टेशन गए, उनका सामान लिया, फिर हिंदू होटल गए, एक कमरा किराए पर लिया और उनका सामान वहीं रख दिया। राव ने किराया अग्रिम भुगतान कर दिया और प्रबंधक को सूचित किया कि एक अकेला शोधकर्ता एक महीने के लिए यहाँ रहने आया है। जब वे पुस्तकालय वापस लौटे, तब शाम के 5 बज चुके थे।

किताबों के ढेर देखकर करुणा ने पूछा, “ये सब अव्यवस्था क्यों है? खैर, मैं इन्हें अभी अपने तरीके से लगा देती हूँ। मैं यहाँ आपके लिए ज़रूरी किताब लाने और किसी भी किताब के ज़रूरी हिस्से को ज़ूम करके दिखाने आई हूँ।” वह तुरंत काम में जुट गई।
‘यात्रा से थक गई हो, आराम करो,’ राव ने कहा, जिस पर उसने अक्षरशः जवाब दिया, ‘इन दिनों काम न करने के कारण मेरा स्वास्थ्य खराब रहा है। अब मुझे स्वास्थ्य लाभ करना है।’ वह अपने काम में मग्न हो गई। राव ने खुद को अकेला पाया।

2

हालांकि राव ने मन ही मन ठान लिया था कि वह अपने परिवार को अपने फैसले से अनजान नहीं रखेंगे, फिर भी अगले दो सप्ताह तक वे हर दिन दुविधा में रहे। वे इस बात को लेकर बहुत परेशान थे कि इस बारे में कैसे बात करें, कैसे बताएं और परिवार की प्रतिक्रियाओं का सामना कैसे करें। वे इस बात से अनजान नहीं थे कि इससे नागलक्ष्मी को कितना गहरा दुख होगा। वे यह भी जानते थे कि यह एक निर्दोष व्यक्ति को दी जाने वाली घोर सजा होगी। लेकिन उनके फैसले को नैतिक समर्थन देने वाली बात यह थी कि उनकी पुस्तक को ठंडे बस्ते में जाने से बचाया जा सके, जो कि अगर वे अपने चुने हुए मार्ग से भटकते तो निश्चित रूप से हो जाता। वे सचमुच उस असंगत विवाह से छुटकारा नहीं पाना चाहते थे। करुणा की उनकी आवश्यकता का यह अर्थ नहीं था कि नागलक्ष्मी अनावश्यक थीं। उन्होंने नागलक्ष्मी को कभी भी हटाने के बारे में नहीं सोचा था।
एक दिन, जब राव घर पर अपने अध्ययन कक्ष में बैठे थे, तो उनका ध्यान पढ़ाई पर नहीं लग रहा था। वे रात के 11 बजे ही अपने शयनकक्ष में चले गए और दरवाजा बंद कर लिया। नागलक्ष्मी बड़े पलंग के बीच में सो रही थीं, उनके बगल में पृथ्वी था। दूसरी ओर राव का अपना स्थान था। वे वहाँ नागलक्ष्मी के सामने सब कुछ कहने के इरादे से पहुँचे थे। नागलक्ष्मी सो चुकी थीं। उनके पास बैठकर उन्होंने नागलक्ष्मी के कंधे को हल्का सा धक्का दिया और कहा, 'नागू...' ठीक उसी समय सोई नागलक्ष्मी की नींद खुल गई। शयनकक्ष का लैंप मंद रोशनी दे रहा था। पूरी तरह से जाग न पाने के कारण उन्होंने पूछा, 'कितना समय हुआ है?'
‘11.’

‘क्या सच में?’ आँखें बंद करते हुए उसने अपने पति को बाहों में भर लिया और बोली, ‘आज तो मेरा भाग्य ही अच्छा है। तुम तो जल्दी सो गए।’
राव को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहें। धीरे से उन्होंने बस इतना कहा, 'नागु।' अपने पति के दुबले-पतले शरीर को दोनों बाहों में भरते हुए उन्होंने उनके कानों में फुसफुसाया, 'पढ़ते-पढ़ते ऊब गए? इतने सालों में आपने कभी इस समय सोने के लिए मेरा नाम नहीं लिया। मैं समझ सकती हूँ। क्या मैं आपकी पत्नी नहीं हूँ? सो जाइए।'
राव चुप हो गए और उन्होंने अपना चश्मा उतार दिया। उन्होंने कुछ देर तक उनकी आँखों में देखा, उनकी आँखों के किनारे पर चुंबन किया और कहा, 'मैं आपसे कुछ माँगूँगी। क्या आप मानेंगे?'
'यह क्या है?'
‘तुम प्यासे हो। ऐसा लगता है जैसे तुम्हें कोई चिरस्थायी बुखार हो। लगातार पढ़ने से तुम्हारी आँखों की चमक फीकी पड़ गई है। अगर इसी तरह आँखों पर ज़ोर डालते रहे तो कहीं तुम्हारी दृष्टि ही न चली जाए? अब से शनिवार को थोड़ा जल्दी उठना। पुस्तकालय जाने से पहले मैं तुम्हें तेल से स्नान कराऊँगी। और रोज़ाना रात के खाने के बाद अपनी कुर्सी पर आराम से बैठना, मैं तुम्हारे पैरों की अरंडी के तेल से मालिश करूँगी।’
राव चुप हो गया। उसकी आँखें बंद थीं, और वह अपना चेहरा उसके कंधों पर टिकाकर लेट गया। “नींद आ गई?” उसने पूछा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। “नींद,” उसने कहा और धीरे-धीरे उसकी पीठ थपथपाने लगी। राव का दिमाग जैसे आग से जल रहा था। उसका मस्तिष्क अस्थिर था और उसकी इच्छाशक्ति कमजोर पड़ रही थी। थोड़ी देर बाद, उसने गहरी साँस ली। “क्यों, नींद नहीं आ रही?” उसने अपने हाथों से उसका चेहरा थाम लिया और देखा। उसकी आँखें नम थीं।
‘क्या बात है? क्या तुम मुझसे साझा नहीं कर सकते?’ उसने मज़ाक में पूछा। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। ‘अगर तुम नहीं बताना चाहते तो कोई बात नहीं। तुमने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया था, और तुम्हारा ख्याल रखने वाला कोई नहीं था। तुम तो मेरे पैतृक स्थान से जल्दी ही निकलकर पढ़ाई करने के लिए मैसूर चले गए थे। जिन बच्चों की माँ मर जाती है, उन्हें तो जीना ही नहीं चाहिए। लेकिन मैं अब यहाँ हर चीज़ के लिए मौजूद हूँ। क्या बात है? तुम इतने उदास क्यों हो?’ उसने अपनी साड़ी के पल्लू से उसकी आँखें पोंछीं।

‘कोई बात नहीं। मुझे अब नींद आ रही है। सो जाओ।’ राव ने अपना सिर तकिए पर रख दिया। नागलक्ष्मी ने शॉल उसके पैरों पर खींचकर खुद चुप हो गई। पूरी रात राव सो नहीं पाया। नागलक्ष्मी लगभग 2 बजे सो गई। उसने उसे अपने बाएं हाथ से ऐसे थाम रखा था जैसे कोई माँ अपने रात से डरने वाले बच्चे को थामे। हालाँकि उसे नींद नहीं आई, लेकिन उसे जगाना न चाहने के कारण वह बिना हिले-डुले लेटा रहा। पूरी रात उसका मन उथल-पुथल में रहा। इस सब में उसकी क्या गलती थी, यह सवाल अनुत्तरित ही रहा। लेकिन उसके मन में बस यही एक बात थी कि वह उसे छोड़ नहीं रहा था; वह तो बस अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए किसी और का साथ दे रहा था।

अगली सुबह, वह 5 बजे जल्दी उठ गया। राजा को तब तक नहाने और टहलने जाने की आदत हो गई थी। आज, वह बाथरूम की ओर जा रहा था जब राव ने उसे रोककर कहा, 'आज सुबह की सैर के लिए कब निकलना, मुझे बता देना। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।' वह मुस्कुराया और पूछा, 'क्या! तुम भी सेहत के प्रति जागरूक हो रहे हो?'

दोनों भाई हुनसूर रोड पर टहलने लगे। राव ने बात शुरू की। 'मैं तुमसे कुछ साझा करना चाहता था।'

राजा को आभास हो गया था कि उसके भाई के मन में कुछ गड़बड़ है। उसे कुछ-कुछ अंदाजा भी था कि क्या बात है। उसने पूछा, 'क्या बात है?' विषय पर बात शुरू करने के तरीके को लेकर असमंजस में पड़े राव ने बिना कुछ कहे चुप्पी साध ली। उसे इस दुविधा से निकालने के लिए राजा ने उसकी मदद की। 'मुझे पता चला है कि करुणारत्ने यहाँ है।'

'आपको कैसे मालूम?'

‘वे पुस्तकालय में इतनी गपशप कर रहे थे कि उसने हिंदू होटल में अपना ठिकाना बना लिया है।’

हालांकि राव को इस बात पर हैरानी हुई कि राजा को इसके बारे में पता था, फिर भी उन्होंने अपने मन की बात कहना शुरू कर दिया। अपने शोध में आ रही बाधाओं और घटती हुई दृष्टि का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, 'उसके बिना किताब लिखना संभव नहीं है। अगर मैं इसे रोक दूं, तो मेरा गुजारा नहीं चलेगा। उसके लिए सिर्फ मेरे लिए काम करना सामाजिक रूप से उचित नहीं होगा। इसलिए हमने नागरिक विवाह करने का फैसला किया है।'

राजा ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने कई बार यह अनुमान लगाया था कि ऐसा या कुछ ऐसा ही हो सकता है। महान विद्वानों, साहित्यकारों, कलाकारों, वैज्ञानिकों आदि के जीवन में ऐसा होना आम बात थी। लेकिन उनके घर के पिछवाड़े में ऐसा होना उन्हें थोड़ा शर्मिंदा कर गया। उन्होंने पूछा, 'क्या तुमने कभी सोचा है कि इससे नागु पर क्या असर पड़ेगा?'
मैंने ये सब बातें आपसे इसलिए साझा कीं ताकि आप भी ये बातें उससे साझा करें और उसे शांत करें। करुणा से शादी करके मैं नागु को नहीं छोड़ रहा हूँ।
फिर भी, क्या वह मान जाती? कौन सी स्त्री दूसरी पत्नी को रखने के प्रस्ताव पर सहमत होगी? हमारे चाचा ने हमें पाला-पोसा; हम अनाथ थे। उन्होंने नागू का विवाह आपसे करवाया था। उनका और उनकी चाची का भी देहांत हो चुका है। नागू का आपकी रचना लिखने में क्या दोष है? आपके विवाह के मामले में, क्या आपकी सहमति नागू की सहमति से अधिक महत्वपूर्ण नहीं थी? आपने अपनी इच्छा से सहमति दी थी।
मन ही मन सोचते हुए राव ने कहा, 'यह ऐसा मुद्दा नहीं है जिसका समाधान बातचीत और याचिका से हो सके। आपने ऑक्सफोर्ड का साहित्यिक जीवन देखा है। मैं जानता हूँ कि आप नागू को बहुत पसंद करते हैं। मैं भी उसे बहुत प्यार करता हूँ। लेकिन अगर यह किताब पूरी नहीं हुई, तो मैं निश्चित रूप से मर जाऊँगा। क्या आप करुणा की जगह मेरी मदद कर सकते हैं? मैं यह घर नहीं छोड़ूँगा। मैं नागू को भी नहीं छोड़ूँगा। मुझे पता है कि आप उससे अच्छे से बात कर सकते हैं और उसे मना सकते हैं। एक बार मेरे नज़रिए से भी सोचिए।'
राजा ने अपने भाई के नज़रिए से इसे समझने की कोशिश की। बिना ज़्यादा सोचे-समझे ही उसे सब कुछ साफ़ समझ आ गया। उसके मन में अपनी भाभी के लिए बहुत ही दोस्ताना भाव थे। वह अपने भाई के बौद्धिक कार्यों का बहुत सम्मान करता था। जब भी उसका परिचय 'डॉ. सदाशिव राव के भाई' के रूप में कराया जाता, तो उसका मन गर्व से भर उठता। लेकिन वह इस मामले को कैसे सुलझाता? उसके भाई ने अपने चुने हुए मार्ग पर इतनी लंबी दूरी तय कर ली थी कि अब पीछे हटना मुमकिन नहीं था। उसका मन उसे कठोरता से देखने को तैयार नहीं था। इससे कुछ हासिल भी नहीं होता। उसने यह मान लिया कि अब उसके पास अपनी भाभी के प्रति और अधिक मित्रता का भाव रखने और उसे मनाने के अलावा कोई चारा नहीं था।

नागलक्ष्मी को जब इस बात का पता चला तो उसने तीन दिन तक कुछ नहीं खाया। रातों को उसकी पलकें एक बार भी नहीं झपकीं। वह जानती थी कि वह अपने पति के साहित्यिक कार्यों में किसी भी तरह से योगदान नहीं दे सकती। फिर भी, वह केवल उनके शोध के लिए इस तरह के बड़े घटनाक्रम को स्वीकार नहीं कर सकती थी। उसने अपने पति के इस उदासीन रवैये को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया था। लेकिन अपने पति द्वारा दूसरी शादी करना उसकी सहनशीलता की सीमा से बाहर था। अपनी साली की मानसिक स्थिति को देखते हुए, राजा ने कॉलेज से छुट्टी ले ली और घर में ही बंद हो गया। राव कभी आता था कभी जाता था। रात के खाने के बाद वह अपने अध्ययन कक्ष में जाता था। अगर नींद आती तो वह कुर्सी को पूरी तरह खोलकर उस पर लेटकर सो जाता था।

जिस रात राजा से उसे सब कुछ पता चला, उस रात वह अपने पति के अध्ययन कक्ष में गई और पूछा, “मेरी ऐसी क्या गलती है जिसके कारण आपने ऐसा किया?” राव चुप रहे। “जब तक आप नहीं बोलेंगे, मैं इस कमरे से नहीं जाऊंगी,” उसने कहा और अपनी जगह पर बैठ गई। उसने वह सब कुछ कह दिया जो एक पवित्र स्त्री की मर्यादा के भीतर कहा जा सकता था। फिर भी राव चुप रहे। अंत में उन्होंने बस इतना ही कहा कि राजा उसे सब कुछ बता देगा।

अपने उपवास के तीसरे दिन राजा ने कहा, 'अगर तुम इसी तरह उपवास करती रहोगी तो मुझे भोजन कैसे मिलेगा?'

‘उपवास करना मेरे कर्मों में निहित है। आप अपने पोषण की व्यवस्था स्वयं कर लें।’

‘अगर तुम नहीं खाओगी तो मैं भी नहीं खाऊँगी। उठो।’ वह उसकी ज़बरदस्ती के आगे नहीं झुकी। अपने देवर को अपनी पीड़ा में उसके पास खड़े और हर तरह से उसे दिलासा देते देख उसके दिल में उसके लिए स्नेह उमड़ आया। उसने उससे पूछा, ‘राजा, अम्मा गुज़र गईं। पापा भी। अब वो मुझ पर भी यही ज़ुल्म करने पर तुले हैं। और आप! मेरी इस हालत से आपको क्यों फ़र्क पड़ना चाहिए?’

‘आप उनके काम को पूरी तरह से नहीं समझ पा रहे हैं। उन्हें उस ग्रंथ से बेहद लगाव है। और उनके बिना, वे इसे सफलतापूर्वक पूरा नहीं कर सकते। अगर उन्हें इसे बीच में ही छोड़ना पड़ा, तो वे मानसिक रूप से बीमार हो जाएंगे। क्या हम ऐसा होने दे सकते हैं?’

‘उसे इतना तीव्र आवेश क्यों दिखाना चाहिए और मुझे क्यों छोड़ देना चाहिए?’

‘उसका तुम्हें छोड़ने का कोई इरादा नहीं है। यह कोई गुप्त रिश्ता नहीं है। वह यहाँ आकर हमारे साथ रहेगी। रसोई और बाकी खर्चों का ध्यान मैं रखता हूँ। रसोई और घर के बाकी काम तुम संभालती हो। एक और सदस्य के आने से क्या फर्क पड़ता है?’
'अगर उसे किसी बुद्धिमान व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता है, तो क्या वह आपकी मदद नहीं ले सकता, एक सक्षम भाई/बहन होने के नाते? मुझे लगता है कि आप उसकी मदद करने में सक्षम हैं।'
नहीं। बात इतनी बढ़ गई है कि यह मेरी समझ से परे है। नागु, तुम जितना अड़ियल रहोगी, स्थिति उतनी ही बिगड़ती जाएगी। शादी मान लो। हालात ऐसे नहीं हैं कि वह तुम्हें परेशान करेगी। उसे पढ़ने-लिखने के अलावा किसी और चीज़ में दिलचस्पी नहीं है। तुम पहले से ही एक बेटे की माँ हो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। इस घर में कोई भी तुम्हें नीचा नहीं दिखा सकता। वह भी कोई बुरी औरत नहीं है। भाई भी तुम्हें नज़रअंदाज़ नहीं करेगा।
सांवली रंगत वाली करुणा की तुलना में नागलक्ष्मी को लगा कि वह सचमुच अधिक सुंदर है। उसके चेहरे की बनावट और नैन-नक्श अब भी उतने ही आकर्षक थे। परिपक्व गरिमा ने उसकी सुंदरता को और भी बढ़ा दिया था। उसका दिमाग खराब हो गया है, और इसीलिए वह मुझ जैसी पत्नी को छोड़कर एक सांवली स्त्री के पास जा रहा है। चार दिनों में वह सुधर जाएगा। लेकिन इस आत्म-संतोष से उसका दुख कम नहीं हुआ। उसने अब भी खाना नहीं खाया था। पृथ्वी स्कूल चला गया था। मुख्य द्वार खुलने की आवाज से किसी के आने का आभास हुआ। राजा पास आया और देखा। 'तीन दिनों से तुम कॉलेज में नजर नहीं आई।' यह कात्यायनी थी, और उसने कोमल स्वर में कहा। नागलक्ष्मी ने गौर किया था कि हाल ही में वह राजा से बात करते समय अनौपचारिक हो गई थी। लेकिन उसने इस पर कभी गंभीरता से विचार नहीं किया था। कात्यायनी अंदर आई, और नागलक्ष्मी के चेहरे पर उदासी देखकर उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मानो वह सब जानती हो। फिर भी, उसने यह बात ज़ाहिर न करते हुए कहा, 'तुम्हें देखे हुए पाँच दिन से ज़्यादा हो गए हैं। तुम कुछ परेशान लग रहे हो। क्यों, क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?'
नागलक्ष्मी चुप ही रही। 'लो, इसे लो,' कात्यायनी ने उसे फूलों की वह माला दी जो वह रूमाल में लपेटकर लाई थी।
अपने दाहिने हाथ से उसे दूर धकेलते हुए, नागलक्ष्मी रोने लगी, 'अब मुझे फूलों की क्या जरूरत है?'

‘नागु, ऐसा मत कहो। तुम फूल कैसे मना कर सकती हो?’ राजा ने कहा। नागलक्ष्मी ने बस पैकेट को अपनी बाहों में खींच लिया। पाँच मिनट तक कोई नहीं बोला। कात्यायनी ने राजा का चेहरा देखा। वह उदास आँखों से उसे देख रहा था। फिर उसने राजा से पूछा, ‘मैंने आज कॉलेज में एक खबर सुनी। क्या वह सच है?’
'यह क्या है?'
'झूठ है या सच, मुझे नहीं पता। लेकिन नागलक्ष्मी अम्मा को रोते हुए देखकर मुझे लगता है कि यह सच है।'
'मुझे क्या बताओ।'
'आपके भाई और उनके शोध छात्र करुणारत्ने ने नागरिक विवाह कर लिया है।'
‘ऐसा किसने कहा?’
'महिलाओं के शौचालय में सभी लोग मौजूद हैं। कहा जा रहा है कि शादी कल दोपहर उप-पंजीयक कार्यालय में हुई थी।'
राजा को यह पता नहीं था कि उनकी जानकारी के बिना ऐसा हो जाएगा। जब राजा सोच रहा था कि उसका भाई अपनी पत्नी की सहमति लिए बिना इतनी जल्दी क्यों कर रहा है, तभी कात्यायनी ने कहा, 'देखो!' और वह जल्दी से नागलक्ष्मी के पास पहुंची। अपने पति की शादी की खबर सुनकर नागलक्ष्मी बेहोश हो गई। राजा जल्दी से रसोई में गया और पानी ले आया। राजा के हाथों से बर्तन लेकर कात्यायनी ने थोड़ा पानी नागलक्ष्मी के चेहरे पर छिड़का और मुट्ठी भर पानी उसके सिर पर भी डाल दिया। राजा एक पंखा ले आया और हवा देने लगा। पांच मिनट बाद भी नागलक्ष्मी को होश नहीं आया। न तो वह पूरी तरह बेहोश हुई थी और न ही पूरी तरह होश में थी। वह अर्ध-चेतना की अवस्था में पड़ी थी। कात्यायनी को पंखा चलाते रहने के लिए कहकर राजा ने कहा, 'मैं डॉक्टर को बुलाता हूं,' और साइकिल पर बैठकर चला गया।
उसके जाने के पाँच मिनट बाद नागलक्ष्मी को होश आया। जब कात्यायनी ने उसे उठने की कोशिश करते देखा, तो उसने उसे रोकते हुए कहा, 'नहीं, उठो मत। तुम्हें फिर चक्कर आ सकते हैं।' उसने बैठक में कुर्सी पर रखा एक तकिया लाकर नागलक्ष्मी के सिर के नीचे रख दिया। नागलक्ष्मी ने कुछ नहीं कहा, बस कात्यायनी का हाथ थामे उसके बगल में बैठ गई।
दस मिनट में डॉक्टर आ गए। अपनी भाभी को होश में देखकर राजा ने राहत की सांस ली। डॉक्टर ने नागलक्ष्मी से पूछा, 'क्या हुआ?' तो उसने कहा, 'मुझे नहीं पता।' डॉक्टर

ने इंजेक्शन लगाने की अनुमति मांगी। राजा इंजेक्शन नहीं लगवाना चाहता था, इसलिए डॉक्टर ने उसे गोली दी और चले गए।
'नागु, तुम्हारा सिर इसलिए चकरा रहा है क्योंकि तुमने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है। अब कुछ खा लो,' राजा उसके पास आया।
'मैं नहीं खाऊंगी। तुम खा लो,' नागलक्ष्मी ने कहा और लेट गई।
कात्यायनी को स्थिति का पता चल गया। उसने राजा को इशारे से बुलाया। राजा बाहर चला गया। कात्यायनी ने अपनी सारी सांत्वनाओं का इस्तेमाल करते हुए नागलक्ष्मी को दोपहर का भोजन करने के लिए मना लिया। नागलक्ष्मी ने कहा, 'राजा को बुलाओ।' राजा अंदर आया। कात्यायनी दोनों को रसोई में ले गई और दोनों को भोजन परोसा। लेकिन दोनों में से किसी ने भी एक निवाले से ज़्यादा नहीं खाया।

4

शादी के बाद करुणा की दिनचर्या में कोई बदलाव नहीं आया। उसने राव से कभी यह नहीं पूछा कि आगे उनका जीवन कैसा रहेगा। वह सुबह 9 बजे पुस्तकालय पहुँच जाती। शाम 7 बजे तक लगातार मेहनत करती और शॉर्टहैंड में लिखवाती। राव का टाइपराइटर अब उसके पास होटल के कमरे में था। वह आधी रात तक पांडुलिपि टाइप करती रहती। राव ने अभी तक अपनी दूसरी किताब लिखना शुरू नहीं किया था। करुणा के आने पर उन्होंने करुणा को बताया कि उसकी अनुपस्थिति में उन्होंने कौन-कौन सी किताबें पढ़ी थीं। करुणा ने उन सभी बातों को लिख लिया और विस्तृत, व्यवस्थित नोट्स बना लिए।
जब उसके पति घर आए, तो नागलक्ष्मी ने उन्हें खाना परोसा। लेकिन उसने उनसे बात करना बिल्कुल बंद कर दिया था। राजा ऐसे हर समय अपने भाई के साथ रहता था। पृथ्वी कभी भी अपने पिता से खुलकर नहीं मिलता था। राव अपने अध्ययन कक्ष में ही रहता था और नागलक्ष्मी और पृथ्वी के सोने वाले शयनकक्ष में जाने से खुद को रोकता था।
एक दिन राव ने करुणा से पूछा, 'अब होटल में क्यों रुकना? मैंने अपने घर में इस बारे में बात कर ली है। मेरे परिवार में शामिल हो जाओ।'
उसने इस बारे में पहले ही सोच लिया था। उसने कहा, 'मैं तुम्हें एक बात साफ-साफ बता दूंगी। मुझे गलत मत समझना।'

'मुझे बताओ।'
‘उनका पारंपरिक झुकाव होने के कारण, वे शायद मान जाएँ। लेकिन मेरी परवरिश अलग है। मुझे एक ही छत के नीचे दो पत्नियों का रहना पसंद नहीं है। एक और घर का अतिरिक्त आर्थिक बोझ शायद उतना ज्यादा न हो।’
मुझे इसके आर्थिक पहलुओं की बिल्कुल भी चिंता नहीं है।
'और क्या?'
‘मैं हम तीनों की मन की शांति के बारे में सोचती हूँ।’ करुणा ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, ‘मेरा इनकार इसी सोच से उपजा है। यह असंभव है कि हम साथ रहें और साथ ही शांति से रहें। मैं दूसरे घर में रहूँगी। मैं अपना खाना खुद बनाऊँगी। आप वहाँ जाते रहिए। वहाँ अपना भोजन कीजिए। रात को वहीं सोइए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मुझे जलन नहीं है। क्या हम किसी और उद्देश्य से साथ नहीं आए हैं?’
राव ने उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा। उसकी आँखों में दृढ़ इच्छाशक्ति की चमक थी। 'इस मामले में किसी स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है।' उसने उसके हाथों को हल्के से दबाया।
एक सप्ताह के भीतर सरस्वतीपुरा में एक आरामदायक घर मिल गया। और सौभाग्य से, एक भरोसेमंद नौकरानी भी मिल गई। करुणा ने राव को अपने साथ रहने के लिए नहीं कहा; राव शुरू में नागलक्ष्मी के साथ ही रहे। लेकिन पति-पत्नी के बीच कोई संवाद नहीं था। राजा ने नागलक्ष्मी को अपने पति से दोबारा संपर्क करने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुए। रात को वह रसोई में चली जातीं; वहाँ एक पलंग बिछाकर पृथ्वी के साथ सो जातीं। ऐसा दो महीने तक चलता रहा। एक दोपहर राव ने एक ठेला किराए पर लिया और अपनी सारी किताबें करुणा के घर ले गए। उस समय राजा घर पर नहीं थे। नागलक्ष्मी ने मानो किसी बात पर ध्यान ही नहीं दिया और एक शब्द भी नहीं बोला, वह रसोई में ही सिमट गईं, मानो उन्हें अपने पति की गतिविधियों से कोई लेना-देना ही न हो।
यह देखकर करुणा ने पूछना अपना कर्तव्य समझा, 'इससे आपकी पढ़ाई में तो मदद मिलेगी, लेकिन मैं आप पर यहाँ रहने के लिए दबाव नहीं डालूंगी।'
‘इसे छोड़ो,’ राव ने कहा, मानो वह उस मामले पर चर्चा करने के इच्छुक न हों।
अगले दिन राजा पुस्तकालय में अपने भाई को ढूंढने गया। करुणा समझ गई कि अगर राजा, जो कभी वहाँ नहीं जाता था, आज आया है, तो वह कल की घटनाओं पर चर्चा

करने के लिए ही आया होगा। उसने राजा का अभिवादन किया और लगभग पाँच मिनट बाद वहाँ से चली गई।
राव ने राजा से कहा, “दरअसल, मैं तुम्हें बुलाने आया था। बिना किसी संपर्क के मैं कब तक यह सब बर्दाश्त कर सकता हूँ? इसके अलावा, अगर मैं करुणा के घर रहूँ तो मेरे शोध में ज़्यादा मदद मिलेगी। करुणा को मेरे वहाँ रहने से कोई आपत्ति नहीं है। जब नागू का मन ठीक हो जाए तो मुझे बुला लेना। तब मैं नियमित रूप से आता रहूँगा।”
वह बहुत दुखी है।
'मैं समझ सकता हूँ।'
'उसके मान जाने का इंतजार मत करो। उससे मिलते रहो। कुछ दिनों में सब ठीक हो जाएगा।'
‘ठीक है,’ राव मान गए। फिर कुछ सोचते हुए उन्होंने कहा, ‘देखो, अब मुझे तुम्हारी तनख्वाह से दुगुनी तनख्वाह मिल रही है। मुझे प्रकाशक से रॉयल्टी भी मिलती है। नागु और पृथ्वी की देखभाल तुमने ही हमेशा की है। अगर मैं वहाँ दोबारा जाना शुरू कर दूं, तब भी वे तुम्हारे ही संरक्षण में रहेंगे। तनख्वाह वाले दिन यहाँ आना। मैं तुम्हें नियमित रूप से कुछ पैसे देता रहूंगा।’
राजा उदास हो गया। उसने कहा, 'इसके बारे में सोचना भी मत। क्या तुम मुझे नागु के खाने-पीने के लिए पैसे दोगे? इस बात को अपने दिमाग से निकाल दो। अगर माँ ज़िंदा होती, तो क्या वह बड़े बेटे से भरण-पोषण का पैसा लेती और छोटे बेटे के यहाँ खाना खाती? अगर मुझे पैसों की ज़रूरत पड़ी, तो मैं खुद तुमसे माँगूँगा। तुम्हें शोध के लिए यात्रा पर जाना पड़ सकता है, या तुम्हें किताबें और स्टेशनरी खरीदनी पड़ सकती है।'
जब राजा जाने लगा तो राव ने कहा, 'तुम यहाँ आते रहना।'
‘ठीक है,’ राजा ने कहा और चला गया।
अगले सप्ताह भर करुणा के हाथ का बना खाना राव को पसंद नहीं आया। इसके अलावा, उन्हें लगा कि खाना बनाने में करुणा का समय उसके अधिक महत्वपूर्ण काम में बाधा डाल रहा है। इसलिए उन्होंने एक रसोइया रख लिया।

अध्याय 12

1

नवरात्रि की छुट्टियां बीत चुकी थीं। दिसंबर की छुट्टियां भी समाप्त हो गई थीं। राजा और कात्यायनी कॉलेज में हर दिन मिलते थे। वे थिएटर एसोसिएशन के कमरे में बैठकर बातें करते थे। कभी-कभी कात्यायनी राजा के घर भी जाती थीं। आजकल नागलक्ष्मी किसी से बात नहीं करती थीं। खाना बनाना, राजा और पृथ्वी को खाना परोसना और रसोई में चटाई पर लेटना उनकी दिनचर्या बन गई थी। जब राजा कुछ देर उनके साथ समय बिताते और उनसे बातचीत शुरू करने की कोशिश करते, तो वे बहुत कम बोलती थीं। पृथ्वी, जिसका अपने पिता के साथ कभी कोई करीबी रिश्ता नहीं था, ने कोई बदलाव महसूस नहीं किया। उसने केवल इतना देखा कि उसकी माँ कमरे में पलंग पर सोने के बजाय रसोई के फर्श पर पलंग पर सोने लगी थीं। अब पाँच साल का हो चुका पृथ्वी पड़ोस के लड़के के साथ स्कूल जाता था। जब भी उसके चाचा खरीदारी करने जाते, वे अपने छोटे भतीजे को साइकिल पर साथ ले जाते थे।
एक दिन राजा ने नागलक्ष्मी से पूछा, 'नागु, क्या मैं इस साल शादी कर लूंगा?'
इस बात से प्रसन्न होकर कि अनिच्छुक देवर ने स्वयं ही अपनी शादी का मुद्दा उठाया, उसने कहा, 'मुझसे यह सवाल पूछो!'
‘क्या आप जानते हैं कि दुल्हन कौन है?’
‘Katyayani.’
‘तुम्हें पता है! कैसे?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
'महिलाएं इसे आसानी से समझ जाती हैं। जिस तरह से आप उसके यहां आते ही उसे अपने कमरे में बातचीत के लिए ले जाते हैं, उससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता है।'
‘तुमने इतने दिनों तक यह बात कभी नहीं बताई कि तुम्हें इस बात की जानकारी थी!’
‘तुमने मुझसे यह बात क्यों नहीं बताई कि तुम उससे शादी करने का इरादा रखते हो?’
शर्मिंदा होकर राजा चुप हो गया। नागलक्ष्मी ने आगे कहा, 'उसका भी एक बच्चा है। वह उसे छोड़कर यहाँ कैसे आ सकती है?'
‘वह उसे भी साथ लाएगी। मुझे बताओ, क्या तुम इस शादी के पक्ष में हो?’

'आप मुझसे राय क्यों पूछ रहे हैं? यदि आप स्वीकृत प्रथाओं और धर्म-कर्म के विरुद्ध जाते हैं, तो क्या यह सभी के लिए अच्छा होगा?'
उन्होंने नागलक्ष्मी को धर्म और कर्म के बारे में अपने विचार कई बार समझाए थे। अब उन्होंने एक बार फिर विस्तार से समझाया। 'यदि मैं किसी अनुपयुक्त स्त्री से विवाह कर लूँ और विवाह के तुरंत बाद उससे घृणा करने लगूँ, तो इससे क्या लाभ होगा? मुझे लगता है कि कात्यायनी मेरे लिए बिल्कुल उपयुक्त है। आपको अपनी सहमति देनी ही होगी।'
नागलक्ष्मी ने अपने जीवन की घटनाओं का वर्णन किया। इसके अलावा, हाल ही में उन्होंने जीवन को निष्पक्ष दृष्टि से देखना शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा, 'शायद आप सही हैं। ठीक है।'
उस दोपहर कात्यायनी आईं, नागलक्ष्मी के चरणों में प्रणाम किया और कहा, 'आपको मुझे स्वीकार करना चाहिए।'
नागलक्ष्मी ने मन ही मन कहा, 'आप दोनों की खूब तरक्की हो।'
कात्यायनी की परीक्षाएं मार्च के तीसरे सप्ताह में निर्धारित थीं। फरवरी के अंत में एक दिन, राजा ने उससे कहा, 'अब और देरी न करें। तुम अपने ससुराल वालों से बात करो और उनकी अनुमति ले लो। चलो शादी कर लेते हैं। अब तुम कॉलेज में मिलने वाली कोई छात्रा बनकर न रहो।'
कात्यायनी भी इस सब से छुटकारा पाना चाहती थी। पिछले तीन महीनों से वह अपने ससुराल वालों से यह सब साझा करने, उनकी अनुमति लेने और अपने चुने हुए जीवनसाथी के घर में बसने के लिए तरस रही थी। लेकिन वह उन्हें यह बात कैसे बताती? वह जानती थी कि उसका यह फैसला उनके लिए एक बड़ा झटका होगा। उसे पूरा यकीन था कि उसका यह कदम उस वंश की प्रतिष्ठा, घर की प्रतिष्ठा, सामाजिक प्रतिष्ठा और पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं को चकनाचूर कर देगा। फिर भी, वह उसका घर था। पाँच साल पहले उसने उस घर में शुभ प्रवेश किया था, जब उसने अपने बाएं पैर के अंगूठे से उस घर के सामने वाले दरवाजे की चौखट पर रखे धातु के घड़े को हल्के से धक्का दिया था, जिससे उसमें रखे चावल के दाने घर के फर्श पर बिखर गए थे, जो उस घर में आने वाली समृद्धि का संकेत था। उसका नाम उस घर के वंश वृक्ष में हमेशा के लिए दर्ज हो गया था, जिसे कभी मिटाया नहीं जा सकता था। हालाँकि उसने इसे मिटाने का निश्चय कर लिया था, फिर भी वह जानती थी कि इससे उस साफ़-सुथरी चादर पर एक गहरा गड्ढा, बल्कि एक धब्बा, रह जाएगा। अपने इकलौते बेटे की मृत्यु के

बाद, उसके सास-ससुर ने अपनी सारी उम्मीदें उस पर और अगली पीढ़ी, यानी अपने पोते पर टिका दी थीं।
ये सारे विचार कई बार उसके मन में आए, और पहली बार तो तब जब उसने राजा के सामने अपने मन की सारी बातें कह दीं। लेकिन उसकी अतृप्त वैवाहिक जिंदगी ने इन सभी अच्छे पहलुओं को दबा दिया था। जब ससुराल वालों को बताने का समय आया, तो वह घबरा गई। राजा रोज़ पूछता रहता था कि क्या उसने घर पर इस बारे में बात की है। एक दिन वह नाराज़ हो गया: 'अगर तुममें आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं है, तो तुमने मुझे इतना ज़ोर क्यों दिया?' एक बार उसके मन में यह ख्याल आया कि वह अपने बच्चे के साथ बिना किसी को बताए घर छोड़ दे, मैसूर चली जाए और फिर उन्हें अपने फैसले के बारे में चिट्ठी लिखे, लेकिन उसने उस घटिया तरीके को अपनाने से खुद को रोक लिया। भले ही वह अपने ससुर द्वारा उस पर रखे गए भरोसे के लायक साबित न हो, लेकिन उसका मन इसे इतना नीच काम करने के लिए तैयार नहीं था।
मार्च का पहला सप्ताह भी बीत चुका था। दो सप्ताह की पढ़ाई की छुट्टियां होंगी, जिसके बाद परीक्षाएं होंगी, और इस दौरान वह मैसूर नहीं जा पाएगी। उस दिन राजा ने उसे बहुत सख्ती से कहा, 'अगर तुम घर पर खुद इस बारे में बात नहीं करोगी, तो मैं उन्हें पत्र लिखकर इसकी सूचना दे दूंगा। आज तुम नंजनगुड मत जाना।'
आज रात मैं उनसे इस बारे में ज़रूर बात करूँगी। कल, भले ही कोई क्लास न हो, मैं आऊँगी। आप लोग यहाँ मौजूद रहिएगा। मैं आपको सारी जानकारी देती रहूँगी।' उन्हें आश्वस्त करते हुए वह शाम की ट्रेन से लौट गईं। उन्होंने इस खबर को बताने के तरीके के बारे में बहुत सोचा, लेकिन उन्हें कोई संतोषजनक उपाय नहीं सूझा। जैसे ही ट्रेन नंजनगुड स्टेशन के पास पहुँची, उनकी धड़कन तेज़ होती चली गई। एक अनजान डर से वे काँप उठीं। उनके चेहरे और शरीर पर पसीना आ गया। उनका संतुलन बिगड़ गया और वे लड़खड़ाते हुए अपने घर पहुँचीं।
'बेटी, तुम्हें पसीना क्यों आ रहा है? गर्मी आ रही है। बहुत गर्मी हो रही है। सरकार जल्दी से परीक्षाएं क्यों नहीं करवा लेती और इस झंझट से छुटकारा क्यों नहीं पा लेती?' उसके ससुर ने कहा।
कोई जवाब न देते हुए, वह सीधे ऊपर अध्ययन कक्ष में चली गई। किताबों को शेल्फ पर रखकर, वह नीचे आई, अपने पैर और चेहरा धोया और कपड़े बदले। 'अम्मा, इतनी देर क्यों कर दी?' चीनी ने उससे पूछा, और उसने उसे गले लगा लिया। रात के खाने तक उसने किसी से बात नहीं की। वह अध्ययन कक्ष में ही सिमटकर सोचती रही। रात के

खाने के बाद अपने ससुर से अवश्य बात करने का निश्चय करके, उसने अपनी पूरी इच्छाशक्ति जुटाई। रात के खाने के बाद भी उसके ससुर बैठक में ही बैठे रहे। लेकिन फिर भी उसमें उनसे बात करने की हिम्मत नहीं हुई। जब वह सीढ़ियाँ उतरने के लिए उठी, तो उसके पैर इतने कमजोर हो गए कि वह लड़खड़ा गई। वह जल्दी से बैठ गई। नीचे सब सो रहे थे। रात 11 बजे उसे एक विचार आया। वह एक कागज पर वह सब लिखेगी जो वह अपने ससुर को बताना चाहती है, और कल सुबह कॉलेज जाते समय उसे व्यक्तिगत रूप से उन्हें सौंप देगी। जब वह उस शाम वापस आएगी, तो वह उसे खुद ऊपर ले आएंगे। फिर उसके लिए इसे आगे बढ़ाना आसान हो जाएगा।
जब उसने कागज़ और कलम उठाई, तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या लिखे। फिर भी, उसने लगभग पाँच मिनट में लिखना शुरू कर दिया। चार घंटे बाद उसने इसे पूरा किया और यह 16 पन्नों का था। उसने समाज के उन कृत्रिम नियमों के बारे में लिखा जो मनुष्य के मूल स्वभाव को दबाते हैं। उसने विस्तार से विश्लेषण किया कि कैसे पारंपरिक सिद्धांत पुरुषों और महिलाओं के सुख में बाधा बनते हैं। उसने धर्म के नियमों पर भी चर्चा की। और अंतिम पृष्ठ पर उसने इस प्रकार लिखा:
मैं आपके चरणों में गिरकर प्रार्थना करती हूँ कि आप एक मानवीय स्वभाव के अनुरूप इस मामले को सहानुभूतिपूर्वक देखें। कृपया उस करुणा से इसे देखें जो एक पिता अपनी बेटी के प्रति दिखाता है जिसने ऐसी विनती की है, और उसके हृदय की बात सुनें। मैंने कभी आपके भरोसे को नहीं तोड़ा है। मैं आपके आशीर्वाद और अनुमति के बाद ही अपने नए जीवन की शुरुआत करूँगी। क्योंकि मैं ये सब बातें बोलकर नहीं कह सकी, इसलिए मैंने इन्हें लिखकर रखा है। आज शाम जब मैं लौटूँ, तो कृपया मुझे आशीर्वाद दें।

जब उसने पत्रों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित किया और उन्हें पिन से जोड़ने की कोशिश की, तो पिन टेढ़ी हो गई। उसने एक छेद किया, उन्हें धागे से बांधा, लिफाफे में रखा, गोंद से सील किया और लेट गई। राहत की एक अनुभूति ने उसे नींद में सुला दिया। जब वह उठी, तो 7:30 बज रहे थे। उसने जल्दी से अपनी सुबह की रस्में पूरी कीं और नाश्ता किया। उसने अपनी किताबें और लंच बॉक्स पैक किया। जब उसने लिफाफा उठाया, तो उसके हाथ कांप रहे थे। मन को मजबूत करते हुए, वह सीढ़ियों से नीचे उतरी। उसके ससुर ने अभी-अभी अपनी पूजा समाप्त की थी और बैठक कक्ष की

ओर जा रहे थे। मानो किसी आवेश से प्रेरित होकर, उसने उनके चरणों में प्रणाम किया।
‘आज क्या खास है, बेटा? परीक्षाएं तो 15 दिन बाद ही तो हैं?’ श्रोत्री ने पूछा।
“जी हाँ, लेकिन कृपया यह पत्र देख लीजिए,” उसने पत्र उसके हाथों में रखते हुए कहा और तेज़ी से चली गई। वह व्याकुल होकर उसकी ओर देखता रहा। फिर, उसका ध्यान अपने हाथ में मौजूद लिफाफे पर गया और उसने उसे काट कर खोल दिया।
घर से निकलने के बाद कात्यायनी परेशान थी। किसी तरह वह ट्रेन में चढ़ गई। चामराजपुरा स्टेशन पर उसकी नज़र राजा पर पड़ी। वह भी परेशान था। तुरंत बात करते हुए वे राजा के घर की ओर चल पड़े। उसने राजा को अपने किए की जानकारी देते हुए आश्वासन दिया कि वह कल उसे ज़रूर सूचित करेगी। राजा ने कहा, 'मैं तुम्हारी रिपोर्ट का इंतज़ार नहीं करूँगा, बल्कि तुम्हारा इंतज़ार करूँगा।'

2

उस शाम घर लौटते समय कात्यायनी डर से कांप रही थी। वह मन ही मन सोच रही थी कि उसके ससुर उससे क्या पूछेंगे और उसे क्या जवाब देना चाहिए। एक अनजाना डर उसे भी जकड़ रहा था। लेकिन वह दिन उसकी इच्छाशक्ति और सहनशक्ति की परीक्षा लेने वाला था। अपनी सारी हिम्मत जुटाकर वह घर में दाखिल हुई। उसके ससुर बैठक में बैठे एक किसान से बात कर रहे थे। वह सीधे ऊपर चली गई। घर लौटने पर वह अपनी सास से मिलने की हिम्मत नहीं जुटा पाई, जैसा कि वह आमतौर पर करती थी। वह जानती थी कि उसके ससुर किसी भी परिस्थिति में कभी भी क्रोध के वश में नहीं रहते थे। लेकिन उसकी सास ऐसी नहीं थीं। हालांकि वह शांत स्वभाव की थीं, लेकिन कभी-कभी उन्हें गुस्सा आ जाता था। कभी-कभी वह अपने पति पर भी गुस्सा हो जाती थीं। अब तक तो उन्हें यह पता चल ही गया होगा। यह जानते हुए कि लंबी बहस होने वाली है, वह इसके लिए खुद को तैयार कर रही थी। लेकिन बुजुर्ग महिला को अभी तक पता नहीं चला था कि उनकी बहू घर आ गई है। वह रसोई में चीनी से बातें कर रही थी। कात्यायनी नीचे नहीं गई।
शाम की पूजा समाप्त होने पर श्रोत्री ने उसे रात के खाने के लिए बुलाया। हिम्मत जुटाकर वह नीचे उतरी। हमेशा की तरह उसके ससुर और चीनी बैठे थे; सास खाना परोस रही थी। कात्यायनी ने सोचा कि अब वह इस ज्वलंत मुद्दे को उठाएगी। लेकिन

सब कुछ शांत था। उसके ससुर चुपचाप खाना चबा रहे थे, उनका सिर झुका हुआ था। उसकी सास चीनी को दुलार रही थी और फुसला रही थी, जो खाने से ज़्यादा गिरा रही थी। खाना खाने के बाद कात्यायनी फिर ऊपर चली गई। उसके ससुर उसे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखते रहे। फिर भी उन्होंने कुछ नहीं कहा। कात्यायनी को यह चुप्पी सहन नहीं हुई; उसे डांट पड़ने की आशंका थी। और उसने इसका सामना करने के लिए खुद को अच्छी तरह तैयार कर लिया था। लेकिन यह चुप्पी—बल्कि तिरस्कारपूर्ण चुप्पी—उसके सहन से परे थी। वह बेचैनी से छटपटाने लगी। आखिरकार, उसने कुछ हिम्मत जुटाई और नीचे चली गई। श्रोत्री बैठक कक्ष में बैठे थे। हालाँकि उनके हाथ में कोई पांडुलिपि थी, उनकी निगाहें छत पर टिकी हुई थीं और वे विचारों में खोए हुए प्रतीत हो रहे थे। वह उनके पास गईं और बोलीं, 'अप्पा, क्या आप कृपया एक मिनट के लिए ऊपर आएँगे?'

'ओह हां।'

वह दोबारा सीढ़ियाँ चढ़ गई। दो मिनट में वह वहाँ आ गया, अपने अध्ययन कक्ष की ओर बढ़ा और बोला, 'अंदर आ जाओ।' जब तक वह अंदर पहुँची, वह खिड़की के पास बाघ की खाल की चटाई पर बैठा था। वह उसके पास गई और एक खंभे से टेक लगाकर खड़ी हो गई। 'पास आओ। यहाँ बैठो,' उसने कहा। उसने बात मान ली। फिर से सन्नाटा छा गया।

लगभग पांच मिनट बाद, उस असहनीय चुप्पी को तोड़ते हुए उसने कहा, 'अप्पा, क्या आपने मेरा पत्र पढ़ा?'

मैंने किया।

'कृपया अनुमति दें।'

एक मिनट के लिए श्रोत्री चुप रहे। फिर उन्होंने अपने शांत स्वर में कहा, 'यहाँ मेरी अनुमति का कोई सवाल ही नहीं है। आप जो चाहें करने के लिए स्वतंत्र हैं।'

श्रोत्री का लहजा बिलकुल भी कटु नहीं था। उन्होंने बड़ी संयम से ये बात कही। फिर भी, ये बात उसे चुभ गई।

'ऐसा क्यों कह रहे हो? आप घर के मालिक हैं, और मैं आपकी अनुमति के बिना कुछ नहीं करूंगा।'

क्या तुम अब भी मुझे घर का मुखिया समझते हो? जब तक तुम खुद को इस परिवार का सदस्य समझते हो, तब तक स्वाभाविक है कि मैं तुम पर अधिकार रखता रहूँगा। जिस

क्षण तुम कोई और जीवन शैली अपनाने का फैसला करोगे, तुम पर मेरा अधिकार निराधार हो जाएगा। है ना?

कात्यायनी उसके हर हमले का जवाब देने के लिए तैयार थी। उसने अपने निर्णय की औचित्य साबित करने के लिए कई तर्क तैयार किए थे। वे सब उसकी स्मृति से मिट गए थे, और उसका दिमाग मानो खाली था। फिर भी, उसने कहा, "इस समाज में अगर किसी स्त्री पर विपत्ति आ पड़े तो उसके पास कोई सहारा नहीं है। एक विधुर दस बार विवाह कर सकता है। अनादि काल से इस संसार में कभी भी स्त्रियों के मन और उनकी दुर्दशा को समझने की सहानुभूति नहीं रही है। इसके अलावा..." श्रोत्री ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, "अब समाज या संसार के आचरण पर बहस करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह केवल तुम्हारा मामला है। मैं तुम्हारे निर्णय में बाधा नहीं बनी हूँ; न ही बनूँगी। तुम अपने मन की सुनो। लेकिन हमारे इरादे और संकल्प हमारे संबंधित धर्म, जिम्मेदारियों आदि के अनुरूप होने चाहिए, है ना?"

'क्या किसी व्यक्ति के लिए जीवनसाथी होना स्वाभाविक नहीं है, खासकर उचित समय पर?'

'जो स्वाभाविक है, वह धर्म के अनुरूप होना आवश्यक नहीं है।' उस स्थिति में भी, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'वैवाहिक संबंध जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। विवाह संस्था वंश को संतानोत्पत्ति के माध्यम से आगे बढ़ाने के लिए है। जब वंश आगे बढ़ने के लिए तैयार हो, तो पिछले परिवार को नष्ट करने के उद्देश्य से दूसरा परिवार शुरू करना धर्म के अनुरूप नहीं है।'

उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहे। श्रोत्री भी चुप हो गया। दोनों दस मिनट तक चुपचाप बैठे रहे। फिर उसने कहा, 'ऐसे मुद्दों पर बहस करके उनका तार्किक निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। धर्म और अधर्म को सही ढंग से तभी समझा जा सकता है जब व्यक्ति व्यक्तिगत लोभ की छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठकर दृढ़ संकल्पित हो। तुमने अभी कहा कि एक आदमी दस बार पुनर्विवाह कर सकता है। मैंने भी यही कहा है कि हमें संसार के नियमों पर बहस करने की आवश्यकता नहीं है। कुछ वर्ष पूर्व मेरे जीवन में भी पुनर्विवाह की आवश्यकता उत्पन्न हुई थी। लेकिन मैंने अपने धर्म का पालन किया, बल्कि धर्म ने ही मुझे सही मार्ग दिखाया और मेरी रक्षा की। धर्म उन्हीं का सहारा बनता है जो स्वयं को उसके प्रति समर्पित कर देते हैं। तुम्हारे पति ने तुम्हें यह बताया होगा। तुम नीचे जाकर अपनी सास या लक्ष्मी से भी यह जान सकती हो। खैर, बहुत देर हो रही है। जाओ सो जाओ।'

श्रोत्री उठे। वे दरवाजे तक गए, रुके और बोले, 'इस मामले में स्वतंत्रता आपकी है। जी हां, मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हूं कि समाज द्वारा व्यक्तियों पर थोपी गई ये कृत्रिम शर्तें धर्म की पूर्ण भावना के अनुरूप नहीं हैं।'

वह अपनी सामान्य धीमी चाल से सीढ़ियाँ उतरी और बैठक के उस कोने में चली गई जहाँ वह अक्सर सोती थी। यह याद करके कि आज उसने अपने ससुराल वालों और चीनी के बिस्तर नहीं लगाए थे, उसके मन में एक झनझनाहट सी हुई। उठकर वह अपने बिस्तर पर गई और लेट गई। उसका उत्साह क्षीण हो गया था। उसकी स्वाभाविक जीवंतता आज मानो मिट गई थी। वह अपने बिस्तर पर ऐसे सिमट कर लेटी रही जैसे कोई पक्षी लंबी और थका देने वाली उड़ान के बाद घोंसले में दुबक जाता है।

उनके पति, नंजुंडा श्रोत्री, उन्हें अपने पिता के मार्ग के बारे में बताते थे। बहुत समय पहले श्रीनिवास श्रोत्री के जीवन में भी ऐसी ही परिस्थिति आई थी। धर्म के मार्ग पर चलकर वे उस संकट से विजय प्राप्त कर निकले थे। कात्यायनी अब उस घटना को विस्तार से याद कर रही थीं।

अध्याय 13

1

जब श्रीनिवास श्रोत्री ने अपनी माता को खोया, तब उनकी आयु 15 वर्ष थी। अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र, उन्होंने मैसूर के संस्कृत विद्यालय में पढ़ाई की। उनकी माता का 50 वर्ष की आयु में निधन हो गया। 55 वर्षीय बुजुर्ग पिता ने अपने पुत्र को मैसूर से वापस बुला लिया। लेकिन वह फिर कभी स्कूल नहीं गए। पूरे परिवार में वे दोनों ही थे। उस घर के पिछवाड़े में एक झोपड़ी थी, जिसमें माचा रहते थे—एक वफादार नौकर जो पूरी तरह से श्रोत्री परिवार पर निर्भर था—अपनी बेटी लक्ष्मी के साथ। लक्ष्मी को जन्म देने के बाद जब माचा की पत्नी का देहांत हो गया, तब उन्होंने दोबारा शादी नहीं की थी। तीन साल तक उन्होंने बच्ची को क्यातनहल्ली में एक रिश्तेदार की देखरेख में छोड़ दिया था। उसके बाद वे उसे वापस ले आए। पिता-पुत्री अपने स्वामी के घर में ही भोजन करते थे और वहीं दिनभर काम करते थे।

पत्नी के निधन के बाद, परिवार में कोई महिला न होने के कारण वृद्ध नंजुंडा श्रोत्री ने स्वयं रसोई का कार्यभार संभाला। पुत्र श्रीनिवास अपने पिता की सहायता करता था। माचा भी अपनी झोपड़ी में उन दोनों के लिए खाना बनाने लगा। अब लक्ष्मी 10 वर्ष की थी, श्रीनिवास से लगभग पाँच वर्ष छोटी। नंजुंडा श्रोत्री लकड़ी के चूल्हे की कालिख से अपने हाथों और चेहरे को मलते-मलते थक चुके थे। लेकिन श्रीनिवास की रुचि शिक्षा से अलग नहीं हुई थी। हालाँकि वे मैसूर से दूर हो गए थे, फिर भी उन्होंने नारायण-राव परिसर में स्थित यंकप्पा शास्त्री के निवास पर न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग और अन्य दार्शनिक विषयों की शिक्षा प्राप्त की। श्रीनिवास ने छह वर्ष की आयु में ही अमरकोश को याद कर लिया था। मैसूर में रहते हुए उन्होंने संस्कृत में रामायण और महाभारत का अध्ययन किया था। उस विद्यालय में शिक्षा का माध्यम संस्कृत होने के कारण, श्रीनिवास ने जल्द ही उस भाषा की सुंदरता को महसूस कर लिया था और उसमें दक्षता हासिल करने के लिए खुद को प्रेरित कर रहे थे।

श्रीनिवासा के पिता ने ज्ञान की खोज में उनका उत्साह तो नहीं भंग किया, लेकिन उनकी शिक्षा पर पैसा खर्च करने को तैयार नहीं थे। श्रीनिवासा श्रोत्री के पास आज जो भी संपत्ति है, वह उस समय भी परिवार के पास उपलब्ध थी। पूजा कक्ष और रसोई के बीच की

ज़मीन के एक छोटे से हिस्से को खोदकर उसमें चांदी के सिक्कों और सोने-चांदी के आभूषणों से भरा एक मिट्टी का बर्तन रखा गया था। नंजुंडा श्रोत्री वहीं अपना पलंग बिछाकर हर रात सोते थे। पिता की मितव्ययिता और पुत्र की ज्ञान की खोज को समझते हुए, यंकप्पा शास्त्री ने बिना किसी पारिश्रमिक की अपेक्षा किए पुत्र को शिक्षा प्रदान की। लेकिन शास्त्री स्वयं कुछ पुस्तकें खरीदने में असमर्थ थे; और इसी कारण श्रीनिवासा की पढ़ाई प्रभावित हुई।

खाना पकाने के झंझट से बचने के लिए, नंजुंडा श्रोत्री ने अपनी पत्नी की पहली पुण्यतिथि के ठीक अगले दिन अपने बेटे की शादी करने का फैसला किया। सभी जानते थे कि नंजुंडा श्रोत्री ऐसे व्यक्ति थे जो जंग लगे पैसे को भी धोकर पूजा कक्ष में रखे गुल्लक में जमा कर देते थे। फिर भी, माता-पिता अपनी बेटियों का विवाह इस समृद्ध परिवार में करने के लिए उत्सुक रहते थे। इसके अलावा, श्रीनिवासा बेहद सुंदर थे, अपने पिता से बिल्कुल अलग, जो सांवले, छोटे कद के और चिड़चिड़े स्वभाव के थे। उनका रंग गोरा था, वे लंबे कद के थे, उनकी आंखें चमकीली थीं और माणिक जड़े हुए सुंदर झुमके थे। उनके कानों में सुंदर माणिक जड़े हुए झुमके थे। नंजनगुड के कई परिवार उन्हें अपना दामाद बनाना चाहते थे; लेकिन स्थानीय दुल्हन लाने के इच्छुक न होने के कारण, नंजुंडा श्रोत्री ने हसन के एक दूरदराज के गांव से दुल्हन चुनने का फैसला किया था। दुल्हन एक प्रतिष्ठित परिवार से थी। इसके अलावा, दूल्हा और दुल्हन की कुंडली का इतना अनुकूल मिलान होना बहुत दुर्लभ था। पुराने जमाने में, शादी से पहले दूल्हे का दुल्हन को देखना रिवाज नहीं था। हालांकि दुल्हन की उम्र आदर्श उम्र से अधिक थी, फिर भी नंजुंडा श्रोत्री ने तुरंत अपनी सहमति दे दी, क्योंकि उन्हें रसोई के कामों से राहत पाने के लिए एक सहायक की सख्त जरूरत थी। सांवली रंगत वाली 11 वर्षीय भागीरथम्मा देखने में सुंदर थी। हालांकि, शारीरिक रूप से वह अपने पति के मुकाबले छोटी थी। शादी के स्थान पर किसी ने कहा कि यह महल के सफेद बैल और गांव के बछड़े की शादी है, और कई लोगों ने इस बात से सहमति जताई। दुल्हन के पिता ने अपने दामाद को दहेज में एक चांदी का सिक्का, संध्यावंदन के लिए तांबे के दो बर्तन, एक जोड़ी धोती, चप्पल और एक छाता दिया और आठ दिनों तक भव्य विवाह समारोह आयोजित किया।

नंजुंडा श्रोत्री को अपनी बहू के पाक कौशल का लाभ लंबे समय तक नहीं मिल पाया। शादी के छह महीने बाद ही अत्यधिक उल्टी और दस्त के कारण उनका देहांत हो गया। कुछ लोगों का तो यहाँ तक मानना था कि बहू का जन्म ऐसे नक्षत्र में हुआ था जो

उसके ससुर के लिए अशुभ था। देहांत से पहले उनके पिता ने श्रीनिवासा को गुप्त खजाने के बारे में गुप्त रूप से बताया था। पिता के अंतिम संस्कार के पखवाड़े भर चलने के बाद श्रीनिवासा श्रोत्री ने खजाना खोदकर निकाला। अकेले चांदी के सिक्कों की संख्या ही 6,000 थी। सोने और चांदी के आभूषण इतने भारी थे कि वे उन्हें एक बार में नहीं उठा सके। वे जानते थे कि अधिकांश आभूषण गिरवी रखे गए थे जिन्हें उधार लेने वालों ने कभी छुड़ाया नहीं था। इस प्रकार खजाना मिलने और श्रीनिवासा श्रोत्री को जागीर मिलने के बाद, घर के नियमों में आमूल-चूल परिवर्तन आ गया। अपने गुरु के प्रति अपने आर्थिक ऋण को सम्मानपूर्वक चुकाने में सक्षम होने पर प्रसन्न होकर, उन्होंने गुरु की पुत्री के विवाह के अवसर पर अपने गुरु यंकप्पा शास्त्री को 1,000 चांदी के सिक्के भेंट किए। उन्होंने अपने गुरु द्वारा अनुशंसित पुस्तकें—जितनी भी उपलब्ध थीं —इकट्ठी कीं और उन्हें अपने घर की ऊपरी मंजिल पर स्थित अध्ययन कक्ष में व्यवस्थित किया।

नौकर माचा की पुत्री लक्ष्मी बारह वर्ष की थी। माचा लंबा और हट्टा-कट्टा था। वह पहले नीलगिरी के चाय बागानों में काम करता था। एक सुंदर विधवा स्त्री को उससे प्रेम हो गया। वह उसके साथ भाग गया और नंजनगुड पहुँच गया; नंजुंडा श्रोत्री ने उन्हें शरण दी थी। उसे अपने खजाने की रक्षा के लिए ऐसे ही हट्टे-कट्टे और ईमानदार नौकर की आवश्यकता थी। लक्ष्मी को अपनी माँ से गोरा रंग और प्यारी मुस्कान विरासत में मिली थी, और अपने पिता से दुबलापन। लोग कहते थे कि माचा की पत्नी उससे दो साल बड़ी थी। लेकिन उसकी सुंदरता ने उसकी उम्र छुपा दी थी। विवाह के चार साल बाद वह गर्भवती हो गई। उसने लक्ष्मी को जन्म दिया और उसका देहांत हो गया। मात्र बारह वर्ष की आयु में भी लक्ष्मी की सुंदरता ने सबको मोहित कर लिया। वह अपने बचपन के साथी श्रीनिवास श्रोत्री को शीनप्पा कहकर पुकारती थी। उसी घर में पली-बढ़ी होने के कारण उसने श्रोत्री परिवार की शुद्ध भाषा बोलना सीख लिया था। जब श्रीनिवासा ने अपनी शादी के दिन पहली बार अपनी दुल्हन को देखा, तो उनके मन में यह विचार कौंध गया, 'काश लक्ष्मी मेरी दुल्हन होती!' लेकिन उन्होंने लगभग तुरंत ही इस विचार को अपने लिए पापपूर्ण सोच मानकर खारिज कर दिया।

लक्ष्मी की सुंदरता के बावजूद, माचा के पास अपनी बेटी की शादी करने के लिए आर्थिक रूप से कोई साधन नहीं था। उन्हें कुछ प्रस्ताव तो मिले, लेकिन दूल्हों की आर्थिक स्थिति उनसे बेहतर नहीं थी। श्रीनिवास श्रोत्री, जो श्रोत्री परिवार के नए मुखिया थे, ने उनसे कहा, 'एक अच्छा दूल्हा ढूंढो। मैं तुम्हें 1000 रुपये दूंगा।' नए मुखिया को

पता था कि इस घर की सारी संपत्ति माचा की मेहनत से जमा हुई है। उन्होंने छानबीन करके मांड्या के पास कोडियाला से एक दूल्हा चुना। लक्ष्मी की शादी बड़े धूमधाम से संपन्न हुई।

इसके एक वर्ष बाद भागीरथम्मा को माहवारी शुरू हुई और विधिवत रूप से उन्हें उनके पति को सौंप दिया गया। श्रीनिवासा के घर में एक बार फिर एक महिला प्रधानता का वैभव आ गया। पत्नी के आगमन के बाद भी श्रीनिवासा श्रोत्री ने अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी। वे अक्सर मैसूर जाकर किताबें खरीदते थे; संस्कृत विद्यालय के विद्वानों से उन पहलुओं की शिक्षा लेते थे जिन्हें वे स्वयं नहीं समझ पाते थे। यांकाप्पा शास्त्री ने भी श्रीनिवासा श्रोत्री को अपने ज्ञान के अनुसार पूर्ण समर्पण के साथ शिक्षा दी।

जब तत्कालीन श्रोत्री सुखमय जीवन व्यतीत करने लगे थे, तभी नंजनगुड में महामारी फैल गई। कई लोगों में माचा भी प्रभावित हुए। किसी ने उनकी पुत्री को बुलाने का संदेश भेजा, लेकिन जब तक वह पहुँची, माचा का देहांत हो चुका था। अगले दिन लक्ष्मी अपने बचपन के साथी शीनप्पा से मिलने गईं। श्रीनिवास श्रोत्री ने उन्हें बहुत सांत्वना दी और विदा लेते समय उन्हें 100 रुपये देकर कहा, 'माचा का अंतिम संस्कार अपने गाँव में करवा लेना। तुम यहाँ आती रहना। तुम इसी घर की पुत्री हो।' शीनप्पा की उदारता देखकर लक्ष्मी अचंभित रह गईं। उन्होंने उनके चरणों में प्रणाम किया और अपने पति के साथ चली गईं।

श्रोत्री की विद्या में कभी विराम नहीं लगा। उनके वैवाहिक जीवन के आरंभिक दिन भी रोमांच से भरे थे। विवाह के तीन वर्ष बाद भी भागीरथम्मा गर्भ धारण नहीं कर सकीं। तब तक श्रोत्री धर्मशास्त्र, वेद, उपनिषद और अन्य दर्शनों में काफी ज्ञान प्राप्त कर चुके थे। वे प्रतिदिन रामायण का पाठ करते थे। उनके द्वारा पढ़े गए ग्रंथों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे मानव जीवन का उद्देश्य, गृहस्थाश्रम, गृहस्थ के कर्तव्य आदि को समझने, मनन करने और याद करने के लिए गहन अध्ययन करते थे। विवाह के तीन वर्ष बाद भी संतान न होने से वे बहुत चिंतित थे। उनका मानना था कि विवाह का मूल उद्देश्य वंश को आगे बढ़ाने के लिए संतानोत्पत्ति करना है।

एक शाम लक्ष्मी उनसे मिलने आई। आते ही वह श्रोत्री के चरणों में गिर पड़ी, उनके पैर कसकर पकड़ लिए और रोने लगी। बहुत समझाने-बुझाने के बाद श्रोत्री ने उससे पूछा कि क्या बात है। उसने सब कुछ बताया। उसके पिता को धोखा दिया गया था; उसका पति जुआरी था। वह हमेशा सोने की अंगूठियां और चेन पहनता था, इसलिए माचा ने उसे नेक इंसान समझकर अपनी बेटी का विवाह उससे कर दिया था। हालांकि लक्ष्मी

के पति के पास कुछ जमीनें थीं, लेकिन उसने जुए के लिए कर्ज लेने के लिए उन्हें गिरवी रख दिया था। बीस दिन पहले मांड्या में जुआ खेलते हुए उसने अपने विरोधियों का सारा पैसा जीत लिया था। हारने वालों ने आधी रात के कुछ देर बाद उसकी हत्या कर दी और भाग गए। तीन दिन पहले पुलिस ने उनका पता लगा लिया। बेसहारा लक्ष्मी शरण लेने के लिए अपने मायके चली गई।

'सब कुछ कर्म के अनुसार होता है। चिंता मत करो लक्ष्मी। क्या यह घर तुम्हें पौष्टिक भोजन नहीं दे सकता?' शीनाप्पा ने उसे दिलासा देते हुए कहा और उसका स्वागत किया। भागीरथम्मा को भी लक्ष्मी की सहायता की आवश्यकता थी। लक्ष्मी को आपराधिक मामले की कार्यवाही में शामिल होने के लिए मैसूर अदालत में कई बार जाना पड़ा। श्रोत्री उसे वहाँ ले गई थी। अपराधियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

दो और वर्ष बीत गए। भागीरथम्मा ने गर्भधारण नहीं किया। श्रोत्री अब 24 वर्ष के थे और भागीरथम्मा 19 वर्ष की। श्रोत्री अब चिंतित थे। उन्हें वही पीड़ा हो रही थी जो रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में वर्णित निःसंतान राजाओं को होती है। लेकिन उन्होंने कभी अपनी पत्नी की निंदा नहीं की। न ही उन्होंने अपना दुख उन्हें बताया। फिर भी भागीरथम्मा उनके मन की बात जानती थीं। उनका निःसंतानपन उन्हें अंदर ही अंदर खा रहा था। उन्हें अपने पति से अत्यंत प्रेम और आस्था थी, और उनके सौम्य स्वभाव का वे बहुत आदर करती थीं। उन्होंने अनेक देवताओं के समक्ष प्रतिज्ञा की। श्रोत्री ने भगवान नंजुंदेश्वर की मूर्ति के चरणों को सोने से मढ़वाने का वचन दिया। एक वर्ष बाद, भागीरथम्मा ने गर्भावस्था की घोषणा की। यद्यपि उनके पिता उन्हें उनके जन्मस्थान ले जाने के लिए आए, जैसा कि रिवाज था, श्रीनिवास श्रोत्री ने कहा कि बेहतर होगा कि वे नंजनगुड में ही प्रसव करें। प्रसव की तारीख से तीन महीने पहले, भागीरथम्मा की मां अपनी बेटी की प्रसवपूर्व देखभाल के लिए नंजनगुड आई थीं। प्रसव के दिन नजदीक आने के साथ ही भागीरथम्मा की हालत में सुधार हो रहा था। लेकिन तीन दिन तक प्रसव पीड़ा सहने के बाद भी उनका प्रसव नहीं हुआ। स्थानीय पंडित ने उनकी जांच की और कहा कि उन्हें मैसूर ले जाना होगा। श्रोत्री ने टैक्सी बुलाई और तुरंत उन्हें मैसूर के बड़े अस्पताल ले गए। वे बहुत परेशान थे। उन्होंने अपनी कमर पर बंधी थैली में काफी चांदी के सिक्के रखे हुए थे। वे अस्पताल के प्रांगण में बेचैनी से पैर पटक रहे थे। उनके साथ बैठी लक्ष्मी उन्हें सांत्वना दे रही थीं। लगभग चार-पांच घंटे अस्पताल में भर्ती रहने के बाद डॉक्टर ने संदेश भेजा: 'हमें सर्जरी करनी होगी। अन्यथा वह जीवित नहीं रहेंगी।'

निर्देशानुसार श्रोत्री ने सभी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर दिए। ऑपरेशन थिएटर के बाहर लक्ष्मी, श्रोत्री और उनकी सास बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। नंजनगुड से कुछ लोग भी उनके साथ आ गए। श्रोत्री मन ही मन एक श्लोक दोहरा रहे थे और बस इंतजार करते जा रहे थे।

वह एक ऐसे ऋषि हैं जो मन से शांत रहते हैं।
दुःख के समय विचलित होने से बचता है
समृद्धि के समय लालच न करो
हर समय इच्छाओं, भय और क्रोध से मुक्त रहता है

तीन घंटे बाद उन्हें सूचना मिली कि ऑपरेशन सफल रहा, एक बच्चे का जन्म हुआ और महिला खतरे से बाहर है। सभी ने राहत की सांस ली। श्रोत्री लगातार उस श्लोक का पाठ करती रही।

भगीरथम्मा का अस्पताल में लगभग एक महीने तक इलाज चला। विशेष वार्ड में उनकी मां और लक्ष्मी उनके साथ रहीं। श्रोत्री हर सुबह उनसे मिलने आती और शाम तक वहीं रहतीं। अस्पताल से छुट्टी वाले दिन डॉक्टर ने विशेष रूप से श्रोत्री को परामर्श के लिए बुलाया। उन्होंने कहा, 'भ्रूण का आकार गर्भाशय की क्षमता से कहीं अधिक था। आप दोनों शारीरिक रूप से एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं। सर्जरी से उनकी जान बच गई। अगर वह दोबारा गर्भवती हुईं तो उनकी निश्चित रूप से मृत्यु हो जाएगी। अब से आपको उनके साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाना चाहिए।'

डॉक्टर को ऐसे सुगठित शरीर और कद-काठी वाले व्यक्ति को यह बात समझाने में निश्चित रूप से निराशा ही हाथ लगी होगी, जिसके चेहरे पर उसकी तंदुरुस्ती झलक रही थी। यही सलाह एक नर्स ने भागीरथम्मा को भी दी थी।

श्रीनिवासा श्रोत्री ने अपने बेटे का नाम अपने पिता के नाम पर रखा—नंजुंडा श्रोत्री। बच्चा हर तरह से अपने पिता जैसा दिखता था। भागीरथम्मा की माँ बच्चे के आठ महीने पूरे होने तक उसकी प्रसवोत्तर देखभाल के लिए वहीं रहीं।

2

अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद नवजात शिशु और उसकी माँ भूतल के एक कमरे में चले गए। श्रोत्री ऊपर के अध्ययन कक्ष में सोए। सास के अस्पताल में रहने के दौरान

श्रोत्री का मन शांत था। उनके जाते ही, मानो गश्त खत्म हो गई हो, श्रोत्री का मन अपनी पत्नी की ओर चला गया। घर में कोई नहीं होगा; लक्ष्मी दिन भर मवेशी चराएगी। उसकी पत्नी अकेली होगी। श्रोत्री जवानी में था; 26 साल का एक तंदुरुस्त युवक। लेकिन डॉक्टर ने उसे चेतावनी दी थी: 'शारीरिक रूप से आप दोनों एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं। सर्जरी ने उसकी जान बचाई है। अगर वह दोबारा गर्भवती होती है, तो उसकी निश्चित मृत्यु हो जाएगी। अब से आपको उसके साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाना चाहिए।'

डॉक्टर के शब्द श्रोत्री के मन में हमेशा एक चेतावनी की घंटी की तरह गूंजते रहते थे। वह कभी-कभी अपनी पत्नी की ओर देखते, जो बच्चे को दूध पिला रही होती थी। मोटा-ताज़ा बच्चा उसकी गोद में पूरी जगह घेर लेता और मुस्कुराते चेहरे से दूध पीता रहता। उस बड़े हो चुके बच्चे के सामने भागीरथम्मा एक किशोरी जैसी लगती। श्रोत्री को उस पर दया आती। वह उसे अपने पास बैठने के लिए कहती, 'इधर आओ।' लेकिन वह वहां से चला जाता और घर से बाहर निकल जाता। कुछ महीने इसी तरह बीत गए। वह अपने प्रेम-भाव पर काबू नहीं रख सका। यहां तक कि जब वह पूजा में शामिल होता, तब भी उसका मन अपनी सामान्य शांति खो बैठता और हवा में जलती मशाल की लौ की तरह डगमगाने लगता। वह पूजा को बीच में ही छोड़ देता, यह सोचकर कि ऐसी मनस्थिति में पूजा करने का कोई फायदा नहीं है।

भागीरथम्मा इस बात से अनभिज्ञ नहीं थीं। लेकिन वे बेबस थीं। नर्स के शब्दों ने उनके मन में भी भय पैदा कर दिया था। हालांकि उन्हें पूरा विश्वास था कि उनके पति बल प्रयोग नहीं करेंगे, फिर भी उन्होंने उनके मन की स्वाभाविक उथल-पुथल को भांप लिया था। मानो उन्हें वैवाहिक सुख न दे पाने की कमी को पूरा करने के लिए, उन्होंने और अधिक भक्ति और चिंता से उनकी सेवा करना शुरू कर दिया। कुछ और महीने बीत गए। श्रोत्री ने प्रतिदिन दूध पीना छोड़ दिया। वे हर सुबह पिछवाड़े में बगीचा लगाने के लिए खुदाई करने लगे। परिश्रम और कम पोषण के कारण, वे रात को सोते ही तुरंत सो जाते थे; सुबह होने तक उनकी नींद कभी नहीं टूटती थी। लेकिन कुछ ही महीनों में वे दुबले-पतले हो गए। उनकी शारीरिक शक्ति और आंखों की चमक लगभग मिट गई थी। एक दिन, भागीरथम्मा ने इस पर आपत्ति जताई। ‘देखो, दूध और घी का त्याग करके तुमने खुद को किस हालत में पहुंचा दिया है।’ और जब उसने उसे एक अतिरिक्त चम्मच घी दिया, तो उसने उसे टोकते हुए कहा, ‘मन को वश में रखने के लिए इन्हें त्यागना ही पड़ता है।’

भागीरथम्मा अपने पति से बहुत प्रेम करती थीं। उन्हें उनके आकर्षक शरीर पर गर्व था। तपस्या के कारण उनके पति का दुबला-पतला हो जाना उन्हें असहनीय पीड़ा देता था। एक दिन उनके मन में एक विचार आया। उनकी एक अविवाहित छोटी बहन थी। वह 12 वर्ष की थी और अभी भी अविवाहित थी। अगर वह उसे सौतन बनाकर ले आतीं, तो सारी समस्याएँ हल हो जातीं। नई पत्नी उनकी अपनी बहन होती और वह उनसे बड़ी होतीं, इसलिए उनके अधिकारों का हनन नहीं होता। लेकिन उन्हें चिंता थी कि क्या उनके माता-पिता इस बात से सहमत होंगे। एक महीने के भीतर ही श्रोत्री और भी दुबली-पतली हो गईं। भागीरथम्मा का संकल्प और भी दृढ़ हो गया। उन्होंने अपनी माँ को पत्र लिखकर डॉक्टर की सलाह, अपने पति की स्थिति और बाकी सब कुछ बताया और उनसे सलाह मांगी। भागीरथम्मा के विपरीत, उनकी बहन आकर्षक शरीर वाली थीं। एक सप्ताह के भीतर ही श्रोत्री के ससुर उनसे मिलने आए। अगले दिन, वे अपने दामाद को सैर पर ले गए। नदी पार करके वे हेज्जिगे गाँव की ओर बढ़े और धान के खेत की मेड़ पर विश्राम किया। बूढ़े व्यक्ति ने प्रस्ताव रखा, “मैं सब जानता हूँ। यह सब ईश्वर की इच्छा है। तुम कावेरी से विवाह करो; भागू भी इसके पक्ष में है। घर पर सभी सहमत हैं। दोनों बहनें आपस में सौहार्दपूर्ण रहेंगी।”
श्रोत्री अचंभित रह गया। उसने पूछा, 'क्या आप इसके लिए यहां आए हैं?'
“हाँ। भागू ने हमें पत्र लिखा था। हे भगवान! तुम्हें देखो! तुम्हारी हालत देखकर मेरा दिल कांप रहा है, तुम्हें इस हालत में देखकर। मैं सब समझ सकती हूँ।” श्रोत्री के ससुर एक अय्याश थे। हसन में उनके तीन विवाहेतर संबंध थे, और दामाद को यह बात पता थी।
दामाद चुप हो गया। इसे उसकी सहमति समझते हुए ससुर उठ खड़ा हुआ और बोला, 'कुंडली मिल रही है। मैंने जाँच करवा ली है।'
उस रात, हमेशा की तरह, श्रोत्री अपने अध्ययन कक्ष में चले गए। अब तक पढ़े गए ग्रंथ और शोधग्रंथ उनकी स्मृति में उभर आए। रामायण, जिसका वे प्रतिदिन पाठ करते थे, उनकी आँखों के सामने आ गई। उनके मन में गहरा उथल-पुथल मच गया और यह उन्हें आधी रात तक परेशान करता रहा। दो बजे जाकर यह शांत हुआ। अगली सुबह संध्यावंदन और पूजा के बाद, और अपने ससुर के नाश्ता करने के बाद, श्रोत्री उन्हें टहलने के लिए बाहर ले गए। जब वे दलावई पुल के पास नदी के सुनसान किनारे पर विश्राम कर रहे थे, तब श्रोत्री ने कहा, 'मैंने कल रात इस पर विचार किया। विवाह का मूल उद्देश्य गृहस्थधर्म का पालन करना और संतानोत्पत्ति करना है। अब मेरे पास अपने

वंश को आगे बढ़ाने के लिए एक पुत्र है। गृहस्थधर्म का पालन करने के लिए मेरी पत्नी है। दूसरी बार विवाह करना अधर्म है। मैं ऐसा नहीं चाहता।'
दामाद की गहरी समझ देखकर ससुर अचंभित रह गए। दामाद भी उन सभी आदर्शों से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की थी; शास्त्रों का भी कुछ अध्ययन किया था। परन्तु अधिकतः, उनका झुकाव भौतिक सुख की ओर था और वे उसी में पूर्णतः व्यतीत कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'फिर भी, हमें यौवन के धर्म की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। तुम्हें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। सुखी जीवन के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है। यदि तुम इस प्रकार कमजोर हो जाओगे, तो जीवन कैसे जीओगे? भागू का क्या होगा?'
दामाद अपने ससुर की बहस में नहीं झुका। वे घर लौट आए। उस रात, भागीरथम्मा अपने पिता के साथ मिलकर श्रोत्री को जीवन की राह पर चलने के लिए मनाने लगीं। फिर भी वह नहीं माना। ससुर दो दिन और वहीं रुके रहे। उन्होंने घर की स्थिति का जायजा लिया, घर में रहने वाली नौकरानी लक्ष्मी को देखा और अंततः जाने की घोषणा कर दी। उन्होंने अपनी बेटी को गुप्त रूप से अपने द्वारा सोचे गए समाधान के बारे में बताया, अपने चरणों में श्रद्धापूर्वक प्रणाम करने वाले दंपति को आशीर्वाद देने के लिए एक मंत्र का जाप किया, उन्हें दी जाने वाली चौड़ी किनारी वाली धोती ग्रहण की, अपने पोते की हथेली में एक सोने का सिक्का रखा और अपने शहर के लिए रवाना हो गए।

3

श्रोत्री के मन में जीवन के उन आदर्शों और मानवीय सहज प्रवृत्ति की अदम्य शक्ति के बीच निरंतर संघर्ष चल रहा था जिन पर वह विश्वास करता था। कुछ समय पहले आत्म-अध्ययन के दौरान उसे यह ज्ञान प्राप्त हुआ था कि मनुष्य के लिए प्रकृति के बंधन से मुक्त होने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है। इस ज्ञान का प्रमाण अब उसके जीवन के दायित्वों के निर्वाह और प्रकृति के प्रभुत्व पर विजय प्राप्त करने में प्रकट होना था। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसने स्वयं को अपनी पूरी क्षमता से समर्पित कर दिया। वह अपना अधिकांश दिन परिश्रम में व्यतीत करता था। शेष समय वह अध्ययन में लगाता था। जब भी उसका मन शांत होता, वह इसे अपनी जीत समझता और प्रसन्न होता। लेकिन एक-दो घंटे के भीतर ही उसका मन फिर से विक्षिप्त हो जाता। जिन सुंदर स्त्रियों को उसने देखा और जिनके बारे में सुना था, उनके चेहरे उसकी आँखों के सामने

आ जाते। उसे ऐसा लगता कि वह उनसे संबंध स्थापित कर रहा है। कभी-कभी यह भ्रम इतना प्रबल हो जाता कि उसे अपने कंधों पर किसी कोमल भुजा का आलिंगन महसूस होता। जैसे-जैसे उसका अंतरात्मा इन अभिव्यक्तियों का विरोध करने का प्रयास करता, वैसे-वैसे उसकी अतृप्त इच्छाएँ और मर्दाना पौरुष अंतरात्मा की कोमल डोर को तार-तार करते हुए महाशक्ति से उमड़ पड़ते। एक-दो घंटे बाद, जब उसके मन की धारा शांत होकर बहने लगती, तो वह पश्चाताप करता। उसके स्वास्थ्य में और भी गिरावट आई।

उसके पिता ने जो समाधान बताया, वह उसे पसंद नहीं आया, लेकिन भागीरथम्मा को डर था कि अगर उसका पति, जिसने दूसरी शादी का प्रस्ताव ठुकरा दिया था, अपनी पुरानी आदतों पर चलता रहा और दिन-ब-दिन फिजूलखर्ची करता रहा, तो स्थिति गंभीर हो सकती है। उसके पिता व्यावहारिक व्यक्ति थे; उनका सुझाव भी व्यावहारिक था। भागीरथम्मा ने अनाथ लक्ष्मी की स्थिति पर विचार किया। उसने चार साल वैवाहिक सुख का अनुभव किया था। क्या वह शारीरिक सुखों के लिए तरस नहीं रही होगी? अगर वह मेरे पति की सेवा करती है, तो किसी बाहरी व्यक्ति को पता नहीं चलेगा। बस इस बात का ध्यान रखना है कि वह गर्भवती न हो। अगर गर्भधारण में कोई चूक हो जाती है, तो उसे कोमल बांस की कोंपलें, केले का तना और कच्चा पपीता खिलाकर ठीक किया जा सकता है। अगर चिकित्सा उपचार की आवश्यकता हो, तो हसन में एक स्थानीय वैद्य है, जिसे उसके पिता अच्छी तरह जानते हैं... भागीरथम्मा सोचती रही। नौकरानियों या अन्य महिलाओं का भरण-पोषण करने वाले पुरुष कोई अनसुनी बात नहीं थी। उसके पिता, दादा और चाचा अपनी सामर्थ्य के अनुसार कई बार संबंध रखते थे। पिता अभी भी संबंध रख रहे थे; फिर भी, उसकी माँ घर पर अपने बच्चों से खुश थी।

भागीरथम्मा और लक्ष्मी एक ही शयनकक्ष में रहती थीं। रात में अगर बच्चा जाग कर रोने लगता, तो लक्ष्मी ही उसकी देखभाल करती थीं। एक रात भागीरथम्मा ने उनसे पूछा, 'यह तो बहुत कमजोर होता जा रहा है। क्या आप जानती हैं क्यों?'

‘मुझे कैसे पता चलेगा, अम्मा?’

'मुझे बताने में कोई हर्ज नहीं है,' भागीरथम्मा ने कहा और उसकी आँखों में देखा।

‘मैसूर से लौटने पर तुमने खुद मुझे इसके बारे में बताया था। तुमने मुझे अपने पिता की हालिया यात्रा के बारे में भी बताया था।’

'ओह, यह बात मेरे दिमाग से निकल गई थी।'

वह बातचीत आगे नहीं बढ़ी। थोड़ी देर बाद भागीरथम्मा ने उसे वापस बातचीत में शामिल करते हुए कहा, 'सुनो।'
'बताइए, अम्मा।'
मैंने इस बारे में काफी सोच-विचार कर लिया है। उसे जीवित रहना चाहिए। आप भी यही चाहते हैं, है ना?
'आप कहना क्या चाहती हैं, अम्मा! अगर शीनाप्पा मर गया, तो क्या मैं जीवित रह पाऊँगी?'
'किसी बाहरी व्यक्ति को इसके बारे में पता नहीं चलेगा। तुम उसकी सेवा करो। उसकी पत्नी होने के बावजूद किसी काम का न होना मेरी नियति है।' उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने आगे कहा, 'एक दिन तुम घर पर नहीं थे। बच्चा सो रहा था। उसका चेहरा देखते ही मैं समझ गई। डॉक्टर की बातें झूठी हो सकती हैं। एक बार ऐसा होने से कोई नुकसान नहीं होगा। चलो," मैंने उसे प्रोत्साहित किया। उसने कहा, "डॉक्टर को झूठ बोलने का क्या कारण होगा? दुर्भाग्य से, एक बार भी ऐसा होना घातक साबित हो सकता है। डॉक्टर की चेतावनी के बावजूद, क्या मैं तुम्हें मरने के लिए ऐसा करूंगा?" उसने कहा और पिछवाड़े की ओर चला गया।'
भागीरथम्मा के सुझाव से लक्ष्मी आश्चर्यचकित रह गई। वह सोचने लगी कि भला कोई पत्नी ऐसा विचार कैसे सोच सकती है। लक्ष्मी शीनप्पा को बचपन से जानती थी। वह उनके नेक चरित्र का आदर करती थी और उनके प्रति श्रद्धा रखती थी। अपने संक्षिप्त वैवाहिक जीवन में, जब भी उनके पति जुआ खेलने जाते, शीनप्पा उनकी यादों में आ जाते। उन्होंने कई बार कामना की थी कि उनके पति भी शीनप्पा जैसे होते। पति की हत्या के बाद जब वह शीनप्पा के पास लौटीं, तो वह बहुत दुखी हुईं। लेकिन उनके मित्रवत व्यवहार और भागीरथम्मा की सरलता के कारण उन्होंने जल्द ही अपना धैर्य वापस पा लिया। प्रेम ने उन्हें बेचैन कर दिया था। भले ही उनके पति जुआरी और शराबी थे, फिर भी उनके बिना जीवन जीना उनके लिए मुश्किल था। जब वह मवेशी चराती थीं, तो कई चरवाहे उन्हें कामुक निगाहों से देखते, लेकिन उनका मन इन प्रलोभनों से दूर रहता था। लेकिन शीनप्पा के प्रति उनके मन में हमेशा एक मधुर भावना और एक अनूठा आकर्षण बना रहता था। हालांकि यह कभी भी महज प्रेमपूर्ण नहीं था।
उसने भागीरथम्मा के प्रस्ताव को नहीं माना। भागीरथम्मा रोज़ वही बात दोहराती रही, और पंद्रहवें दिन लक्ष्मी ने कहा, 'अगर वह मान जाए, तो ठीक है!' इसके बाद कुछ दिनों तक लक्ष्मी शीनप्पा का चेहरा देख भी नहीं पाती थी। तब तक वह उससे ऐसे बात करती

थी जैसे किसी बचपन के दोस्त से करती हो। शीनप्पा को भी इससे कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन जब हाल ही में लक्ष्मी ने उससे आदरपूर्वक बात करना शुरू किया, तो शीनप्पा भले ही हैरान हुआ, पर उसने इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। एक रात भोजन के बाद, भागीरथम्मा ने श्रोत्री का हाथ पकड़कर कहा, 'मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ है। तुम्हें मान जाना चाहिए।'
'यह क्या है?'
आपको अपनी सहमति देनी चाहिए और इससे पीछे नहीं हटना चाहिए।
'क्या यह शादी का प्रस्ताव है? तुम पागल हो गए हो। मेरे बारे में ऐसी क्या बात है जो तुम्हें इतना परेशान कर रही है कि तुम यह सब कर रहे हो?'
'नहीं, शादी नहीं,' उसने उसे अपने पास बैठाया और अपना प्रस्ताव उसके सामने रखा।
अचंभित होकर श्रोत्री ने कहा, 'तुम्हें क्या लगता है लक्ष्मी कौन है?'
उसने सहमति दे दी है। वह भी यही चाहती है।
व्याकुल श्रोत्री अपनी पत्नी के चेहरे पर टकटकी लगाए देखता रहा। भागीरथम्मा ने कहा, 'मैं आपकी वैवाहिक सेवा नहीं कर सकती। जो प्रस्ताव है, वह कोई नई बात नहीं है। मेरी माँ के रहते हुए भी मेरे पिता की तीन रखैलें हैं। किसी भी अप्रिय घटना के लिए निश्चित उपाय हैं। आपको अपना शरीर पुनः प्राप्त करना चाहिए। क्या यह नहीं कहा जाता कि चिंता मनुष्य की नश्वरता है?' श्रोत्री ने अपनी पत्नी की बातें ध्यान से सुनीं। 'आज रात लक्ष्मी ऊपर चली जाएगी। मैंने उसे निर्देश दे दिए हैं। आप वहीं जाइए।'
श्रोत्री कुछ नहीं बोले। उनका मन प्रेम में डूब गया। विवाह के बाद के दिनों में, यहाँ तक कि पत्नी की हाल की बीमारी के बावजूद भी, उन्होंने लक्ष्मी को कभी अपने साथ बिस्तर पर नहीं देखा था। वे लक्ष्मी के प्रति मित्रवत थे और उनके प्रति सहानुभूति रखते थे। उसी घर में जन्मी और उस घर के सुख-दुखों से भली-भांति परिचित लक्ष्मी ने उसी घर की सहायता से अपना परिवार बसाया था और अंततः उसी घर में खाली हाथ लौटी थीं। अब तो उन्होंने भी भागीरथम्मा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था। उनकी पत्नी ने इसके लिए सारी व्यवस्था कर दी थी। उन्हें एक शब्द में भी सहमति देने की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें बस सीढ़ियाँ चढ़नी थीं, और वहाँ उनका इंतज़ार एक ऐसा आनंद कर रहा था जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी; एक ऐसा परम सुख जो हर मनुष्य अपने आप पाना चाहेगा। क्या इसका विरोध करना सरासर मूर्खता नहीं थी?

खिड़कियों से ठंडी हवा बह रही थी। कभी-कभी तेज़ हवा का झोंका आता था, पर ताजगी भरा होता था। लक्ष्मी श्रोत्री के शयनकक्ष से सटे कमरे में थी। श्रोत्री अपने पलंग पर बैठा था, उसका मन व्याकुल था। प्रकृति के सभी छिपे हुए गुण अपने चरम पर पहुँच गए थे और उसके मन के रंगमंच पर उफान मार रहे थे। उसका मन लक्ष्मी के प्रति इस तरह मोहित था जैसा उसने पहले कभी नहीं किया था। लक्ष्मी बलवान पुरुष माचा और नीलगिरी की एक सुंदर स्त्री की संतान थी; उसकी माँ एक खूबसूरत महिला थी। 23 वर्ष की लक्ष्मी अब पूर्ण विकसित और बेहद आकर्षक थी। वह पूरी तरह खिल उठी थी, और उसकी त्वचा की चमक कूर्ग के पके संतरों की याद दिलाती थी। वह श्रोत्री के कद और बलवान शरीर के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी। हालाँकि वह अपने आप को साड़ी के पल्लू से पूरी तरह ढक लेती थी, फिर भी उसके आकर्षक रूप-रंग किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना नहीं रह पाते थे। अब वह कमरे में अपने पलंग पर लेटी थी, संभवतः श्रोत्री का इंतजार कर रही थी। वह बाहरी दुनिया की चिंता किए बिना उसके साथ आनंद मना सकता था। उसका शरीर हल्का-हल्का कांप रहा था। उसका मन प्रेममय विचारों में डूबा हुआ था और उसकी सांसें तेज हो रही थीं।

लक्ष्मी चार वर्षों की विधवा अवस्था में खोए और उपेक्षित वैवाहिक सुख की मीठी उम्मीद में प्रतीक्षा कक्ष में लेटी हुई थी। शीनप्पा आएंगे, और जब वे आएंगे, तो मैं उनसे क्या बात करूंगी? उनसे कैसे व्यवहार करूंगी? वे बचपन से ही शांत और संयमित स्वभाव के रहे हैं। घर के मुखिया होने के नाते, उन्होंने हमेशा मेरी भलाई का ध्यान रखा है। अब, पत्नी के साथ शारीरिक संबंध समाप्त होने से वे गहरे दुखी हैं। अब से, हमारा रिश्ता अंत तक कायम रहेगा। लक्ष्मी इन्हीं विचारों में डूबी हुई थी, और इस सब में पाप के प्रश्न से वह बिल्कुल भी विचलित नहीं थी। वह अपने आगामी रिश्ते को विवाह के समान मान रही थी। शीनप्पा के कमरे से बेचैनी की आवाज सुनाई दी। वे अपने बिस्तर से उठ गए होंगे। कदमों की आहट सुनाई दी। उसका शरीर कांप उठा। वह लेटी हुई स्थिति से उठी और सिर झुकाए बैठ गई।

श्रोत्री अपने कमरे में खड़े हुए। वे प्रतीक्षालय की ओर दो कदम चले। ठंडी हवा के बावजूद उन्हें पसीना आ रहा था। पाँच मिनट में ही उनकी धोती पसीने से भीग गई। उनके सीने और पीठ पर पसीने की बूँदें लगातार बह रही थीं। उन्होंने धोती के फाहे से अपना चेहरा और शरीर का पसीना पोंछा और खिड़की के पास खड़े हो गए। बाहर अँधेरा था, लेकिन अँधेरे आकाश में तारे चमक रहे थे। अपनी चमक कभी न खोने वाले

ये तारे अनादि काल से जगमगा रहे हैं। श्रोत्री दूसरे दरवाजे से बाहर निकले, बालकनी में गए और आकाश की ओर देखा। सप्तर्षि मंडल, अर्थात् उर्स मेजर, स्पष्ट रूप से चमक रहा था; पास ही अरुंधति भी चमक रही थी। उन्होंने उत्तर दिशा की ओर देखा। ध्रुव तारा अपने शाश्वत स्थान से सदा की तरह कोमल चमक रहा था। उनका मन सात ऋषियों, अरुंधति और ध्रुव तारे के काल का अनुमान लगाने का प्रयास कर रहा था। उसने यह सोचकर इसे छोड़ दिया कि यह एक व्यर्थ प्रयास है। उसका मानना था कि उनका कोई उद्गम या अंत नहीं है। उसका मन धीरे-धीरे शांत होता जा रहा था। लगभग आधे घंटे तक वह उस बालकनी में खड़ा रहा। उसके पैरों में दर्द होने लगा। वह धीरे-धीरे अपने कमरे में गया और बिस्तर पर लेट गया।

दस मिनट में उसका मन फिर से अशांत हो गया। लक्ष्मी का रूप उसके सामने आ गया। उसे पूर्ण नग्न अवस्था में कल्पना करते हुए, उसका मन उसके साथ अनेक प्रकार के यौन संबंध बनाने लगा। लगभग दस मिनट तक उसका मन और विवेक अंतरात्मा के नियंत्रण में नहीं रहे। उसे फिर से पसीना आने लगा। उठकर वह प्रतीक्षालय की ओर चलने लगा।

लक्ष्मी की नसों में उत्सुकता से रक्त का प्रवाह तेज़ी से दौड़ रहा था। शीनप्पा का अपने कमरे में बेचैनी से इधर-उधर घूमना, बालकनी में जाना, वहाँ से लौटकर बिस्तर पर लेटना, फिर उठकर इधर-उधर घूमना, ये सब उसके मन में दर्ज हो रहा था। वह तो यहाँ तक सोचने लगी कि कहीं शीनप्पा शर्म से क्यों हिचकिचा रहा है, ऐसे में उसे वहाँ जाने की हिम्मत क्यों करनी चाहिए। उसके सारे अंग उत्तेजित थे और शांत होने के लिए तड़प रहे थे। शरीर की स्वाभाविक संरचना में उनका अपने आप शांत होना शामिल नहीं था। वे केवल पुरुष के वैवाहिक साथ में अपनी दबी हुई तीव्र इच्छाओं को पुनः जागृत करके ही शांत हो सकते थे।

भागीरथम्मा, जो नीचे अपने कमरे में अपने बच्चे के साथ लेटी थी, सोई नहीं थी। उसके पति को ऊपर गए लगभग डेढ़ घंटा हो चुका था। अब तक वह लक्ष्मी के साथ शारीरिक संबंध बना चुके होते। उसके मन में उभर रहे प्रासंगिक विवरणों को वह सहन नहीं कर पा रही थी। उसकी आँखों में आँसू भर आए और वह रोने लगी। लेकिन ऊपर किसी को उसकी रोने की आवाज़ सुनाई न दे, इसलिए उसने अपनी साड़ी का पल्लू मुँह में दबा लिया। उसके मन में भी अपने पति की तरह शारीरिक इच्छाएँ थीं। डॉक्टर ने उसे केवल दोबारा गर्भधारण करने से मना किया था। शारीरिक इच्छाएँ अभी भी जागृत थीं। एक बच्चे की माँ होने के नाते, उसने किसी तरह इन इच्छाओं को काबू में रखा था। हालाँकि

उसका शरीर अपने पति की तरह युवा नहीं था, फिर भी शारीरिक इच्छाएँ उस पर हावी थीं। यह उसके जीवन की सबसे दुख भरी रात थी, लेकिन यह वही रात थी जिसकी उसने स्वयं कल्पना की थी। उसके पति का स्वास्थ्य और उसकी घटती शारीरिक शक्ति उसकी यादों में ताज़ा हो गई। यह पूरी तरह संभव था कि वह जल्द ही मानसिक बीमारी का शिकार हो जाता। दूसरी शादी न करने के उसके फैसले ने उसके मन में उसके प्रति गहरा प्रेम जगा दिया था। उसे अपने पिता के अन्य परिवार और अपनी माँ की मानसिकता याद आ गई। उसने मन की शांति पाने की कोशिश की। अत्यंत कोमलता से उसने अपनी हथेली गोद में बैठे बच्चे पर रखी और उसे जगाए बिना उसके सिर को चूमा।

श्रोत्री ने एक बार फिर अपने चेहरे और शरीर से पसीना पोंछा। हवा से अपनी धोती का कॉलर संभालते हुए उन्होंने लालटेन जलाई। अपने पलंग पर बैठी लक्ष्मी को श्रोत्री के कमरे में रोशनी जलने का पता चला। 'वह किसी भी क्षण यहाँ आ जाएँगे, या मुझे अपने कमरे में बुला लेंगे,' उसने मन ही मन कहा। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई और उसका रंग और भी गुलाबी हो गया। उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं।

एक पल के लिए श्रोत्री ने लक्ष्मी को अपने कमरे में बुलाने का सोचा। लेकिन उनकी ज़बान मानो बेजान सी थी। इसलिए वे खुद ही लक्ष्मी के पलंग की ओर कुछ कदम चले। तभी उन्हें शर्मिंदगी का एहसास हुआ और वे खुद को देख नहीं पाए। अपने भीतर छिपी शर्मिंदगी को बुझाने के लिए, जो अब उन्हें कुचल रही थी, उन्होंने लालटेन की लौ बुझा दी। लक्ष्मी को पता चला कि शीनप्पा ने ऐसा दुविधा में किया है, इसलिए उन्होंने सोचा कि क्या उनके लिए उनसे बात करना ज़रूरी है। कमरे में कदमों की आहट सुनाई दी। उनके चरणों में बैठने के इरादे से वे उठ खड़ी हुईं। धीरे-धीरे चलते-चलते जब वे उनके कमरे के दरवाजे पर पहुँचीं, तब तक वे उत्तेजना से ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगी थीं। उन्हें एक अनजान डर भी सता रहा था। एक कदम भी आगे न चल पाने के कारण वे दरवाजे के पास ज़मीन पर गिर पड़ीं।

तब तक हवा बहुत तेज़ चलने लगी थी। खिड़की का शीशा दो बार ज़ोर से बंद हुआ। खिड़की बंद करने की इच्छा से श्रोत्री ने लालटेन जलाने के लिए माचिस जलाई, लेकिन हवा उसे उड़ा ले गई। इसी बीच उसकी नज़र लक्ष्मी पर पड़ी। उसे ऐसा लगा मानो मनुष्य के प्रेम भाव का सैलाब उमड़ पड़ा हो। उस अंधेरे में वह लक्ष्मी की ओर बढ़ा, लेकिन जल्द ही ज़मीन पर गिर पड़ा, मानो किसी अनजान डर ने उसे जकड़ लिया हो।

उसके पैरों में चलने की ताकत नहीं बची थी। वह आधे घंटे से ज़्यादा समय तक उसी हालत में बैठा रहा। लक्ष्मी दरवाज़े के पास ही बैठी रही। श्रोत्री धीरे-धीरे उठा और दूसरे दरवाज़े से बालकनी में चला गया।
अगले एक घंटे तक वह आकाश को निहारता रहा। तब तक उसका मन शांत हो चुका था। एक पल के लिए उसने प्रतीक्षालय की ओर देखा। वह अब उसके कमरे के दरवाजे के पास नहीं बैठी थी। चुपचाप वह दरवाजे तक गया और प्रतीक्षालय का दरवाजा बंद कर दिया। फिर उसने खिड़की और दूसरा दरवाजा बंद किया, लालटेन जलाई और किताबों की अलमारी की ओर चल पड़ा। उसने एक सफेद जिल्द वाली किताब निकाली और बाघ की खाल की चटाई पर बैठ गया। यह सांख्यकारिका थी। वह सीधे उस भाग पर गया जिसमें प्रकृति और आत्माओं के बीच संबंध का वर्णन था।
नाट्य सिद्धांत, नाट्य रंगमंच से स्वतंत्र रूप से।
पुरुषस्य तथात्मानं विनिवर्तते प्रकृतिः||

जिस प्रकार एक नर्तकी दर्शकों के सामने प्रदर्शन करने के बाद खुद को क्षमादान देती है, उसी प्रकार प्रकृति भी आत्माओं को अपने गुणों से अवगत कराने के बाद खुद को क्षमादान देती है।
श्रोत्री का मन इस प्रश्न में उलझा हुआ था कि प्रकृति का उद्देश्य क्या है; उसका अंतिम लक्ष्य क्या है। एक और श्लोक इस प्रकार था:
प्रकृतेः सुकुमारतरं न किञ्चिदस्ति मे मतिर्भवति|
हे पुरुषस्य को जन्म देने वाले प्रभु,

प्रकृति के समान शांत और सौम्य कुछ भी नहीं है। एक बार आत्मा उसे देख ले तो मोहित हो जाती है; और यह मोहित होना बंधन है! आत्माओं को कष्ट से बचाने के लिए, प्रकृति फिर उनसे दूर रहने का फैसला करती है। इसका अर्थ यह है कि प्रकृति हम पर तभी तक शासन करती है जब तक हमें विवेकपूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता। मुझे ऐसा ज्ञान कब प्राप्त होगा? श्रोत्री ने ऐसा सोचा और भली-भांति जानते थे कि ऐसा ज्ञान केवल बुद्धि का गुणधर्म नहीं है। वे इस बात पर विचार करते रहे कि क्या प्रेम के जाल के भ्रम से मुक्त होना ही ज्ञान का सूचक है, या ज्ञान की चमक ही बंधन को पिघला देगी।
लंबे इंतजार से परेशान लक्ष्मी नीचे वॉशरूम जाने के लिए गई। जब वह सीढ़ियाँ चढ़ी तो भागीरथम्मा ने उसकी आवाज़ सुन ली। एक स्त्री होने के नाते, वह समझ गई कि एक

स्त्री को बाथरूम जाने की ज़रूरत होती है। एक बार फिर, चीख उसके मुँह से निकल आई, जिसे वह दबाने की कोशिश कर रही थी। उसने सोने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुई।

इंतज़ार करते-करते थक चुकी लक्ष्मी अपने बिस्तर पर लेट गई। वह शीनप्पा के स्वभाव को भली-भांति जानती थी। उसे अंदाज़ा था कि उसके मन में धर्म और कर्म के विचार उमड़ रहे होंगे। लेकिन लक्ष्मी को उनके बीच होने वाले इस मिलन में कुछ भी अनैतिक नहीं लगा। यह आपसी सहमति का परिणाम था, स्वयं भागीरथम्मा ने इसका प्रस्ताव रखा था, और डॉक्टर की सलाह के अनुसार, इस जोड़े को मिलन से दूर रहना चाहिए था, इसलिए यह व्यवस्था सांसारिक ही थी। शीनप्पा का संकोच अजीब लग रहा था। लक्ष्मी के मन की बेचैनी कम हो रही थी। उत्तेजना शांत हो गई और कंपकंपी रुक गई। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर भी, उसके मन के एक कोने में आशा बाकी थी। उसका मन उस आशा को भी कुचलकर नींद में डूबने को तैयार नहीं था।

श्रोत्री रात के 2:30 बजे तक पढ़ते रहे। अब उनका मन शांत था। शरीर उनके वश में था। नींद गायब हो गई थी। उन्होंने किताब बंद की, दीपक जला रहने दिया, धीरे से सीढ़ियाँ उतरीं और नदी की ओर चल पड़े। कपिला नदी शांत भाव से बह रही थी। कुछ देर वे नदी किनारे पर पैर पानी में डुबोकर बैठे रहे। आकाश में चाँदनी जगमगा रही थी। महीने के दूसरे पखवाड़े का दसवाँ दिन था और चाँद कटे हुए आंवले के आकार का था। उन्होंने उन्हीं कपड़ों में नदी में स्नान किया, फिर उन्हें निचोड़कर सुखाया, वही कपड़े पहने और घर लौट आए। तब तक उनकी पत्नी सो चुकी थीं। वे पूजा कक्ष में गए और खुद को अंदर बंद कर लिया। उन्होंने माथे पर भस्म लगाई। नियमित संध्यावंदन के बाद, उन्होंने धीरे-धीरे 1008 गायत्री मंत्रों का जाप शुरू किया। फिर उन्होंने चंदन को थोड़ा रगड़ा, बाहर निकले, पिछवाड़े से कुछ फूल तोड़े और पूजा कक्ष में लौट आए। भगीरथम्मा, जो सुबह तड़के तक जागते थे, गहरी नींद में सो रहे थे। जब श्रोत्री ने सुबह 9 बजे पूजा समाप्त की, तो उन्होंने अंतिम बार भगवान के समक्ष प्रणाम किया और मन ही मन इस सूत्र का जाप किया: धर्मो रक्षति रक्षितः (जिसकी रक्षा की जाती है, धर्म उसकी रक्षा करता है)।

जब तक श्रोत्री पूजा कक्ष से बाहर निकले, उनकी धोती सूख चुकी थी। भागीरथम्मा स्नान कर चुकी थीं और खाना बना रही थीं। पूजा कक्ष का दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर वे वहाँ गईं और अपने पति से रुकने को कहा। उन्हें कुछ समझ नहीं आया, इसलिए वे मान गए। वे उनके पास गईं, उनके चरणों में प्रणाम किया और बोलीं, 'लक्ष्मी ने मुझे सब कुछ बता दिया। मुझे नहीं पता था कि आप इस तरह भावविभोर हैं।' श्रोत्री अभी भी सुबह की पूजा के आनंद में डूबे हुए थे। उन्होंने कुछ नहीं कहा। उनका मन एक अथाह परमानंद से भरा हुआ था, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता था। वे चुपचाप पिछवाड़े की ओर चले गए और क्यारियों से पौधे साफ करने और उन्हें पानी देने में जुट गए।

दोपहर के भोजन के समय उन्होंने कहा, 'मैंने पौष्टिक भोजन करने और शारीरिक इच्छाओं पर नियंत्रण रखने का संकल्प लिया है। मुझे विश्वास है कि मैं इसमें सफल होऊंगा। आज से तुम मुझे घी और दूध पिलाओ।' छाछ में चावल खाते हुए उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा, 'तुम्हें यह विचार कैसे आया?'

जब वह यहाँ थे, तो मेरे पिता ने मुझे यही सलाह दी थी। उन्होंने कहा था, "तुम्हें पुरुषों के अच्छे स्वास्थ्य के तरीके नहीं पता। जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो।"

श्रोत्री मन ही मन मुस्कुराए और कुछ नहीं बोले। उन्होंने पौष्टिक भोजन करना शुरू कर दिया। उन्होंने मैसूर में पढ़ाई के दौरान की तरह ही हर सुबह योगाभ्यास करना शुरू कर दिया। वे अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय अध्ययन कक्ष में बिताने लगे और उनकी पुस्तकों का संग्रह लगातार बढ़ता गया।

श्रोत्रि के बाद, लक्ष्मी की बारी थी शारीरिक रूप से कमजोर होने की। उस रात के बाद, वह फिर से भागीरथम्मा के कमरे में सोने लगी। लेकिन धीरे-धीरे उसकी खान-पान में रुचि कम होती गई। विधवा होने के बाद एक साल में उसे जो मानसिक शांति मिली थी, वह अब मानो गायब हो रही थी। वह जहाँ भी खड़ी होती, जहाँ भी जाती, शीनप्पा का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ जाता। उसका मन हमेशा काल्पनिक शारीरिक सुख में डूबा रहता। नहाते समय, वह अपने शरीर के सुडौल आकार को निहारती और मंत्रमुग्ध हो जाती। वह शीनप्पा के अजीब व्यवहार से परेशान रहती। उसने उससे बात करना भी बंद कर दिया; वह उससे बचने लगी। शीनप्पा ने भी यह देखा, लेकिन उसने कभी भी उससे बात शुरू करने की पहल नहीं की।

एक महीने में ही वह दुबली-पतली हो गई और मानसून के मौसम में गाय जैसी हो गई। उसकी गाल की हड्डियाँ उभरने लगीं। उसकी फुर्तीली चाल गायब हो गई और उसके

कदम भारी हो गए। जीवन का कोई अर्थ नहीं रह गया था और उदासी ने उसके मन को घेर लिया था। उसकी आँखें धँस गईं और उनकी चमक फीकी पड़ गई। श्रोत्री को इन बदलावों का पता नहीं चल सका क्योंकि वह कभी उसके सामने प्रकट नहीं हुई। भागीरथम्मा ने यह सब देखा और पूछा, 'लक्ष्मी, तुम्हें क्या हो गया है? क्या किसी ने तुम्हें जहर दिया है?' लक्ष्मी ने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। भागीरथम्मा यह समझ नहीं पाई कि उसका मन एक भयंकर संघर्ष का मैदान बन गया था।

एक दिन लक्ष्मी को बुखार हो गया। यह बुखार रात भर बना रहा। श्रोत्री को इसका पता तब चला जब भागीरथम्मा ने उन्हें बताया। वे अंदर गए, उनकी नब्ज़ जाँची और उनके चेहरे को देखा। वे सब कुछ समझ गए। डेढ़ महीने पहले उनका चेहरा भी ऐसा ही था। चंदन और सिंदूर लगाते समय उन्होंने दर्पण में यह देखा था। उस समय उन्होंने कुछ नहीं कहा। वे पंडित को बुला लाए। लक्ष्मी का बुखार पखवाड़े भर तक रहा। उन दिनों श्रोत्री उनके बिस्तर के पास ही रहे। रात में वे अपना पलंग वहीं समेटकर सो जाते थे। वे पंडित द्वारा बताई गई दवाइयाँ और आहार बड़ी सावधानी से देते थे। उन दिनों वे अपने संध्यावंदन और पूजा-अर्चना के नियमित कार्यक्रम का पालन नहीं कर पाए। वे मन ही मन कुछ मंत्रों का जाप करते थे। इसी बीच भागीरथम्मा को मासिक धर्म हो रहा था, इसलिए श्रोत्री को खाना पकाने का काम भी करना पड़ा। बुखार की गर्मी से लक्ष्मी की साड़ी पर धूल जम जाती थी, और श्रोत्री खुद उसे साफ करके उसे साफ साड़ी पहनाते थे। बेहोशी की हालत में लक्ष्मी कभी-कभी धीमी आवाज़ में कहती थीं, 'शीनप्पा, अगर आप मुझे छोड़ देंगे, तो मेरी मदद कौन करेगा? क्या मेरी वैवाहिक जीवन की इच्छा नहीं है? आपने ऐसा क्यों किया?'

सोलहवें दिन उसका बुखार उतर गया। होश में आने पर उसने देखा कि शीनप्पा उसके पास उसकी देखभाल कर रहे हैं। वह थोड़ी झिझकी, लेकिन शीनप्पा ने अपने मधुर शब्दों से उसे दिलासा दिया। एक सप्ताह बाद लक्ष्मी अपने बिस्तर पर बैठ सकी। श्रोत्री ने अपनी पत्नी से कहा, 'अब मुझे लक्ष्मी को कुछ सांत्वना देनी है। तुम कुछ देर के लिए दूर रहो।' फिर वह अंदर गए और लक्ष्मी के हाथ पकड़ लिए। लक्ष्मी आश्चर्य से सिर झुका बैठी। अभी भी उसके हाथ पकड़े हुए श्रोत्री ने कहा, 'लक्ष्मी, मनुष्य के लिए मरना आसान है, लेकिन फिर से उठना मुश्किल। हर मनुष्य को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है। पारिवारिक सुख के साथ भी ऐसा ही है। धर्म ने तय किया है कि पत्नी होने के बावजूद मैं इस प्रकार जीवन व्यतीत करूँ। उसी धर्म ने तुम्हें विधवा बनाया है। तुम अभी लगभग 24 वर्ष की हो और मैं 28 वर्ष का। यदि हम उन सुखों के वश में हो जाते हैं

जो अब से लगभग दो दशकों से अधिक समय तक नहीं टिकेंगे, तो हम धर्म का उल्लंघन करेंगे।' हमें संयम बरतना चाहिए, भले ही इसका पालन करना कठिन लगे। आप भी जानते हैं कि यदि हम धर्म का उल्लंघन करेंगे, तो पिछले सात प्रमुख नरक में गिरेंगे। हमारे पूर्वजों को हमारी वजह से कष्ट न सहना पड़े, है ना?

लक्ष्मी ने कुछ नहीं कहा। वह उनके शब्दों पर मनन करती रही। श्रोत्री ने आगे कहा, 'मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगी। मैं तुम्हारा हाथ थामकर तुम्हें यह आश्वासन देती हूँ। अब से तुम्हें प्रतिदिन सुबह स्नान करना होगा। मैं तुम्हें पूजा के बाद तीर्थ दूंगी। इसे पूरी श्रद्धा से ग्रहण करना। तुम्हें मन की शांति मिलेगी। अब से तुम मेरी प्रतिदिन की पूजा के लिए फूल तोड़ो। प्रतिदिन सुबह गायों की पूजा करना।'

कुछ ही दिनों में लक्ष्मी स्वस्थ हो गई। वह श्रोत्री से बचपन के दोस्त की तरह बातें करने लगी—जैसे पहले करती थी। एक दिन श्रोत्री ने लक्ष्मी को एक दस्तावेज़ देते हुए कहा, 'लक्ष्मी, किसी की भी ज़िंदगी अमर नहीं होती। जब तक मैं जीवित हूँ, तुम्हारी देखभाल करूँगा। लेकिन अगर मुझे कोई विपत्ति आ जाए, तो तुम्हें कोई कष्ट नहीं उठाना। मैंने हेज्जिगे फार्म के पूर्वी कोने में दो एकड़ ज़मीन तुम्हारे नाम पर पंजीकृत करवा दी है। इस दस्तावेज़ को अपनी कार की डिग्गी में सुरक्षित रखना। यह रिकॉर्ड सरकारी दफ्तर में भी उपलब्ध है। अगर यह दस्तावेज़ खो भी जाए, तो भी सरकारी रिकॉर्ड तो रहेगा ही।'

लक्ष्मी की आंखें नम हो गईं। 'ये सब क्यों, शीनप्पा? दिन में एक निवाला खाना और आपको निहारना ही मेरे लिए काफी है।'

'आप जो कह रहे हैं वह सही है, लेकिन ये लेन-देन वाली दुनिया की अनिवार्यताएं हैं,' सरोत्री ने कहा।

अध्याय 14

1

आधी रात के काफी बाद तक, कात्यायनी के मन में अपने पति द्वारा बताई गई घटना का विस्तृत विवरण गूंज रहा था। यह संभव नहीं था कि सारी बातें उन्हीं ने बताई हों। उनकी सास भागीरथम्मा ने एक दिन उन्हें वही बातें बताई थीं। जब कल्पनाशील कात्यायनी ने दोनों वृत्तांतों को याद किया, तो सारी बातें आपस में जुड़ गईं और उनकी आंखों के सामने एक नाटक की तरह प्रकट हुईं। आज भी उनके ससुर और लक्ष्मी के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध हैं। लक्ष्मी तब तक भोजन नहीं करतीं जब तक श्रोत्री अपना भोजन समाप्त नहीं कर लेते। वह प्रतिदिन स्नान करती हैं और श्रोत्री द्वारा दिए गए तीर्थ को ग्रहण करने तक कुछ भी खाती-पीती नहीं हैं। वह प्रतिदिन गौ पूजा में भाग लेती हैं। उन्होंने इस परिवार में अपना स्थान बना लिया है। और परिवार के सभी महत्वपूर्ण मामलों में उनकी राय को महत्व दिया जाता है।

कात्यायनी जानती है कि इस घर में लक्ष्मी से कहीं अधिक सम्मान उसे प्राप्त है। हाल ही में, उसके ससुर उसे सूचित किए बिना कोई भी वित्तीय लेन-देन नहीं करते थे। चार साल पहले, उन्होंने डॉ. राव को 1,000 रुपये उपहार में देने से पहले उसे सूचित किया था। उन्होंने नकदी से भरा लिफाफा, पान के पत्ते, सुपारी और नारियल के साथ एक थाली में रखा, अपनी पत्नी से उन पर एक चम्मच शुभ जल छिड़कवाया और फिर डॉ. राव को दे दिया। अब वह सोच रही थी कि क्या वह अपने ससुर द्वारा दिए गए इस अधिकार के योग्य है। रात के 3 बज रहे थे जब उसे नींद आ गई।

वह सुबह आठ बजे उठी और नहाई। आज उसे मैसूर जाना था और राजा राव से घर पर हुई बातचीत साझा करनी थी। वहाँ जाकर क्या साझा करना था? उसके ससुर ने कहा था कि इस मामले में पूरी आज़ादी उसकी है। अगर वह कोई फैसला नहीं लेती और उस पर अमल नहीं करती, तो मैसूर जाकर उससे क्या साझा करेगी? वह कोई फैसला नहीं कर पा रही थी। इन सब बातों पर सोचते हुए उसने जल्दी से नहाया। उसने जल्दी से नाश्ता खत्म किया। उसने अपनी सास द्वारा दी गई एक नोटबुक और लंचबॉक्स उठाया और आदतवश रेलवे स्टेशन के गेट पर पहुँच गई। उसका मन अस्पष्ट और अनिश्चित विचारों से व्याकुल था। राजा से अपने दिल की बात कहे हुए पाँच महीने से ज़्यादा हो गए

थे। उसने एक पत्नी की तरह व्यवहार भी किया था। उस अनुभव ने उसे राजा की ओर इतना आकर्षित कर लिया था कि उसके मन में किसी भी तरह की अनबन की गुंजाइश नहीं बची थी। ट्रेन के चलते ही उसका मन फैसला लेने के लिए बेचैन था। पांच महीने पहले उसने जो फैसला लिया था, वह कल रात उसकी घोर निराशा के बीच कमजोर पड़ता नजर आया; लेकिन पूरी तरह से टूटा नहीं था। शायद राजा आज रेलवे स्टेशन पर उसका इंतजार कर रहा हो। ट्रेन से उतरते ही वह उसे क्या बताएगी, इस बात को लेकर वह बहुत परेशान थी।

धीमी गति से चलती ट्रेन के कडाकोला पहुँचने से पहले ही, उसे अपनी कार की खिड़की से चामुंडी पहाड़ी दिखाई देने लगी। गर्मी का मौसम होने के कारण, झुलसी हुई चट्टानों ने पूरी पहाड़ी को एक गंजा रूप दे दिया था। सुबह का सूरज पहाड़ी के पीछे था; उसकी छाया भी दिखाई दे रही थी। जल्द ही, उसे अपने ससुर की याद आ गई। उनका शरीर भी पहाड़ी की तरह ही भव्य था। उसने दोनों की तुलना करने के लिए हर उपमा सोची: उनकी साठ वर्ष की आयु, उनका कद, उनका सुदृढ़ शरीर, उनके दृढ़ कदमों की आहट, पूजा करते समय आँखें बंद करके बैठने का उनका तरीका। और पहाड़ी की दृढ़ता के अनुरूप ही उनके मन पर नियंत्रण, उनका संयम और जीवन की समस्याओं से निपटने का उनका तरीका भी था। जब उसके पति के निधन के बाद हर कोई शोक में डूबा हुआ था, तब अपने इकलौते बेटे को जवानी में खोने वाले उन्होंने पहाड़ी की दृढ़ता से अपने दुख को सह लिया था और बाहर से शांत दिखाई देते थे। वे एक महान व्यक्तित्व थे, जिनका सम्मान किया जाना चाहिए! वह उनके सभी गुणों की सराहना करती थी।

जब वह इसी तरह सोच-विचार में डूबी हुई थी, तभी ट्रेन चामराजपुरा स्टेशन पर आ पहुँची। बेचैनी से उसने खिड़की से बाहर देखा। राजा कहीं नज़र नहीं आ रहा था। उतरकर वह स्टेशन से बाहर निकली। पहाड़ी अब भी दिखाई दे रही थी। सुबह के दस बज रहे थे और तापमान लगातार बढ़ रहा था, फिर भी पहाड़ी का आकर्षण कम नहीं हुआ था। बिना किसी कारण के, उसे पहाड़ी पर चढ़ने की इच्छा हुई और वह उसकी ओर चल पड़ी। वह कृष्णमूर्तिपुरा से गुज़री और चामुंडीपुरा के पान के खेतों से होते हुए आगे बढ़ी। सड़कें धूल भरी थीं। हवा के एक झोंके ने कुछ धूल उसके चेहरे और शरीर पर उड़ा दी।

वह पहले दो बार उस पहाड़ी पर जा चुकी थी। एक बार अपने पति के साथ, वह पैदल ही उस पर चढ़ी थी। इसलिए उसे चढ़ाई का रास्ता पता था। चिलचिलाती धूप की

परवाह न करते हुए, वह आगे बढ़ी और नीलगिरी रोड पार कर गई। जैसे ही वह पहाड़ी की तलहटी की ओर बढ़ी, उसने बाईं ओर एक अलाव देखा। वह रुक गई। आग की लपटें बहुत ऊंची उठ रही थीं। लगभग पांच लोग उसके चारों ओर खड़े थे और ध्यान से उसे देख रहे थे। उनमें से एक के हाथ में एक लंबी बांस की छड़ी थी। हालांकि उसने मैसूर का कब्रिस्तान नहीं देखा था, लेकिन उसने मैसूरवासियों को अक्सर यह कहावत कहते सुना था, 'मृतक को पहाड़ी की तलहटी तक ले जाना'। वह समझ गई कि यह एक चिता है। अगर कोई और समय होता, तो वह इसे देखकर डर जाती। अब तो यह भी उसे आकर्षक लग रहा था। थोड़ी देर में, धधकती चिता के भीतर से एक चटकने की आवाज सुनाई दी। बांस की छड़ी वाले आदमी ने राख से भरे शव को चिता के बीचोंबीच धकेल दिया। सिर पर धोती पहने पुजारी मंत्रों का जाप कर रहे थे। अनुष्ठान संपन्न होने के बाद, सभी लोग चिता की ओर देखे बिना ही वहां से चले गए।

चिता अभी भी सुलग रही थी। कात्यायनी उसके पास गई और ध्यान से देखने लगी। शव इतना जल चुका था कि उसे जलाऊ लकड़ी से अलग पहचानना मुश्किल था। आग, धुआँ और चटकने की आवाज़ थम गई और चिता अब बस सुलग रही थी। उसके मन में यह विचार व्याप्त था कि मनुष्य की सारी इच्छाएँ, कामनाएँ, भावनाएँ, शुभकामनाएँ सब इस आग में राख हो जाएँगी। उसने एक लंबी आह भरी। तभी एक और शव लाया जा रहा था। चार लोग बाँस का ढाँचा उठाए हुए थे जिस पर शव रखा था, और एक आदमी अंगारों से भरा बर्तन लिए भारी कदमों से आगे चल रहा था। दो युवा, उदास दिखने वाले युवक पीछे-पीछे आ रहे थे। उनके बगल में पुजारी बिना किसी भाव के चल रहा था। उसने लाल शॉल ओढ़ा हुआ था और एक हाथ में हलाफा घास का गुच्छा था। थोड़ी देर में वे सब उसके पास पहुँच गए। शव को वहीं नीचे उतारा गया। पुजारी कात्यायनी के पास आया और बोला, 'यहाँ एक स्त्री का क्या काम है? तुम्हें यहाँ अकेले नहीं होना चाहिए।' यह तुम्हारे घूमने की जगह नहीं है। यहाँ से जाओ।’ वह वहाँ से चली गई और जल्द ही पहाड़ी की तलहटी पर पहुँच गई। उसने अपने सामने घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ना शुरू किया। लेकिन जल्द ही वह थक गई। उसकी साँसें तेज़ हो गईं और उसे पसीना आने लगा, लेकिन वह चलती रही। जब उसने आधी दूरी तय कर ली, तो वह पूरी तरह से थक चुकी थी और उसका सिर चकराने लगा था। वह रेलिंग पर बैठ गई। नीचे, उसे मैसूर का आधा हिस्सा पहाड़ी के चारों ओर बसा हुआ दिखाई दे रहा था। शहर की विशाल हवेलियाँ, भव्य महल आदि छोटे दिखाई दे रहे थे।

उसने पश्चिम दिशा में चमकते हुए तालाब के उस पार स्थित अपने कॉलेज को पहचान लिया। जल्द ही राजा की यादें उसके मन में उमड़ आईं। वह कॉलेज में उसका इंतज़ार कर रहा था। उसने सोचा कि अब तक वह बेचैनी से कराह रहा होगा। हालाँकि पहाड़ी से नीचे उतरकर कॉलेज जाने और उससे मिलने की इच्छा उसके मन में प्रबल होने लगी, फिर भी वह पहाड़ी पर चढ़ती रही।

ऊपर की चढ़ाई हमेशा थका देने वाली होती है। अभी तक तो इतनी हवा भी नहीं चल रही थी कि पत्तियाँ हिलें। लेकिन तभी ठंडी हवा चलने लगी। उसे ताज़गी महसूस हुई। थोड़ी देर में ठंडी हवा तेज़ हो गई। उसका मन फैसला लेने की कोशिश कर रहा था। मैसूर पहाड़ी के एक तरफ था। दूसरी तरफ दस मील दूर नंजनगुड था। इन दोनों के बीच फँसी हुई, उसका मन दिशाहीन हो गया। हवा अब आंधी में बदल गई थी। अगले पाँच मिनट में, एक बवंडर ने खूब धूल उड़ाई और उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगा। धूल के साथ-साथ सूखे पत्ते, चूर-चूर हो चुकी झाड़ू की डंडियाँ, कपड़े के चिथड़े, कागज़ के टुकड़े और अन्य कई तरह का कचरा उड़ रहा था। भूरी धूल इतनी ज़्यादा थी कि कुछ मिनट पहले दिखाई दे रहे मैसूर शहर और कॉलेज अब दिखाई नहीं दे रहे थे। हवा का एक झोंका उसके चारों ओर ऐसे बह रहा था जैसे कोई नदी पथरीले इलाकों से बह रही हो। कात्यायनी डर गई। उसे डर था कि आंधी उसे बहाकर कहीं फेंक देगी। वह एक बड़े पत्थर के पास बैठ गई और उसे कसकर गले लगा लिया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं ताकि धूल आँखों में न चुभे। आंधी अचानक एक पल में थम गई। जब उसने आँखें खोलीं, तो आसमान में बनते बादलों को देखकर वह दंग रह गई। एक बड़ा बादल ठीक उसके सिर के ऊपर जमा हो गया और सूरज को ढक लिया। वह उठी और पहाड़ी पर चढ़ना जारी रखा। पास के बादल से उत्पन्न उमस भरी गर्मी के कारण उसे पसीना आने लगा, जिससे उसके अंदरूनी कपड़े चिपचिपे हो गए। उसने पहले कभी इतनी घुटन भरी गर्मी का अनुभव नहीं किया था। एक घंटे पहले उसने जो चिता देखी थी, उसकी चमक अभी भी उसकी आँखों में थी। उसका मन इतनी गहराई में चला गया था कि वह किसी भी तरह के चिंतन में असमर्थ थी।

दस मिनट में बारिश की बूँदें गिरने लगीं। उसने अपना सिर उठाया और ऊपर देखा। ऊपर काले बादल छा गए थे। अब मूसलाधार बारिश होने लगी, मानो किसी छलनी से छनकर पानी बह रहा हो। वह किसी पेड़ के नीचे छिपने के लिए नहीं भागी; वह बारिश में भीगते हुए पहाड़ी पर चढ़ती रही। जब बारिश और तेज़ हुई, तो वह बारिश के बीच ज़मीन पर बैठ गई। 15 मिनट तक लगातार बारिश होती रही। न तो तूफान था, न भूरी

धूल, न ही कचरे के टुकड़े। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मैसूर शहर बिल्कुल नया लग रहा था; एक नए रूप में। माचिस की डिब्बी के आकार का कॉलेज भी एक अनोखे रूप में दिखाई दे रहा था। बादल छंट गए। सूरज पहले की तरह चमक रहा था, लेकिन चिलचिलाती गर्मी नहीं थी। एक अजीब बारिश! यह अचानक बेमौसम आई और अचानक ही गायब हो गई।

कात्यायनी ने पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया। हवा उसके वस्त्रों को सहला रही थी। उसे चढ़ाई करना अब कठिन नहीं लग रहा था। वास्तव में, यह एक तरह से आनंददायक था। उसके ससुर की यादें उसके मन में आ गईं। वे जीवन भर ऐसा ही आनंद अनुभव करते; लक्ष्मी को भी ऐसा ही आनंद अनुभव करने के लिए मार्गदर्शन करते। उसने सोचा कि इस तरह के सुख और शांति का स्रोत चढ़ाई में ही है। पाँच मिनट में वह शिखर पर पहुँच गई। वह मंदिर में गई, देवता के सामने प्रणाम किया, बाहर निकली और एक पेड़ के नीचे बैठ गई। इतनी ऊँचाई पर उसका मन प्रसन्न हो गया। अब वह एक धारा की तरह थी जो रेत के समतल तल पर शांत रूप से बह रही थी, बिना किसी चट्टान के अवरोध के। इस शांति में उसने एक निर्णय लिया।

उसे भूख लगी थी। उसने मंदिर के पास एक नल से पानी पिया, वापस पेड़ के नीचे बैठ गई और अपना लाया हुआ दोपहर का खाना खाया। फिर उसने खाली लंचबॉक्स धोया और पहाड़ी से नीचे उतरने लगी। तब तक उसके कपड़े भी सूख चुके थे। हालांकि नोटबुक का कवर अभी भी गीला था। नीचे उतरते समय उसे थकान महसूस नहीं हुई। शव को कब्रिस्तान लाने वाले परिजनों में से कोई भी वहां नहीं था। बारिश ने चिताओं को बुझा दिया था। कब्रिस्तान शांत था। वातावरण धूल रहित था। हालांकि उसके पैरों में दर्द हो रहा था, फिर भी वह अपने कॉलेज तक पैदल गई और चार बजे तक वहां पहुंच गई। वह राजा राव को अपना फैसला बताने के लिए वहां गई थी। थिएटर एसोसिएशन का दरवाजा बंद था। वापसी की ट्रेन पकड़ने के लिए एक घंटा और था, इसलिए वह सीढ़ियां चढ़कर सामने वाली बालकनी में खड़ी हो गई। पहाड़ी ने एक बार फिर उसका ध्यान खींचा। वह उसे देखती रही। उसे नहीं पता था कि वह कितनी देर तक वहां खड़ी रही। जब उसने एक बार नीचे देखा, तो उसने राजा राव को अपनी साइकिल के साथ देखा। वह उसकी ओर देख रहे थे और उनकी निगाहें सख्त थीं। 'नीचे आ जाओ,' उसने कहा। अपनी निगाहें वापस पहाड़ी पर टिकाते हुए, उसने दो मिनट तक चुपचाप उसे निहारा, फिर उसकी ओर मुड़कर कहा, 'तुम ऊपर आओ।'

दिनभर उसका इंतज़ार करते-करते जो वह टूट चुका था, उसने इसे उसकी ओर से उदासीनता का संकेत समझा। वह गुस्से में आकर अपनी साइकिल पर सवार हो गया। बिना किसी प्रयास के ही साइकिल ढलान पर लुढ़कने लगी।
कात्यायनी पहाड़ी को देखती रही।
उस शाम घर लौटकर कपड़े बदलने के बाद उसने अपने ससुर को ऊपर बुलाया। श्रोत्री, जो शाम की प्रार्थना के लिए पूजा कक्ष की ओर जा रही थी, ऊपर गई। उसने उनके पैर छूकर प्रणाम किया और कहा, 'मैंने कुछ अनुचित क्षण में अपने विचारों को भटकने दिया था। मुझे एहसास हो गया है कि वे गलत थे। मुझे क्षमा करें।'
'ऐसी निराधार बातें किसी को नहीं छोड़तीं। चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो,' श्रोत्री ने शांत भाव से कहा।
जब वह नीचे उतरने लगा, तो कात्यायनी ने एक बार फिर उसे पुकारा और विनम्रता से पूछा, 'जो बातें मैंने कल आपसे साझा की थीं, और उस पत्र की सामग्री, क्या आपने अम्मा को बताई थीं?'
'नहीं, मैंने नहीं किया। कभी नहीं करूँगा। वह पत्र बैठक कक्ष में शेल्फ पर रखा है। तुम खुद उसे ले जाओ और नष्ट कर दो,' उसने कहा और सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

2

राजा, कात्यायनी पर बहुत क्रोधित हुआ क्योंकि उसने सुबह 10 बजे से उसे घंटों तक असमंजस में रखा और फिर शाम 4 बजे उससे मिलने के बावजूद उसकी बात अनसुनी कर दी। उसने अनुमान लगाया कि उसके ससुराल वाले इस विवाह के लिए राजी नहीं होंगे। उसने सोचा कि इस तरह के विवाह के लिए ससुराल वालों की सहमति लेना असंभव है, क्योंकि पारंपरिक सोच वाले माता-पिता भी कभी इस पर सहमति नहीं देंगे। उनका विवाह तभी संभव था जब कात्यायनी स्वयं अपने ससुराल वालों को छोड़कर आगे बढ़ने का साहसिक कदम उठाए। कल उसने उसकी इतनी उपेक्षा क्यों की? क्या वह उसे यह संदेश देना चाहती थी कि वह उसे भूल जाए?
अगले दिन भी वह कॉलेज में उसका इंतज़ार करता रहा। वह नहीं आई। अगले कुछ दिनों तक वह रेलवे स्टेशन पर उसका इंतज़ार करता रहा और निराश होकर लौट आया। हालाँकि उसने उसे पत्र लिखने का सोचा, पर उसने अपना इरादा बदल दिया। उसकी परीक्षाएँ 10 दिन में शुरू होने वाली थीं। उसने यह सोचकर खुद को तसल्ली

देने की कोशिश की कि तब उससे मिलने का मौका मिल जाएगा, क्योंकि वह परीक्षा देने ज़रूर आएगी। घर पर समय बिताने का कोई तरीका नहीं था। नागलक्ष्मी अब पूरी तरह चुप हो गई थी। वह पहले की तरह उससे खुलकर बात नहीं करती थी। उसने कई बार उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन उसका मन हमेशा विचारों में इतना खोया रहता था कि वह जवाब तक नहीं देती थी। उसे समय पर खाना बनाने और परोसने के अलावा किसी और चीज़ में दिलचस्पी नहीं थी।

एक दिन खाना परोसते समय नागलक्ष्मी ने राजा से कहा, “आज हमारे पड़ोस में एक ज्योतिषी आया था। उसने मुझे बताया कि अगले जन्म में राम नाम का रटकर अभ्यास करना मेरे लिए शुभ होगा। मैंने मरने से पहले एक करोड़ बार राम नाम लिखने का निश्चय किया है। मुझे नोटबुक, स्याही और स्याही ला दो।”

उस शाम वह उसके लिए एक नोटबुक और कलम लेकर आया। उसने कलम पकड़ी और बोली, ‘मुझे इसका इस्तेमाल करना नहीं आता। स्याहीदानी का स्टील ही मेरे लिए काफी है। मुझे वही ला दो।’ वह अगले दिन ले आया। उसने पानी में स्याही का पाउडर घोलकर स्याही तैयार की। उसने स्याहीदानी, नोटबुक और स्टील तीनों को पूजा कक्ष की वेदी पर रखा, उन पर सिंदूर और हल्दी लगाई और प्रणाम किया। फिर उसने नोटबुक उठाई, उसे अपनी दोनों आँखों से लगाया, बाहर निकली और राजा से पूछा, ‘अगर मैं प्रतिदिन कुछ नाम लिखूँ, तो यह किताब कितने दिन चलेगी? इसमें कितने नाम आ सकते हैं? अगर मुझे एक करोड़ नाम लिखने हों, तो मुझे ऐसी कितनी किताबें भरनी होंगी? गणना करके बताओ।’

एक पन्ने में पंक्तियों की संख्या गिनते हुए राजा ने कहा, 'अगर आप एक पंक्ति में 10 नाम लिखते हैं, तो इस नोटबुक में 40,000 नाम आ जाएंगे। एक करोड़ नाम लिखने के लिए आपको ऐसी 250 किताबों की जरूरत होगी।'

ठीक है। जैसे ही मैं एक किताब पूरी कर लूँ, मुझे दूसरी किताब ला देना। क्या तुम मुझे स्याही का पाउडर भी ला दोगे?

‘बिल्कुल, मैं करूँगा। अगर आप सिर्फ नाम लिखेंगे तो आपको क्या मिलेगा?’

‘सिर्फ नाम कौन लिखेगा? मैं पूरी लगन से लिखूंगा।’

राजा ने नागलक्ष्मी की मासूमियत पर मन ही मन मुस्कुराया, पर कुछ ज़ाहिर नहीं किया। नागलक्ष्मी ने रटने वाली लेखनी शुरू की। नोटबुक की हर पंक्ति में वह 'श्री राम श्री राम...' दस बार लिखती। हर पृष्ठ के अंत में वह 'श्री राम जय राम जय-जय राम सीता-राम' लिखती। आखिरी बार उसने औपचारिक रूप से कुछ लिखा था, जब वह

माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई कर रही थी। बाद में, जब राजा इंग्लैंड में थे, उसने उन्हें कुछ पत्र लिखे थे। हाल ही में, उनका राजा से संपर्क टूट गया था। इसलिए, शुरू में उसकी उंगलियों में दर्द होता था और वह तेज़ी से नहीं लिख पाती थी। 'धीरे-धीरे लिखना ठीक है। मुझे बस मरने से पहले इसे पूरा करना है,' उसने मन ही मन कहा और उसी शांत भाव से लिखना शुरू कर दिया। अब तक खाली समय में उसका मन एक खालीपन में डूबा रहता था, लेकिन अब उसे सहारा मिल गया था।

परीक्षा के दिन राजा बेसब्री से कात्यायनी का इंतज़ार कर रहा था। उसे उन दिनों परीक्षा की निगरानी का काम सौंपा गया था। उसे परीक्षा के समय से आधा घंटा पहले रिपोर्ट करना होता था। फिर उसे निर्धारित कक्षा में जाकर परीक्षा की पूरी अवधि और उसके बाद थोड़ी देर तक वहीं रहना होता था। इस प्रकार, वह पहले छह दिनों तक उससे मिल नहीं पाया। सौभाग्य से, सातवें दिन उसे उस कक्षा की निगरानी का काम सौंपा गया जहाँ कात्यायनी को परीक्षा देनी थी। कमरे में प्रवेश करते ही कात्यायनी राजा को देखकर चौंक गई। उस दिन वह ठीक से लिख नहीं पाई थी। राजा ने मौका पाकर उसके पास जाकर उसके कान में फुसफुसाया, 'परीक्षा के बाद मुझसे मिलना।'

‘हम्म,’ उसने बेबसी से कहा।

परीक्षा समाप्त होने के बाद वे मिले और बाहर निकल गए। जब वे कॉलेज के पश्चिम की ओर एक पेड़ के पास पहुँचे, तो उसने भारी आवाज़ में कहा, 'मुझे भूल जाओ।'

'ऐसा क्यों कहा?'

‘कुछ मत पूछो। तुमने एक नाकाबिल लड़की से प्यार किया है। किसी और लड़की से शादी कर लो और खुश रहो। मुझे बुढ़ापे का एहसास हो रहा है।’ उसकी आँखों में आँसू भर आए। ‘अब और बहस मत करो। अब हमारे मिलने की कोई संभावना नहीं है,’ उसने कहा और जल्दी से वहाँ से चली गई। राजा अवाक रह गया और उसकी तरफ देखता रहा।

अगले दिन, उसने मुख्य पर्यवेक्षक से विशेष रूप से अनुरोध किया कि उसे एक अलग कक्षा आवंटित की जाए। उसका दिमाग सुन्न हो गया था। कात्यायनी, जिसने पिछले छह महीनों में उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाया था, अब यह कहकर उससे बिछड़ गई, उसे कुछ भी कहने का मौका नहीं दिया। वह उसे कैसे भूल सकता था, जिसने उसके मन, हृदय और मस्तिष्क पर पूर्ण रूप से कब्जा कर लिया था? इस जीवन में तो यह संभव ही नहीं था। वह उसे वापस पाने का कोई तरीका भी नहीं सोच पा रहा था। उसकी आँखों में आँसू भर आए। अपनी पीड़ा सहन न कर पाने के कारण, उसने एक दिन नागलक्ष्मी के

सामने सब कुछ कह दिया। नागलक्ष्मी ने कहा, 'ये बातें हमेशा ऐसी ही होती हैं। तुम भी राम का नाम रट लो। मन की बेचैनी शांत हो जाएगी। बाद में, तुम किसी और लड़की से विवाह करोगे।'
'नागु, तुम इसे कभी नहीं समझ पाओगी,' उसने कहा और उसे रटने का काम करने के लिए छोड़ दिया।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि अगर उसे अंततः उसके साथ ऐसा करना ही था, तो वह उसके इतने करीब क्यों आई थी। उसका यह कहना कि वह एक बूढ़ी औरत है—जबकि वह मात्र 24 वर्ष की थी और आकर्षक कद-काठी की थी—भी उसकी बुद्धि को कोई स्पष्टीकरण देने में सक्षम नहीं बना पाया। उसने अपने बारे में कैसा झूठ गढ़ा था! वह फिर से उलझन में पड़ गया। हालाँकि, उसका मन उसके साथ बिताए पलों की यादों में डूबा हुआ था।

3

परीक्षा के आखिरी दिन, कात्यायनी का मन राजा से मिलने के लिए तड़प रहा था। लेकिन असल में उसने खुद को उससे दूर कर लिया था। हालाँकि वह उसके घर जाकर एक विद्यार्थी की तरह गुरु के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती थी, पर उसने अपने इस इरादे को दबा लिया, नंजनगुड ट्रेन पकड़ी और घर चली गई। उसने अपनी सास से कहा, 'मैसूर की यह आखिरी यात्रा थी। कल से मुझे इससे छुटकारा मिल जाएगा।'
'हां, बेटा। अगर तुम पास हो जाओगे, तो उसका नाम अमर हो जाएगा,' भागीरथम्मा ने अपने बेटे को याद दिलाते हुए कहा।
अब कात्यायनी अपने बच्चे के साथ ज़्यादा समय बिताने लगीं। चीनी अब पाँच साल का हो गया था। गर्मी की छुट्टियों के बाद उसे स्कूल जाना था। मार्च-अप्रैल में किसी शुभ दिन उसका चूड़ाकर्म विधिपूर्वक संपन्न होना था, जिसके अंतर्गत उसे चाँदी के सिक्के पर लगा शहद चाटना होता था और थाली में फैले चावल के दानों पर तर्जनी उंगली से श्री राम लिखना होता था। भागीरथम्मा ने उस समारोह के लिए मेहमानों के लिए काफ़ी मात्रा में पारंपरिक नाश्ते की टोकरियाँ तैयार करवाने की योजना बनाई थी। श्रोत्री को इस पारंपरिक अनुष्ठान में पूर्ण विश्वास था। यह अनुष्ठान उनके तीसरे वर्ष में होना चाहिए था। लेकिन उस समय एक प्रकार की उदासीनता ने उन्हें रोक रखा था। हालाँकि वे इसे

भव्य तरीके से आयोजित करने के पक्ष में नहीं थे, फिर भी वे अपने परिवार के सदस्यों की खुशी में बाधा नहीं डालना चाहते थे।

चीनी बहुत बातूनी था। उसके दादा-दादी उसके अंतहीन सवालों के जवाब देते-देते थक चुके थे—ये क्या है? ये क्यों? ये कहाँ से आया? ये यहाँ क्यों है? आजकल वो लक्ष्मी के पीछे-पीछे मवेशी चराते हुए जाता था। कई बार तो वो लक्ष्मी के साथ सोने की ज़िद में पागल हो जाता था।

परीक्षा के बाद पहले कुछ दिनों तक कात्यायनी को ऊब महसूस हुई। उसने सोचा कि समय बीतने के साथ यह ऊब कम हो जाएगी और वह नई दिनचर्या की आदी हो जाएगी। उसने खुद को घर के कामों में ज़्यादा से ज़्यादा शामिल करने के लिए प्रेरित किया। वह कोई नया काम ढूंढती और उसे करती। यहाँ तक कि वह दोपहर में भगवद्गीता का पाठ भी करने लगी। वह सुबह समय पर स्नान करती और अपने ससुर की रोज़ाना की पूजा में शामिल होती। इन सबके बावजूद, एक महीना बीत जाने के बाद भी उसकी ऊब कम नहीं हुई। बल्कि, मन की बेचैनी और बढ़ गई। वह पहली मंज़िल के कमरे से दूर रहने लगी और अपनी सास के कमरे में सोने लगी। चीनी हमेशा की तरह अपनी नानी के साथ सोता रहा। कात्यायनी को रातों को नींद नहीं आती थी। वह हमेशा राजा को याद करती रहती थी। वह अब क्या कर रहा होगा? क्या वह मुझे याद कर रहा होगा? क्या मेरे डांटने के बाद वह मुझसे नाराज़ होगा? या उसने किसी और लड़की से शादी करने का फैसला कर लिया होगा? वह कल्पना में भी इसे सहन करने में असमर्थ होगी।

जब उसका मन इस प्रकार अशांत हो जाता, तो वह भगवद्गीता का पाठ करने लगती। वह प्रत्येक श्लोक को ध्यानपूर्वक पढ़ती और उसके अर्थ को समझने का प्रयास करती। जो कुछ भी वह पढ़ती, वह उसकी बुद्धि में समा जाता, परन्तु उसका मन उसे पूरी तरह से न समझ पाता। भगवद्गीता के सिद्धांत उसके लिए एक बाधा बन जाते, और उसका मन उस बाधा को तोड़कर आगे बढ़ने का प्रयास करता। वह एक सुंदर नाव की कल्पना करता और उसे तथा राजा को उसमें आनंदमय यात्रा पर ले जाता। दिन बीतते-बीतते उसका जीवन नीरस होता चला गया। उसे उसमें कोई अर्थ नहीं दिखाई देने लगा। भोजन का स्वाद फीका पड़ गया। उसकी इच्छाओं से पोषित शरीर अग्नि की लता के संपर्क में आने से मुरझाने लगा। उसके शरीर की शक्ति क्षीण होती चली गई। क्षीण होती शारीरिक शक्ति के विपरीत, उसकी इच्छाओं की शक्ति प्रचंड हो गई। कृत्रिम अनुभूति और निर्मल प्रकृति के बीच संघर्ष में, प्रकृति की ही विजय हुई, और उसका जीवन

निराशा के अंधकार से भर गया। वह जहाँ भी खड़ी होती, बैठती या जाती, राजा का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ जाता। उनकी लंबी सैर, शारीरिक निकटता, वृंदावन की यात्रा और एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाए गए मीठे शब्द उसकी यादों में जीवंत थे। कुछ ही दिन पहले चाँदनी की तरह ठंडी लगने वाली ये यादें अब उसे श्मशान की चिता से भी ज़्यादा झुलसा रही थीं। एक सुबह वह एक निवाला भी नहीं खा सकी। दोपहर की सुस्ती भी उसे नींद नहीं आई। हालाँकि उसने रात के खाने में थोड़ा-बहुत खाना खाया, लेकिन हाथ धोते समय उसने सब उल्टी कर दिया। जब वह सोने गई, तो उसे बुखार महसूस हुआ। जल्द ही बुखार बढ़ गया। वह पूरी रात करवटें बदलती रही। उसे लगा कि वह ज़्यादा दिन जीवित नहीं रहेगी। आधी रात के कुछ घंटे बाद, उसके भीतर एक दृढ़ निश्चय जागा—उसे अपने ससुर से अनुमति लेकर अगली सुबह सबसे पहले मैसूर के लिए निकल जाना चाहिए। लेकिन वह उन्हें यह बात कैसे समझाती? उनके सामने जाने के ख्याल मात्र से ही उसकी रीढ़ की हड्डी में डर दौड़ गया। यह वैसा डर नहीं था जैसा किसी को साँप देखकर होता है, बल्कि वैसा डर था जैसा किसी पापी को ईश्वर के बारे में सोचते ही होता है। क्या उसे बिना बताए चले जाना सही होगा? मन में यह दुविधा उठ खड़ी हुई कि अगर वह उसे छोड़कर चली गई तो यह उसके उस विश्वास का उल्लंघन होगा जो उसने उस पर जताया था। लेकिन क्या उसने मुझे अपने जीवन के मामलों में विवेक का अधिकार नहीं दिया है? हालाँकि उसका मन उसके शब्दों, 'तुम जो चाहो कर सकती हो, स्वतंत्र हो', में शरण पा रहा था, फिर भी वह सोच रही थी कि क्या विवेक का प्रयोग करना स्वतंत्रता का गुण है।

उसके मन में उचित और अनुचित के बीच निरंतर संघर्ष चलता रहा। उस रात उसने अपने जीवन की नई दिशा तय कर ली। या तो वह उस रास्ते पर चले, या फिर यहीं दुर्बलता से मर जाए। वह यूं ही अपनी जान देने को तैयार नहीं थी।

अगली सुबह सबसे पहले उसने अपनी सास से कहा, 'मैं भूल गई थी। मेरी एक शिक्षिका ने मुझे अपनी शादी के भोज में आमंत्रित किया है, जो आज ही है। मुझे मैसूर जाना है।' उनके ससुर अपनी नियमित पूजा में व्यस्त थे, इसलिए सास ने सहमति दे दी।

जब उसने नई साड़ी पहनी और बाहर निकली, तो चीनी ने पूछा, ‘अम्मा, आप कहाँ जा रही हैं?’ उसने अपने बच्चे के बारे में सोचा। अपने जाने की गारंटी के बिना, वह अपने बच्चे को कैसे साथ ले जा सकती थी? वह उसके पास गई और उसके दोनों गालों पर चुंबन किया। ‘अम्मा, मुझे भी ले चलो,’ उसने कहा। ‘तुम बाद में आ जाओगे,’ उसने कहा और जल्दी से चली गई। उस गली से गुजरते हुए, उसने एक बार पीछे मुड़कर अपना

घर देखा। उसकी नज़र धुंधली थी। वह हमेशा की तरह ट्रेन में चढ़ गई। मैसूर पहुँचने तक उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता रहा।
वह सीधे राजा के घर गई और दरवाजा खटखटाया। पृथ्वी ने दरवाजा खोला। उसने पूछा, 'चाचा कहाँ हैं?' राजा ने अपने कमरे की ओर इशारा किया। जब उसने दरवाजा धकेल कर अंदर कदम रखा, तो जो देखा उसे देखकर वह दंग रह गई। राजा इतना दुबला-पतला हो गया था कि कंकाल जैसा लग रहा था। उसकी दाढ़ी भी बढ़ गई थी। उसके कपड़े गंदे थे। राजा ने उसे शक की निगाहों से देखा। दरवाजा बंद करके वह उसके पास गई, अपना चेहरा उसकी छाती पर रखा और बोली, 'अब मेरी बात मानो। मैं उस घर में वापस नहीं जाऊंगी। आज से हम समाज के सामने पति-पत्नी बनकर रहेंगे।'
राजा को कात्यायनी की बातों पर तुरंत यकीन नहीं हुआ। उसने हैरानी और अचरज भरी निगाहों से उसे देखा। कात्यायनी बोली, “मुझे देखो। मैं अभी-अभी यहाँ आई हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं है। चलो, हम तुम्हारी इच्छा अनुसार शादी कर लेते हैं। मुझे सिविल मैरिज या मंदिर में शुभचिंतकों की मौजूदगी में शादी करने में कोई आपत्ति नहीं है। या अगर तुम कहो कि “ऐसी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, बस मेरे साथ रहो,” तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तुम मेरे जीवनसाथी हो।” उसने राजा को गले लगा लिया। अब राजा को उसकी बातों पर यकीन हो गया था। उसने भी कात्यायनी को गले लगा लिया। दोनों के दिलों की बेचैनी शांत हो गई। कात्यायनी की धड़कन सामान्य हो गई।

अध्याय 15

1

जब कात्यायनी शाम 6 बजे वाली ट्रेन से नहीं लौटीं, तो घर के सभी लोग उनके रात 10 बजे वाली ट्रेन से लौटने की उम्मीद में थे। चूंकि गर्मी की छुट्टियां थीं, इसलिए उनके साथ कोई नहीं होगा, इसीलिए श्रोत्री उन्हें घर छोड़ने के लिए रेलवे स्टेशन गए। ट्रेन आई और चामराजनगर की ओर चल पड़ी। उनकी बहू कहीं नजर नहीं आई। कुछ देर के लिए श्रोत्री यात्रियों के लिए बनी बेंच पर बैठ गए। उनका मन सोच रहा था कि वह क्यों नहीं लौटीं। उन्होंने धीरे-धीरे महसूस किया था कि पिछले दो हफ्तों से वह पहले जैसी नहीं थीं। लेकिन उन्होंने इस बारे में उनसे पूछने का विचार छोड़ दिया, क्योंकि यह एक संवेदनशील मामला था, खासकर तब जब वह पांच साल के बच्चे की मां थीं, घर का खर्च संभाल रही थीं, बीए की परीक्षा दे रही थीं और अपनी जिम्मेदारियों, धर्म और कर्म के प्रति सजग थीं। हालांकि उनके मन में यह ख्याल आया कि वह उनके पास लौट आई होंगी, लेकिन उन्होंने खुद को समझाया कि सबूत के अभाव में उन्हें किसी बात पर शक नहीं करना चाहिए। वह घर लौटा और बोला, 'वह इस ट्रेन से भी नहीं लौटी। उसने कहा कि शादी है। उन्होंने उसे रुकने के लिए कहा होगा। वह शायद कल लौट आएगी।'
उस दिन चीनी को भी नींद नहीं आई। आखिरकार जब उसे नींद आई, तो उसने दो बार पूछा, 'अम्मा अभी तक वापस क्यों नहीं आईं?' वह तभी सोया जब उसकी दादी ने उसे बताया कि वह कल लौट आएंगी। रात बीत गई और अगला दिन आ गया। मैसूर से सुबह की ट्रेन भी आ गई, लेकिन बहू नहीं आई। श्रोत्री, जो पूजा कक्ष में थे, सब कुछ भूलकर अपनी पूजा में लीन थे। जब वे लगभग 9 बजे पूजा कक्ष से बाहर निकले और भागीरथम्मा, लक्ष्मी और चीनी को तीर्थ दिया, तो भागीरथम्मा ने उन्हें एक लिफाफा दिया। यह सुबह की डाक से आया था। उन्होंने तुरंत पहचान लिया कि उस पर पता कात्यायनी की लिखावट में था। उनके अंतर्मन को तुरंत पता चल गया कि उसमें क्या लिखा है। लिफाफा तुरंत न खोलकर, उन्होंने अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए समय लिया, बैठक कक्ष में गए, एक कुर्सी पर थोड़ा आराम किया और पांच मिनट बाद उसे खोला। उनकी बहू की लिखावट में चार पन्ने; मामला बिलकुल वैसा ही था जैसा उसने सोचा था। पिछली बार जब उसने उससे अनुमति मांगी थी तब उसकी

मनस्थिति, अपने संकल्प से पीछे हटने का कारण और वह पीड़ा जो उसने दोबारा झेली। इन सब बातों को समझाने के बाद उसने लिखा था:

आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व से प्रेरित होकर, मैंने अपने मन को वश में करने की कोशिश की, लेकिन मैं नहीं कर सकी। हर व्यक्ति अपने आप में अद्वितीय होता है, और उसकी खूबियाँ और कमियाँ उसकी अपनी होती हैं। वहाँ से निकलने से पहले, मैं आपसे सब कुछ कहना चाहती थी, लेकिन आप लोगों के सामने आने का साहस मुझमें नहीं था। कुछ ही दिनों में हमारा विवाह एक सामाजिक समारोह में होगा। आपको आमंत्रित करना मेरी ओर से गुस्ताखी होगी। मैं आपके चरणों में नतमस्तक होकर आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे मेरे चुने हुए जीवन में शांति और संतोष प्रदान करें। एक माँ-विहीन संतान, जिसे पिता का पूरा प्यार नहीं मिला, मैं सौभाग्यशाली रही कि आपके घर में छह साल तक मुझे माता-पिता का प्यार मिला। आपका आशीर्वाद इस पुत्री के जीवन में खुशियाँ भर दे।

श्रोत्री चुपचाप बैठे रहे। हालाँकि वे उनके मन की स्थिति को पूरी तरह समझ नहीं पाए, फिर भी उन्हें उन पर गुस्सा नहीं आया। उनके सामने एक ऐसी अभागी आत्मा की छवि उभर आई जो प्रकृति के प्रकोप से खुद को बचा नहीं पाई थी। उनका मन करुणा से भर गया। उन्हें याद आया कि जब से वह इस घर में बहू बनकर आई थीं, तब से उनका व्यवहार कैसा था। उन्होंने कभी भी ऐसा व्यवहार या बात नहीं की जिससे उनके ससुराल वालों को असुविधा हो। उन्होंने उनकी सेवा वैसे ही की जैसे अपने माता-पिता की करतीं। अपने पति के जीवित रहते हुए वह उनकी एक स्नेही पत्नी थीं। उनमें वे सभी गुण थे जो श्रोत्री इस परिवार के सदस्य से अपेक्षा करते थे। अंत में, उन्होंने इस प्रकार क्षमा मांगी।

उन्होंने अपने पूर्वजों के बारे में सोचा। सुस्थापित आर्षेय परंपरा का पालन करते हुए, उन्होंने पहले कभी ऐसी स्थिति नहीं देखी थी। उनके पास अपने पूर्वजों के वंशावली वृक्ष का अभिलेख था, जिसमें पिछली 12 पीढ़ियों का विवरण था। इन 12 पीढ़ियों से पहले की पीढ़ियों की जड़ें उनकी समझ से परे गहरी थीं। उनका मानना था कि वे जड़ें अत्यंत जीवंत और शुभ थीं, और यदि वे उन्हें खोजने का प्रयास करें तो वे उन्हें अनंत गहराई तक ले जाएंगी। वंश क्रम में सूचीबद्ध लोगों में वे भी थे जिन्होंने आधा जीवन ही जिया था, वे भी थे जिन्होंने पहली पत्नी के जीवित रहते हुए दूसरी शादी की थी, और वे भी थे जो विधवा थीं, लेकिन कात्यायनी के इस कार्य के लिए कोई उदाहरण नहीं था। अन्य वंशों

से यहाँ आने वाली प्रत्येक महिला अपनी मृत्यु तक यहीं रही थी। जिस प्रकार किसी नदी की सहायक नदी के लिए अपनी पहचान वापस पाना और दूसरी नदी में मिल जाना असंभव है, उसी प्रकार किसी वंश में प्रवेश पाने वाली कन्या के लिए बाद में अपनी निष्ठा बदलना भी असंभव है। कात्यायनी का यह घिनौना आचरण इस वंश के इतिहास पर एक अमिट धब्बा था। क्या कम से कम उस दूसरे वंश की पवित्रता बरकरार रह पाएगी जिसमें उसने प्रवेश किया था? एक और सवाल मानो उसी सवाल के जवाब में सामने आया: क्या जिन लोगों ने उसे अपने वंश में शामिल किया है, उन्हें अपने पूर्वजों के बारे में कोई जानकारी है?

जब वह अपने विचारों में डूबा हुआ था, तभी दोपहर के 12 बज गए। भागीरथम्मा बैठक में आईं और बोलीं, 'बस बैठे क्यों हो? चलो, खाना खा लो। वह अभी तक वापस नहीं आई है। वह कौन सा पत्र है?'

‘कुछ ज़रूरी है,’ उसने कहा और उठ खड़ा हुआ। चीनी भी अपने दादाजी के साथ दोपहर का भोजन कर रहा था और अपनी रोज़ाना की बकबक करता रहा। श्रोत्री खाना नहीं खा पा रहा था। लाख कोशिश करने के बावजूद भी निवाला उसके गले से नीचे नहीं उतर रहा था। ‘यह क्या बात है? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?’ भागीरथम्मा ने उससे पूछा। ‘तुम खाना खा लो। मेरी इच्छा नहीं है,’ उसने कहा और खाना खत्म करने की रस्में पूरी कीं, उसकी थाली लगभग वैसी ही पड़ी रही। जब लक्ष्मी और भागीरथम्मा का भोजन समाप्त हो गया, तो उसने उन्हें एक अंदर के कमरे में बुलाया, उन्हें कात्यायनी के बारे में बताया और उसका पत्र पढ़कर सुनाया। हक्का-बक्का भागीरथम्मा ने पूछा, ‘तो, उसने पहले ही तुमसे इस बारे में बात कर ली थी?’

'हाँ।'

आपने मुझे इसकी सूचना क्यों नहीं दी?

‘उसने मुझे इसे प्रकट करने से रोक दिया था। इसके अलावा, उसने अपने मन पर नियंत्रण रखा था और ऐसा सोचने के लिए प्रायश्चित किया था।’

‘और अब उसे किसी की अनुमति की जरूरत नहीं थी! वो कौन आदमी है जो उससे शादी करने जा रहा है?’

‘सदाशिव राव के भाई राजा राव।’

‘यह सच है!’ भागीरथम्मा का क्रोध चरम पर पहुँच गया। ‘उस व्यक्ति को इस घर से बहुत लाभ हुआ है, और उसका भाई ऐसा करता है?’

‘उसके भाई के कृत्य के लिए उसे कैसे दोषी ठहराया जा सकता है?’

क्या कोई बड़ा भाई अपने छोटे भाई को अनुशासित करने से हिचक सकता है?
'शायद राव को इस बारे में पता न हो। वे अब अपनी दूसरी पत्नी के साथ अलग रहते हैं।' श्रोत्री ने डॉ. राव के दूसरे विवाह के बारे में जितनी जानकारी उन्हें थी, उतनी ही बताई।
'आपको यह सब किसने बताया?'
'स्वयं कात्यायनी।'
'उसने तुम्हें सब कुछ बता दिया, लेकिन तुमने हमसे कुछ भी साझा नहीं किया। वह धूर्त पापी कुतिया ऐसे बर्ताव करती रही जैसे वह पवित्र हो, और अब इस घर की प्रतिष्ठा को धूमिल करके चली गई। अच्छा होता अगर वह मर जाती...' भागीरथम्मा अपनी बहू, उस विधवा से शादी करने के लिए आगे आए व्यक्ति और उसके भाई सदाशिव राव की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से निंदा करती रहीं।
'तुम्हें ऐसे अपशब्द नहीं बोलने चाहिए। उम्र के साथ आने वाली शांति तुम खो देती हो!' श्रोत्री की बातों का उस पर कोई असर नहीं हुआ। 'शांत हो जाइए, महाराज। आप बूढ़े हैं, लेकिन अभी तक आपको अक्ल नहीं आई है। जब मैंने उसे कॉलेज में दाखिला दिलाने का विरोध किया, तो आपने उसका साथ दिया और उसी तरह खुशी से उछल-कूद की जैसे उसने की थी। वह अपने पति के नाम पर कॉलेज गई और अब उसने उसके खानदान पर कलंक लगाने का फैसला किया है। हमें उसका मुंडन करवा देना चाहिए था, उसे लाल साड़ी पहनने तक सीमित कर देना चाहिए था और उसे घर में ही कैद कर देना चाहिए था। आपने ही तो उसे इतनी छूट दी थी... हर समय "मेरी बहू, मेरी बहू", है ना? मैं तो यही कहूंगी कि उसने आपके साथ सही किया। बताइए, क्या अब आप कम से कम मेरी बात मानेंगे या नहीं? हमें परिवार की इज्जत बचानी है।'
'क्या बात है? मुझे शांति से बताओ।'
'अपनी सारी शांति अपने पास रखो। बस मेरी बात मानो। उसने लिखा है कि उसकी विवादित शादी तीन दिन बाद होने वाली है। मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ। चलो उस आदमी को सबक सिखाते हैं, उसका सिर फोड़ते हैं और उसे बालों से पकड़कर वापस लाते हैं।'
श्रोत्री ने शांतिपूर्वक उनके सुझावों पर विचार किया। भागीरथम्मा ने पूछा, 'आप चुप क्यों हैं?'
मैसूर जाने का कोई फायदा नहीं। वह नासमझ नहीं है। और एक पल के लिए भी यह मत सोचो कि वह इससे कम परेशान है। ज़बरदस्ती से हासिल की गई कोई भी चीज़ टिकती नहीं है। इंसान को अपने स्वभाव के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए।

‘यह हमेशा आपका वेदांत है! आप एक संत हैं। आप घर पर ही रहिए। मैं लक्ष्मी को अपने साथ ले जाऊंगी और उसे वापस यहाँ खींच लाऊंगी।’
लक्ष्मी, जो तब तक शांत भाव से घटनाक्रम पर विचार कर रही थी, बोली, 'शीनप्पा जो कह रही है वह सही है। उसे जबरदस्ती यहाँ बुलाकर भी इसे सुधारा नहीं जा सकता। यह उसका कर्म है!'
भागीरथम्मा ने तिरस्कारपूर्वक कहा, ‘ये तो मेरी एक और सलाहकार है!’ लक्ष्मी से सांत्वना मांगकर श्रोत्री वहां से निकलकर ऊपर अपने अध्ययन कक्ष में चले गए। उनका मन भी व्याकुल था।

2

श्रीप्रकाश बोर्डिंग एंड लॉजिंग के कन्वेंशन हॉल में राजा और कात्यायनी ने एक-दूसरे को माला पहनाकर अपने विवाह का जश्न मनाया। 50 रुपये के शुल्क पर, एक पुजारी ने एक साधारण एक घंटे का अनुष्ठान संपन्न कराया, जिसमें राजा ने कात्यायनी के गले में विवाह की डोरी पहनाई। उपस्थित विशिष्ट अतिथियों ने नवविवाहित जोड़े को पवित्र अनाज से आशीर्वाद देने के बाद, उनसे व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की, उन्हें उपहार दिए और बधाई दी। सभी अतिथि राजा के मित्र थे। चूंकि गर्मी की छुट्टियां चल रही थीं और शादी केवल दो दिनों के कम समय में आयोजित करनी पड़ी थी, इसलिए कई लोग उपस्थित नहीं हो सके। हालांकि नागलक्ष्मी कहीं जाना नहीं चाहती थी, फिर भी उसने होटल आना अनिवार्य समझा। दूल्हा या दुल्हन में से किसी की भी ओर से कोई अभिभावक नहीं था जो उनके संबंधित धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करा सके। राव कोलकाता में संग्रहालय का अध्ययन करने और विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से कुछ दुर्लभ पुस्तकें लेने के लिए आए हुए थे, और उन्हें इन घटनाओं की कोई जानकारी नहीं थी। राव को राजा-कात्यायनी के प्रेम प्रसंग के बारे में कुछ भी पता नहीं था।
विवाह की रस्में पूरी होने के बाद, तीनों ने कुछ देर के लिए मेहमानों से विदा ली और किराए के कमरे में चले गए। कात्यायनी ने नागलक्ष्मी के चरणों में प्रणाम किया और कहा, “बहन, शायद आप मेरे इस कार्य से सहमत न हों। आप घर की मुखिया हैं। यद्यपि विवाह की रस्मों में दुल्हन को स्वीकार करने की कोई रस्म नहीं निभाई गई, फिर भी आपने मुझे अपने घर में जगह दी है। कृपया मेरी देखभाल करें।”

नागलक्ष्मी ने उदासीनता से कहा, 'राजा की पत्नी होने के नाते, तुम हमारे घर की सदस्य हो। यद्यपि मैं गृहस्थी की सदस्य हूँ, मैं अनासक्त रहने की तैयारी कर रही हूँ। अब से, तुम सब कुछ संभालो।'
बाहर हॉल में कालीन हटाया गया, फर्श पर झाड़ू लगाई गई और रात के खाने के लिए केले के पत्ते बिछाए गए। मेहमानों की इच्छा के अनुसार, नवविवाहित जोड़े ने केले के पत्तों पर एक साथ भोजन किया। होटल के रसोई कर्मचारियों ने कई तरह के व्यंजन तैयार किए थे—मिठाई, स्नैक्स, फ्रूट सलाद, कौलिस, सब्जी करी, दही करी, दही आदि। रात का खाना आराम से चलता रहा और मेहमान आपस में बातचीत करते रहे।
'कितने भाग्यशाली हैं ये राजा राव। भले ही वो विधवा हों, उन्हें तो एक सुंदर युवती मिल ही गई है। अगर कोई स्त्री इतनी सुंदर हो, तो चार बार विधवा हो चुकी स्त्री भी विवाह के योग्य है।'
'तुम्हें इसमें अग्रणी नहीं बनना चाहिए। ऐसी महिला के पांचवीं बार विधवा होने की संभावना अधिक होती है!'
'वह अपने बड़े भाई की तरह ही रोमांटिक लगता है। मुझे लगता है कि यह गुण उनके परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है।'
‘वाह वाह! डॉ. राव तो कहीं नजर नहीं आ रहे।’
'पीली साड़ी पहने, राजा राव के पास बैठी महिला, डॉ. राव की पहली पत्नी हैं। यह जानते हुए कि वह यहाँ होंगी, वे दोनों यहीं रुक गए होंगे।'
नहीं, नहीं, आप गलत हैं। वे अध्ययन यात्रा पर कोलकाता गए हैं। उन्हें इस घटनाक्रम की जरा भी जानकारी नहीं है। आपको उन्हें भावुक कहना उचित नहीं है। वे एक महान विद्वान हैं, ऐसे विद्वान जो शोध में लीन हो जाते हैं।
‘यार, खाना तो बढ़िया है। खाना कृतज्ञतापूर्वक परोसने के बजाय, तुम मेज़बान के तौर-तरीकों पर फालतू टिप्पणियाँ करना पसंद करते हो!’ राजा के एक नाटक में भूमिका निभा चुके एक व्यक्ति ने कहा।
उसके बाद सब लोग चुपचाप खाना खाते रहे। आखिर में, जब दही के बदले चावल परोसे गए, तो संस्कृत के प्रोफेसर ने सुरीले स्वर में दो श्लोक सुनाए। किसी और ने भी उनका साथ देते हुए एक श्लोक सुनाया। पिछले साल अंतर-महाविद्यालय गायन प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने वाले और इस साल एमए कर रहे एक छात्र ने एक गीत गाया। सभी लोग अपनी बाईं हथेली से अपनी बाईं जांघ पर थपथपाकर ताल मिला रहे थे। जब तक उन्होंने गीत समाप्त किया, तब तक रात का खाना खत्म हो चुका था।

मेहमानों ने एक बार फिर राजा राव से हाथ मिलाया और एक-एक करके अपने उपहारों के पैकेट लेकर चले गए। होटल का बिल चुकाकर राजा, कात्यायनी, नागलक्ष्मी और पृथ्वी तांगे में बैठकर घर लौट गए।

इसके बाद पंद्रह दिनों तक नवविवाहित जोड़ा बाहरी दुनिया से बेखबर रहा। नागलक्ष्मी हमेशा की तरह खाना बनाती रही। चूंकि छुट्टियां चल रही थीं, इसलिए पृथ्वी पड़ोस में अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया। राजा और कात्यायनी अपने कमरे में ही रहे। वे इधर-उधर भटकना नहीं चाहते थे और न ही नाटक देखना चाहते थे। वे बस एक-दूसरे को यह बताते हुए संतुष्ट थे कि एक मिनट का बिछड़ना भी उनके लिए कितना कष्टदायी होगा, कि उनके मिलन में अद्वैत का अनुभव शाश्वत है। राजा ने इस शाश्वतता को शाश्वत, सत्य, निरंतर आदि शब्दों में व्यक्त किया। जब वह नागलक्ष्मी के शरीर की अनूठी सुंदरता का वर्णन करते और उसकी प्रशंसा में गीत गाते, तो नागलक्ष्मी भी उनके चेहरे की सूक्ष्मता का वर्णन करतीं। दिन रात बन गए और रात दिन, और प्रकृति और आत्मा के मिलन में, मानो समय अपनी दिनचर्या भूल गया हो।

चूंकि कात्यायनी केवल उन्हीं कपड़ों में आई थी जो उसने पहन रखे थे और अपने साथ कुछ भी नहीं लाई थी, इसलिए राजा उसे एक दुकान पर ले गया और उसके लिए नई डिज़ाइनर साड़ियाँ खरीदीं। कात्यायनी उन्हें पहनती, सिंदूर लगाती और गर्दन पर फूलों की माला पहनती। जब वह आईने में अपनी छवि देखती, तो उसे लगता कि उसकी नारीत्व की पूर्णता प्राप्त हो गई है। जब भी राजा उसे अपनी बाहों में भरता और उसकी सुंदरता की प्रशंसा करता, तो वह तृप्ति की अनुभूति से भर उठती। वह अपने पति के सामने झुकती और चुपचाप उनके सामने आत्मसमर्पण कर देती। उसकी खुशी इस भावना से उमड़ उठती कि उसका अस्तित्व ही उनके आनंद के लिए है।

कुछ दिनों बाद, कात्यायनी ने रसोई में नागलक्ष्मी की मदद करना शुरू कर दिया। नागलक्ष्मी ने न तो उसकी मदद करने से इनकार किया और न ही उसके न आने पर चिंता जताई। वह अपने काम में मग्न रहती थी। काम उसके लिए बोझ नहीं था, और अपने सारे काम निपटाने के बाद वह रटने का काम करती थी। कात्यायनी के उससे बातचीत शुरू करने पर भी वह कोई दिलचस्पी नहीं दिखाती थी। नागलक्ष्मी में आए बदलाव और उसके शांत स्वभाव को देखकर, कात्यायनी उससे ज्यादा बातचीत नहीं करती थी। लेकिन वह खाना बनाने में उसकी मदद करती थी।

पृथ्वी कात्यायनी से परिचित था। उसे यह भी पता था कि अब उनकी शादी उसके चाचा से हो गई है। उसके दोस्तों ने कहा था, 'तुम्हारे चाचा ने विधवा से शादी कर ली है।' वह

इसका मतलब भी जानता था। सात साल की उम्र में वह बहुत बुद्धिमान था। राजा ने उसे कात्यायनी को आंटी कहकर बुलाने को कहा। उसने बात मान ली। आज भी राजा उसे प्यार से गोद में लेकर घूमता था। कभी-कभी वह उसे साइकिल पर घुमाने भी ले जाता था। कात्यायनी उसे गोद में उठाकर उसके सिर पर हाथ फेरकर अपना स्नेह जताती थीं। वह अपनी नई आंटी के साथ खुलकर घुलने-मिलने में थोड़ा झिझकता था। लेकिन वह उनसे दूर भी नहीं रहता था ताकि आंटी उसे unfriendly न समझें। धीरे-धीरे वे एक-दूसरे के करीब आ गए। वह उनसे खुलकर बातें करने लगा। वह अपना होमवर्क भी उनसे चेक करवाता था।

जब भी कात्यायनी पृथ्वी को देखती, उसके मन में चीनी का ख्याल आ जाता। वह तो उसकी अपनी ही संतान थी। जिस दिन वह उस घर से निकली थी, चीनी ने कहा था, 'अम्मा, मुझे भी ले चलो।' उसने चीनी से कहा था कि वह बाद में आ जाएगा और तेज़ी से चली गई थी। अब, अपने बच्चे की यादें उसे सताने लगीं। पहले तो पृथ्वी को देखते ही चीनी की याद आ जाती। धीरे-धीरे, चीनी का चेहरा हर पल उसकी यादों में साफ-साफ उभर आता, चाहे वह कहीं भी हो और कोई भी काम कर रही हो। इसलिए उसने फैसला किया कि वह अपने बच्चे को यहाँ ले आएगी। कभी-कभी उसके ससुर और सास की याद भी आ जाती। अगर वह बच्चे को यहाँ ले आती, तो आने वाले दिनों में वे किसकी तरफ देखेंगे? उस बूढ़े दंपत्ति की याद उसके मन में दया भाव जगा देती। कभी-कभी उसके भीतर से एक दबी हुई आवाज़ आती कि उन्हें छोड़ देना उसकी गलती थी, लेकिन वह उस आवाज़ को दबा देती। लेकिन वह अपने बच्चे के बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी।

एक रात, कात्यायनी ने राजा से अपने दिल की बात कही। उसने पूछा, 'मेरे बच्चे को यहाँ लाने के बारे में आपकी क्या राय है?' राजा चुप हो गया। यह देखकर उसने पूछा, 'क्यों चुप हो?'

‘बिल्कुल नहीं,’ उसने कहा। अपनी कही हुई बात याद करते हुए उसने कहा, ‘क्या मैंने तुम्हें पहले स्पष्ट रूप से नहीं कहा था? उसे यहाँ ले आओ। वह हमारा बच्चा है।’

यह सुनकर वह बेहद खुश हुई। उसने उसे दोनों बाहों से गले लगाया और कहा, 'आप बहुत अच्छे आदमी हैं। क्या आप मेरे साथ उसे लाने में मदद करेंगे?'

'मेरा जाना उचित नहीं होगा। आपको यह स्वयं करना चाहिए।'

'मेरे लिए अकेले वहां जाकर यह कहना असंभव है कि "मुझे मेरा बच्चा दे दो"। आपके साथ होने से शायद मैं उनसे अनुरोध कर सकती हूं।'

उन्होंने इस पर विचार किया और कहा, 'आप पहले उन्हें एक पत्र लिखकर सब कुछ स्पष्ट कर दें, उनसे चीनी को आपके साथ भेजने का अनुरोध करें और उन्हें अपनी प्रस्तावित यात्रा की तिथि और समय के बारे में सूचित करें। जब आप उस तिथि को वहां जाएंगे, तो मौखिक रूप से वह बाधा उत्पन्न करने वाला प्रस्ताव देने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।'
अगले दिन, उसने पत्र लिखना शुरू किया। लेकिन मानो उसे कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। उसकी उंगलियां भी कांप रही थीं। फिर भी, उसने हिम्मत जुटाई और पांच पन्नों का पत्र लिखा। अपने विवाह के संपन्न होने की सूचना देते हुए, उसने बताया कि वह उनके चरणों में प्रणाम करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए वहां आएगी। फिर उसने कहा कि मां-बेटे का रिश्ता सभी रिश्तों का आधार है। मां के गर्भ के तीव्र आकर्षण और अपने बच्चे के साथ न होने की पीड़ा को व्यक्त करते हुए, उसने अपने पत्र का समापन इस प्रकार किया:
इस बच्चे की माँ की पीड़ा को समझना आपके लिए बिलकुल भी मुश्किल नहीं है। आज से चार दिन बाद, यानी 20 तारीख को, मैं दोपहर की ट्रेन से वहाँ जाऊँगी। कृपया मेरे बच्चे को मेरे साथ भेज दीजिए। कृपया मेरी सास और लक्ष्मी को मेरा प्रणाम कह दीजिएगा।

उसने उसे एक लिफाफे में रखा और राजा को दे दिया। उसने उस पर आवश्यक डाक टिकट लगाए और तुरंत उसे पोस्ट कर दिया।

3

जब कात्यायनी ने 20 तारीख को दोपहर का भोजन करने के बाद प्रस्थान किया, तो जून की हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो चुकी थी। पश्चिमी घाट में अच्छी बारिश हुई थी और सभी नदियाँ उफान पर थीं। राजा छाता लिए उसे रेलवे स्टेशन तक छोड़ने गया और उसे विदा किया। उसके मन में एक अनजाना डर बैठा हुआ था। जब ट्रेन चलने ही वाली थी, तो उसने कहा, 'मैं तुम्हें छह बजे लेने आऊँगा।' वह उस घर को छोड़ने के डेढ़ महीने बाद नंजनगुड जा रही थी। शायद यह उसकी वहाँ की आखिरी यात्रा थी। पूरी यात्रा के दौरान बूंदा-बांदी होती रही। उसे आसमान में सूरज का पता ही नहीं चल रहा था। बीच के स्टेशनों पर ट्रेन रुकने और फिर चलने पर भी बारिश जारी रही। जब ट्रेन कंबलीमठ

पुल पार करके धीरे-धीरे आगे बढ़ी, तो वह कपिला नदी को आधा उफान पर बहते हुए साफ देख सकी। दूर स्नानघर थे, और सामने मंदिर और उसके बाईं ओर फैली हरियाली थी, जिसमें बड़े-बड़े पेड़ थे; सब कुछ जाना-पहचाना सा था। अचानक उसके मन में यह बात आई: एक साल जून के उसी महीने में, जब हल्की-हल्की बारिश हो रही थी, कपिला ने अपने पहले पति को निगल लिया था। उसे तब से बहाए गए आंसुओं की मात्रा भी याद आ गई। जब उसके विचार तब से झेली गई सभी पीड़ाओं को याद कर रहे थे, तभी ट्रेन नंजनगुड पहुँच गई।

जब वह ट्रेन से उतरी, तो उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। कहीं रास्ते में कोई उसे पहचान न ले! अब तक तो पूरे शहर को उसके जीवन में हुए घटनाक्रमों की खबर लग चुकी होगी। उसने दृढ़ निश्चय के साथ स्टेशन से बाहर कदम रखा और अपने घर की ओर चल पड़ी, खुद को समझाते हुए कि उसे किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है। अब तक तो उसके ससुराल वालों को उसका पत्र मिल चुका होगा और उन्होंने कोई फैसला ले लिया होगा। अगर वे सब मिलकर बच्चे को देने से इनकार कर दें, तो वह क्या करेगी? सास तो ज़रूर गुस्से से आग बबूला हो रही होगी। लेकिन ससुर मान जाएंगे। खैर, मैंने उस पत्र में जो कहना था कह दिया है। अब दोबारा बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह घर के आधे खुले दरवाजे पर पहुँची। वह बैठक में दाखिल हुई और फिर अंदर के कमरों में गई, जिनके एक तरफ रसोईघर, भोजन कक्ष और पूजा कक्ष था। अंदर जाने की हिम्मत उसमें नहीं हुई। वह बैठक में एक कुर्सी पर बैठ गई। अंदर से मंत्रों के पाठ की आवाज सुनाई दी: '...काश्यप-गोत्र से संबंधित मेरे पिता नंजुंडा शर्मा को, वार्षिक मृत्यु संस्कार के भाग के रूप में...'

उसे अंदर चल रही हलचल का आभास हो गया। उसने गर्दन उठाकर मुख्य द्वार की ओर देखा। हालाँकि सामने का आँगन झाड़ू से साफ किया हुआ था, पर रंगोली नहीं बिछाई गई थी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि वार्षिक मृत्यु संस्कार चल रहे थे। किसके? उसे तुरंत याद आया। इसी महीने उसके पति नंजुंडा श्रोत्री का देहांत हुआ था। और हर साल, उनकी पुण्यतिथि के दिन हल्की बारिश होती थी। उसे इस बात का पछतावा होने लगा कि उसने आने के लिए कैसा दिन चुना! बिना सोचे-समझे ही वह इस असामान्य तिथि पर यहाँ आने के लिए तैयार हो गई थी। उसने सोचा कि वह चली जाए और किसी और दिन आए। वह उठी और मुख्य द्वार तक गई। वहाँ उसकी मुलाकात लक्ष्मी से हुई, जो घर में प्रवेश कर रही थी। कात्यायनी ने अपना सिर झुका लिया, लेकिन लक्ष्मी ने

उससे सौहार्दपूर्वक कहा, 'क्या तुम अभी आई हो? क्या तुम अभी जा रही हो? अरे, बैठो यहाँ।'
नहीं, लक्ष्मी। आज उनकी पुण्यतिथि है।
'जी हां, नंजुंडा का। क्या आप भूल गए थे? आइए बैठिए। हमें आपका पत्र मिल गया है।' बहस का कोई फायदा न समझते हुए कात्यायनी बैठक कक्ष में लौट आई और बैठ गई। लक्ष्मी भी कुछ देर उसके साथ बैठी रही। लेकिन दोनों को बातचीत के लिए कुछ सूझ नहीं रहा था। कात्यायनी सिर झुकाए बैठी रही। लक्ष्मी उठी और दाहिनी ओर के दरवाजे से पिछवाड़े में चली गई। मंत्रों की ध्वनि अंदर से आती रही और कात्यायनी संबंधित अनुष्ठानों को समझ सकी। चीनी को अपने दिवंगत पिता के अनुष्ठान करने का अधिकार नहीं था, क्योंकि उन्होंने अभी तक उपनयन संस्कार नहीं किया था, इसलिए इस वर्ष भी, पहले की तरह, नई बस्ती के कुप्पैया ने उनकी जगह अनुष्ठान किए। स्थानीय पुजारी सुब्बैया शास्त्री मंत्रों का पाठ कर रहे थे और विधि का मार्गदर्शन कर रहे थे। कात्यायनी यह नहीं जान पाई कि वे दो प्रतिनिधि कौन थे—एक पूर्वजों का और दूसरा देवताओं का—क्योंकि उनकी आवाज धीमी थी। बीच-बीच में, चीनी अपने सामान्य प्रश्न पूछता रहा, जिनका श्रोत्री धीमी आवाज में संक्षिप्त उत्तर दे रही थी। लगभग 15 मिनट में दोपहर के भोजन से पहले की रस्में पूरी हो गईं। पुजारी ने उचित मंत्र का जाप करते हुए निर्देश दिया कि भोजन निर्धारित क्रम में परोसा जाए। अंत में, कुप्पैया ने दोनों नियुक्त व्यक्तियों से कहा, 'मैं आप दोनों से निवेदन करता हूँ कि कृपया इस भोजन का आनंद लें, जिसे मैंने बड़ी मेहनत से तैयार किया है, ताकि आज रात आप भूखे न रहें।' दोनों ने कहा, 'ऐसा ही हो।' कात्यायनी ने श्रव्य संकेतों पर ध्यान केंद्रित किया। दोपहर के भोजन की शुरुआत की रस्म सुनाई दी और भागीरथम्मा भोजन परोस रही थीं।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। फिर किसी ने एक सवाल उठाया: 'पूर्वजों के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों और देवताओं के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों में क्या अंतर है?'
कात्यायनी को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे पता चला कि ये उसके पिता श्रीकांतैया हैं। आज वो क्यों आए हैं? दामाद की मृत्यु के बाद, कुछ दिनों के लिए वो उसे अपने घर ले गए थे, बस इतना ही। उसके बाद से वो उससे मिलने नहीं आए थे। उन्होंने उसे एक भी पत्र नहीं लिखा था। शुरू में तो उन्होंने उससे बहुत प्यार जताया था, लेकिन सौतेली माँ के आने के बाद वो प्यार फीका पड़ गया था। अगर वो अब आते... तो क्या श्रोत्री अपने पोते की खातिर संदेश भेजते?

श्रोत्री का उत्तर सुना गया। 'देवताओं के लिए अनुष्ठान करते समय, यज्ञोपवीत को बाएं कंधे पर धारण करना चाहिए और उसे दाहिनी भुजा के नीचे से गुजारना चाहिए। परिक्रमा दक्षिणावर्त दिशा में करनी चाहिए। जल अर्पित करते समय "स्वाहा" और "वशत्" कहना चाहिए। पूर्वजों के लिए अनुष्ठान करते समय, यज्ञोपवीत को दाहिने कंधे पर धारण करना चाहिए और उसे बाईं भुजा के नीचे से गुजारना चाहिए। अनुष्ठान दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए। जल अर्पित करते समय "स्वाधा" कहना चाहिए। पहले अनुष्ठान में प्रयुक्त हलफा कटी हुई घास होनी चाहिए, जबकि दूसरे अनुष्ठान में उखड़ी हुई घास होनी चाहिए।'

बातचीत इसी प्रकार आगे बढ़ी और उस अवसर से संबंधित विषयों पर चर्चा हुई। श्रीकांतैया एक वकील थे। उन्होंने एक कानूनी प्रश्न पूछा। 'यहाँ 'पुत्र' शब्द का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ केवल अगली पीढ़ी है या इसमें बाद की पीढ़ियाँ भी शामिल हैं?'

श्रोत्री ने उत्तर दिया, "इस विषय में स्पष्टीकरण संपत्ति के बंटवारे से संबंधित खंड में है: पुत्रपदं प्रपौत्रपर्यंतानामेव पारवणविधिना पिंडदानोपकारकत्वस्याविशेषात्। पुत्र शब्द में तत्काल बाद की तीन पीढ़ियाँ शामिल होंगी। वे तीनों अपने पूर्वजों के संस्कार करने के पात्र हैं, और पूर्वज उनके द्वारा प्रदान किए गए प्रतीकात्मक भोजन को सहर्ष स्वीकार करेंगे।" फिर उनके शब्द मृत्यु संस्कारों से हटकर प्राचीन काल की संपत्ति बंटवारे की पद्धतियों पर आ गए। "यद्यपि पुत्र अपने पिता से कोई धन विरासत में नहीं पाता, उसे अपने पिता के ऋण ब्याज सहित चुकाने होते हैं। पोता केवल मूल ऋण राशि ही चुकाता है। यदि पोते को उसके दादा का पुत्र नहीं माना जाता, तो उसे मूल राशि भी क्यों चुकानी चाहिए?"

कात्यायनी सोच रही थी कि क्या उन्हें पता भी है कि वह यहाँ है। लक्ष्मी दूसरे दरवाजे से निकल गई थी। उसे पूरा यकीन था कि वे ये बातें उसे बताने के इरादे से नहीं कह रहे थे। तभी चीनी अंदर से बाहर आया। ऐसा लग रहा था जैसे वह भी अपने पिता के अंतिम संस्कार में शामिल हुआ हो। पाँच साल का वह बच्चा कमर पर सिर्फ़ एक गीली धोती पहने था। उछलते हुए आते ही उसने कात्यायनी को बैठक में देखा। एक पल के लिए वह जैसे किसी अजनबी को देखकर चौंक गया, लेकिन जल्द ही उसने उसे पहचान लिया और पूछा, 'अम्मा, आप इतने दिनों से कहाँ थीं?' उसकी आवाज़ खामोश घर के हर कोने तक पहुँच गई। कात्यायनी ने उसे इशारा किया। वह बैठक के दरवाजे तक गया। 'मेरे पास आओ चीनी,' कात्यायनी ने धीमी आवाज़ में कहा। 'अम्मा, आज पापा की पुण्यतिथि है। क्या आपको नहीं पता? मुझे किसी को छूना नहीं है,' उसने कहा और

अंदर भाग गया। कात्यायनी दुखी हो गई। लेकिन वह पांच मिनट में ही वापस आ गया। वह अपनी मां के पास गया, अपनी कोहनियों को उनकी जांघों पर रखा और पूछा, 'मां, आप इतने दिनों से कहां थीं?'
'मैं मैसूर में था, बच्चे।'
'अब कहीं मत जाना,' उसने अपना चेहरा ऊपर उठाते हुए उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा। उसने अपने हाथों से उसका चेहरा थाम लिया और आगे झुककर उसे सीने से लगा लिया। 'मैं रस्मों के बाद लौट आऊँगा। लगता है पापा अभिषेक लेकर आएँगे। मैं तुम्हें भी ये दे दूँगा,' उसने कहा और उससे अलग होकर चला गया। वह दरवाजे पर रुका और बोला, 'तुम यहाँ क्यों बैठी हो? अंदर आ जाओ।' वह तेज़ी से चला गया।
तब तक दोनों नियुक्त व्यक्तियों का दोपहर का भोजन समाप्त हो चुका था। मंत्र-तंत्र फिर से शुरू हुए। आधे घंटे बाद, अनुष्ठान संपन्न हुए। सुब्बैया शास्त्री दस मिनट के लिए रसोई में भागीरथम्मा से बात करने गए। अंत में, उन्होंने कहा, 'हम चलते हैं। आप सब अब दोपहर का भोजन कर लीजिए,' और बाहर निकल गए। दोनों नियुक्त व्यक्तियों में से एक उन्हें छोड़ने गया, और बाहर जाते समय उनकी नज़र कात्यायनी पर पड़ी। कुप्पैया एक चौड़े पीतल के बर्तन में चावल के गोले लेकर नदी की ओर चल पड़े, जो मृतकों के लिए प्रतीकात्मक भोजन थे। बाहर जाते समय उनकी नज़र भी कात्यायनी पर टिकी रही। कात्यायनी को ऐसा लगा जैसे उनका पेट मिट्टी के तेल में जल रहा हो। वह बस एक दीवार को घूरती रहीं। जब कुप्पैया चावल के गोलों को नदी में विसर्जित करके लौटे, तो उनकी नज़र फिर से कात्यायनी पर टिकी। पहले भी ऐसे अवसरों पर, यही कुप्पैया उनके सामने अपना सिर झुका लेते थे; कात्यायनी को उसका इस तरह से उसकी ओर देखना अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह बेबस थी।
पंद्रह मिनट बाद श्रोत्री उसके पास आए और बोले, 'खाना परोस दिया गया है। आओ, बच्ची, दोपहर का भोजन करो।' हालांकि उनके कोमल शब्दों और उनके हमेशा की तरह बात करने के तरीके से वह प्रभावित हुई, फिर भी उसने जाने की अनुमति मांगी। उसने कहा, 'मेरा भोजन हो गया है। आप कृपया खा लीजिए।' लेकिन श्रोत्री दहलीज के पास ही खड़े रहे। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, 'कोई बात नहीं, आओ। नाश्ता किए हुए काफी घंटे हो गए हैं, है ना?' उसने और कोई नखरे नहीं किए। उठकर वह अंदर चली गई। उसके ससुर, उसके पिता और चीनी एक कतार में बैठे थे। कात्यायनी के लिए केले का पत्ता अलग से बिछाया गया था। कुप्पैया रसोई के अंदर एक पत्ते के सामने बैठे थे। खाते समय किसी ने कुछ नहीं कहा। भागीरथम्मा ने इतने मौन भाव से खाना परोसा

मानो किसी का गला घोंट रही हो। हलवा, डोनट्स, तले हुए पकवान और आम-केले का गूदा—केले के पत्ते पूरी तरह से सजे हुए थे। कात्यायनी ने सादी करी के साथ चावल के सिर्फ दो कौर खाए। किसी ने उसे खाने के लिए नहीं कहा। जब खाने की आखिरी चीज़, यानी चावल और दही, आई, तब तक चीनी सो चुका था। आज उसके पिता की पुण्यतिथि थी, इसलिए उसने सुबह से उपवास रखा था, और कुछ निवाले खाते ही उसका भूखा पेट भर गया था। रिवाज़ के मुताबिक, श्रीकांतैया श्रोत्री के दोपहर का खाना खत्म करने का इंतज़ार कर रहा था। जैसे ही श्रोत्री ने दोपहर का खाना खत्म किया, श्रीकांतैया जल्दी से उठ गया।

दोपहर के भोजन के बाद, कात्यायनी बैठक कक्ष में अपनी कुर्सी पर लौट आई। लगभग आधे घंटे तक वहाँ कोई नहीं आया। हर पल इतना भारी था और ऐसा लग रहा था मानो वह उसे मौत के घाट उतार देगा। तभी श्रोत्री आई और उसके पास पलंग के कोने पर बैठ गई। कात्यायनी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। पाँच मिनट बाद श्रोत्री ने कहा, 'हमें तुम्हारा पत्र मिला।'

कुछ हिम्मत जुटाकर कात्यायनी ने बस इतना कहा, ‘मैंने उस पत्र में सब कुछ लिख दिया है।’ तभी भागीरथम्मा बहस में शामिल होने के लिए दरवाजे पर आ गईं। ‘तुमने वह सब क्यों नहीं लिखा? अपने इस काम से तुमने अपने मायके के साथ-साथ इस घर को भी कलंकित किया है। अब तुम इस बच्चे को ले जाकर और अपनी आदत के अनुसार उसे अपशब्द बोलकर इस घर की वंश परंपरा को खत्म करने आई हो।’ उन्होंने एक ही सांस में सब कुछ कह दिया। उनके पीछे श्रीकांतैया आए और सरोत्री के पास पलंग के दूसरे छोर पर बैठ गए। वे लंबे-लंबे, कुछ समय से मोटे हो चुके थे। वे अपने कामों में चतुर थे, लेकिन रूढ़िवादी थे। भागीरथम्मा ने आगे कहा, ‘अपने इस अपमानजनक पुनर्विवाह से संतुष्ट न होकर, अब तुम इस बच्चे को अपने नवविवाहित पति को दिखाने और यह कहने के लिए ले जाना चाहती हो, “चीनी, यह तुम्हारा पिता है जिसने तुम्हें जन्म दिया है!” क्या तुम्हें जरा भी शर्म नहीं है? तुम्हारे पिता यहां हैं। देखते हैं कि वे तुम्हारे इस काम को स्वीकार करते हैं या नहीं।’ हम वहीं से बात शुरू करेंगे। क्या हमने तुम्हें किसी बात पर डांटा है? क्या हमने इस घर में तुमसे किसी चीज की कमी की है? अब अपने पिता को सब कुछ बताओ।

वकील श्रीकांतैया ने गवाह से जिरह करने के अंदाज़ में बात शुरू की। उन्होंने गला साफ़ किया, मानो अपनी बेटी को यह कहना चाह रहे हों कि 'मेरी तरफ़ मुड़ो और बोलो'। सन्नाटा छा गया। उन्होंने फिर गला साफ़ किया। उनकी बेटी ने कुछ नहीं कहा।

ज़ोर से खांसने पर भी उनकी बेटी ने बात शुरू नहीं की। उन्होंने अंग्रेज़ी में बोलना शुरू किया। भागीरथम्मा को भले ही कुछ समझ नहीं आया, लेकिन उन्होंने एक अनुभवी वकील की वाक्पटुता को पहचान लिया। श्रोत्री को भले ही हर शब्द समझ नहीं आया, लेकिन वह उसका सार समझ गई। आधे घंटे तक उन्होंने धर्मशास्त्र पर ज़ोरदार भाषण दिया। फिर उन्होंने कानून का एक पहलू बताया, 'इंग्लैंड में भी बच्चों की अभिरक्षा का अधिकार जैविक पिता के परिवार के पास होता है। अगर महिला विधवा भी हो जाए, तो भी बच्चों का नाम उनके जैविक पिता के नाम पर ही रहेगा।' फिर यह कहते हुए कि उसने अपने पवित्र खानदान को भी कलंकित किया है, उन्होंने अपनी बेटी का उपहास करना शुरू कर दिया। 'तुम बदमाश हो, परिवार पर कलंक हो।' ऐसी नालायक बेटी का जन्म ही न होना चाहिए था...' वह अपनी तीखी आलोचना जारी रखना चाहता था। यह भांपते हुए श्रोत्री खड़ी हो गई, वकील की ओर मुड़ी और बोली, 'जो हुआ सो हुआ। किसी को किसी का उपहास करने का कोई फायदा नहीं। हमें अपशब्द नहीं बोलने चाहिए। आप दोनों जाइए। मैं उससे निजी तौर पर बात करूंगी।'

भागीरथम्मा को वकील के भाषण पर पूरा भरोसा था। उन्होंने अपने पति की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। "तुम मूर्ख हो, धर्म के नाम पर ज्ञान बघारने वाले। वह वकील हैं। उन्हें बोलने दो। तुम चुप रहो," उन्होंने कहा और अपनी जगह पर खड़ी रहीं। तब तक कात्यायनी शोक से व्याकुल हो चुकी थीं। उनके पिता लगभग कभी अपने ससुराल नहीं जाते थे। उन्होंने कभी अपनी बेटी का हालचाल नहीं पूछा। अब वे यहाँ आकर मुझे ऐसे डांटते हैं जैसे कोई पुलिसवाला चोर को डांटता है। काश मेरी माँ जीवित होतीं! मेरी माँ के देहांत के बाद क्या उन्होंने दोबारा शादी नहीं कर ली? उन्होंने इस तरह सोचा। इस विचार से उनके भीतर से चीख फूट पड़ी।

श्रोत्री ने फिर कहा, 'तुम दोनों अंदर जाओ,' विशेष रूप से अपनी पत्नी से। भागीरथम्मा चुप रहने वाली नहीं थीं। 'मैं कहीं नहीं जाऊंगी। वह सिर्फ आपका पोता नहीं है। मैंने अपने बेटे को जन्म दिया है। क्या आप कभी मेरे गर्भ का दर्द महसूस कर सकते हैं? यह उनका बच्चा है, और मैंने ही उसकी देखभाल की है,' वह जोर-जोर से रोने लगीं।

श्रीकांतैया ने कहा, 'अगर आप जैसी बड़ी उम्र की महिला शोक मनाती है, तो यह किसी के लिए भी अच्छा नहीं होता। कृपया खुद पर काबू रखें,' और उन्हें सांत्वना देने के लिए उनके पास गए। अब श्रोत्री ने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा, 'मुझे इसे संभालने दीजिए,' और उन दोनों को बांहों से पकड़कर बैठक से बाहर ले गए और दरवाजा बंद कर दिया। भागीरथम्मा रोती रहीं। श्रोत्री ने अंदर से दरवाजा बंद कर दिया।

कात्यायनी अभी भी सिसक रही थी। श्रोत्री ने उसके पास एक कुर्सी खींचकर बैठते हुए कहा, 'इन मामलों में रोने का कोई फायदा नहीं है। कृपया खुद को संभालो, बच्ची। अब यहां कोई नहीं है जो तुम्हें ठेस पहुंचाए। मुझसे बात करो।'

कात्यायनी ने अपना सिर उठाया और अपने ससुर की ओर देखा। उनका चेहरा हमेशा की तरह शांत था। पाँच मिनट में उसका रोना बंद हो गया। फिर उसने अपनी साड़ी के पल्लू से अपनी आँखें पोंछीं और कहा, 'आप अच्छी तरह जानते हैं कि एक माँ के लिए अपने बेटे के बिना जीना कितना मुश्किल होता है। मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।'

'सच है,' सरोत्री ने समझकर सिर हिलाया।

मुझे पता है कि इससे आपको भी दुख होगा। लेकिन चीनी के बिना मैं कैसे रहूँगी? कृपया उसे मेरे साथ भेज दीजिए।

वह लगभग दो मिनट तक चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'बच्ची, यह सिर्फ दिमाग या दिल का सवाल नहीं है। इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। एक माँ अपने बच्चे से प्यार करती है, ठीक है। लेकिन क्या हम भी उतना ही प्यार नहीं करते? तुमने अपने पति को खो दिया, लेकिन तुमने दूसरा पा लिया। क्या हमें अपने मृत बेटे की जगह कोई और मिल पाएगा?'

कात्यायनी को कोई जवाब सूझा नहीं। वह चुपचाप खड़ी रही। श्रोत्री ने आगे कहा, "मृत पुत्र हमारा था। उसका पुत्र केवल तुम्हारा कैसे हो सकता है? मेरी राय में, बच्चे न तो केवल माता के होते हैं और न ही केवल पिता के। वे वंश की संपत्ति होते हैं। जो कोई भी उन पर अपना व्यक्तिगत अधिकार जताने की कोशिश करता है, वह अंततः सभी संबंधितों से उनका अधिकार छीन लेता है। एक व्यक्ति को परिवार की हर चीज पर तब तक अधिकार होता है जब तक वह उस परिवार का हिस्सा है। जो व्यक्ति अपनी मनमानी करता है, वह परिवार के मूल पर कैसे दावा कर सकता है?"

मैंने अधिकारों और न्याय के विषय पर चर्चा नहीं की। मैंने बस आपके सामने एक माँ की पीड़ा को उजागर किया।

वंश वृक्ष के बाहर, कोई भी संतान मातृत्व की प्रशंसा नहीं कर सकती। मातृत्व, पितृत्व, रिश्तेदारी, सब वंश पर आधारित हैं। यदि पुरुष और स्त्री केवल वंश को आगे बढ़ाने के

उद्देश्य से विवाह के नाम पर एक होते हैं, तो इस उद्देश्य के बाहर मातृत्व का स्थान कहाँ है?
कात्यायनी भी इस बहस में शामिल हो गईं। उन्होंने कहा, 'जीवन के प्रति आपके और मेरे विचार अलग-अलग हैं। यदि आप मानते हैं कि व्यक्ति का अस्तित्व वंश के लिए है, तो मैं उसके व्यक्तिगत जीवन को अधिक महत्व दूंगी।'
कुछ देर के लिए श्रोत्री चुप हो गए। बहस को आगे न बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, “जब मूल विचार पर ही सहमति न हो तो बहस का कोई अर्थ नहीं। चलिए बहस न करें। क्या आप कम से कम यह मानेंगे कि संतानें अपने माता-पिता की संतानें होती हैं, वैसे ही वे अपने दादा-दादी की नाती-पोतियां भी होती हैं?”
कात्यायनी को एक घटना याद आई। जब चीनी छह महीने की बच्ची थी, तब उसके और उसके पति के बीच सौहार्दपूर्ण ढंग से कहा-सुनी हुई थी। पति ने कहा था, 'बच्ची मेरी है,' जिस पर चीनी ने कहा था, 'नहीं, यह मेरी है।' तभी नंजुंडा ने पास से गुजर रहे अपने पिता से गुहार लगाई। पिता ने मुस्कुराते हुए कहा, 'बच्चे न तो पिता के होते हैं और न ही माता के। वे दादा-दादी के होते हैं।' युवा दंपति ने उनकी बात से पूरी तरह सहमति जताई। कात्यायनी को अब यह आभास हो गया था कि उनका यही विचार था।
श्रोत्री ने कहा, “मान लीजिए कि आप अब बच्चे को अपने साथ ले जाते हैं। क्या आप उसकी देखभाल इस प्रकार कर पाएंगे कि श्रोत्री परिवार का नाम सम्मानपूर्वक बना रहे? क्या परिवार को उस जीन का ज्ञान नहीं होना चाहिए जिसने उसे जन्म दिया है? क्या वह आज की तरह अपने पिता और पूर्वजों के अंतिम संस्कारों को निभाकर अपना दिव्य ऋण पूरा करेगा? क्या ये सब आपके नए परिवार के संदर्भ में बेतुका नहीं लगता?”
मुझे इन सब बातों पर कोई विश्वास नहीं है।
‘तुम्हारा कोई विश्वास नहीं है, कोई बात नहीं। जब यह बच्चा बड़ा होगा, तो उसे श्रोत्री परिवार की सारी संपत्ति विरासत में मिलेगी। क्या उसके लिए यह उचित होगा कि वह ऐसे वंश की संपत्ति ग्रहण करे जिसके विश्वास, मान्यताएं, रीति-रिवाज और धार्मिक दायित्वों को वह ठुकराता है? मैं केवल अर्थशास्त्र की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं बहुत गंभीरता से विचार कर रहा हूँ। हमें अपने माता-पिता से केवल शरीर ही नहीं, बल्कि उनकी मानसिक और सांस्कृतिक संरचना भी मिलती है। केवल शारीरिक बनावट को ही महत्व देना और बाकी सब कुछ अनदेखा करना अदूरदर्शी सोच होगी।’
कात्यायनी चुप हो गईं। उन्हें उसका जवाब देने के लिए कुछ सूझा ही नहीं। श्रोत्री ने आगे कहा, ‘एक वंश के बीज को निरंतर बनाए रखने के लिए ही दूसरा वंश अपना

पर्यावास दान करता है। वह पर्यावास उस बीज को ग्रहण करके और उसे पौधे के रूप में विकसित करके मुक्ति प्राप्त करता है। एक बार माँ, हमेशा माँ। भला यह कैसे कहा जा सकता है कि वह अपनी कुंवारी अवस्था में लौटकर नया मातृत्व प्राप्त कर सकती है? अनुभववाद के अनुसार, विकास की प्रक्रिया में किसी पिछले चरण में लौटना सृष्टि के मूल सिद्धांत के विरुद्ध है। विकास के पथ में जो चरण अनंत काल तक बीत चुका है, उसकी आकांक्षा करना पाप है।'

उनके प्रवचन सुनकर कात्यायनी का चेहरा उदास हो गया। मानो पीड़ा से सिकुड़ गया हो। यह देखकर श्रोत्री ने कोमल स्वर में कहा, "बच्ची, मैं ये सब तुम्हें दुख पहुँचाने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मान लो मेरी जीभ अपने आप काम करती है। राज्य के नियमों के अनुसार, तुम अपने बच्चे को अपने साथ ले जा सकती हो। लेकिन धर्म को कानून से नहीं प्राप्त किया जा सकता। और मैं श्रोत्री परिवार की प्रतिष्ठा के लिए अदालत के परिसर में कदम नहीं रखूँगा। यदि तुम तैयार हो, तो मैं तुम्हें एक बात स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ।"

'करने की कृपा करे।'

अब श्रोत्री की आवाज़ दृढ़ हो गई, लेकिन कठोर नहीं। 'अंतिम निर्णय लेने की स्वतंत्रता आपकी है। मुझे यह अधिकार नहीं है कि मैं अपने हाथों से बच्चे को आपको सौंप दूँ। वंश की एक शाखा को दूसरी शाखा को अलग करने या दान करने का कोई अधिकार नहीं है। न तो मेरी ओर से और न ही घर की उस बुढ़िया की ओर से, मैं आपसे बच्चे को यहीं छोड़ने की विनती नहीं करूँगी। मेरी रत्ती भर भी यह इच्छा नहीं है कि वह बुढ़ापे में हमारी देखभाल करे। बच्चा ऊपर वाले कमरे में सो रहा है। आप स्वयं वहाँ जाइए। एक क्षण के लिए मेरी बातों पर शांति से विचार कीजिए। यदि आपका अंतरात्मा आपको उसे ले जाने के लिए कहे, तो कृपया उसे अपने साथ ले जाइए। मैं यह सुनिश्चित करूँगी कि न तो वह बुढ़िया और न ही आपके पिता आपको रोकें।'

इतना कहकर वह दृढ़ स्वर में बाहर निकला, दरवाजा बंद किया और अंदर चला गया। बाहर बेसब्री से इंतज़ार कर रही भागीरथम्मा ने चिंता से पूछा कि क्या हुआ। 'कुछ मत बोलो। आओ,' उसने कहा, भागीरथम्मा का हाथ पकड़ा और उसे रसोई में ले गया। कात्यायनी ने अंदर से रसोई का ताला बंद होते सुना।

उनके शब्दों की अचानकता न केवल उसके लिए अप्रत्याशित थी, बल्कि उसे यह भी लगा कि उन्होंने उस पर उसकी सहनशक्ति से परे कोई भारी बोझ डाल दिया है और उसे सहने का निर्देश दिया है। बेशक, वह विनम्रता की सीमा में ही व्यवहार करती,

लेकिन वह अपने ससुर से बहस करने के लिए पूरी तैयारी के साथ यहाँ आई थी। उन्होंने बहस के लिए ज्यादा गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। वह वहाँ केवल एक माँ के गर्भ की धड़कन और उसके दिल की पुकार को सुनाने के लिए आई थी। उन्होंने इसे सुना तो सही, लेकिन उन्होंने उसे यह भी बता दिया था कि वह इसे किस तरह समझते हैं! अपनी राय को कोमल लेकिन संक्षिप्त रूप से व्यक्त करने के बाद, उन्होंने सारा भार उस पर डाल दिया और उसे अपने हाल पर छोड़ दिया। वह अपना क्रोध उस पर निकाल सकते थे। इसके बजाय, वह अपनी बूढ़ी और चिड़चिड़ी पत्नी को अपने साथ ले गए और उसे रसोई में बंद कर दिया, ताकि, जैसा कि उन्होंने तय किया था, अगर वह अपने बच्चे को ले जाना चाहे तो कोई बाधा न हो।

कात्यायनी ने अंदर बैठी रोती हुई बूढ़ी औरत के नज़रिए से इस पर विचार किया। श्रोत्री ने कहा कि उसने अपने पहले पति की मृत्यु के बाद एक नया पति पा लिया है, जबकि भागीरथम्मा के पास अपने इकलौते बेटे की मृत्यु के दुःख को भुलाने के लिए कोई दूसरा बेटा नहीं है। अब उस बेटे की जगह इस पोते ने ले ली है। अगर वह उसे ले जाती है, तो उनके लिए क्या उम्मीद बचेगी? उसने अपने ससुर के नज़रिए से भी इस पर विचार किया। उनके लिए, प्रेम, मोह, आपसी रिश्ते आदि जैसी भावनाएँ भी केवल पारंपरिक मूल्यों के आधार पर ही परिभाषित की जा सकती थीं। उनकी नज़र में, वंश से बाहर की मातृत्व—भूतपूर्व और भविष्य के—किसी भी दृढ़ मूल्य का प्रतीक नहीं थी। लेकिन आत्मसम्मान की बात! 'मैं श्रोत्री परिवार के सम्मान के लिए अदालत के दायरे में कदम नहीं रखूँगी... न तो अपनी ओर से और न ही घर की उस बूढ़ी औरत की ओर से, मैं आपसे बच्चे को यहीं छोड़ने की भीख माँगूँगी।' मुझे जरा भी यह उम्मीद नहीं है कि वह बुढ़ापे में हमारी देखभाल करे।' और आखिरी शब्द! 'अगर तुम्हारा मन उसे अपने साथ ले जाने को कहे, तो ले जाओ। मैं ध्यान रखूंगा कि न तो वह और न ही तुम्हारे पिता तुम्हें रोकेंगे।' उसने सोचा कि सारा बोझ उस पर डालकर उसने उसे एक कठिन आत्म-मंथन की प्रक्रिया से भी गुजार दिया है।

वह बहुत दुखी थी। बच्चे को पीछे छोड़ना उसके लिए अपनी तीव्र इच्छा को दबाना था, जो उसकी मातृत्व की भावना के बिल्कुल विपरीत था। इन विचारों और भावनाओं के बीच एक गहरा संघर्ष उसके मन को चीर रहा था। लेकिन मातृत्व को इतनी आसानी से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। कुछ देर तक वह चुपचाप बैठी रही। उसके पैरों में उठने की भी ताकत नहीं थी। न ही उसके मन में कोई फैसला लेने की शक्ति थी। उसने अपनी सारी ताकत जुटाई और खड़ी हुई। दूसरा दरवाजा खुला था। उस तरफ

सीढ़ियाँ थीं जो ऊपरी मंजिल की ओर जाती थीं। वह चुपचाप उस दिशा में चल पड़ी। भूतल पर बिल्कुल सन्नाटा था। सन्नाटा किसी वीरान घर की खासियत थी। वह चुपचाप सीढ़ियाँ चढ़ गई। वहाँ, जहाँ उसने दो साल पढ़ाई की थी और रात को आराम करती थी, चीनी बाघ की खाल की बड़ी चटाई पर सो रहा था। उसके दादाजी की नीली शॉल, जो कंबल का काम करती थी, ने उसे आधा ढका हुआ था जिससे उसका पेट और बगलें दिखाई दे रही थीं। जीवन की चिंताओं से अभी तक अनजान, चीनी की कोमल साँसों से उसकी छोटी छाती बहुत धीमी गति से धड़क रही थी। कात्यायनी उसके पास बैठ गई और ध्यान से उसका चेहरा निहारने लगी। उसे अपने पहले पति की याद आ गई। चीनी के चेहरे पर वही चेहरा और शारीरिक बनावट साफ दिखाई दे रही थी। लेटने का वही अंदाज, वही सीधी नाक, चौड़ा माथा और मोहक चेहरा। उसके दादा के गुण उसे पिता के माध्यम से मिले थे। उसका मन सोचने लगा कि आखिर वह किसका बच्चा है। वह इसे श्रोत्री वंश से संबंध न होने की बात कहकर खारिज नहीं कर सकती थी। वह एक ऐसी आत्मा थी जो इस घर में आई थी, और श्रोत्री वंश का एक बीज उसमें अंकुरित हुआ था। अब वह एक वृक्ष बन रहा है। वह हमेशा बीज के गुणों को प्रदर्शित करेगा। लेकिन उस रक्त, ऊतकों, दूध का क्या जो उसने मुझसे लिया है? और उन इच्छाओं, लालसाओं, प्रेम का क्या जो मैंने उस पर बरसाया है? क्या उनका कोई मूल्य नहीं है? हे भगवान, मुझे इस दुविधा में क्यों डाल रहे हो? क्या मुझे अपने बच्चे पर अपना अधिकार साबित करने के लिए तर्क देने पड़ेंगे? क्या माँ का जन्मजात अधिकार इतना कम हो गया है कि उसे बहसों से सहारा देना पड़ रहा है? मैं किस स्थिति में फँस गई हूँ, जिसने मेरे मातृत्व के सत्य को ही मिटा दिया है? उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके पेट में कई धार वाला खंजर घोंप दिया हो और उसे घुमा रहा हो। उसके पेट और सीने में असहनीय पीड़ा हो रही थी। उसने हथेली से अपना सीना दबाया और उसके बगल में बैठ गई। उसका रोना फूट पड़ा और आँसुओं से मानो उसके भीतर का लावा बाहर आ रहा हो। वह जी भर कर रोई। बच्चे ने उसकी रोने की आवाज़ ज़रूर सुनी होगी, क्योंकि करवट बदलते ही उसकी साँसों की लय एक पल के लिए बदल गई। इस हरकत से कंबल पूरी तरह हट गया और बच्चा लंगोटी के अलावा नंगा दिखाई दिया। माँ ने मुँह ढककर अपने रोने की आवाज़ को दबा दिया। उसने अपने बच्चे को सिर से पैर तक देखा। उसके पहले पति नंजुंडा श्रोत्री की यादें फिर से उसके मन में आ गईं। वह अपने मन को अतीत में जाने से नहीं रोक पाई। उसका दिल एक बार फिर ज़ोर से धड़कने लगा। वह झुकी और धीरे से उसके सिर को चूमा। उसके चेहरे पर एक दृढ़ निर्णय के भाव उभर आए। उसने चीनी

के पैर चूमे और उठ खड़ी हुई। एक बार फिर, उसके भीतर से चीख का सैलाब उमड़ पड़ा। इससे पहले कि वह फूट पड़े, उसने अपने पल्लू का कुछ हिस्सा अपने मुंह में दबा लिया और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। भूतल पर जीवन का कोई आभास नहीं था। रसोई का दरवाजा बंद ही रहा। जब तक चीख बाहर निकली, वह घर से निकल चुकी थी।

5

बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। आसमान पूरी तरह बादलों से ढका हुआ था, इसलिए उसे समय का पता नहीं चल पा रहा था; हालांकि अंधेरा हो रहा था। कात्यायनी आवारा मवेशियों के कारण कीचड़ भरे रास्ते पर चल पड़ी। उस रास्ते के अंत में, जब वह रेलवे स्टेशन की ओर मुड़ी, तो उसकी मुलाकात लक्ष्मी से हुई। दरअसल, लक्ष्मी ने कात्यायनी को आते देख उसी कोने में खुद को तैनात कर लिया था। 'मेरे साथ आओ,' उसने कहा और कात्यायनी का हाथ खींच लिया। लक्ष्मी के पास छाता था। उसने उसे खोला और वे दोनों रेलवे स्टेशन गईं और वहां एक बेंच पर बैठ गईं। लक्ष्मी सब कुछ जानती थी। उसने तो यह भी अनुमान लगा लिया था कि शीनप्पा ने उसे क्या बताया होगा। कात्यायनी को अकेला देखकर, उसे सब कुछ स्पष्ट हो गया। कात्यायनी ने उससे पूछा, 'मेरे पिता यहां कब आए?'
'कल रात।'
‘उन्हें किसने आमंत्रित किया?’
‘Bhagamma.’
‘क्या सच में? ससुर तो नहीं?’
जब भगम्मा ने उनसे अपने पिता को आमंत्रित करने के लिए कहा, तो शीनप्पा ने उन्हें आमंत्रित न करने के लिए कहा, यह कहते हुए कि यह घर का आंतरिक मामला है और इसका समाधान केवल हम दोनों को ही करना है। भगम्मा ने शीनप्पा को बिना बताए आपके पिता को पत्र लिखा।
कात्यायनी को सब कुछ स्पष्ट था। उसने आह भरी। लक्ष्मी ने उससे पूछा, “हमसे कुछ भी साझा किए बिना तुमने ऐसा क्यों किया?” कात्यायनी ने बस इतना कहा, “सब लोगों में से तुम्हें ही क्यों पता होना चाहिए?” लक्ष्मी कुछ देर तक चिंतन में डूबी रही। पाँच मिनट बाद उसने कहा, “यह हमारे कर्म हैं जो हमें ऐसा करने पर मजबूर करते हैं।” कात्यायनी मौन में डूबना चाहती थी। इसलिए उसने कहा, “अंधेरा हो रहा है। तुम घर

जाओ।" फिर लक्ष्मी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और उसे दिलासा देते हुए कहा, "मजबूत रहो। चिंता करने का कोई फायदा नहीं।" उसने अपना छाता खोला और चली गई।

हर तरफ अंधेरा छाया हुआ था। ट्रेन अभी तक नहीं आई थी। अचानक सतर्क होकर वह टिकट काउंटर पर टिकट खरीदने गई। उसे पता चला कि कडाकोला के पास एक मालगाड़ी पटरी से उतर गई है, इसलिए कल तक सभी ट्रेन सेवाएं निलंबित कर दी गई हैं। स्टेशन की घड़ी में 7:15 बज रहे थे। अब मैसूर कैसे पहुंचे? वह वापस बेंच पर बैठ गई। हालांकि उस शहर में उसके कई परिचित थे, लेकिन वह किसी के घर जाकर रात बिताने की इच्छा नहीं रखती थी। अगर वह वहां बैठी रहती, तो कोई उसे पहचान सकता था। वह स्टेशन के अंदर रात बिता सकती थी, लेकिन यह सोचकर कि कहीं और समय बिताना और देर रात वापस आना बेहतर होगा जब शहर सो रहा होगा, वह बाहर निकल गई। उसके पैर उसे पिंडरगेरी से आगे कपिला नदी के किनारे ले गए। वह गौरी डेक पर चढ़ी और एक सीढ़ी पर बैठ गई। नदी उफान पर थी। बहुत अंधेरा था, और पास के एक लैम्पपोस्ट से हल्की रोशनी आ रही थी। वह उससे काफी दूर थी, इसलिए उसे कुछ भी साफ दिखाई नहीं दे रहा था। फिलहाल, उसे रोशनी से ज्यादा अंधेरा पसंद था। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी अभी भी हो रही थी, लेकिन रुक-रुक कर। उसकी साड़ी पूरी तरह भीग चुकी थी। उसने पल्लू सिर पर खींच लिया और बैठी रही। उसके मन में उस दिन घटी सारी घटनाएँ याद आने लगीं।

जब सब कुछ उसके सामने आ गया, तो उसे पाँच साल पहले घटी घटना याद आ गई। जून के इसी महीने में, इसी चंद्रदिवस पर, उसके पति नंजुंडा श्रोत्री इसी कपिला नदी में डूब गए थे। वह उनसे अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करती थी; उसने अपना सारा दिल उन्हें दे दिया था। जिस दिन वह उसे अकेला छोड़कर चले गए, उस दिन के उसके दुख को कौन माप सकता है? उस क्षण, उसे मरने की तीव्र इच्छा हुई थी। वह इसी नदी में डूब जाना चाहती थी। या, उसने सोचा था, अगर उसने पुराने जमाने की तरह सती प्रथा अपना ली होती, तो उसे इन पीड़ाओं का सामना न करना पड़ता। उसके ससुर ने उसके गहरे दुख को भांप लिया था। इसलिए उन्होंने सही समय पर सही बात कही थी: तुम्हें कम से कम इस बच्चे के लिए तो जीना ही होगा।

अब वह बच्चा मेरे बिना भी जीवित रहेगा! पाँच लंबे वर्षों के बाद, आज जीवन ने एक बार फिर कात्यायनी को ऐसी विपत्तियों का सामना करवाया था और उसका गर्भ उससे छीन

लिया था। वह लोगों की नज़रों में भी तिरस्कृत हो गई थी। क्या कभी देर होती है? अरे, वह तो अभी भी नदी में उतर सकती है!
मरने की इच्छा बढ़ती ही जा रही थी। लेकिन मानो कोई खामोश ताकत उसे रोक रही थी। वह सोचने लगी कि आखिर वह कौन सी ताकत है जो उसकी मृत्यु को रोक रही है, जबकि जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रह गया है! इन विचारों में खोई वह दो बार नदी के किनारे तक गई। फिर दो सीढ़ियाँ चढ़कर बैठ गई। उस सुनसान जगह पर नदी उसके पास से ऐसे बह रही थी मानो चूल्हे पर रखे बर्तन से दूध छलक रहा हो।
अचानक सीढ़ियों के ऊपर से एक तेज़ रोशनी उसकी ओर चमकती हुई दिखाई दी। पहचाने जाने से बचने के लिए उसने अपनी पीठ उसकी ओर कर ली। उसे लगा कि रोशनी सीधे उसी पर केंद्रित हो रही है। कौन होगा? उसने हिम्मत जुटाई और देखने के लिए मुड़ी। एक इंसान लड़खड़ाते कदमों से धीरे-धीरे उसकी ओर आ रहा था। वह धुंधली आकृति उसके पास आई और उसने उसका हाथ थाम लिया! हाथ नम था और स्पर्श बेहद ठंडा था। उसकी पकड़ से उसे पता चला कि वह पुरुष है। वह उसके बगल में बैठ गया और उसे कसकर गले लगा लिया। उसकी गीली साड़ी से पानी टपक रहा था। उसका सिर चकराने लगा और उसे लगा कि वह बेहोश हो रही है। उस अर्धचेतन अवस्था में उसने उसे देखा, उसे ऐसे गले लगाया जैसे कोई डूबता हुआ आदमी तिनके का सहारा लेता है, रोने लगी और बोली, 'अरे तुम! मेरे पास क्यों आए? मैं पापी हूँ।'
‘चलो, चलते हैं,’ उसने उसके कान में फुसफुसाया।
‘हाँ। मुझे अपने साथ ले चलो,’ वह सपने में खोई हुई सी बड़बड़ाई और नदी में डुबकी लगाने के लिए नीचे झुक गई। नदी ने उसे ज़बरदस्त बल से वापस खींच लिया। इतना ही नहीं, बल्कि उसने उसकी चिंता को भी दूर कर दिया। उस चेतावनी की तेज़ आवाज़ ने उसे होश में ला दिया। ‘तुम क्या कर रहे हो? अगर तुमने यह किया होता, तो मैं कैसे जीती? जब मुझे मालगाड़ी के पटरी से उतरने की खबर मिली, तो मैं साइकिल से यहाँ आई।’
उसे पता चला कि यह राजा था; वह दूसरा नहीं! वह घायल जानवर की तरह रोने लगी। हल्की बारिश लगातार बरस रही थी। 'हे भगवान, आपने इस समय मुझे ढूंढने के लिए इतनी मेहनत की!' उसने अपना चेहरा उसकी छाती में इस तरह छिपा लिया मानो वह उसमें समा जाना चाहती हो।

अध्याय 16

1

राव और करुणा के विवाह के आठ साल बाद, उनके ग्रंथ के दो खंड प्रकाशित हो चुके थे और तीसरे खंड की छपी हुई पांडुलिपि लंदन के प्रकाशकों तक पहुँच चुकी थी। अब तक राव साहित्यिक जगत में काफी सम्मानित हो चुके थे। अखिल भारतीय इतिहास परिषद ने उन्हें अपने आगामी वार्षिक सम्मेलन का अध्यक्ष चुना था। दो ब्रिटिश विश्वविद्यालयों और तीन अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने उन्हें अतिथि प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया था। इन विदेशी सम्मानों के कारण, मैसूर विश्वविद्यालय ने उन्हें प्रोफेसर के पद पर पदोन्नत कर दिया था। अब वे प्रोफेसरों के लिए आरक्षित बंगले में रहते थे। लेकिन उनकी दिनचर्या नहीं बदली थी। वे सुबह नौ बजे से शाम आठ बजे तक अपने पुस्तकालय में काम करते थे। अगर करुणा को टाइपिंग का काम होता, तो वे घर पर ही रुक जातीं। अन्यथा वे पुस्तकालय में उनके साथ काम करतीं। आठ बजे लौटने पर, वे रसोइए द्वारा तैयार किया गया भोजन करते और लगभग एक घंटे टहलने जाते। तब भी उनकी बातचीत उनके चुने हुए शोध विषय पर ही केंद्रित रहती। राव अपने दिन के अध्ययन से प्राप्त किसी भी नई जानकारी को करुणा के साथ साझा करते। करुणा उस कथन की सत्यता या असत्यता पर चर्चा करतीं। राव फिर विस्तृत व्याख्या देकर उसकी सत्यता सिद्ध करते। कई बार वे अपनी चर्चाओं में इतने मग्न हो जाते कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि वे जिला कार्यालय परिसर तक आ गए हैं, या वे न्यायालय के बगीचे में किसी पेड़ के नीचे खड़े हैं, और समय ग्यारह बज चुका है! घर लौटने पर वे अपनी चर्चाओं के निष्कर्ष लिखते। करुणा के काम के घंटे अब राव के घंटों के साथ मेल खाने लगे थे। वह भी आधी रात के बाद तक काम करती और अगली सुबह आठ बजे उठती। तीसरे खंड की पांडुलिपि प्रकाशकों को मिलने के दो साल बाद भी छप नहीं पाई थी। युद्ध के कारण दुनिया भर में कागज की कमी हो गई थी। प्रिंटिंग प्रेस युद्ध से संबंधित छपाई में व्यस्त थे। हालांकि राव के प्रकाशक पेशेवर थे और उनके पास अपना प्रिंटिंग प्रेस था, फिर भी वे किसी भी तरह से मदद नहीं कर सके। इसलिए उन्होंने राव को लिखा: 'हमें आपके तीसरे खंड की पांडुलिपि मिल गई है। लेकिन युद्ध समाप्त होने तक हम इसे छाप नहीं सकते। हम कागज की पर्याप्त मात्रा प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

हालांकि हमारे पास अपना प्रिंटिंग प्रेस है, लेकिन हम इसे अपने प्रकाशनों के लिए उपयोग करने से विवश हैं। हमने अपनी सभी पुस्तकों का भंडार तहखाने में रखा है। आपकी पांडुलिपि भी वहीं है। यह महानगर बमबारी से प्रभावित है। अगर आपकी पांडुलिपि नष्ट हो जाती है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आपके पास इसकी एक प्रति होगी। अगर हमारा लंदन कार्यालय बमबारी में नष्ट हो जाता है, तो हम निश्चित रूप से न्यूयॉर्क, टोरंटो या सिडनी में स्थित अपने शाखा कार्यालयों से आपकी पुस्तकें प्रकाशित करेंगे। कृपया इस घटनाक्रम को चौथे खंड पर काम करने से न रोकें।'

भारत को भी युद्ध के दुष्परिणाम भुगतने पड़े। कई बार राव को अपनी पत्नी के साथ जावा, बोर्नियो, सुमात्रा आदि के अध्ययन दौरों पर व्यक्तिगत रूप से जाना पड़ता था। ये क्षेत्र खतरनाक होने के कारण उन्हें यात्रा की अनुमति नहीं मिल पाती थी। भारत के भीतर यात्रा करना भी उनके लिए मुश्किल हो गया था। यूरोपीय देशों के युद्ध में शामिल होने के कारण वहां के विद्वानों को लिखे उनके पत्र उन तक नहीं पहुंच पाते थे। और अगर पहुंच भी जाते थे, तो उनकी ओर से कोई जवाब नहीं आता था। पेरिस के एक प्रोफेसर ने उन्हें एक वाक्य का पत्र लिखा: 'यदि यह युद्ध से बच जाता है, तो मानव जाति का इतिहास भी बच जाएगा। अन्यथा, इतिहास का मिट जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।' फिर भी, राव अपना काम करते रहे।

शादी के चार साल बाद करुणा ने अपने पिता को खो दिया। उनकी पहली पत्नी के जीवित रहते हुए भी बेटी का मैसूर के प्रोफेसर से विवाह होना उनके लिए बहुत दुखदायी था। लेकिन उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया था, क्योंकि बीते हुए कल को कुरेदने का कोई फायदा नहीं था। उन्होंने अंततः यह सोचकर मन को शांति देने की कोशिश की कि उनकी बेटी की पढ़ाई-लिखाई में रुचि और डॉ. राव जैसे साथी का साथ मिलना स्वाभाविक ही था। जब करुणा को इस बात की खबर मिली, तो वह अपने गृहनगर गईं और एक सप्ताह तक अपने भाई के साथ रहीं। उसके बाद उनके पास दोबारा जाने का न तो समय था और न ही इच्छा।

अब तक उसने कन्नड़ भाषा की अपनी एक बोली बना ली थी, जिसमें बहुत से शब्द-भेद हटा दिए गए थे, लेकिन रसोइए से बातचीत करने के लिए काफी थी। रागप्पा जाति से माधव-ब्राह्मण था। न तो खाना बनाना उसका पेशा था और न ही उसने इसमें कोई प्रशिक्षण लिया था। वह एक सीधा-सादा आदमी था जो कुछ घरों में छोटे-मोटे काम करता था। अनाथ होने के कारण उसकी शादी हुई थी, लेकिन छह महीने के भीतर ही उसकी पत्नी का देहांत हो गया था। जब वह राव के घर पहुँचा, तो रत्ने ने उसे खाना

पकाने की जो भी जानकारी थी, वह सिखाई। उन शिक्षाओं का पूरी निष्ठा से पालन करते हुए, वह उनके लिए एक जैसा और स्वादिष्ट भोजन बनाता और परोसता था—चावल, करी, सब्जी का स्टू। सौभाग्य से, दूध से दही बनाना उसके लिए कोई मुश्किल काम नहीं था। हालाँकि एक अधिक कुशल रसोइया उपलब्ध था, फिर भी वे उसी से काम चलाते रहे। वह पचास वर्ष का था और उसके पास कहीं और जाने की जगह नहीं थी। किराने का सामान, सब्जियां, दूध, शौचालय का सामान, सब कुछ वह खुद ही खरीदता था और इन चीजों के लिए उसे दिए गए पैसों में से उसने कभी गबन नहीं किया। जब वे एक महीने या उससे अधिक समय के लिए अध्ययन यात्राओं पर जाते थे, तो वह एक भरोसेमंद रक्षक और संरक्षक की भूमिका भी निभाते थे। अपनी पाक कला से कहीं अधिक, वे अपनी वफादारी के कारण उनके लिए बहुत उपयोगी थे। प्रतिदिन दोपहर 3 बजे, वे उनके लिए पुस्तकालय में कॉफी और ब्रेड लेकर जाते थे।

2

चौथे खंड पर काम लगातार चल रहा था। इसमें दसवीं शताब्दी से शुरू हुए पूरे मुस्लिम शासनकाल के दौरान भारत के सांस्कृतिक जीवन और उससे जुड़े संघर्षों को चित्रित करने का प्रस्ताव था। इसके लिए उन्होंने जयपुर के महलों का दौरा किया था और वहां उपलब्ध ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन किया था। राव को अभी भी इसे लिखने का पूरा भरोसा नहीं था। वे विजयनगर काल के बारे में और अधिक जानकारी जुटाना चाहते थे। उनका मानना था कि ऐसे समय के बारे में लिखना बहुत कठिन था जब भारत की संस्कृति में भारी उथल-पुथल मची हुई थी।
फरवरी के अंत तक राव का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। तब तक वे अपनी पुस्तक के लिए बारह वर्षों से लगातार काम कर रहे थे। उन्होंने स्वयं एक दिन भी आराम नहीं किया था। उनका उत्साह तो जबरदस्त था, लेकिन उनके शरीर में उस उत्साह को झेलने की शक्ति नहीं थी। उनकी उम्र मात्र सैंतालीस वर्ष थी, लेकिन वे साठ वर्ष के प्रतीत होते थे। हाल ही में जब वे रात के खाने के बाद अपनी नियमित सैर पर जाते थे, तो वे पाँच मिनट के भीतर ही थक जाते थे। आरामकुर्सी पर बैठकर जब वे कोई बड़ी किताब पढ़ने बैठते थे, तो पढ़ते-पढ़ते भी उनके हाथ कमजोरी से जवाब देने लगते थे। जब वे करुणा को नोट्स लिखवाते थे, तो उन्हें बोलने में भी थकावट महसूस होती थी। इन सबके बावजूद,

उन्हें हर सप्ताह पाँच घंटे ऑनर्स और एमए के छात्रों को व्याख्यान देना पड़ता था। वे सामान्य मात्रा में भोजन भी नहीं कर पाते थे।
करुणा ने एक डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर उसे अस्पताल ले गया और उसकी अच्छी तरह से जांच की। फिर उसने कहा, 'कोई शारीरिक बीमारी नहीं है। वह बस अधिक काम करने से थका हुआ है। जैसे शरीर को आराम की जरूरत होती है, वैसे ही दिमाग को भी। उसे यह टॉनिक दे दो। अपना सारा काम तुरंत बंद कर दो और दो महीने के लिए कहीं घूमने चले जाओ। बेहतर होगा कि किसी पहाड़ी इलाके में जाओ। हर सुबह और शाम पसीना आने तक टहलो। उसे अखबार भी नहीं पढ़ना चाहिए। दिमाग को पूरी तरह से आराम चाहिए। अगर तुम उसकी बात नहीं मानोगे, तो उसकी हालत गंभीर हो सकती है।'
करुणा डॉक्टर की बात से तुरंत सहमत हो गई। काम बहुत था, इसलिए डॉक्टर राव ने आराम करने से मना कर दिया। लेकिन करुणा ने ज़िद की और आखिरकार मान गए। डॉक्टर के सुझाव पर वे नंदी पहाड़ी पर चले गए। मार्च का तीसरा सप्ताह था और कॉलेज की छुट्टियां चल रही थीं। उन्होंने रागप्पा को भी साथ आने के लिए कहा, लेकिन वह यह कहकर रुक गया कि उसे वहां बोरियत होगी। उन्होंने कब्बन हाउस में एक बड़ा कमरा पहले से ही बुक कर लिया था। राजा अब मैसूर में नहीं था। वह अपने परिवार के साथ बैंगलोर चला गया था। राव अपने भाई से मिलना चाहते थे, लेकिन करुणा ने मना कर दिया। इसलिए, उन्होंने बैंगलोर में एक टैक्सी किराए पर ली और सीधे नंदी पहाड़ी की चोटी की ओर चल दिए।
राव ही नहीं, करुणा को भी पहाड़ी की जलवायु बहुत पसंद आई। उन्होंने रात को जल्दी सोने की आदत बना ली थी। सुबह पांच बजे उठकर कॉफी पीने के बाद वे लंबी सैर पर निकल जाते थे। कभी-कभी वे ऊपर बने जॉगिंग ट्रैक पर सात-आठ चक्कर लगा लेते थे। कभी-कभी वे गावी-वीरभद्रस्वामी मंदिर से नंदी गांव की ओर ढलान पर पैदल जाते थे। वे थोड़ी देर मंडप के नीचे आराम करते और फिर वापस ऊपर चढ़ जाते। राव के लिए ऊपर की चढ़ाई बहुत थका देने वाली होती थी। करुणा उनका हाथ पकड़कर उनके साथ चलती थीं। वे आठ बजे तक अपने लॉज लौट आते थे और जब तक वे नहाते, रेस्टोरेंट से नाश्ता और दूध आ चुका होता था। उनकी शाम की सैर आमतौर पर एक मील पक्की सड़क पर होती थी। कुछ दोपहर वे बगीचे में किसी पेड़ के नीचे बैठ जाते और ठंडी छांव का आनंद लेते। वे बस इधर-उधर घूमते पर्यटकों और अपने जैसे ही लॉज में गर्मी की छुट्टियां बिता रहे लोगों को देखते हुए समय बिताते थे। कुछ दोपहर

जब राव सो रहे होते थे, करुणा अकेले अपने लॉज के बाहर किसी पेड़ की छांव में समय बिताती थीं। अब तक उनका पूरा ध्यान शोध में लगा हुआ था। अब इस खाली समय में, जो वास्तव में राव के समर्पित जीवन में आए विराम की छाया मात्र था, वे अपने निजी जीवन के बारे में सोचने लगीं। जहाँ वे बैठी थीं, वहाँ से उन्हें चारों ओर धरती का विस्तृत विस्तार दिखाई दे रहा था। बीच-बीच में तालाब थे जो चाँदी की चादरों जैसे लग रहे थे। यद्यपि आसपास का भूभाग लहरदार था, टीलों और घाटियों से भरा हुआ था, फिर भी उन्हें यह एकरस और नीरस विस्तार प्रतीत हो रहा था, जिसमें कोई वैभव नहीं था। आकाश से लेकर धरती तक एक भयानक सन्नाटा छाया हुआ था, मानो मानव जीवन को संकुचित कर रहा हो। गर्मी की चिलचिलाती धूप आँखों को भी चुभ रही थी।
एक दिन, वह अपने माता-पिता को याद कर रही थी। उसकी माँ चाहती थी कि उसकी शादी हो जाए। वह चाहती थी कि उसकी भी संतान हो, जिनकी वह देखभाल कर सके और जिनके साथ खेल सके। उसके पिता की भी यही इच्छा थी। अब वे दोनों इस दुनिया में नहीं हैं। डॉ. राव के अलावा, ऐसा कौन सा व्यक्ति था जिसे रिश्तेदार कहा जा सकता था और जो उस पर अपना अधिकार जमा सकता था? उसके और उसके सिंहली भाई के बीच तो हाल ही में चिट्ठियों का आदान-प्रदान भी बंद हो गया था। वह अपनी सिंहली भाषा से दूर हो गई थी और उसका जीवन एक पराये स्थान पर बस गया था। उसके पति के साथ उसका संबंध केवल विद्वता, शोध और बौद्धिक क्षेत्र तक ही सीमित था। इन स्तरों से नीचे के किसी भी स्तर पर उनके साथ संबंध रखना संभव नहीं था। कई बार राव उससे हल्के-फुल्के अंदाज में बात करते थे; सौहार्दपूर्ण ढंग से भी। वह ऐसे जीवन की आदी हो गई थी और इससे संतुष्ट थी। फिर भी, वह एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में थी जिससे वह केवल भावनात्मक रूप से जुड़ सके, बाकी सभी पहलुओं को छोड़कर।
वह अपने विवाह से एक सगा बच्चा चाहती थी। यह पहली बार नहीं था जब उसने ऐसा चाहा था। इससे पहले भी कई बार उसने अपनी गोद में एक नन्हा बच्चा होने की कल्पना की थी और इसी सोच में खो जाती थी। निरंतर काम के कारण उसे ऐसे विचारों में डूबने का समय ही नहीं मिलता था। वह ऐसे विचारों को कल्पना मात्र समझकर मन से त्याग देती और अपने काम में जुट जाती। उनका वैवाहिक जीवन इसी तरह दस साल तक चलता रहा। बेशक, वे शारीरिक संबंध बनाते थे, लेकिन इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि वह गर्भवती न हो जाए।
दो महीने के लंबे आराम के बाद, अब उसके भीतर संतान प्राप्ति की तीव्र इच्छा जाग उठी। उसका मन तरह-तरह की कल्पना करता कि शाम को घर आते ही उसका बच्चा

रोते हुए उसके पास आ जाए, वह उसे प्यार से गोद में उठाकर दूध पिलाए, नींद में भी वह उसे गले लगाए रखे, और उसे 'अम्मा' कहकर पुकारने के लिए व्याकुल रहे। वह यह भी सोचती कि मातृत्व के कारण राव की किताब पर असर पड़ेगा... 'चलो एक नर्स रख लेते हैं... जब मैं टाइपिंग का काम करूंगी, तो नर्स मेरे बच्चे की देखभाल करेगी... हर बार जब मैं टाइपराइटर में नया कागज डालूंगी, तो अपने बच्चे की प्यारी सी मुस्कान देखने के लिए मुड़ूंगी और फिर अपना काम शुरू कर दूंगी... रागप्पा के तीन बजे कॉफी और ब्रेड लाने के बजाय, मैं थोड़ा आराम करूंगी, खुद घर जाऊंगी, थोड़ी देर अपने बच्चे को गोद में लूंगी, उसे चूमूंगी और नाश्ता अपने पति को दे दूंगी... जब हम देर शाम टहलने जाएं, तो बच्चा मेरी गोद में रहे... अगर हम रास्ते में कहीं रुकें, तो बच्चा मेरी गोद में सोए... मेरा बच्चा किसके जैसा होना चाहिए?' यह एक बालक होना चाहिए, उसे अपने पिता का शांत स्वभाव अपनाना चाहिए और उन्हीं की तरह एक महान विद्वान बनना चाहिए। जिस प्रकार हमने भारत का यह सांस्कृतिक इतिहास लिखा है, उसी प्रकार उसे पूरे विश्व का सांस्कृतिक इतिहास लिखना चाहिए और इतिहासकारों के इतिहास में उसका कोई स्थान नहीं होना चाहिए...'

वह अपनी उम्र के बारे में सोचने लगी। अब वह सैंतीस साल की हो चुकी थी। अगर उसने सही समय पर बच्चे को जन्म दिया होता, तो अब वह बीस साल के बेटे या बेटी की माँ होती। अगर बेटा होता, तो वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा होता। अब भी देर नहीं हुई है, उसने सोचा; उसे बच्चा पैदा करना ही चाहिए। उसे एक चिकित्सीय तथ्य याद आया, कि देर से गर्भवती होने वाली महिला को प्रसव में कठिनाई होती है, और यह माँ के लिए घातक भी साबित हो सकता है। अब सैंतीस साल की उम्र, गर्भधारण के लिए इष्टतम उम्र से दोगुनी! अगर प्रसव घातक साबित हुआ! वह स्थिति उसकी आँखों के सामने आ गई। वह असहनीय प्रसव पीड़ा से पीड़ित थी। पास में मौजूद नर्स उसे दिलासा दे रही थी। दो दिनों की लगभग जानलेवा पीड़ा के बाद, प्रसव के संकेत दिखाई देने लगे। जब उसने अपनी मुट्ठियाँ कसकर बंद कर लीं, आँखें बंद कर लीं, और जब ऐसा लगा कि वह लगभग मर ही गई है, तभी बच्चा आ गया! उसका शरीर ढीला पड़ गया, नब्ज़ धीमी हो गई, और फिर दिल धड़कना बंद हो गया। वह मर गई। लेकिन बच्चा? उसने मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की: हे ईश्वर, अगर मैं मर जाऊं तो कोई बात नहीं, बच्चे को जीवित रहने दो, क्योंकि यह मेरे मातृत्व का प्रमाण है। ठीक है, बच्चा बच गया। अब उसकी देखभाल कौन करेगा? इस विचार ने उसकी कल्पना को पंख गंवाकर ज़मीन पर गिरा दिया। मृत्यु या मातृत्व? उसने मातृत्व को चुना। मातृत्व के सुख से वंचित जीवन मृत्यु से भी अधिक

निराशाजनक होता है। उसने अपने पति से इस विचार को साझा करने का सोचा, लेकिन संकोच किया। उसने जल्द ही हिम्मत जुटाई, यह सोचकर कि वह इस विचार को विचित्र नहीं समझेगा। उसे पूरा विश्वास था कि वह नारीत्व के मूल स्वभाव का, खासकर अपनी पत्नी के नारीत्व का, कभी अपमान नहीं करेगा।
एक रात जब वे सोने चले गए, तो उसने अपने पति से पूछा, 'एक आदमी अपनी मृत्यु के बाद क्या छोड़ना चाहेगा?'
राव, जो गहरी सोच में डूबे हुए थे, ने कहा, 'यह विचार आपके मन में कैसे आया?'
जो भी हो, मुझे जवाब दो।
राव ने अपने इतिहास के ज्ञान का सहारा लिया। 'प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी प्रवृत्ति होती है। कुछ लोग मरने से पहले एक शक्तिशाली राजवंश स्थापित करना चाहते हैं, कुछ भव्य मंदिरों का निर्माण करने में रुचि रखते हैं, और बुद्ध जैसे दुर्लभ लोग भी होते हैं, जो दुनिया को एक नया सत्य देना चाहते हैं। शेष लोग बड़ी संख्या में होते हैं, और वे केवल अपने और अपने बच्चों के बारे में चिंतित रहते हैं।'
क्या आप उस आखिरी क्लास को तुच्छ समझते हैं?
नहीं, मैं कभी किसी को तुच्छ नहीं समझता। क्यों?
उसने कोई जवाब नहीं दिया। सोते समय भी उसने उसका हाथ थामे रखा और थोड़ी देर बाद बोली, 'मुझे बताओ, हमारे विवाह की संतान क्या होगी? हमारे गुजर जाने के बाद क्या बचेगा?'
'ऐसा क्यों पूछ रहे हो?' राव ने उनके मन की बात जाने बिना ही आगे कहा, 'विश्व के इतिहास के बारे में विस्तार से जानने में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति हमारे काम को अनदेखा नहीं कर सकता। भविष्य के भारतीय इतिहासकार हमारे काम को दरकिनार करके कोई प्रगति नहीं कर पाएंगे। अभी भी इसे सभी विद्वानों द्वारा सराहा जा चुका है। क्या हमें विश्व और उसकी संस्कृति के लिए कुछ और छोड़ने की आवश्यकता है?'
करुणा चुप हो गई। वह अच्छी तरह जानती थी कि अब तक प्रकाशित ग्रंथों को विद्वानों ने कितनी सफलता और प्रशंसा दी है। उसे पूरा विश्वास था कि उनके द्वारा लिखी गई ये रचनाएँ उनके गुज़र जाने के बाद भी दशकों, यहाँ तक कि सदियों तक उनका नाम रोशन करेंगी। एक पल के लिए उसे इस बात पर गर्व हुआ कि इस विद्वतापूर्ण रचना से बढ़कर कोई और महान रचना नहीं हो सकती, जिसने अनादि काल से लेकर वर्तमान तक मानव जाति के सांस्कृतिक इतिहास का वर्णन किया है। फिर भी, पिछले एक

सप्ताह से मातृत्व की प्रबल इच्छा ने इस उपलब्धि को फीका कर दिया था। अपने पति को यह बात कैसे बताए? उसने सोचा और फिर पूछा, 'क्या तुम सो रहे हो?'
'नहीं।'
उसने बेड लाइट जलाई और उसके सामने बैठ गई। 'अंदाजा लगाओ कि अब मेरे दिमाग में क्या चल रहा है?'
'मुझे कैसे पता होगा?'
उसने अपना चेहरा उसके चेहरे के ऊपर लाकर कहा, 'मेरे चेहरे को देखो और तुम जान जाओगे।'
राव ने अपनी पत्नी के चेहरे को ध्यान से देखा। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।
'हाँ...'
'आप मजाक कर रहे होंगे। मुझे कुछ समझ नहीं आता।'
'जो व्यक्ति इतिहास के प्रवाह को पूर्ण प्रमाण के साथ स्पष्ट कर सकता है, और जो किसी महान संस्कृति के सार को समझकर उसे दूसरों तक स्पष्ट रूप से पहुंचा सकता है, वह अपनी पत्नी के मन में चल रही एक बात को अवश्य समझ लेगा!' उसने स्विच की ओर हाथ बढ़ाया और बत्ती बंद कर दी।
अचंभित होकर राव ने पूछा, 'आप मुझे यह क्यों नहीं बताते कि क्या हुआ?'
'कोई भी महिला इसे शब्दों में व्यक्त नहीं करेगी।'
राव को अब भी कुछ समझ नहीं आया था। उसने अब तक कभी पहेलियों में बात नहीं की थी। न ही उसे कभी ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा था जिसमें उसे किसी पहेली को सुलझाना पड़े। उसकी आवाज़ में मौजूद विश्वास से वह इतना समझ पाया कि वह कुछ ऐसा कहना चाहती है जो उसके दिल के बहुत करीब है। उसने दोनों हाथों से उसका चेहरा पकड़ा, उसे अपनी ओर घुमाया और पूछा, 'बताओ क्या कहना है?'
उसने अपना चेहरा उसकी छाती पर रखा, दो मिनट तक सोचा और फिर बोली, 'अच्छा...'
'मुझे बताओ।'
'क्या हम एक बच्चा पैदा कर सकते हैं?'
अब राव को बात स्पष्ट हो गई थी। उसने उसके शब्दों पर विचार किया और अपना बायां हाथ उसकी पीठ पर फेरा। उसने पूछा, 'चुप क्यों?'
'नहीं,' उसने प्यार से कहा, 'तुमने इतने दिनों तक अपनी इच्छा क्यों नहीं बताई?'

‘इन सभी वर्षों में हमने अथक परिश्रम किया है, जिससे हमारे मन में ऐसी किसी भी इच्छा का आना असंभव हो गया है। क्या ये ऐसे ही विश्राम के दौरान नहीं होते कि हमारे भीतर से विचार उभरते हैं?’
क्या तुम्हारी कोई और इच्छा नहीं है?
'बिल्कुल भी नहीं।'
राव ने उसे प्यार से गले लगाया। वह अपना चेहरा उनकी छाती पर रखकर सो गई। उसका दिल संतोष से भरा हुआ था। उसके पति ने उसकी इच्छा मान ली थी। शादी के बाद पहली बार उसने ऐसी कोई इच्छा ज़ाहिर की थी। अब तक उसे यह जानने का मौका नहीं मिला था कि क्या उनके पति का मन इस बात पर है और वे मानेंगे या नहीं। उसकी उत्सुकता भविष्य की कल्पनाओं में खो गई। उनके बीच एक बच्चा मुस्कुराता हुआ लेटा था। राव अपना चश्मा उतारकर बच्चे के चेहरे के पास अपना चेहरा लाते और उसे खुश करने के लिए अपनी उंगलियों से उसे छेड़ते। पुस्तकालय में दिन भर के काम की सारी थकान बच्चे की एक मुस्कान से दूर हो जाती।
करुणा की संतान प्राप्ति की इच्छा ने राव के मन में पृथ्वी की याद दिला दी। जब वह शिशु था, तब कितना प्यारा था। जब वह आरामकुर्सी पर बैठकर पढ़ रहा होता, तो पृथ्वी घुटनों के बल चलकर उसके पास आता और उसका पैर खींचता। हालांकि एक पल के लिए वह थोड़ा विचलित हो जाता, लेकिन बच्चे का चेहरा देखते ही उसकी नाराजगी दूर हो जाती और वह किताब एक तरफ रखकर बच्चे को गोद में उठा लेता। बाकी समय वह बच्चे को ज्यादा समय नहीं दे पाता था। उसका मन हमेशा अपनी लिखी किताब में डूबा रहता था। पृथ्वी अपने पिता से ज्यादा अपने चाचा के करीब था। अब वह चौदह साल का होगा। जी हां, चौदह साल का। राव ने उसे पिछले आठ सालों से नहीं देखा था। अगर वह अब अपने पिता से मिले भी तो उन्हें पहचान न पाए। पहचान भी ले, तो क्या उनके पास जाएगा? तभी नागलक्ष्मी की याद ताजा हो गई। घर से चले जाने के बाद भी वह कुछ बार वहां गया था। हालांकि उसने उससे बात करने की कोशिश की थी, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। बाद में उसे मिलने का समय ही नहीं मिला। बैंगलोर जाने से ठीक पहले, राजा अपनी पत्नी के साथ पुस्तकालय में राव से मिलने गए थे। राव ने उन्हें अपने घर आने का न्योता दिया। राजा के पास समय नहीं था। घर का सारा सामान पहले ही ट्रक में भेज दिया गया था। सबको शाम की ट्रेन से निकलना था। उन्होंने करुणा से करीब दस मिनट बात की, राव के चरणों में प्रणाम किया और चले गए। राव ने नागलक्ष्मी के बारे में कुछ नहीं पूछा। न ही दंपति ने उन्हें बताया। अब वह कैसी

होंगी? एक बार उनसे मिलने जाना चाहिए। अब उनका गुस्सा शांत हो गया होगा। राव ने सोचा कि अगर वह पहल करें तो शायद अब वह बात करने को तैयार हो जाएं। इस तरह वह अपने बेटे से दोबारा मिल सकेंगे।
'तुम क्या सोच रहे हो?' करुणा ने पूछा, जो अपना सिर उसके कंधे पर रखकर लेटी हुई थी।
'आप किस बारे में सोच रहे थे?'
मैंने तुमसे कहा था। हमारे बच्चे के बारे में सपने।
उसने उसे और भी अधिक स्नेह से गले लगाया। अब उसका मन उसकी इच्छा के बारे में सोचने लगा। शादी के बाद से उसने आज तक ऐसी कोई इच्छा व्यक्त नहीं की थी। शादी से पहले, उन्होंने अपने विवाह के उद्देश्य पर स्पष्ट रूप से आपसी सहमति बना ली थी। साथ रहने के बाद, उन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि वह गर्भवती न हो। अपने विवाहित जीवन के आठ वर्षों में, उसने दिन-रात उनके ग्रंथ के लिए काम किया था। अपने पिता की मृत्यु के बाद, अपने पैतृक स्थान पर भी उसका कोई सहारा नहीं था। उसने स्वयं को पूरी तरह से अपने गुरु के प्रति समर्पित कर दिया था, और अपना पूरा जीवन उनके द्वारा सौंपे गए कार्य में लगा दिया था। मातृत्व की वह इच्छा जो अब तक दबी हुई थी, अब अनियंत्रित रूप से उभर आई थी। यह स्वाभाविक ही था। इस विवाह से संतान की इच्छा उसके मन में भी धीरे-धीरे जागृत होने लगी। उनके मिलन के प्रमाण के रूप में जीवित रहने वाले ग्रंथ के अलावा, वह चाहता था कि एक जीवित संतान इसे पूरा करे, इस संसार में जीवन व्यतीत करे और अपने माता-पिता को प्रेमपूर्वक देखे। उसने उसे गले लगाया और उसका चेहरा अपनी छाती से सटा लिया,
'करुणा।'
'हम्म।'
‘आप कितनी बेहतरीन महिला हैं।’
उसने कुछ नहीं कहा। वह आनंद की एक ऐसी अनुभूति में डूबी हुई थी जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता था।

3

अगली सुबह वे थोड़ा देर से उठे और बहुत खुश थे। कॉफी पीने के बाद, वे गावी-वीरभद्रस्वामी मंदिर से पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। वे हाथ में हाथ डालकर चल रहे थे

और पहले कभी न सुनी गई अंतरंगता से बातें कर रहे थे। उगता सूरज सुहावना गर्म था। जब वे आधे रास्ते नीचे उतर चुके थे, करुणा ने कहा, 'देखो, नीचे कुछ गाँव हैं। हम वहाँ कभी नहीं गए। चलो अब किसी एक गाँव में चलते हैं।'

वे पहाड़ी की तलहटी तक पैदल चले। उन्होंने सुल्तानपाल्या की उन गलियों में पैदल सैर की, जहाँ वे सबसे पहले पहुँचे थे, और फिर नंदीग्राम की ओर बढ़े। तब तक वे बहुत भूखे हो चुके थे। वे एक रेस्तरां में गए, जहाँ उन्होंने एल्युमिनियम की प्लेटों में परोसी गई इडली खाई। उन्होंने रसोइए द्वारा विशेष ध्यान से तैयार की गई कॉफी पी। फिर उन्होंने भोगनंदीश्वर मंदिर के दर्शन किए, और जब तक वे पहाड़ी की तलहटी में लौटे, तब तक साढ़े नौ बज चुके थे। उन्होंने धीरे-धीरे चढ़ाई शुरू की। सूरज की तेज धूप उनके बाईं ओर से उन पर पड़ रही थी। लगभग सौ फीट की चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते राव थक चुके थे, और उन्होंने थोड़ी देर आराम किया। जब वे फिर से चढ़ाई शुरू करने के लिए उठे, तो उनकी पत्नी ने उनका दाहिना हाथ पकड़ लिया। राव मुस्कुराते हुए धीरे से बोले, 'मुश्किल पहाड़ी पर चढ़ते समय मेरा हाथ थामे रहो,' और चढ़ाई जारी रखी। आधी चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते वे फिर से थक चुके थे। उन्होंने थोड़ी देर आराम किया। फिर से चढ़ाई शुरू करने के बाद, वे लगभग सौ सीढ़ियाँ चढ़ चुके थे कि राव को चक्कर आने लगा। 'मैं गिर रहा हूँ।' 'मुझे थाम लो,' उसने पुकारा और बैठ गया, अपना सिर ऊपर की सीढ़ी पर रखा और अपने हाथ-पैर ढीले छोड़ दिए। हैरान होकर रत्ने ने उसका सिर अपनी जांघ पर रख लिया और उसके चेहरे और गर्दन से पसीना पोंछा। उसने उसकी कमीज के बटन खोल दिए और धूप से उसका चेहरा बचाने के लिए अपना पल्लू उसके ऊपर रख दिया। राव बेहोश नहीं था, लेकिन उसकी धड़कन बहुत तेज़ थी। वह अभी भी हांफ रहा था। पांच मिनट बाद उसने कहा, 'चिंता मत करो। मुझे थोड़ी बेचैनी महसूस हुई, और कुछ नहीं।'

सूरज की किरणें तेज़ होती जा रही थीं। करुणा ने सावधानी से उसे पास ही एक झाड़ी की छाँव में ले जाकर बिठाया। आस-पास पीने का पानी नहीं था। राव ने कहा, 'चलो दस मिनट आराम करते हैं, फिर शुरू करते हैं,' लेकिन करुणा ने उसकी बात काट दी। 'मेरा यहीं इंतज़ार करो। मैं गाँव जाकर पालकी लाने का सामान ले आती हूँ।' राव ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह तेज़ी से ढलान की ओर भाग गई। वह उसी रेस्तरां में गई जहाँ वे अभी-अभी गए थे, और उसने उन्हें अपनी बची-खुची कन्नड़ भाषा में स्थिति के बारे में बताया। पास ही एक अंग्रेज़ी शिक्षक अपनी कॉफ़ी पी रहा था। उसने बीच-बचाव किया और मदद की। पंद्रह मिनट में दो लोगों की एक टीम पालकी लेकर आ

गई। जब करुणा ने उनके दस रुपये के शुल्क पर सहमति जताई, तो वे उसके पीछे चल दिए।

जब वे अपने लॉज पहुँचे तब दोपहर के साढ़े बारह बज चुके थे। स्नान और भोजन के बाद राव ने आराम किया। उन्हें अपनी आदत के अनुसार नींद नहीं आई। थकान के कारण वे बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। गर्मी के कारण उन्हें सिरदर्द भी हो रहा था। दोपहर बीतने और शाम होने पर उनके शरीर का तापमान थोड़ा बढ़ गया। जब करुणा ने उनके माथे और शरीर को छुआ और तापमान में वृद्धि देखकर चिंतित हुई, तो राव ने उसे दिलासा देते हुए कहा, 'चिंता मत करो। यह चढ़ाई मेरी सहनशक्ति से परे है। मैं अब सैंतालीस साल का हो गया हूँ।'

शांत रहना उसका स्वभाव नहीं था। उसने डॉक्टर को बुलवाया। डॉक्टर ने कुछ गोलियां दीं। पूरी रात उसे हल्का बुखार रहा। भोर होते-होते उसे नींद आई। तब तक करुणा भी जाग रही थी। उसके सोने के बाद, वह भी पलंग पर लेट गई और सो गई। अगली सुबह भी राव का सिरदर्द बना रहा। अब उसके शरीर में भी दर्द होने लगा था। बुखार उतर चुका था।

उन्हें उसी दोपहर डाक मिली। यह उनके मैसूर के पते से पुनर्निर्देशित की गई थी। रंग से स्पष्ट था कि यह लंदन से आई थी। करुणा ने इसे खोला और अपने प्रकाशक का पत्र पढ़ा: 'युद्ध के दो साल बीत जाने के बाद भी हम प्रकाशन कार्य पुनः शुरू नहीं कर पाए। हमें आवश्यक गुणवत्ता और मात्रा में कागज नहीं मिल पा रहा था। हाल ही में स्थिति सामान्य हो गई है और कंपनी पहले की तरह काम कर रही है। ईश्वर की कृपा से हमारा तहखाना सुरक्षित है। पंद्रह दिनों में हम आपके तीसरे खंड की छपाई शुरू कर देंगे और आपको नियमित रूप से प्रूफ भेजते रहेंगे। आशा है कि चौथे खंड में काफी प्रगति हुई होगी। सादर।'

यह अच्छी खबर थी! राव दोपहर का भोजन करते हुए प्रसन्न थे। उनका सिरदर्द कम नहीं हुआ, इसलिए उन्होंने उन्हें एक गोली दी। थोड़ी देर बाद वह इमारत से बाहर निकलीं और सामने के आंगन में एक पेड़ की छांव में बैठ गईं। उनके सामने का इलाका घोर उदासी से भरा था। दूर-दूर तक छोटे-छोटे तालाब और पहाड़ियों की श्रृंखला थी। ऊपर जलता हुआ आकाश भी उदास था। कुछ देर के लिए उनका मन अंतर्मन में खो गया। फिर उन्हें यह विचार आया कि अब उन्हें क्या करना है। तीन सप्ताह में लंदन से प्रूफ आने शुरू हो जाएंगे। प्रूफिंग में उनका सारा समय लग जाएगा। फिर उन्हें विस्तृत अनुक्रमणिका बनानी होगी। साथ ही, चौथे खंड की तैयारी भी शुरू

करनी होगी। कम से कम अगले एक वर्ष में जानकारी संकलित करने का काम पूरा हो जाना चाहिए और लिपि लेखन शुरू हो जाना चाहिए। योजना के अनुसार पांच खंड पूरी सामग्री को समाहित करने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे। पांचवां खंड संभवतः यूरोपीय इतिहास के पूर्ण रूप से कवर होने से पहले ही समाप्त हो जाएगा। अब ऐसा लगता है कि इसे पूरी तरह से पूरा करने के लिए आठ और वर्षों की आवश्यकता होगी।

अब उसने अपने पति के स्वास्थ्य के बारे में सोचना शुरू किया। कल जब चक्कर आने से वह सीढ़ियों पर गिर पड़ा था, तो वह सचमुच बहुत डर गई थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि जो व्यक्ति अपनी बुद्धि को चरम सीमा तक इस्तेमाल करता है, उसके शारीरिक स्वास्थ्य का क्या हाल होता है। वर्षों से उसकी शारीरिक शक्ति भी कम हो गई थी। लेकिन चूंकि वह जन्म से ही ऊर्जावान थी, इसलिए वह इतना काम संभाल लेती थी। लेकिन उसके पति का शरीर जवाब दे चुका था। उसने सोचा कि क्या उसमें शेष कार्य पूरा करने की शक्ति बची है।

परसों उनके बीच बच्चे को जन्म देने को लेकर हुई बातचीत उसके मन में गूंज उठी। अगर वह अब गर्भवती हो जाती, तो प्रसव तक काम मौजूदा रफ्तार से नहीं चल पाता। प्रसवोत्तर देखभाल के दौरान भी वह काम नहीं कर पाती, क्योंकि उसे पूरी तरह आराम करना होता। बच्चे के एक साल का होने तक उसकी अच्छी तरह देखभाल करनी पड़ती। अगर कोई नर्स उपलब्ध न होती, तो स्थिति और भी कठिन हो जाती। नर्स उपलब्ध होने पर भी, उसकी कमियों को दूर करने के लिए सतर्क रहना पड़ता। उसके भीतर से एक धीमी सी आवाज़ आई: 'अगर तुम मातृत्व को अपनाती हो, तो इस परियोजना में तुम्हारा योगदान कम हो जाएगा, और वह पूरा होने से पहले ही मर जाएगा।' हालांकि वह उस आंतरिक आवाज़ को सच मानने का कोई ठोस कारण नहीं ढूंढ पाई, फिर भी उसका मन उस चेतावनी को अनसुना नहीं कर सका। अपने पति की मृत्यु के विचार से उसका हृदय व्याकुल हो गया और शोक से उसका चेहरा गंभीर हो गया। उसकी भौंहें तन गईं और माथे पर शिकन आ गई। उसने अपने संकल्प को फिर से मजबूत करने की कोशिश की। वही दृढ़ इच्छाशक्ति, जिसने पहले उसे अपना गृहनगर और माता-पिता को छोड़ने के लिए प्रेरित किया था, और जिसने उसे दूर देश में उसके मिशन में उसका साथ देने के रास्ते में आने वाले सभी दोषों का सामना करने में सक्षम बनाया था, अब उसे सही राह दिखा रही थी। उसने ठान लिया कि जब तक वह उस मिशन को पूरा नहीं कर लेता जिसके लिए उसने उससे विवाह किया था, तब तक वह उसकी मृत्यु की संभावना को समाप्त कर देगी। फिर भी उसकी शारीरिक स्थिति ने

उसे चिंतित कर दिया। वह बहुत दुबला-पतला था और उसका वजन एक जवान लड़के से भी कम था। उसने उसके कमजोर शरीर और घटती दृष्टि के बारे में सोचा। उसने हाल ही में फिर से नए चश्मे लगवाए थे। उसने फैसला किया कि वह संतान उत्पन्न नहीं करेगी, और उसका सारा प्रेम और स्नेह उस ग्रंथ को पूरा करने में समर्पित होगा। जैसे ही उसके दृढ़ संकल्प की दृढ़ता उसके चेहरे पर दिखाई दी, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और उसकी दृष्टि धुंधली हो गई। उसने चुपचाप उस माँ की पीड़ा का अनुभव किया जो अपने गर्भ को नष्ट करने के लिए निकल पड़ी हो। अपने चेहरे को घुटनों के बीच रखकर वह सिसकने लगी। पिछले दो दिनों से वह खुद को एक बेहद उत्साहपूर्ण और आशा से भरी स्थिति में महसूस कर रही थी। उस नए दौर में उसके शरीर के सभी अंग खिल उठे थे और उनमें एक नई चमक आ गई थी। उसने कल्पना की थी कि उनके संयमी बौद्धिक जीवन के साथ-साथ एक जीवंत नदी बह रही है। यह कल्पना मात्र दो दिनों में ही स्पष्ट रूप ले चुकी थी और वास्तविक जीवन से भी गहरी जड़ें जमा चुकी थी। और यद्यपि उसने इस सपने को त्यागकर अपनी पूर्व निर्धारित जीवनशैली में लौटने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, फिर भी उसे ऐसा दर्द हो रहा था मानो उसके भीतर के अंग मरोड़ दिए गए हों।

अध्याय 17

1

पिछले आठ वर्षों में कात्यायनी के जीवन में बहुत बदलाव आया था। उनके पति का प्यार और स्नेह जरा भी कम नहीं हुआ था। नागलक्ष्मी से उनका कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ। फिर भी, वह पहले जैसी नहीं रहीं। नंजनगुड से आने के बाद, वह खुद को व्यस्त रखना चाहती थीं। राजा ने सुझाव दिया कि उन्हें ऑनर्स और बाद में पोस्ट-ग्रेजुएशन करना चाहिए। कॉलेज के उन्हीं दोस्तों और शिक्षकों के बीच फिर से रहने में उन्हें झिझक महसूस हुई, लेकिन फिर भी वह पढ़ाई जारी रखना चाहती थीं। अंततः उन्होंने तय किया कि वह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पत्राचार पाठ्यक्रम में दाखिला लेंगी और राजा उन्हें घर पर पढ़ाएंगे। बुद्धिमान होने के कारण, इसमें उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई। दो साल में ही उन्होंने एमए की डिग्री भी प्राप्त कर ली।
जब वह द्वितीय वर्ष की परीक्षा देने बनारस गई, तब वह चार महीने की गर्भवती थी। पढ़ाई पर इतना ध्यान देने के कारण उसने अपने गर्भ पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। घर के सारे काम एक नौकरानी करती थी, सिवाय खाना पकाने के, जो नागलक्ष्मी करती थी। कात्यायनी पूरी तरह से पढ़ाई में लगी रहती थी। परीक्षा के बाद बनारस से लौटते समय ही उसका ध्यान अपने गर्भ में पल रहे बच्चे पर गया। राजा अपने पहले बच्चे को लेकर बहुत उत्सुक था। उसे हमेशा से बच्चे बहुत पसंद थे। पृथ्वी अब आठ साल का हो चुका था और स्कूल जाता था। उसके साथ राजा को अब छोटे बच्चे के साथ खेलने का आनंद नहीं मिलता था। इसके अलावा, उसका दिल अपने बच्चे के आने की खुशी से भरा हुआ था। बनारस से लौटने के बाद वह उसके पेट को चूमता और उसके चेहरे को देखता। उसके मन की बात समझकर वह उसे ऐसे गले लगा लेती जैसे वह कोई बच्चा हो। डॉक्टर के निर्देशानुसार और नागलक्ष्मी की मदद करने के लिए भी कात्यायनी कुछ घरेलू काम करती थी। वे हर शाम दो किलोमीटर से अधिक की सैर पर जाते थे। राजा उसे फल और पौष्टिक टॉनिक देता था।
जैसे-जैसे कात्यायनी के गर्भ में पल रहा बच्चा बड़ा होता गया, वह चीनी को याद करने लगती। अब सात साल का हो चुका चीनी कन्नड़ की दूसरी कक्षा में पढ़ रहा होगा। उसके दादाजी उसे घर पर ही पढ़ाते होंगे। अब तक तो उसे संस्कृत की शिक्षा मिल

चुकी होगी और उसने कई श्लोक और भक्ति गीत याद कर लिए होंगे। वह उसे एक बार देखने के लिए तरस रही थी। लेकिन कैसे? वह आह भरती और किसी और बात के बारे में सोचने लगती। उसका मन फिर से गर्भ में पल रहे बच्चे की ओर चला जाता। उसे जिज्ञासा होती कि लड़का होगा या लड़की। उसका मन एक बच्ची की कामना करता, क्योंकि उसने पहले ही एक लड़के को जन्म दिया था। लेकिन वह सच्चाई से रूबरू हो जाती: 'वह लड़का उस वंश का है। मुझे इस वंश के लिए भी एक लड़का चाहिए।'
एक दिन यही विषय उसके पति के सामने आया। उसने पूछा, 'क्या आप बेटा चाहते हैं या बेटी?'
क्या आप मेरी इच्छा को समझ सकते हैं?
‘बस करो, अब और डांटना बंद करो। मुझे बताओ।’
यदि लड़की हुई तो उसे दूसरे परिवार में भेज दिया जाएगा। पहला बच्चा लड़का हो जो इस परिवार का नाम रोशन करे।
“जो कभी शादी करना ही नहीं चाहता था, अब अपने वंश को आगे बढ़ाने के बारे में सोच रहा है। कितना बड़ा बदलाव!” उसने ताना मारा। “तुम ही हो जिसने ये बदलाव लाया है,” उसने अपनी निगाहें उसकी आँखों में गड़ा दीं और मुस्कुराया।
कात्यायनी अब छह महीने की गर्भवती थी। वह एक खूबसूरत स्त्री थी, और उसके गर्भ में पल रही नई जान ने उसे एक अनोखी चमक दी थी। जब भी वह उसके सामने बैठता, उसे हुनसुर राजमार्ग के किनारे उस नदी के तट पर हुई उनकी मुलाकात याद आ जाती। अब वह बिल्कुल वैसी ही युवती लगती थी जैसी कभी उसके सपने में आई थी—सुंदर चेहरा, आकर्षक शरीर। आसपास की हरियाली भी उतनी ही जीवंत थी। एक बहती हुई नदी थी। इसी पृष्ठभूमि में उसने तब उसे देखा था। उसका शरीर स्वास्थ्य से दमक रहा था। जब वह कदम रखती, तो उसके पैर खून की अधिकता से चेरी रंग के हो जाते। उसका रंग चांदनी जैसा था। उसकी उंगलियां पतली थीं, उनकी सुंदरता चित्रों में चित्रित सुंदरता जैसी थी। उसने कोई आभूषण नहीं पहना था। उसके बाल लंबे और चमकदार काले थे; सिरे पर घुंघराले थे। उसका चेहरा राजसी था। उसके शरीर से नारीत्व की उमंग झलकती थी। आज भी राजा इन सभी गुणों को देख सकता था। आज भी उसका शरीर उसी चमक से दमक रहा था। उसके शरीर से वही नारीत्व का उमंग निकल रहा था। इन सबके अलावा एक नई चमक भी थी जो तब दिखाई नहीं देती थी। वही खूबसूरत हरा पेड़ था, लेकिन अब फलों से लदा हुआ था।
‘तुम मुझे इस तरह क्यों घूर रहे हो?’

'प्रकृति की चमक में जो उभार आता है, वह पागल कर देने वाला होता है,' उसने धीरे से कहा, उसके चेहरे को अपने हाथों में थामे हुए।
‘यह सब आत्मा की निकटता का परिणाम है। प्रकृति के साथ आत्मा के आनंद का सुखद परिणाम,’ वह मुस्कुराई। यद्यपि उसे यह कथन याद था कि ‘सदाबहार और जीवंत प्रकृति पर कृत्रिम धर्म थोपना धर्म के विरुद्ध है,’ फिर भी उसने यह बात नहीं कही। उसने अपने शरीर को निहारा। अपने शरीर की सुंदरता में खोई हुई वह क्षण भर के लिए राजा को भी भूल गई।
कात्यायनी का स्वास्थ्य पूरे समय अच्छा था। गर्भावस्था का छठा महीना चल रहा था। गर्मी की छुट्टियां अभी-अभी खत्म हुई थीं और राजा कॉलेज में था। जून का महीना था और दोपहर में हमेशा की तरह हल्की बारिश हो रही थी। इस मौसम में कात्यायनी का मन अक्सर उदास हो जाता था। उसे धुंधला सा याद आया कि दो साल पहले शाम के समय वह उफनती कपिला नदी के किनारे बैठी थी, उसका मन उसमें डूबने को तड़प रहा था और तभी राजा अचानक कहीं से आकर उसे बचाने आया था। चीनी की यादें उसके मन में कौंध गईं। उसके पेट में अचानक तेज दर्द हुआ। आधे घंटे में दर्द असहनीय हो गया। वह घबरा गई। यह वही दर्द था जो उसे सात साल पहले चीनी के जन्म के समय हुआ था। वह अंदर गई और नागलक्ष्मी को बताया, जो रटकर काम कर रही थी और रमा की बातें पढ़ रही थी। नागलक्ष्मी ने उसका पेट जांचा। उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। उसने एक पड़ोसी को बुलाया। पड़ोसी ने सलाह दी कि उसे तुरंत अस्पताल ले जाना बेहतर होगा। राजा को तुरंत सूचना मिली; वह दौड़ता हुआ आया। उसने एक टैक्सी किराए पर ली और वे सब चेलुवंबा अस्पताल गए। कात्यायनी को भर्ती करने के बाद, डॉक्टर ने उसकी जांच की और राजा से कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं। लगता है उसका गर्भपात हो जाएगा। हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे।' राजा बाहर ही रुका रहा। नागलक्ष्मी कात्यायनी के पास अंदर चली गई।
नागलक्ष्मी गर्भवती लड़की की पीड़ा देखकर व्याकुल हो उठीं। कात्यायनी तपती हुई धरती पर मेंढक की तरह छटपटा रही थीं, और नागलक्ष्मी ने अपना बायां हाथ कात्यायनी के कंधे पर रखा जबकि अपने दाहिने हाथ की हथेली से उनकी पीठ सहलाई। बीच-बीच में वह उनकी कमर के पीछे मालिश करती रहीं। चीनी के जन्म के समय कात्यायनी ने ऐसा असहनीय दर्द कभी नहीं सहा था। थोड़ी देर में ही उन्हें रक्तस्राव होने लगा। दो नर्सें उन्हें प्रसव कक्ष में ले गईं। नागलक्ष्मी बाहर ही रहीं। अगले एक घंटे में उनका गर्भपात हो गया और यह घटना समाप्त हो गई। कात्यायनी बेहोश

थीं, और डॉक्टर ने उन्हें दो इंजेक्शन दिए। होश में आने के बाद उन्हें स्ट्रेचर पर वार्ड में लाया गया। नागलक्ष्मी बाहर गईं और राजा को सूचना दी, जिन्होंने डॉक्टर से मिलने की अनुमति मांगी। कात्यायनी अपने बिस्तर पर अर्ध-चेतन अवस्था में लेटी थीं। उनके चेहरे की रौनक गायब थी। अत्यधिक रक्तस्राव के कारण उनकी ऊर्जा समाप्त हो गई थी और उनका तेजस्वी चेहरा मुरझा गया था। उसकी उंगलियां ढीली पड़ गई थीं, मानो उनमें पकड़ने की शक्ति ही न बची हो। दंपति ने अपनी खुशी खो दी थी। अब वह एक ऐसे पेड़ की तरह लग रही थी जिसकी डालियाँ झुक गई हों और किसी बीमारी के कारण उसके पके फल झड़ गए हों। नागलक्ष्मी ने राजा को दिलासा देते हुए कहा, 'उन्होंने कहा है कि उसकी जान को कोई खतरा नहीं है। हमें खुश होना चाहिए कि राम ने उसे छोड़ दिया।' फिर उसने कहा, 'तुम घर जाओ और थर्मस, दो गिलास, चीनी, चम्मच और एक तौलिया ले आओ। मेरे लिए एक कालीन और कंबल भी ले आना। मैं उसके अस्पताल से छुट्टी होने तक यहीं रहूंगी। तुम अपने और पृथ्वी के लिए किसी रेस्तरां से खाना ले आना।'

चार दिन बाद, कात्यायनी धीमी आवाज़ में बोल सकीं। लेकिन डॉक्टर ने कहा कि उन्हें बैठने में दो सप्ताह लगेंगे। तब से, नागलक्ष्मी सुबह घर जातीं, नहातीं, खाना बनातीं, दोपहर का भोजन करतीं और दोपहर तक अस्पताल लौट आतीं। वह अगली सुबह ही घर लौट पातीं।

अपने होने वाले बच्चे की असमय मृत्यु के आठ दिन बाद, राजा अपने भाई को यह सूचना देने विश्वविद्यालय पुस्तकालय गया। राव क्रोधित होकर बोले, 'तुमने मुझे इतने दिनों तक सूचना क्यों नहीं दी?' तुरंत ही उन्होंने एक तांगा किराए पर लिया और करुणा के साथ अस्पताल चले गए। राजा साइकिल से तांगे के पीछे-पीछे गए। दस मिनट तक करुणा के बिस्तर के पास चुपचाप बैठने के बाद, राव ने करुणा को सांत्वना दी। 'कैसी हो मेरी प्यारी? ज्यादा चिंता मत करो। ये सब जीवन का हिस्सा हैं,' उन्होंने कहा और चले गए। करुणा बिस्तर के पास एक स्टूल पर बैठ गई और कात्यायनी से बातें करने लगी। अस्पताल के बाहर एक पेड़ के नीचे, बड़ा भाई छोटे भाई को शांत कर रहा था। करुणा के बाहर आने के बाद, उन्होंने एक तांगा किराए पर लिया। राव ने कहा, 'राजा, मेरे घर चलो। तुम वहीं से घर जाओगे।' राव उसे अपने सरस्वतीपुरा स्थित घर ले गए, जहाँ वे उस समय रहते थे।

अपने शयनकक्ष से बाहर निकलते हुए, उन्होंने राजा को एक चेक दिया और कहा, 'वह बहुत कमजोर हैं। उनका अच्छे से ख्याल रखना।' राजा ने देखा कि यह 1,000 रुपये

का चेक था। उसे घूरते हुए उन्होंने कहा, 'इतने पैसे क्यों?' राव ने कहा, 'उन्हें एक सामान्य मजदूर से भी अधिक देखभाल की जरूरत है। उन्हें टॉनिक से अतिरिक्त पोषण चाहिए। मुझे प्रकाशक से अच्छी रॉयल्टी मिल रही है। चिंता मत करो। अब जाओ।' उन्होंने राजा को विदा किया।

2

कात्यायनी दोबारा गर्भवती हो गईं। इस बार भी तीसरे महीने में उनका गर्भपात हो गया। इससे दंपति को बहुत दुख हुआ, लेकिन लगभग एक साल में वे ठीक हो गईं। हालांकि उनकी शारीरिक सुंदरता कुछ कम हो गई, फिर भी उनका व्यक्तित्व और आकर्षण बरकरार रहा। तब तक राजा को सहायक प्रोफेसर के पद पर पदोन्नति मिल चुकी थी और उनका तबादला बैंगलोर हो गया था। पदोन्नति से वे खुश तो थे, लेकिन जिस थिएटर संस्था की उन्होंने स्थापना और देखरेख की थी, उससे दूर होने का उन्हें दुख था। कात्यायनी नए स्थान पर जाने के लिए उत्सुक थीं। नागलक्ष्मी ने इस बदलाव का उसी उदासीनता से स्वागत किया, जैसा कि वे हर चीज में करती थीं। घर बदलने से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे जहां भी होतीं, उन्हें बस घर के काम करने होते थे और अपने खाली समय में रामा का पाठ करना होता था। इसके अलावा उनका कोई और काम नहीं था। दो साल तक रामा का पाठ करने से उनके मन में शांति आ गई थी। पति के प्रति उनका क्रोध शांत हो गया था और अगर वे खुद उनसे बात करना चाहते तो वे उनसे बात करने को तैयार थीं। घर पर, राजा पहले की तरह ही प्यार और स्नेह से उसकी देखभाल करते थे। कात्यायनी भी उसे घर की मालकिन मानती थीं। राजा और कात्यायनी न केवल पृथ्वी पर प्यार बरसाते थे, बल्कि उसकी शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देते थे। फिर भी, नागलक्ष्मी का मन अक्सर परेशान रहता था। 'यह मेरा घर नहीं है। मेरा घर तो वह है जहाँ वह रहता है। अगर वह यहाँ भी रहे तो कोई बात नहीं, मैं तो दोनों के लिए खाना वैसे ही बनाऊंगी जैसे यहाँ बनाती हूँ,' वह कई बार सोचती थीं। लेकिन उन्होंने यह बात घर में किसी को नहीं बताई। जब बैंगलोर जाने का दिन नजदीक आया, तो उन्हें उम्मीद थी कि कम से कम अब तो वह उनसे मिलने आएंगे। लेकिन वह नहीं आए। वे रात की ट्रेन से बैंगलोर के लिए रवाना हुए। बैंगलोर में भी उनका रटने का काम जारी रहा। पिछले चार वर्षों में उन्होंने बीस लाख राम लिखे थे। पचास नोटबुक भर चुकी

थीं। राजा उनके लिए नई नोटबुक, नई स्टील की निब और स्याही खरीदते थे। हर नोटबुक भरने के बाद, उसके अंत में वह लिखती थीं:
जो सभी प्रकार की अच्छाई प्रदान करता है, वह विपत्तियों के बादलों को उड़ा ले जाने वाली हवा के समान है।
और वह अत्यंत दयालु हैं, मैं भगवान हनुमान को प्रणाम करता हूँ।
जो हमारे दुखों को दूर करता है, वही हमें सौभाग्य प्रदान करता है।
मैं समस्त ब्रह्मांड के प्रिय भगवान राम को बार-बार प्रणाम करता हूँ।

फिर वह उसके कोनों पर हल्दी पाउडर मलती, हल्दी से रंगे शुभ धागे से उसे बांधती और पूजा कक्ष में एकांत में रखे हुए किताबों के ढेर के ऊपर रख देती। वह कात्यायनी से पूछती, 'अगर 50 किताबें भर दी जाएं तो कितना खर्च आएगा?'
बीस लाख।
एक करोड़ रुपये के लिए और कितने साल लगेंगे?
‘आपने चार साल में बीस लाख का आंकड़ा पार कर लिया है। इस रफ्तार से तो एक करोड़ लिखने में 16 साल और लग जाएंगे।’
“जो भी हो, मुझे मरने से पहले इसे पूरा करना ही होगा। श्री रामचंद्र, कृपया मुझे 16 वर्ष का और जीवन दीजिए,” वह अपने हाथों को जोड़कर प्रार्थना करती थी।
एक दिन कात्यायनी ने उससे पूछा, 'इस रटने से तुम्हें क्या मिलेगा?'
'श्री राम कम से कम मेरे अगले जन्म के लिए आशीर्वाद तो देंगे।'
कात्यायनी ने श्री राम की कथा पर विचार किया। यद्यपि उन्होंने उनके शौर्य, त्याग और ऐसे गुणों की सराहना की, फिर भी एक धोबी की बातों में आकर अपनी प्रिय पत्नी सीता को त्याग देने का उनका कार्य उन्हें स्वीकार्य नहीं लगा। उन्होंने कहा, “परन्तु मुझे यह कहना ही होगा। जनता की निंदा के भय से सीता जैसी पत्नी को वन में भेजना राम का कार्य उचित नहीं कहा जा सकता।”
नहीं, ऐसा कभी मत कहो। ऐसा कहने के लिए प्रायश्चित करो। हम कौन होते हैं श्री राम की आलोचना करने वाले? वे सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं। क्या उन्हें सब कुछ नहीं पता?
उस पूरे दिन नागलक्ष्मी अपने पति को याद करती रहीं। यद्यपि सीता की तरह ही उन्हें भी त्याग दिया गया था, उनके पति ने दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया था और अपनी पत्नी से नाता तोड़ लिया था। राम ने ऐसा नहीं किया था। राम के प्रति उनकी भक्ति अत्यंत प्रबल हो गई।

पृथ्वी अब बारह साल का लड़का था। उसने मल्लेश्वरम हाई स्कूल में दाखिला लिया था। वह पढ़ाई में अच्छा था। कभी-कभी नागलक्ष्मी इस बात से चिढ़ जाती थी कि उसका पति अपने बेटे को देखने की इच्छा तक क्यों नहीं रखता।

बैंगलोर के जिस कॉलेज में राजा पढ़ाते थे, वहाँ अंग्रेजी लेक्चरर का पद खाली था। उन्होंने कात्यायनी से पूछा, 'घर पर खाली बैठने के बजाय, क्या तुम यह नौकरी करोगी?' हालाँकि वह पहले तो झिझकी, लेकिन उसी कॉलेज में उसी विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में राजा की मौजूदगी ने कात्यायनी का आत्मविश्वास बढ़ा दिया। राजा ने कात्यायनी को नौकरी दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया और अपने भाई को भी पत्र लिखकर पूछा कि क्या वह इसमें कुछ मदद कर सकते हैं। तब तक राव को प्रोफेसर नियुक्त किया जा चुका था। विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारी अब उनकी बातों का सम्मान करते थे। कात्यायनी को वह नौकरी मिल गई। इस नए काम में लगकर उन्होंने अपने अतीत की कई दर्दनाक घटनाओं को भुलाने की कोशिश की। वह अपने पति के साथ कॉलेज आने-जाने लगीं। राजा ने बैंगलोर में एक थिएटर एसोसिएशन की स्थापना भी की। यह सफलतापूर्वक चला और पूरे कॉलेज में उनका नाम लोकप्रिय हो गया। अब नागलक्ष्मी को घर के कामों की ज़िम्मेदारी ज़्यादा उठानी पड़ी। एक दिन कात्यायनी ने कहा, 'बहन, ये सारे काम अकेले तुम नहीं संभाल सकतीं। अब हम दोनों कमा रही हैं।' 'चलिए एक रसोइया रख लेते हैं।' नागलक्ष्मी ने मना कर दिया। 'राजा से शादी के बाद आपके यहाँ आने से पहले क्या मैं सब कुछ नहीं संभाल रही थी? खाना बनाना कोई थकाने वाला काम नहीं है। और वैसे भी, मैं रसोइए का खाना नहीं खा सकती।'

कात्यायनी को अध्यापन का पेशा अपनाए चार साल बीत चुके थे। अब तक उन्हें व्याख्यान देने की अच्छी आदत हो चुकी थी। कॉलेज में समय बर्बाद करना उनके लिए कोई समस्या ही नहीं थी। घर पर उनका समय नागलक्ष्मी के घरेलू कामों में मदद करने, अगले दिन के व्याख्यानों की तैयारी करने और पृथ्वी की पढ़ाई में सहायता करने में व्यतीत होता था। वह प्रतिदिन अपने पति के साथ बाजार जाती और सब्जियां, फल और फूल खरीदती थीं।

लेकिन जल्द ही, वह जीवन से ही ऊबने लगी। उसे लगने लगा कि वह अकेली है। कभी-कभी चीनी उसकी यादों में आ जाता और उसे देखने की तीव्र इच्छा होती। वह यह जानने के लिए उत्सुक होती कि क्या वह उसे याद करता है, और क्या उसने अपने दादाजी से उसे चीनी के पास ले जाने के लिए कहा है। वह अब तेरह साल का हो गया

होगा। वह लंबा हो गया होगा। उसके ससुर ने आठवीं कक्षा में उसका उपनयन संस्कार करवा दिया होगा। अब तक उसने वेदों और उपनिषदों के कई भाग याद कर लिए होंगे। उसने संस्कृत भी सीख ली होगी। वह सोचती कि अगर उसने अपने ससुर की सलाह मानी होती, तो अब तक उसने भी भगवद्गीता और उपनिषद याद कर लिए होते। लेकिन उसे उन्हें सीखने की इच्छा नहीं थी। उसके दादाजी ने तो बचपन से ही उसे ये बातें सिखा दी होंगी। क्या वह अब हाई स्कूल जा रहा होगा? वह दिन में कम से कम एक बार उसके बारे में सोचती। वह यह कल्पना करके अपने अकेलेपन को कुछ हद तक दूर कर लेती कि वह अब कैसा दिखता होगा।

जल्द ही उसके दोबारा गर्भवती होने के लक्षण दिखाई देने लगे। राजा सबसे ज्यादा खुश था। शादी के दो साल बाद ही वह पिता बनने वाला था। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया और उसकी उम्मीदें टूट गईं। बदकिस्मती से ऐसा दूसरी बार हुआ था। अब उसकी पत्नी फिर से गर्भवती थी। खुशी से झूमते हुए उसने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ा और कहा, 'चलिए तुरंत किसी महिला डॉक्टर को दिखाते हैं। इस बार आपको हर हफ्ते चेकअप के लिए जाना चाहिए। आपको अपना पूरा ख्याल रखना चाहिए।'

महिला डॉक्टर ने कात्यायनी की जांच की। उन्होंने उसे कैल्शियम लेने को कहा। उन्होंने कुछ गोलियां और टॉनिक भी दिए और पर्याप्त मात्रा में दूध और फल खाने की सलाह दी। उन्होंने उसे हर हफ्ते फॉलो-अप के लिए आने को कहा और हर महीने खून और पेशाब की जांच कराने को कहा। कात्यायनी ने पूरी निष्ठा से सभी सलाहों का पालन किया। अब उसका चौथा महीना पूरा हो चुका था। कमजोरी और सुस्ती को छोड़कर वह काफी स्वस्थ थी। गर्भावस्था के दो महीने और बीतने पर कात्यायनी के शरीर में और भी अधिक स्फूर्ति आ गई। उसका शरीर लाल फलों से लदे आम के पेड़ की तरह भरा हुआ था। जब वह चलती, तो उसके पैर खून की अधिकता से लाल हो जाते। उसके पूरे शरीर में विकसित हो रहे भ्रूण की जीवंतता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। राजा उसे निहारता रहा और उसे लगा कि पिछली गर्भावस्था में भी वह बिल्कुल ऐसी ही थी। वह उसे पूरे कद के दर्पण के पास ले गया और बोला, 'देखो!'

उसने उसमें खुद को देखा। उसे खुशी हुई, लेकिन साथ ही साथ थोड़ी घबराहट भी थी। पर वह अपने बढ़ते मातृत्व की सुंदरता को हल्के में नहीं ले सकती थी। उसने अपने पति से पूछा, 'जब तुम मुझे देखते हो तो तुम्हारे मन में क्या भाव आते हैं?'

मुझे ऐसा लगता है कि किसी आत्मा के साथ जुड़ाव के परिणामस्वरूप प्रकृति ने अपनी चरम सीमा प्राप्त कर ली है।

‘नहीं, ऐसा कभी मत कहना।’ उसने उसके मुंह पर हाथ रख दिया और आगे कहा, ‘पिछली दो असफलताओं ने मेरे मन में प्रकृति और आत्मा के संबंध को लेकर चिंता पैदा कर दी है।’ उसकी आवाज कांप रही थी और उसकी आंखों में घबराहट झलक रही थी।

इस बार उन्हें सचमुच बच्चे के लिंग की चिंता नहीं थी। दोनों ने प्रार्थना की कि वे जल्द ही अस्पताल से घर लौट आएं, प्रसव आसान हो और बच्चा स्वस्थ हो। नागलक्ष्मी ने मातृत्व अवकाश के लिए आवेदन किया था। एक दिन नागलक्ष्मी ने कहा, 'लोगों की निगाहों से आप निश्चिंत नहीं रह सकतीं। अब से जब भी बाहर जाओ, पुरानी साड़ी पहनना। अगर तुम सज-धज कर बाहर जाओगी, तो लोगों की घूरती निगाहों का सामना करना ही पड़ेगा।' कात्यायनी ने बिना किसी आपत्ति के बात मान ली। राजा को भी इस पर पूरा भरोसा था।

वह अभी छह महीने की गर्भवती ही थी। राजा अपनी कक्षा में व्याख्यान दे रहे थे। कॉलेज के अटेंडेंट ने उन्हें एक पत्र दिया। यह पत्र कात्यायनी का था: ‘मैं शिक्षकों के कमरे में हूँ। मेरे पेट में बहुत दर्द हो रहा है। मैं बहुत चिंतित हूँ। तुरंत आइए।’ उन्होंने व्याख्यान बीच में ही छोड़ दिया और तुरंत निकल पड़े। उनका चेहरा देखकर वे और भी घबरा गए। उनके एक छात्र ने उनकी कार कॉलेज तक चलाई। उन्होंने उसे बुलवाया और उसी कार से वानीविलास अस्पताल गए। जब तक वे अस्पताल पहुँचे, कात्यायनी की हालत बहुत खराब थी। उन्हें रक्तस्राव भी हो रहा था। डॉक्टर द्वारा जाँच करने से पहले ही राजा और कात्यायनी समझ गए थे कि इस बार भी गर्भपात हो जाएगा। राजा अस्पताल में ही रुके रहे जबकि उनका छात्र नागलक्ष्मी को लेने गया। तब तक कात्यायनी को प्रसव कक्ष में ले जाया जा चुका था। अपनी भाभी को देखकर राजा की आँखों में आँसू आ गए। दिल से वे कोमल थे। उन्हें बच्चे बहुत प्यारे थे। उनकी उम्मीद दो बार टूट चुकी थी। तीसरी बार भी ऐसा ही लग रहा था। ‘हे भगवान, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?’ उसने मन ही मन चीखते हुए कहा।

दोपहर 2 बजे के बाद, अस्पताल की नौकरानियाँ कात्यायनी को स्ट्रेचर पर लिटाकर बिस्तर पर ले गईं। नर्स ने कहा कि कल सुबह तक किसी को भी उसके पास जाने की अनुमति नहीं होगी। कात्यायनी को पूरे एक दिन बाद होश आया। उस बीच जो कुछ हुआ था, उसे याद करने में उसे आधा घंटा लग गया। जब उसे पूरी बात समझ आई, तो उसकी आँखों में आँसू भर आए। हालाँकि उसमें रोने की भी ताकत नहीं थी, फिर भी वह सिसकियाँ भर रही थी। नागलक्ष्मी, जो उसके पास ही थी, ने उसका सिर दोनों हाथों

से थाम लिया। रोने की आवाज़ सुनकर नर्स तुरंत उसके पास भागी। उसने कात्यायनी को चेतावनी दी, 'अगर तुम रोईं, तो तुम्हारी हालत और बिगड़ जाएगी।' फिर वह नागलक्ष्मी की ओर मुड़ी और बोली, 'अगर तुम उसके पास रहोगी, तो उसे सब याद आ जाएगा और वह रोने लगेगी। तुम बाहर जाओ।' नागलक्ष्मी ने गिड़गिड़ाने की कोशिश की, लेकिन नर्स ने उसे बेरहमी से बाहर भेज दिया।

उस शाम राजा की मुलाकात वरिष्ठ महिला डॉक्टर से हुई। डॉक्टर ने उसे पहचान लिया और कहा, 'शुभ संध्या। मेरी बेटी आप दोनों की छात्रा है।'

उसका नाम क्या है?

'सुधा राव। पिछले साल तो आपने उन्हें ओफेलिया का किरदार भी निभाने का मौका दिया था। वह आपकी पत्नी की भी बहुत प्रशंसा करती हैं। उनकी हालत जानकर मुझे बहुत दुख हुआ।'

उन्होंने कात्यायनी के बारे में संक्षेप में बताया। 'यह उनके साथ तीसरी बार हो रहा है। उन्हें एक महीने के लिए अस्पताल में रहने दें। उसके बाद, उन्हें कम से कम छह महीने घर पर आराम करना चाहिए। हम आवश्यक चिकित्सा प्रमाण पत्र दे देंगे। उन्हें छुट्टी के लिए आवेदन करना चाहिए।'

'मुझे उम्मीद है कि वह खतरे से बाहर है?' राजा ने चिंता से पूछा।

"उसे समय पर यहाँ लाने के लिए आपका धन्यवाद। वह सुरक्षित है। लेकिन अगर वह दोबारा गर्भवती हो जाती है, तो जटिलताओं के दोबारा होने की संभावना बहुत अधिक है। और अगर ऐसा होता है, तो उसके बचने की संभावना एक रुपये में एक आना भी नहीं है।" राजा निराश हो गया। डॉक्टर ने आगे कहा, "एक साल तक उसे यौन संबंध नहीं बनाना चाहिए। और उसे कभी भी गर्भवती नहीं होना चाहिए। बेहतर होगा कि आप गर्भनिरोधक सर्जरी करवा लें।"

राजा भारी मन से घर लौटा। वह जानता था कि विश्वविद्यालय उसकी छह महीने की छुट्टी मंजूर नहीं करेगा। फिर भी, उसने अस्पताल से प्रमाण पत्र प्राप्त किया, उसकी ओर से छुट्टी के लिए एक पत्र लिखा और मैसूर के लिए रवाना हो गया। कम बोलने वाली नागलक्ष्मी ने बस इतना कहा, 'सब कुछ आराम से निपटाओ। अगर तुम्हें वहाँ एक-दो दिन रुकना भी पड़े तो चिंता मत करो। मैं हर समय अस्पताल में रहूँगी। रात में हमारी पड़ोसी पृथ्वी के साथ हमारे घर में रहेगी।'

वह सीधे विश्वविद्यालय पुस्तकालय चले गए। राव लेखन कार्य में व्यस्त थे। जो कुछ हुआ था, उसे सुनकर वे भी दुखी थे। राव ने कहा, 'तुम पहले कुलपति से मिलो और उन्हें

आवेदन पत्र दे दो। मैं उनसे बाद में बात करूँगा।' राजा मान गए। करुणा राजा को घर ले गईं। राव बाद में कुलपति से मिले। घर लौटकर उन्होंने बताया, 'वे छुट्टी तो मंज़ूर कर देंगे, लेकिन उस अवधि के लिए उन्हें वेतन नहीं मिलेगा। लेकिन उन्होंने कहा कि वे इसे कार्यकाल में रुकावट नहीं मानेंगे।' रात के खाने के बाद राव ने कहा, 'तुम शटल ट्रेन से चले जाओ। तुम्हारे बिना उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है,' और उन्हें 1,500 रुपये का चेक थमा दिया। राजा ने विरोध करते हुए कहा, 'फिर से क्यों?' लेकिन राव ने उनसे चेक लेने का आग्रह किया। 'उन्हें छह महीने तक वेतन नहीं मिलेगा। अब उन्हें और भी ज़्यादा देखभाल की ज़रूरत है। इसे रख लो। मेरे पास पर्याप्त पैसे हैं। अगर तुम्हें और चाहिए, तो मुझसे पूछने में संकोच मत करना। चिंता मत करो।'

3

कात्यायनी को अस्पताल से छुट्टी मिले एक महीना बीत चुका था, लेकिन वह अब भी बिस्तर पर ही पड़ी रहती थी। उसे नियमित रूप से दवाइयाँ, टॉनिक और फलों का रस दिया जाता था। एक महिला डॉक्टर हर तीन दिन में एक बार घर आती थी। अब वह पहले जैसी नहीं रही थी। उसका हमेशा आकर्षक चेहरा अब सूखे आम जैसा हो गया था। उसकी सुंदर उंगलियाँ अब पतली टहनियों जैसी हो गई थीं। अंगूठी अब टिकती नहीं थी। उसकी आँखों की चमक फीकी पड़ गई थी और उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी। उसके बाल झड़ने लगे थे और अब बस मुट्ठी भर ही बचे थे। कोई सोच भी नहीं सकता था कि इतना स्वस्थ शरीर कभी बिस्तर पर इस हालत में आ जाएगा। कॉलेज के समय को छोड़कर, राजा हमेशा उसके साथ रहता था। अब उसने ऑपरेशन थिएटर से पूरी तरह किनारा कर लिया था। जब वह दूर होता, तो नागलक्ष्मी कात्यायनी के बिस्तर के पास ही बैठी रहती और उससे जो भी थोड़ी-बहुत बातें कर पाती, कर लेती। हाल ही में, नागलक्ष्मी हर शनिवार को राम की पूजा करती और राम कथा पूरी पढ़ती थी। कुछ शनिवारों को, कात्यायनी की इच्छा के अनुसार, नागलक्ष्मी उनके पलंग के पास लकड़ी के आसन पर बैठकर राम की कथा सुनाती थीं। कात्यायनी ध्यानपूर्वक सुनती थीं। कुछ क्षणों के लिए वे भी भक्ति भाव में लीन हो जाती थीं।
जब वह अकेली लेटी होती या रातों को नींद नहीं आती, तो वह गहरी सोच में डूब जाती। उसका मन अपने बार-बार होने वाले दुर्भाग्य के कारणों पर विचार करता। इस तीसरी बार, राजा ने हर संभव सावधानी बरती थी। एक कुशल महिला डॉक्टर से नियमित रूप

से सलाह ली जाती थी। जब चीनी का जन्म हुआ था, तब ऐसी कोई चिकित्सा सुविधा नहीं थी। जब वह पाँचवें महीने में थी, तब भागीरथम्मा ने कुछ घरेलू जड़ी-बूटियों को पीसकर, छानकर, कात्यायनी को पिलाया था। उन्होंने उसके दैनिक आहार में घी और दूध की अच्छी मात्रा शामिल की थी। तब कोई टॉनिक नहीं था। फिर भी, प्रसव सहज था और चीनी स्वस्थ पैदा हुई थी। ये तीनों गर्भधारण इस तरह क्यों हुए? वरिष्ठ डॉक्टर ने उसे जो सलाह दी थी, वही बात राजा ने कुछ दिन पहले उससे साझा की थी। अगर मैं गर्भवती होती हूँ, तो ऐसी जटिलताओं की संभावना बहुत अधिक है; हो सकता है मैं बच न पाऊँ। इन सबका क्या अर्थ है? इसका क्या कारण है? अपने ज्ञात कारणों का विश्लेषण करने के बाद, उसका मन पापों और गुणों के विश्लेषण में लीन हो जाता। उसे भली-भांति याद था कि जब वह अपने बच्चे को मांगने वहाँ गई थी, तब श्रोत्री ने उससे क्या कहा था: एक वंश के बीज को आगे बढ़ाने के लिए ही दूसरा वंश अपना आश्रय देता है। वह आश्रय उस बीज को ग्रहण करके और उसे अंकुरित होने तक पोषित करके मुक्ति प्राप्त करता है। उसने अपने गर्भ में श्रोत्री वंश के बीज को पाला था और उस वंश को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। क्या यही उसके नारीत्व के उद्देश्य की पराकाष्ठा थी? क्या उसमें एक और वंश की जननी बनने की क्षमता नहीं थी?

लेकिन उसने राजा से विवाह किसी नई वंश-परंपरा की जननी बनने के इरादे से नहीं किया था! न ही राजा ने कभी चाहा था कि वह उसके वंश में उसकी संतान की माता बने। वे एक-दूसरे के प्रेम में पूरी तरह डूब गए थे। उनका प्रेम इतना गहरा हो गया था कि उनके लिए एक-दूसरे के बिना जीना असंभव था। वह भी पागल हो रही थी, और राजा भी। उन्होंने जीवन की पुकार के आगे समर्पण करते हुए, प्रकृति और आत्मा के वश में, एक-दूसरे का साथ धारण किया था। क्या जीवन के अगले चरण के लिए उनकी आकांक्षा स्वाभाविक नहीं थी? उसकी संतान उत्पन्न करने की इच्छा तीव्र थी। उसकी भी मातृत्व की आकांक्षा उतनी ही प्रबल थी। वह गर्भ धारण करने में सफल भी हुई। लेकिन यह बार-बार होने वाली त्रासदी! इसका कारण क्या है? क्या मेरे गर्भ ने एक नए वंश को जन्म देने की अपनी नैतिक और आध्यात्मिक क्षमता खो दी है? उसे 'वंश की जननी' की अवधारणा में विश्वास नहीं था; वह केवल 'नवजात शिशु की माँ' के बारे में सोचती थी। फिर भी, उसे श्रोत्री के ये शब्द याद आते थे, 'वंश के बाहर मातृत्व और पितृत्व जैसा कुछ नहीं होता।' जल्द ही, उसका एक और कथन उसकी स्मृति में उभर आएगा और उसे छुरा घोंप देगा: विकास की प्रक्रिया में बीत चुके अनुभव को पुनः प्राप्त करने की इच्छा रखना पाप है। उसने अपने पहले पति के साथ कुंवारी और पत्नी के रूप में आनंद का

अनुभव किया था। वह मातृत्व के शिखर पर पहुँच चुकी थी। एक कुंवारी लड़की की तरह उसे दूसरे पुरुष से प्रेम हो गया और उसने उससे विवाह कर लिया। वह सोचने लगेगी कि क्या इसका मतलब यह है कि एक बार माँ बनने के बाद वह हमेशा माँ ही रहती है और पत्नी का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। 'हे ईश्वर, क्या हम सचमुच पाप से ग्रसित हैं या केवल पाप के भ्रम से?' वह हताशा में आह भरेगी।

एक दिन उसने नागलक्ष्मी से पूछा, 'बहन, पाप का क्या अर्थ होता है? कृपया मुझे बताओ।'

मुझे इसके बारे में क्या पता? आप तो विद्वान हैं। आप ही बताइए।

मैंने आपसे इसलिए पूछा क्योंकि मुझे नहीं पता कि यह क्या है। आप मुझे इसके बारे में जो भी जानते हैं, बताइए।

बिना सोचे-समझे, लेकिन दृढ़ विश्वास और आत्मविश्वास के साथ नागलक्ष्मी ने कहा, 'दूसरों को कष्ट देना पाप है। जिस चीज़ के हम हकदार नहीं हैं, उसकी आकांक्षा करना पाप है। क्या ऐसा नहीं है?'

'क्या इस संसार में इन दो पापों के अलावा कोई और पाप नहीं है?'

'मुझे और क्या पता?' नागलक्ष्मी चुप हो गई।

मैंने किसे परेशान किया है? कात्यायनी चिंतन में डूब गई। वृद्ध दंपति श्रोत्री और भागीरथम्मा की याद आ गई। क्या वे बुढ़ापे में अपनी बहू के बिछड़ने से दुखी होंगे? लेकिन श्रोत्री ने साफ कह दिया था: न तो मेरी तरफ से और न ही घर की उस बुढ़िया की तरफ से, मैं तुमसे बच्चे को यहीं छोड़ने की भीख नहीं मांगूंगी। मेरी जरा भी इच्छा नहीं है कि वह बुढ़ापे में हमारी देखभाल करे।

अगर वे बच्चे में इतनी अरुचि रखते हैं, तो क्या वे अपनी बहू के खोने पर शोक मनाएंगे? शायद उनकी सेवा करना मेरा कर्तव्य था! नागलक्ष्मी का कथन उसके मन में फिर से गूंज उठा, इस बार और भी तीखे स्वर में: जिस चीज़ पर हमारा अधिकार नहीं है, उसकी इच्छा रखना पाप है। क्या संतान की इच्छा रखना मेरे लिए अनुचित है? हे भगवान, आपने मेरे जीवन को कैसी उलझी हुई गांठों में जकड़ दिया है? और किसलिए? वह मन ही मन प्रार्थना करती।

दो महीने में वह मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ी हो पाती और घर में चल पाती। शाम को वह बाहर करीब एक फर्लांग (लगभग 10 किमी/घंटा) टहलने जाती। पृथ्वी ने अपनी हाई स्कूल की अंतिम वर्ष की परीक्षाएँ दे दी थीं। जब उसका मन करता, वह उसे घर पर पढ़ाती। इस तरह धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा। एक महीने बाद उसे

अपने शिक्षण कार्य पर लौटना पड़ा। उसके शरीर में शक्ति आ रही थी। हालाँकि चलते समय उसे थकान महसूस होती थी, फिर भी उसके शरीर की पहले जैसी आकर्षक बनावट साफ झलक रही थी। हालाँकि स्वास्थ्य की चुस्ती-फुर्ती पहले जैसी नहीं थी, फिर भी उसकी कोमल त्वचा उसे एक अलग ही आभा देती थी। हालाँकि चलते समय उसके पैरों में खून का प्रवाह पहले जैसा नहीं था, फिर भी उनकी कोमलता आकर्षक थी।
एक दिन जब वे अकेले थे, राजा ने उससे पूछा, 'आजकल तुम्हारी ताकत बढ़ रही है, है ना?' उसके कहने के तरीके को समझकर और उसमें छिपे इशारे को भांपकर उसने राजा की गर्दन में बाहें डाल दीं और बोली, 'क्या तुम इन दिनों निराश थे?'
नहीं।
'मैं समझ सकती हूँ। झूठ मत बोलो।' उसकी आँखों में देखते हुए उसने कहा, 'मुझसे शादी करने के लिए तुम्हें ये सब सहना पड़ा।' कुछ देर तक कोई नहीं बोला। आखिरकार उसने पूछा, 'क्या डॉक्टर ने सचमुच ऐसा कहा था?'
'क्या?'
'क्या आप गर्भनिरोधक सर्जरी करवाएंगी?'
'हां। पूछने की क्या जरूरत है?'
'तुम्हारे बजाय, मैं ही क्यों न यह प्रक्रिया करवा लूं?'
'इसमें ज्यादा फर्क नहीं है।' उसकी आवाज एकदम धीमी हो गई थी।
अगले दिन वह उनके साथ अस्पताल गई। उनकी बात सुनकर महिला डॉक्टर ने कहा, 'मेरी राय में, आपके पति का ऑपरेशन करवाना बेहतर होगा। पिछले पांच महीनों में आप बीमारी से पूरी तरह उबर नहीं पाई हैं। सर्जरी करवाने के लिए आवश्यक शारीरिक शक्ति प्राप्त करने के लिए आपको दो या तीन साल और आराम करना होगा।'
जब डॉक्टर के क्लिनिक से निकलते समय उसने यह बात अपने पति को बताई, तो राजा ने कुछ नहीं कहा। उसके मन में निराशा का कारण केवल गर्भनिरोधक सर्जरी के बिना उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने की असंभवता ही नहीं थी। बल्कि संतानहीनता को स्वीकार करने का उसका भाग्य ही था। दस साल पहले अगर कोई उसे संतानहीनता से व्याकुल दंपति के बारे में बताता, तो वह इसे हंसी में उड़ा देता। तब वह इसे अत्यधिक भावुकता समझता था। लेकिन उसे बच्चे बहुत प्रिय थे। वह पृथ्वी के साथ खुशी-खुशी खेलता था। उसका मानना था कि ऐसी खुशी केवल बच्चों से ही नहीं मिल सकती; कोई भी बच्चा चलेगा। तो फिर यह जानकर उसका मन इतना उदास क्यों हो

गया कि उसकी पत्नी अब संतान उत्पन्न नहीं कर सकती? उसकी अज्ञानता उसकी समझ से परे थी। कभी-कभी उसका मन अपनी पत्नी के साथ शारीरिक संबंध बनाने का करता, लेकिन परिणाम के डर से वह खुद को रोक लेता था।

कात्यायनी अपने पति की दुर्दशा को भलीभांति समझ सकती थी। पर वह क्या कर सकती थी? एक दिन उसने कहा, 'डॉक्टर की बात हमेशा सच नहीं होती। आप चिंता न करें।' उसके पति ने उसे यह कहकर टाल दिया, 'मैं आपकी सेहत को नुकसान पहुँचाने के बारे में भली-भांति जानता हूँ।' एक पल के लिए कात्यायनी चिंतित और संशय में पड़ गई... कहीं वह संतान पैदा करने के लिए किसी दूसरी स्त्री से विवाह करने के बारे में सोच भी न ले! वह सोचने लगी कि क्या कोई स्त्री मातृत्व के अधिकार को छोड़कर केवल वैवाहिक अधिकार पर ही अडिग रह सकती है। निराशा छा गई। एक दिन उसने सोचा कि अगर ऐसा हुआ तो उसका क्या होगा। तभी वह बस रोने लगी।

राजा पृथ्वी के साथ बैठक कक्ष में सोए। परीक्षा की तैयारी में डूबा हुआ वह लड़का रात 11 बजे तक मेहनत करता रहा और नींद में बीजगणित के सूत्र बुदबुदाता रहता था। एक बार राजा ने अपना हाथ उसके गाल पर रखकर कहा, 'सो जाओ बेटा।' लड़के ने बुदबुदाना बंद कर दिया; उसकी नींद में कोई खलल नहीं पड़ा। राजा उसके और करीब गए और उसकी दाहिनी बांह से उसे गले लगा लिया। लड़का आराम से सोता रहा। पूरी रात राजा ने उसे इसी तरह पकड़े रखा। पूरी रात वह विचारों में डूबे रहे। भतीजा होने के बावजूद, पृथ्वी अपने पिता से भी ज़्यादा मुझसे सजग है। अब मेरे संतानोत्पत्ति की कोई संभावना नहीं! क्या मैं अब ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता? मैं अब 37 साल का हो गया हूँ। मेरी जवानी ढल चुकी है और जल्द ही मैं अधेड़ हो जाऊँगा। मुझे वैवाहिक सुखों के लिए और कितने साल तरसना पड़ेगा? जब संतानोत्पत्ति की कोई संभावना ही नहीं है, तो सर्जरी द्वारा कृत्रिम शारीरिक मिलन का क्या आकर्षण है? किसी सर्जरी की कोई ज़रूरत नहीं। मैं ब्रह्मचर्य का जीवन अपनाऊँगा। मैं पृथ्वी के साथ प्रतिदिन यहीं सेवानिवृत्त होऊंगा। यह निर्णय लेकर उसने कात्यायनी को बताया। वह चुप रही।

लेकिन दो दिनों में ही उनका संकल्प कमजोर पड़ गया। अपनी स्वाभाविक इच्छाओं पर काबू पाने की उनकी क्षमता पर से उनका विश्वास डगमगा गया। जब उन्हें लगा कि ब्रह्मचर्य उनके बस की बात नहीं है, तो उन्होंने अपना अंतिम निर्णय ले लिया। अगले दिन वे अपनी पत्नी के लिए चिकित्सा प्रमाण पत्र लेने महिला डॉक्टर के पास गए। फिर वे पुरुष वार्ड में सर्जन से मिलने गए। ऑपरेशन बिल्कुल भी दर्दनाक नहीं था; फिर भी

उनकी आँखों में आँसू आ गए। जब उनके अस्तित्व का मूल आधार ही छिन गया, तो कोई भी बौद्धिक स्पष्टीकरण उनके मानसिक कष्ट को दूर नहीं कर सका।
जब राजा अस्पताल से लौटा, तो पति-पत्नी ने एक-दूसरे को गले लगाया और खामोशी में डूब गए। कात्यायनी की आँखों से आँसू बह रहे थे। राजा उसे शांत नहीं कर पा रहा था। वह इतने गहरे दुख में डूबा हुआ था कि उसकी आँखों में आँसू तक नहीं आ रहे थे।

अध्याय 18

1

इन्हीं आठ वर्षों ने श्रोत्री के मन को पहले से कहीं अधिक एकाकी बना दिया था। लगभग सत्तर वर्ष की आयु में, उन्हें पारिवारिक मामलों में कोई रुचि नहीं थी। यह सिलसिला बहुत पहले तब शुरू हुआ जब उन्होंने अपने पुत्र का विवाह किया और उसे सभी पारिवारिक कार्यों में दीक्षित किया। पुत्र की असमय मृत्यु के बाद, उन्हें फिर से उन्हीं सब कामों में लौटना पड़ा। दो वर्ष बाद, उन्होंने अपनी बहू को गृहस्थी कार्यों में दीक्षित किया और कुछ वर्षों में उसके पूर्णतः कार्यभार संभालने की आशा की। उनकी बहू के घर छोड़कर चले जाने से उनकी यह आशा फिर से टूट गई और उन्हें एक बार फिर सांसारिक कार्यों में लौटना पड़ा। यद्यपि वे जानते थे कि उनका अगला संन्यास तब तक टल जाएगा जब तक उनका पोता बड़ा होकर गृहस्थी कार्यों में दीक्षित नहीं हो जाता और उसका विवाह नहीं हो जाता, फिर भी कम से कम वे मन ही मन सब कुछ से विरक्त रहेंगे। उन्होंने हर चीज में अनासक्ति और निस्वार्थता का भाव विकसित किया। कई बार तो उन्होंने संन्यास लेने की इच्छा भी की। इतने वर्षों का जीवन व्यतीत करने और अपने सभी दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करने के बाद, गृहस्थी और परिवार के बंधनों से मुक्त होकर ईश्वर का ध्यान करने में अपना शेष जीवन व्यतीत करने की उनकी आकांक्षा प्रबल होती चली गई। हाल ही में, उन्होंने संन्यासियों के मार्ग-निर्देशों का वर्णन करने वाले अनेक ग्रंथों का अध्ययन करना शुरू कर दिया था। वे संन्यासोपनिषद, वैखानससूत्र, धर्मसिंधु, जीवनमुक्तिविवेक और ऐसे ही अन्य ग्रंथों में वर्णित संन्यासी के लक्ष्यों और उद्देश्यों का स्मरण करने लगे थे।
वह जानता था कि वर्तमान परिस्थिति में परिवार को त्यागकर संन्यास लेना अधर्म है। वह इस बात से भी अनभिज्ञ नहीं था कि संन्यास लेने से पहले आश्रितों को आर्थिक स्थिरता प्रदान करना आवश्यक है, और इस परिवर्तन के लिए सगे-संबंधियों और पत्नी (यदि जीवित हों) की अनुमति लेनी चाहिए। पोता, जो परिवार का नाम आगे बढ़ाने वाला था, अब 13 वर्ष का था। उसके द्वारा यह जिम्मेदारी संभालने में कम से कम आठ वर्ष शेष थे। वर्तमान परिस्थिति में साठ वर्ष की पत्नी से ऐसी अनुमति की अपेक्षा करना भी अनुचित था। इसलिए वह बार-बार वर्तमान स्थिति को स्वीकार करता। यद्यपि उसका

मन संन्यास की इच्छा रखता था, वह इसके लिए पागल नहीं होता। वह जानता था कि संन्यास की इच्छा अन्य इच्छाओं के समान ही है, और किसी इच्छा के पीछे भागने से मन में असंतुलन उत्पन्न होता है, जो अत्यंत हानिकारक है। संन्यास का अर्थ है अनासक्ति और समभाव। वह त्याग की इच्छा को नियंत्रित करने के प्रति सचेत थे, क्योंकि उनका मानना था कि त्याग की लालसा से उत्पन्न मन की विकृति वास्तव में तपस्वी जीवन शैली अपनाने के लिए अयोग्यता थी।

जिस शैक्षणिक वर्ष में उनकी बहू ने घर छोड़ा, उसी वर्ष से उन्होंने चीनी का सरकारी प्राथमिक विद्यालय में दाखिला करवा दिया और उसके तुरंत बाद उसका चूड़ाकर्म संस्कार करवाया। भागीरथम्मा उस संस्कार को भव्य तरीके से संपन्न करना चाहती थीं। लेकिन बहू के व्यवहार से उनकी इच्छा अधूरी रह गई। फिर भी उन्होंने पूरे एक दिन तक विधिपूर्वक संस्कार संपन्न किया। उन्होंने आठ वर्ष की आयु में उसका उपनयन संस्कार निर्धारित किया। भागीरथम्मा ने उस संस्कार में पूरे उत्साह से भाग लिया। श्रोत्री को भव्यता में कोई रुचि नहीं थी, लेकिन उन्होंने उनकी इच्छा का उल्लंघन नहीं किया। उनकी बस यही इच्छा थी कि बालक गायत्री मंत्र का जाप करने, दिन में तीन बार संध्यावंदन करने और वेदों का अध्ययन करने का पात्र बने। शुभ दिन पर, श्रोत्री ने स्वयं अपने पोते को अपनी गोद में बैठाया और धोती की ओट में, उसके कानों में धीरे से गायत्री मंत्र का उच्चारण करके उसे धार्मिक शिक्षा दी। भागीरथम्मा ने सबसे पहले अपने चांदी के कटोरे में दाना परोसा। माथे पर चंदन का लेप और कमर पर हलाफा घास की कमरबंद बांधे हुए, चीनी ने हल्दी से रंगी धोती पहनी और अपनी दादी और अन्य महिलाओं से दाना ग्रहण करते हुए औपचारिक रूप से अपने वंश का वर्णन किया: मैं, श्री श्रीनिवास श्रोत्री, काश्यप-आवत्सर-नैधृव त्रयी के काश्यप-गोत्र से संबंधित, आश्वलायन सिद्धांतों का पालन करने वाला और ऋग्वेद का अनुयायी, आपके समक्ष नतमस्तक होता हूँ। यह देखकर श्रोत्री को अपने वंश, परंपरा, सिद्धांतों, वेदों आदि के प्रमाण पर गर्व महसूस हुआ। नवजात शिशु का नामकरण करके अपने दादा के नाम पर वंश परंपरा का सम्मान करने की प्रथा ने उन्हें आत्मसम्मान से भर दिया।

अगले ही दिन से उन्होंने उस बालक को नियमित संध्यावंदन और होम का प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। संस्कृत का अध्ययन पहले से ही किया जा चुका था, इसलिए वह मंत्रों का उच्चारण स्पष्ट रूप से कर सकता था। हर शाम वे उसे वेद मंत्रों का पाठ करवाते ताकि वह उन्हें याद कर ले, और साथ ही उनका अर्थ भी समझाते। इतनी अधिक उम्र में भी श्रोत्री का एक भी दांत नहीं टूटा था। वेद मंत्र उनके मुख से अत्यंत

स्पष्ट रूप से निकलते थे। चीनी एक मेहनती छात्र था; वह अपने विद्यालय में भी उत्कृष्ट था।

हाल ही में भागीरथम्मा की तबीयत ठीक नहीं थी। उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो गई थी। बहू के चले जाने से उनकी सारी उम्मीदें टूट गई थीं। अब वह बैठक के निचले तल पर सोती थीं। उनके बिस्तर के पास चीनी सोता था, और उसके बगल में लक्ष्मी। आगे एक चारपाई पर श्रोत्री सोती थी। भागीरथम्मा अपनी बहू को याद करती रहती थीं। इस उम्र में उनकी बहू को घर के कामों की ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए थी। उसे चीनी को पढ़ाना चाहिए था, जिसने अंग्रेज़ी पढ़ना शुरू कर दिया था। उसे घर के खर्चे और आमदनी संभालनी चाहिए थी। वह क्रोधित हो जातीं और प्रार्थना करतीं कि भगवान उनकी बहू को इन सभी ज़िम्मेदारियों को छोड़ने के दंड स्वरूप जीवन में मुक्ति न दें। वह इस बारे में लक्ष्मी से बात करतीं। लेकिन पास में सो रहे उनके पति बीच में टोकते हुए पूछते, 'क्या लड़का सो गया है?'

‘हां। पूछने की क्या जरूरत है?’

‘जो हो गया सो हो गया। मुझे कितनी बार कहना पड़ेगा कि आप उस पर दोबारा विचार न करें? हमें ईश्वर द्वारा दूसरों पर कृपा या विपत्ति डालने के कार्य पर बहस क्यों करनी चाहिए? यदि आप इस तरह चर्चा करते रहेंगे, तो इससे उस लड़के को अपनी माँ के बारे में क्या संकेत मिलेंगे? आपको व्यर्थ की बहसें नहीं छेड़नी चाहिए।’

भागीरथम्मा चुप हो जातीं। शीनप्पा की बातें लक्ष्मी को अच्छी लगतीं। हालाँकि भागीरथम्मा जानती थीं कि उनके पति की बातें सही हैं, फिर भी जब उनका मन असहनीय रूप से व्याकुल होता, तो वे लक्ष्मी से अकेले में इन बातों पर चर्चा करतीं। लक्ष्मी उनकी पीड़ा को भली-भांति समझ सकती थीं। न तो बहस में सक्रिय रूप से भाग लेतीं और न ही उसका विरोध करतीं, वे बस समझदारी भरे शब्द बुदबुदातीं। लगभग आधे घंटे के इस तरह के मौन से भागीरथम्मा को अपने दबे हुए दुखों से राहत मिलती। इसके बाद वे लगभग एक सप्ताह तक शांत रहतीं।

2

चीनी के उपनयन संस्कार के पाँच वर्ष बाद, उन्होंने माध्यमिक विद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे पढ़ाई में अच्छे थे। स्कूल जाने से पहले वे विशेष रूप से धुली हुई धोती पहनते थे और प्रतिदिन नदी से पीने के पानी के दो घड़े लाते थे। उनकी दादी अब

पहले जितनी स्वस्थ नहीं थीं। उनके विपरीत, उनके दादाजी अपनी उम्र के हिसाब से भी स्वस्थ और तंदुरुस्त थे। 70 वर्ष की आयु में भी उनकी दृष्टि अच्छी थी। वे बिना चश्मे के पढ़ सकते थे। उनके हाथ-पैर मजबूत थे और वे दृढ़ता से चलते थे। उनका एक भी दांत टूटा नहीं था।

तेरह साल का होने के बावजूद, चीनी अपनी नानी के साथ सोता था। स्कूल और दादाजी के साथ ट्यूशन के समय को छोड़कर, वह अपना सारा खाली समय नानी के साथ बिताता था। उसकी नानी के साथ ही उसकी दोस्ती, आत्मीयता और उसकी उम्र के हिसाब से स्वाभाविक भावनाएँ जुड़ी हुई थीं। नानी उसे शहर की हर बात बताती थीं, जिससे वह बच्चा खुश हो जाता था। वह पूछता, 'नानी, श्रीपादराव घर की वासंती हमेशा मेरे लिए बिस्कुट क्यों लाती हैं?' हालांकि दादी के मन में इसका जवाब आ जाता, लेकिन वह बस इतना कहतीं, 'तुम तो बहुत दिनों से उनके लाडले हो।' कभी-कभी वह पूछता, 'कहते हैं कि चक्रपाणियों के पूजा कक्ष में चांदी के सिक्के दफन हैं। क्या यह सच है, नानी?' नानी जवाब देतीं, 'कहते हैं कि परशुराम मंदिर परिसर में सोने के सिक्कों के सात पात्र दफन हैं, और एक सात फन वाला सांप उसकी रखवाली करता है।' है ना दादी?' 'पिछले हफ्ते जब मैं हेज्जिगे गया था, तो उन्होंने मुझे मुट्ठी भर मक्खन और आधा टुकड़ा गुड़ खाने को दिया था। क्या वे लोग रोज़ इतना मक्खन खाते हैं, दादी?' दादी न केवल इन सभी सवालों के संतोषजनक जवाब देतीं, बल्कि उनके साथ कई रोचक बातें भी साझा करतीं।

चीनी को अपने पिता की मृत्यु के बारे में पता था, क्योंकि वह हर साल उनके अंतिम संस्कार करते थे। उनके दादाजी भी हर साल अपने (वरिष्ठ श्रोत्री के) पिता और माता के अंतिम संस्कार करते थे। लेकिन चीनी केवल अपने पिता के अंतिम संस्कार करते थे। उनकी माता कहाँ थीं? एक दिन जब उन्होंने अपनी दादी से पूछा, तो उन्होंने कहा कि वह अपने मायके चली गई हैं। 'क्यों?' चीनी ने पूछा। 'अरे, कभी मत पूछो, बच्चे,' उन्होंने रूखेपन से कहा। हालाँकि उन्हें वह महिला स्पष्ट रूप से याद थी जिसे वह मुंडन से पहले 'माँ' कहकर पुकारते थे, उन्होंने इस बारे में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। लेकिन एक दिन जब स्कूल में उनका अपने एक दोस्त से झगड़ा हो गया, तो उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, 'तुम तो ऐसे हो जिसकी माँ किसी आदमी के साथ भाग गई है।' घर लौटकर चीनी ने अपनी दादी से पूछा, 'मोहल्ले की नानी ने मुझे बताया कि मेरी माँ किसी आदमी के साथ भाग गई है।' "क्या ये सच है, दादी?" उसकी दादी ने उसे डांटते हुए कहा, "अगर कोई शरारती बच्चा ऐसा कहे तो क्या तुम्हें भी वही बातें कहनी

चाहिए? तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।" इसके बाद उसने न सिर्फ किसी से इस बारे में पूछा, बल्कि उसने इसे अपने दिमाग से भी मिटा दिया, यह सोचकर कि अगर उसकी प्यारी दादी को उसे इस तरह डांटना पड़ा, तो इस बारे में सोचना भी गलत था।

मिडिल स्कूल की ग्रेजुएशन परीक्षा अभी-अभी समाप्त हुई थी। शिक्षक ने कहा कि चीनी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होगा। छुट्टियों के बाद उसे हाई स्कूल में दाखिला लेना था। वह हाई स्कूल का छात्र बनने को लेकर बहुत खुश था। लगभग उसी समय, उसकी दादी बीमार पड़ गईं। आजकल, वह हर दूसरे महीने बीमार पड़ जाती थीं। श्रोत्री खाना बनाने का काम संभालता था। आमतौर पर, वह कुछ ही दिनों में ठीक हो जाती थीं। लेकिन इस बार, कई दिनों तक घर में बने काढ़े से दवा पिलाने के बाद भी वह ठीक नहीं हुईं। जब पंडित जी को बुलाया गया, तो बताया गया कि पंडित जी बाहर गए हुए हैं और एक महीने तक नहीं लौटेंगे। बुजुर्ग महिला का बुखार बढ़ गया। उनके शरीर के सभी अंगों में दर्द होने लगा। श्रोत्री ने कुछ दवा तैयार की जो उसे पता थी, और उन्हें दी। हालांकि, वह काफी होश में थीं। पहले तो उसने इसे टाइफाइड समझा था, लेकिन अब वह इतना निश्चित नहीं था। अगले दिन से, उन्होंने पिया हुआ दूध भी उल्टी कर दिया। 'पंडित जी उपलब्ध नहीं हैं। मैं सरकारी डॉक्टर को बुलाता हूँ,' श्रोत्री ने कहा। 'मैंने इतने सालों तक सब कुछ संभाला है। मुझे नहीं पता वो अंग्रेजी दवा किस चीज से बनी है। मैं उसे बिल्कुल नहीं लूंगी,' भागीरथम्मा ने विरोध करते हुए कहा। और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि श्रोत्री पूरे दिन घर से बाहर न निकलें।

लेकिन उस रात, वह बेहोश हो गई। श्रोत्री घबरा गया। लक्ष्मी जल्दी से सरकारी डॉक्टर को बुला लाई। डॉक्टर ने कहा, 'तुमने बहुत देर कर दी,' उसे एक इंजेक्शन दिया और किसी को अस्पताल से दवाइयां लाने के लिए भेजने को कहा। चीनी डॉक्टर के साथ गया और दवाइयां ले आया। लेकिन जब तरल दवा का एक चम्मच उसके होठों से लगाया गया, तो उसने अपना मुंह नहीं खोला। बेहोशी की हालत में भी अस्पताल की दवाइयों के प्रति उसके प्रतिरोध को देखकर, श्रोत्री ने खुद को जांचा। तीन और दिन बीत गए। एक रात सब पूरी तरह जागते रहे। श्रोत्री और लक्ष्मी ने कहा, 'तुम सो जाओ बच्ची,' लेकिन चीनी नहीं सोया। उसका चेहरा उदास था। लक्ष्मी के चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी। श्रोत्री मानसिक रूप से अपने जीवन के अगले चरण के लिए तैयार हो रहा था। उनके 50 वर्षों का पारिवारिक जीवन उनकी स्मृति में कौंध गया: विवाह, निःसंतानता का दर्द, अंततः नंजुंडा का जन्म, पत्नी के प्रस्ताव पर लक्ष्मी के साथ संभोग से दृढ़तापूर्वक दूर रहकर अपनाए गए ब्रह्मचर्य का जीवन, नंजुंडा की मृत्यु, बहू का जाना,

और उसके बाद भागीरथम्मा द्वारा चीनी की बड़े प्रेम और स्नेह से देखभाल करना। भागीरथम्मा एक सौम्य स्वभाव की महिला थीं। उन्होंने कभी किसी पर कलंक नहीं लगाया। उन्होंने यथासंभव दूसरों की सहायता की। लेकिन उन्होंने क्रोध पर पूर्ण विजय प्राप्त नहीं की थी। लेकिन भला, हर कोई परिपूर्ण नहीं होता, श्रोत्री ने स्वयं से कहा। बिस्तर पर पड़े रहने तक उन्होंने अपने पति की जरूरतों का पूरी निष्ठा से ध्यान रखा। उन्होंने श्रोत्री के धार्मिक कार्यों में पूर्ण सहयोग दिया। श्रोत्री एक समर्पित पत्नी के कर्तव्यों के निर्वहन में उनकी प्रतिबद्धता की सराहना करते थे।

लगभग आधी रात को, भगीरथम्मा बेहोशी की हालत में कुछ बुदबुदाईं, 'बच्ची का क्या होता...अगर वो यहाँ होती...अगर चीनी की शादी अब तक हो गई होती...' चीनी ने अपनी दादी की बुदबुदाहट सुनी और डर गया, लेकिन वह उनके शब्दों का पूरा अर्थ नहीं समझ पाया। लक्ष्मी ने एक बार श्रोत्री की ओर देखा। उसने भी मौन होकर नज़रें मिलाईं। वह समझ गया कि रोगी का अंतर्मन अपनी आसन्न मृत्यु से अवगत था।

अगले दिन डॉक्टर फिर आए और उन्हें इंजेक्शन लगाया। तब तक उनकी सांसें अनियमित हो चुकी थीं। 'अब वह कैसी हैं?' श्रोत्री ने पूछा। डॉक्टर ने बस इतना ही कहा, 'मैंने अपनी पूरी कोशिश की है।'

डॉक्टर के प्रयास व्यर्थ रहे। भागीरथम्मा का अगले दिन सुबह 5 बजे निधन हो गया। इससे कुछ ही समय पहले, उनकी अनियमित साँसों से श्रोत्री को पता चल गया था कि वे ज्यादा देर तक जीवित नहीं रहेंगी। उन्होंने पड़ोसियों को सूचना नहीं भेजी। उस रात, चीनी सो गई। श्रोत्री पूजा कक्ष में गए, गंगाजल से भरे एक सीलबंद पात्र को खोला, उनके होंठ खोले और एक चम्मच पानी उनके मुँह में डाला। गंगाजल उनके शरीर में समा गया। आधे घंटे बाद, उन्होंने अंतिम साँस ली। उनकी मृत्यु को और भी सुनिश्चित करते हुए, जब श्रोत्री ने अपनी उंगलियाँ उनकी नाक के नीचे से हटाईं, तो लक्ष्मी फूट-फूटकर रोने लगीं। 45 वर्षों तक भागीरथम्मा ने उन्हें भोजन दिया था, अपने सुख-दुख उनसे इस तरह साझा किए थे जैसे वे उनकी सबसे अच्छी सहेली हों। उन्होंने विधवा लक्ष्मी को अपने पति श्रोत्री के साथ वैवाहिक संबंध बनाने की सलाह दी थी। बाद में, जब श्रोत्री ने उन्हें हेज्जिगे में दो एकड़ ज़मीन भेंट की, तो भागीरथम्मा ने खुशी-खुशी स्वीकार कर ली। अब उनका जीवन समाप्त हो चुका था। श्रोत्री परिवार में लक्ष्मी की ज़िम्मेदारियाँ अब और भी बढ़ जाएँगी। वह फूट-फूटकर रो रही थीं। यह देखकर श्रोत्री ने कहा, 'यह क्या है, लक्ष्मी? इतने दिनों से तुम तीर्थ ग्रहण कर रही हो, गाय की पूजा कर रही हो। क्या तुम भूल गई हो कि मनुष्य को एक दिन मरना ही है?' लेकिन उनके शब्द पूरे होने से

पहले ही लक्ष्मी का दुःख और बढ़ गया। 'दुःख से कोई नहीं बच सकता। हम सबको इसे सहना ही पड़ता है,' वह रोते-रोते बीच-बीच में कहती रहीं। इससे चीनी अचानक जाग गया। जब उसने अपने दादाजी का चेहरा देखा, तो वह सब कुछ समझ गया। 'दादी!' वह अपनी दादी की छाती पर सिर रखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसकी दादी ने कुछ नहीं कहा। लक्ष्मी ने उसे गले लगा लिया।

श्रोत्री ने भोर होते ही अपने पड़ोसियों को यह खबर दी। उनमें से कुछ ने आपत्ति जताई: 'आप तो महान हैं। हम आप पर दोष नहीं लगा सकते। लेकिन आपने हमें पहले क्यों नहीं बताया? क्या हम आपके लिए अनभिज्ञ हो गए हैं? क्या आप हमें कल रात बुला नहीं सकते थे?' वे सब उनके घर की ओर दौड़ पड़े। दस मिनट के भीतर, घर के सामने रीति-रिवाज के अनुसार अंगारे रखे गए, जिससे राहगीरों को खबर मिली और आगंतुकों को भी खबर की पुष्टि हुई। बुजुर्ग श्रोत्री महिला के अंतिम दर्शन के लिए महिलाएं और बच्चे बड़ी संख्या में आए। लेकिन अंतिम संस्कार में कोई देरी नहीं हुई। शव को सुबह आठ बजे ले जाया गया। रीति-रिवाज के अनुसार अपनी दादी के मुंह में चावल के कुछ दाने डालते समय, चीनी का सिर चकरा गया और वह बेहोश हो गया। वहां जमा सभी लोग बच्चे की हालत देखकर रो पड़े। एक बार फिर, लक्ष्मी उसके पास आईं और उसे उठा लिया।

मृत्यु के सातवें दिन से शुरू होकर, परंपरा के अनुसार भागीरथम्मा के अंतिम संस्कार किए गए, जिसके तहत पर्याप्त दान दिया गया।

श्रोत्री परिवार की दिनचर्या अब बदल गई थी। श्रोत्री तो हमेशा की तरह समय पर उठते थे, लेकिन पूजा-अर्चना में पहले जैसी तत्परता नहीं बरतते थे। पूजा जल्दी समाप्त करके वे सुबह 6 बजे तक रसोई में काम करने लगते थे। चीनी भी जल्दी उठ जाते थे और जब तक वे स्नान करके संध्यावंदन करते, दादाजी उन्हें दूध का गिलास थमा देते थे। हाई स्कूल में पढ़ने वाले चीनी सुबह पढ़ाई करते थे और सुबह 9:30 बजे नाश्ता करते थे। नाश्ता करने के बाद श्रोत्री लक्ष्मी को नाश्ता परोसते और फिर खुद नाश्ता करते। इसके बाद लक्ष्मी बर्तन साफ करती थीं। उन्होंने एक नौकर रखा हुआ था जो पशुओं को चराता, झाड़ू लगाता और ऐसे ही दूसरे काम करता था। शाम को चीनी हमेशा की तरह वेदों की शिक्षा लेते थे। हालांकि श्रोत्री रविवार को अपने पोते को खेलने के लिए भेजते थे, लेकिन वह जल्दी लौटकर दादाजी की मदद करने लगते थे।

कभी-कभी चीनी अपनी दादी को याद करता था। स्कूल से लौटकर वह दादी से मिलने के लिए रसोई की ओर दौड़ता। रसोई में कोई न होने से वह वर्तमान में लौट आता और

निराश होकर वापस आ जाता। कभी-कभी वह रसोई में कुछ देर रुककर जी भर कर रोता। इससे उसे कुछ सुकून मिलता। एक रात नींद में ही वह 'दादी, दादी' बुदबुदाते हुए रोने लगा। श्रोत्री ने लक्ष्मी से कहा कि अब से चीनी का बिस्तर उसके बिस्तर के बगल में ही लगा दे; अब तक वह अपने दादाजी के बगल में सोता था। हालाँकि लक्ष्मी के प्रति उसके मन में स्नेह जागा, फिर भी दादी की यादें उसे परेशान करती रहीं। उसके चेहरे पर हमेशा रहने वाली मुस्कान अब कभी नहीं दिखी; उसकी जगह एक उदास गंभीरता छा गई। यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह सो रहा है, श्रोत्री लक्ष्मी से कुछ बातें करता। आमतौर पर बातचीत भागीरथम्मा के बारे में होती। फिर बात चीनी और उसके भविष्य पर आ जाती। ऐसा लग रहा था कि उन्होंने घर की भागी हुई बहू के बारे में चर्चा न करने का एक अलिखित समझौता कर लिया था। लक्ष्मी ने कहा, 'चीनी अब 14 साल की है। चार-पाँच साल में हम उसके लिए दुल्हन ले आएंगे। तब सब ठीक हो जाएगा।' श्रोत्री ने पूछा, 'क्या आधुनिक समय में इतनी कम उम्र में शादी करना ठीक है?' लक्ष्मी ने कहा, 'क्यों नहीं? आपकी शादी कितने साल की हुई थी? समय बदल सकता है, लेकिन हमारा बेटा हमारी बात मानेगा।' श्रोत्री ने सहमति जताते हुए कहा, 'बिल्कुल सही।'

अध्याय 19

1

कात्यायनी ने अपने मन को शांत रखने का भरसक प्रयास किया ताकि वह विचलित न हो। उसने यह नीति अपनाई कि वह बिना किसी कारण के एक मिनट भी अकेले नहीं रहेगी। वह प्रतिदिन अपने पति के साथ टहलने जाती। वे पहले से कहीं अधिक फिल्में देखने लगे। उसने घर के कामों में अधिक रुचि लेना शुरू कर दिया। उसने नागलक्ष्मी से पारंपरिक नाश्ता बनाना सीखा और समय-समय पर बनाती रहती। प्रत्येक शनिवार को वह नागलक्ष्मी के साथ भगवान राम की पूजा में शामिल होती। उसने गर्भपात किए गए तीन भ्रूणों को भुलाने का भरसक प्रयास किया, लेकिन वे उसकी स्मृति में बार-बार आ जाते थे। संतानोत्पत्ति की क्षमता खो देने की याद उसे अंदर तक झकझोर देती थी। और हर बार ऐसा होने पर चीनी उसके मन में आ जाता। वह इस वर्ष किस कक्षा में होगा? उसकी बौद्धिक क्षमता अब तक परिपक्व हो चुकी होगी, क्या वह अपनी माँ के बारे में सोचेगा? यदि वह अपनी माँ के बारे में पूछेगा, तो उसकी दादी का यह कहना कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी, 'तेरी माँ एक नीच स्त्री है।' वह किसी आदमी के साथ भाग गई। अगर भविष्य में कभी उसकी मुलाकात मुझसे हुई, तो क्या वह मुझे पहचान पाएगा? उसने मुझे आखिरी बार पाँच साल की उम्र में देखा था। उसे अपने दादा-दादी से भरपूर प्यार मिला है। वह मुझे क्यों पहचानेगा? अगर मेरा उससे परिचय कराया गया, तो उसका व्यवहार कैसा होगा? क्या पता वह मुझे माँ के प्यार और समर्पण के लायक न समझे! ये विचार उसके दिल को छलनी कर देते। वह इस बात को पूरी तरह से भुलाने की नाकाम कोशिश करती।

हाल ही में, पृथ्वी के प्रति उनका प्रेम और भी गहरा होता जा रहा था। वह अब इंटरमीडिएट प्रथम वर्ष में था। जब वह अपने पति के साथ टहलने जातीं, तो पृथ्वी के लिए कपड़े, खेलने के लिए बल्ला और गेंद खरीदतीं। वह इस बात का ध्यान रखतीं कि वह कॉलेज अच्छे कपड़े पहनकर जाए। वह उसे ट्यूशन भी पढ़ातीं। पृथ्वी भी अपनी चाची के प्रति प्रेम और स्नेह से पेश आता था, लेकिन यह एक प्रकार का आदर था, जिसकी जड़ में डर और संकोच छिपा था। कभी-कभी कात्यायनी उसे अरंडी का तेल लगातीं और नहलातीं। वह स्नानघर में दुबका बैठा रहता। जब वह उसकी पीठ रगड़तीं,

तो वह उनसे जितना हो सके दूर हट जाता, लेकिन वह उसे पास खींचकर अच्छी तरह से रगड़तीं।
गर्भनिरोधक सर्जरी के बाद राजा का सारा प्रेम पृथ्वी पर केंद्रित हो गया। उसने अपने पैसे रखने वाली तिजोरी की चाबियाँ भी उसे सौंप दीं। वह हमेशा उसके साथ दोपहर का भोजन और रात का भोजन करता था। अब वह उसे नाम से पुकारने के बजाय 'बच्चा' कहकर बुलाने लगा। कात्यायनी अपने पति की भावनाओं को भांप गई थी। उसे ज़रा भी ईर्ष्या नहीं थी। उसने तो इस मामले में उसके साथ तालमेल बिठाने की कोशिश भी की। वैसे भी वह अपने पति की अधूरी इच्छाओं के कारण दुखी थी।
हालांकि उन्होंने अपना सामान्य शिक्षण कार्य फिर से शुरू कर दिया था और नियमित रूप से टहलने भी जाती थीं, फिर भी शारीरिक रूप से वे पहले जैसी सक्षम नहीं थीं। उनका रंग पहले गुलाबी हुआ करता था, लेकिन गर्भपात के बाद से पीला पड़ गया था। शारीरिक स्वास्थ्य की पहचान मानी जाने वाली चमक और उमंग गायब हो गई थी। वे डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाइयाँ केवल राजा के लिए लेती थीं। डॉक्टर अक्सर उनसे कहते थे कि एक-दो महीने के लिए कहीं और जाना फायदेमंद होगा। उन्होंने आने वाली गर्मियों की छुट्टियों में कहीं जाने का फैसला किया। पहले उन्होंने नंदी के बारे में सोचा, लेकिन फिर उन्हें लगा कि दो पूरे महीने उसी छोटी सी जगह पर बिताना थका देने वाला होगा। इसी कारण उन्होंने केम्मनुगुंडी का विचार भी छोड़ दिया। राजा का एक शिष्य उदकमंडलम का था। उसने पूरे परिवार के ठहरने की इच्छा होने पर दो महीने के लिए पूरा घर किराए पर दिलाने की पेशकश की। छुट्टियों के लिए घर लौटने पर उसने राजा को एक नई बात की सूचना देने के लिए पत्र लिखा:
घर किराए पर लेने की भी ज़रूरत नहीं है। मेरे एक रिश्तेदार का परिवार एक साल के लिए विदेश चला गया है। उनके घर की चाबी मेरे पास है। बर्तन लाने की भी ज़रूरत नहीं है। दूध और अन्य दुग्ध उत्पाद आस-पास ही मिल जाते हैं। कृपया मुझे अपने आने की तारीख बता दीजिए। मैं आपको रेलवे स्टेशन पर मिल लूँगा।

नागलक्ष्मी ने उनसे आगे बढ़ने को कहा और बताया कि वह उनके साथ नहीं आएंगी। लेकिन वे अड़े रहे। राजा ने ज़िद की, 'दो महीने अकेले क्यों रहना? चलो बच्चे को भी साथ ले चलते हैं। अगर वह आसपास की जगहें देखेगा तो फुर्तीला हो जाएगा। तुम भी हमारे साथ आओ। तुम्हें नीलगिरि देखने को मिलेगा।' नागलक्ष्मी और कात्यायनी ने पर्याप्त मात्रा में करी पाउडर, चटनी आदि तैयार कर लीं। राजा ने अपने शिष्य को पत्र

लिखकर यात्रा की तारीख बताई। सारे कपड़े एक संदूक में भर दिए गए और दो बिस्तर पैक कर दिए गए। वे रात की यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार थे। एक चौकीदार भी नियुक्त किया गया था। उसी शाम कॉलेज से एक संदेशवाहक राजा से मिलने आया, लेकिन वह घर पर नहीं थे। उसने कात्यायनी को एक टेलीग्राम दिया और कहा, 'यह कल मिला था। इसमें "राजा राव" की जगह सिर्फ "राजा" लिखा था, इसलिए किसी को पता नहीं चला कि यह किसके लिए है। अभी-अभी लेखाकार ने बताया कि यह राजा राव के लिए हो सकता है और मुझे इसे उसी हिसाब से पहुंचाने को कहा है।' टेलीग्राम खोला गया। कात्यायनी ने उसे पढ़ा। पता स्पष्ट नहीं था, लेकिन उसमें लिखा था, 'आपके भाई और भाभी गंभीर रूप से बीमार हैं। उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। आप सभी तुरंत शुरू करें—सादर, रागप्पा।' संदेशवाहक चला गया। कात्यायनी राव और करुणा के भविष्य के बारे में सोच ही रही थी कि तभी राजा अंदर आया। राजा जानता था कि रागप्पा उसके भाई के घर में रसोइया का काम करता है।

राजा ने कहा, 'नीलगिरी जाने के बजाय, चलो हम सब रात की ट्रेन से मैसूर चलते हैं,' और कात्यायनी तुरंत मान गई। नागलक्ष्मी ने कहा, 'तुम दोनों जाओ।'

'टेलीग्राम में लिखा है कि उनकी हालत गंभीर है। और यह कल का है। इस बीच क्या हुआ होगा, इसका कोई अंदाजा नहीं। नागु, तुम्हें जिद्दी नहीं होना चाहिए। उनके चले जाने के बाद, अगर तुम उनकी सेवा करना चाहोगी भी तो क्या वह उपलब्ध रहेंगे?' राजा ने कहा। नागु पल भर में मान गई। उसने आंसू पोंछते हुए कहा, 'हां, मैं तुम्हारे साथ आऊंगी।'

'रात की ट्रेन कल सुबह ही पहुंचेगी। टैक्सी किराए पर ले लो। थोड़ा ज़्यादा किराया लगे तो कोई बात नहीं। हम आज रात 9 बजे तक वहाँ पहुँच जाएँगे,' कात्यायनी ने सुझाव दिया। राजा को यह सुझाव ठीक लगा।

उदकमंडलम के लिए जो सामान उन्होंने पैक किया था, वह उनके साथ मैसूर चला गया। टैक्सी अपनी मंज़िल की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी, तभी पीछे की सीट पर बैठी नागलक्ष्मी गहरी सोच में डूबी हुई थी। उसका मन अजीबोगरीब विचारों से भरा हुआ था। उसके पति ने एक पढ़ी-लिखी महिला से शादी कर ली थी और उससे अलग हो गए थे, इस बात को दस साल से ज़्यादा हो गए थे। उस शादी के शुरुआती दिनों में, वह कभी-कभार इस घर में आते थे और उससे बात करने की कोशिश करते थे। वह गुस्से से मुंह फेर लेती थी। आखिरकार, उन्होंने आना बंद कर दिया था। ये सब बातें उसके दिमाग में घूम रही थीं। उसने पहले सोचा था कि उसने बिना उसकी किसी गलती के

दोबारा शादी कर ली है। जब भी कोई किताब छपती थी, वह उसकी एक प्रति राजा को भेज देते थे, जिसने अपने कमरे में अलमारी पर करीने से ऐसी तीन किताबें रखी हुई थीं। वे काले रंग की और हार्डकवर थीं, और उन पर शीर्षक और उसके पति का नाम सुनहरे अक्षरों में छपा हुआ था। वह हमेशा सभी मेहमानों को उनकी रचनाएँ दिखाते और गर्व से कहते, 'यह मेरा भाई है।' यह सुनकर नागलक्ष्मी को भी इस बात पर गर्व होता कि लेखक उनका पति है। कभी-कभी राजा उन्हें अपनी नई पत्नी द्वारा दी गई अमूल्य सहायता के बारे में बताते। हालाँकि वह सुनती थीं, पर उन्होंने इसे अनसुना कर दिया। वह रामा की रचना में रटने में सब कुछ भूलने की कोशिश करती रहीं। एक निश्चित समय के बाद, उन्होंने अपने पति के कहने पर उनके साथ रहने के लिए हाँ कर दी थी। वह उन्हें कभी आमंत्रित करने नहीं आए; यहाँ तक कि उनसे मिलने भी नहीं। राजा बीच-बीच में मैसूर आते रहते थे। उन्हें पता था कि उनकी नई पत्नी उनकी अच्छी देखभाल करती हैं। तो फिर अब वह बीमार क्यों पड़ गए? अगर मैं वहाँ होती, तो मैं उनकी अच्छी देखभाल करती। उन्हें सप्ताह में एक बार तेल स्नान कराती। मैं उसी से संतुष्ट हो जाती। क्या पता हमारे वहाँ पहुँचने तक उन्हें कुछ हो जाए? इन विचारों से नागलक्ष्मी का हृदय काँप उठा। 'राम, जनकिराम, कृपया ध्यान रखें कि उसे कुछ भी विपत्ति न आए,' उसने मन ही मन प्रार्थना की।

पृथ्वी को अपने पिता को देखने की याद अच्छी तरह से थी। उनके बाल सफेद हो चुके थे और वे लाल फ्रेम का चश्मा पहनते थे। कहा जाता था कि उन्होंने अपनी माँ को त्यागकर एक किताब लिखने के लिए दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया था और वही उनकी शिष्या थीं। लेकिन उन्होंने माँ को क्यों छोड़ा? उनके मन में कॉलेज के लेक्चरर याद आ गए और वे उनकी तुलना अपने पिता से करने लगे। उन्होंने अपने चाचा को अपने दोस्तों से यह कहते सुना था कि उनका भाई एक महान विद्वान है और पूरे विश्वविद्यालय में उसके जैसा कोई नहीं है। इतना विद्वान दो स्त्रियों से विवाह क्यों करेगा? फिर भी, चाचा अपने भाई का बहुत सम्मान करते थे, इसलिए वह एक गुणी व्यक्ति ही होंगे। उनकी सेहत बिगड़ने से पहले उन्होंने हमें क्यों नहीं बुलाया? अगर हमारे पहुँचने तक कोई गंभीर घटना हो जाती तो क्या होता? वह इन विचारों से खुद को संभाल नहीं पा रहे थे। वे चुपचाप और उदास होकर तेज रफ्तार कार को अंधेरे को चीरते हुए आगे बढ़ते हुए देखते रहे।

जब टैक्सी सवा नौ बजे राव के घर पहुंची, तो वह बंद थी। उतरकर राजा पड़ोसी से कुछ पूछने ही वाला था कि तभी अचानक रागप्पा प्रकट हुआ, राजा को पहचान लिया, उसके

पास आया और बोला, 'अंदर आइए, अंदर आइए। मैं अभी अस्पताल से लौट रहा हूं। वे दोनों अस्पताल में हैं। दोनों बेहोश हैं। मैं बहुत चिंतित हूं।'
उसने घर का दरवाजा खोला और सामान अंदर रख दिया। घर में प्रवेश करते ही नागलक्ष्मी के मन में एक अजीब सा अहसास हुआ। यह एक ऐसा बंगला था जिसे वह जानती भी नहीं थी। अंदर जाते ही उसने देखा कि फर्नीचर उसके लिए अपरिचित था। सभी कमरों के दरवाजे खुले थे। चारों ओर किताबें बिखरी पड़ी थीं। एक तरफ पांडुलिपियाँ थीं, दूसरी तरफ एक मेज पर टाइपराइटर रखा था। एक और मेज पर उसकी किताब के तीन खंड रखे थे, जो उसके लिए एकमात्र परिचित वस्तुएँ थीं। घर की किसी भी दीवार पर भगवान या मनुष्य का चित्र नहीं था। सामने के आंगन में रंगोली का कोई निशान नहीं था। किसी भी दरवाजे पर आम के पत्तों की माला का कोई निशान नहीं था।
रागप्पा राजा के सवाल का जवाब दे रहे थे। “वह स्पेशल वार्ड में हैं। वह महिलाओं के स्पेशल वार्ड में हैं। अगर हम अभी भी जाएं तो वे हमें मिलने की इजाजत दे देंगे। डॉक्टर घर-घर जाकर मरीजों को देखते थे। यहां की हालत देखकर उन्होंने खुद ही सुझाव दिया कि उन्हें अस्पताल में भर्ती करा लिया जाए। मैं गया और बगल वाले मकान मालिक को सूचना दी। उन्होंने अस्पताल को फोन किया और सारी व्यवस्था कर दी। फिर वे उन्हें अपनी गाड़ी में बिठाकर अस्पताल ले गए। मैं वहां पूरे दिन रुका रहा। बगल वाले मकान मालिक आज भी अस्पताल गए थे।”
उन्होंने अभी तक टैक्सी नहीं ली थी। वे सभी रागप्पा के साथ टैक्सी में बैठकर अस्पताल के लिए निकल पड़े। राजा अपने साथ दो कालीन और दो कंबल ले गया। जब तक वे अस्पताल पहुँचे, डॉक्टर अपना राउंड पूरा कर चुके थे और विशेष वार्ड में केवल नर्स ही मौजूद थी। नर्स ने राजा को बताया कि डॉक्टर की अनुमति के बिना किसी को भी भर्ती नहीं किया जाएगा। राजा ने ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर से मुलाकात की और अपना परिचय दिया। 'दोनों मरीज बेहोश हैं। आपको बस वहीं आराम करना होगा। कृपया मेरे साथ आइए,' कहकर वह उन्हें वार्ड में ले गया। पुरुषों के वार्ड में, डॉ. राव एक पलंग पर लेटे हुए थे। बिस्तर सफेद था और उन्होंने खुद को लाल शॉल से ढका हुआ था। पलंग के पास की अलमारी में दवाइयाँ, फल आदि रखे थे। अलमारी पर मरीज की केस हिस्ट्री शीट लगी हुई थी। पलंग के नीचे एक कोने में पेशाब की बोतल रखी थी। प्रत्येक वार्ड में केवल एक ही मरीज था; वार्ड के दरवाजे के पास नर्स के लिए एक कुर्सी थी। राव का चेहरा दाढ़ी से ढका हुआ था। चश्मा न पहनने के कारण, बंद पलकें सफेद और बहुत

डरावनी लग रही थीं। बेहोशी की हालत में भी उनकी सांसें स्थिर थीं। नागलक्ष्मी और पृथ्वी को वहीं छोड़कर राजा कात्यायनी के साथ महिला वार्ड की ओर चल दिए।
नागलक्ष्मी अपने पति की हालत देखकर स्तब्ध रह गईं। राजा के वहां से चले जाने के बाद उनका रोना फूट पड़ा। वह खुद को रोक नहीं पाईं और फूट-फूटकर रोने लगीं। नर्स उनके पास आई और बोली, 'आपको रोना नहीं चाहिए। खुद को संभालिए। थोड़ी देर पहले वरिष्ठ डॉक्टर आए थे और उन्होंने उन्हें इंजेक्शन लगाया है। हो सकता है कि कल तक उन्हें होश आ जाए।' नागलक्ष्मी ने जब खुद को संभाला तो पूछा, 'आप उनके लिए क्या हैं?'
‘वह मेरे पति हैं।’
'महिला वार्ड में जो महिला है, क्या वह भी उसकी पत्नी नहीं है?'
'हाँ।'
“क्या आप उसके भाई के घर पर ठहरे हैं? जो आदमी यहाँ आया था, क्या वह आपका जीजा है? क्या आप सब बैंगलोर में रह रहे हैं? जिस प्रोफेसर ने उन्हें भर्ती कराया था, वह आज शाम यहाँ आया था। वह वरिष्ठ डॉक्टर को बता रहा था, “उसके भाई का परिवार बैंगलोर में है। हमने एक टेलीग्राम भेजा है। वे अभी तक नहीं आए हैं। वे जल्द ही आ जाएँगे।””
नर्स नागलक्ष्मी से दबी आवाज़ में बात कर रही थी। पृथ्वी मूक साक्षी बनकर खड़ा था।
जब राजा और कात्यायनी अंदर गए, तो करुणा को अभी-अभी होश आया था। लेकिन वह उन्हें पहचान नहीं पाई। डॉक्टर ने उन्हें मरीज़ से बात न करने का इशारा करते हुए कहा, “यहाँ फ्लू फैल गया था; अभी भी जारी है। ये दोनों भी प्रभावित हुए थे। उनके पारिवारिक डॉक्टर ने उनका सफलतापूर्वक इलाज किया है। इस स्थिति में पूर्ण और लंबे समय तक आराम की आवश्यकता है। इन दोनों ने इस निर्देश को अनसुना कर अपने शोध कार्य में लग गए। तीन दिन बाद, बुखार फिर से आ गया। अपने नियमित दौरे पर, पारिवारिक डॉक्टर ने उन्हें अर्ध-बेहोश पाया। अगर पड़ोस के प्रोफेसर उन्हें यहाँ न लाते, तो स्थिति गंभीर हो सकती थी। अब वे खतरे से बाहर हैं। आपके भाई को बस बेहोशी से बाहर आना है।” करुणा, जो गंभीर स्थिति में थी, अब ठीक होती हुई प्रतीत हो रही थी। बुखार की जलन ने उसकी आँखों की चमक को मिटा दिया था।
राजा ने कात्यायनी को एक कालीन और एक कंबल देकर उसे उस वार्ड में आराम करने को कहा और स्वयं अपने भाई के वार्ड में चला गया। उसने दूसरा कालीन और कंबल नागलक्ष्मी को दिया और उसे अपने पति के वार्ड में आराम करने को कहा। रात

के खाने का समय बीत चुका था। रागप्पा ने पूछा कि क्या वह घर जाकर चावल बना सकता है। नागलक्ष्मी ने मना कर दिया; राजा पृथ्वी और रागप्पा के साथ राव के घर के लिए निकल पड़ा।

2

नर्स के कहे अनुसार, राव भोर होते ही बेहोशी से बाहर आ गए। लेकिन वे लोगों को पहचानने और उनसे बात करने में तीन दिन बाद ही सक्षम हुए। डॉक्टर ने परिवार के सदस्यों को सख्ती से हिदायत दी थी कि कोई भी मरीज़ों से ज़्यादा बात न करे। नागलक्ष्मी और कात्यायनी हर सुबह स्नान और दोपहर के भोजन के लिए घर जाती थीं। रागप्पा उनके लिए रात का खाना अस्पताल लाते थे। पृथ्वी अस्पताल और घर के बीच आना-जाना करती रहती थी। राजा दोनों वार्डों में मरीज़ों की देखभाल करते थे।
एक दिन, जब राव को पूरी तरह होश आया, तो वह अपने सामने के लोगों को पहचान सका। लेकिन उसमें बोलने की ताकत नहीं थी। उसने आँखें घुमाईं और देखा कि नागलक्ष्मी सामने वाली दीवार के पास फर्श पर बैठी है। उसे विश्वास नहीं हुआ, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि बेहोशी के दौरान क्या हुआ होगा। नागलक्ष्मी को पता चल गया था कि राव ने उसे देख लिया है। वार्ड में कोई और नहीं था। नर्स ने भी निर्देश दिया था कि ज़रूरत पड़ने पर उसे बुलाए, और वह बगल वाले वार्ड में एक साथी नर्स से बात करने चली गई थी। नागलक्ष्मी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या बोले। हालाँकि उसे लग रहा था कि उसे उठकर राव के पास जाना चाहिए, फिर भी वह सिर झुकाए वहीं बैठी रही। लाख कोशिश करने के बावजूद, राव को अपना मुँह खोलना और अपनी आवाज़ निकालने के लिए ज़रूरी ताकत जुटाना मुश्किल लग रहा था। नागलक्ष्मी का मन शर्म, घबराहट, सहानुभूति, प्रेम और बदले की भावना के मिले-जुले भावों से व्याकुल था। एक भावना उसे एक तरफ खींच रही थी, तो दूसरी उतनी ही ताकत से उसे विपरीत दिशा में खींच रही थी। वास्तव में, ऐसे परस्पर विरोधी बलों के प्रभाव से वह सुस्त पड़ गई थी। मन के प्रभावों के आगे खुद को समर्पित करने के आधे घंटे बाद, उसके भीतर से एक आवाज़ आई जिसने उन सभी प्रभावों को पार कर लिया और उसका सिर ज़ोर से ऊपर उठा दिया। लेकिन तब तक रोगी ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। वह नींद में डूब रहा था।

नागलक्ष्मी उठीं, बिस्तर तक गईं और उनके पास खड़ी हो गईं। उन्होंने धीरे से अपना हाथ उनके कंधे पर रखा, झुककर लगभग पाँच मिनट तक उनके चेहरे को देखती रहीं। उनकी नींद अभी उतरी नहीं थी। बीच-बीच में उनकी साँसों की लय में एक स्पष्ट बदलाव आया, और ऐसा लगा जैसे वे नींद से जाग जाएँगे। उन्होंने तुरंत अपना हाथ हटा लिया, जल्दी से वापस आईं और सिर झुकाकर अपनी जगह पर बैठ गईं। उस दिन और अगले दिन भी, वह चोरी-छिपे उन्हें देखती रहीं। अगर वे उन्हें देख रहे होते, तो वह फिर से अपना सिर नीचे कर लेतीं।

अगली रात, वह हमेशा की तरह वार्ड में सो रही थी। वार्ड में एक हल्की रोशनी थी। ड्यूटी पर मौजूद नर्स दरवाजे के बाहर एक बड़ी कुर्सी पर बैठी ऊंघ रही थी। नागलक्ष्मी को नींद नहीं आ रही थी और वह बार-बार उठकर बैठ जाती थी। एक बार जब उसने अपने पति की ओर देखा, तो उसने पाया कि वह उसे ध्यान से देख रहे हैं। उसने अपना सिर फिर से नीचे कर लिया। उसने उन्हें धीमी आवाज़ में 'ना...गु...' कहते सुना। हालांकि उसका मन निश्चित नहीं था कि यह सच है या सिर्फ एक भ्रम, उसका दिल खुशी से भर गया। शर्म और घबराहट के कारण उसने अपना सिर झुकाए रखा। पांच मिनट बाद, वही धीमी आवाज़ फिर सुनाई दी, 'ना...गु...'। अब तक उसके मन में उमड़ रही सारी भावनाएं पिघल गईं। अनजाने में ही वह उनके बिस्तर के पास गई और उनके बगल में खड़ी हो गई। राव ने धीरे से अपना हाथ बढ़ाया। उसके दाहिने हाथ ने उत्सुकता से उनका हाथ थाम लिया। राव की आँखों में आँसू आ गए। वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसमें उसे शांत करने की ताकत नहीं थी। उसने खुद को संभाला और दो मिनट बाद झुककर अपना चेहरा उसकी छाती से ढक लिया। फिर उसने उसका हाथ पकड़ा और बिस्तर पर उसके पास बैठ गई। कोई कुछ नहीं बोला। एक के पास बोलने की शारीरिक शक्ति नहीं थी, और एक ऐसी भावना जो शब्दों से परे थी, उसने दूसरे की बोलने की इच्छा को खत्म कर दिया था। वह तब तक वहीं बैठी रही जब तक सुबह 3 बजे नर्स उसे दवा देने नहीं आई, लेकिन मरीज सो रहा था।

चार दिनों में राव में बोलने लायक ताकत तो आ गई थी, लेकिन डॉक्टर ने उन्हें बोलने से मना कर दिया था। उन्होंने नागलक्ष्मी को भी राव से बात न करने की चेतावनी दी थी। अब नागलक्ष्मी ने रोगी की सेवा में अपना समय देना शुरू कर दिया। वह नर्स से दवाइयाँ लेती और खुद ही उन्हें देती। पसीने से गंदे हुए राव के कपड़े उतारकर उन्हें नए कपड़े पहनाती। पेशाब की बोतल देती, उसे साफ करती और उसकी जगह पर रख देती। फलों का रस तैयार करती, उसमें ग्लूकोज मिलाती और राव को पिलाती। बीच-

बीच में, जब कोई आसपास नहीं होता, तो वह राव का हाथ पकड़कर चुपचाप बिस्तर के किनारे बैठ जाती। जब राव कुछ कहने की कोशिश करते, तो नागलक्ष्मी उनके मुँह पर हथेली रखकर उन्हें चुप करा देती। 'डॉक्टर ने सख्त हिदायत दी है। बात मत करो। इससे तुम्हें नुकसान हो सकता है।' जब डॉक्टर राव को देखने आते, तो वह उन्हें करुणा की हालत के बारे में बताते। 'वह आपसे ज्यादा तेजी से ठीक हो रही है। आप चिंता न करें।' राव को राहत मिलती।

एक दिन राव ने नागलक्ष्मी के हाथ पकड़े और रुंधे हुए स्वर में कहा, 'तुम मेरे लिए यहां आई हो!'

'तुम्हारे लिए? क्या मैंने कभी तुमसे झगड़ा किया है? सिर्फ इसलिए कि हमारी किस्मत ने हमें अलग कर दिया, क्या हमारा रिश्ता झूठा हो जाता है?' उसकी आवाज दुख से भरी हुई थी।

पांच मिनट की चुप्पी के बाद, राव ने कमजोर आवाज में कहा, 'राजा की पत्नी एक अच्छी महिला हैं। उन्होंने आपकी और पृथ्वी की अच्छी देखभाल की है, है ना?'

'हाँ।'

यह एक दिन की बातचीत का कोटा था। दो दिन बाद, जब पृथ्वी उस वार्ड में आया, तो उसके माता-पिता बातचीत में मशगूल थे। अंदर आते ही उसने अपना सिर झुका लिया, वह दुविधा में था। राव ने उसे पुकारा, 'इधर आओ, बेटा।' जब वह मान गया, तो राव ने अपने बेटे का हाथ पकड़कर पूछा, 'अब तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?'

जूनियर इंटरवल पूरा किया।

'अब तुम लंबे हो गए हो। क्या तुम्हें मैं अच्छी तरह याद हूँ?'

'हाँ।'

वह वहां पांच मिनट तक रुका और फिर चला गया।

एक और दिन, राव ने नागलक्ष्मी का हाथ पकड़कर कहा, 'नागु, मुझसे विवाह करके तुमने स्वयं को केवल कष्टों के हवाले कर दिया है।'

उसने कहा, 'ऐसा कुछ नहीं है।'

उन्होंने आगे कहा, 'मैं समझ सकता हूं।'

'तो फिर तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?' उसने पूछा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने आगे कहा, 'मैं वास्तव में कष्ट में नहीं हूँ। राजा पहले से कहीं अधिक प्यार और स्नेह से मेरी देखभाल करता है। कात्यायनी भी मेरी छोटी बहन की तरह व्यवहार करती है। लेकिन क्या यह तुम्हारे साथ रहने जैसा होगा? तुम मेरे साथ जो भी करो, मुझे वह

मानसिक शांति कहाँ से मिलेगी जो मुझे तुम्हारे लिए खाना बनाने, तुम्हें परोसने और तुम्हारी देखभाल करने से मिलती है?'
राव चुपचाप लेटा रहा। वह आगे बोलती रही, "तुमने उससे शादी कर ली। मान लो कि यह ईश्वर की इच्छा थी। अब भी मुझे उसके हमारे साथ रहने पर कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन तुम्हारी सेहत का ख्याल मेरे जैसा कौन रख सकता है? तुम्हारी आँखें सूज गई हैं। अगर मैं ढूँढ़ भी लूँ, तो तुम्हारे शरीर से एक मुट्ठी खून और एक मुट्ठी मांस भी नहीं निकाल पाऊँगी। तुम्हारी छाती धँस गई है। हालाँकि रागप्पा पूरी श्रद्धा से तुम्हारी सेवा करता है, लेकिन उसे खाना बनाना नहीं आता। क्या हम पिछले 15 दिनों से उसका बनाया खाना नहीं खा रहे हैं? अगर उसने अच्छा खाना बनाया होता, तो कम से कम तुम अच्छा खाते और तंदुरुस्त रहते। मैं तो तुम्हें हर हफ्ते तेल से स्नान भी कराती।" उसके चेहरे पर एक दयालु व्यक्ति की मासूम सी उपेक्षा झलक रही थी।
राव को नागलक्ष्मी द्वारा उनके स्वास्थ्य के लिए किए गए सभी काम याद आने लगे। वह उन्हें सप्ताह में एक बार बड़े चाव से अरंडी का तेल लगाती और गर्म पानी से नहलाती थीं। रात के खाने के बाद, जब वह आरामकुर्सी पर बैठकर पढ़ने लगते थे, तो नागलक्ष्मी उनके पैरों के पास फर्श पर बैठ जातीं और अरंडी के तेल से उनकी मालिश करतीं। वह हर दिन तरह-तरह की करी, कुछुआ, पापड़ आदि बनातीं और बार-बार उनकी थाली भरतीं। उनका स्वास्थ्य पहले कभी इतना खराब नहीं हुआ था जितना अब हुआ है।
'मेरे पास अब भी आपके लिए एक प्रस्ताव है। क्या आप इसे स्वीकार करेंगे?'
'मुझे बताओ।'
'मैं तुम्हारे साथ रहूंगी। उसे भी रहने दो। इतने सालों बाद, तुम दोनों चाहे जैसे भी व्यवहार करो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। राजा ने मुझे बताया है कि वह अपने तरीके से तुम्हारी मदद करेगी। रागप्पा को बाहर के काम संभालने दो। मैं सबके लिए खाना बनाऊंगी और तुम्हें हफ्ते में एक बार तेल से स्नान कराऊंगी। क्या तुम इसके लिए राजी हो?' यह कहते-कहते उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। इस प्रस्ताव का मतलब था अपने अनमोल आत्मसम्मान को एक नए व्यक्तित्व के लिए बेच देना, और इसी बात ने उसे अंदर तक झकझोर दिया था।
नागलक्ष्मी के शब्दों ने राव के मन को पिघला दिया। इतने वर्षों तक उसे उपेक्षित रखने के लिए उसने स्वयं को कोसा। अनाथ होने के बाद अपने चाचा के घर आने के बाद से उसे अपना प्रारंभिक जीवन याद आ गया। तेरह वर्ष की नागलक्ष्मी का कितना आत्मविश्वास था, मुझसे शादी करने, मैसूर आने और अपना परिवार बसाने का! बिना

अपनी सर्वव्यापी मुस्कान खोए घर के काम करने का उसका कितना उत्साह था! मेरी कम तनख्वाह से घर चलाने की उसकी कितनी समझदारी थी, ताकि मेरे लिए किताबें खरीदने के लिए पैसे बच सकें! उसे लगा जैसे उसने दस साल पहले अपने जीवन की कोई अनमोल वस्तु खो दी हो, जो अब कभी वापस नहीं मिलेगी। लेकिन वही वस्तु उसे ढूंढते हुए आई थी और अब उसे मिल गई थी। उसका हृदय भर आया, उसने नागलक्ष्मी का हाथ थामकर कहा, 'बस ऐसा ही करो। मेरी सारी गलतियों को भूल जाओ। तुम और पृथ्वी यहीं आ जाओ।'
उसने स्नेहपूर्वक उसके हाथों को दबाया और कहा, 'पृथ्वी को वहीं रहने दो। अगर हम उसे उनसे दूर ले जाएंगे, तो राजा और कात्यायनी दुखी होंगे। मैं तुम्हें इसके बारे में बाद में बताऊंगी।'

3

कात्यायनी दीवार के पास एक कुर्सी पर बैठी थी, तभी करुणा नींद से जाग उठी। करुणा उसे पहचान नहीं पाई। उसने कात्यायनी को गौर से देखा, यह सोचते हुए कि कौन उससे मिलने आया है। कात्यायनी ने पूछा, 'मुझे पहचानती हो?' करुणा ने कहा, 'मुझे लगता है मैंने तुम्हें पहले देखा है।'
'Katyayani.'
'ओह।' पहचान मिलते ही करुणा के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई, 'मुझे अब याद आया। हम पाँच साल पहले मिले थे, जब आप बैंगलोर आने वाले थे। आप कब आए थे?'
थकान उस पर हावी हो गई और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। एक घंटे बाद उसने अपनी आँखें खोलीं। 'वह कहाँ है? वह कैसा है?' उसने पूछा।
'हम सब बैंगलोर से आए हैं। आपके जीजा, मेरी बहन, सब यहीं हैं। बहन उनके साथ है।'
'हम्म,' करुणा की पलकें एक बार फिर तन गईं।
अगले दिन उसमें बोलने की ताकत आ गई। जब सुबह 9 बजे राजा कात्यायनी की जगह लेने आया, तो उसने उससे कहा, 'भगवान का शुक्र है कि आप आ गए। हमारी देखभाल और कौन करता? आपको कैसे पता चला?'
'रागप्पा ने हमें एक टेलीग्राम भेजा।'

राजा करुणा से तब तक बातें करता रहा जब तक कि कात्यायनी दोपहर को स्नान और भोजन करके वापस नहीं आ गई। करुणा ने पूछा, 'जब मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा था तब से तुम काफी दुबले हो गए हो। कात्यायनी का भी यही हाल है, लेकिन मैं उसकी स्थिति समझ सकती हूँ। मुझे लगता है कि तुम भी बीमार हो।'
'बिल्कुल कुछ नहीं,' राजा ने उस विषय को टालते हुए कहा।
राजा के जाने के बाद करुणा दो घंटे सोई। जागने पर उसने कात्यायनी द्वारा दिए गए ग्लूकोज मिले फलों के रस का आधा गिलास पिया। फिर उसने कहा, 'क्या आप तकिया थोड़ा ऊपर कर देंगी? मैं थोड़ी देर कंधे ऊपर करके लेटना चाहती हूँ।' कात्यायनी ने उसका सिर थोड़ा ऊपर उठाया, एक और तकिया लगाया और नीचे वाले तकिए को उसके कंधे के नीचे खींच दिया। करुणा आराम से लेट गई और बोली, 'आप सब इस संकट की घड़ी में हमारी सेवा कर रहे हैं। आपकी इस नेक सेवा के बारे में मैं क्या कहूँ, समझ नहीं आ रहा।'
हम अजनबियों की सेवा नहीं कर रहे हैं। वाह, क्या खूबी है! क्या साले की पत्नी बहन नहीं होती?
करुणा को खुशी हुई। उसे इस बात का संतोष हुआ कि इस देश में उसके रिश्तेदार हैं। वह दो मिनट तक इसी संतोष में डूबी रही और फिर बोली, “जब आप बहुत बीमार थीं, तब राजा आपकी छुट्टी का आवेदन विश्वविद्यालय में जमा कराने आए थे। तब मुझे आकर आपकी सेवा करनी चाहिए थी। लेकिन मैं उस समय चौथे खंड की टाइपिंग कर रही थी। प्रकाशकों ने खंड के प्रकाशन की तिथि घोषित कर दी थी। इसके अलावा, बाद में मैंने वहाँ न आने का फैसला किया।” कात्यायनी ने कुछ नहीं कहा। करुणा ने आगे कहा, “राजा ने मुझे सब कुछ बताया। बहुत दुर्भाग्यपूर्ण। उन्होंने कहा कि पूरी सावधानी बरती गई थी। ऐसे कई मामले होंगे जो हमारे नियंत्रण से बाहर होंगे। आपको इससे उबर जाना चाहिए। आप भी बहुत कमजोर हो गई हैं।”
पृथ्वी वार्ड में दाखिल हुआ। उसके हाथों में मीठे नींबू का एक पैकेट और इंजेक्शन की दो शीशियाँ थीं। उसने उन्हें कात्यायनी को सौंपते हुए कहा, 'आंटी, मुझे डॉक्टर द्वारा बताई गई इंजेक्शन की शीशियाँ मिल गईं। गोलियाँ किसी भी दुकान पर नहीं मिल रही हैं। एक दुकान ने आश्वासन दिया है कि कल मिल जाएँगी। डॉक्टर को यह बात बता दीजिए।'
इस तरह रिपोर्ट करने के बाद, वह जाने ही वाला था कि करुणा ने उसे पुकारा, ‘बेटा, इधर आओ।’ वह अपनी जगह पर ही खड़ा रहा। कात्यायनी ने कहा, ‘यह हम सबका

इकलौता बेटा है, पृथ्वी।' हालाँकि पृथ्वी उस वार्ड में कुछ बार जा चुका था, लेकिन उसने अपने पिता की दूसरी पत्नी को पहले कभी जागते हुए नहीं देखा था। वह सोते समय उसके चेहरे को देखता था। उसके मन में एक अजीब सी अनुभूति होती थी। वह किसी काम का बहाना बनाकर चुपचाप वहाँ से निकल जाता था। अब वह उससे खुद बात कर रही थी। वह झिझक गया। वह वहीं खड़ा रहा और दीवार की ओर देखने लगा। करुणा ने कहा, 'मेरे पास आओ।' वह अब भी अपनी जगह पर ही खड़ा था। कात्यायनी अपनी कुर्सी से उठी, उसके पास गई, उसका हाथ पकड़ा और कन्नड़ में बोली, 'आ जाओ। क्यों हिचकिचा रहे हो?'

करुणा लगभग समझ गई थी, लेकिन वह उससे कन्नड़ भाषा में बात नहीं कर सकती थी। पृथ्वी पास आकर उसके बिस्तर के बगल में खड़ा हो गया, उसकी नज़र अभी भी दीवार पर टिकी हुई थी। करुणा ने ध्यान से उसके चेहरे को देखा। उसने सोचा कि उसका चेहरा उसकी माँ जैसा है, लेकिन शरीर की बनावट, आँखें और नाक उसके पिता जैसी हैं। लड़का स्वस्थ था। उसने एक कमीज़ पहनी हुई थी—जो उसके चाचा की कमीज़ से ज़्यादा महंगी थी—ऊनी पतलून, भूरे रंग के जूते और बाएँ हाथ में घड़ी। यह देखकर कि उसकी अच्छी देखभाल की गई है, उसने उससे पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

'Prthvi.'

'पृथ्वी... कितना सुंदर नाम है। भारत के इतिहास में जब भी यह शब्द आता है, मुझे बहुत खुशी होती है। पूरा नाम क्या है—पृथ्वीराज या पृथ्वीकुमार या पृथ्वीपति?'

'Prthviraj.'

'बहुत खूब। क्या आप मुझे बताएँगे कि आपके लिए यह नाम किसने चुना?'

मुझे बताया गया है कि यह मेरे चाचा हैं।

कात्यायनी ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'मुझे बताया गया था कि उनके चाचा ने पृथ्वीराज नाम चुना था, जो एक प्रसिद्ध नाटक के एक किरदार का नाम है। उनके पिता ने भी इसका समर्थन किया, क्योंकि वह भारतीय इतिहास के आकाश में एक चमकते नायक हैं।'

करुणा ने कहा, 'ऐसा नाम जो हम दोनों को पसंद आया,' और उसका हाथ पकड़कर उसे अपने पास पलंग पर बिठा दिया। वह झिझकते हुए पलंग के किनारे बैठ गया। 'तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?'

मैंने अभी-अभी इंटरमीडिएट प्रथम वर्ष की पढ़ाई पूरी की है।

अब उससे कुछ और पूछना बाकी नहीं था, इसलिए वह चुप हो गई। लेटी हुई उसका बायां हाथ उसके दाहिने हाथ में था। दरअसल, वह विचारों में खोई हुई थी, इसलिए चुप रही। उसका मन नंदी पहाड़ी पर बिताए पलों में खो गया। पास ही कुर्सी पर बैठी कात्यायनी और उसके बगल में पलंग पर हाथ में हाथ डाले बैठे पृथ्वी, दोनों का उसे कोई आभास नहीं था। नंदी की घटना की यादों में खो जाने के कारण वह इतनी बेखबर हो गई कि उसे नींद आ गई। पृथ्वी कुछ देर तक बैठा रहा। उसकी हिचकिचाहट के कारण स्थिति उसके लिए गंभीर होती जा रही थी। वह धीरे से उठा और अपना हाथ छुड़ा लिया। करुणा ऐसे सोती रही जैसे उसे कुछ पता ही न हो। वह धीरे-धीरे वार्ड से बाहर निकल गया। करुणा आधे घंटे और सोती रही।

दो दिन बाद, उसने कात्यायनी से पूछा, 'जब राजा तुम्हारी बीमारी के दौरान यहाँ आया था, तो उसने अपने भाई से कहा था कि तुम्हारे लिए दोबारा गर्भवती होना खतरनाक होगा। क्या यह सच है?'

'हाँ।'

करुणा ने तुरंत कुछ नहीं कहा। अब वह समझ गई थी कि कात्यायनी इतनी दुबली क्यों हो गई थी। उसने अपनी स्थिति के बारे में भी सोचा। हालाँकि वह बच्चे को जन्म दे सकती थी, उसने अपनी इच्छा से उस इच्छा को त्याग दिया था ताकि वह एक लक्ष्य की ओर काम कर सके। हालाँकि कात्यायनी को ऐसी कोई मजबूरी नहीं थी, लेकिन उसके शरीर की बनावट ने मातृत्व को असंभव बना दिया था। उसे समझ आ गया कि राजा ने भी अपनी पहले वाली शारीरिक शक्ति क्यों खो दी थी। अब उसने कहा, 'मातृत्व हर स्त्री की मूल प्रवृत्ति है। अगर किसी कारण से यह पूरा नहीं हो सकता, तो तुम दोनों को कोई मिशन चुनकर संतोष प्राप्त करना चाहिए। तुम दोनों एक किताब लिखने का संकल्प लो और पूरी लगन से उस पर काम करो।'

'लिखना हर किसी के बस की बात नहीं होती। हम दोनों में से किसी की भी पढ़ाई के प्रति वह लगन नहीं है जो आप दोनों में है। हमारी रुचियां अलग-अलग हैं; इसलिए हमारी जीवनशैली भी अलग है।'

आज तक कात्यायनी ने नागलक्ष्मी के बारे में कुछ नहीं कहा था, क्योंकि उन्हें लगता था कि इससे करुणा परेशान हो जाएगी। राजा को तो इस बारे में सोचने की भी ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह वार्ड में ज़्यादा देर नहीं रुकते थे। करुणा ने भी इस विषय पर बात शुरू नहीं की। जैसे-जैसे उनमें बिना थके बोलने की ऊर्जा आई, करुणा ने कात्यायनी से केवल अपने काम से जुड़ी बातें ही साझा कीं, जैसे कि जिस ग्रंथ पर वे काम कर रहे थे,

राव की संकलन विधियाँ, उनके लेखन का मूल उद्देश्य और अब तक की प्रगति। उन्होंने अपने माता-पिता और भाई के बारे में केवल एक बार बताया। उन्होंने कात्यायनी से राजा से विवाह से पहले के जीवन के बारे में कभी नहीं पूछा। करुणा जानती थी कि कात्यायनी का पिछली शादी से एक बेटा था। लेकिन दोनों में से किसी ने भी इस बारे में बात नहीं की।

4

राव और करुणा को अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी और वे घर लौट आए थे। राव अभी भी कमज़ोर थे, लेकिन करुणा पूरी तरह स्वस्थ हो गई थीं। जब वे बीमार थे, तब चौथे खंड की प्रतियाँ पहुँचा दी गई थीं। एक आरामकुर्सी पर बैठे राव पन्ने पलट रहे थे। वे न तो पूरी तरह से उसमें लीन थे और न ही उसे पढ़ने में कोई विशेष रुचि रखते थे। उन्होंने केवल खाली समय के कारण यूँ ही उसे पढ़ना शुरू कर दिया था। तीसरे खंड का उल्लेख महाराज के नाम से था, और चौथे खंड का उल्लेख नंजनगुड के श्रीनिवास श्रोत्री के नाम से था। पाँचवें खंड की रूपरेखा उनके मन में स्पष्ट थी, लेकिन उसके लिए काफी जानकारी संकलित करनी बाकी थी।
बैंगलोर से आए सभी लोग वहीं ठहर गए। पहले रसोइया का काम करने वाली अब बाहर के कामों में लग गई। नागलक्ष्मी के हाथ का खाना सभी को बहुत पसंद आता था। स्वास्थ्य लाभ के बाद राव ने खूब स्वादिष्ट भोजन का लुत्फ़ उठाया। वे सब साथ में दोपहर और रात का खाना खाते थे। नागलक्ष्मी सबको खाना परोसती थीं। लेकिन करुणा और नागलक्ष्मी कभी आपस में बात नहीं करती थीं। नागलक्ष्मी रसोई में ही रहती थीं, जबकि करुणा कभी रसोई में नहीं जाती थीं। वह सामने वाले बड़े अध्ययन कक्ष में ही रहती थीं। राजा और कात्यायनी कभी-कभार उनसे थोड़ी बातचीत करने के लिए वहाँ जाते थे। बाकी समय वह टाइप किए हुए पाठ को संशोधित करने में लगी रहती थीं। कभी-कभी राव भी वहाँ जाते थे। दोनों पाँचवें खंड से संबंधित विषयों पर चर्चा करते थे। पुस्तकालय से लौटने के बाद राव और नागलक्ष्मी आपस में कोई निजी बातचीत नहीं करते थे। अगर राव रसोई में आते तो नागलक्ष्मी उनसे बात करने के लिए तैयार रहती थीं। स्वास्थ्य में सुधार के साथ ही पाँचवें खंड के काम ने उनका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। लंबे अंतराल के बाद, पृथ्वी ने मैसूर शहर के सभी दर्शनीय स्थलों का

पुनः भ्रमण किया: मैसूर पैलेस, वृंदावन, चामुंडी पहाड़ी, श्रीरंगपट्टना आदि। इसके लिए राजा ने अपनी जेब में खूब पैसा भर लिया था।
राजा ने अपने भाई को सूचित किया कि वह तीन-चार दिनों में बैंगलोर लौट आएगा। अब जब नागलक्ष्मी और करुणा एक-दूसरे को जान चुकी थीं, तो राजा चाहता था कि राव उसे नागलक्ष्मी को वहीं छोड़ने का निर्देश दे। अपनी भाभी को विदा करना उसके लिए बहुत दुखद था। परिवार में उसकी उपस्थिति से उसे मानसिक शक्ति मिलती थी। जब से उसकी बौद्धिक क्षमताएं बढ़ी थीं, वह विदेश में बिताए दो वर्षों को छोड़कर कभी उससे दूर नहीं रहा था। उसे इस बात पर बहुत संदेह था कि वह इस प्रस्ताव को मानकर मैसूर में रुकेगी। फिर भी, वह चाहता था कि वह अपने पति के साथ रहे। लेकिन पृथ्वी को विदा करना उसके लिए असंभव था। एक दिन जब उसने ये सब बातें कात्यायनी के सामने रखीं, तो उसने कहा, 'जहाँ तक मेरी समझ है, वह न तो ऐसा प्रस्ताव रखेगा, न ही बहन मानेगी।'
अस्पताल के वार्ड में पत्नी के साथ हुई बातचीत राव की यादों में ताज़ा थी। एक शाम वह करुणा को अपने साथ सैर पर ले गए। दो महीने हो गए थे जब वे आखिरी बार सैर पर गए थे। वे अभी भी राजा और कात्यायनी के बारे में बात कर रहे थे जब वे कॉलेज के पीछे खेल के मैदान में पहुँचे। छुट्टियों के कारण वह मैदान सुनसान था। जब दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गए, तो राव ने कहा, 'मैं तुम्हें यहाँ एक महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा करने के लिए लाया हूँ।'
‘यह क्या है?’ उसने उत्सुकता और घबराहट से भरे स्वर में पूछा।
‘जब वे चले जाएँ, तो हम नागलक्ष्मी को यहीं रोक लें।’ करुणा ने कुछ नहीं कहा। उसका चेहरा गंभीर भाव से उतरा हुआ था। उसके मन की भावना को समझने के लिए, राव ने ध्यान से उसकी ओर देखते हुए कहा, ‘उसने मेरी बीमारी के दौरान मेरी सेवा की। वह तुमसे बिल्कुल भी नाराज़ नहीं होगी। रागप्पा के बेस्वाद खाने के बजाय, वह हम सबके लिए स्वादिष्ट खाना बनाएगी। अपना कल्याण उसके हाथों में सौंपकर, हम निश्चिंत होकर अपना शोध कार्य करेंगे। इसके अलावा, उसे पहले की तरह छोड़ देना मेरी नैतिक अवहेलना होगी। इस पर विचार करो।’
करुणा सोच में डूब गई। नागलक्ष्मी जिस तरह के वैवाहिक संबंध को आदर्श मानती थी, करुणा उससे बिल्कुल अलग तरह का वैवाहिक संबंध चाहती थी। यहाँ तक कि उसमें यह गुण भी था। नागलक्ष्मी के प्रति उसके मन में ज़रा भी ईर्ष्या नहीं थी। बल्कि उसे इस बात का दुख था कि बिना किसी गलती के उसे अपने पति से अलग होना पड़ा, उस दूल्हे

से जिससे उसने बौद्धिक रूप से परिपक्व होने से पहले ही विवाह कर लिया था। राव नागलक्ष्मी के लिए जो भी सुविधाएँ देना चाहते थे, करुणा को उससे कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन वह प्रतिद्वंद्वी पत्नियों के एक ही छत के नीचे एक ही पति के साथ रहने से असहमत थी। भारतीय इतिहास के अध्ययन के दौरान, उसने समाज में प्रचलित द्विविवाह, त्रिविवाह और बहुविवाह प्रथा से खुद को परिचित कराया था। विभिन्न कारणों से, न केवल राजा, बल्कि आम लोग भी एक से अधिक विवाह करते थे। यद्यपि प्रतिद्वंद्वी पत्नियाँ सहयोगात्मक थीं, फिर भी उनमें बुनियादी मानवीय स्वभाव था। उसने सोचा कि वे ईर्ष्या, घृणा और इस तरह की अन्य उग्र भावनाओं से ग्रस्त थीं। उसने यूरोपीय विवाहों के तौर-तरीके देखे थे। जब पति-पत्नी में से किसी एक को पता चलता कि दूसरा उनके अनुकूल नहीं है, तो वे तलाक ले लेते, एक अनुकूल साथी की तलाश करते और फिर से शादी कर लेते। अगर डॉ. राव ब्रिटिश होते, तो उन्हें करुणा से शादी करने से पहले अपनी पहली पत्नी को तलाक देना अनिवार्य होता। वहाँ यह केवल राज्य का नियम नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता है। जब राव ने करुणा से शादी की, तब द्विविवाह के खिलाफ कानून लागू नहीं हुआ था।

राव ने कहा, 'चुप क्यों? खुलकर बोलो।'

करुणा, जो तब तक गहन चिंतन में डूबी हुई थी, बोली, 'मैंने तुम्हें कभी उसे नज़रअंदाज़ करने के लिए नहीं कहा। अभी भी तुम उसके साथ दूसरे घर में चले जाओ। या फिर तुम दोनों यहीं रहो और मेरे लिए एक छोटे घर में रहने का इंतज़ाम कर लो। इससे हमारे लिए अपने तय किए गए काम को पूरा करने के लिए काफ़ी होगा। अगर तुम अलग भी रहो तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

'क्या तुम मेरे साथ उस काम को करके, लेकिन मेरी संगति के बिना, अपना जीवन यापन कर पाओगे?'

“हां, मैं कर सकती हूं,” उसने कांपती हुई आवाज में कहा। कांपते हाथों से उसने उसका हाथ थाम लिया। उसकी आंखों में आंसू थे।

राव ने पूछा, 'तुम इतने जिद्दी क्यों हो?'

‘यह हठ नहीं है। यह तो बस मेरा स्वभाव है। मेरा मन कभी भी द्विविवाह को स्वीकार नहीं करेगा। हमने एक बिल्कुल अलग लक्ष्य तय किया है। और मुझे इस बात की संतुष्टि है कि वह लक्ष्य पूरा हो रहा है। यही मेरे जीवन का सुख है। अब तक हमारे वैवाहिक जीवन में हमें बौद्धिक और भावनात्मक दोनों तरह का जुड़ाव मिला है। मैं उसके जीवन

में कभी दखल नहीं दूंगा। आप एक नया घर बसाइए। आप भी वहाँ रहिए, मेरे पास भी आइए। मुझे किसी प्रकार की ईर्ष्या नहीं होगी।'
राव करुणा के स्वभाव को भलीभांति जानते थे। उसकी इच्छाशक्ति प्रबल थी। उन्हें पता था कि वे उसके निर्णय को नहीं बदल सकते। 'चलो चलते हैं,' उन्होंने कहा और उठ खड़े हुए। घर लौटते-लड़ते अंधेरा हो चुका था। खेल के मैदान में पर्याप्त रोशनी नहीं थी। करुणा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें आगे बढ़ाया। घर लौटते समय उन्होंने पूछा, 'आपने क्या निर्णय लिया है?'
उन्होंने जवाब दिया, 'मैं अभी भी सोच रहा हूं।'
राव पूरी रात इसी बारे में सोचते रहे। उन्हें दो घर पसंद नहीं थे। भले ही वे नागलक्ष्मी को अलग रखते, संकलन के लिए उन्हें करुणा के साथ रात बितानी ही पड़ती। उन्हें पूरा दिन पुस्तकालय में बिताना पड़ता था। नागलक्ष्मी से सिर्फ़ दोपहर और रात के खाने के लिए मिलना और बाकी समय उन्हें अकेला छोड़ देना उन्हें बिलकुल भी मंज़ूर नहीं था। 'कैसी स्थिति है!' उन्होंने सोचा। हालाँकि उन्हें करुणा का स्वभाव पसंद नहीं था, लेकिन वे उसकी परवरिश और विद्वत्ता से भली-भांति परिचित थे। इस दोहरेपन ने उनके जीवन को दो हिस्सों में बाँट दिया था, इस बात से वे बार-बार निराश होकर आहें भरते रहे।
राजा के तीन दिन में लौटने की योजना बनाई गई। नागलक्ष्मी को बेसब्री से इंतज़ार था कि उनके पति जल्द ही उनसे इस विषय पर बात करेंगे। उन्होंने यह भी सोचा कि राजा, कात्यायनी और पृथ्वी के बिना उनका जीवन कैसा होगा; ये दोनों विद्वान तो पढ़ने-लिखने में ही मग्न रहेंगे। अंततः उन्होंने खुद को समझाया कि वह पहले की तरह ही राम का नाम रटकर लिखती रहेंगी और उनकी हर संभव सेवा करेंगी। लेकिन उनके लौटने की पूर्व संध्या तक इस विषय पर कोई चर्चा नहीं हुई। उनके स्वाभिमान ने उन्हें अपने पति से दोबारा यह बात कहने से रोक दिया। अंततः उन्होंने राजा को बुलाया और पूछा, 'क्या आपके भाई ने कुछ कहा?'
'किस बारे में?'
'कुछ भी नहीं,' वह चुप हो गई। राजा के बार-बार पूछने पर भी उसने कुछ नहीं कहा। उस रात उसे बिल्कुल नींद नहीं आई। वह बीच-बीच में रोती रही। उसने खुद को दिलासा देने की कोशिश की कि अगर वह पिछले 10-11 सालों से अकेले रह सकती है, तो अब क्यों डरे। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह अपने दुख को काबू नहीं कर पाई। नींद न आने के कारण वह सुबह जल्दी उठ गई, नहाया, नाश्ता बनाया और कात्यायनी से सबको परोसने को कहा। उन्हें सुबह की ट्रेन से निकलना था। घर के गेट

पर एक टैक्सी खड़ी थी। राजा ने सामान डिग्गी में रख दिया। राजा, कात्यायनी और पृथ्वी सबसे पहले टैक्सी के पास पहुँचे। पृथ्वी अंदर गया और अपनी माँ को बुलाया। जब नागलक्ष्मी बाहर निकली, तो राव सामने के बगीचे के गेट पर खड़े थे। उसने उनके चरणों में प्रणाम किया। बिना कुछ बोले वह टैक्सी में जाकर बैठ गई। राव और करुणा दोनों में से कोई भी उन्हें रेलवे स्टेशन तक छोड़ने नहीं आया। जब टैक्सी पर गोलियां चलाई गईं, तो राव ने मुंह फेर लिया और अपनी आंखें पोंछीं। जब टैक्सी चली गई और गली से बाहर निकल गई, तब तक नागलक्ष्मी फूट-फूट कर रो रही थी। कात्यायनी ने कहा, 'बहन, खुद को दिलासा दो। हमने अपना मकसद पूरा कर लिया है।'
नागलक्ष्मी ने कात्यायनी के कंधों पर सिर रखते हुए कहा, 'वह मुझसे किया वादा भूल गया।'
‘यह क्या है?’ राजा ने आगे की सीट से पूछा।
‘क्या मैंने कल इसका संकेत नहीं दिया था? मैं ट्रेन यात्रा के दौरान इसके बारे में बताऊंगा।’

अध्याय 20

1

राव को इस बात का संतोष था कि उनकी महत्वाकांक्षी कृति के चार खंड 49 वर्ष की आयु तक पूरे हो जाएँगे। एक और खंड, और उनका प्रोजेक्ट पूरा हो जाएगा। लेकिन पाँचवें खंड के लिए उन्होंने जो जानकारी संकलित की, वह तीन-चार स्वतंत्र विषयों के इर्द-गिर्द बँटी हुई प्रतीत हुई। चौथे खंड के लिए संकलित जानकारी दो खंडों के लिए पर्याप्त थी। प्रकाशकों ने कुछ अंशों को छोड़कर, पूरी जानकारी चौथे खंड में शामिल करने की इच्छा जताई थी। छोड़े गए अंशों को एक अलग शीर्षक के रूप में प्रकाशित करने के इरादे से राव ने उनकी मांग मान ली थी। इसी कारण चौथा खंड पिछले तीन खंडों से बड़ा था। प्रशस्ति पत्र श्रीनिवास श्रोत्री के नाम से था। यद्यपि उन्होंने श्रोत्री को 10 वर्षों से नहीं देखा था, फिर भी वे उनकी सहायता और विद्वतापूर्ण सहयोग को नहीं भूले थे। इसे व्यक्त करने का उनके पास उक्त प्रशस्ति पत्र के अलावा कोई और तरीका नहीं था। उन्होंने श्रीनिवास श्रोत्री से व्यक्तिगत रूप से मिलने और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उन्हें खंडों का पूरा सेट भेंट करने का संकल्प लिया। इसके अलावा, उन्हें श्रोत्री के साथ धर्मशास्त्र के एक मुद्दे पर चर्चा करनी थी। जर्मनी के एक विद्वान ने तीसरे खंड में चर्चा किए गए कुछ मुद्दों की ऐतिहासिक सत्यता पर सवाल उठाया था।
फिर भी, राव सोच रहे थे कि क्या उनके भाई की बहू से शादी हो जाने के बाद श्रोत्री का मन उनसे विमुख हो जाएगा। हालांकि उन्हें लगता था कि जिस श्रोत्री को वे जानते थे, वह उग्र भावनाओं में नहीं बहेंगे, लेकिन उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि ऐसे संवेदनशील मामलों में कोई कैसे प्रतिक्रिया देगा। उन्हें उनकी शादी या उससे पहले उनके बीच हुई बातचीत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उनकी शादी के समय, वे करुणा के साथ काम के सिलसिले में कोलकाता में थे। लौटने के बाद ही उन्हें इस सब के बारे में पता चला, जब उनके भाई और भाभी उनसे मिलने आए और उनके चरणों में गिर पड़े। अगर मुझे पहले पता होता, तो क्या मैं अपने भाई को रोकता? उन्होंने खुद से सवाल किया। उन्हें यकीन था कि वे राजा को इस बात की जानकारी जरूर देते कि इसका बुजुर्ग श्रोत्री दंपति के परिवार पर क्या असर पड़ेगा, लेकिन उन्होंने सोचा कि अंततः जो होगा, वह संबंधित लोगों पर निर्भर है।

करुणा ने सुझाव दिया कि बिना बुलाए आने के बजाय, पहले श्रोत्री को पत्र लिखना बेहतर होगा, और फिर उनके जवाब के आधार पर आगे की योजना तय करना चाहिए। करुणा भी श्रोत्री से मिलने के लिए उत्सुक थीं। उन्होंने श्रोत्री को पत्र लिखकर बताया कि वे चार दिन के लिए आने की योजना बना रहे हैं। पत्र भेजने के तीसरे दिन ही उन्हें जवाब मिल गया। उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित करने की उत्सुकता व्यक्त करते हुए श्रोत्री ने लिखा, 'मैं बूढ़ा हो चुका हूँ। आप जैसे विद्वानों को कुछ दिनों के लिए अपने यहाँ आमंत्रित करने से बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है? कृपया अवश्य पधारें।'

उस पत्र ने राव को अत्यंत प्रसन्न कर दिया। उनके लिए, वह प्रतिक्रिया भारत की संस्कृति का प्रतिबिंब थी—श्रद्धांजलि उन्हें उसी संस्कृति का साक्षात रूप प्रतीत हुई। एक शाम, वे चार पुस्तकों और एक थैले के साथ शाम चार बजे की ट्रेन से रवाना हुए। नंजनगुड में उतरकर उन्होंने एक कुली को थैला और पुस्तकें उठाने के लिए कहा और श्रद्धांजलि के घर पहुँचे। दो बार दरवाजा खटखटाने पर एक पंद्रह वर्षीय लड़के ने दरवाजा खोला। वे आसानी से समझ गए कि वह श्रद्धांजलि का पोता और कात्यायनी का पूर्व विवाह से पुत्र था।

उन्होंने उन्हें बैठक कक्ष में बैठने को कहा और अंदर चले गए। दो मिनट में, श्रोत्री वहाँ प्रकट हुए और हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया। अब उनके सिर पर बाल नहीं थे और सफेद दाढ़ी उनके गालों पर फैली हुई थी। हमेशा की तरह, उन्होंने लाल किनारी वाली सफेद धोती पहनी हुई थी और अपने धड़ को शॉल से ढका हुआ था। हालाँकि उनके दाँत सही-सलामत थे, लेकिन उनके माथे पर झुर्रियाँ थीं और उनके चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी। चलते समय वे थोड़ा झुके हुए थे। राव और करुणा दोनों उठकर उनके चरणों में गिर पड़े। 'चीनी,' श्रोत्री ने अपने पोते को पुकारा। जब वह आया, तो श्रोत्री ने कहा, 'बेटा, यह थैला और बैग ऊपर वाले कमरे में ले जाओ।' जब मेहमानों ने स्नान कर लिया, तो श्रोत्री ने स्वयं उन्हें दूध पिलाया।

जब वे ऊपरी मंजिल पर गए, तो राव ने थैले से चारों खंड निकाले, उन्हें श्रोत्री के सामने रखा और कहा, 'यह आपके आशीर्वाद का फल है। अभी एक और बाकी है।' श्रोत्री ने एक-एक करके सभी खंडों को उठाया और देखा। वह मुश्किल से अंग्रेजी में शीर्षक, लेखकों के नाम, प्रकाशन कंपनी आदि पढ़ पा रहे थे। प्रत्येक पुस्तक के शीर्षक पृष्ठ पर राव ने लिखा था:

आदरणीय श्री श्रीनिवास श्रोत्री को
श्रद्धापूर्वक, सदाशिव राव

श्रोत्री चौथे खंड का दूसरा पृष्ठ पलटते ही अचंभित रह गए। यद्यपि मोटे अक्षरों में लिखे उद्धरण में कुछ शब्द अपरिचित थे, फिर भी वे समझ गए कि इसका अर्थ है 'यह खंड नंजनगुड के श्री श्रीनिवास श्रोत्री को समर्पित है।' इशारा करते हुए उन्होंने कहा, 'यह तो बिलकुल अनावश्यक था।'

‘क्यों नहीं? आपने अपने ज्ञान से मेरी समझ को बढ़ाया। आपने अपने आशीर्वाद से मेरे शोध को जारी रखने के मेरे संकल्प को मजबूत किया। आपने इस संकलन के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की। यदि आप कहते हैं कि यह अनावश्यक है, तो मेरी श्रद्धांजलि का हकदार और कौन था?’

‘उद्धरण की क्या आवश्यकता है? और इसके हकदार कौन हैं?’ उन्होंने सावधानीपूर्वक कहा, ‘ईश्वर ने ही आपको यह कार्य करने के लिए प्रेरित किया था। उसी ईश्वर ने 10 अन्य लोगों को भी इस विशाल कार्य में सहयोग देने के लिए प्रोत्साहित किया। मैं उन चुनिंदा लोगों में शामिल होकर सौभाग्यशाली रहा। मुझे पता चला है कि जब वे जीवित थे, तब उन्होंने इस परियोजना का समर्थन किया था। मेरे जैसे लोगों के लिए यह धर्म है कि वे अक्षरों की इस पूजा को एक-एक फूल अर्पित करें। तो फिर मुझे धन्यवाद देने या एक व्यक्तिवादी के धर्म के कार्य को संतुष्ट करने का क्या औचित्य है?’

राव ने कुछ नहीं कहा। वह चुप रहे। अगले दस मिनट तक श्रोत्री किताब के पन्ने पलटते रहे। उन्होंने पन्नों पर बने चित्रों को देखा। फिर उन्होंने करुणा की ओर मुड़कर कहा, 'क्या तुम हमारी बातचीत ठीक से समझ पा रही हो?'

राव को पता चला कि श्रोत्री करुणा के बारे में जानती हैं। उन्होंने जवाब दिया, 'बस थोड़ा-बहुत। वह बोलने के लहजे और गति से ज़्यादा समझ जाती है। वह मुश्किल से एक नौकरानी से बात कर पाती है।' पाँच मिनट की बातचीत के बाद, श्रोत्री ने कहा, 'थोड़ी देर आराम करो। मैं तुमसे थोड़ी देर बाद मिलूंगी,' और नीचे चली गईं। यह जानते हुए कि श्रोत्री के लिए पूजा का समय था, राव ने करुणा को अंग्रेज़ी में अब तक की बातचीत के बारे में बताया। फिर वे श्रोत्री के अध्ययन कक्ष में छपी हुई किताबों और पांडुलिपियों को देखने लगे।

रात के 8 बजे, श्रोत्री ऊपर आए और उन्हें रात के खाने के लिए आमंत्रित किया। राव जहाँ पहले आते थे, उसी जगह पर तीन केले के पत्ते बिछे हुए थे। श्रोत्री ने कहा, 'तुम भी खा लो, बच्चे,' और चीनी ने खाना खा लिया। राव ने पूछा, 'आपका क्या?' इस पर श्रोत्री ने कहा, 'मैं पहले आपको परोसूँगा।' राव ने बिना सोचे-समझे पूछा, 'और आपकी पत्नी?'

राव को स्पष्ट रूप से अभी भी पता नहीं था। श्रोत्री ने कहा, 'मैं आपको बाद में बताऊँगा,' और राव तुरंत समझ गए कि मामला क्या है। 15 साल पहले भी ठीक इसी समय उनके बीच ऐसी ही बातचीत हुई थी। बस, उस समय उनका बेटा नंजुंडा था। श्रोत्री हमेशा खाने के दौरान अशुभ समाचार साझा करने से बचते थे; तब भी नहीं और अब भी नहीं। राव को यह देखकर थोड़ी झिझक हुई कि 70 साल का एक बुजुर्ग उनके लिए खाना बनाए और परोसे। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। भागीरथम्मा की तरह ही, श्रोत्री ने भी मेहमानों के साथ जीवंत बातचीत जारी रखी ताकि उन्हें पेट भरकर खाने में कोई झिझक न हो। खाना गर्म और स्वादिष्ट था।

रात के खाने के एक घंटे बाद, श्रोत्री बैठक में आए। तब तक चीनी ने मेहमानों के सामने पान का डिब्बा रख दिया था। राव ने श्रोत्री से पूछा, 'क्या आप पान नहीं खाएंगे?' श्रोत्री ने कहा, 'मैंने पान छोड़े हुए काफी समय हो गया है। इसके अलावा, मैं अब पूर्णकालिक गृहस्थ नहीं हूं।'

‘यह कब हुआ था? क्या घटना घटी थी?’

‘दो साल पहले की बात है। वृद्धावस्था संबंधी बीमारी; उनकी उम्र 60 वर्ष थी। आजकल “सौ वर्ष तक जियो” जैसी बातें केवल प्रार्थनाओं में ही सुनने को मिलती हैं,’ उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

राव को बुरा लगा। अगर कोई और विधवा पुरुष होता, तो वह उसे सांत्वना के कुछ शब्द कहता। केवल वही व्यक्ति सांत्वना दे सकता था जो उम्र, ज्ञान और परिपक्वता में सामने बैठे बुजुर्ग व्यक्ति के बराबर हो। और, राव ने सोचा, ऐसा कोई व्यक्ति यहाँ नहीं था। फिर भी उसने कहा, 'मुझे गलत मत समझिए। मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ।'

‘कभी संकोच न करें। पूछें।’

हम यहाँ तीन-चार दिन रुकेंगे। मुझे ये सोचकर भी अच्छा नहीं लगता कि तुम हमारे लिए खाना बनाओगी। इसके बजाय, हम तुम्हारे लिए खाना बनाएँ। वो एक अलग धर्म में पली-बढ़ी है। वो हम दोनों के लिए दूसरे कमरे में खाना बनाएगी। कृपया हमें एक चूल्हा, कुछ बर्तन, चावल और दालें दे दो। इतना काफी होगा।

क्या मुझे तुम दोनों के लिए अलग-अलग खाना बनाना पड़ेगा? मैं हम तीनों के लिए जिस बर्तन में खाना बना रही हूँ, उसमें थोड़ा और चावल डाल दूँगी। इसी तरह, जिस बर्तन में मैं करी बना रही हूँ, उसमें एक मुट्ठी दाल और एक गिलास पानी और डाल दूँगी। खाना बनाने में मुझे बस इतनी ही मेहनत करनी पड़ती है। इससे इस बूढ़े आदमी को क्या अतिरिक्त परेशानी होती है? अब कभी संकोच मत करना।

कुछ देर तक बातचीत करने के बाद, उन्होंने दर्शनशास्त्र और इतिहास पर चर्चा शुरू कर दी। तीनों ने आधी रात तक अपनी चर्चा जारी रखी। फिर श्रोत्री उन्हें ऊपर ले गए। तब तक उनके बिस्तर लग चुके थे। 'अब आराम करो। कल और चर्चा करेंगे,' उन्होंने कहा और नीचे चले गए।

राव और करुणा वहाँ चार दिन तक रहे। करुणा के मन में श्रोत्री के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव जागा। वह उम्र के साथ आने वाली परिपक्वता को जानती थी। उसने अपने पिता में वृद्धावस्था में परिपक्वता देखी थी, ठीक वैसे ही जैसे उसने यूरोप के कुछ बुजुर्ग प्रोफेसरों में देखी थी। लेकिन उसे यह भी पता चला कि श्रोत्री का व्यक्तित्व अद्वितीय था। उसने भारतीय पुराण और महाकाव्य पढ़े थे। उसे भीष्म, वशिष्ठ, युधिष्ठिर और राम जैसे पात्रों का भली-भांति ज्ञान था। वह इन पात्रों के स्वभाव से इतनी भली-भांति परिचित थी कि वह बिना किसी त्रुटि के यह अनुमान लगा सकती थी कि यदि उन्हें किसी काल्पनिक स्थिति में रखा जाए तो वे कैसा व्यवहार करेंगे। अब, जैसे-जैसे वह श्रोत्री से परिचित हुई, वे सभी पात्र उसकी स्मृति में उभर आए। वह जानती थी कि उसकी बहू ने परिवार को छोड़कर राव के भाई से विवाह कर लिया था। वह यह भी जानती थी कि कात्यायनी राजा को उसके भाई राव के माध्यम से जानती थी। फिर भी, श्रोत्री के मन में राव के प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी। यद्यपि वे 70 वर्ष से अधिक आयु के थे, फिर भी उनका चेहरा अत्यंत सुंदर था। उनके हर शब्द और कर्म में मर्यादा और संस्कृति झलकती थी। वे प्रतिदिन सुबह 3 बजे उठते, नदी में स्नान करते और अपनी दैनिक पूजा-अर्चना शुरू करते। इसके बाद वे सुबह 7 बजे मेहमानों को कॉफी देते। हालांकि इस घर में किसी को भी कॉफी पीने की आदत नहीं थी, फिर भी वे मेहमानों के लिए कॉफी बनाते थे। दोपहर का भोजन ठीक 10 बजे परोसा जाता था। भोजन के बाद वे और राव दोपहर 3 बजे तक चर्चा करते। फिर वे नीचे जाते और आधे घंटे में उनके लिए कॉफी और नाश्ता लाते। हालांकि वे खुद कुछ नहीं खाते थे। वे शाम 6 बजे तक चर्चा में मशगूल रहते। फिर वे रात के खाने की व्यवस्था करने नीचे जाते। खाने के बाद वे आधी रात तक चर्चा करते रहते। उनके चेहरे पर एक पल के लिए भी थकान या सुस्ती का कोई निशान नहीं होता था।

चर्चाओं के दौरान, वे स्मृति से अनेक संस्कृत श्लोक सुनाते थे। करुणा यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि जिस तरह से वे कुछ अक्षरों का उच्चारित उच्चारण करते थे और शब्दों की व्युत्पत्ति में गहराई से जाकर उनका अर्थ स्पष्ट करते थे, उससे वह भी समझ जाती थी। यद्यपि वे व्याख्यात्मक कथाएँ कन्नड़ में सुनाते थे, फिर भी उनके भाषण

में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता और बीच-बीच में उद्धृत संस्कृत श्लोकों के कारण करुणा को उनकी कथा लगभग पूरी तरह समझ आ जाती थी। जब भी उन्हें कोई संदेह होता, वे अपने संग्रह की किसी पुस्तक को देखते और उसमें से पढ़कर सुनाते। उनका अध्ययन कक्ष धर्म, शास्त्र, पुराण, दर्शन, साहित्य आदि पुस्तकों से भरा हुआ था। कभी-कभी वे संस्कृत में भी बातचीत करने लगते थे। करुणा उनकी विद्वत्ता से चकित थी। जब श्रोत्री नीचे जातीं और उन्हें थोड़ा विराम मिलता, तो राव करुणा को सारी बातें अंग्रेजी में समझाते। करुणा उन्हें संक्षिप्त रूप में लिख लेतीं। राव ने तीसरे खंड में चर्चा किए गए कुछ मुद्दों की ऐतिहासिक सत्यता के संबंध में जर्मनी के विद्वान द्वारा व्यक्त किए गए संदेहों को कन्नड़ भाषा में समझाया। श्रोत्री ने उन सभी का संतोषजनक स्पष्टीकरण दिया; उन्होंने अपने संग्रह से प्रामाणिक ग्रंथों का हवाला भी दिया। राव ने इन सभी बातों को विस्तार से नोट कर लिया, क्योंकि वे उस जर्मन विद्वान के संदेहों को दूर करने के बहाने एक विस्तृत और प्रकाशन योग्य निबंध लिखना चाहते थे।

जिस दिन राव ने उस घर में कदम रखा, उसी दिन से एक विचार उनके मन के किसी कोने में खटकता रहा। उन्हें लगता था कि बुढ़ापे के कारण पत्नी का निधन जीवन का एक अपरिहार्य नियम था, फिर भी बहू की उपस्थिति से उन्हें जो सुकून मिलेगा, वह उनके लिए अच्छा होगा। श्रोत्री का किसी भी काम को कठिन न समझना उनकी सहनशीलता का प्रमाण था। फिर भी, अगर उनकी बहू यहाँ होती, तो वे शांति से रह पाते; इससे बालक को भी सहारा मिलता। राव ने चीनी को गौर से देखा था। पंद्रह साल का वह लड़का अपने दादाजी की तरह लंबा और चौड़े चेहरे वाला था, और उसकी आँखें भी वैसी ही चमकती थीं। वह शारीरिक रूप से भी तंदुरुस्त हो गया था। लेकिन अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत गंभीर था। उन्होंने श्रोत्री को अपने पोते से हल्के-फुल्के अंदाज में बात करते देखा था, लेकिन पारिवारिक परिस्थितियाँ और दादाजी के जीवन ने उसमें ऐसी गंभीरता ला दी थी। अगर उसकी माँ यहाँ होती, तो शायद वह इतना गंभीर न होता।

राजा इस परिवार से परिचित नहीं थे। कात्यायनी का मेरे घर आना और राजा के प्रति उनका स्नेह मेरे कारण ही विकसित हुआ। और इसका परिणाम यह हुआ! मुझे इस मामले की उत्पत्ति और विकास के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी। मैं अपने शोध में पूरी तरह डूबी हुई थी। मेरे जीवन ने एक नया मोड़ लिया और मैं अपने परिवार से अलग हो गई। जब उनकी शादी हुई तब मैं शहर में नहीं थी। अगर होती तो मैं उन दोनों से इस

बारे में बात करती। खैर, मुझे एक बार तो श्रोत्री से माफी मांगनी ही होगी। राव सोचती रही।

मैसूर लौटने की पूर्व संध्या पर रात के खाने के बाद, राव ने करुणा को ऊपर ही रहने के लिए कहा और फिर वह नीचे गए और श्रोत्री से कहा, 'आज चर्चा के लिए कोई विषय नहीं है। अगर तुम पहले से थकी हुई नहीं हो, तो चलो नदी किनारे टहलते हैं।'

शॉल ओढ़े सरोत्री ने कहा, 'बिल्कुल भी परेशानी नहीं है,' और वे दोनों चौंक गए। राव को अकेला देखकर उन्होंने पूछा, 'आपकी पत्नी हमारे साथ नहीं आ रही हैं?'

'नहीं। वह किताब देख रही है,' राव ने कहा और दोनों बाहर निकल गए। वे मंदिर के सामने से गुज़रे और मणिकर्णिका डेक की सीढ़ियों पर पहुँच गए।

जून-जुलाई के बाढ़ के महीने बीत चुके थे और नदी शांत भाव से बह रही थी। चंद्र माह के पहले पखवाड़े का आठवाँ या नौवाँ दिन रहा होगा। आकाश में चाँद खूब चमक रहा था। नदी के दोनों किनारे गंभीर मौन में नदी के प्रवाह को निहार रहे थे, जो दूधिया चाँदनी में चमक रहा था। राव और श्रोत्री किनारे के पास एक सीढ़ी पर बैठे थे। दोनों पानी को ध्यान से देखते रहे, राव के होंठ खुले मानो कुछ कहना चाहते हों, लेकिन शब्द नहीं निकले। श्रोत्री ने पूछा, 'क्या? बताओ।'

'हो सकता है कि यह बात आपके लिए ज्यादा मायने न रखती हो। लेकिन मैं आपसे एक पुरानी बात साझा करना चाहता था।'

'जारी रखें।'

अब मुझे आपके घर में आपकी बहू की मौजूदगी की आवश्यकता पर अधिक जोर देने की जरूरत नहीं है। मेरा भाई वाकई नेक स्वभाव का है। उसे आपके परिवार के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मुझे उसकी शादी और उससे पहले के मामलों के बारे में कुछ भी नहीं पता था। अगर मुझे पता होता तो मैं हस्तक्षेप जरूर करती! मैं उसकी ओर से आपसे क्षमा मांगती हूं।

'आपको ऐसा क्यों कहना पड़ रहा है? ऐसा कौन सा अन्याय है जिसके लिए क्षमा की मांग की जा रही है?'

'हर चीज को सकारात्मक नजरिए से देखना आपकी खासियत है। लेकिन अगर आपकी बहू यहां होती तो आपके परिवार के लिए अच्छा होता।'

'अगर सब कुछ हमारी इच्छा के अनुसार होता, तो हम इसे संसार क्यों कहते?' श्रोत्री ने अपने शांत स्वर में आगे कहा, 'अगर मेरी पत्नी जीवित रहती तो अच्छा होता। अगर मेरा बेटा जीवित रहता तो और भी अच्छा होता। अगर मेरे माता-पिता जीवित रहते तो और

भी बेहतर होता। लेकिन वे सभी हमारे साथ केवल तब तक रहेंगे जब तक हमारा ब्रह्मांडीय दायित्व बना रहेगा। जैसे ही वह समाप्त होगा, वे चले जाएंगे। यह विदाई मृत्यु से हो सकती है या हमारे जीते जी त्याग से। हमें इसे स्वीकार करना होगा, शोक नहीं करना होगा।'

क्या आपने कभी अपनी बहू के प्रति कोई द्वेष या निंदा का भाव नहीं रखा?

'क्यों?' वह मुस्कुराए और उसी शांत स्वर में बोले, 'जब मेरे बेटे ने ईश्वर की इच्छा के अनुसार मेरे प्रति अपने सभी दायित्वों को पूरा कर लिया, तो उसने नदी में डूबकर मुझसे नाता तोड़ लिया। इसी कारण मेरी पत्नी ने बीमारी का बहाना बनाकर मुझसे नाता तोड़ लिया। मैं उनके प्रति घृणा या निंदा कैसे कर सकता हूँ? मेरे विचार में, मृत्यु के समय नाता तोड़ने और मेरी बहू के जीते जी नाता तोड़ने में कोई अंतर नहीं है। उसने मेरे प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया और चली गई। इसमें उसकी क्या गलती है?'

'कम से कम बच्चे की खातिर तो...'

श्रोत्री ने उसकी बात काटते हुए कहा, "हाँ, यह स्वाभाविक है कि हमें उसके अनाथ होने पर दुख हो रहा है। लेकिन क्या उसके लिए अपने गर्भ से जन्मे बच्चे को त्यागना इतना कष्टदायी नहीं था? उसने इससे भी कहीं अधिक पीड़ा सहन की है। एक ऐसी प्राकृतिक शक्ति ने उसे अपनी ओर खींच लिया है जो ऐसी पीड़ा से भी कहीं अधिक भयानक है। क्या हम प्रकृति को माया नहीं मानते? इस संसार में जीवन प्रकृति के गुणों और तरीकों के अनुरूप ही चलता है। क्या यहाँ रहना और प्राकृतिक गुणों से वंचित रहना कोई आसान काम है? यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह इसके आगे झुक गई। क्या हमें इस कारण से उसकी निंदा करनी चाहिए?"

राव इस दार्शनिक दृष्टिकोण से भलीभांति परिचित थे। एक बुजुर्ग व्यक्ति का विपरीत परिस्थितियों में भी इतना उदात्त जीवन व्यतीत करना देखकर श्रोत्री के प्रति उनका सम्मान कई गुना बढ़ गया। उन्होंने पूछा, 'क्या आप कभी अपनी बहू को याद करती हैं?'

जीवन के नुकसानों के बारे में सोचते रहने से क्या हासिल होता है? अपने बेटे और पत्नी की मृत्यु पर लगातार शोक मनाने से मेरा मनोबल ही गिरेगा। क्या अभी मेरे ऊपर जो काम का बोझ है, वह कम है? मुझे अपने पोते की शिक्षा का भी ध्यान रखना है। मैं पहले ही 72 साल का हो चुका हूँ। उसके जीवन में व्यवस्थित हो जाने के बाद, मुझे सांसारिक मामलों का त्याग करने का मार्ग अपनाना होगा। सच है, कभी-कभी जब मेरा ध्यान भटकता है, तो ये सब बातें मेरे मन में उठने लगती हैं। फिर भी, मैं यथासंभव अतीत के बारे में न सोचने की कोशिश करता हूँ।

उसके बाद वह चुप हो गया। किसी अज्ञात कारण से, राव का मन अतीत की ओर भटक गया। श्रोत्री ने अपने जीवन में कभी द्वैत को नहीं अपनाया, इसीलिए वह हमेशा अपने मार्ग पर आगे बढ़ने में सक्षम है। लेकिन मेरे जीवन में जिस द्वैत का मुझे सामना करना पड़ता है, वह अक्सर मेरे मन को अतीत की यादों में ले जाता है और मुझे विक्षिप्त कर देता है। क्या इसका कोई समाधान है?
यह सोचकर कि श्रोत्री उनकी दुविधा का कोई हल निकाल सकते हैं, राव ने चर्चा फिर से शुरू की। उन्होंने पूछा, 'क्या आपको मेरी दूसरी शादी, उस समय की स्थिति, कारण और सब कुछ पता है?'
'हाँ मुझे पता है।'
'करुणा के बिना मैं अपना काम प्रभावी ढंग से पूरा नहीं कर सका। मुझे उन पुस्तकों को लिखने में उसकी मदद की बहुत ज़रूरत थी। लेकिन मेरी पहली पत्नी निर्दोष है। इन परिस्थितियों को देखते हुए, क्या आपको लगता है कि मेरा यह कार्य गलत था?'
मैं यह कैसे कह सकता हूँ कि आपका कृत्य गलत था?
मुझे भली-भांति पता है कि आप दूसरों के आचरण के बारे में कोई राय नहीं बनाते। मैंने आपसे यह नहीं पूछा था। मैं जानना चाहता हूं कि अगर आप मेरी जगह होते तो क्या करते।
‘यह कहना व्यर्थ है कि अगर मैं आपकी जगह होता तो क्या करता। मेरे बेटे ने एक बार मुझे वही बताया जो आपने इतिहास की कक्षा में पढ़ाया था: एक भिखारी सम्राट से कहता है, “अगर मैं सम्राट होता, तो मैं रक्तपात नहीं करवाता,” जिस पर सम्राट कहता है, “अगर मैं भिखारी होता, तो युद्ध का विचार मेरे मन में आता ही नहीं।”’
वह एक मिनट के लिए चुप हो गया, अपने विचारों को समेटा और बोला, 'आप कहते हैं कि यह विवाह ग्रंथों के संकलन को सुगम बनाने के लिए किया गया था, जो कि विद्वत्ता का परिणाम है। विद्वत्ता भी एक स्वाभाविक अवस्था है। ज्ञान की खोज में लिप्त होना और ऐसी इच्छा की पूर्ति के लिए सुविधा के लिए विवाह करना भी स्वाभाविक आकर्षण है। कुछ लोग शारीरिक सुख के लिए द्विविवाह करते हैं। यद्यपि पहला आकर्षण दूसरे से श्रेष्ठ है, फिर भी सिद्धांत में कोई खास अंतर नहीं है। ज्ञान की सच्ची खोज बुद्धि से परे है। इसे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है। एक दृढ़ आत्मा की पुकार ही पर्याप्त है।'
राव ने तुरंत संदेह व्यक्त किया। उन्होंने पूछा, ‘उस विवाह का क्या महत्व है जो उस लक्ष्य की राह में बाधा है जिसे व्यक्ति ने पूरे दिल से अपनाया है? और उस विवाह को,

जो ऐसे जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है, प्रकृति का परिणाम कैसे कहा जा सकता है?'

'आपकी बातें एक दृष्टिकोण से सही हैं। बदलते सामाजिक परिवेश के साथ विवाह का उद्देश्य भी बदलता प्रतीत होता है। इसके फायदे और नुकसान यहाँ अप्रासंगिक हैं। चाहे हमने वैवाहिक प्रतिज्ञा को गंभीरता से लिया हो या नहीं, हम जीवनसाथी की निर्दोषता को अनदेखा करके विवाह को कैसे तुच्छ बना सकते हैं?' श्रोत्री ने अपने वैवाहिक जीवन की एक घटना को याद करते हुए आगे कहा, 'मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे मन में भी ऐसा ही विचार आया था। मैं हमेशा संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करता था। मैं वेदांत, तर्क और मीमांस का गहन अध्ययन करता था और उसी के अनुसार जीवन को देखता था। मेरी पत्नी संस्कृत से बिल्कुल अनपढ़ थी। वह अपनी बोली जाने वाली कन्नड़ भाषा में भी चार पंक्तियों का पत्र नहीं लिख सकती थी। फिर भी, उसने अपने पति की अच्छी सेवा की। उसने वंश को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें एक पुत्र दिया। वह फूल इकट्ठा करती, चंदन का लेप लगाती और उनकी दैनिक पूजा-अर्चना के लिए अन्य सामग्री का प्रबंध करती थी। बुद्धि के मामले में हम दोनों में कोई समानता नहीं थी। लेकिन वह एक आदर्श पत्नी थी।'

राव चुपचाप बैठे रहे। चारों ओर शांति छाई हुई थी। श्रोत्री जानते थे कि उनके शब्दों से राव को दुख पहुंचा है। उन्होंने कहा, "जिस प्रकार यह कहना अप्रासंगिक होगा कि मैं तुम्हारी जगह होता तो क्या करता, उसी प्रकार इसका विपरीत भी उतना ही अप्रासंगिक होगा। यह सब व्यक्ति के जीवन के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। किसी भी चुने हुए मार्ग पर चलते हुए, व्यक्ति को हमेशा द्वंद्व का सामना करना पड़ता है। यदि वह चुने हुए मार्ग से पीछे हटने का विकल्प चुनता है, तो उसे एक अलग द्वंद्व का सामना करना पड़ सकता है। तुम्हारी अब तक की उपलब्धियां महत्वपूर्ण हैं। तुम्हें उन्हें पूर्ण करने का प्रयास करना चाहिए। मैं तुम्हारी दूसरी शादी की आवश्यकता को अच्छी तरह समझ सकता हूं। लेकिन तुमने पहली पत्नी को क्यों दूर रखा?"

दूसरी पत्नी को द्विविवाह से घृणा थी। उसे एक ही छत के नीचे प्रतिद्वंद्वी पत्नियों का रहना पसंद नहीं था।

'यह भी आधुनिकता का ही एक पहलू है। मान लीजिए कि यह पूरी तरह गलत नहीं है। लेकिन क्या उसने किसी खास लक्ष्य को हासिल करने के लिए ही पहले से शादीशुदा आदमी से शादी करने की सहमति नहीं दी? अपने लक्ष्य को पूरी प्राथमिकता देते हुए, वह अपने आंतरिक संघर्षों को नियंत्रित कर सकती थी और दूसरी पत्नी के साथ रहने के

लिए राजी हो सकती थी। चाहे किसी व्यक्ति का जीवन हो या सामाजिक परिवेश, हर व्यवस्था अनोखे अवसर प्रदान करती है। लेकिन असाधारण परिस्थितियों में, ऐसी व्यवस्थाओं को अनावश्यक महत्व नहीं देना चाहिए। यदि जीवन का मूल उद्देश्य स्पष्ट हो, तो उसके अनुरूप अन्य पहलुओं को व्यवस्थित करना मुश्किल नहीं होना चाहिए।'
राव गहरी सोच में डूबे हुए थे। उन्होंने कुछ नहीं कहा। दोनों कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। फिर श्रोत्री ने कहा, 'अब सोने का समय हो गया है। चलें?' राव उठ खड़े हुए। जब वे घर पहुँचे तो 11 बज रहे थे और करुणा बैठक में चीनी से बातें कर रही थी। उन्हें देखकर चीनी अंदर चली गई। करुणा ने राव को बताया, 'बहुत ही होशियार लड़का है।'
उन्हें अगले दिन सुबह की ट्रेन से जाना था, और जब उन्होंने श्रोत्री से विदा ली, तो राव ने श्रोत्री के चरणों में प्रणाम किया, लेकिन श्रोत्री पीछे हट गए और उन्हें रोकते हुए बोले, 'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। इसे देवताओं के लिए ही रहने दो।' करुणा ने सिर झुकाया और हाथ जोड़ लिए। 'कृपया आते रहिएगा। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, इसलिए ज्यादा चल-फिर नहीं सकता,' श्रोत्री ने अपने मेहमानों को विदाई देते हुए हाथ जोड़ लिए।

2

जब राव और करुणा मैसूर में अपने घर लौटे, तो सुबह के 10:15 बज रहे थे। दराज में एक कुर्सी पर बैठा राजा अपने जूते के फीते बांध रहा था! आश्चर्यचकित होकर राव ने पूछा, 'अरे, तुम कब आए?'
'तीन दिन पहले। कात्यायनी भी यहीं है। हमारा तबादला यहाँ हो गया है।'
'कब से?' राव दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। करुणा अपने साथ बैग और होल्डऑल लिए हुए कुली को लेकर अंदर आई और उसे सीधे अंदर ले गई।
हमें परसों यानी सोमवार को तबादला आदेश जारी किए गए थे, जिसमें चार दिनों के भीतर यहां रिपोर्ट करने के निर्देश थे। मैंने आपको पत्र लिखकर अपनी यात्रा की तारीख की जानकारी दी थी। लेकिन वह पत्र हमें तब मिला जब हम यहां आ चुके थे! मुझे बताया गया कि तब तक आप नंजनगुड के लिए रवाना हो चुके थे।
'हाँ।'
'क्या वे सब ठीक हैं?' जब उसने यह पूछा, तो राजा का चेहरा उदास था। लेकिन राव ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
'स्रोत्री की पत्नी का निधन दो साल पहले हो गया था।'

तब तक कात्यायनी और करुणा वहाँ बातें करते हुए आ गईं। कात्यायनी कॉलेज जाने के लिए तैयार थीं। उनके हाथ में दो पाठ्यपुस्तकें और एक नोटबुक थी। अपने देवर को आदरपूर्वक प्रणाम करने के बाद, वह राजा के साथ कॉलेज के लिए रवाना हो गईं।
नागलक्ष्मी और पृथ्वी बैंगलोर में ही रुक गई थीं। राजा के घर किराए पर लेने के बाद वे मैसूर चली जाएंगी। नागलक्ष्मी मैसूर जाने के लिए उत्सुक नहीं थीं। कात्यायनी को भी यह शहर पसंद नहीं था। लेकिन तबादलों के आदेशों के बारे में वह कुछ नहीं कर सकती थीं।
ऐसा कोई नियम नहीं था कि पति-पत्नी का तबादला एक साथ हो। चूंकि वह डॉ. राव के भाई थे, इसलिए विश्वविद्यालय ने उन्हें भी समायोजित कर लिया था। राजा का तबादला महाराजा कॉलेज में हुआ और कात्यायनी का तबादला बगल के प्रथम श्रेणी कॉलेज में हुआ।
करुणा और राव के नंजनगुड जाने की जानकारी मिलने पर कात्यायनी को करुणा से वहाँ की घटनाओं के बारे में जानने की उत्सुकता हुई। हाल ही में राजा को भी यही जानने की जिज्ञासा हुई थी। कात्यायनी की रुचि केवल जिज्ञासा ही नहीं थी, बल्कि वह अपने पूर्व परिवार और अपने जन्म दिए बच्चे के बारे में जानना चाहती थी। अपने तीसरे गर्भपात के बाद, वह चीनी के बारे में जानने के लिए बेताब थी। वह कल्पना करती कि किशोरावस्था में वह कैसा दिखता होगा। उसकी जिज्ञासा कई रूपों में प्रकट होती, जैसे कि क्या वह अपनी माँ को याद करता होगा, अपने दादा-दादी के साथ उसका व्यवहार कैसा रहा होगा, और वह अपने सास-ससुर के बारे में भी जानना चाहती थी। वह सोचती कि वे अब बूढ़े हो गए हैं, और अगर वह उनके साथ होती तो उनके लिए अच्छा होता। कभी-कभी वह सोचती कि अगर उसने घर का कामकाज संभाल लिया होता, तो उसके ससुर आराम से अपनी संध्यावंदन और पूजा-अर्चना कर पाते।
उस दोपहर वह कॉलेज से 3 बजे घर लौटी। तब तक राजा भी लौट चुका था, लेकिन किराए के लिए घर ढूंढने गया था। उसने करुणा को बताया था कि उसे सूर्यास्त तक देर हो जाएगी। राव अपनी लाइब्रेरी में गए हुए थे। करुणा यह सोचकर घर पर ही रुक गई थी कि कात्यायनी को अकेलेपन से ऊब महसूस होगी, और उसने नंजनगुड में राव द्वारा बताए गए नोट्स टाइप करने शुरू कर दिए थे। कात्यायनी के नाश्ता और चाय पीने के बाद, दोनों ने एक-दूसरे का हालचाल पूछा। फिर कात्यायनी ने पूछा, 'आप नंजनगुड गए थे। मुझे उसके बारे में बताइए।'
सब ठीक हैं।

‘सिर्फ इतना ही नहीं। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मुझे वहां के घटनाक्रमों के बारे में जानने में विशेष रुचि क्यों है। आपको कन्नड़ भाषा का ज्यादा ज्ञान नहीं है। फिर भी, कृपया मुझे वह सब कुछ बताएं जो आपको पता चला है। कुछ भी मत छिपाना।’
मुझे लगा कि वे अच्छे लोग थे। उस बुजुर्ग व्यक्ति का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव था।
‘बाकी सब कैसे हैं? मेरी सास, मेरा बेटा, लक्ष्मी?’
‘आपकी सास का निधन दो साल पहले हो गया था।’
‘क्या सच में?’ कात्यायनी न केवल शोक से व्याकुल थी, बल्कि उसके अवचेतन मन को उस सहारे के छिन जाने का भी आभास हो रहा था जो उसे सुकून देता था। उसने पूछा, ‘अब परिवार की देखभाल कौन करेगा? मेरे बेटे की देखभाल कौन करेगा?’
‘सारा काम वही बुजुर्ग व्यक्ति संभालते हैं। वे सुबह 3 बजे उठते हैं, नदी में स्नान करते हैं और शाम 6 बजे तक अपनी पूजा पूरी कर लेते हैं। लड़का इस साल माध्यमिक विद्यालय की परीक्षा दे रहा है। सुबह उठकर स्नान और संध्यावंदन करने के बाद वह पढ़ाई में जुट जाता है। तब तक उसके दादाजी खाना बनाकर उसे दोपहर का भोजन परोस देते हैं। शाम को स्कूल से लौटने के बाद उसके दादाजी उसे वेदों की शिक्षा देते हैं। फिर बुजुर्ग व्यक्ति रात का खाना बनाने में जुट जाते हैं।’
‘वह कैसा है? क्या उसे अपनी माँ याद है? क्या वह अपनी दादी की मृत्यु से बहुत चिंतित या दुखी है?’
कल रात राव और श्रोत्री टहलने गए थे। तब मैंने उस लड़के से दो घंटे से अधिक समय तक बात की। हालाँकि वह मेरी अंग्रेज़ी समझ सकता था, लेकिन उस भाषा पर उसकी पकड़ इतनी मज़बूत नहीं है कि वह धाराप्रवाह बोल सके। वह संस्कृत में जवाब दे रहा था। अब तक उसने वेदों को अच्छी तरह से सीख लिया है। वह भगवद्गीता को याद करके सुनाता है। वह रामायण और महाभारत स्वयं पढ़ सकता है और श्लोकों का अर्थ बिना किसी गलती के समझ लेता है। मुझे लगता है कि वह बहुत बुद्धिमान है। वह अपने दादाजी की साक्षात छवि है। वही लंबा कद, चौड़ा सीना और कंधे, चौड़ा चेहरा, चमकती आँखें, दोनों कानों में बालियाँ।
‘क्या उसे अपनी माँ याद है? क्या तुमने उससे यह पूछा था?’ उसने अपनी सारी जिज्ञासा इस प्रश्न में समेट ली। करुणा को कोई उत्तर सूझ नहीं रहा था। वह शर्मिंदा महसूस कर रही थी और सोच रही थी कि इसे कैसे व्यक्त करे। कात्यायनी ने कहा, ‘जो भी सच है, उसे बताने में संकोच मत करो। मुझसे वादा करो कि तुम कुछ भी नहीं छिपाओगी। बस जो कुछ तुमने देखा है, वह सब मुझे बता दो।’

मैंने उनसे पूछा, “आपकी माँ कहाँ हैं? क्या आपको याद है कि आपने उन्हें कभी देखा था?” उनके चेहरे से मुझे पता चल गया कि उन्हें यह सवाल पसंद नहीं आया। मुझे नहीं पता कि उन्हें यह पता था कि मैं उनकी माँ से संबंधित हूँ। फिर मैंने विषय बदल दिया और उनकी दादी के बारे में पूछा। मुझे लगता है कि वे अपनी दादी से बहुत लगाव रखते थे। हालाँकि उन्होंने बहुत संयम से बात की, लेकिन उनके चेहरे के भाव और आवाज़ के लहजे से मुझे यह स्पष्ट रूप से समझ आ गया। उन्होंने अपनी दादी के बारे में विस्तार से बताया—उनकी मृत्यु का कारण, उनकी अंतिम बीमारी की अवधि, अंतिम संस्कार कहाँ और कैसे हुआ, आदि। अपने दादा के प्रति उनके मन में गहरा आदर और स्नेह है। क्या वह किशोरों की तरह खुशमिजाज है, या वह हमेशा चिंताओं से ग्रस्त प्रतीत होता है?

मुझे लगता है कि जब तक उसकी दादी जीवित थीं, वह एक हंसमुख लड़का था। वह उस घर की दूसरी बुजुर्ग महिला लक्ष्मी के साथ बहुत सौहार्दपूर्ण व्यवहार करता है। वह रोज़ाना सोते समय अपना बिस्तर लक्ष्मी के बिस्तर के पास ही समेट लेता है। ऐसा लगता है कि लक्ष्मी भी उसे बहुत प्यार करती हैं। हालांकि अब उसका चेहरा उसकी उम्र के हिसाब से बहुत गंभीर दिखता है। लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि यह गंभीरता उसकी पढ़ाई में अच्छी प्रगति का परिणाम है या पारिवारिक स्थिति की चिंता का।

करुणा ने फिर श्रोत्री के बारे में बात की। ‘मुझे ऐसे व्यक्तियों के अस्तित्व का आभास था। यह रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों के मेरे अध्ययन के कारण था। मुझे सौभाग्य से यहाँ से मात्र 15 मील दूर एक ऐसे जीवित व्यक्ति को देखने का अवसर मिला जो मेरी उस कल्पना से बिल्कुल मेल खाता था। उनका ज्ञान विशाल है, उनका विवेक विस्मयकारी है। उनके चेहरे पर एकाग्रता की चमक झलकती है। और यह केवल वृद्धावस्था की परिपक्वता नहीं है। उनकी आँखें एक अंतर्मन से उत्पन्न विश्वास से दमकती हैं। फिर भी, मुझे उस सौम्य व्यक्तित्व के एक कोने में एक अथाह तपस्या का आभास होता है। मैंने महसूस किया कि दृढ़ संकल्प और उद्देश्यपूर्णता ही उनके जीवन को गति प्रदान करती है।’

करुणा द्वारा अपने देखे हुए सारे वृत्तांत सुनाने के काफी देर बाद तक कात्यायनी चुप रहीं। उनके चेहरे पर गहरी सोच-विचार झलक रहा था। मानो एक अनसुलझा दर्द भी था। यह समझते हुए कि ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है, करुणा ने कहा, ‘मैंने आपको अपनी समझ बता दी है। मुझे कन्नड़ भाषा का बहुत कम ज्ञान है। हो सकता है

मेरी समझ गलत हो। आपको इससे अनावश्यक रूप से परेशान नहीं होना चाहिए। ये सब जीवन में स्वाभाविक है।'
कात्यायनी चुप रही। करुणा यह देखने के लिए अंदर गई कि रागप्पा रात के खाने में क्या बना रहे हैं। कात्यायनी के मन में चीनी और श्रोत्री की छवियाँ उमड़ रही थीं। उसने चीनी के चेहरे की अपनी आखिरी मानसिक छवि के आधार पर कल्पना की कि अब वह कैसा दिखता होगा। करुणा द्वारा बताई गई बातें उसके मन में ताज़ा थीं, जिससे चीनी की छवि उसके मन में और स्पष्ट हो गई।
'उसे अपनी नानी से गहरा लगाव था। उसने उनकी मृत्यु के बारे में विस्तार से बताया है। लेकिन जब उससे उसकी मां के बारे में पूछा गया, तो उसने टालमटोल किया।' करुणा के ये शब्द कात्यायनी के मन में गूंज रहे थे। क्या वह मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानता? लेकिन करुणा ने कहा कि उसे लगता है कि वह अपनी मां के बारे में जानता है। अगर ऐसा है, तो मेरे बारे में उसके मन में कितना हीन भाव होगा? क्या घर में किसी ने उसे बताया होगा कि उसकी मां दुष्ट थी और किसी पुरुष के साथ भाग गई थी? उसने ये सब सोचा और उसे पूरा विश्वास था कि श्रोत्री ने इस तरह से बात नहीं की होगी। उसके विचार चलते रहे। क्या उसकी सास ने मरने से पहले उसे ये सब बताया होगा? वह गुस्सैल स्वभाव की है, इसलिए अगर उसने बताया भी हो तो कोई असामान्य बात नहीं है। वह एक संवेदनशील लड़का है। बिना बताए भी वह सब समझ जाएगा। यह स्वाभाविक है कि वह मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है। अगर मैं मर जाऊं, तो वह उन्हें छोड़कर जाने के बजाय मुझे दोषी नहीं ठहराएगा। वह मुझे उसी श्रद्धा से याद करता था जैसे अपने पिता और दादी को; शायद उससे भी अधिक प्रेम से। इस संसार में उस माँ से अधिक नीच प्राणी कोई नहीं हो सकता जिसे उसका अपना बेटा ही दोषी ठहराए। ये सारे विचार मुझे तब क्यों नहीं आए? शादी के बाद अगर मैं उसे अपने साथ ले जाती, तो आज मुझे इस स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता। वह मुझसे प्यार और सम्मान करता। वह अपने सौतेले पिता का भी आदर करता। मैंने उसे पीछे छोड़कर गलती की, जबकि मेरे ससुर ने कहा था, 'अगर तुम्हारा मन कहता है कि उसे अपने साथ ले जाओ, तो ले जाओ।' मैं उसे लेने ऊपर गई, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया। वह कौन सी शक्ति थी जिसने मुझे रोका? कौन सी भावनाएँ मुझ पर हावी हो गईं कि मैंने ऐसा किया? उस समय मेरा मन मुझे उस रास्ते पर ले गया। अब वही मन एक अलग ही भंवर में फंसा है! इस द्वंद्व की जड़ क्या है? वह सोचती रही। कोई स्पष्टीकरण नहीं

मिला।

अध्याय 21

1

राजा ने 15 दिनों में एक घर किराए पर ले लिया और दंपति वहां रहने लगे। एक हफ्ते के भीतर, राजा बैंगलोर गए, घर का सारा सामान एक ट्रक में भरकर लाए और नागलक्ष्मी और पृथ्वी को मैसूर ले आए। लक्ष्मीपुरा में स्थित घर विशाल था और चारों ओर बगीचों से घिरा हुआ था।

उनके चले जाने के बाद, राव और करुणा को ऊब महसूस होने लगी। राजा और कात्यायनी दोपहर के भोजन के समय उनका साथ देते थे; रात के खाने के बाद वे सब थोड़ी देर बातें करते... कात्यायनी रागप्पा को निर्देश देतीं और तरह-तरह के व्यंजन तैयार करवातीं। राव के बंगले में अब वही पुरानी रौनक लौट आई थी—शोध, नोट्स, पुस्तकालय की अलमारियों में झाँकते हुए गर्दनें और रागप्पा का लगातार खाना बनाना। पाँचवें खंड के लिए जानकारी संकलित करने का काम चल रहा था। इस ग्रंथ के संकलन के एकतरफ़ा काम के बीच, राव का मन एक ऐसे घटनाक्रम के बारे में सोचने लगा था जिसने हाल ही में उनके जीवन को दो भागों में बाँट दिया था।

उन्हें अक्सर श्रोत्री के शब्द याद आते थे... 'बुद्धि भी प्रकृति की एक अवस्था है। ज्ञान की खोज में लिप्त होना और ऐसी इच्छा की पूर्ति के लिए सुविधा के लिए विवाह करना भी प्रकृति का आकर्षण है। कुछ लोग शारीरिक सुख के लिए द्विविवाह करते हैं। यद्यपि पहला आकर्षण दूसरे से श्रेष्ठ है, फिर भी सिद्धांत में कोई खास अंतर नहीं है।' वे उस परिस्थिति पर चिंतन करते थे जिसके कारण उनका विवाह करुणा से हुआ। उनके बिना, ये ग्रंथ इतनी जल्दी संकलित नहीं हो पाते। काश, उन्हें कोई ऐसा सहायक मिल जाता जो उनकी तरह उनकी सहायता करता! लेकिन ऐसा कोई व्यक्ति उपलब्ध नहीं था। भला कौन इसे अपना जुनून मानकर इसके लिए अपना जीवन समर्पित कर देगा?

उनकी स्मृति में एक बात हमेशा बसी रहती थी, जिसका अनुभव वे निरंतर करते थे: जब भी करुणा उनकी उपलब्धि की प्रशंसा करतीं, उनका मन गर्व से भर उठता था। उनके शब्द विश्व भर के विख्यात विद्वानों द्वारा दी गई प्रशंसाओं से कहीं अधिक प्रेरणादायक होते थे। जब भी वह कहतीं, 'यह हमारा काम है', उनका हृदय आनंद से भर उठता था।

जब रात के खाने के बाद टहलते हुए उन्होंने किसी विषय पर प्रभावशाली ढंग से बात

की, तो करुणा ने धीरे से उनका हाथ दबाया; और जब घर लौटने के बाद उन्होंने उनकी बातों को नोट किया, तो उनके मन में कई बार यह ख्याल आया कि करुणा ही उनकी 'सच्ची पत्नी' हैं। आखिरकार, उनके मन में यह सवाल उठने लगा कि क्या उन्हें ऐसा ही महसूस होता अगर उनका सहायक पुरुष होता; क्या सहायता के अलावा, उनका मन भी ऊपर बताए गए तरीके से करुणा से बंधा हुआ नहीं था?

साथ ही श्रोत्री के वैवाहिक जीवन की यादें भी ताजा हो गईं। 'वे हमेशा संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन करते थे। उन्होंने वेदांत, तर्क, मीमांस, धर्मशास्त्र आदि का गहन अध्ययन किया था। उनकी पत्नी नागु की आधी भी शिक्षित नहीं थीं। फिर भी, उन्हें मेरी तरह किसी और महिला साथी की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्होंने मेरी तरह कोई ग्रंथ नहीं लिखा। अगर श्रोत्री मेरी जगह होते तो क्या होता? हालांकि यह तुलना अनावश्यक थी, लेकिन यह स्पष्ट था कि वे सब कुछ स्वयं ही संभाल लेते। वे ज़्यादा से ज़्यादा एक टाइपिस्ट रख लेते। बाकी सभी काम तो वे स्वयं ही कर लेते। वे कभी भी मेरे रास्ते पर नहीं चलते।'

राव ने हाल ही में नागलक्ष्मी की यादों को ताजा किया। वह अब उनके बंगले से लगभग आधा मील दूर रहती थीं। वह अपने पति के साथ रहने और पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ उनकी सेवा करने के लिए कितनी उत्सुक थीं! अपने ऊपर हुए सभी अन्याय को भुलाकर, उन्होंने स्वयं उनके साथ रहने के लिए वापस आने का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर उनके और उनकी प्रतिद्वंद्वी पत्नी के लिए खाना बनाया और उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखा। राव को नागलक्ष्मी के गृहणी गुण शुरू से ही याद थे। वह इस बात का पूरा ध्यान रखती थीं कि उनके पति हमेशा भरपेट भोजन करें। भले ही उन्हें यह पसंद न हो, फिर भी वह उनके सिर और शरीर की अरंडी के तेल से मालिश करती थीं और उन्हें भाप स्नान कराती थीं। यद्यपि वह अकादमिक रूप से शिक्षित नहीं थीं, फिर भी उनका व्यक्तित्व दृढ़ था। घरेलू मामलों में, हर कोई उनके आदेश का पालन करता था। उन्हें अपना अधिकार जताने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि जो भी उनके प्रभाव में आता था, वह उनकी निष्ठा की सराहना किए बिना नहीं रह सकता था। उन्होंने प्रेम, विश्वास और सेवा के बल पर यह पुण्य अर्जित किया था। वह जिससे भी मिलतीं, उनमें मातृत्व का भाव हमेशा झलकता था। यही उत्साह था जिसने उनके व्यक्तित्व को मजबूती प्रदान की थी।

राव को इस बात का गहरा अफसोस था कि कहीं उन्हें करुणा को हमेशा के लिए खुद से दूर न रखना पड़े। जब वे बीमार थे, तो उन्होंने करुणा से यहीं रुकने का अनुरोध

किया था। उन्होंने देखा था कि करुणा इस प्रस्ताव से प्रसन्न हुई थी। अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान उनका करुणा के साथ घनिष्ठ संबंध रहा। करुणा अपने हर छोटे से छोटे काम में भी अपना दिल और आत्मा उनके लिए समर्पित कर देती थी। अस्पताल से घर लौटने के बाद वे पूरी तरह से अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गए; उन्होंने करुणा से ज्यादा बात नहीं की। उनका मानना था कि करुणा की उपस्थिति ही उनके इस तरह के असमंजस का कारण थी। अंततः करुणा ने राव के तीनों के एक ही छत के नीचे रहने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। जब वे सब बेंगलुरु के लिए रवाना हुए, तो राव ने नागू का चेहरा देखा जब वह उनके चरणों में गिर पड़ी। उसका चेहरा बेचैनी से भरा हुआ था और मुरझाया हुआ था। निराशा से उसकी आँखों की चमक फीकी पड़ गई थी। फिर भी वह उनके चरणों में गिरी और बिना उन्हें कोई शर्मिंदगी पहुँचाए चली गई। उस घटना ने राव के दिल को छलनी कर दिया था।

इस द्वंद्व से निकलने का रास्ता क्या है? इन दो शक्तियों में से, मुझे किसका साथ देना चाहिए, जिसके लिए मुझे दूसरी शक्ति को छोड़ना पड़े? अध्ययन और उस ग्रंथ को लिखना ही मेरी जीवनरेखा है। नागू की स्मृति मेरे भीतर आग की तरह जल रही है। और उस स्मृति की हवा से यह आग और भी भड़क रही है। मैं इस पीड़ा से कैसे बचूँ? क्या मैं अपने इस प्रेमपूर्ण कार्य और करुणा को छोड़कर नागू के पास चला जाऊँ? या, जैसा करुणा ने सुझाव दिया, क्या मैं उसे किसी दूसरे घर में ठहरा दूँ, या उसे यहीं छोड़कर नागू के घर चला जाऊँ? उसने कई बार इन बातों पर विचार किया था। लेकिन अपने ग्रंथ को पूरा करने के लिए उसे लगभग हर दिन करुणा के साथ रहना आवश्यक था। जब भी वह अपने शोध को छोड़ने के बारे में सोचता, तो श्रोत्री के शब्द उसकी स्मृति में आ जाते: किसी भी चुने हुए मार्ग पर, अंततः द्वंद्व का सामना करना पड़ता है। यदि वह चुने हुए मार्ग से पीछे हटता है, तो उसे एक अलग द्वंद्व का सामना करना पड़ सकता है। राव को उस भविष्यवाणी की सत्यता पर कोई संदेह नहीं था। उन्हें भली-भांति पता था कि यदि वे अपना ग्रंथ लिखना छोड़ दें या उसकी प्रगति की गति धीमी कर दें, तो उन्हें शांति नहीं मिलेगी। जब वे अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर विचार करते, तो उनका मन इस कार्य को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए उत्सुक हो जाता। उनके भीतर से एक आवाज़ आती थी कि उनका जीवनकाल लंबा नहीं है। इसलिए वे अपने जाने से पहले अंतिम खंड को पूरा करने के लिए अत्यंत तत्परता से काम करते रहे।

उनकी मानसिक पीड़ा बढ़ती गई और उनका शारीरिक स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बिगड़ता गया।

2

उन्हें कोई बीमारी नहीं थी, लेकिन उनकी शारीरिक शक्ति कम होती जा रही थी और शोध में रुचि भी घट रही थी। यहाँ तक कि उन्हें खाने में भी रुचि नहीं रह गई थी। दोपहर का भोजन पचाने में कठिनाई होने के कारण वे रोटी और दूध का सेवन करने लगे थे। कई बार, जो कुछ वे पढ़ते थे, वह उनके मन में नहीं बैठ पाता था। उनका मन नागलक्ष्मी की यादों में खो जाता और सुन्न पड़ जाता। कभी-कभी, नागलक्ष्मी और करुणा दोनों ही उनकी स्मृतियों में उभर आतीं और उनके दिमाग को झकझोर देतीं।
उनकी शारीरिक स्थिति बिगड़ती देख करुणा उन्हें डॉक्टर के पास ले गई। विस्तृत जांच के बाद डॉक्टर ने कहा, 'कोई भी चिकित्सीय समस्या नहीं है। ऐसा लगता है कि दिल की धड़कन थोड़ी अनियमित है, लेकिन इससे कोई खतरा नहीं है। कई स्वस्थ लोगों के दिल में भी ऐसा ही होता है। आराम करें और छुट्टी लें। मैं आपको टॉनिक और कुछ गोलियां दूंगा।'
राव छुट्टी पर जाने के लिए राज़ी नहीं हुए। उन्होंने कहा कि बेहतर होगा कि वे अंतिम खंड को जल्द से जल्द पूरा कर लें, छुट्टी मनाने या आराम करने में समय बर्बाद न करें। उनके अंतर्मन ने उन्हें बताया कि वे ज़्यादा दिन जीवित नहीं रह पाएंगे। पाँचवाँ खंड जल्द से जल्द पूरा करने का उनका संकल्प और भी मज़बूत हो गया। लेकिन उनकी शारीरिक शक्ति उनका साथ नहीं दे रही थी। करुणा उनकी शारीरिक शक्ति में आई गिरावट से व्याकुल थीं। उन्हें गुस्सा आया और उन्होंने कहा, 'डॉक्टर की बात क्यों नहीं सुनते? आप इतने अड़े क्यों हैं?' दो दिन तक उन्होंने भी दोपहर का भोजन नहीं किया। उनके चेहरे पर उदासी देखकर करुणा यह समझने की कोशिश करने लगीं कि उन्हें क्या तकलीफ़ है। एक रात, वे रात के खाने के बाद टहलने निकले। वे ठीक उसी जगह पहुँच गए जहाँ पहले उन्होंने करुणा से कहा था कि वे नागलक्ष्मी को यहीं रखें। यह महज़ एक संयोग था कि वे ठीक उसी जगह पहुँच गए। उस दिन की बातचीत करुणा को तुरंत याद आ गई। तब उन्हें एहसास हुआ कि राव ने उस बात को गंभीरता से लिया था और चुपचाप उसे सह रहे थे। उस दृश्य को देखकर राव के मन में नागलक्ष्मी की यादें ताजा हो गईं। करुणा ने पूछा, 'आप किसी चिंता से परेशान हैं, और इसी वजह से आपका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। क्या आप इसे मेरे साथ साझा नहीं कर सकते?'
‘चिंता की क्या बात? बिलकुल भी नहीं।’

मुझे अंदाजा हो गया है। चलो फिर।
राव ने धीरे से गर्दन झुकाकर करुणा के चेहरे की ओर देखा। दूर लगे लैम्पपोस्ट की हल्की रोशनी में उन्हें समझ आया कि करुणा का चेहरा गंभीर था। उन्होंने कहा, 'अगर तुम्हें पता है तो मुझसे क्यों पूछ रही हो? अगर तुम्हें स्थिति का पता है तो समाधान भी तुम्हारे भीतर ही है। मेरे बस में कुछ नहीं है।'
करुणा चुप हो गई। उसका दिमाग सुन्न पड़ गया। वह सोचने-समझने की क्षमता तक खो बैठी। राव ने अपनी बात रखी। 'जब मैं बीमार था, वह मुझसे मिलने आई और मेरी बहुत अच्छी तरह से सेवा की। यह महज़ एक कर्तव्य नहीं है। यह एक हिंदू पत्नी की पूजा है जो अपनी संस्कृति से मिली श्रद्धा के साथ करती है। मुझे उसकी उपेक्षा करने का पछतावा है। "जो हुआ सो हुआ। कृपया मुझे कम से कम अब आपकी सेवा करने का सौभाग्य तो दें," उसने अस्पताल में मुझसे कहा था। वह हम दोनों के लिए खाना बनाने को तैयार थी। उसने खुद को सिर्फ़ एक पत्नी समझने से कहीं आगे बढ़कर काम किया है। मुझे लगता है कि वह हमारे लिए माँ का दर्जा हासिल कर रही है। जब मैंने उसे हमारे साथ रहने का प्रस्ताव दिया, तो आपने मना कर दिया। क्या मुझे इससे ज़्यादा परेशान करने वाली कोई और बात चाहिए?'
यह कहकर वह चुप हो गया। करुणा भी चुपचाप बैठी रही। राव ने शांति भंग करने का फैसला किया। 'नंजनगुड से निकलने से एक दिन पहले, क्या मैं श्रोत्री के साथ टहलने नहीं गया था? हमने उसी नदी के किनारे इसी मुद्दे पर चर्चा की थी। मैंने उसके सामने अपने मन का सारा दुख बयां कर दिया। उसने कहा, "द्विविवाह प्रथा से घृणा करना आधुनिकता का एक पहलू है। मान लीजिए कि यह पूरी तरह गलत नहीं है। उसने एक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पहले से विवाहित पुरुष से विवाह करने की सहमति दी। अपने लक्ष्य को पूरी प्राथमिकता देते हुए, वह अपने आंतरिक संघर्षों को नियंत्रित कर सकती थी और दूसरी पत्नी के साथ रहने के लिए राजी हो सकती थी। चाहे किसी व्यक्ति का जीवन हो या सामाजिक परिवेश, हर व्यवस्था अद्वितीय अवसर प्रदान करती है। लेकिन असाधारण परिस्थितियों में, ऐसी व्यवस्थाओं को अनुचित महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। यदि जीवन का मूल उद्देश्य स्पष्ट हो, तो उसके अनुरूप अन्य पहलुओं को व्यवस्थित करना कठिन नहीं होना चाहिए।"'
राव ने फिर पूछा, 'अब मुझे बताओ। क्या तुम्हारे मन में तुम्हारे जीवन का मूल उद्देश्य स्पष्ट है?'

करुणा कुछ नहीं बोली। दोनों फिर चुप हो गए। आधे घंटे बाद राव उठे और बोले, 'उठो, चलो चलते हैं।' धुंधलके में करुणा उनका हाथ पकड़कर उनके साथ चल पड़ी। उस रात, हमेशा की तरह, राव अपने अध्ययन कक्ष में चले गए। करुणा को कुछ टाइपिंग का काम था। वह दूसरे कमरे में बैठकर उसे कर रही थी। लेकिन उसका मन काम पर ध्यान लगाने के मूड में नहीं था। उसने आधे पन्ने की टाइपिंग में आठ गलतियाँ कर दी थीं। उसने कीबोर्ड से अपनी उंगलियाँ हटाईं और चुपचाप बैठ गई। उसका मन राव के शब्दों पर विचार कर रहा था। क्या मेरे जीवन का मूल उद्देश्य मेरे मन में स्पष्ट है? —वह खुद से बार-बार यही सवाल पूछ रही थी। उसका ध्यान अपने पति के बिगड़ते स्वास्थ्य की ओर गया। उसने यह भी देखा था कि पाँचवें खंड का काम धीमी गति से आगे बढ़ रहा था। उसका मन नागलक्ष्मी के स्वभाव और गुणों पर चिंतन कर रहा था। जहाँ तक वह जानती थी, नागलक्ष्मी कोई दुष्ट स्त्री नहीं थी। उसने यहाँ एक महीने तक रहकर उसके व्यवहार को गौर से देखा था। उसका चेहरा दुख से उदास था। वह एक रसोइया की तरह रसोई में ही सिमटी हुई थी, लेकिन उसी घर में उसे रानी की तरह राज करना था, क्योंकि परंपरा के अनुसार उसका विवाह घर के मुखिया से हुआ था। उसकी गलती क्या थी? उसे राव के शब्द याद आए, 'वह हम सबकी माँ बनने की अवस्था को प्राप्त कर रही है।' उसे सचमुच लगा कि नागलक्ष्मी नारीत्व के विकास में उससे भी ऊंचे स्तर पर पहुँच चुकी है। तभी पृथ्वी की यादें ताजा हो गईं।

यह मामला उसके मन में उथल-पुथल मचाता रहा। इससे जुड़ी भावनाओं की उथल-पुथल कहीं अधिक थी। एक सप्ताह बाद, उच्चतर अवस्था प्राप्त करने की प्रसन्नता में, लेकिन एक ऐसी उथल-पुथल के साथ जिसका अर्थ वह स्वयं समझ नहीं पा रही थी, उसने राव से कहा, 'उसे यहाँ ले आओ। हम तीनों यहाँ साथ रहने लगते हैं।'

राव को पहले तो उसकी बातों पर यकीन नहीं हुआ। उसने ध्यान से उसके चेहरे को देखा। उसकी आँखों में दिख रही शांत और गंभीर भाव-भंगिमा ने राव को आश्वस्त कर दिया कि वह सच कह रही है।

3

जब एक आशाजनक इच्छा अधूरी रह गई, तो नागलक्ष्मी का मन व्याकुल हो गया। यदि अस्पताल में राव की प्रतिक्रिया नकारात्मक होती, तो उसकी इच्छा को बल नहीं मिलता। लेकिन उन्होंने भावनात्मक रूप से उससे बात की थी। यह प्रस्ताव रखने से

पहले, वह अपने अहंकार से हिचक रही थी। लेकिन उसने अपने अहंकार को त्यागकर, राव के अच्छे स्वास्थ्य की देखभाल करने और उनकी सेवा करने की अपनी दिली इच्छा को बलि चढ़ा दिया और उनसे अपने साथ रहने का प्रस्ताव रखा। नागलक्ष्मी के लिए यह सुखद नहीं था कि वह एक ऐसी प्रतिद्वंद्वी पत्नी के साथ रहे जो राव से विवाह के 12 साल बाद आई थी। अपने पति की सेवा को प्राथमिकता देते हुए, उसने इस बात को नजरअंदाज कर दिया था। जब राव अस्पताल से लौटने के बाद भी इस बारे में बात नहीं करते, तो उसकी निराशा दोगुनी हो गई। मैसूर से प्रस्थान करने की पूर्व संध्या तक, वह इस उम्मीद में थी कि राव उसे अपने पास रखने का मुद्दा उठाएंगे। उसकी इच्छा थी कि कम से कम वह राजा से 'नागलक्ष्मी को यहीं छोड़ने' के लिए कहें। कुछ भी नहीं हुआ, और उसे रोते हुए जाना पड़ा।

बैंगलोर लौटने के कुछ दिनों बाद तक वह जीवन से ऊब चुकी थी। वह सोचती रहती थी कि क्या उसका जीवन इतना तुच्छ है! कई दिनों तक उसने नियमित रूप से भोजन नहीं किया। यह सब जानकर राजा और कात्यायनी को बहुत दुख हुआ। राजा को लगा कि यह उसके भाई की चालाक नई पत्नी की करतूत है, न कि उसके भाई की। लेकिन वह लाचार था। उसने अपनी भाभी की पहले से कहीं अधिक देखभाल करना शुरू कर दिया। नागलक्ष्मी को अच्छी तरह जानने के कारण कात्यायनी का मन भी नरम पड़ गया। जब उसने देखा कि नागलक्ष्मी समय पर भोजन नहीं कर रही है, तो उसने कहा, 'बहन, राम नाम की कितनी किताबें पढ़ ली हैं?'

मैंने गिनती नहीं की है।

‘मैसूर से लौटने के बाद से आपने कुछ भी रटकर नहीं लिखा है। ऐसा क्यों?’

‘भगवान किस तरह मदद करेंगे? छोड़ दो,’ नागलक्ष्मी ने उतावलापन व्यक्त किया।

बहन, हमें अपने पिछले जन्मों के बुरे भाग्य के लिए भगवान को नहीं भूलना चाहिए। क्या मुझे तुम्हें यह बताना पड़ेगा? हम अब अपने बीते जीवन के कर्मों का फल भोग रहे हैं। यदि हम भगवान से प्रार्थना करने में लापरवाही बरतेंगे, तो अगले जन्म में भला कैसे संभव होगा? तुम्हारी रटने की आदत, रामा, तुम्हारे जीजाजी के लिए शुभ संकेत देगी। अब से तुम घर के काम छोड़ो और लिखना शुरू करो। मैं पृथ्वी से रंग पाउडर लाने और स्याही की दवात भरने के लिए कहूँगी। कितनी किताबें लिखनी बाकी हैं?

नागलक्ष्मी को लगा कि इतने दिनों तक राम का पाठ करना बंद करना उनकी गलती थी। उन्होंने राम से अपनी गलती माफ करने की प्रार्थना की। दोपहर के नाश्ते के लिए चूल्हा जलाते समय उन्होंने रात के खाने के लिए दाल भी बनानी शुरू कर दी। खाना

बनाने का काम संभालते हुए कात्यायनी ने कहा, 'आप राम का पाठ कीजिए।' कुछ दिनों में नागलक्ष्मी का मन शांत हो गया। 'चाहे कोई मुझे धोखा दे दे, मेरे राम कभी नहीं छोड़ते,' उनके मन ने उन्हें दिलासा दिया। 'मैं पहले ही 40 साल की हो चुकी हूँ। मुझे और क्या चाहिए? राजा, पृथ्वी और कात्यायनी का भला हो तो ही काफी है। मैसूर में वे दोनों भी समृद्ध हों,' उन्होंने प्रार्थना की। उन्होंने मैसूर की घटना को यथासंभव भूलने की कोशिश की। उन्हें पता ही नहीं चला कि उनके मन में अपने पति के प्रति एक तरह की कड़वाहट पैदा हो गई थी।

जब राजा और कात्यायनी का तबादला मैसूर हो गया, तो नागलक्ष्मी उनके साथ जाने के मूड में नहीं थीं। कात्यायनी भी मैसूर जाने के लिए तैयार नहीं थीं। हालाँकि वे पहले बैंगलोर को लेकर आशंकित थे, लेकिन राजा और पृथ्वी जल्द ही शहर के माहौल में ढल गए। लेकिन आखिरकार उन सभी को मैसूर जाना ही पड़ा। पृथ्वी ने यहाँ एक कॉलेज में दाखिला लिया। शुरुआती कुछ दिनों में नागलक्ष्मी का मन अशांत रहा। अस्पताल और बंगले की तस्वीरें उनकी यादों में बार-बार उभरतीं और उनके मन का संतुलन बिगाड़ देतीं। उन्होंने अपने मन को शांत करने की कोशिश की और रामा की रचना में जुट गईं। तब तक वे 45 लाख से अधिक शब्द लिख चुकी थीं और कुल 110 नोटबुक भर चुकी थीं। इसे तेजी से पूरा करने और अपने निधन से पहले एक करोड़ का लक्ष्य हासिल करने का संकल्प लेकर, उन्होंने इसे और अधिक समय देना शुरू कर दिया। शनिवार की पूजा उन्होंने और अधिक ध्यानपूर्वक की।

एक दोपहर, वह बरामदे में बैठी लिखने में मग्न थी। घर में कोई और नहीं था। सब अपने-अपने कॉलेज गए हुए थे। किसी ने आंगन का दरवाजा खोला और अंदर आया। उसने ऊपर देखा और अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सकी। राव आ रहे थे। जब तक उसे समझ आया कि क्या हो रहा है, तब तक वह घर में प्रवेश कर चुके थे। नागलक्ष्मी स्तब्ध रह गई। उसने अपनी लेखनी, स्याही की दवात और स्याहीदानी उठाई और अंदर चली गई। राव बरामदे में एक कुर्सी पर बैठे थे। अतीत की यादों से उसका मन आहत था। दस मिनट चुपचाप बैठने के बाद, राव ने 'नागु' कहकर पुकारा। उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उन्होंने फिर पुकारा। फिर भी अंदर से कोई जवाब नहीं आया। उन्होंने फिर कहा, 'क्या तुम मुझे सुन नहीं सकती? मैं तुम्हें लेने आया हूँ।'

अब भी वह कुछ नहीं बोली। जब राव ने वही बात दोहराई, तो उसने मन ही मन कहा, 'मैं खुद ठीक हूँ। मुझे किसी को अपने साथ ले जाने की ज़रूरत नहीं है।'

‘नागु, गुस्से में ऐसा मत कहो। तुम्हारे बैंगलोर जाने के बाद मैंने बहुत दुख मनाया। अब वह मान गई है।’
‘मुझे किसी की सहमति के लिए वहां जाने की जरूरत नहीं है। मैं कहीं नहीं जाऊंगी।’ उसकी आवाज न केवल कांप रही थी, बल्कि अनजाने में ही बहुत मुखर भी थी।
‘ऐसा मत कहो, नागु। ज़रा सोच लो। मैं यहाँ हूँ...’ भीतर से आई उसकी आवाज़ ने उसे बीच में ही रोक दिया। ‘कोई भी आए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने इस बारे में पूरी तरह सोच लिया है।’
राव पांच मिनट तक चुप रहीं। वह घर से बाहर नहीं निकलीं। उन्होंने कुछ कहा भी नहीं। अंत में राव ने कहा, 'मैं जा रही हूँ। लेकिन इस पर विचार कर लेना। मैं राजा को भी बता दूँगी। अगर आप चाहें तो मैं उन्हें आपको आमंत्रित करने के लिए भेज दूँगी।'
‘राजा सब कुछ जानता है। सिर्फ़ अपना ही नहीं, मैं किसी की भी बात नहीं मानूंगी। अगर तुमने उसे बताया तो तुम्हारी इज़्ज़त चली जाएगी। मुझे बुलाने के लिए किसी को यहाँ आने की ज़रूरत नहीं है। मैं घर की नौकरानी बनकर अपना गुज़ारा कर सकती हूँ। इस तरह मैं इज़्ज़तदार ज़िंदगी जी सकती हूँ। तुम यहाँ से जाओ,’ उसके शब्द लगातार उसके भीतर से निकलते रहे। एक मिनट तक राव वहीं खड़ा रहा। फिर वह घर से बाहर निकल गया। जब नागलक्ष्मी ने आँसुओं की आवाज़ सुनी तो वह फूट-फूटकर रोने लगी।
आधे घंटे बाद, कात्यायनी कॉलेज से लौटी। नागलक्ष्मी को देखकर उसने पूछा, 'बहन, क्या तुम रो रही थी?' नागलक्ष्मी ने कुछ नहीं कहा। कात्यायनी सांत्वना के कुछ शब्द कहने के अलावा और कुछ नहीं कर सकी।
जब राव अपने भाई के घर से लौटा, तो करुणा ने पूछा, 'उसने क्या कहा?'
‘उसने आने से साफ इनकार कर दिया। मुझे इस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी।’
‘क्या मैं जाकर उसे आमंत्रित करूँ?’
‘नहीं। कोई फायदा नहीं।’ वह चुप हो गया।
एक सप्ताह तक राव का मन अशांत रहा। तब तक उन्हें यह विश्वास था कि नागलक्ष्मी पर पति का अधिकार उन्हीं के पास है। अब यह विश्वास टूट चुका था। उनका मन किसी अनमोल चीज़ को खोने के दर्द से व्याकुल था। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो वे फिर से अनाथ हो गए हों, ठीक वैसे ही जैसे विवाह से पहले अनाथालय में थे। उन्होंने आज तक ऐसी बेबसी, ऐसी शक्तिहीनता कभी महसूस नहीं की थी। उनके मन में यह बात घर कर

गई थी कि जीवन भर उन्होंने जो भी ज्ञान, उपलब्धियाँ और प्रसिद्धि हासिल की थी, सब व्यर्थ हो गई थी।
लेकिन उन्होंने उन भावनाओं को अपने मन पर हावी नहीं होने दिया। पाँचवें खंड ने उनका सारा ध्यान खींच लिया। उनकी अंतरात्मा बार-बार कह रही थी कि वे अब ज्यादा दिन नहीं जिएंगे। अंतिम खंड पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी सारी ऊर्जा इकट्ठा करते हुए, एक दिन उन्होंने करुणा से कहा, 'अब हमें और भी तेज गति से काम करना होगा और इसे पूरा करना होगा। अब तुम पर पहले से कहीं अधिक बड़ा दायित्व है।'
उसने पूरी लगन से काम किया।

अध्याय 22

1

कात्यायनी उस शक्ति के बारे में सोचती रहती थी जिसने उसके जीवन को दो भागों में बाँट दिया था और उसे शाश्वत द्वैत के जीवन के लिए नियत कर दिया था। यह महज़ असंबद्ध दार्शनिक सिद्धांतों का टकराव नहीं था। बल्कि, यह एक ऐसा द्वैत था जिसने उसके हृदय, भावनाओं और मन को चीरते हुए उसके जीवन को चीर डाला था। नंजनगुड को छोड़ते समय जो रुख़ उचित लगता था, अब अनुपयुक्त लगने लगा था। जब वह अपने पति के बलिदान को याद करती, तो खुद को यह कहकर दिलासा देती कि वह किसी अयोग्य पुरुष के साथ भागकर नहीं गई थी। लेकिन जब करुणा से उसे अपनी सास के निधन और घर की वर्तमान स्थिति के बारे में पता चला, तो उसका मन बेकाबू हो गया। एक ओर, अपने बच्चे की यादें उसे सतातीं और वह चीनी को देखने के लिए तड़पती, तो दूसरी ओर, श्रोत्री का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ जाता। अपनी पत्नी को खोने के बाद भी, वह इस उम्र में भी अपने पोते के लिए कर्तव्यबद्ध जीवन जी रहा है! "दृढ़ संकल्प और उद्देश्यपूर्णता उनके जीवन को गति प्रदान करते हैं," वह श्रोत्री के बारे में करुणा के शब्दों को याद करतीं। वह उनके दृढ़ संकल्प की विशालता और जीवन में उनकी आस्था की गहराई से भली-भांति परिचित थीं। उन्होंने इस मार्गदर्शक सिद्धांत का पालन करते हुए अपना जीवन व्यतीत किया कि यदि हम स्वयं को निःस्वार्थ रूप से धर्म के प्रति समर्पित कर दें, तो वही धर्म हमारा सहारा बनेगा। उनकी कर्तव्यनिष्ठा इसी समर्पण की अभिव्यक्ति है। उनके जीवन में दोहरी अभिव्यक्ति, दोहरी धारणा और दोहरे उद्देश्य के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। वे अपने जीवन के लक्ष्य के विपरीत सभी प्रभावों को प्रभावी ढंग से दूर रखते हैं और अपने एकमात्र लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहते हैं। यही उनके मन की शांति का रहस्य है। उनके विचार इसी प्रकार आगे बढ़ते रहे।

अपने जीवन के एक विशेष दौर में, उनका मानना था कि सदा-जीवंत और जीवंत प्रकृति पर कृत्रिम धर्म थोपना धर्म के विरुद्ध है। प्रकृति की मूलभूत बुराई शक्तियों ने उनके मन को ऐसा सोचने के लिए विवश किया था। तब उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि मन भी प्रकृति का ही एक पहलू है। हाल ही में, उन्हें यह विचार आने लगा कि यदि वे अपने

कर्मों को उस धर्म के अनुरूप ढालतीं जो मन की सीमाओं से परे है, तो उनके लिए बेहतर होता। वे श्रोत्री के शब्दों को याद करतीं, “एक वंश के बीज को निरंतर पोषित करने के लिए ही दूसरा वंश अपना आश्रय देता है। आश्रय उस बीज को ग्रहण करके और उसे पौधे के रूप में विकसित करके मुक्ति प्राप्त करता है।” वे इस बात पर खेद व्यक्त करतीं कि दूसरे वंश के प्रति अपनी निष्ठा में परिवर्तन के कारण वे श्रोत्री परिवार के प्रति अपने दायित्वों को निभाने में विफल रहीं। उसे यह एहसास होने लगा कि अगर उसने अपनी बुजुर्ग सास-ससुर की सेवा की होती और अपनी संतान की देखभाल की होती, तो उसे इस तरह के दोहरेपन का सामना नहीं करना पड़ता।

गर्मी की छुट्टियों के बाद कॉलेज खुल गया। प्रवेश प्रक्रिया जारी होने के कारण कक्षाएं नियमित रूप से नहीं चल रही थीं। जून की हल्की बारिश शुरू हो चुकी थी। कात्यायनी छाता लिए कॉलेज की ओर चल पड़ी। राजा के अनुपस्थित रहने के दौरान थिएटर एसोसिएशन निष्क्रिय पड़ा था, लेकिन मैसूर लौटने पर उसने फिर से सक्रियता दिखाई। आजकल वह शैक्षणिक वर्ष के पहले नाटक के अभ्यास सत्र के लिए सुबह जल्दी साइकिल से कॉलेज जाते थे। हल्की बारिश कात्यायनी को नंजनगुड की याद दिलाती थी। कपिला नदी पूरे उफान पर होती। 16 साल पहले इसी मौसम में उनके पहले पति नंजुंडा श्रोत्री इसी नदी में डूब गए थे। वह मन ही मन यह कामना करती थीं कि अगर वह जीवित होते तो उनके जीवन में यह दोहरापन न होता। जब भी उनके पहले पति का ख्याल आता, चीनी की यादें उन्हें सता देतीं। एक बार उन्होंने नंजनगुड जाने, चीनी से मिलने, ससुर के चरणों में प्रणाम करने और उनसे मन की शांति का आशीर्वाद मांगने का सोचा। उसे भी इसी बात का डर था, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि उसका जवाब कभी कड़वा नहीं होगा। उसे विश्वास था कि अगर वह पश्चाताप करते हुए उसके चरणों में गिरेगी, तो वह अपना हाथ उसके सिर पर फेरकर उसे आशीर्वाद देगा। वह चीनी से भी मिल सकती थी। उसने सोचा कि अगर वह बीच-बीच में वहाँ जाती रहेगी तो उसे मन की शांति मिलेगी। ये विचार कुछ दिनों तक उसके मन में रहे, लेकिन वह जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। अब कक्षाओं का समय पूरी तरह से शुरू हो चुका था। पाठ्यक्रम में व्यस्त होकर मन को शांति मिलने की उम्मीद में, उसने आने वाले सत्र की तैयारी शुरू की और कॉलेज के लिए निकल पड़ी। एक पूर्व शिक्षक के निधन की खबर आई थी और उनकी याद में कॉलेज ने उस दिन छुट्टी घोषित कर दी थी। उसे कॉलेज पहुँचने के बाद इस बात का पता चला। छात्र जा रहे थे; शिक्षकों के कमरे में भी कोई नहीं था। बाहर हल्की बारिश तेज हो रही थी। वह थोड़ी देर वहीं बैठी रही। उसका मन

आज नंजनगुड जाने के लिए तड़प रहा था। वह इतनी बेचैन थी कि अगर आज नहीं पहुंची तो उसे लगा कि वह पागल हो जाएगी। ज्यादा सोचे बिना उसने किताबें उस कमरे की अलमारी में रखीं और बाहर निकल गई। हल्की बारिश रुकी नहीं थी। छाता खोलकर वह सीधे चामराजपुरा रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ी। छात्रों का एक समूह नंजनगुड जा रहा था। आधे घंटे बाद एक ट्रेन आई। वह महिला डिब्बे में बैठ गई।
ट्रेन के चलते ही उसके छात्र जीवन की यादें ताज़ा हो गईं। उसने खुद एक छात्रा के रूप में दो साल से अधिक समय तक इसी ट्रेन में सफर किया था। तब से ही उसका जीवन एक अलग ही मंजिल की ओर बढ़ रहा था। ट्रेन के दक्षिण मैसूर स्टेशन पार करते ही चामुंडी पहाड़ी दिखाई देने लगी। बादलों से घिरे आकाश के नीचे, पहाड़ी और भी घनी लग रही थी, मानो मानो वह वैभव का साक्षात रूप हो। उसे वह दिन याद आया जब वह वहाँ अकेली थी। उसने सोचा कि अगर उसने उस दिन पहाड़ी की चोटी पर लिए गए अपने संकल्प पर कायम रहती, तो वह आज इस विकट परिस्थिति में नहीं होती। पहाड़ी को देखते ही उसे श्रोत्री की याद आ गई। ट्रेन कडाकोला में रुकी और फिर से अपनी यात्रा शुरू करते ही वह कपिला नदी पर बने पुल पर चल पड़ी। उसने नदी का पूरा नज़ारा देखा; वह अपनी हमेशा की तरह शान से बह रही थी। दोनों ओर के मैंग्रोव वन पहले जैसे ही थे। दूर स्थित मंदिर और स्नानघर अपने ऐतिहासिक काल के साक्षी थे। चार मिनट में ट्रेन नंजनगुड स्टेशन पर पहुँची और रुक गई। कात्यायनी उतरी, लेकिन उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह प्लेटफार्म पर तब तक खड़ी रही जब तक कि सभी छात्र और अन्य लोग जो ट्रेन में सवार हुए थे, स्टेशन से बाहर नहीं निकल गए। उसे स्टेशन से बाहर निकलकर शहर जाने में डर लग रहा था। जब वह 15 मिनट तक असमंजस की स्थिति में खड़ी रही, तभी टिकट परीक्षक उसके पास आया और बोला, 'मुझे आपका टिकट दिखाइए। आप कहाँ जा रही हैं?' उसने अपने हाथ में मौजूद टिकट उसे दिया और स्टेशन से बाहर निकल गई। पहचाने जाने के डर से वह सिर झुकाए चलती रही, लेकिन अपनी आँखों के कोनों से दोनों ओर के घरों को देखती रही। उस समय उस पूरी सड़क पर कोई नहीं था। वह आगे बढ़ी और उस घर के दरवाजे पर पहुँची जो कभी उसका अपना घर हुआ करता था।
दरवाजा बंद तो था, पर ताला नहीं लगा था। उसे याद आया कि मानसून के मौसम में इस बड़े घर का मुख्य दरवाजा हमेशा बंद ही रहता था। सीढ़ियों पर गीले पैरों के निशान देखकर वह समझ गई कि कोई जूते पहने घर में दाखिल हुआ है। उन निशानों के साथ-साथ पानी की बूंदों की एक लकीर भी थी, मानो किसी छाते से टपकी हों। वह दरवाजा

खोलकर अंदर जाना चाहती थी। लेकिन उसे डर लग रहा था, मानो उसके फेफड़ों से धुआं निकल रहा हो। उसका पूरा शरीर कांप रहा था। कंपकंपी इतनी तेज थी कि उसकी आंखों को भी साफ दिखाई दे रही थी; उसका धड़, हाथ, पैर और उसके हाथ में पकड़ा छाता भी कांप रहा था! बारिश और ठंड में भी उसे पसीना आ रहा था। उसे एक अनजान डर सता रहा था। उसने अपनी इस हालत का कारण जानने की कोशिश की, लेकिन उसका दिमाग सुन्न पड़ गया। उसने दरवाजा खटखटाने के लिए हाथ उठाया, लेकिन हाथ में कोई ताकत नहीं थी। तभी उसे घर के अंदर से आवाजें सुनाई देने लगीं। उसे समझ आ गया कि दरवाजा किसी भी पल खुल सकता है, कोई बाहर निकलेगा और उसे देख लेगा। वह भय से जम सी गई। अनजाने में ही वह दरवाजे से दूर जाने लगी। उसके पैर सड़क पर पड़ गए। बारिश से बचने के लिए छाता खोलना भूलकर वह चलती रही। रेलवे स्टेशन पहुँचते ही उसे होश आया।
स्टेशन पर एक मालगाड़ी खड़ी थी। उसने पास खड़े एक कुली से पूछा कि मैसूर जाने वाली अगली ट्रेन कब है। उसने हाथ बढ़ाकर कहा, 'इस ट्रेन के साथ एक यात्री डिब्बा जुड़ा हुआ है। इसमें चढ़ जाइए।'
उसने टिकट खरीदा और ट्रेन के पीछे वाले डिब्बे में चढ़ गई। कुछ ग्रामीणों को छोड़कर, ट्रेन में ज़्यादा यात्री नहीं थे। ट्रेन के पुल पार करने के बाद भी उसका शरीर कांपता रहा।

2

अगले दिन भी हल्की बारिश हो रही थी। रात भर नींद न आने के कारण कात्यायनी सुस्त महसूस कर रही थीं। उन्हें सुबह 10:30 बजे पहली मंजिल पर जूनियर इंटरमीडिएट कक्षा के लिए क्लास लेनी थी। जब वह कक्षा में दाखिल हुईं, तो छात्र चुपचाप उठ गए। उनके लिए यह यहाँ की पहली क्लास थी। कात्यायनी अपनी कुर्सी पर बैठीं और हाजिरी ली। कक्षा में 120 छात्र थे। उन्होंने पहले 50 नाम पुकारे और बाकी के नाम देखे बिना ही उन्हें 'उपस्थित' लिख दिया। खिड़की से चामुंडी पहाड़ी दिखाई दे रही थी। जैसा कि उन्होंने कल अपनी आगे की ट्रेन यात्रा के दौरान देखा था, उसकी चोटी आज भी बादलों से ढकी हुई थी। और कल की तरह, वह भव्यता की साक्षात मूर्ति थी। बादलों की धुंध ने हरे पेड़ों को काला बना दिया था, और उस रंग ने भव्यता को और भी मजबूत बना दिया था। हाजिरी रजिस्टर को मेज पर छोड़कर, वह पहाड़ी को देखती

रहीं। मानो वह वर्तमान से विमुख हो गई हों। जो छात्र पाँच मिनट तक चुप रहे थे, वे आपस में दबी आवाज़ में बात करने लगे। दो मिनट बाद, फुसफुसाहट स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगी। पहाड़ी से अपनी दृष्टि हटाकर उसने उन्हें चेतावनी दी, 'चुप रहो।'
छात्र चुप हो गए। उन्होंने अपने आज के विषय की पुस्तक खोली और व्याख्यान शुरू करने ही वाली थीं कि तभी एक लड़का दरवाजे पर आया और पूछा, 'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?'
'अंदर आओ,' उसने कहा और दरवाजे की ओर देखा। उसका चेहरा गंभीर हो गया और वह आते हुए लड़के को देखती रही। चौड़ा चेहरा, बड़ी-बड़ी आंखें, सीधी नाक, लंबा और मजबूत शरीर, छोटे बाल। माथे के बीचोंबीच अनाज का पारंपरिक लेप लगा हुआ था। उसने पतलून, कमीज और जूते पहने हुए थे। उसके हाथ में एक गीला छाता था। उसकी चाल से पता चलता था कि उसे ऐसे कपड़े पहनने की आदत नहीं थी। शरीर, हाव-भाव, चेहरे की बनावट सब श्रोत्री से मिलती-जुलती थी। उसका पहला पति भी शादी के दिन ऐसा ही था।
लड़का दीवार के सहारे चलकर एक खाली मेज पर बैठ गया। उसकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं। तभी कक्षा में धीमी आवाज़ में बातचीत फिर से शुरू हो गई। उसने अपनी किताब खोली और पढ़ाना जारी रखा। उसने मुश्किल से दो वाक्य ही पढ़े थे कि बगल में बैठे एक छात्र ने अभी-अभी अंदर आए लड़के से कुछ कहा। इस पर लड़का उठा और पूछा, 'मैडम, मेरी हाजिरी?'
उसका ध्यान फिर से उस पर गया। उसे देखते हुए उसने हाजिरी रजिस्टर खोला और पूछा, 'आपका नाम क्या है?'
'एन. श्रीनिवासा श्रोत्री।'
कात्यायनी का हाथ धीरे-धीरे कांपने लगा और माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं। खड़े रहने में असमर्थ होकर वह कुर्सी पर बैठ गई। उसने सबके लिए अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी थी। अपनी दबी हुई आवाज़ पर काबू पाकर उसने व्याख्यान जारी रखने के लिए किताब उठाई। पर वह भूल गई थी कि क्या कहे; उसका दिमाग बिल्कुल खाली था। उसने सोचा कि कुछ बेतुकी बात कहने से बेहतर है कि व्याख्यान न दिया जाए। उसने किताब बंद की, छात्रों को चुपचाप बाहर जाने को कहा और पहले डेस्क के छात्रों के बाहर निकलने से पहले ही वह जल्दी से दरवाजे पर जाकर खड़ी हो गई। उस कमरे का वही एक दरवाजा था और छात्र एक-एक करके अंदर-बाहर होते चले गए। वह इस विश्वास के साथ अपनी जगह पर खड़ी रही कि आखिरी बेंच पर बैठा चीनी उसके पास

आएगा और उससे बात करेगा, क्योंकि वह उसे ज़रूर पहचानता होगा और यह भी जान गया होगा कि उसने उसे पहचान लिया है। दरअसल, इस तरह के विश्वास का कोई आधार नहीं था; उसके दिमाग में तो इसका कोई विचार भी नहीं आया। तीन-चौथाई छात्र बाहर जा चुके थे। चीनी एक छात्र से बातचीत में मशगूल थी। वह किसी भी क्षण आ सकता था। वह मुझसे ज़रूर बात करेगा। वही चेहरा। बचपन से ही उसका चेहरा ऐसा ही था। वह दरवाज़े पर आया, लेकिन जब उसने शिक्षक को देखा, तो वह शांत हो गया, दूसरे लड़के से बातचीत बंद कर दी, सिर झुका लिया, अपनी किताबें सीने से लगा लीं और दरवाज़े से आगे बढ़ गया। उसने चीनी से बात नहीं की। निराशा ने उसे अंदर तक झकझोर दिया।

वह शिक्षकों के लाउंज की ओर दौड़ी। उसने एक नोट लिखा कि वह उस दोपहर के लिए निर्धारित दूसरे सत्र में उपस्थित नहीं रहेगी, अटेंडेंट से उसे नोटिस बोर्ड पर लगाने को कहा और अपने घर के लिए निकल गई। हालाँकि उसे इस बात का बहुत दुख था कि वह अपनी माँ को नहीं पहचान पाया, शाम तक उसने खुद को संभाल लिया। मुझे पता चल गया कि वह कौन है। लेकिन वह मुझे कैसे जानेगा? करुणा ने मुझे बताया था कि वह अपनी माँ को जानता है, लेकिन उसे यह कैसे पता चला कि मैं उसकी माँ हूँ? आज कॉलेज में उसका पहला दिन था। क्या वह मेरा नाम भी जानता होगा? अगर उसे मेरा नाम पता भी चल गया, तो वह आखिरकार समझ ही जाएगा। इस तरह वह खुद को दिलासा देती रही। वह क्लास उसके अगले दिन के टाइमटेबल में नहीं थी; वह उसके अगले दिन, उसी समय थी।

उस दिन जब वह पाठ्यपुस्तक और हाजिरी रजिस्टर लेकर कक्षा में पहुँची, तब तक सभी छात्र आ चुके थे। अपनी मेज के पास पहुँचते ही उसने आखिरी मेज की ओर देखा। वहाँ चीनी बैठा था। उसने भी उसे देखा। उसे लगा कि चीनी ने उसे पहचान लिया है। उसे फिर से उम्मीद जगी कि सत्र के बाद वह उसके पास आएगा और उससे बात करेगा। जब उसने हाजिरी ली, तो उसने उसका नाम भी सुन लिया। जब वह खड़ा हुआ और बोला, 'महोदया महोदया,' तो उसने उसकी ओर देखा। फिर उसने अपनी किताब खोली और पढ़ाना शुरू कर दिया। बीच-बीच में वह उसे ध्यान से देखती रही। लेकिन वह अपनी किताब में मग्न था और नए शब्दों के अर्थ लिख रहा था। वह लगभग पढ़ाती रही और छात्र चुपचाप सुनते रहे। घंटी बजी। उसने किताब बंद की, जल्दी से उठी और दरवाजे के बाहर खड़ी हो गई। चूंकि छात्रों का एक और सत्र था, इसलिए कोई भी बाहर नहीं निकला—चीनी भी नहीं। वह पाँच मिनट तक वहीं खड़ी रही, यह सोचकर कि वह

कम से कम उससे बात करने के लिए तो बाहर आएगा। लेकिन जब उसने अगली कक्षा के शिक्षक को आते देखा, तो वह चली गई।
अब उसे शक होने लगा था कि क्या वह उसे जानता भी है या नहीं। स्कूल के पहले दिन ही छात्र अपने शिक्षकों के नाम जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। उसने सोचा, वह मेरा नाम तो अच्छी तरह जानता है, लेकिन क्या उसे अपनी माँ का नाम और पेशा नहीं पता होगा? अगर वह सिर्फ अपने दादाजी के साथ पला-बढ़ा होता, तो उसे पता नहीं होता, लेकिन उसने सोचा कि अपनी मृत्यु से पहले उसकी दादी ने उसे सब कुछ बता दिया होगा। लक्ष्मी से भी उसे कुछ पता चल गया होगा। तो, उसने सोचा, क्या उसने उससे जान-पहचान तोड़ ली है? उसे ऐसा लगा जैसे उसके पेट में त्रिशूल चुभ गया हो। खुद को समझाते हुए कि सच जाने बिना उसे विलाप नहीं करना चाहिए, उसने दो दिन और बिताए। उस दिन उसे दोपहर 3 बजे उसकी कक्षा को लेक्चर देना था। उसने लेक्चर दिया। हमेशा की तरह, वह दरवाजे तक गई और इंतजार करने लगी। हमेशा की तरह, उसने लेक्चर खत्म किया। हालांकि वह जानता था कि वह दरवाजे पर इंतजार कर रही है, फिर भी उसने हाथ में छाता संभाला और चुपके से बाहर निकलने लगा। तभी उसने उसे पुकारा, 'श्रीनिवास श्रोत्री।'
वह मुड़ा और रुक गया। बाकी छात्र आगे बढ़ गए। उसका साथी कुछ कदम चलकर उसका इंतज़ार करने लगा। उसे देखकर कात्यायनी ने कहा, 'वह बाद में तुम्हारे साथ आ जाएगा। तुम जाओ।' उसने एक पल के लिए चीनी को देखा और चला गया।
श्रीनिवासा श्रोत्री ने अपना सिर झुकाया और अपनी जगह पर खड़े रहे। उसने पूछा, 'आप कहाँ से आए हैं?'
जी जी मैडम।
क्या आप रोजाना ऑफिस जाते हैं?
'हाँ।'
'ट्रेन से?'
'हाँ।'
वह पूरे समय अपना सिर झुकाए रहा। वह उसके पास आई और बोली, 'चलो, आज मेरे घर चलते हैं।'
उसने कोई जवाब नहीं दिया। 'चलो बच्ची, चलते हैं।' जब उसने दोबारा कहा, तो उसने कहा, 'मेरी ट्रेन छूट जाएगी।'
‘ट्रेन 5:30 बजे है। अभी सिर्फ 4 बजे हैं।’

एक पल के लिए वह अवाक रह गया। फिर उसने कहा, 'नहीं महोदया। मुझे देर हो जाएगी,' और उसके जवाब का इंतज़ार किए बिना, बेचैनी से वह चला गया। कात्यायनी को अब यकीन हो गया था कि वह उसे पहचानता है। हालाँकि उसके इस घमंडी रवैये से वह नाराज़ थी कि उसने उसका निमंत्रण ठुकरा दिया और चला गया, लेकिन उसने सोचा कि एक शिक्षक की तरह उसके व्यवहार का विश्लेषण करना ठीक नहीं होगा। उसके व्यवहार का विश्लेषण करने के बजाय, उसने सोचा कि उसने उसके पहले के व्यवहार का विश्लेषण किया है, और अपने वर्तमान व्यवहार से वह परोक्ष रूप से उसके बारे में अपना आकलन व्यक्त कर रहा है। उसका मन उलझन में पड़ गया। उसे लगा जैसे उसकी आत्मा उससे घृणा करती है, मानो वह कोई नीच प्राणी हो। हाथ में पाठ्यपुस्तक और उपस्थिति रजिस्टर पकड़े हुए, वह धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतरी और शिक्षकों के लाउंज में गई। उसने उपस्थिति रजिस्टर अलमारी में रखा, अपना छाता लिया और घर चली गई।

पूरे दिन उसे असहनीय पीड़ा सहनी पड़ी। वह मन ही मन जानती थी कि उसने पहचान लिया है कि वह उसकी माँ है। अगर वह बुलावे पर उसके साथ चला जाता और उससे सीधे पूछता कि उसने ऐसा क्यों किया, तो वह उसे जवाब दे देती। वह कुछ अपमान सह सकती थी, उसे पुरानी स्थिति समझा सकती थी और उससे माफी मांग सकती थी। अगर उसने उसके सामने उसका उपहास किया होता, तब भी वह सह सकती थी। लेकिन वह उससे ऐसे बच रहा था मानो वह उससे कभी मिलना ही नहीं चाहता हो, और मानो उनका रिश्ता अपमानजनक हो। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह बदला है या कोई सोची-समझी सजा। राजा के देर शाम लौटने तक उसका मन बेचैन विचारों से भरा रहा। थोड़ी देर बाद उसका सिर गर्म हो गया और दर्द करने लगा। राजा ने रात के खाने के समय यह देखा। खाना खाने के बाद पृथ्वी दवाखाने गई और उसके सिरदर्द की गोली ले आई। जब वे सोने गए, तो राजा जल्दी ही सो गया। कात्यायनी करवटें बदलती रही। चीनी का चेहरा मानो उसे लगातार कोस रहा हो। आधी रात तक उसे नींद आने लगी। और उस अर्धनींद की अवस्था में भी उसे सपने आ रहे थे। चीनी की बेचैनी भरी तस्वीर बार-बार उसकी आंखों के सामने आ रही थी, जो उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार किए बिना ही 'नहीं मैडम, मुझे देर हो जाएगी' कहकर चली गई थी। नींद टूट गई। उसे पसीना आ रहा था और उसका शरीर भारी लग रहा था। वह इन विचारों से बचने का कोई उपाय नहीं सोच पा रही थी। वह राजा की ओर मुड़ी और अपने दाहिने हाथ से उसे गले लगा लिया। उसे सुरक्षा का आभास हुआ। उसने उसे और कसकर गले लगाया

और अपनी ओर खींच लिया। राजा जाग गया। उसने अपना हाथ उसके माथे पर रखा। 'तुम्हें बुखार है। तुम्हें पसीना आ रहा है,' उसने कहा और उठ बैठा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसने अपना सिर उसकी जांघ पर रखा और सिसक-सिसक कर रोने लगी। राजा घबरा गया। उसने उससे पूछा कि क्या बात है। बार-बार पूछने पर भी उसने उसे कुछ नहीं बताया।

3

कात्यायनी लगभग एक सप्ताह से बुखार से पीड़ित थीं। काम पर लौटने के बाद, वह कुर्सी पर बैठकर धीमी आवाज़ में व्याख्यान देती थीं। श्रीनिवास श्रोत्री भी उनकी कक्षाओं में उपस्थित रहते थे। वह उन्हीं की मेज पर बैठते थे। अपने मन को वश में रखने का उनका प्रयास विफल हो जाता और वह बार-बार उनकी ओर देखती रहतीं। वह व्याख्यान सुनते हुए अपनी किताब में देखते रहते। बीच-बीच में वह कठिन शब्दों के अर्थ लिख लेते। यह देखकर, उन्होंने खुद को यह समझाने की कोशिश की कि वह उन्हें नहीं जानते। उन्होंने निश्चय किया कि एक दिन वह उन्हें बुलाकर अपना परिचय देंगी।
एक दिन उनकी कक्षा हमेशा की तरह 10:30 बजे निर्धारित थी। 10:35 बजे, उन्होंने अटेंडेंट को बुलाया और कहा, 'जूनियर इंटर साइंस डी सेक्शन में श्रीनिवास श्रोत्री नाम का एक छात्र है। उसे मेरी सूचना दे दीजिए और उसे यहाँ ले आइए। साथ ही कक्षा को यह भी बता दीजिए कि मैं आज कक्षा नहीं लूंगी।'
पांच मिनट में परिचारिका श्रीनिवास श्रोत्री को साथ लेकर लौटी। उनकी बाईं कलाई पर घड़ी बंधी थी। उन्होंने अपने बाएं हाथ में किताबें और दाहिने हाथ में छाता पकड़ा हुआ था। उनके प्रवेश करते ही परिचारिका उठ खड़ी हुई और बोली, 'आज तुम्हें ट्रेन छूटने की चिंता नहीं है। आओ बेटा, मेरे घर चलते हैं। जब मैं तुम्हें आमंत्रित करूं तो तुम्हें उतावलापन नहीं दिखाना चाहिए।'
लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस वहीं खड़ा रहा, मेज को देखता रहा। उसे ज़रा भी ढील दिए बिना, उसने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, 'चलो, चलते हैं।' वह उसके पीछे चल पड़ा। उस दिन हल्की बारिश नहीं हो रही थी। वह आगे चल रही थी; वह उसके पीछे-पीछे चल रहा था। कॉलेज के टीले को पार करके और रामास्वामी चौक से आगे निकलकर, वह उसकी ओर मुड़ी और बोली, 'मेरे साथ चलो। मेरे पीछे क्यों घिसट रहे हो?' उसने अपनी चाल धीमी कर दी ताकि उसकी गति से चल सके। आज

उसने जूतों की जगह चप्पलें पहनी हुई थीं। जब उसने अपना पैर उठाया, तो उसने नए जूतों से हुए घर्षण को देखा। चलते-चलते उसे कुछ भी बोलने का मन नहीं हुआ। वह भी आज्ञाकारी रूप से चलता रहा।

नागलक्ष्मी घर पर अकेली थी और रसोई में बैठकर रटने में मग्न थी। बाकी दोनों कॉलेज गए हुए थे। नागलक्ष्मी को कात्यायनी या राजा के शिष्यों के आने की आदत थी, इसलिए वह बिना सिर उठाए ही अपना लेखन कार्य करती रही। कात्यायनी ने चावल में दही मिलाया और एक गिलास दूध और पानी के साथ उसे अपने शयनकक्ष में ले गई। उसे मेज पर रखकर उसने राजा को अंदर आने के लिए कहा। राजा ने मुख्य द्वार पर अपनी चप्पलें उतारीं, कमरे में प्रवेश किया और कात्यायनी द्वारा दिखाई गई कुर्सी पर बैठ गया। उसका चेहरा झिझक और उलझन से लाल था। हालांकि उसने अनिश्चितता में अपना सिर झुकाया हुआ था, लेकिन वह गहरी सोच में डूबा हुआ था।

‘इसे ले लो,’ उसने कहा, कमरे का दरवाजा बंद किया और उसके बगल में बैठ गई।

'नहीं महोदया, मैंने दोपहर का भोजन कर लिया है।'

‘यह पूरा भोजन नहीं है। बस थोड़ा सा है। इसे खा लो। जब कोई गुरु कुछ देता है, तो मना नहीं करना चाहिए।’

थाली को छुए बिना ही उन्होंने कहा, 'यह मेरे लिए बहुत ज्यादा है।'

‘जो चाहो खाओ और बाकी छोड़ दो। अब, खाओ।’

उसने थाली उठाई, उसमें रखी चम्मच एक तरफ रख दी और हाथों से खाना शुरू कर दिया।

‘क्या आपने नंजनगुड कहा?’ उसने पूछा।

'हाँ।'

‘आपके पिता का नाम क्या है?’

श्री नंजुंडा श्रोत्री।

‘क्या आपके पिता और माता दोनों जीवित हैं?’

'नहीं।'

'दोनों?'

‘हाँ।’ उसने अपना सिर झुकाए रखा। उसे सचमुच खाना खाने की इच्छा नहीं थी। यह देखकर कात्यायनी ने कहा, ‘अगर तुम्हें खाने की इच्छा नहीं है, तो इसे छोड़ दो और थाली में हाथ धो लो।’ उसने थाली ज़मीन पर रख दी, पानी का गिलास उठाया, खिड़की

तक गया, खिड़की की जाली से दोनों हाथ बाहर निकाले और हाथ धो लिए। जब वह अपनी कुर्सी पर लौटा, तो उसने कहा, ‘तुम्हारी देखभाल कौन कर रहा है?’
'मेरे दादा।'
'इसका नाम क्या है?'
श्री श्रीनिवास श्रोत्री।
‘क्या तुम्हारे दादाजी को तुम्हारी देखभाल करने में कठिनाई हो रही होगी?’ उसने पूछा।
उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। आगे क्या पूछना है, यह न जानते हुए वह पाँच मिनट तक चुप रही। फिर उसने पूछा, ‘मेरी एक रिश्तेदार नंजनगुड से अच्छी तरह परिचित हैं। उन्होंने बताया कि तुम्हारे पिता बाढ़ में डूब गए थे और तुम्हारी माँ जीवित हैं।’
वह कुछ नहीं बोला। वह लगातार ज़मीन की ओर देखता रहा। 'क्या ऐसा है?' उसने पूछा। 'मुझे नहीं पता,' उसने कहा। उसने फिर पूछा, 'क्या तुम्हें अपनी माँ को देखने की याद है?'
'नहीं।'
मैंने सुना है कि वह जीवित है। क्या आपके घर में कोई उसके बारे में बात नहीं करता?
'नहीं।'
वह अवाक रह गई। उसने पूछा, 'क्या तुम अपनी मां को देखना नहीं चाहते?'
वह चुप रहा। वह ज़मीन की ओर देखता रहा, मानो कोई पत्थर की मूर्ति हो। उसने फिर पूछा, 'बच्चे, क्या तुम अपनी माँ को देखना नहीं चाहते? मुझे जवाब दो।'
वह फिर भी चुप रहा। जब उसने दोबारा पूछा, तो उसने धीरे से, लेकिन कांपती हुई आवाज में कहा, 'नहीं।'
कात्यायनी को ऐसा लगा जैसे उसके सीने पर कोई बड़ा पत्थर घसीट दिया गया हो। उसके जवाब ने उसकी सारी इच्छाएं खत्म कर दीं और वह सुन्न पड़ गई। उसका सिर चकराने लगा और उसने आंखें बंद कर लीं और कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गई। पांच मिनट तक अचेतन अवस्था में बैठी रहने के बाद, वह सीधी होकर बैठ गई और उसे देखने लगी। वह फर्श की ओर घूर रहा था। आंखों, नाक, चेहरे, हाव-भाव और शरीर से वह अपने दादाजी से मिलता-जुलता था। उभरा हुआ निचला होंठ और दृढ़ दृष्टि उसके दादाजी के दृढ़ संकल्प की प्रतीक थी। उसने उसके सभी सवालों का जवाब ना में दिया था और संकेत दिया था कि वह इस मामले पर चर्चा करने में रुचि नहीं रखता। उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि वह उसकी पहचान जरूर जानता है। फिर भी उसने

उससे पूछा: 'आपकी मां पास में ही रहती हैं। वह मेरी अच्छी दोस्त हैं। वह आपसे मिलने के लिए तरस रही हैं। क्या मैं उन्हें बुला लूं?'
उसने कुछ नहीं कहा। 'बच्चे, मुझे जवाब दो,' उसने फिर पूछा। वह चुप ही रहा।
'तुम चुप क्यों हो?' रुको, मैं उसे बुलवाता हूँ।'
'नहीं, महोदया।'
उसे फिर से स्तब्धता छा गई। उसने अपनी आँखें आधी बंद कर लीं और कुर्सी पर पीछे झुक गई। 'मुझे देर हो जाएगी, महोदया,' उसने कहा और उठ गया। उसने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और देखा। वह दरवाजे तक गया, उसे खोला और बाहर निकल गया। वह उसे देखती रही। स्तब्धता के कारण, उसमें उठकर उसे देखने की शारीरिक शक्ति नहीं थी। उसकी ज़बान में 'रुको। मत जाओ' कहने की ताकत नहीं थी। उसने उसे चप्पल पहनते और जाते हुए सुना। वह खिड़की की ओर मुड़ी और देखा। उसने उसे दूर जाते देखा, उसका सिर झुका हुआ था मानो उसके शरीर से भी भारी हो। उसके भीतर से एक दर्दनाक चीख निकली जो कपिला नदी के सैलाब से भी तेज़ थी। 'चीनी, तुम मेरे पुत्र हो, मेरी कोख से जन्मे हो। तुम्हें मुझे इस तरह नहीं मारना चाहिए,' वह मन ही मन चीखी, कुर्सी से उठी और ज़मीन पर लेट गई। नागलक्ष्मी का ध्यान न खींचने के लिए, उसने अपने पल्लू को मुँह में ठूँसकर अपनी चीख की आवाज़ को दबा दिया।
वह ज़मीन पर लेटी हुई भी सोच रही थी। मेरे प्रति कितना क्रूर तिरस्कार! अपनी माँ के सामने बैठे हुए, वह उनके शब्दों को सुन रहा था जिनमें इतना भाव था कि किसी का भी दिल पिघल जाए। उससे जो भी पूछा गया, उसने उदासीन और बेरुखी से जवाब दिए। अगर कोई और होता, तो वह कम से कम एक आँसू तो बहा देता; अपनी माँ के पास ज़रूर जाता। वह पत्थर की मूर्ति की तरह बैठा रहा। अंत में, उसने यह कहते हुए माफ़ी मांगी, 'मुझे देर हो जाएगी, महोदया,' और ऐसे चला गया जैसे उसे कुछ पता ही न हो। क्या यह उसकी जन्मजात संयमशीलता है, या यह बचपन में अपने आदर्श दादा से मिली समभाव की भावना है? उसे श्रोत्री याद आ गए। वह ऐसी परिस्थितियों में भी शांत रहते थे जो ज़्यादातर लोगों के लिए दिल तोड़ देतीं। हालाँकि उसके सामने बैठी चीनी के चेहरे पर शांति नहीं थी, लेकिन उसने देखा था कि उसमें दिल दहला देने वाली घटनाओं को सहने का दृढ़ संकल्प और साहस था।
राजा के घर आने तक वह गहरी सोच में डूबी फर्श पर लेटी रही। राजा ने उसका चेहरा देखकर पूछा, 'तुम यहाँ क्यों लेटी हो? लगता है तुम बहुत रोई हो। क्यों?'
'कुछ नहीं,' उसने कहा और उठ खड़ी हुई।

‘क्या आप मुझसे साझा नहीं करेंगे? आपको क्या तकलीफ है?’
‘कुछ नहीं। अतीत की कुछ बातें।’
वह समझ गया था कि तीन बार गर्भपात होने की घटना अभी भी उसे परेशान कर रही है। उन घटनाओं की याद आने से उसे भी दुख हुआ। ‘उन सब बातों को याद करने का क्या फायदा?’ उसने उसे दिलासा दिया। उस रात उसे फिर से बुखार आ गया। राजा ने उसका इलाज करवाया, उसके पास ही बैठा रहा और उस पर नज़र रखी। नागलक्ष्मी ने अपने तरीके से उसे सांत्वना दी। तीसरे दिन बुखार उतर गया। हालांकि वह चौथे दिन तांगे पर कॉलेज गई, लेकिन वह लेक्चर नहीं दे सकी। उसने कुछ दिनों बाद लेक्चर फिर से शुरू किए। जब वह चीनी की कक्षा की ओर बढ़ी, तो उसे घोर निराशा हुई। वह उसे न देखने के संकल्प के साथ उसकी कक्षा में गई। लेकिन उसके भीतर की माँ ने इस बंधन को तोड़ दिया। उसने बेकाबू होकर आखिरी डेस्क की ओर देखा। वह वहाँ नहीं था। उसने अपनी नज़रें पूरी कक्षा में घुमाईं। वह कहीं नहीं था। हाजिरी लगाते समय उसने स्पष्ट रूप से उसका नाम पुकारा। कोई जवाब नहीं आया। वह फिर से चिंतित हो गई। उसकी धड़कन तेज हो गई। इस तरह दो हफ्ते बीत गए। वह कभी नहीं आया। एक दिन उसने कॉलेज के प्रशासनिक कार्यालय में पूछताछ की। क्लर्क ने छात्रों के प्रवेश रिकॉर्ड की जाँच की और कहा, 'एन. श्रीनिवास श्रोत्री ने स्थानांतरण प्रमाण पत्र लेकर कॉलेज छोड़ दिया है। चार दिन बीत चुके हैं। उन्होंने इस सत्र की पूरी फीस जमा कर दी है और स्थानांतरण प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया है।'
उसने इसे उसका अंतिम अस्वीकार समझा। उसने सोचा कि वह किस कॉलेज में दाखिला लेगा। यह पता लगाना मुश्किल नहीं था। लेकिन उस लोहे को खोजने का क्या फायदा जो कभी नहीं झुकेगा? उसने यह मान लिया कि अब तक उसने अपने मन की बात स्पष्ट रूप से कह दी थी। उसने उसे ढूंढने का विचार छोड़ दिया, लेकिन उसके इस व्यवहार को सहन करने की शक्ति उसमें नहीं थी।

4

चीनी अपनी माँ के बारे में अनजान नहीं था। उसके कुछ सहपाठियों ने उसे माध्यमिक विद्यालय में ही सब कुछ बता दिया था। उन्होंने ये सारी जानकारी अपने माता-पिता की बातचीत से जुटाई थी। जब उसकी दादी जीवित थीं, तो एक दिन चीनी ने उनसे इस बारे में पूछा था। हालाँकि उन्होंने विस्तार से नहीं बताया, लेकिन उन्होंने लगभग यही संकेत

दिया और स्पष्ट रूप से कहा, 'बेटा, हमें इस बारे में बात नहीं करनी चाहिए। तुम्हारे दादाजी को यह पसंद नहीं है। हर किसी के कर्म और पुण्य स्वयं के होते हैं।' भागीरथम्मा को अफवाहों से पता चला था कि वह वर्तमान में बैंगलोर के एक कॉलेज में लेक्चरर हैं, और उन्होंने यह बात अपने पोते को बताई थी। चीनी को उनके नए पति का नाम भी पता था। दादी की मृत्यु के बाद उस घर में इस विषय पर कभी चर्चा तक नहीं हुई। उसके दादाजी ने इस बारे में कभी कुछ नहीं कहा। यह जानते हुए कि उसके दादाजी को इस विषय पर चर्चा पसंद नहीं है, उसने उनसे पूछा भी नहीं। लक्ष्मी श्रोत्री की राय से पूरी तरह सहमत थी और उसी के अनुसार व्यवहार करती थी। उस घर के तीनों लोग उस मुद्दे से बेपरवाह रहे और आपस में उस पर चर्चा करने से बचते रहे। लड़के की पारंपरिक शिक्षा सीधे उसके दादाजी की देखरेख में हुई। दादाजी ने उसे वेद और उपनिषद पढ़ाए और उनके अर्थ समझाए। उन्होंने धर्म, कर्म, कर्तव्य, जीवन का उद्देश्य आदि पर प्रवचन दिए। यद्यपि वह सब कुछ पूरी तरह से समझ नहीं पाया, फिर भी उसके मन में अपने दादाजी के प्रति श्रद्धा का भाव विकसित हो गया, जो भय की सीमा तक पहुँच गया था। उसके हृदय में अपने दादाजी की इस उम्र में भी कर्तव्यपरायणता, लोगों द्वारा उन्हें दिखाया गया आदर, घर की महिला की तरह प्रतिदिन उनके लिए भोजन करना आदि भाव गहराई से बसे हुए थे। लक्ष्मी उसे सप्ताह में एक बार तेल से स्नान कराती थीं। स्नान के बाद वह स्नानघर में भट्टी की राख से उसके माथे पर लगातीं और कहतीं, 'पुत्र, पहले अग्नि को प्रणाम करो, फिर अपने दादाजी के चरणों में प्रणाम करो।' वह पूछता, 'आपके चरणों में?' जिस पर वह कहतीं, 'शीनप्पा के सामने प्रणाम करना ही पर्याप्त होगा।' यह तो सभी देवताओं के सामने प्रणाम करने के समान है। मेरे सामने प्रणाम करने की कोई आवश्यकता नहीं है।' लड़का अपने दादाजी के व्यक्तित्व से मंत्रमुग्ध होकर खड़ा रहा।

वह कॉलेज के पहले दिन समय पर पहुंचा था। जब छुट्टी घोषित हुई तो वह अन्य छात्रों के साथ दोपहर की ट्रेन से नंजनगुड लौट आया। कॉलेज में उसका सहपाठी चक्रपाणि था, जो हाई स्कूल के दिनों से उसका साथी था। वह श्रीकांतेश्वर लेआउट में रहने वाले वकील वेंकट राव का पुत्र था। वह चीनी के ही सेक्शन में था। अगले दिन, चक्रपाणि सुबह की ट्रेन से आया। उसने आखिरी डेस्क पर सीट ले ली थी और चीनी के लिए भी सीट आरक्षित कर रखी थी, जो सुबह 10 बजे की ट्रेन से आने वाला था। जब चीनी कात्यायनी की कक्षा में पहुंचा और चक्रपाणि के बगल में अपनी सीट पर बैठा, तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि यह 'एक महिला शिक्षक की कक्षा' है। कुछ देर तक वह

शिक्षक को देखता रहा और सोचता रहा कि एक महिला शिक्षक का व्याख्यान कैसा होगा। फिर उसने पाठ पर ध्यान केंद्रित किया। उस कक्षा के बाद, सभी छात्रों को प्रयोगशाला जाना था। वे सभी गए। लेकिन उस दिन वहां कुछ भी नहीं पढ़ाया गया। जब सभी छात्र प्रयोगशाला से बाहर निकल गए, तो चक्रपाणि ने चीनी से पूछा, 'क्या तुम उस अंग्रेज़ महिला का नाम जानती हो?'
नहीं। क्या बात है?
'Mrs Katyayani Raja Rao.'
'इसका मतलब है कि वह शादीशुदा है?'
जी हां। उनके पति महाराजा कॉलेज में सहायक प्रोफेसर हैं।
चीनी आसानी से समझ गया कि वह कौन है। फिर भी, उसने चक्रपाणि से पूछा, 'क्या वह शुरू से यहीं थी?'
नहीं। वे दोनों बैंगलोर के सेंट्रल कॉलेज में पढ़ते थे। पिछले साल उनका तबादला यहाँ हो गया। उनके पति राजा राव अपने नाटकों के लिए जाने जाते हैं। मैं आज जल्दी आ गई और यहाँ अपनी मौसी के घर गई। उनकी बेटी महाराजा कॉलेज में बीए कर रही है। उन्होंने मुझे सब कुछ बताया।
"सब कुछ" का क्या अर्थ है?
'उसका विवाह विधवा विवाह है।' चक्रपाणि इतना कहकर रुक गया, मानो उसने अपनी जीभ काट ली हो। चीनी का चेहरा उदास हो गया। चक्रपाणि को पूरी तरह पता चल गया था कि उनकी नई मालकिन कौन है। उसने यह सब चीनी को नहीं बताया था, क्योंकि उसे लगा कि इससे उसे बहुत दुख होगा। वह तो बस अपने मित्र को एक महत्वपूर्ण बात बताना चाहता था।
कुछ दिनों तक चीनी अनजाने में अपनी नई शिक्षिका की ओर आकर्षित होता रहा, जो वास्तव में उसकी माँ थी। कक्षा में, जब वह नहीं देख रही होती थी, तो वह चुपके से उसे देख लेता था। जब उसे अपनी माँ के घर आने का पहला निमंत्रण मिला, तो वह बहुत उत्साहित हो गया। उसने मन में जो आया वही जवाब दिया और उससे बच निकला। उसे पास के कॉलेज में जाकर उसके पति को देखने की उत्सुकता हुई। एक दिन, वह गया और एक छात्र से पूछा, 'अंग्रेजी शिक्षक राजा राव, उनका सत्र अभी कहाँ चल रहा है?'
'सीनियर बीए हॉल में।'
'कहाँ है?'

मैं वहीं जा रहा हूँ।
चीनी वहाँ गया और एक कुर्सी पर बैठ गया। राजा राव अंदर आए। चीनी उन्हें घूरने लगा। वे बर्नार्ड शॉ का नाटक 'सेंट जोन' पढ़ रहे थे। हालाँकि वे इसे पूरी तरह समझ नहीं पाए, लेकिन उनके हाव-भाव और अंग्रेज़ी में बोलने की धाराप्रवाह शैली ने उन्हें मोहित कर लिया। जब उन्हें पता चला कि नई मैडम उनकी माँ हैं, तो उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया, भले ही इसमें कोई संदेह न हो, लेकिन राजा राव के प्रति उनके मन में कोई आत्मीयता नहीं जागी। इसके बजाय एक अस्पष्ट तिरस्कार का भाव दिखाई दिया। उन्हें अपने पिता की याद आ गई; उन्होंने अपने पिता को कभी नहीं देखा था। घर में उनकी एक तस्वीर भी नहीं थी। वे बेचैन हो गए। व्याख्यान चल रहा था। वे वहीं से जाना चाहते थे, लेकिन डांट के डर से वे पूरे एक घंटे तक वहीं रुके रहे।
उसके मन में कई तरह की अजीब भावनाएँ उमड़ रही थीं। कभी-कभी उसका मन करता कि वह अपनी माँ से मिले और उनसे बात करे। उसके मन में यह सवाल उठता था कि वह नए पति के साथ क्यों चली गई। उसे पता चला कि वह उसकी शिष्या थी। उसे अपनी दादी की कही बात याद आई कि वह नाटक बहुत अच्छे से करता था। वह और वह कुशल अभिनेता दोस्त बन गए होंगे। वह और वह... उसे आगे सोचने में हिचक हो रही थी। वह सोच रहा था कि उसकी माँ ने ऐसा क्यों किया। एक बार तो उसने सीधे माँ से पूछने का भी सोचा, 'तुमने ऐसा क्यों किया?' लेकिन उसने यह सोचकर अपना इरादा बदल दिया कि वह उसे डांटेगी। अगर वह दोबारा शादी करने के लिए भाग न जाती, तो दादाजी के बुढ़ापे में बहुत मदद मिलती। वह इस बात को अनसुना करके चली गई! और वह अपने बच्चे को कैसे छोड़ सकती है? ये सारे सवाल उसे परेशान कर रहे थे। कुछ दिनों तक उसका खान-पान और नींद दोनों प्रभावित रहे। एक बार उसने अपने दादाजी से अपने मन के विचार साझा करने का सोचा। लेकिन उसने उस विचार को तुरंत ही त्याग दिया, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि उसके दादाजी को यह पसंद नहीं आएगा, और इससे वे भी दुखी हो जाएंगे। उसने खुद को समझाया कि वह अपने दादाजी की तरह सारी चिंताओं को मन में दबाकर शांत रहेगा। अपनी नियमित संध्यावंदन में, उसने अतिरिक्त 108 गायत्री मंत्रों का जाप करना शुरू कर दिया।
वह हमेशा अपने दादाजी की कही हुई बात को याद रखता था: ‘पुत्र, धर्म और कर्म स्वयं के होते हैं। हमें दूसरों के आचरण के बारे में निर्णय नहीं लेना चाहिए।’ वह अपनी माँ के आचरण को याद न करने की कोशिश करता था। उसकी इच्छाशक्ति अद्भुत थी, जो उसके दादाजी के हर तरह से संरक्षण का परिणाम थी। उसे बार-बार यह कल्पना

सताती थी कि एक दिन उसकी माँ उसे बुलाएगी और कहेगी कि वह उसकी माँ है। तब क्या होगा? वह सोचता था कि क्या उसे यह स्वीकार करना चाहिए: 'हाँ, मैं आपका पुत्र हूँ।' यदि वह ऐसा करता, तो उनके रिश्ते को गति मिलेगी। धीरे-धीरे मैं उससे प्रेम करने लगूँगा, और अंततः उसके साथ रहने की इच्छा कर सकता हूँ। तब दादाजी का क्या होगा? अपनी माँ की तरह दादाजी को त्यागने का घृणित विचार उसे सुलगने लगा। या क्या मैं दोनों तरफ से पुत्र हो सकता हूँ? चीनी ने कई शास्त्रों का अध्ययन किया था। उन्हें अपने आप, अपने वंश, वंश में प्रवाहित होने वाले धर्म और कर्म आदि का कुछ हद तक ज्ञान था। संध्यावंदन के भाग के रूप में अपने वंश का वर्णन करते समय ये बातें उनके मन में प्रतिदिन और पुष्ट होती थीं। वे अपने दादाजी के शब्दों को याद करते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को न केवल अपने वंश के महत्व और प्रतिष्ठा को बनाए रखना चाहिए, बल्कि उसे इस प्रकार आचरण करना चाहिए जिससे वंश में वृद्धि और जीवंतता आए। उन्होंने पुराणों में पढ़ा था कि सूर्यवंश और चंद्रवंश के राजाओं ने किस प्रकार अपने वंश के गौरव को बनाए रखा था। काश्यप वंश में जन्म लेकर और श्रोत्री कुल के वंशज होने के नाते, वे किसी अन्य कुल के पुत्र के समान आचरण कैसे कर सकते थे? उन्हें जो शिक्षा प्राप्त हुई थी, वह इतनी प्रबल थी कि वे किसी भी बुजुर्ग व्यक्ति का आदर उसी प्रकार करते थे जैसे किसी पुत्र का करते हैं। लेकिन वह सोचता कि यह कितनी विडंबना होगी कि वह एक ऐसी महिला के साथ संबंध स्थापित करे जिसने अपनी वंश परंपरा को त्याग दिया हो और दूसरी परंपरा को अपना लिया हो, और अंततः उसके घर नियमित रूप से जाना शुरू कर दे।

वह सोचता रहा कि अगर कभी वो उसे बुलाकर अपनी पहचान बता दे तो उसे क्या कहना और क्या करना चाहिए। वो अपनी माँ को घमंडी जवाब देकर उन्हें दुख नहीं पहुँचाना चाहता था। उसके दादाजी अक्सर उसे समझाते थे कि किसी से भी तीखे शब्दों में बात नहीं करनी चाहिए, जिससे किसी को दुख हो। उसने ठान लिया कि वो इस नए रिश्ते को किनारे रख देगा और इससे दूरी बनाए रखेगा। हालाँकि कात्यायनी के घर जाते समय उसने ऐसा ही व्यवहार किया था, लेकिन वहाँ से निकलते समय वो रो पड़ा। वो सड़क किनारे एक पेड़ के नीचे खड़ा होकर खूब रोया। रुमाल से अपनी आँखें पोंछते हुए वो कॉलेज के पीछे खेल के मैदान में गया और वहाँ एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

वह रोज़ कॉलेज जाता था। वह हमेशा सोचता रहता था कि अगर वह उसे फिर बुलाए, अगर वह उसके सामने रोए, और अगर उसे उसके सामने रोने का मन करे तो वह क्या करेगा। उसे कॉलेज के नोटिस बोर्ड से पता चला कि वह चार दिन की छुट्टी पर है। चार

दिन बाद जब वह लौटेगी तो वह क्या करेगा? वह उसे फिर से देखने के लिए तरस रहा था। कभी-कभी उसकी भावनाएँ इतनी उमड़ आतीं कि वह उसके पास जाकर कहे, 'मैं आपका बेटा हूँ। मेरा नाम चीनी है।' लेकिन उसके पीछे उसके दादाजी की चेतावनी उभर आती: 'किसी भी वस्तु से संबंध रखने से उसके प्रति लालसा ही बढ़ती है। एक बार लालसा तीव्र हो जाए तो उससे छुटकारा पाना आसान नहीं होता। इसलिए, अप्रिय वस्तुओं से संबंध नहीं रखना चाहिए।' उसने सोचा कि उसे उससे मिलना बंद कर देना चाहिए, उसे यह कॉलेज छोड़ देना चाहिए, और कुछ दिनों बाद उसका मन शांत हो जाएगा।

एक रात उसने अपने दादाजी से पूछा, “जिस सरकारी कॉलेज में मैं पढ़ता हूँ, वहाँ शिक्षा का स्तर संतोषजनक नहीं है। मैंने पता लगाया तो पता चला कि शरदविलास कॉलेज में पढ़ना बेहतर रहेगा। क्या मैं स्थानांतरण प्रमाण पत्र (टीसी) प्राप्त करके उस कॉलेज में दाखिला ले सकता हूँ?”

पहले तो उनके दादाजी उनकी बात से सहमत नहीं हुए। उन्होंने पूछा, 'क्या अब नए कॉलेज में दाखिला मिल सकता है?'

अगले दिन वह शरदविलास कॉलेज गया, पूछताछ की और अपने दादाजी को बताया। “उन्होंने कहा कि मेरा दाखिला हो जाएगा। उन्होंने मुझे टीसी लाने को कहा। जब तक मैं पूरे सत्र की फीस नहीं चुकाता, सरकारी कॉलेज मुझे टीसी नहीं देगा। मुझे नए कॉलेज के लिए फिर से फीस देनी होगी। मुझे 60 रुपये चाहिए। मुझे नए कॉलेज में दाखिला लेना ही होगा।”

‘पैसे बक्से में हैं। ले लो। मुझे बताओ कि मुझे नए कॉलेज को लिखे पत्र में क्या लिखना है। एक ऐसा कॉलेज चाहिए जो अच्छी शिक्षा प्रदान करता हो,’ उनके दादा ने कहा।

तीन दिनों के भीतर, चीनी ने नए कॉलेज में दाखिला ले लिया। फिर भी, कुछ दिनों तक उसका मन शांत नहीं हो पा रहा था।

5

निराशा ने कात्यायनी को बीमार कर दिया। हालाँकि उन्हें न तो बुखार था, न माइग्रेन, और न ही वे बिस्तर पर पड़ी थीं, फिर भी वे धीरे-धीरे कमजोर होती गईं। उनका स्वस्थ शरीर अब कीड़े लगे पत्ते की नसों की तरह मुरझाया हुआ था। राजा उन्हें डॉक्टर के पास ले गए। उन्हें कोई ज्ञात बीमारी नहीं हो सकी। डॉक्टर ने उन्हें एक टॉनिक दिया

और फल और अंडे खाने को कहा। उनके घर महंगे फल आने लगे। दूध की खपत भी बढ़ गई। लेकिन उनकी हालत बिगड़ती ही रही। अब वे अपने पति से भी कम बात करती थीं। कॉलेज से लौटने के बाद, वे अपने कमरे में अकेले रहने लगीं। उनका मन खाली हो जाता; वे बस सामने वाली दीवार को घूरती रहतीं, या खिड़की के बाहर किसी पेड़ को देखती रहतीं। वे हमेशा सोचती रहतीं कि उनके जीवन का क्या अर्थ है। अगर एक पेड़ को उसकी अपनी शाखा द्वारा ही उपेक्षित कर दिया जाए, तो उसके भरपूर विकास का क्या फायदा? ऐसे विचारों पर वे बीच-बीच में निराशा से आहें भरती रहतीं। वह नंजनगुड की दोबारा यात्रा करने के बारे में सोचती। लेकिन यह विचार उसके पहले से ही कमजोर शरीर में सिहरन पैदा कर देता और वह मानो बिखर जाती। हाल ही में, वह नींद में बेतरतीब ढंग से बड़बड़ाने लगी थी; कभी-कभी वह कुछ समझ में आने वाली बात कह देती थी। राजा उसे हल्का सा धक्का देकर कहता, 'तुम नींद में बड़बड़ा रही हो। कोई बुरा सपना?' वह थोड़ी सी जाग जाती, लेकिन फिर से सो जाती। एक रात, नींद में उसने अंग्रेजी में कहा, 'धर्म और कर्म का मूल्यांकन करने वाला मूल सिद्धांत क्या है?' राजा, जो जाग रहा था, ने अंग्रेजी में उत्तर दिया: 'धर्म का मूल सिद्धांत 'प्रत्येक जीव का कल्याण' है।'

अपनी समाधि की अवस्था में ही उसने बातचीत को आगे बढ़ाया। 'केवल सुख-शांति ही धर्म नहीं है। किस प्रकार की सुख-शांति? शारीरिक सुख-शांति? मानसिक सुख-शांति? बौद्धिक सुख-शांति? धार्मिक जीवन शैली का पालन करने से प्राप्त सुख-शांति? इन दृष्टिकोणों से परिभाषित न की गई सुख-शांति की अवधारणा धर्म का मूल तत्व होने के योग्य नहीं है।'

जब राजा ने उसकी बातों का जवाब देना शुरू किया, तो वह बड़बड़ाना बंद करके सो गई। अगली सुबह जब राजा ने उसे यह बात बताई, तो उसे यकीन ही नहीं हुआ। ऐसा कई रातों तक होता रहा। जब राजा ने मनोचिकित्सक से मिलने का सुझाव दिया, तो उसने उसे चुप कराते हुए कहा, 'किसी को भी मेरे मन में झाँकने की ज़रूरत नहीं है। 'खुद को जानो' का सिद्धांत ही काफी है।'

एक रात राजा अचानक जाग गया। उसने देखा कि कात्यायनी उसके पास नहीं थी। वह उठकर बैठ गया और देखने लगा। कमरे का दरवाजा खुला था। वह कमरे से बाहर निकला। मुख्य दरवाजा भी खुला था। जब वह सड़क पर पहुंचा और देखा, तो उसने एक स्त्री को धीरे-धीरे चामुंडीपुरा की ओर जाते देखा। कात्यायनी को पहचानकर वह उसके पीछे चल पड़ा। जल्दी ही वह उसके पास पहुँच गया और पूछा, 'तुम कहाँ जा

रही हो?' उसकी आँखें खुली थीं, लेकिन उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह सो रही हो। ऐसा लग रहा था मानो वह सामने वाले व्यक्ति को पहचान ही नहीं रही हो। उसने मानो किसी सम्मोहन में कहा, 'चामुंडी पहाड़ी पर।'
'तुम वहाँ क्यों जा रहे हैं?'
‘क्यों? ऊँचाई पर पहुँचे बिना कोई कैसे जी सकता है? मेरे सपनों में, मैं हमेशा नीचे की ओर जा रहा था। अब मैं जाग गया हूँ। मैं ऊपर चढ़ने के लिए निकला हूँ।’
‘अब मेरे साथ आओ। हम सुबह साथ चलेंगे।’
‘आप कितने समझदार व्यक्ति हैं!’ उसने प्रशंसापूर्वक उसका कंधा थपथपाते हुए कहा। उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे घर ले गया। उसने मुख्य दरवाजा बंद किया, उसे शयनकक्ष में ले गया, उसे पलंग पर बिठाया और शयनकक्ष का दरवाजा मजबूती से बंद कर दिया। एक मिनट के भीतर ही उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और गहरी नींद में सो गई। पाँच मिनट तक वह असमंजस में बैठा रहा। फिर उसने उसे धीरे से जगाया और पूछा, ‘क्या तुम सो रही हो?’
'नहीं। मैं हमेशा जागृत अवस्था में रहूंगी,' उसने कहा, लेकिन उसकी सांसों की नियमित लय और उसके चेहरे के भाव स्पष्ट रूप से संकेत दे रहे थे कि वह सो रही थी।
‘क्या आपको पता है कि आप अभी किससे बात कर रहे हैं?’
'हाँ।'
'मैं कौन हूँ?'
'आत्मा।'
'और आप?'
'प्रकृति।'
उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसके माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं। वह उसके मन की गहराई में छिपी बातों को जानना चाहता था। उसने पूछा, 'क्या प्रकृति सदाबहार नहीं है?'
न तो सदाबहार, न ही सदा जीवंत। जिसने धर्म के मार्ग का उल्लंघन किया है, वह जीने के योग्य नहीं है।
अगले दस मिनट तक वह चिंतन में लीन रहा। फिर उसने कहा, 'प्रकृति, मैं तुझे क्या लाभ पहुंचा सकता हूँ?'
कात्यायनी कुछ नहीं बोली। तब तक वह गहरी नींद में सो चुकी थी। हिलाने-डुलाने पर भी वह नहीं जागी। अब राजा की नींद उड़ गई। पूरी रात उसने पलक भी नहीं झपकाई।

वह बिस्तर से उठा, खिड़की के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया और ध्यान में लीन हो गया। एक समय उसने मनुष्य के जीवन को सभी बंधनों से मुक्त अवस्था में होने की कल्पना की थी। उसने धर्म और पारंपरिक रीति-रिवाजों द्वारा मनुष्य के आनंदमय और स्वतंत्र जीवन में उत्पन्न बाधाओं पर विचार किया था। उसने इसी आधार पर एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी। स्वभाव से वह एक अच्छा इंसान था। वह कभी किसी को बुरी नजर से नहीं देखता था। जहाँ तक संभव हो, वह लोगों की मदद करता था। लेकिन जीवन के प्रति उसकी सोच थोड़ी अलग थी। उसने कात्यायनी को अपने इस दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया था और अंततः उसे मना लिया था। उसने पूरी रात इस निराशाजनक प्रश्न पर चिंतन किया कि अब उनके विवाह का भविष्य क्या है। जब कात्यायनी सुबह 5 बजे उठी, तो वह उसके पास गई और पूछा, 'तुम्हारी आंखें लाल क्यों हैं? क्या तुम बिल्कुल नहीं सोए? तुम यहां क्यों बैठे हो?'
क्या तुम्हें कुछ भी याद नहीं है?
उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। 'तुम कहना क्या चाह रहे हो?'
उसने उसे अपने पास खींच लिया और सब कुछ विस्तार से बताया। उसकी आँखों में आँसू थे। 'यहाँ आओ,' वह उसे पलंग तक ले गई, उस पर बैठ गई, उसका सिर अपनी जांघ पर रख लिया और बोली, 'मेरी वजह से तुम कितना कष्ट सहते हो! मुझे तो कुछ पता ही नहीं। अब तुम सो जाओ। मैं तुम्हें सहलाकर सुला दूँगी।'
उसने अपनी जलती हुई आँखें बंद कर लीं। जब वह उसे किसी बच्चे की तरह थपथपा रही थी, तो उसकी आँखों में आँसू थे। वे आँसू उसके गाल पर गिर पड़े।
‘तुम क्यों रोती हो?’ उसने आंखें बंद करके कहा।
‘अनजाने में तुम्हें दुख पहुँचाने के प्रायश्चित के लिए। बात मत करो। बस सो जाओ।’ वह झुकी और उसे अपनी गोद में छुपा लिया।

6

राजा कात्यायनी की बिगड़ती सेहत से बहुत परेशान था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस मुश्किल दौर से कैसे निपटे। उसका मन जितना अशांत होता जाता, राजा के प्रति उसका प्यार उतना ही बढ़ता जाता। अगर राजा किसी काम में लग जाता, तो कात्यायनी उसकी इस क्षणिक दूरी को अपने प्यार में कमी समझती। अगर किसी कारणवश राजा उससे नाराज़ हो जाता, तो कात्यायनी को डर लगता कि राजा उसे भी

छोड़ देगा। एक दिन बिस्तर पर लेटे हुए कात्यायनी ने राजा के पैर पकड़कर कहा, “अगर आप मुझसे दूर रहेंगे, तो मैं इसे कैसे सहन करूँगी? क्या आप मुझ पर ज़रा भी दया नहीं करते?”

‘मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुमने अपने मन में कुछ निराधार भय पाल रखे हैं।’ उसे दिलासा देते हुए उसने कहा, ‘मैं तुम्हारे प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता। मैं तो बस यही चाहता हूँ कि तुम शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ हो जाओ, लेकिन तुम दुबली-पतली होती जा रही हो। क्या तुम कम से कम मेरे लिए अपने मन को शांत नहीं करोगी?’

‘क्या तुम मेरी मेहनत को नहीं समझ सकते? मेरी वजह से तुम्हें कष्ट भोगना पड़ेगा! तुम एक नेक इंसान हो। मैंने तुम्हें पर्याप्त खुशी नहीं दी।’ उसने उसे गले लगाया और फिर रोने लगी।

उसे उसके मानसिक रोग का पता चला। अगर तीनों गर्भधारण में से एक भी सफल हो जाता, तो सहारा तो होता। वह समझ गया था कि वह तीनों गर्भपातों को अपने पापों का परिणाम मानती थी। उसे याद आया कि एक बार नींद में बड़बड़ाते हुए उसने कहा था कि एक वंश के बीज के निवास स्थान को दूसरे वंश के बीज को देना पाप है, और तीनों भ्रूण उसी पाप के फलस्वरूप नष्ट हो गए थे। वह पूरी तरह समझ गया था कि उसके अंतरात्मा में पापों और पुण्यों का आकलन ही उसके पतन का कारण था। उसकी लाचारी बढ़ती ही गई, उसका प्रेम भी बढ़ता गया। वह अपना काफी समय उसके साथ बिताता था।

एक रात, वह अपने भाई के बंगले पर गया। हाल ही में राव का स्वास्थ्य भी बिगड़ गया था। वह बरामदे में एक कुर्सी पर आराम कर रहे थे। करुणा अंदर एक किताब में खोई हुई थी। उनके हालचाल पूछने के बाद, राजा ने राव को कात्यायनी की हालत के बारे में बताया। वह भी नंजनगुड के श्रोत्री के बारे में जानने के लिए उत्सुक था। उसने कात्यायनी से यह सवाल नहीं पूछा था, क्योंकि इससे उसे दुख होता। पहली बार उसने अपने भाई से इस बारे में पूछा। राव ने अपनी सारी जानकारी देते हुए कहा, 'जब हम पिछले साल वहाँ गए थे, तब हमें भी लगा था कि उनकी बहू का वहाँ होना बेहतर होता।' राजा गहरी सोच में डूब गया। कुछ देर बाद उसने पूछा, 'अगर कात्यायनी अभी भी वहाँ जाकर उनसे क्षमा मांग ले, तो उस बुजुर्ग व्यक्ति को संतोष मिलेगा और कात्यायनी का मन भी शांत हो जाएगा, है ना?'

मैंने उससे इस बारे में बात की। उसे उन सब बातों की याद भी नहीं आती। जिन बातों से उसका कोई लेना-देना नहीं है, उन्हें वह याद नहीं रखता। वह पूर्ण वैराग्य का जीवन जीता है। अगर उससे मिलने और क्षमा मांगने से उसका मन शांत हो जाता है, तो ठीक है।

जब राजा ने उससे इस बारे में बात की, तो वह स्तब्ध रह गई। उसके भीतर एक अजीब सी शक्ति ने उसके दिल को व्याकुल कर दिया। उसने आशंका से पूछा, 'आपने इस मामले पर जीजाजी से क्यों चर्चा की? मैं कभी वहां नहीं जा सकती। उनके सामने बेहोश होने की बजाय, मैं यहीं गिरकर मर जाना पसंद करूंगी।'

राजा असहाय था। उसने कहा, 'नागु की तरह राम पूजा क्यों नहीं करते? शायद तुम्हें मन की शांति मिल जाए।'

मैंने वह भी आजमाया है। मुझ जैसे लोगों के लिए तो राम भी राजी नहीं होते।

राजा दिन-ब-दिन और भी ज़्यादा बीमार होता जा रहा था। जल्द ही वह अंतर्मुखी हो गया। थिएटर के काम का बहाना बनाकर वह रोज़ सुबह जल्दी निकल जाता, शहर के बाहरी इलाके में कहीं भी चला जाता और किसी पेड़ के नीचे बैठ जाता। साइकिल चलाने का उसका पुराना जोश खत्म हो चुका था। दिसंबर की सर्दियों की छुट्टियाँ चल रही थीं। एक दिन वह हुनसुर रोड पर साइकिल चला रहा था। उसे उस रास्ते की यादें धुंधली होती जा रही थीं। लगभग आठ मील चलने के बाद वह उस नाले के पास पहुँचा, जिसके किनारे उसने और कात्यायनी ने कई साल पहले समय बिताया था। साइकिल को खींचते हुए वह उसी जगह गया। वह हैरान रह गया। गाँव वालों ने वहाँ की सारी वनस्पति काट डाली थी। उन्होंने नाले पर एक बांध बना दिया था और पानी को अपने खेतों की ओर मोड़ दिया था। प्रकृति ने अपनी आज़ादी खो दी थी और मनुष्य के कार्यों के अधीन हो गई थी। राजा बांध के पास गया और देखा। जमा हुआ पानी दर्पण की तरह शांत था। वह झुका और अपनी छवि देखी। वह दंग रह गया। वह एक बूढ़े आदमी जैसा लग रहा था। उसका चेहरा मुरझा गया था। उनके कनपटी के बाल सफेद होने लगे थे। उनके माथे की झुर्रियां साफ दिखाई दे रही थीं। उन्हें याद आया कि उनकी उम्र मात्र 40 वर्ष थी।

अध्याय 23

1

दोनों ने पाँचवें खंड के लिए जी-जान से काम किया। इस खंड में भारत में ब्रिटिश शासन के आगमन से लेकर आज तक हुए सांस्कृतिक परिवर्तन पर चर्चा की जानी थी। विषयवस्तु बहुत व्यापक थी। उन्हें ब्रिटिश उपनिवेशीकरण और इस राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन पर छाए निराशा के बीच के संबंध को दर्शाना था। उन्होंने अंतिम दो अध्यायों में 'क्या प्राचीन भारतीय संस्कृति जीवंत बनी रहेगी?' इस प्रश्न पर चर्चा करके खंड को समाप्त करने की योजना बनाई थी। राव पर अधिक दबाव न पड़े, इसलिए करुणा ने अधिकांश प्रारंभिक कार्य संभाला। राव केवल विषयों की मूल रूपरेखा और उन पर अपने विचार बताते थे। करुणा फिर उन विचारों के पक्ष और विपक्ष में तर्क देने वाली सामग्री खोजतीं और उन्हें राव के ध्यान में लातीं। वह उनके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखतीं और उन्हें अक्सर शाम को टहलने के लिए ले जातीं। वह उन्हें देर रात तक काम करने से रोकतीं और यह सुनिश्चित करतीं कि उन्हें रात में पर्याप्त नींद मिले।
एक रात करीब 11 बजे, राव अपनी मेज पर बैठे कुछ नोट्स बना रहे थे। करुणा उनके पीछे एक कुर्सी पर बैठी किताब पढ़ रही थी, हाथ में पेंसिल थी। राव कुछ लिख रहे थे, तभी अचानक उन्हें चक्कर आने लगा। उन्होंने पलकें झपकाईं, लेकिन उन्हें अपने हाथों में पकड़ी कलम दिखाई नहीं दी। जब तक उन्होंने अपने बाएं हाथ से चश्मा उतारा, तब तक वे अधमरे हो चुके थे। उनमें इधर-उधर हिलने की भी ताकत नहीं थी। लेकिन वे इतना होश में थे कि अपनी परेशानी बता सकें। धीमी आवाज में उन्होंने 'करुणा' कहकर पुकारा। करुणा, जो ठीक उनके पीछे थी, ने अपना सिर उठाया। उसी क्षण, उनकी छाती के बाईं ओर असहनीय दर्द हुआ। उनकी सांसें मानो रुक गई थीं; सांस लेना मुश्किल हो गया और छाती तन गई। उन्होंने आंखें बंद कर लीं और दर्द सहने के लिए दांत भींच लिए। वे अपना बायां हाथ उठाना चाहते थे, लेकिन उठा नहीं पाए। जब तक उन्होंने अपना दायां हाथ उठाकर अपनी छाती पर रखा, करुणा उनके पास आ गईं और उनका सिर अपनी छाती से लगा लिया। एक पल के लिए उसके चेहरे पर असहनीय पीड़ा के भाव छा गए। पीड़ा धीरे-धीरे कम होती प्रतीत हुई, और उसने अपना सिर उसके कंधों पर रख दिया।

करुणा सदमे में थी। उसे यह समझने में सिर्फ दो मिनट लगे कि यह दिल का दौरा था। उसने हिम्मत जुटाई, अपनी उंगलियां उसकी नाक के नीचे रखीं और जांच की। वह सामान्य रूप से सांस ले रहा था। उसने बार-बार रागप्पा को पुकारा। रागप्पा, जो अंदर के कमरे में आराम कर रहा था, अपना कंबल घसीटते हुए दौड़ता हुआ आया। 'पड़ोसी प्रोफेसर को बुलाओ। जल्दी! मौत आ गई है,' उसने अपनी टूटी-फूटी कन्नड़ भाषा में कहा। रागप्पा दौड़ा। दो मिनट में पड़ोसी प्रोफेसर दौड़ता हुआ आया। राव का चेहरा ध्यान से देखकर उसने कहा, 'अब दिल का दौरा थम गया है। जान को कोई खतरा नहीं है। आप कृपया उसे ऐसे ही पकड़े रहें,' उसने करुणा से कहा और रागप्पा की ओर मुड़ा। 'आप इस कुर्सी के पास एक पलंग रख दें और उस पर एक बिस्तर बिछा दें। देखिए, जब आप पलंग यहां लाएं तो कोई आवाज नहीं होनी चाहिए। मुझे आपकी मदद करने दीजिए।' वे दोनों राव के शयनकक्ष में गए, साथ में एक पलंग लाए और उसे राव की कुर्सी के पास रख दिया। तकिया रखने के बाद, उन्होंने करुणा की मदद से राव को धीरे से खाट पर लिटाया और कहा, 'मैं ऐसे मामलों से परिचित हूँ। यहाँ ज्यादा रोशनी नहीं होनी चाहिए। आप लाइट बंद कर दीजिए और उनके पास बैठ जाइए। मैं अपनी कार से हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. आनंद राव को लाता हूँ।'

प्रोफेसर चले गए। दो मिनट में करुणा ने उनकी कार की तेज आवाज सुनी और वह तुरंत निकल गए। करुणा ने कमरे की बत्ती बुझा दी। रागप्पा पास ही खड़ा था। वह पलंग के पास गई और खड़ी रही। उसे कमजोरी महसूस हो रही थी। वह जानती थी कि राव का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। वह यह भी जानती थी कि वह अपनी पहली पत्नी के बारे में बहुत ज्यादा चिंतित रहते हैं। उनकी पीड़ा को समाप्त करने के लिए, वह उन्हें लाने के लिए भी तैयार थी। लेकिन राव ने उसे रोक दिया और कहा कि यह प्रयास व्यर्थ होगा। हालांकि राव की तबीयत ठीक नहीं थी, लेकिन उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उनका स्वास्थ्य इतनी जल्दी बिगड़ जाएगा। बगल के कमरे की रोशनी में राव का शरीर धुंधला सा दिखाई दे रहा था। उसने अपनी उंगलियां उनकी नाक के नीचे रखीं। सांस धीमी थी। पड़ोसी के शब्दों को याद करके कि हमला टल गया है और उनकी जान को कोई खतरा नहीं है, उसने एक पल के लिए राहत की सांस ली। फिर भी, उसके मन में एक खालीपन सा था। उसे उस त्रासदी की धुंधली सी तस्वीर दिखाई दे रही थी। उन्होंने याद दिलाया कि जो लोग अपना पूरा जीवन ज्ञान, कला, अनुसंधान और इसी तरह की चीजों की लगन से खोज में लगा देते हैं, उनका अंत आम तौर पर इसी प्रकार होता है।

उसे एक कार के आने की आहट सुनाई दी। जब तक वह बाहर निकली, प्रोफेसर डॉक्टर के साथ अंदर आ गए। मरीज की जांच करने के बाद, डॉक्टर कमरे से बाहर निकले और बोले, 'मैं दो गोलियां दूंगा। इसे पानी में घोलकर उसे धीरे-धीरे पिला देना। मैं कल फिर आकर जांच करूंगा। एक हफ्ते बाद हम उसे अस्पताल ले जाएंगे और कुछ परीक्षण करवाएंगे। आप उसे दूध और फलों का रस पिला देना। जान को कोई खतरा नहीं है। चिंता मत करो। कल सुबह मुझे देर हो सकती है। पर्दे बंद रखना। तेज हवा नहीं चलनी चाहिए।'
जब डॉक्टर ने गोलियां देकर प्रस्थान किया, तो करुणा उनके और प्रोफेसर के साथ दरवाजे तक गई। प्रोफेसर ने उससे पूछा, 'डॉक्टर को छोड़ने के बाद, क्या मैं आपके बहनोई राजा राव को ला सकता हूँ?'
'ज़रूर कीजिए। राव की पहली पत्नी भी।'
प्रोफेसर ने एक मिनट सोचा और कहा, 'मुझे लगता है कि उसका आना ठीक नहीं होगा। मरीज को भावनाओं के उफान का सामना नहीं करना चाहिए।' उन्होंने डॉक्टर की ओर मुड़कर कहा, 'मैंने आपको बताया था, उसकी पहली पत्नी के साथ कुछ समस्या है। क्या हम उसे यहाँ ला सकते हैं?'
डॉक्टर ने कहा, 'ऐसा मत करो।'
डॉक्टर के जाने के बाद, करुणा ने गोली को कुछ बूंद पानी में भिगोया और राव को उसे चाटने को कहा। राव पूरी तरह होश में थे। करुणा ने पूछा, 'क्या आप थोड़ा दूध या फलों का रस लेंगे?' राव ने सिर हिलाकर मना कर दिया। करुणा पलंग के बगल में कुर्सी पर बैठ गई। डॉक्टर के शब्दों से भले ही उसे थोड़ी राहत मिली हो, लेकिन उसका मन उदासी से मुक्त नहीं हुआ था। वह जानती थी कि राव इस बीमारी से ठीक तो हो जाएंगे, लेकिन पहले की तरह काम नहीं कर पाएंगे। और बीमारी के दोबारा होने का खतरा हमेशा बना रहता था, जो निश्चित रूप से घातक होगा। उसका मन इतना खालीपन से भरा हुआ था कि वह भविष्य के बारे में सोच भी नहीं पा रही थी। वह बस कुर्सी पर टेक लगाकर बैठी रही। रागप्पा बैठक में दीवार के सहारे बैठे थे। वे असमंजस में थे।
तब तक पड़ोस के प्रोफेसर की पत्नी, उनकी दो बेटियाँ और बड़ा बेटा उनसे मिलने आ चुके थे। करुणा उनसे दो बार बात कर चुकी थी, इसके अलावा वह उन्हें ज़्यादा नहीं जानती थी। काम में पूरी तरह डूबे रहने के कारण उसे पड़ोस के परिवारों से मिलने-जुलने का समय ही नहीं मिलता था। ज़ोर से बोलने से खुद को रोकते हुए वे मुख्य द्वार पर इंतज़ार करने लगे। रागप्पा ने करुणा को उनके आने की सूचना दी। करुणा बाहर

निकली और उनका स्वागत किया। प्रोफेसर की पत्नी अच्छी अंग्रेज़ी बोलती थीं। उनकी दोनों बेटियाँ कॉलेज की छात्राएँ थीं। बेटा मेडिकल स्नातक पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष की परीक्षा देने वाला था। 'वह कैसा है?' महिला ने पूछा।
डॉक्टर ने कहा कि दौरा टल गया है। उन्होंने कहा कि जान को कोई खतरा नहीं है। आपके पति ने भी यही राय दी।
'चिंता मत करो। कई लोग दिल का दौरा पड़ने से बच गए हैं और सामान्य जीवन में लौट आए हैं। उनके लिए डॉक्टर द्वारा बताए गए तरीके से जीवनशैली अपनाना ही काफी होता है। राव के अत्यधिक काम के कारण ही ऐसा हुआ होगा,' उनके बेटे ने कहा। तभी कार की आवाज फिर सुनाई दी। राजा जल्दी से नीचे उतरे। उनके चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी। करुणा के पास पहुँचकर उन्होंने पूछा, 'वह कैसा है?'
'मैंने अभी-अभी उसे गोलियां दी हैं,' उसने कहा। प्रोफेसर ने अपने जूते उतारे और अंदर चले गए। राजा नंगे पैर आया था। तब तक राव को नींद आ रही थी। वह बाहर निकले और बोले, 'वह सो गया है। उसे जगाना मत। ध्यान रखना कि कोई आवाज़ उसे परेशान न करे।' उन्होंने अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा, 'उसे फलों के रस की ज़रूरत पड़ सकती है। अगर घर में कोई फल हों, तो ले आओ।' 'मेरे पास फलों का भंडार है,' करुणा ने कहा, लेकिन उन्होंने उसे मना कर दिया। 'रहने दो। उसे और लाने दो। उसे मीठे नींबू का रस दो। उसने रात का खाना खा लिया है। रात में उसे कुछ भी पीने के लिए मजबूर मत करना। मेरे पास कुछ ग्लूकोज है। रस में दो चम्मच मिला दो।'
पड़ोसी फल और ग्लूकोज लेकर आए, उसे एक बार फिर सांत्वना दी और चले गए। प्रोफेसर ने कहा, 'बिल्कुल चिंता मत करो। राजा राव यहीं हैं। मैं सुबह उनसे मिलने आऊंगा,' और अपने परिवार के साथ घर लौट गए। अंदर राव सो रहे थे। राजा ने रागप्पा को राव के पास भेजा और करुणा को रसोई में ले जाकर धीरे से कहा, 'मुझे विस्तार से बताओ कि भाई को क्या हुआ।'
करुणा ने सब कुछ बताया और पूछा, 'आपने अपने परिवार को क्या बताया? क्या नागलक्ष्मी को इसके बारे में पता है?'
नहीं। प्रोफेसर मुझे बाहर ले गए, मुझे स्थिति के बारे में बताया और मुझसे कहा कि मैं इसे दूसरों को न बताऊं। मैंने उन्हें बताया कि मैं कुछ काम से मांड्या जा रहा हूं और जल्द ही वापस आ जाऊंगा।
क्या आप उन्हें कल के घटनाक्रमों के बारे में सूचित करेंगे?
'अगर वह आती है, तो यह मरीजों की देखभाल के लिए शुभ संकेत होगा।'

'नहीं। शायद आपको कुछ पता नहीं है,' उसने कहा और राव के पहले उनके घर आकर नागलक्ष्मी को आमंत्रित करने की घटना सुनाई।
उन्होंने पूछा, 'आपने या भाई ने मुझे इस बारे में क्यों नहीं बताया?'
‘आपके भाई ने मुझे यह कहकर टोका कि इसका कोई फायदा नहीं है, क्योंकि नागलक्ष्मी ने इस संबंध में एक संक्षिप्त रुख अपना लिया है।’
‘अभी उसे मत बताइए। मैं कल कात्यायनी को बुलवा लूंगी, और वह कुछ दिनों तक यहीं रहेगी। मैं नागलक्ष्मी को कोई बहाना दे दूंगी। मैं भी ज्यादातर यहीं रहूंगी। मेरे लिए दिन के अंत तक घर जाना ही काफी है।’
वे उस कमरे में दाखिल हुए जहाँ राव लेटे हुए थे। वे पलंग के दोनों ओर रखी कुर्सियों पर बैठ गए और चुप रहे। हालाँकि उन्होंने रागप्पा से आराम करने के लिए कहा, लेकिन वह नहीं गए।
अगले दिन सुबह डॉक्टर आए, राव की जांच की और कहा, ‘इन्हें जांच के लिए अस्पताल ले जाने की कोई जरूरत नहीं है। एक हफ्ता बीतने दीजिए। फिर इन्हें कुछ समय के लिए अस्पताल में भर्ती होने दीजिए। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद इन्हें दो महीने आराम करना चाहिए। ध्यान रखिए कि इन्हें किसी तरह के भावनात्मक तनाव में न डाला जाए। बार-बार मिलने-जुलने वालों को न आने दें। अगर आप इन सभी बातों का पालन करेंगे और मेरी बताई दवाइयां लेंगे, तो ये लगभग तीन महीने में ठीक हो जाएंगे। मैं चार दिन में मिलने आऊंगा।’ राजा इनके साथ गाड़ी तक गए।
सुबह दस बजे राजा घर पहुंचा, कात्यायनी को शयनकक्ष में ले गया और उसे सब कुछ बताया। वह अपने देवर की खराब सेहत को लेकर दुखी थी। वह नागलक्ष्मी के पास गया और बोला, 'नागु, करुणा की तबीयत ठीक नहीं है। क्या हम कात्यायनी को कुछ दिनों के लिए यहाँ भेज दें?' नागलक्ष्मी ने बस सहमति में सिर हिलाया। तब से, कॉलेज में बिताए दो घंटों को छोड़कर, कात्यायनी करुणा के पास ही रहती थी। ऊर्जा की कमी के कारण कात्यायनी कोई काम नहीं कर पाती थी, लेकिन उसकी उपस्थिति ही करुणा के लिए सुकून का स्रोत थी।
अगले सप्ताह जब राव को अस्पताल में भर्ती कराया गया, तो करुणा वहां देखभालकर्ता के रूप में रहीं और कात्यायनी घर लौट गईं।

राव एक महीने तक अस्पताल में रहे। दो महीने तक घर पर आराम करने के बाद, डॉक्टर ने उन्हें बाहर जाने की अनुमति दी। विश्वविद्यालय ने उन्हें इस अवधि के लिए चिकित्सा अवकाश दिया था। वे दिन में दो बार टहलने जाते थे। सुबह वे कुक्कराहाल्ली तालाब के पीछे धीरे-धीरे टहलते थे। डॉक्टर ने उन्हें ऊबड़-खाबड़ रास्तों से बचने की सलाह दी थी। उन्होंने दोपहर में पुस्तकालय जाना बंद कर दिया था। वे केवल कॉलेज जाते, एमए के छात्रों को कुछ व्याख्यान देते और वापस आ जाते। करुणा नियमित रूप से पुस्तकालय का काम संभालती थीं। दो महीने बाद, डॉक्टर ने आकर उनकी अच्छी तरह से जांच की और कहा, 'आपका हृदय अभी भी नाजुक है। आपको गहन अध्ययन, लेखन, पुस्तक संकलन और अन्य सभी गतिविधियों से पूरी तरह परहेज करना चाहिए। आप कॉलेज जाकर प्रतिदिन एक घंटे आराम से व्याख्यान दे सकते हैं। आपको मासिक जांच के लिए मेरे पास आना चाहिए और मेरे द्वारा बताई गई दवाएं नियमित रूप से लेनी चाहिए। आपको भीड़भाड़ वाले इलाकों के पास नहीं जाना चाहिए। यदि आप इन निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप 10 वर्ष अधिक जी सकते हैं। यदि आप इन्हें अनदेखा करते हैं, तो मैं कोई आश्वासन नहीं दे सकता।' कभी भी कुछ भी हो सकता है। डॉक्टर की चेतावनी सुनकर करुणा की रूह कांप उठी। उसने राव को एक भी पंक्ति पढ़ने या लिखने से रोक दिया। वह पाँचवें खंड की रूपरेखा से भली-भांति परिचित थी। उसने स्वयं आवश्यक जानकारी एकत्र करने का कार्य शुरू कर दिया था। उसने योजना बनाई थी कि वह इस पर पूरी तरह से स्वयं काम करेगी, इसका मसौदा तैयार करेगी, इसे अंतिम रूप देगी, राव को पढ़कर सुनाएगी, नोट्स लेगी और उनके सुझावों के आधार पर इसे परिष्कृत करेगी। राव ने स्नेहपूर्वक उसके आदेशों का पालन किया। करुणा अब अपने भविष्य के बारे में सोचने लगी। उसके माता-पिता का निधन बहुत पहले हो चुका था। उसके भाई से उसका संपर्क काफी समय पहले ही टूट गया था। उनके बीच कोई कड़वाहट नहीं थी, लेकिन उसके लिए ग्रंथों के अलावा व्यवस्थित रूप से कुछ भी लिखना असंभव था। अब तक उसने अपने पति की मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में नहीं सोचा था। वह केवल जीविका के लिए अपने पति की स्थिति पर विलाप करने से घृणा करती थी। अब भी उसे उनकी मृत्यु के बाद जीवन यापन की आर्थिक स्थिति के बारे में कोई चिंता नहीं थी। लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उसके पास क्या बचेगा? बच्चे? रिश्तेदार? भविष्य अर्थहीन और क्रूर प्रतीत हो रहा था। अपने पति के स्वास्थ्य की रक्षा करने के दृढ़ संकल्प के साथ, उसने अत्यंत सावधानी और ध्यान से उनकी देखभाल करना शुरू कर दिया।

आरंभ में राव ने चिकित्सक की सलाह का पालन किया। परन्तु धीरे-धीरे ऊब उत्पन्न होने लगी। शरीर को विश्राम देना तो उनकी इच्छा में था, परन्तु मन को निष्क्रिय करना उनके लिए असंभव था। वे श्रोत्री की भविष्यवाणी को याद करते: बुद्धि भी प्रकृति का एक अंश है। राव चिंतन करते रहे। यदि कर्मठता प्रकृति का मूल गुण है, तो बुद्धि निष्क्रिय कैसे हो सकती है? यदि बुद्धि गतिविधि से मुक्त अवस्था प्राप्त कर ले, तो मनुष्य मुक्त आत्मा बन जाएगा। वे अनेक बार आत्मा की मुक्ति पर ध्यान करते। वे जानते थे कि भारतीय दर्शन में इस सिद्धांत पर किस प्रकार चर्चा की गई है। अब वे व्यक्तिगत रुचि से इस पर विचार कर रहे थे। एक मुक्त आत्मा को बुद्धि के परिश्रम से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। यह देखते हुए कि एक मुक्त आत्मा वास्तव में ज्ञान का साक्षात स्वरूप है, जो आत्मा का मूल गुण है, ऐसी आत्मा के लिए बुद्धि के परिश्रम का क्या लाभ? क्या मैं इस अर्थ में मुक्ति का पात्र हूँ?... वे इस प्रकार चिंतन करते। इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक दृढ़ता, अष्टांगयोग आदि का विचार उनके मन में आता रहता था। वे इस तथ्य को स्वीकार कर लेते थे कि उन्होंने जो मार्ग चुना है वह भिन्न है, और इस आयु और परिस्थिति में पारंपरिक तरीकों से मोक्ष प्राप्त करना उनके लिए संभव नहीं है। कभी-कभी जब वे स्वयं को दर्पण में देखते, तो सोचते, 'मैं 53 वर्ष का हो गया हूँ। कुछ बालों को छोड़कर लगभग गंजा हो गया हूँ। यदि मैं अब तक जिस मार्ग पर चला हूँ उसी पर चलता रहूँ, तो कम से कम अपना लक्ष्य तो पूरा कर लूँगा। यदि इसके बजाय मैं अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही कोई दूसरा लक्ष्य चुन लूँ, तो न तो कुछ प्राप्त होगा और न ही कुछ। अब केवल अपना ग्रंथ पूरा करना बाकी है, और कुछ नहीं।'
उसके निर्देशों का उल्लंघन करते हुए, वह करुणा द्वारा संकलित सामग्री का अध्ययन करता था। दिल का दौरा पड़ने की पहली घटना तक उन्होंने जो भी जानकारी संकलित की थी, उस पर उसने गहन चिंतन किया था। कभी-कभी वह सोचता था कि क्या उसकी जगह करुणा यह ग्रंथ स्वयं पूरा कर सकती थी। उसे इस पर संदेह था। उसे न तो उसकी बौद्धिक क्षमता पर और न ही विषय पर उसकी महारत पर कोई संदेह था। लेकिन वह सोचता था कि एक ग्रंथ विचारक की आंतरिक शक्ति का साक्षात रूप होता है। जिन उंगलियों ने पहले चार खंड लिखे हैं, उन्हें ही पांचवां खंड भी लिखना चाहिए। करुणा चाहे जितना भी प्रयास करे, यदि वह इसे स्वयं लिखती, तो पांचवां खंड पहले चार खंडों के सार के समतुल्य नहीं होता। इसलिए, उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि इसे उसे ही लिखना चाहिए। अपनी अगली चिकित्सा जांच में उसने अपने डॉक्टर से इस विषय पर चर्चा की। तब तक डॉक्टर राव की विद्वत्ता के बारे में पूरी तरह से जान

चुके थे और उनका बहुत सम्मान करते थे। राव की बात सुनने के बाद उन्होंने कहा, 'बिल्कुल, मैं आपकी बात समझ सकता हूँ। कोई भी विशेषज्ञ कारण-कार्य संबंध को निश्चित रूप से नहीं बता सकता। लेकिन अगर आप सारा काम छोड़ दें, तो संभव है कि आप 10 साल और जी सकें। जिस किताब का आपने जिक्र किया है, वह छह सौ से अधिक पृष्ठों की है, है ना?'
'हाँ।'
जब आप लिखने में मग्न हो जाते हैं, तो क्या आप अपने ऊपर एक प्रतिबंध लगा सकते हैं कि आप एक दिन में कितने पृष्ठ लिखेंगे?
'यह संभव नहीं है। आमतौर पर जब मैं किसी विषय पर लिखना शुरू करता हूँ, तो एक सप्ताह के भीतर ही वह मुझे पूरी तरह से अपनी ओर खींच लेता है। उसके बाद, मैं स्वतंत्र नहीं रह पाता। वह कलम को अपनी गति से खींचता रहता है। और जब तक लेखन पूरा नहीं हो जाता, मुझे कोई थकान महसूस नहीं होती। लेकिन कई बार, मस्तिष्क की गति से तालमेल न बिठा पाने के कारण शरीर थक जाता है। फिर भी, लेखन पूरा होने तक मुझे शरीर की वह थकान महसूस नहीं होती।'
उनकी ओर प्रशंसा भरी नजरों से देखते हुए डॉक्टर ने सिर हिलाया। उन्होंने पूछा, 'आप मुझे क्या करने की सलाह देते हैं?'
लेखन के बिना मैं जी नहीं सकता। बौद्धिक गतिविधि का यह ठहराव व्यर्थ है। "सदाशिव राव नामक एक हृदय रोगी लेखक इतने वर्षों तक मृत्यु के भय में जीता रहा" यह तथ्य विद्वता की दुनिया के लिए अप्रासंगिक है। मेरे चार खंडों की सराहना करने के बाद, वह जगत श्रृंखला के पाँचवें खंड की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा है। यदि मैं इसे नहीं लिखता, तो मेरा जीवन एक कण के बराबर भी नहीं है। यदि मैं इसे पूरा करते हुए मर जाता हूँ, तो मैं अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लूँगा। मैं इसे लिखना शुरू करूँगा। लगभग चार महीनों में पहला मसौदा तैयार हो जाएगा। अगर तब भी मेरी मृत्यु हो जाती है, तो कोई बात नहीं, क्योंकि मेरी पत्नी तब इसे सुधार सकती है। एक बार जब मैं इसे शुरू कर दूँ, तो क्या आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि मैं इसके पूरा होने तक जीवित रहूँ?
ये शब्द केवल उनकी ज़बान से नहीं निकल रहे थे। उनके पूरे व्यक्तित्व की इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ उनके प्रस्ताव में समाहित हो गई थीं। डॉक्टर गहरे चिंतन में डूबे हुए थे। उनके होठों पर एक क्षणिक मुस्कान आई। राव ने इसे महसूस नहीं किया। डॉक्टर कई ऐसे विद्वानों को जानते थे जिन्होंने शोध के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। उन्होंने सोचा कि अगर किसी ने भी ज्ञान के लिए अपना प्राणों का बलिदान नहीं दिया

होता, तो मानव सभ्यता का पतन हो गया होता। उन्होंने सोचा कि अगर एक हृदय रोग विशेषज्ञ के आश्वस्त करने वाले शब्दों से उन्हें हौसला मिल सकता है, तो वे एक महान ग्रंथ के उद्भव में बाधा क्यों बनें? उन्होंने राव के हाथ थामे और कहा, 'बिल्कुल भी चिंता मत करो। मैं अपना सारा ज्ञान तुम्हारी देखभाल में लगा दूंगा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि इस बीच तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा।'

राव के मन में संतोष का भाव छा गया। डॉक्टर का शुक्रिया अदा करने के लिए उनके पास शब्द नहीं थे। डॉक्टर खुद उन्हें उनके बंगले तक ले गए। उस रात जब उन्होंने करुणा को अपना संकल्प बताया और डॉक्टर के आश्वासन के बारे में बताया, तो करुणा सदमे में आ गई। दो मिनट में ही उसकी आँखों में आँसू आ गए। यह देखकर राव ने पूछा, 'तुम दूसरी आम महिलाओं की तरह कैसे रो सकती हो?'

'क्या मैं इंसान नहीं हूँ? विद्वत्ता की दुनिया के प्रति तो आपके कुछ दायित्व हैं, लेकिन अपनी कानूनी रूप से विवाहित पत्नी के प्रति कोई नहीं। आपका उससे किसी भी तरह का कोई रिश्ता नहीं है, है ना?'

राव ने करुणा के प्रश्न का उत्तर दिए बिना अपना सिर झुकाए रखा। करुणा के प्रश्न ने उनके दिल को झकझोर दिया। पहली बार उन्होंने इस बात पर विचार किया कि उन्होंने इस स्त्री को क्या दिया है, जिसने अपने लोगों को त्याग दिया था और पूरी निष्ठा से उनके और उनके प्रोजेक्ट के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रही थी। करुणा ने उनसे कुछ भी अपेक्षा नहीं की थी। उन्होंने सोचा कि वह उसे केवल इतना ही दे सकते हैं कि कुछ और समय तक जीवित रहें। उनके मन में यह प्रश्न उठा, 'अगर मैं मर गया तो करुणा का क्या होगा?' और वे इससे व्याकुल हो गए। उन्होंने पूरी रात इसी बारे में सोचा और अगले दिन कहा, 'मैं नहीं लिखूंगा। आप जल्दी से लिखना शुरू कर दीजिए। मैं इसे पढ़ूंगा और सुधार करूंगा।'

करुणा का हृदय आनंद से भर उठा। उसने उनके हाथ थामे और प्यार से उन्हें दबाया। उसने एक सप्ताह के भीतर लिखना शुरू किया और 10 दिनों में 50 पृष्ठ लिख डाले। लिखावट पढ़ना कठिन होने के कारण उसने उसे टाइप किया और उन्हें देते हुए कहा, 'एक ही बार में मत पढ़ना। धीरे-धीरे पढ़ना, प्रतिदिन लगभग चार पृष्ठ, और मुझे बताना।' राव ने कुछ पढ़ा। उन्हें करुणा की अंग्रेज़ी शैली और विषयवस्तु की समृद्धि की सराहना हुई। लेखन के प्रति उनकी लगन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। वे करुणा के इन गुणों से परिचित थे। फिर भी, पिछले चार खंडों का मूल भाव इसमें गायब था। करुणा ने भी राव की बात से सहमति जताई।

राव का जीवन हमेशा की तरह चलता रहा। वे सैर पर जाते, खूब फल खाते। लेकिन अपने लक्ष्य की ओर काम न कर पाने की असमर्थता उनके लिए असहनीय हो गई। जो व्यक्ति निरंतर सक्रिय जीवन जीता था, उसे लगा कि ऐसी सुस्त जिंदगी से मृत्यु ही श्रेष्ठ है। दो सप्ताह में ही यह ऊब उनके चेहरे और स्वास्थ्य पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। करुणा इसे आसानी से भांप गई। एक दिन उन्होंने उससे कहा, 'करुणा, तुमने मुझसे इस सुस्त, निर्जीव शरीर के लिए विवाह नहीं किया था। तुमने जिस उद्देश्य से मुझसे विवाह किया है, उसे पूरा करने का संकल्प लो। एक आम औरत की तरह यह मत सोचो कि पति की मृत्यु के बाद उसका क्या होगा। तुम सिर्फ भीड़ का हिस्सा नहीं हो।'

करुणा का चेहरा गंभीर हो गया। पाँच मिनट में ही उसकी आँखों में चमक आ गई। वह पूरी रात गहरी सोच में डूबी रही। भोर होते-होते उसने मानो कोई फैसला कर लिया था। अब राव सुबह जल्दी टहलने जाने लगे थे। जब तक वे लौटे, करुणा ने पिछले छह महीनों से इस्तेमाल न हुई स्याही की बोतल साफ की और उसमें स्याही भर दी। उसने राव की मेज पर कागज़ और अन्य सामान व्यवस्थित किया। लौटकर राव ने स्नान किया और नाश्ता किया। फिर करुणा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें उनके अध्ययन कक्ष में ले जाकर कहा, ‘इन दिनों मैं गहरी अज्ञानता में डूबी रही। आप लिखना शुरू कीजिए। लेकिन संयम से, बिना ज़्यादा ज़ोर लगाए। जहाँ तक हो सके, बोलकर लिखवाइए, ताकि मैं उसे संक्षेप में लिख सकूँ। मैं हमेशा इसी कमरे में आपके पीछे बैठूँगी और अपना काम करती रहूँगी।’

राव ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखें प्रेम और प्रकाश से दमक रही थीं।

अध्याय 24

1

कॉलेज जाने के बाद चीनी की संस्कृत, वेदों और उपनिषदों की पढ़ाई में रुकावट आ गई। वह सुबह 8:45 से शाम 6:30 बजे तक घर से बाहर रहता था। घर लौटने पर वह कपड़े बदलकर संध्यावंदन करता, जिसके बाद उसके दादाजी उसे दो घंटे वेद मंत्रों का पाठ पढ़ाते ताकि वह उन्हें याद कर सके। छुट्टियों में दोपहर में भी पाठ चलता था। चूंकि वह रोज़ ट्रेन से आता-जाता था, इसलिए उसके दादाजी उसे पहले से ज़्यादा दूध और घी खिलाने लगे। जब उसने खाना बनाने में मदद करने की पेशकश की, तो श्रोत्री उसे यह कहकर भेज देते, 'बेटा, जाओ अपनी पढ़ाई करो।' एक साल बीत गया और उसने जूनियर इंटरमीडिएट से सीनियर इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी कर ली।
शीत ऋतु के आरंभ में, कार्तिक माह के दूसरे पखवाड़े के चौदहवें दिन, श्रोत्री को अपने पिता के वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार करने थे। चूंकि उन्हें धीरे-धीरे भोजन करना और खाली पेट संस्कार करना कठिन लगने लगा था, इसलिए वे कुप्पैया को भोजन के लिए बुलाते थे। कुप्पैया पूर्व संध्या पर उपस्थित होकर रसोई साफ करते, अगले दिन के लिए पानी अलग रखते और करी पाउडर तथा अन्य तैयार भोजन बनाते थे। पुजारी हमेशा की तरह सुब्बैया शास्त्री होते थे। श्रोत्री अपने माता-पिता के वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार पूरी श्रद्धा और विनम्रता से करते थे। वे ईश्वर की आराधना और पूर्वजों के वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार दोनों को समान महत्व देते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि जब तक पूर्वज संतुष्ट नहीं होंगे, वंश का उद्धार नहीं होगा। अंत्येष्टि संस्कार में शामिल होने वाले दो व्यक्तियों के लिए वे ऐसे धर्मात्मा व्यक्तियों का चयन करते थे जो प्रतिदिन संध्यावंदन करते थे, जिसमें गायत्री मंत्रों का जाप और सदाचारी जीवन व्यतीत करना शामिल था। वे शारीरिक रूप से स्वस्थ और वृद्धावस्था से कम उम्र के होने चाहिए—विशेषकर उनके दांत सही-सलामत होने चाहिए—ताकि वे कलाकार (यहाँ श्रोत्री) की संतुष्टि के लिए उत्तम भोजन ग्रहण कर सकें। उनमें वेद मंत्रों का स्पष्ट पाठ करने की क्षमता और स्वर की शक्ति होनी चाहिए। श्रोत्री वार्षिक मृत्यु संस्कार संपन्न कराने वाले पुजारियों को उदारतापूर्वक दान देते थे। वे उन्हें तांबे का चम्मच और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए उपयुक्त पात्र तथा नई धोतियों का एक जोड़ा देते थे। वे इसमें दो चांदी के सिक्के भी

जोड़ते थे और श्रद्धापूर्वक उनके चरणों में प्रणाम करते थे। अनिवार्य रूप से, वे पिछली रात से उपवास रखते थे। अगली सुबह वे 1008 गायत्री मंत्रों का पाठ करते थे।
कुप्पैया पूर्व संध्या के अपने कर्तव्यों को पूरा करके चले गए थे। रसोई को पवित्र कर अगले दिन के भोजन के लिए निर्धारित कर दिया गया था, इसलिए श्रोत्री ने दूसरे कमरे में कोयले के चूल्हे पर लक्ष्मी और चीनी के लिए भोजन पकाया। उन्होंने अगले दिन के लिए मुख्य पुजारी और दो नामित व्यक्तियों को बुला लिया था, जिनमें से एक दिवंगत पूर्वजों का प्रतिनिधित्व कर रहा था और दूसरा देवताओं का। दोपहर लगभग 3 बजे, वे अपने अध्ययन कक्ष में कोई पुस्तक खोज रहे थे। उनके मन में मृत्यु संस्कार के एक पहलू को लेकर संदेह उत्पन्न हुआ था। उन्हें धुंधला सा याद था कि इसका वर्णन गोभिला-स्मृति में किया गया है। लाख कोशिश करने के बावजूद, उन्हें प्रासंगिक श्लोक याद नहीं आ रहे थे। उनके पास उस ग्रंथ की मुद्रित प्रति नहीं थी। उन्हें याद आया कि उन्होंने इसे एक नोटबुक में लिखा था जिसे उन्होंने स्वयं सफेद पन्नों को सिलकर तैयार किया था। उन्होंने हस्तलिखित पुस्तकों वाला बक्सा खोला और जाँच शुरू की। ऐसे नोट्स के अलावा, पुराने पत्र और कागज़ के अलग-अलग पन्नों पर लिखे हुए कई नोट्स भी थे। एक घंटे की खोज के बाद भी, उन्हें वह पुस्तक नहीं मिली। वह डिब्बा बंद करने ही वाला था कि उसकी नज़र एक अजीब से दिखने वाले कागज़ पर पड़ी। कागज़ और उस पर लिखी हुई लिखावट दोनों ही उसके लिए अपरिचित थीं। लिखावट की शुरुआत 'अभिवादन' शब्द से हुई थी। उसने याद करने की कोशिश की कि क्या पहले कभी किसी ने उसे इस तरह लिखा था। जैसे-जैसे वह पढ़ता गया, वह न केवल आश्चर्यचकित हुआ, बल्कि एक विचित्र दुविधा में भी फंस गया:

पिता तुल्य नंजुंडा को किट्टप्पा का प्रणाम। सब कुशल मंगल हैं। 15 साल बाद आपको यह पत्र लिखने का मन हुआ। बड़े दुख के साथ लिख रहा हूँ। आपने कई लोगों को धोखा दिया है, लेकिन आप इतने नीच हैं कि आपने अपने छोटे भाई को भी धोखा दिया। अपने भाई से घृणा निकालने के लिए आप दोनों को इतना नीचे नहीं गिरना चाहिए था, सिर्फ इसलिए कि आप उसे उस संपत्ति में से उसका हिस्सा देने से इनकार कर रहे हैं जिसे आपने हड़प लिया है। हम सब महान कथाकार श्यामदास की कहानी जानते हैं। आपके इस कृत्य के कारण पूजनीय श्रोत्री वंश की पिछली सात पीढ़ियाँ नरक में सड़ रही हैं। न तो मैं और न ही मेरे बच्चे आपकी संपत्ति पर कभी ललक रखते; हमें जरा भी अफसोस नहीं होता अगर उसे कुत्ते-भेड़िये कुतर देते। ईश्वर आपके पापों और पुण्यों का हिसाब रखेगा। बस। प्रणाम, किट्टप्पा, एडाटोर कैंप।

श्रोत्री ने बचपन में किट्टप्पा का नाम सुना था। वह उनके चाचा थे, सटीक कहें तो उनके पिता के छोटे भाई। संयुक्त परिवार में होने वाली तीखी नोकझोंक से उन्हें पता चला था कि दोनों भाई एक-दूसरे से नफरत करते थे। लेकिन उनके माता-पिता ने ऐसा क्या किया था जिसके कारण पूजनीय श्रोत्री वंश की पिछली सात पीढ़ियाँ नरक में सड़ रही थीं? भाइयों के बीच संपत्ति के बंटवारे के कारण उन्होंने कौन सा पाप किया था? यह श्यामदास कौन है? अगले दिन अपने पिता की पुण्यतिथि होने के कारण श्रोत्री अपने दिव्य पूर्वजों के बारे में सोचने लगे। अपने पूर्वजों के नरक में सड़ने की खबर पढ़कर उन्हें बहुत दुख हुआ। वह इस मामले की तह तक जाना चाहते थे। लेकिन इस बारे में जानकारी किसे होगी? उनकी उम्र अब 73 वर्ष थी। पत्र पर न तो तारीख लिखी थी और न ही वर्ष का नाम, इसलिए यह समय काल किसी के भी अनुमान से परे था। बीते समय की घटनाओं के बारे में किसे जानकारी होगी? अचानक उनके मन में लक्ष्मी का ख्याल आया। उनका जन्म इसी घर में हुआ था। महिलाओं ने आस-पड़ोस की महिलाओं से जानकारी जुटाई होगी, जिनमें से कई बातें पुरुषों को पता नहीं होती थीं। यह अनुमान लगाते हुए कि अगर कुछ जानकारी जुटाई जा सकती थी, तो वह उसी के माध्यम से ही जुटाई जा सकती थी, वह सीढ़ियों से नीचे उतरा। लक्ष्मी बैठक में बैठी कल के लिए सब्जियां छील और काट रही थी। उसके पास पहुँचकर श्रोत्री ने पूछा, 'क्या आपने श्यामदास का नाम सुना है?'

लक्ष्मी को कुछ समझ नहीं आया। उसके चेहरे के भावों को देखकर श्रोत्री ने कहा, 'हो सकता है यह मेरे जन्म से पहले की कोई बात हो, लेकिन हमारे परिवार से संबंधित है।'

'हां, मैंने उनके बारे में सुना है,' लक्ष्मी ने कहा और लगभग तुरंत ही अपनी जीभ काट ली।

श्रोत्री ने उसे पत्र पढ़कर सुनाया और पूछा, 'वह कौन सी बात थी जिसके कारण हमारे पूर्वजों को नरक में सड़ना पड़ा? महान कथाकार श्यामदास की कहानी क्या है? मुझे बताओ।'

'मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, शीनाप्पा। मुझे बस इतना पता है कि वह लोककथाएं सुनाने के लिए इस कस्बे में आया करते थे।'

श्रोत्री फिर सीढ़ियों से ऊपर गए। किसी पर शक करना उनकी फितरत नहीं थी। लेकिन उस दिन की साजिश ने शक को जन्म दिया था। उन्हें याद आया कि लक्ष्मी ने 'हां, मैंने

उसके बारे में सुना है' कहने के बाद लगभग अपनी जीभ काट ली थी। वे फिर सीढ़ियों से नीचे आए, लक्ष्मी के सामने खड़े हुए और बोले, 'लक्ष्मी, मेरा हाथ थाम लो।'
उसे समझ नहीं आया। उसने पूछा, 'क्यों?'
'जैसा मैं कहूँ वैसा करो,' उसने कहा, खुद उसका दाहिना हाथ पकड़कर बोला, 'तुम शपथ लेकर बोल रही हो। झूठी गवाही देने पर मरने के बाद तुम नरक में सड़ोगी। मुझे सच बताओ। क्या तुम्हें उस पत्र के बारे में कुछ नहीं पता?'
लक्ष्मी ने अपना सिर झुका लिया। जब श्रोत्री ने वही सवाल दोहराया, तो उसने दर्द से भरी आवाज़ में कहा, 'शीनाप्पा, मुझे इस मुश्किल में क्यों डाल रहे हो?' लेकिन श्रोत्री नहीं मानी। आखिरकार, उसने कहा, 'मैं तुम्हें रात में बताऊंगी जब चीनी सो रही होगी।'
रात के खाने के बाद जब चीनी सो रही थी, तो उसने उससे पूछा। 'यहाँ नहीं। चलो ऊपर चलते हैं,' उसने कहा, उसे उसके अध्ययन कक्ष में ले गई, दरवाजे बंद कर दिए और पूछा, 'आप किसलिए जानना चाहते हैं? आप इतने अड़े क्यों हैं?'
'ज़िद की कोई बात नहीं। मैं बस उत्सुक हूँ। मुझे बता दीजिए, चाहे कितनी भी बुरी खबर हो। मुझमें इसे सहने की शक्ति है। मुझ पर आपके भरोसे की कसम खाइए। आपको कुछ भी नहीं छिपाना चाहिए।'
'ठीक है, बैठ जाओ। मेरे लिए तुमसे ज़्यादा महत्वपूर्ण क्या है?' उसने कहा और कालीन पर बैठ गई। श्रोत्री उसके सामने बाघ की खाल की चटाई पर बैठा था। जो हमेशा शांत रहता था, अब उत्सुक था। उस घटना को याद करते हुए लक्ष्मी की आँखें मानो पिछले जन्म के दृश्यों को देख रही थीं।

2

नंजुंडा श्रोत्री, जो स्वभाव से लालची थे, अपने पिता के देहांत के समय तक घर के मुखिया बन चुके थे। जब 28 वर्ष की आयु में उन्हें अपने परिवार की सारी सत्ता विरासत में मिली, तब उनके इकलौते भाई किट्टप्पा 24 वर्ष के थे। लालची बड़े भाई के विपरीत, छोटा भाई उदार था। बड़ा भाई बहुत हिसाब-किताब रखने वाला और व्यावसायिक था, जबकि छोटा भाई भावुक था। छोटे भाई की ईश्वर, धर्म आदि में आस्था बड़े भाई से कहीं अधिक थी। कद में छोटे किट्टप्पा श्रोत्री की तुलना में किट्टप्पा श्रोत्री हष्ट-पुष्ट थे। और आश्चर्य की बात यह थी कि दोनों पत्नियां स्वभाव से अपने-अपने पतियों के अनुरूप थीं। यदि भाई आपस में मेल नहीं खाते थे, तो क्या देवरानी-जेठानी मेल खातीं? विवाह के एक

वर्ष बाद ही किट्टप्पा की पत्नी गर्भवती हो गईं और उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। 24 वर्ष की आयु तक भी अच्चम्मा का गर्भ नहीं विकसित हुआ। एक बार जब घर की महिलाओं के बीच कहासुनी हुई, तो किट्टप्पा की पत्नी ने अपनी भाभी को फटकार लगाते हुए कहा, 'भगवान लोगों के पापों और गुणों के अनुसार संतान देते हैं।'

हर साल जब उन्हें अपने पिता के वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार एक साथ करने होते थे, तो दोनों भाई हमेशा झगड़ते थे। अगर छोटा भाई कहता कि पुजारियों को पारिश्रमिक के रूप में चांदी के सिक्के देने चाहिए, तो बड़ा भाई मुट्ठी भींचकर कहता, 'जब तुम कमाना शुरू करोगे, तब देना। जब तक मैं जीवित हूँ, मैं एक चौथाई से ज़्यादा नहीं दूँगा।' कभी-कभी उनका झगड़ा बहुत बुरा रूप ले लेता था और वे एक-दूसरे को अपशब्दों तक कह देते थे। एक बार बात जुबान से हाथापाई तक पहुँच गई और छोटे किट्टप्पा ने अपने बड़े भाई को बुरी तरह पीट दिया। अच्चम्मा भी लड़ाई में शामिल हो गईं। अपने पति को दो लोगों से लड़ते देख, किट्टप्पा की पत्नी भी उनके पक्ष में हो गईं। हालाँकि किट्टप्पा का मन लगभग एक महीने तक अड़ियल बना रहा, लेकिन नंजुंडा श्रोत्री ने अगले ही दिन अपना गुस्सा शांत कर लिया और अपने भाई से सौहार्दपूर्ण ढंग से बात की। किट्टप्पा शांत नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'तुम निर्मम युद्ध भड़काने वाले, तुम बेशर्म हो।'

एक साल के भीतर ही विवाद असहनीय रूप ले चुका था और अंततः उनके अलग होने का निर्णय लिया गया। पैतृक संपत्ति के बंटवारे की प्रक्रिया तय करने के लिए चार स्थानीय मध्यस्थों और दोनों भाइयों के ससुरों की एक समिति गठित की गई। समिति को पारिवारिक मामलों के बारे में बताते हुए, नंजुंडा श्रोत्री ने एक दस्तावेज़ प्रस्तुत किया जिसमें 20,000 रुपये के ऋण का प्रमाण था, जो भूमि गिरवी रखकर लिया गया था। यह गिरवी उनके ससुर के भाई के नाम पर थी। किट्टप्पा ने इस पर हंगामा किया और इसे फर्जी बताया। वह अदालत तक गए। लेकिन नंजुंडा श्रोत्री ने अदालत में कुछ ऐसे दस्तावेज़ प्रस्तुत किए जिन पर किट्टप्पा श्रोत्री के भी हस्ताक्षर थे! दस्तावेजों का विवरण बताए बिना, उन्होंने पहले ही धोखे से सद्भावना का दिखावा करते हुए अपने भाई के हस्ताक्षर प्राप्त कर लिए थे। इन सब के बाद, किट्टप्पा को दो एकड़ गीली भूमि का अपना हिस्सा मिला, जिसे उन्होंने बेच दिया और अपने तीन बच्चों के साथ शहर छोड़ दिया। उन्होंने एडाटोर गांव के एक मंदिर में पुजारी के रूप में एक नया जीवन शुरू किया। लेकिन उनके भाई के प्रति उनका गुस्सा अब भी सुलग रहा था।

नंजुंडा श्रोत्री को रात में तीन बार शौच करने की आदत थी। एक रात जब वे अपने घर के पीछे गुंडाला नदी के किनारे एक पवित्र पौधे के पास शौच कर रहे थे, तभी किसी ने

उनकी पीठ पर वार किया। इससे पहले कि वे चीख पाते, दूसरे ने उनका मुंह कपड़ा ठूंस दिया। जिसने उन पर वार किया था, उसने नंजुंडा श्रोत्री की धोती उतारकर उनके हाथों और पैरों को उसी से बांध दिया। वही एकमात्र कपड़ा था जो उन्होंने पहना हुआ था, और अब वे नग्न थे। दोनों ने पवित्र पौधे की कुछ शाखाएँ तोड़कर उन पर कोड़े बरसाए। उनमें से एक चला गया, लेकिन दूसरा नंजुंडा श्रोत्री के सामने खड़ा होकर बोला, 'अब अपने कुकर्मों का फल भोगो,' और भाग गया। हालाँकि वे कित्तप्पा की आवाज़ पहचान सकते थे, नंजुंडा श्रोत्री कुछ नहीं कर सके। उनका मुंह बंद था और उनके हाथ-पैर बंधे हुए थे।

उस समय घर पर सो रही अच्चम्मा को इस बात का कुछ पता नहीं था। सुबह जब वह उठीं तो उन्हें लगा कि उनके पति खेतों में गए होंगे, और वह अपने काम में लग गईं। सुबह 7 बजे, नदी से पानी लाने गई एक महिला नंजुंडा श्रोत्री को नग्न अवस्था में, हाथ-पैर बंधे हुए देखकर बहुत शर्मिंदा हुई। वह तुरंत उनके घर गई और अच्चम्मा को इसकी सूचना दी। जब मोहल्ले के पुरुषों ने उस दुर्योधन को खोला, तो वे आपस में हंसते हुए बोले कि यह कोई देवदूत नहीं, बल्कि किट्टप्पा है। नंजुंडा श्रोत्री ने पांच दिनों तक गुलाब के पत्तों का रस अपनी त्वचा पर लगाया। हालांकि उन्होंने अपने भाई पर मुकदमा किया, लेकिन सबूतों के अभाव में मामला खारिज कर दिया गया।

विभाजन के कुछ ही दिनों के भीतर, नंजुंडा श्रोत्री की आय में तेजी से वृद्धि होने लगी। उन्होंने देवरासनहल्ली के पास जमीनें खरीदीं। वे चांदी और सोने को गिरवी रखकर ऋण देकर ब्याज कमाते थे। अधिकतर ऋणों पर चक्रवृद्धि ब्याज जल्द ही गिरवी रखे गए गहनों के मूल्य से अधिक हो जाता था, और वे उन्हें जब्त कर लेते थे। लगभग 10 वर्षों में, उन्होंने पर्याप्त नकदी जमा कर ली थी। उन्होंने छोटा घर गिरा दिया और उसकी जगह दो मंजिला इमारत बनवा ली। सोने और चांदी का पर्याप्त भंडार जमा हो गया। अच्छम्मा सिर से कलाई और गर्दन से छाती तक सोने के गहनों से सजी रहती थीं। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए, दंपति एक चिंता से व्याकुल होने लगे। सारी संपत्ति किसे मिलेगी? यह सब किसे मिलेगा? वे सपने में भी दान और धर्म के बारे में नहीं सोचते थे। यह विचार कि यदि उनकी कोई संतान न हो तो उनकी संपत्ति उनके भाई और उनके बच्चों को मिलेगी, उनके मन में आग की तरह जल रहा था। कित्तप्पा द्वारा उस पर किए गए हमले और उसे सबके सामने नग्न अवस्था में छोड़ने की घटना की जलती हुई स्मृति घृणा की आग में अभी भी धधक रही थी। वह उस समय 38 वर्ष का था और अच्चम्मा 34 वर्ष की। उसने, जिसने कभी धर्म और दान का कोई कार्य नहीं किया था,

धर्मस्थल के भगवान मंजुनाथ से प्रार्थना की और एक प्रतिज्ञा ली। उसने कहा कि यदि उसे संतान प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, तो वह बच्चे के पाँच वर्ष का होने पर उसके वजन के बराबर चाँदी मंदिर में दान करेगा। और उस प्रतिज्ञा का पालन करते हुए, उसने एक चाँदी का सिक्का कपड़े में बाँधकर पूजा कक्ष में मूर्तियों के पास रख दिया। उसने ललितासहस्रनाम का पाठ करना शुरू कर दिया और प्रतिदिन एक ब्राह्मण को डेढ़ पैसे की सुपारी और पान के पत्तों की टोकरी देने लगा। किसी ने कहा कि नाग देवता की मूर्ति स्थापित करने से उसे संतान प्राप्ति होगी। उसने दो ब्राह्मणों की सहायता से 15 रुपये खर्च करके वह मूर्ति भी स्थापित कर दी। कोई परिणाम नहीं निकला।
फिर उनकी दोस्ती श्यामदास नाम के एक व्यक्ति से हुई। वह लंबा, लंबी भुजाओं वाला, चौड़े चेहरे वाला, सीधी नाक वाला और सुरीली आवाज वाला व्यक्ति था। वह लोककथा सुनाने वाला था जो शहर-शहर घूमकर प्रदर्शन करता था। उसका परिवार कोललेगला में रहता था। उसकी प्रस्तुति गीतों से सजी होती थी और वह संस्कृत श्लोकों का त्रुटिहीन उच्चारण करता था। संस्कृत के ज्ञान को देखते हुए, नंजुंडा श्रोत्री ने उसे अपने घर आमंत्रित किया और उससे पूछा कि वह अपनी निःसंतानता के लिए क्या कर सकता है। उसने दंपति को तिरुपति की तीर्थयात्रा करने का सुझाव दिया। वे मान गए, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। एक बार श्रोत्री मैसूर गए और एक डॉक्टर से अपनी पूरी जांच करवाई। हिम्मत जुटाकर, जब उन्होंने डॉक्टर से जांच के परिणाम पूछे, तो उन्हें पता चला कि उनके शरीर में संतानोत्पत्ति की क्षमता नहीं है। उन्होंने यह मान लिया कि कोई भी भगवान उनकी मदद नहीं करेगा। उन्होंने एक उत्तराधिकारी को गोद लेने के बारे में सोचा और अपने पड़ोसियों से पूछताछ की। किसी ने भी अपने बच्चों को उस घर में देने से मना कर दिया। तभी, उन्हें एक खबर मिली। एडटोर में उनके भाई को यह कहते हुए सुना गया, “वह निःसंतान है, और जब वह मर जाएगा, तो उसकी सारी संपत्ति मेरे बच्चों को विरासत में मिलेगी।” यह खबर सुनकर नंजुंडा श्रोत्री सिर से पैर तक क्रोधित हो गए। उन्होंने गुस्से में कहा, “मेरे पूर्वजों को नरक में सड़ना पड़े, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि इस बदमाश के बच्चों को मेरी संपत्ति में से एक पिन तक न मिले।” संतानहीनता, निःसंतानता से निराशा और अपने भाई के प्रति घृणा उन्हें एक साथ जला रही थी। लेकिन कानून के अनुसार, उनकी सारी संपत्ति उनके भतीजों को मिलनी थी। इसी क्षण उनके मन में श्यामदास को शामिल करने का विचार आया। हालांकि यह घृणित था, फिर भी उन्होंने कार्रवाई करने का निश्चय कर लिया, क्योंकि उनके भाई की घोषणा उनके कानों में गूंजती रही।

पहले तो अच्चम्मा राजी नहीं हुईं। उनकी उम्र चालीस वर्ष थी; और यद्यपि वे लालची, स्वार्थी, षड्यंत्रकारी, कपटी और कई तरह से नीच थीं, फिर भी अपने पति के प्रति समर्पित थीं। वे अपने पति से प्रेम करती थीं, लेकिन विवाह के दो साल बाद भी संतानहीन रहने पर, तब से ही उनके मन में संतान प्राप्ति की तीव्र इच्छा थी। उनके पति की योजनाओं ने उन्हें निराश कर दिया था। फिर भी, वे यह बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं कि उनकी संपत्ति उनकी भाभी के बच्चों को मिले। मातृत्व की उनकी इच्छा फिर से जागृत हो गई। श्यामदास उनकी ही उम्र के थे या उनसे कुछ वर्ष छोटे थे, और वे वर्ष में दो बार नंजनगुड आते थे। यद्यपि वे नंजनगुड के आसपास के गांवों में प्रदर्शन करते थे, उनका मुख्य निवास स्थान श्रोत्री परिवार के घर ही होता था। उनकी आगामी यात्राओं के दौरान, नंजुंडा श्रोत्री अपने किसी न किसी खेत में व्यस्त रहते थे। एक महीने बाद, एक सुबह अच्चम्मा को उल्टी होने लगी। अब श्रोत्री इस बात को लेकर चिंतित होने लगे कि कहीं श्यामदास ने खुद इस बात का खुलासा न कर दिया तो क्या होगा! एक दिन उसने श्यामदास को एक कमरे में बंद कर दिया, उसकी खूब पिटाई की और कहा, 'मैंने तुम्हें अपने घर में इसलिए रहने दिया और खाना खिलाया क्योंकि मुझे लगा था कि तुम नेक हो। लेकिन तुमने यह गुनाह किया है! अगर मैंने तुम्हें कभी नंजनगुड या आसपास कहीं देखा, तो मैं तुम्हें मार डालूँगा। आज शाम तक जब मैं वापस आऊँ, तब तक तुम नंजनगुड से निकल चुके होगे।' फिर वह अपने खेतों की ओर चल पड़ा। श्यामदास को उदास देखकर अच्चम्मा ने उसे 500 चाँदी के सिक्कों से भरा एक थैला दिया और कहा, 'तुम उसका स्वभाव नहीं जानते। कभी भी आसपास मत दिखना। वह तुम्हारी हत्या करवा देगा।'

वह व्यक्ति ज्यादा दुखी नहीं हुआ। उसने नंजनगुड और उसके आसपास के इलाकों से दूरी बनाए रखी।

नौवें महीने में, अच्चम्मा ने एक स्वस्थ, सुडौल, चौड़े चेहरे और चौड़े माथे वाले बच्चे को जन्म दिया। भव्य नामकरण समारोह में, नंजुंडा श्रोत्री ने उसका नाम उसके पिता के नाम पर 'श्रीनिवास श्रोत्री' रखा। कुछ लोगों ने कुछ अनुमान लगाए, लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। उस कस्बे और आसपास के लगभग सभी लोगों को एक न एक दिन उससे सोना-चांदी उधार लेने के लिए उसके पास जाना पड़ता था।

श्रीनिवास श्रोत्री एक अत्यंत बुद्धिमान बालक थे, और नंजुंडा श्रोत्री ने उनके आठवें वर्ष में उनका उपनयन संस्कार किया, और बालक के कानों में अपने वंश का सूत्र फुसफुसाते हुए उन्हें यह कहा: 'मैं, श्री श्रीनिवास श्रोत्री, पैतृक त्रिमूर्ति काश्यप-आवत्सर-नैध्रुव के

काश्यप-गोत्र से संबंधित, आश्वलायन सिद्धांतों का पालन करने वाला और ऋग्वेद का अनुयायी...'

3

लगभग आधे घंटे के भीतर लक्ष्मी ने वह सब कुछ बता दिया जो वह जानती थी। श्रोत्री का मन भयभीत हो गया।
'क्या यह सब सच है, लक्ष्मी?' उसने पूछा।
'क्या मैं इसकी गवाह थी? क्या मैं तुमसे पांच साल छोटी नहीं हूँ? मुझे याद है कि एक छोटी लड़की के रूप में मैंने अपने पिता को किसी से यह बात साझा करते हुए सुना था।'
श्रोत्री चुप हो गए। उनके मन में नंजुंडा श्रोत्री और उनकी जन्मदात्री माता की याद आ गई। नंजुंडा श्रोत्री कद में छोटे, सांवले, गोल नाक वाले और ऐसे लगते थे मानो उनके तोंद पर कद्दू रखा हो। उनकी माता भी सुंदर नहीं थीं। वे अपने पति के बराबर लंबी थीं, लेकिन उनके जैसी हष्ट-पुष्ट नहीं थीं। गोल चेहरा होने के बावजूद उनका चेहरा छोटा था। श्रोत्री का ध्यान अपने शरीर पर गया। 74 वर्ष की आयु में भी वे लंबे, सुगठित शरीर वाले थे, उनके चौड़े चेहरे पर आंखें उभरी हुई थीं, नाक सीधी थी और माथा चौड़ा था। उन्हें अपने शरीर से घृणा हुई। हालांकि वे कभी आत्ममुग्ध नहीं थे, फिर भी अपने शरीर के स्वास्थ्य से संतुष्ट थे। उनका मानना था कि स्वास्थ्य मनुष्य के भाग्य का एक हिस्सा है। लेकिन अब उनका स्वस्थ शरीर भी समृद्ध प्रतीत नहीं हो रहा था।
'उठो, चलो विश्राम करते हैं। कल दोपहर तक हमें उपवास रखना है, जब तक कि सारे संस्कार पूरे न हो जाएं। बहुत काम भी होगा,' उन्होंने लक्ष्मी से कहा और वह उठ गई। श्रोत्री नीचे उतरे और चीनी के सामने वाली चारपाई पर लेट गए। उनका मन बहुत व्याकुल था। वे अपने माता-पिता के लालची जीवन से भली-भांति परिचित थे। वे अपने पिता के सूदखोरी से भी वाकिफ थे। पिता की मृत्यु के बाद जब श्रोत्री घर के मुखिया बने, तो उन्होंने न केवल सूदखोरी बंद कर दी, बल्कि संचित धन और आभूषणों का तीन चौथाई हिस्सा जरूरतमंदों को दान कर दिया था। लेकिन उनके मन में अपने माता-पिता के जीवन जीने के तरीके को लेकर कभी कोई पूर्वाग्रह नहीं आया। वे, जो दृढ़ता से मानते थे कि किसी को भी दूसरों के पापों और गुणों का आकलन करने का अधिकार नहीं है, उन्होंने कभी अपने माता-पिता के पापों और गुणों का मूल्यांकन करने के बारे में

नहीं सोचा था। वे ऐसे प्रयास को अहंकार का प्रतीक मानते थे। लेकिन आज, उनके मूल विश्वास पर ही चोट पहुँची थी। वे अपने वंश का बहुत सम्मान करते थे। उनका मानना था कि अपने वंश की गरिमा को बनाए रखना और उसे मजबूत करना हर किसी का प्राथमिक कर्तव्य है। उनका दृढ़ विश्वास था कि विवाह, गृहस्थधर्म और ऐसे ही अन्य नियम वंश के पवित्र उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के प्रयास हैं; उन्होंने अपने विचारों और कार्यों में इन सभी बातों का पालन किया था। श्रोत्री नाम से जानी जाने वाली वह वंशावली, जो काश्यप वंश से जुड़ी थी, उनकी आँखों के सामने ही ढहती हुई प्रतीत हुई। यदि वह किसी अन्य वंश का होता और उसे श्रोत्री वंश को गोद दे दिया जाता, तो उसे इतनी घृणा न होती। यदि नंजुंडा श्रोत्री ने निर्धन माता-पिता से तीन माप तोंद के भाव से भी एक बच्चे को खरीदकर उसे अपना बच्चा मान लिया होता, तो भी श्रोत्री का विश्वास नहीं डगमगाता। वह भली-भांति जानता था कि निःसंतान दंपतियों को अगली पीढ़ी प्रदान करने के लिए गोद लेना पारंपरिक रीति-रिवाजों का हिस्सा है। लेकिन नंजुंडा श्रोत्री का यह कृत्य न तो अपने वंश के प्रति सजगता से प्रेरित था और न ही इस इच्छा से कि उसके मरने के बाद उसके रिश्तेदार उसकी अंतिम संस्कार की रस्में पूरी करें। उसका यह नाजायज कृत्य लालच और घृणा से भरा था, जो अपने गबन से कमाए गए धन को अपने भाई के साथ साझा करने से रोकना चाहता था। मैं ऐसे ही भोग-विलास से जन्मा एक वंशज हूँ, जो घृणा को निरंतर बनाए रखने का माध्यम बनने के लिए पैदा हुआ है। मैं किस वंश का हूँ? मेरे जन्म की क्या पवित्रता है? बूढ़े व्यक्ति ने ये सब सोचा। अपने माता-पिता को अस्वीकार करने के बजाय, श्रोत्री ने अपने जन्म का ही उपहास उड़ाना शुरू कर दिया। उस रात उसे नींद नहीं आई।

चीनी के बगल में लेटी लक्ष्मी को भी नींद नहीं आ रही थी। उसे पहले से ही पता था कि इस खुलासे से शीनप्पा के मन पर गहरा आघात लगेगा। इतने सालों से उसके मन में एक सवाल कुंठित था: ऐसे माता-पिता की संतान और ऐसे घर में पले-बढ़े होने के बावजूद शीनप्पा इतने गुणी धर्मराय कैसे बन गए? उसे इसका जवाब कभी नहीं मिला; इतने सालों तक उसने इस घटना का किसी को ज़रा सा भी ज़िक्र नहीं किया था। और शायद इस कस्बे में कोई और भी इसके बारे में नहीं जानता था। किसी में भी इस मामले में खुलकर बोलने की हिम्मत नहीं थी। शीनप्पा एक संत समान व्यक्ति थे। भला कौन उनके बारे में हल्के में बोलने की हिम्मत करेगा? इस तरह सोचते हुए लक्ष्मी ने जीवन का यह सबक सीख लिया था कि किसी व्यक्ति का गुण और कर्म उसके गुण पर निर्भर करते हैं। शीनप्पा को ईश्वर तुल्य व्यक्ति मानना ही उसके जीवन का मार्गदर्शक था।

अगर उन्होंने उसे अपने नाम की शपथ न दिलाई होती, तो वह यह बात कभी नहीं बताती।
श्रोत्री को बिस्तर पर करवटें बदलते देख उसने कहा, ‘इसे दिल पर मत लो। हम सब मानते हैं कि हम सब माता-पिता से जन्म लेते हैं। सच कौन जानता है? मैंने बहुत पहले ही यह निष्कर्ष निकाल लिया है कि यह सब झूठ है। भगवान हमारे पापों और पुण्यों के अनुसार ही हमें मुक्ति देते हैं। जब से मैंने तुम्हें देखा है, तब से तुम धर्मात्मा पुरुष हो। जब भी यमराज आकर तुम्हारा मूल्यांकन करेंगे, उन्हें तुम्हें ही स्वर्ग देना होगा।’
श्रोत्री ने कुछ नहीं कहा। उसके शब्द उसके कानों में गूंजते रहे, लेकिन उसका मन इतना विचलित था कि उसकी कोई बात उसके मन में नहीं बैठी। उसे महसूस हुआ कि जिस सहारे ने उसे थामे रखा था, वह अब उससे दूर हो गया है और वह एक गहरी खाई में गिर रहा है। उसने खुद को एक विशाल वृक्ष की एक छोटी सी शाखा के रूप में देखा, जो धरती की गहराई से निकलकर आकाश तक पहुंचती है। किसी ने उस शाखा को काट दिया है और वह आकाश से गिर रही है। वह विशाल वृक्ष दिव्य उदासीनता में, बल्कि क्रूर शांति में, स्थिर खड़ा है, मानो उस टहनी से उसका कोई संबंध ही न हो। मैं एक अनाथ हूं, एक अशुभ तरीके से, अशुभ उद्देश्य के लिए जन्मा बच्चा। हे भगवान, पिछले जन्म के किस पाप के कारण आपने मुझे ऐसा जन्म दिया है!
उसके माता-पिता की यादें ताज़ा हो गईं। उन्होंने उसका अच्छे से पालन-पोषण किया था। उसके लालच को छोड़कर, उसके पिता ने उसका बहुत ध्यान रखा था। अपनी मृत्यु के निकट, उन्होंने उसे सोने-चांदी के सिक्के छुपाने की जगह दिखाई थी। उसकी माँ ने जीवन भर उस पर स्नेह बरसाया। उसे उसके भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि में अत्यधिक रुचि दिखाने में आनंद मिलता था। अपने माता-पिता के देहांत के बहुत समय बाद भी, श्रोत्री उन्हें याद करता रहता था। हर बार जब वह उनके वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार करता, तो उनके प्रति उसका प्रेम उसकी स्मृति में ताज़ा हो जाता। 'पुत्र' नामक पवित्र अंकुर अब निराधार हो गया था। क्या विरोधाभास है, उसने सोचा और करवट बदल ली।
महाभारत महाकाव्य उनके स्मृति में प्रकट हुआ। उस युग में, संतानोत्पत्ति में असमर्थ गृहस्थ, एक विशेष अनुष्ठान का पालन करने के बाद, अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाने के एकमात्र उद्देश्य से किसी अन्य पुरुष को अपनी पत्नी के साथ रहने देता था। परन्तु वह दूसरा पुरुष एक नेक आत्मा और ऋषि के समान जीवनदृष्टि वाला होना चाहिए। ऐसा दाता सांसारिक सुखों पर विजय प्राप्त कर चुका होता था और दान की भावना से उस गृहस्थ की पत्नी को वीर्य दान करता था। इसे यज्ञों में से एक माना जाता था; इसे

नियोग कहते थे। यह प्रथा वर्तमान युग, अर्थात् कलियुग में समाप्त हो गई है। इस युग की विशेषताएँ भिन्न हैं; प्रथाएँ भिन्न हैं। संतानोत्पत्ति के लिए नियोग का सहारा लेने का प्रेरक बल धन का लालच नहीं होना चाहिए। परन्तु मेरी माता और नंजुंडा श्रोत्री ने क्या किया? श्रोत्री ने अंधकार में गहरी साँस ली।

आह सुनकर लक्ष्मी ने उन्हें फिर से सांत्वना दी। 'शीनप्पा, इन दिनों आपने कई कठिन समयों का सामना किया है और दृढ़ रहे हैं। इस तरह सोने की तरह मजबूत होकर अब आप निराशा में आह क्यों भर रहे हैं? मैंने आपको कभी इस तरह आह भरते नहीं देखा। बस सो जाइए। हमें दूसरों के कार्यों की चिंता नहीं करनी चाहिए। हमें चीनी के भविष्य के बारे में सोचना है। अब सो जाइए। कल बहुत काम करना है।'

उन्हें इस बात का विशेष रूप से एहसास हुआ कि अगले दिन उन्हें अपने पिता, नंजुंडा श्रोत्री, के वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार उनके पुत्र के रूप में करने थे। जल्द ही, उन्हें यह विरोधाभास समझ में आया। इतने वर्षों तक मैंने पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ उस व्यक्ति के वार्षिक अंत्येष्टि संस्कार किए, जिसके रक्त और मांस से मेरा कोई संबंध नहीं था; एक ऐसा व्यक्ति जिसके वंश में मेरा कोई धार्मिक संबंध नहीं था। बल्कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने केवल अनुचित घृणा को प्रेरणा बनाकर अपनी पत्नी के गर्भ को मुझे नाजायज रूप से ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया था। लेकिन मैंने उन्हें अपना पिता माना था। अब जब सच्चाई सामने आ गई है और विश्वास का आधार ही धराशायी हो गया है, तो इस व्यर्थ नाटक को खेलने का क्या अर्थ? धर्म का कैसा विरोधाभास है! श्रोत्री जानते थे कि अन्य लोग स्नेहपूर्ण कर्तव्य के रूप में अंत्येष्टि संस्कार करते हैं। जब कोई निःसंतान मर जाता है, तो उसके मित्र उसके अंत्येष्टि संस्कार करते हैं। लेकिन यह वैसा भी मामला नहीं था। उन्होंने लक्ष्मी को पुकारा। वह अभी भी जागृत थीं। 'नींद नहीं आ रही?' उसने पूछा। श्रोत्री ने कहा, 'सच जानने के बाद मुझे लगता है कि कल की रस्में निभाने का कोई मतलब नहीं है। मैं दोनों नामित व्यक्तियों के घर जाकर उन्हें कल आने से रोक दूंगी और उन्हें बता दूंगी कि मैंने रस्में रद्द कर दी हैं।'

'पर इतने वर्षों तक यह सब करते रहने के बाद...' श्रोत्री ने बीच में ही उसे रोकते हुए कहा, 'सत्य से अनभिज्ञ होकर, कोई वंश केवल विश्वास के बल पर कितने भी वर्षों तक चल सकता है। लेकिन केवल इसी कारण से उसे पवित्रता प्राप्त नहीं हो जाती। अब मैं एक अलग व्यक्ति हूँ: केवल श्रीनिवासा, श्रीनिवासा श्रोत्री नहीं।'

लक्ष्मी चुप हो गईं। श्रोत्री सोचती रहीं। आधे घंटे बाद लक्ष्मी ने कहा, "आप हमेशा कहती थीं, 'हमें जल्दबाजी में काम नहीं करना चाहिए। धर्म के नियम बहुत सूक्ष्म हैं। जब तक

हम उन पर गहराई से मनन नहीं करेंगे, तब तक हम उन्हें समझ नहीं पाएंगे।' अब आप जल्दबाजी में काम कर रही हैं। कल का काम तय समय पर होने दीजिए। आपसे अधिक ज्ञानी कौन है? आप इस पर आराम से विचार कीजिए।"
श्रोत्री चुप हो गई।
उस रात दोनों में से कोई नहीं सोया। जागते हुए भी, अपने स्वभाव से बिल्कुल अलग, निराश श्रोत्री सुबह 6 बजे तक बिस्तर पर ही पड़ा रहा। लक्ष्मी और चीनी हमेशा की तरह उठीं और अपने कामों में लग गईं। उस दिन चीनी कॉलेज नहीं जा रही थी। कुप्पैया 8 बजे पहुंचे। उन्होंने पिछवाड़े के कुएं से पानी निकाला और घड़ा अपने सिर पर उंडेल लिया। फिर उन्होंने लक्ष्मी द्वारा कल काटी गई सब्जियों को साफ किया और रसोई में ले गए। चीनी ने पारंपरिक तरीके से गीली धोती पहनी और कुप्पैया की मदद करने के लिए रसोई में चली गई। कुप्पैया ने खाना बनाना शुरू कर दिया। सभी तली हुई चीजें शुद्ध घी में ही पकाई जाती थीं। श्रोत्री ने अभी तक स्नान नहीं किया था। वह पिछवाड़े के गौशाला में बैठे एक गाय की गलफड़ों की मालिश कर रहे थे। गायें भी जीवित प्राणी हैं। क्या उन्हें अपने वंश का कोई ज्ञान है? उन पर अपने मृत माता-पिता के अंतिम संस्कार करने का कोई दायित्व नहीं है। जब पति-पत्नी के रीति-रिवाजों को परिभाषित करने वाली कोई सामाजिक व्यवस्था ही न हो, तो दिवंगत माता-पिता के प्रति कर्तव्य को परिभाषित करने का आधार कहाँ से आएगा? कुछ अनुचित और असामान्य बातें उनके मन में उठने लगीं और भद्दे बादलों की तरह मंडराती रहीं। दोपहर तक सुब्बैया शास्त्री आ गए। कुछ ही देर बाद, दो प्रतिनिधि आवश्यक साजो-सामान लेकर और पारंपरिक पोशाक में वहाँ पहुँचे। उनमें से एक, अनंतराम नाम के एक स्कूल शिक्षक ने देखा कि श्रोत्री ने अभी तक स्नान नहीं किया था। उन्होंने आश्चर्य से पूछा, 'यह क्या है? क्या आपकी तबीयत ठीक नहीं है? आपकी आँखें लाल हैं...'
श्रोत्री ने कुछ नहीं कहा। वह सीधे बाथरूम की ओर चल पड़ा।
कुछ देर बाद, अनुष्ठान शुरू हुए। श्रोत्री सभी मंत्रों के अर्थ से भली-भांति परिचित थे, लेकिन आज पुजारी द्वारा बोले गए मंत्रों को समझ नहीं पा रहे थे। वे इतने विचलित थे कि पवित्रा को अनामिका उंगली में पहनने के बजाय मध्यमा उंगली में पहन लिया! ऐसा लग रहा था कि वे अनुष्ठान के विभिन्न चरणों के हाव-भाव भूल गए थे, इसलिए शास्त्री को हर बार उन्हें निर्देश देना पड़ा। श्रोत्री की तबीयत ठीक न समझकर शास्त्री ने अनुष्ठान धीमी गति से संपन्न किए। अन्य दो लोगों के चरणों का स्नान भी संपन्न हुआ और श्रोत्री ने पवित्र जल की कुछ बूँदें अपने सिर पर छिड़कीं। दोनों ने दोपहर का भोजन किया।

चीनी भोजन परोस रही थी। शास्त्री, जो कुछ समय के लिए अपने अनुष्ठानों से मुक्त हुए थे, ने श्रोत्री से पूछा, 'क्यों, क्या आपकी तबीयत ठीक नहीं है?' उन्हें यह प्रश्न दोबारा पूछना पड़ा। श्रोत्री ने कहा, 'कुछ नहीं। सब कुछ सामान्य है।' यह समझकर कि श्रोत्री बातचीत करने के इच्छुक नहीं हैं, शास्त्री चुप रहे। दोपहर का भोजन चलता रहा और चीनी व्यवस्थित ढंग से भोजन परोस रही थी। श्रोत्री का मन अनपेक्षित दिशाओं में भटक रहा था। अंततः, उन्होंने शास्त्री को दोपहर के भोजन के अवकाश की समाप्ति और उसके बाद होने वाले अनुष्ठानों की घोषणा करते हुए सुना। श्रोत्री ने आज्ञा का पालन किया।

शास्त्री ने विधिपूर्वक कुछ हलफा घास को दक्षिण दिशा की ओर करके रखा और उन पर जल छिड़का। फिर उन्होंने श्रोत्री को वहाँ रखे एक पात्र में से तीन चावल के गोलों में से एक को उठाने का निर्देश दिया। जब श्रोत्री ने ऐसा किया, तो शास्त्री ने एक मंत्र का उच्चारण किया, 'यह मेरे पिता नंजुन्ददेव-शर्मा हैं...' और श्रोत्री को उसे वहाँ बिछी हलफा घास पर रखने के लिए कहा। यह सुनकर श्रोत्री का सिर चकरा गया। उन्होंने खुद को संभालने की कोशिश की, लेकिन नहीं संभाल सके। वे बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े। उनके हाथ में मौजूद चावल का गोला, जो उनके पिता का प्रतीक था, ज़मीन पर लुढ़क गया और टूट गया।

अनंतराम घबराकर श्रोत्री के पास गए, उनके बगल में बैठ गए और उनका सिर अपनी जांघ पर रख लिया। दूसरे ब्राह्मण ने श्रोत्री के सिर पर पानी छिड़का। शास्त्री ने रसोई में मौजूद चीनी को आवाज़ दी। “चीनी, तुम्हारे दादाजी बेहोश हैं। जल्दी से पंखा लाओ।” चीनी पंखा ले आई। उनके सिर पर काफी पानी डालने और ज़ोर से पंखा करने के बाद श्रोत्री को होश आया। उन्होंने उठने की कोशिश की लेकिन उठ नहीं पाए। शास्त्री ने धोती का तकिया बनाकर श्रोत्री के सिर के नीचे रख दिया और अनंतराम को आराम दिया। फिर उन्होंने कुप्पैया से कहा, “कुप्पैया, चलो। तुम पवित्र वस्त्र पहन लो और बाकी की रस्में पूरी करते हैं।” कुप्पैया ने वस्त्र बदलकर श्रोत्री की जगह ले ली। श्रोत्री ने अपनी आँखें बंद कर लीं और सो गए। चीनी उनके पास बैठकर उन्हें पंखा करती रही। शास्त्री ने चावल का एक और गोला बनवाया और मंत्र का जाप करते हुए रस्में जारी रखीं। उसने शेष दो चावल के गोलों के साथ भी ऐसा ही किया, जो श्रोत्री के दादा और परदादा का प्रतिनिधित्व करते थे।

अनुष्ठानों की समाप्ति के बाद, पुरोहितों को हमेशा की तरह धोती, तांबे के बर्तन और चांदी के सिक्के भेंट किए गए। तब तक श्रोत्री पूरी तरह जाग चुके थे और बोलने में

सक्षम थे। शास्त्री यह सोच रहे थे कि चावल के गोले का टूटना श्रोत्री परिवार पर आने वाली किसी विपत्ति का संकेत था।

4

एक दिन, श्रोत्री ने चीनी से कहा, 'चीनी, दो दिन की छुट्टी के लिए आवेदन करो। हमें एडाटोर जाना है।'
‘क्यों, दादाजी?’
मैं इसे रास्ते में बता दूंगा।
लक्ष्मी को घर पर छोड़कर वे दोनों ट्रेन से मैसूर के लिए रवाना हुए। एडाटोर जाने वाली शटल ट्रेन में बैठने के बाद, श्रोत्री ने चीनी से कहना शुरू किया: “मेरे पिता का एक भाई था जिसका नाम किट्टप्पा था। मैंने उसे कभी नहीं देखा। मेरे पिता ने धोखे से उसे पैतृक संपत्ति में उसका उचित हिस्सा देने से इनकार कर दिया। अब मैं अपनी संपत्ति का आधा हिस्सा उसके वंशजों के साथ बाँटना चाहता हूँ। यह न्यायसंगत भी है। क्या तुम सहमत हो?”
'मुझसे क्यों पूछ रहे हो? दादाजी, आप जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं।'
फिर भी, जब मुझे अपनी संपत्ति उन्हें सौंपनी होगी, तो आपको दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने होंगे। मैं अब ज्यादा दिन जीवित नहीं रहूंगा, लेकिन आप ही इसके भावी स्वामी हैं, और आपकी हार्दिक सहमति आवश्यक है।
‘जैसा कि आपने कहा है,’ चीनी ने आत्मविश्वास से कहा, ‘यदि उन्हें जो दिया जाना है वह उचित है, तो मैं पूरे दिल से सहमत हूँ। आपके शब्द हमेशा धार्मिक होते हैं।’
श्रोत्री खुश थे। वे दोपहर 2 बजे एडाटोर रेलवे स्टेशन पहुँचे, वहाँ से एक तांगा किराए पर लेकर उस नए बने कस्बे में गए और एक परिचित के घर पहुँचे। फिर उन्होंने किट्टप्पा श्रोत्री के वंशजों के बारे में पूछताछ शुरू की, जो 75 साल पहले 40 साल के थे। उन्हें पता चला कि उस कस्बे में कोई श्रोत्री परिवार नहीं था; वास्तव में, नंजनगुड से आकर बसा कोई भी परिवार उस कस्बे में नहीं था। किसी भी मंदिर के पुजारी के दादा किट्टप्पा नहीं थे। अंततः उनकी मुलाकात एक 85 वर्षीय बुजुर्ग से हुई। उन्होंने नंजनगुड से आए मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया और कहा, 'जब मैं लगभग 20 साल का था, तब इस कस्बे में किट्टप्पा नाम का एक आदमी रहता था; जी हाँ, वह नंजनगुड का रहने वाला था। उसके तीन बेटे थे। तब उसकी उम्र लगभग 40 या 45 साल थी। वह बहुत गुस्सैल

स्वभाव का था और पास के एक गाँव के मंदिर में पुजारी था। एक बार उसका मंदिर के ट्रस्टी से झगड़ा हो गया था।' उसने ट्रस्टी पर बुरी तरह हमला किया। गलती ट्रस्टी की थी, लेकिन वह एक अमीर आदमी था। उसने यह सुनिश्चित किया कि किट्टप्पा शहर छोड़कर चला जाए। उसके बाद वह अपने परिवार के साथ कहाँ गया, यह कोई नहीं जानता।

अपने प्रयासों की विफलता से निराश होकर श्रोत्री नंजनगुड लौट आए। रिपोर्ट मिलने पर लक्ष्मी ने कहा, 'आप उनके वंशजों का पता नहीं लगा सकते। बस उस चिंता को छोड़ दीजिए।'

दिन बीतते गए। चीनी नियमित रूप से कॉलेज जाता रहा। हाल ही में, श्रोत्री ने उसे वेद पढ़ाने में रुचि खो दी थी। अगर वह उसे पढ़ाना भी शुरू कर देते, तो उसका ध्यान भटक जाता और सत्र वहीं समाप्त हो जाता। श्रोत्री फिर उन्हीं विचारों में खो जाते: 'यह घर, यह ज़मीन और यह धन, इनमें से कुछ भी मेरा नहीं है। अगर मुझे कित्तप्पा श्रोत्री के वंशज मिल जाएं, तो मैं सब कुछ उन्हें सौंपकर धर्म का पालन करते हुए खुशी-खुशी निश्चिंत हो जाऊंगा। लेकिन उन्हें कहाँ ढूँढूँ?' कई बार वह ठीक से खाना भी नहीं खाते। 'केले के पत्ते पर परोसा गया यह भोजन मेरी ज़मीन पर नहीं उगाया गया है। न ही किसी ने इसे मुझे दान में दिया है। क्या मुझे इसे खाना भी चाहिए?' ये विचार उन्हें आगे खाने से रोकते थे।

कथावाचक, तीर्थयात्रा पर निकले ब्राह्मण, विवाह और उपनयन संस्कार के लिए चंदा मांगने वाले, भिखारी आदि नंजनगुड आते-जाते रहते थे। ये सभी लोग नियमित रूप से श्रोत्री के घर आते थे। श्रोत्री उन्हें पान, सुपारी और नारियल के पारंपरिक उपहारों के साथ पर्याप्त दान दिए बिना कभी वापस नहीं भेजते थे। हाल ही में, श्रोत्री उनसे पूछते थे, 'क्या यात्रा के दौरान आपको कहीं श्रोत्री नाम का कोई परिवार मिला?' उत्तर अक्सर नकारात्मक होता था। 'यदि आपको ऐसा कोई परिवार मिले, तो कृपया मुझे पत्र लिखें।' वे अपना पता देते और कहते, 'केवल श्रोत्री नाम पर्याप्त नहीं है। उनके पूर्वजों में किट्टप्पा नाम का कोई व्यक्ति होना चाहिए था। और ऐसा किट्टप्पा नंजनगुड से ही आया होगा। यह सब सुनिश्चित करने के बाद, कृपया मुझे लिखें। इस बुजुर्ग व्यक्ति को इससे बहुत लाभ होगा।'

उन्होंने एक अखबार में विज्ञापन भी छपवाया, जिसमें उन्होंने नंजनगुड के मूल निवासी सभी श्रोत्री से उनसे संपर्क करने का आग्रह किया, क्योंकि उनके साथ कुछ संपत्ति साझा की जानी थी। लेकिन इस पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

हाल ही में, श्रोत्री को कात्यायनी की याद आने लगी। विधवापन के बंधनों को ठुकराते हुए, उन्होंने अपनी जवानी के चरम पर अपने लिए एक नया पति चुना और इस घर को छोड़कर चली गईं। उन्होंने एक वंश में संतान को जन्म दिया और दूसरे वंश के पुरुष से विवाह किया। मन ही मन, वे कात्यायनी के आचरण की तुलना अपनी माता और अपने नामधारी पिता नंजुंडा श्रोत्री के आचरण से करते। कात्यायनी के इस कार्य में कोई दुर्भावना नहीं थी। घृणा फैलाने या धोखाधड़ी करने के लिए अवैध साधनों का सहारा लेने जैसी कोई अशुद्धता नहीं थी। वे आधुनिक विचारों से प्रभावित थीं। उनकी एकमात्र कमी उनकी जवानी की इच्छाओं को नियंत्रित करने में असमर्थता थी। इस पर काबू पाने के लिए उन्होंने वैध पुनर्विवाह का सहारा लिया। एक तरह से उनका आचरण प्रशंसनीय था। जब उन्हें अपने माता-पिता के आचरण की याद आती, तो घृणा से उनका पूरा शरीर झुलस उठता। कुछ घंटों तक उनका मन क्रोध और घृणा से भरा रहता। फिर वह खुद को संभालता और अपने मन को क्रोध के प्रति संवेदनशील होने देने पर पछताता। इतने वर्षों से अर्जित मन की शांति को मैं क्यों खो दूँ? क्रोध और आलस्य जैसी भावनाओं को अपने मन को क्यों भंग करने दूँ? यदि मेरा जन्म इसी प्रकार होना था, तो इसमें किसकी गलती है? क्या मुझे अपने माता-पिता पर क्रोधित होने और उनके गुणों का आकलन करने का अधिकार है? हे ईश्वर, मुझे मेरा वह मन लौटा दो जो कभी दूसरों के गुणों और पापों का आकलन करने में संलग्न नहीं रहा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और चुपचाप प्रार्थना की।

अध्याय 25

1

पांच महीने के निरंतर लेखन के बाद, राव ने पांचवां खंड पूरा कर लिया और राहत की सांस ली। जब उन्होंने आखिरी वाक्य लिखा, तो एक रात के 10 बज रहे थे। उनके पीछे कुर्सी पर बैठी करुणा पांडुलिपि का एक भाग पढ़ रही थी। कलम नीचे रखकर उन्होंने पुकारा, 'करुणा...' वह उठी और उनके पास आई। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और भावुक होकर कहा, 'काम पूरा हो गया।' करुणा का दिल खुशी से भर गया। धीरे से उनके हाथों को दबाते हुए, वह और करीब आईं, उनका सिर अपने सीने से लगाया और कहा, 'आपके जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया है। भगवान ने अपना आशीर्वाद दिया है। अब से आपको डॉक्टर की सलाह का सख्ती से पालन करना होगा। आपको और कोई काम नहीं करना चाहिए।'

उस दिन से राव को जीवन में एक ऐसा संतोष प्राप्त हुआ, जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता था। उनके अथक परिश्रम, समर्पण और तपस्या के फलस्वरूप, और करुणा की हार्दिक भक्ति के कारण, उनकी पुस्तक पूर्ण हो गई थी। उन्होंने चिंतन किया: प्रत्येक व्यक्ति को अपने तरीके से जीवन में पूर्णता प्राप्त करनी होती है। मैंने अपने तरीके से पूर्णता के मार्ग पर एक कदम बढ़ा लिया है। इस पुस्तक के लिए संकलित जानकारी इतनी अधिक है कि इससे कुछ छोटी पुस्तकें और एक दर्जन लेख लिखे जा सकते हैं। लेकिन मुझमें इसे संभालने की शक्ति नहीं है। करुणा इसे स्वयं कर ले। यदि मैं जीवित रहा, तो मैं इसका संपादन करूँगा। अब वे नियमित रूप से टहलने लगे। कभी-कभी वे करुणा को सुबह की सैर पर अपने साथ आने के लिए कहते, 'तुम अपना काम बाद में कर लेना। मेरे साथ आ जाओ।' करुणा के पास काम का बोझ बहुत था। उन्हें शब्दकोश की दोबारा जाँच करने के लिए पुस्तकालय जाना पड़ता था, लेखन शैली में जगह-जगह सुधार करने पड़ते थे, कथाओं के कालक्रम में गड़बड़ी को ठीक करना पड़ता था, और फिर उन सबको टाइप करके प्रकाशक को भेजना पड़ता था। राव अंतिम खंड में अपनी पत्नी करुणा को प्रशस्ति पत्र देना चाहते थे। लेकिन करुणा सहमत नहीं हुईं। उन्होंने कहा कि कोई भी पिता आधिकारिक तौर पर बच्चे को जन्म देने का श्रेय उसकी माँ को नहीं देता।

करुणा हमेशा अपने काम में मग्न रहती थीं। कॉलेज में एक घंटे बिताने के बाद राव को थोड़ी नींद मिल जाती थी। कभी-कभी वे समय बिताने के लिए पड़ोसी प्रोफेसर से मिलने चले जाते थे। प्रोफेसर डॉ. राव को ताना मारते हुए कहते, 'तो, ये किंवदंती सब कुछ झेलकर भी कायम है!' कभी-कभी वे कॉलेज से अपने छात्रों को बुलाते, उन्हें फल और कॉफी देते और उनसे हंसमुख बातें करते। उनका मन अब भारहीन हो गया था, मानो बारिश के रूप में अपना अधिकांश भार बहा देने के बाद हल्की हवा में तैरता हुआ कोई पतला बादल हो। एक दिन नागलक्ष्मी उनकी यादों में आ गईं। उन्होंने सोचा कि उन्हें उनके दिल के दौरे के बारे में पता नहीं होगा, क्योंकि अगर उन्हें पता होता, तो वे अपना सारा स्वाभिमान त्यागकर दौड़ती हुई आ जातीं। उनसे अपनी बीमारी छिपाना उनके साथ अन्याय करने जैसा था। हालांकि उन्हें याद था कि जब वे उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण देने गए थे, तब उन्होंने उन्हें सख्ती से जवाब दिया था, लेकिन बीमारी से उबरने और अपनी किताबों के पूरा होने से उनके मन में नागलक्ष्मी के लिए एक अलग ही भावना जागृत हो गई थी। मैं और कितना जीऊंगा? उसे यहाँ लाना चाहिए और तब तक उसके साथ रहना चाहिए, उसने सोचा। जब उसने करुणा को नागलक्ष्मी को आमंत्रित करने की अपनी इच्छा बताई, तो उसने कहा, 'अगर उसने पहले की तरह ही प्रतिक्रिया दी तो क्या होगा? डॉक्टर ने चेतावनी दी है कि आपको असहनीय भावनाओं का सामना नहीं करना चाहिए।'

मुझे पूरा विश्वास है कि अब ऐसा कुछ नहीं होगा।

'क्या मैं आपसे जुड़ सकता हूं?'

'नहीं, मैं अकेला ही जाऊंगा। राजा तो वैसे भी वहां होगा।'

उन्होंने अपनी सुबह की सैर का रास्ता बदलकर लक्ष्मीपुरा की ओर मोड़ लिया। राजा घर पर थे। राजा ने ही उन्हें दरवाजे पर स्वागत किया और अंदर ले गए। कात्यायनी उनके लिए एक गिलास दूध लाईं। उनका दुबला-पतला और पीला शरीर किसी सफेद तिलचट्टे जैसा लग रहा था। उनकी नसों में बहने वाला खून मानो एक चम्मच से भी कम था। राव, जो इसके पीछे का कारण जानते थे, उन्होंने कोई पूछताछ नहीं की। उन्होंने राजा से कहा, 'ग्रंथ का लेखन कार्य पूरा हो चुका है। अगर अब वह तैयार हैं, तो मैं उन्हें अपने साथ ले जाना चाहता हूँ।' राजा अंदर चले गए। तब तक कात्यायनी पृथ्वी को वहाँ ले आई थीं। पृथ्वी ने अपने पिता के चरणों में प्रणाम किया। राव ने हथेली से उनके सिर को छूकर उन्हें आशीर्वाद दिया और पूछा, 'अब कौन सी कक्षा में?'

इस साल मैं बीएससी में दाखिला लूंगा।

‘उस घर में आते रहना। शाम को आना। हम टहलने चलेंगे।’
'ठीक है।'
जब राजा अंदर गया और नागू को खबर दी, तो उसने साफ-साफ कहा, 'मैं किसी के घर नहीं जाऊंगी।' राजा ने धीरे-धीरे उसे अपने भाई की खराब सेहत के बारे में बताया। उसने बताया कि डॉक्टर के मना करने के बावजूद उसने अंतिम खंड लिखना शुरू कर दिया था और कहा, 'शायद तुम्हारी वजह से ही उसे पहला दिल का दौरा पड़ा। उसकी हालत अभी भी नाजुक है। अगर तुम अब भी अड़ी रहोगी, तो कभी भी कुछ भी हो सकता है। क्या तुम इसकी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार हो?'
दो मिनट में नागलक्ष्मी का तनाव दूर हो गया। ‘अपने मन में बुरी बातें क्यों सोचने दें? खाना एक घंटे में तैयार हो जाएगा। उसे रुकने के लिए कहो। चलो हम सब नाश्ता कर लेते हैं, फिर मैं चली जाऊंगी। यहाँ, कात्यायनी की तबीयत ठीक नहीं है। तुम लोग क्या करोगे?’
‘हमारी बिल्कुल भी चिंता मत करो। हम संभाल लेंगे। मैं खाना बनाने में उसकी मदद करूँगा। पृथ्वी यहीं रहेगा; मैं रागप्पा को भी यहाँ बुला लूँगा। वह बाहर के काम देख लेगा, जिससे कात्यायनी को बस चावल और करी बनानी होगी।’
राजा बाहर निकला और अपने भाई को खुशखबरी देते हुए बोला, 'तो, दोपहर के भोजन के लिए यहीं रुक जाओ।' राव अपने भाई से बातचीत करने लगा। 9:30 बजे तक राव ने वहाँ स्नान कर लिया था और खाना खाने ही वाला था कि करुणा वहाँ आ गई। राजा को देखते ही वह हाँफने लगी। 'उसकी हालत बहुत नाज़ुक है। उसके लौटने में देरी होने से मुझे चिंता होने लगी, इसलिए मैं आ गई।'
'कृपया अंदर आइए। आप भी दोपहर का भोजन कर लीजिए, फिर आप तीनों एक साथ जा सकते हैं।'
करुणा अंदर आई। उसने अपने हाथ-पैर धोए और दोपहर का भोजन शुरू करने से पहले रसोई में जाकर नागलक्ष्मी के चरणों में प्रणाम किया। नागलक्ष्मी स्तब्ध रह गई, उसे कुछ समझ नहीं आया कि क्या कहे। वह बस खड़ी रही। लेकिन उसका हृदय भावविभोर हो गया। उसने सबको बिठाया और भोजन परोसने लगी। जब तक उसका दोपहर का भोजन समाप्त हुआ, राजा ने एक तांगा किराए पर लिया। जाते समय राव ने कात्यायनी से कहा, 'दो अलग-अलग प्रतिष्ठान न हों। आप सब वहीं चले जाइए। अभी मेरे लिए आप सबकी संगति का लाभ उठाना ही बेहतर है।'

तांगे में यात्रा करते समय तीनों के मन में एक अनकही खुशी का भाव उमड़ रहा था। करुणा को एक विशेष उदात्त अनुभूति हो रही थी। राव के मन की व्यथा शांत हो गई थी और उन्हें एक प्रकार का संतुलन प्राप्त हो गया था। नागलक्ष्मी बस अपने राम के बारे में सोचती रहीं, 'जो भी तुझ पर भरोसा करे, उसे कभी मत छोड़ो। श्री राम जय राम जय राम,' वह बार-बार दोहराती रहीं।
नागलक्ष्मी के आते ही बंगले में एक नया आकर्षण आ गया। वह रसोई में गईं और रागप्पा की भंडारगृह का निरीक्षण किया। उन्होंने करी पाउडर का डिब्बा खोला और उसे सूंघा। उसी दोपहर, वह रागप्पा को मसाले खरीदने के लिए दुकान ले गईं। उन्होंने मसाले चुने, उन्हें भूना और पीसकर एक स्वादिष्ट करी पाउडर बनाया। उसी शाम उन्होंने रागप्पा को फिर से बाजार भेजा, ताकि वह नींबू, कच्चा अदरक, फूल, फल, पान के पत्ते, सब्जियां, सुपारी और ताजा नींबू खरीद लें। उसी शाम पृथ्वी वहां आईं और उन्होंने रागप्पा से अपने भगवान राम का चित्र, राम नाम की रटने वाली किताब, स्याहीदानी और राजा के घर से स्टील लाने को कहा। उन्होंने रात का खाना बनाया और अपने पति और करुणा को परोसा। रागप्पा नागलक्ष्मी के खाने से पहले अपना खाना खाने को तैयार नहीं हुए। करुणा नागलक्ष्मी से अपनी समझ के अनुसार कन्नड़ भाषा में बातें करती रहीं। एक बार जब उसने नागलक्ष्मी को 'बहन' कहकर संबोधित किया, तो राव ने उसे बताया कि कन्नड़ भाषा में बहन को 'अक्का' कहते हैं।

2

नागलक्ष्मी अगली सुबह चार बजे उठीं और बाथरूम के चूल्हे में आग जलाई। उन्होंने करुणा और राव को दूध दिया, जो पाँच बजे उठ गए थे। राव अपनी छड़ी लेकर सुबह की सैर पर चले गए। रसोई में प्रवेश करते ही करुणा ने पूछा, “अक्का, क्या मैं खाना बनाने में आपकी मदद करूँ?” नागलक्ष्मी ने कहा, “कोई ज़रूरत नहीं। तुम पढ़ना-लिखना सीखो। तुम वही करो जिसमें तुम माहिर हो। मैं वही करूँगी जिसमें मैं माहिर हूँ।” करुणा मुस्कुराई। वह इस बात से उत्साहित थी कि उसे वह सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिससे वह अब तक वंचित थी। वह प्रसन्नता से चली गई और अध्ययन कक्ष में पांडुलिपि की जाँच करने लगी। जब राव सुबह 8:30 बजे सैर से लौटे, तो नागलक्ष्मी उनका हाथ पकड़कर उन्हें बाथरूम में ले गईं और गर्म पानी से अच्छी तरह नहलाया। उन्होंने पूछा, “यह क्या है? क्या मैं बच्चा हूँ?” ‘अगर तुम्हें अपनी सेहत का ख्याल रखना नहीं आता, तो

तुम हो क्या?' उसके बनावटी गुस्से ने राव के दिमाग में झकझोर दिया। दोपहर का खाना परोसने से पहले, वह उन्हें पूजा कक्ष में ले गई, 'पहले राम के सामने प्रणाम करो। फिर खाना खाओ।' राव ने वैसा ही किया। अपने पति की ओर इशारा करते हुए करुणा ने कहा, 'ये हमारे घर के राम हैं। है ना?' राव ने कहा, 'लेकिन इस राम की तो दो पत्नियां हैं!' दोनों पत्नियां दिल खोलकर हंस पड़ीं। खाना स्वादिष्ट था। ऐसा ही स्वाद पहले भी इस बंगले में देखने को मिला था जब नागलक्ष्मी कुछ समय के लिए यहां रुकी थीं। राव को वह याद आ रहा था। करी, कौली, रायता, सब्जी की चटनी—इतने सारे पकवान देखकर राव दंग रह गए। हर व्यंजन स्वादिष्ट था और उसे छोड़ा नहीं जा सकता था। करुणा खाने के स्वाद से दंग रह गई। उसने अपनी सामान्य मात्रा से कहीं अधिक खाया। राव ने भी।

खाना खाने के बाद करुणा ने अपनी पांडुलिपियाँ समेटीं और पुस्तकालय के लिए निकल पड़ीं। नागलक्ष्मी रसोई में खाना खा रही थीं, तभी राव वहाँ आए और उन्हें खाना परोसा। 'नागु, बीते दिनों की मुसीबतें! अब से मुझे ही खाना परोसने दो।' नागलक्ष्मी के मना करने के बावजूद उन्होंने और खाना परोसा। 'कात्यायनी कैसी हैं? अगर वो मान जाएँ तो हम सब साथ रहने लगते हैं। ये काफी बड़ा बंगला है। वैसे भी हमें किराया ज़्यादा देना पड़ता है। तो फिर दोगुना किराया क्यों दें? उनकी तबीयत ठीक नहीं है। तुम्हारे बिना राजा को अकेलापन महसूस होगा। पृथ्वी को भी यहाँ कई लोगों की संगति का आनंद मिलेगा।'

अपनी बारी के बाद रागप्पा ने अपनी बारी शुरू की। उसने नागलक्ष्मी से कहा, 'माँ, अब आप इसे मुझ पर छोड़ दीजिए। आप इतनी मेहनत कर रही हैं, ऐसे में मुझे आलस करने में शर्म आ रही है। आपकी तरह खाना बनाने में माहिर होने के लिए देवी सरस्वती का आशीर्वाद चाहिए।' नागलक्ष्मी ने पान, सुपारी और चूने की थाली मंगवाई और बाहर चली गईं। उनके कमरे में राव पलंग पर बैठे थे। अंदर आकर नागलक्ष्मी ने दरवाजा बंद किया, पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठ गईं और बोलीं, 'क्या मैं आपके लिए एक पत्ता सजा दूँ?'

'नहीं। डॉक्टर ने मना किया है।'

वह भी इसका सेवन नहीं करती थी। अब वह 44 वर्ष की हो चुकी थी और उसके अधिकांश बाल सफेद हो चुके थे। करीने से कंघी किए हुए उसके बाल चमकदार थे। उसके जूड़े पर बाजार से लाया हुआ ताजा गुलदाउदी का फूल लगा था। उसके चौड़े माथे पर गहरा सिंदूर लगा था और उसके नीचे केसरिया रंग का एक छोटा सा धब्बा था।

उस शुभ चेहरे पर आज भी वही भोली-भाली सुंदरता थी। पहले की तरह ही उसकी कलाइयाँ चूड़ियों से सजी थीं। उसके गालों, हथेलियों और पैरों की सुनहरी लालिमा इस बात का प्रमाण थी कि वह नियमित रूप से उन पर हल्दी लगाती थी। राव दो मिनट तक उसे निहारता रहा। फिर उसने कहा, 'नागु, मैं इन दिनों तुमसे दूर रहा। अगर मैं तुम्हारे साथ होता, तो मैं बहुत मजबूत होता।' नागलक्ष्मी ने अपना सिर झुका लिया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। यह देखकर राव ने कहा, 'इधर आओ,' और उसका हाथ पकड़कर उसे खींच लिया। जब वह उसके बगल में पलंग पर बैठ गई, तो उसने उसका हाथ पकड़कर कहा, 'रो मत। अब से मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा।'

‘तुम थक गए हो। आराम करो,’ उसने कहा और उसे अपनी जांघ पर सिर रखकर लिटा दिया। नागलक्ष्मी की जांघ पर सिर रखकर राव बिस्तर पर लेटा हुआ था और उसके पैर फैले हुए थे। उसे एक ऐसी खुशी का अनुभव हो रहा था जो उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी। उसने उसका चेहरा पकड़कर पूछा, ‘जब तुम बीमार थे तो तुमने मुझे क्यों नहीं बुलाया? जब तुम पहले मुझे बुलाने आए थे तो मैं तुमसे नाराज़ थी। लेकिन क्या मैं पापी हूँ जो तुम्हारी बीमारी में तुम्हारी सेवा करने से कतराऊँ?’

‘नागु, ऐसा मत कहो। तुम सचमुच गुणी हो। पापी तो मैं हूँ, जिसने तुम्हें त्याग दिया।’ वह भावुक हो गई। उसने अपना हाथ उसके मुँह पर रखकर कहा, ‘एक शब्द भी नहीं! तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।’ उसका हाथ मुँह से हटाकर उसने कहा, ‘मैं पुण्य और पाप का हिसाब नहीं लगा रहा। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने करुणा से किसी नीच इच्छा से विवाह नहीं किया। उसके बिना मेरा ग्रंथ दस साल बाद भी पूरा नहीं होता। हम तीनों तब से साथ रह सकते थे। लेकिन आधुनिक सोच वाली करुणा नहीं मानी। अगर मैं हर समय उसके साथ नहीं होता, तो मेरे ग्रंथ में कोई प्रगति नहीं होती। सौभाग्य से, हम सब अब साथ हैं, और यह बहुत सुखद है।’

राव की खुशी बढ़ती ही जा रही थी। खुशी का यह विस्फोट सचमुच द्वैत से परे था और शांति का अनुभव करा रहा था। उन्होंने जोश से भरे स्वर में कहा, “मैंने इस महान राष्ट्र का गौरवशाली सांस्कृतिक इतिहास लिख डाला है। इस संस्कृति ने दुनिया को उत्कृष्ट दर्शन, कला और धर्म दिए हैं। मैंने उन महान आत्माओं के सार को चित्रित करने का प्रयास किया है जिन्होंने इस समृद्ध परिवेश में योगदान दिया है। यह महज़ एक प्रयास नहीं है। इस कार्य ने मुझे संतोष दिया है। इतने बड़े कार्य को पूरा करने में कुछ गलतियाँ होना स्वाभाविक था। नागु, क्या हमारी दूरी और तुम्हारे द्वारा सहन की गई पीड़ा इस उपलब्धि के लिए आवश्यक थी? शायद यही ईश्वर की इच्छा थी। अब जब यह सब पूरा

हो गया है, तो हमारे पुनर्मिलन का समय आ गया है, और मेरे लिए तुम्हारे जांघ पर सिर रखकर शांति से विश्राम करने का समय आ गया है। नागु, क्या तुम जानती हो कि मैं अब कितना खुश हूँ? झुककर अपना चेहरा मेरी छाती पर रखो। मुझे गले लगाओ। क्या तुम खुश नहीं हो?" उन्होंने दोनों बाहों से उसकी कमर को थाम लिया। उसने राव का चेहरा अपनी छाती से लगा लिया। 'नागु, यह खुशी, यह खुशी...' राव को बोलने में कठिनाई हो रही थी, 'यह मेरे लिए असहनीय है,' उसने बड़ी मुश्किल से कहा। उसकी सांस फूल रही थी और उसे बहुत पसीना आ रहा था। उसकी छाती के बाईं ओर असहनीय दर्द हो रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहे। धीरे-धीरे उसने अपनी हथेलियाँ अपनी छाती पर रख लीं। नागलक्ष्मी स्तब्ध रह गई। उसने राव का चेहरा अपनी छाती से हटाया और धीरे से उसे अपनी गोद में ले लिया। आधे मिनट तक उसके चेहरे पर असहनीय पीड़ा के भाव थे। कुछ समझ न आने पर उसने पुकारा, 'रागप्पा!' जब तक रागप्पा आया, राव के चेहरे की पीड़ा कुछ कम होती हुई प्रतीत हुई। उसकी आँखें ऊपर की ओर खिंच गईं। उसके हाथ-पैर ढीले पड़ गए। रागप्पा ने राव का हाथ छुआ और अपनी उंगलियाँ राव की नाक के नीचे रखीं। सब कुछ जानने के बावजूद उसने कहा, 'मैं प्रोपेसुर को लाता हूँ,' और दौड़कर बाहर चला गया। नागलक्ष्मी को शक हुआ। वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। एक क्षण पहले जो आंखें खुशी से चमक रही थीं, उनसे अब शोक के आंसू बेतहाशा बहने लगे।

प्रोफेसर घर पर नहीं थे। उनकी पत्नी दौड़ती हुई आईं। जब तक वह पहुंचीं, नागलक्ष्मी को सब कुछ पता चल चुका था। उस महिला ने उनका हाथ पकड़ लिया। नागलक्ष्मी की चीखें तेज होती चली गईं। पांच मिनट में करुणा, रागप्पा के साथ दौड़ती हुई आई। कमरे का दृश्य देखकर उसके मुंह से ये शब्द निकले, 'तुम्हारे साथ अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्हें दिल का दौरा पड़ा'। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। वह राव के शरीर पर गिर पड़ी, जो आज तक उसका साथी था।

3

यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। कॉलेज के शिक्षक और छात्र उनके बंगले के आसपास जमा हो गए। प्रधानाचार्य ने कॉलेज में छुट्टी की घोषणा कर दी। अगले दिन कॉलेज में एक शोक सभा आयोजित की गई, जिसमें एक मेज पर डॉ. राव की प्रकाशित रचनाएँ रखी थीं और पास ही एक कुर्सी पर डॉ. राव की पुष्पमाला से सजी तस्वीर रखी

थी। इस अवसर पर बोलते हुए कुलपति ने उदारतापूर्वक कहा, 'विश्वविद्यालय को प्रतिष्ठा ऐसे विद्वानों और उनके लेखन से मिलती है, न कि उसके प्रशासकों से।' तीन प्रोफेसरों ने अपने विचार रखे और सर्वसम्मति से कहा कि डॉ. राव उनके जैसे लोगों के गुरु थे और ज्ञान की खोज के लिए उनके मिशन को हमेशा सम्मान के साथ याद किया जाना चाहिए। उनमें से एक प्रोफेसर अपने आँसू नहीं रोक पाए।

बंगले को सील करके राजा उसी शाम नागलक्ष्मी और करुणा को साथ लेकर घर चले गए। रिवाज के अनुसार, पृथ्वी को अनुष्ठान करना था, लेकिन उनका उपनयन संस्कार अभी नहीं हुआ था। इसलिए यह जिम्मेदारी राजा पर आ गई। अनुष्ठान सातवें दिन शुरू हुए।

नागलक्ष्मी की वर्षों से दबी हुई निराशा एक सुबह उस क्षण दूर होती दिखी जब वह अपने पति के साथ तांगे पर बैठकर उनके घर गई थी। ठीक अगली सुबह, उनके पति ने उनकी जांघ पर सिर रखकर अंतिम सांस ली। “शायद पिछले जन्म का कर्म। उनका दुर्भाग्य मेरे संचित पापों का परिणाम है,” उसने विलाप किया। इतने दिनों तक उनके पति जीवित थे और उन्हें केवल अलग रहना था। अब वे नहीं रहे। उन्हें लगा कि विधवापन अलगाव से भी अधिक क्रूर है। राजा, कात्यायनी और पृथ्वी के लाख प्रयासों के बावजूद उनके आंसू नहीं रुके। यद्यपि पृथ्वी का अपने पिता से कोई गहरा रिश्ता नहीं था, फिर भी वह रोया। कात्यायनी अपने देवर का बहुत आदर करती थी। वह उनकी विद्वतापूर्ण शैली की भक्त थी। वह भी दो दिन तक रोती रही। वह करुणा को भी सांत्वना दे रही थी। राजा के लिए अपने भाई का निधन एक गहरा सदमा था। उन्होंने पुत्र की भूमिका निभाते हुए उनके अंतिम संस्कार किए।

रीति-रिवाज के अनुसार, नागलक्ष्मी अपने पति की मृत्यु के दसवें दिन तक विधवा नहीं थीं। अस्थायी रूप से नियुक्त महिला रसोइया प्रतिदिन नागलक्ष्मी के माथे पर सिंदूर लगाती और उनके बालों को फूलों से सजाती। जैसे-जैसे दसवां दिन नजदीक आता गया, नागलक्ष्मी इस शोक से लगातार रोने लगीं कि अब उन्हें शुभ सिंदूर और फूल नहीं मिलेंगे। जो पहले दिन में केवल एक बार बाल संवारते समय दर्पण में देखती थीं, अब बार-बार हल्दी और सिंदूर से सजे अपने प्रतिबिंब को देखती रहीं। उनका दुख भीतर से उमड़ता और वे खुद को संभाल नहीं पातीं, जमीन पर लोटने लगतीं। दसवें दिन की पूर्व संध्या पर, उनका राजा से भयंकर झगड़ा हुआ।

‘राजा, जब मेरी प्राण शक्ति समाप्त हो जाएगी, तो इस सड़ते हुए शरीर का क्या होगा? कल मैं अपने बाल और ये शुभ साड़ियाँ त्याग दूँगी। मेरे लिए एक लाल साड़ी लाओ।’

‘बीते युग के व्यक्ति की तरह व्यवहार मत करो। आज के रीति-रिवाजों का पालन करो। अपने बालों को वैसे ही रहने दो। सफेद साड़ियाँ पहनो।’
‘सफेद साड़ी पहनकर क्या मुझे किसी दफ्तर में काम करने जाना चाहिए? बिलकुल नहीं।’ वह अपनी बात पर अड़ी रही। कात्यायनी उनके पास आकर खड़ी हो गई और नागलक्ष्मी ने उससे विनती की, ‘कम से कम तुम उसे मना लो। मैं तो तपस्या कर लूंगी।’
कात्यायनी को ऐसा लगा जैसे उसकी आंतें निचोड़ ली गई हों। वह अपनी बड़ी बहन नागलक्ष्मी, जो हर पल उसके साथ थी, को लाल साड़ी और मुंडा सिर के साथ नहीं देख पा रही थी। उसकी यादें विधवापन की ओर लौट गईं। बीस साल पहले, जब उसके पहले पति का देहांत हुआ था, तो अगले दस दिनों तक उसने अपने शुभ वस्त्र और आभूषण भी धारण किए रखे थे। दसवें दिन जब उसने अपनी चोटी से फूल, गले से बंधन की डोरी, कलाई से कांच की चूड़ियाँ और माथे से सिंदूर उतारकर सफेद साड़ी पहनी, तो वह बेहोश हो गई थी। हालाँकि उसकी सास भागीरथम्मा ने उसे मुंडा सिर करवाने और लाल साड़ी पहनने का सुझाव दिया था, लेकिन श्रोत्री ने अपनी युवा बहू को और अधिक पीड़ा से बचाने के लिए उन्हें ऐसा न करने के लिए मना लिया था। लेकिन फिर एक दिन ऐसा आया जब उसका जीवन बदल गया। उसने फिर से फूल, सिंदूर और चूड़ियाँ पहनना शुरू कर दिया। वह अपने नए भाग्य पर प्रसन्न भी हुई। लेकिन अब उसकी सोच पूरी तरह बदल गई थी। उसने दो मिनट तक इस बारे में सोचा और राजा से कहा, 'बहन जो कहती है वह सही है। तुम बस उसकी बात मान लो।'
‘फिर भी, मैं नागू को लाल साड़ी में नहीं देख सकता,’ राजा ने रोते हुए कहा।
‘दुःखों को संयमित रखना चाहिए। इस मामले में बहन की समझ आपसे कहीं अधिक परिपक्व है। वह प्रतीकात्मक रूप से अपनी नई स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार है। आप स्थिति की वास्तविकता को नकार नहीं सकते। आप इसके प्रतीकात्मक महत्व का विरोध क्यों कर रहे हैं? इस मामले में स्त्री की अंतरात्मा पुरुष के तार्किक तर्क से कहीं अधिक बुद्धिमान है।’
राजा चुप हो गई। अपने शुभ आभूषण उतारे जाने के दौरान रोना न चाहकर उसने दृढ़ता से अपने दांत भींच लिए। उन अनुष्ठानों के बाद वह पिछवाड़े के दरवाजे के पास बैठ गई। जब उसने अपने सिर पर ठंडे पानी का घड़ा डाला और घर में प्रवेश किया, तो उसका सिर चकरा गया और वह बेहोश हो गई। कात्यायनी को उसे होश में लाने में केवल 15 मिनट लगे। सभी अनुष्ठान पूरे होने के बाद, वह अपनी राम की तस्वीर के सामने बैठी और बोली, 'श्री राम, मैंने आप पर भरोसा रखा। आपने मेरे साथ ऐसा किया।

फिर भी, मैं आपकी पूजा करूंगी। कृपया उन्हें अगले जन्म में भी मेरा पति बनाएं। और फिर, मुझे विधवा न होने दें।' उसी दिन से, उसने राम का चित्र बनाने के लिए प्रतिदिन निर्धारित समय बढ़ा दिया।
घर के सारे दायित्व कात्यायनी पर आ गए। उनकी शारीरिक स्थिति इतनी मेहनत सहन करने की क्षमता नहीं रखती थी। जल्द ही उन्हें बुखार हो गया। उनकी देखभाल करने के लिए नागलक्ष्मी के अलावा कोई और नहीं था।

4

यह सोचकर कि अंतिम संस्कार के तुरंत बाद चले जाना अनुचित होगा, करुणा तेरहवें दिन तक वहीं रुकी रही। राव से विवाह के बाद से ही उसने सिंदूर लगाना शुरू कर दिया था। वह हमेशा सफेद साड़ियाँ पहनती थी। दसवें दिन उसने अपनी इच्छा से अपने माथे से सिंदूर पोंछ दिया।
चौदहवें दिन सुबह उसने राजा से कहा, 'मैं अब कदम उठाऊंगी।'
राजा चौंक गया। 'तुम उस बंगले में अकेले क्यों रहोगी? वैसे भी, नियमों के अनुसार विश्वविद्यालय उसका कब्ज़ा वापस ले लेगा। चलो, उन किताबों और बाकी चीज़ों को यहाँ ले आते हैं। तुम एक कमरा ले लो और अपना काम कर लो। तुम भी तो मेरी भाभी हो।'
'आप बहुत उदार हैं। लेकिन मैं उस घर से ही अपना लंबित काम निपटा लूंगी। मुझे मन की शांति वहीं मिल सकती है।' वह किसी की भी बात नहीं मानती थी।
'चिंता मत करो। मैं तुम्हारे सामान के लिए हर महीने पैसे भेजूंगा,' राजा ने कहा।
'मेरे पास पैसे हैं। जब मुझे पहला दिल का दौरा पड़ा था, तब उन्होंने बैंक खाते को संयुक्त खाते में बदलवाकर मेरा नाम भी जुड़वा दिया था। उसमें काफी पैसे जमा हैं, और हाल ही में प्रकाशकों ने भी कुछ पैसे भेजे हैं। आप चिंता न करें। रागप्पा तो हमेशा मौजूद रहेंगे। नियमित रूप से उनसे मिलने आना न भूलें।' उन्होंने नागलक्ष्मी को बताया, कात्यायनी से औपचारिक रूप से विदा ली और जब रागप्पा के साथ तांगे पर सवार हुईं, तो उनकी आँखों में आँसू थे।
उसी शाम विश्वविद्यालय के कुलपति पड़ोसी प्रोफेसर के साथ उनसे मिलने आए। दिवंगत डॉ. राव के गुणों को याद करते हुए कुलपति ने कहा, 'आप राजा राव के साथ क्यों नहीं रहतीं?'

उन्होंने भी मुझसे ऐसा करने को कहा था। लेकिन मेरा मन यहीं रहने को कह रहा था।
'अपने मन की सुनो। मुझे पता चला है कि यूरोप और अमेरिका के अखबारों में डॉ. राव की मृत्यु की खबर छपी है। मैंने इसे बीबीसी पर भी देखा। पश्चिम के कई प्रोफेसरों ने कॉलेज के पते पर पत्र लिखकर डॉ. राव की विद्वत्ता की प्रशंसा की है और परिवार को अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने का अनुरोध किया है। डॉ. राव जैसे व्यक्तित्वों ने विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को बहुत बढ़ावा दिया है। पांचवें खंड पर क्या प्रगति हुई है?'
मैं इसे तीन से चार महीने में प्रकाशकों को भेज दूंगा।
ठीक है। और कौन इसकी देखभाल कर सकता है? आप जब तक चाहें इस बंगले में रह सकते हैं। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि आपको कोई किराया न देना पड़े। पाँचवें खंड के संपादन और प्रकाशन के लिए उसे तैयार करने के लिए मैं आपको 2,000 रुपये का मानदेय भी दिलवा दूँगा। आपको किसी और से मदद लेने की ज़रूरत नहीं है।
मैं आपका बहुत आभारी हूं। मुझे इस घर की जरूरत होगी। लेकिन मुझे पैसों की जरूरत नहीं होगी। मेरे पास पर्याप्त धन है।
अगले दिन उसे प्रकाशक का पत्र मिला। उसने जवाब दिया कि राव ने मरने से पहले इसे पूरी तरह लिख लिया था, और वह इसे तीन-चार महीनों में प्रकाशन के लिए तैयार कर देगी। उसने ज़रा भी देर नहीं की और काम में जुट गई। लगभग एक महीने तक वह पुस्तकालय में ही रही, कई स्रोत पुस्तकों की तुलना करती रही; फिर उसने इसे टाइप करना शुरू किया। उसने बिल्कुल भी आराम नहीं किया। काम के बोझ से वह थक जाती थी, लेकिन अगर वह आराम करती, तो राव की यादें उसे घेर लेतीं और वह उदासी में डूब जाती। रागप्पा अपने आप में ही रहता था, ज़रूरत से ज़्यादा एक शब्द भी नहीं बोलता था। हालाँकि वह अपने भविष्य को लेकर चिंतित था, फिर भी वह उससे कुछ भी पूछे बिना अपने कामों में लगा रहता था। उसके स्वामी के निधन ने उसे भी उदास कर दिया था।
चार महीने बाद, एक रविवार शाम को करुणा का काम खत्म हो गया। टाइपिंग का काम उससे 15 दिन पहले ही पूरा हो गया था। इसके तुरंत बाद उसने टाइपिंग और वाक्य रचना की गलतियों को जाँचने का काम शुरू कर दिया था। उसे 20 पन्ने दोबारा टाइप करने थे; फिर उसने उन्हें कालक्रमानुसार व्यवस्थित किया। प्रकाशकों ने उससे डॉ. राव के जीवन और विद्वत्ता पर एक संक्षिप्त जीवनी लिखने को कहा था, जिसे उस पुस्तक में शामिल किया जाना था। उनके जीवन और कार्यों का उसका वर्णन इतना सुंदर और स्पष्ट था मानो किसी कलाकार की चित्रकारी से भी अधिक सजीव हो। जब

तक उसने पुस्तक को करीने से पैक किया, लाख से सील किया और प्रकाशक का पता लिखा, तब तक रात के 10 बज चुके थे। वह आरामकुर्सी पर लेट गई। अनजाने में ही वह रोने लगी। उसने अपने काम के चार महीनों में कभी नहीं रोया था। यह आभास कि राव आस-पास ही हैं और अपने काम में मग्न हैं, उसके जीवन में एक नई ऊर्जा भर आई थी। टाइप करते समय ऐसा लग रहा था मानो राव उसके कानों में कुछ बोल रहे हों। प्रस्तावना लिखते समय उन्हें ऐसा लगा मानो वह इसे लिखवा रहे हों, और उन्होंने उनके सामने बैठकर इसे संक्षिप्त रूप में लिख लिया। अब जब सारा काम पूरा हो चुका था, तो उन्हें एक खालीपन सा महसूस हुआ। उन्होंने अपने आँसू रोकने की कोई कोशिश नहीं की। वह पूरे एक घंटे तक रोती रहीं। फिर वह खिड़की के पास गईं। बाहर, घना अंधेरा छाया हुआ था।

वह धीरे-धीरे सामने के दरवाजे तक गई। रागप्पा बैठक में सो रहे थे। उन्हें जगाना न चाहते हुए, उसने बाहर से दरवाजा बंद किया और टहलने चली गई। चूंकि यह कस्बे का कम आबादी वाला इलाका था, इसलिए बिजली के खंभे काफी दूरी पर लगे थे। वह मंद रोशनी में चलती रही। अनजाने में ही वह कुक्कराहाल्ली तालाब के किनारे-किनारे चली गई और बाईं ओर बने एक मंडप में पत्थर की बेंच पर बैठ गई। जल्द ही उसे याद आया कि बहुत समय पहले, अपने शोध प्रबंध जमा करने के बाद, अपने वतन लौटने की पूर्व संध्या पर, वह अपने राव के साथ एक सुबह यहाँ आई थी। उन्हें छोड़कर अपने देश लौटने के गम से दुखी होकर उसने अपना सिर उनकी जांघ पर रखा था और रोई थी। राव ने उसे गले लगा लिया था। एक पल के लिए, वह स्मृति मन को मोह गई। उसने खुद को उस स्मृति में डूबने दिया और अपने आसपास की चीजों से बेखबर हो गई। पांच मिनट बाद, वह वर्तमान में लौट आई; और उसके आंसू फिर आ गए। वह अब और वहाँ नहीं बैठ सकती थी। वह कॉलेज की ओर चल पड़ी। टैंक को पीछे छोड़कर वह कॉलेज परिसर में दाखिल हुई। परिसर में लगे पेड़! रात के खाने के बाद, वे उन्हीं पेड़ों में से एक के नीचे आराम करते और अपनी लिखी किताब पर चर्चा करते थे। चर्चा के बाद, वे कुछ देर चुपचाप बैठते। लौटते समय, अगर अंधेरा हो जाता, तो वह उनका हाथ पकड़कर उन्हें आगे ले जाती। उस याद ने उसे वहाँ रुकने से रोक दिया और वह कॉलेज की दिशा में चल पड़ी। कॉलेज पहले की तरह ही शान से खड़ा था। लगभग 30 वर्षों तक राव ने इसी कॉलेज में पढ़ाया था। उनकी विद्वत्ता का प्रभाव वहाँ की हवा में महसूस किया जा सकता था। वह चलती रही। बाईं ओर स्थित पुस्तकालय भवन रात के अंधेरे में भी अपनी भव्य उपस्थिति का एहसास करा रहा था। करुणा वहाँ गई और उसके सामने

खड़ी हो गई। इसी भवन में उन दोनों ने 16 वर्षों से अधिक समय तक काम किया था और अपनी किताब प्रकाशित की थी। उनके काम करने का तरीका और राव का कुर्सी पर बैठकर उसे बोलकर लिखवाने का अंदाज़, उसकी आँखों के सामने किसी भी वास्तविक जीवन के अनुभव से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा था। वह उस याद को भी सहन नहीं कर पा रही थी, और आगे बढ़ते हुए वह पूरी तरह थक चुकी थी। वह सीधे अपने घर चली गई। चारपाई पर लेटते हुए भी उसे नींद नहीं आई। उसी कमरे में राव ने अंतिम सांस ली थी। उसके मन में वह घटना बार-बार गूंज रही थी: अगर नागलक्ष्मी उस समय मिलने न आई होती, और मैंने अकेले ही उनकी देखभाल की होती, तो शायद मैं यह सुनिश्चित कर लेती कि वे भावनात्मक रूप से परेशान न हों और दस साल और जी लें। वह पूरी रात सो नहीं पाई।

वह सुबह तड़के उठी और कॉफी पी। वह रात 8 बजे तक कमरे में ही रही, उसके बाद पार्सल को कूरियर करने के लिए डाकघर के लिए निकल पड़ी। पड़ोस में रहने वाले प्रोफेसर, जो अपने आंगन में थे, ने उसके हाथ में पार्सल देखा और पूछा, 'डाकघर जा रही हो? मुझे दे दो। मैं अपने नौकर से करवा दूंगा।'

‘नहीं। मैं खुद इसका ध्यान रखूंगी। लेकिन धन्यवाद,’ उसने कहा और आगे बढ़ गई।

5

उसे कूरियर से भेजने के बाद लौटते समय वह बहुत निराश महसूस कर रही थी। अब आगे क्या करेगी? मुख्य कार्य तो पूरा हो चुका था। कुछ छोटी-मोटी किताबें और लेख लिखने का काम बाकी था, जो उस ग्रंथ के लिए एकत्रित की गई आकस्मिक जानकारी पर आधारित थे, लेकिन वह बाद में भी किया जा सकता था। अब उसका मन पूरी तरह खाली था। वह जल्द ही एक अकेली इंसान बन गई थी, जिसके कोई रिश्तेदार नहीं थे और न ही कोई उसकी देखभाल करने वाला। यह सोचते हुए कि वह किसका सहारा ले सकती है, वह रामास्वामी सर्कल के पास से गुजर रही थी जब उसकी नज़र पृथ्वी पर पड़ी। उससे बात करने की इच्छा से उसने उसे पुकारा, 'तुम कहाँ जा रहे हो? अभी तो सिर्फ 9:15 बजे हैं।'

‘कॉलेज जाना है। मेरी एक विशेष कक्षा है।’

‘आज स्पेशल क्लास छोड़ देना ठीक है। मेरे साथ आओ,’ वह उसके पास आई और उसका हाथ पकड़ लिया। वह झिझकते हुए सिर झुकाए खड़ा रहा। ‘चलो,’ उसने हाथ

पकड़कर उसे अपने साथ ले गई। जब तक वे घर पहुँचे, रागप्पा लगभग खाना बना चुका था। ‘तुमने अभी तक खाना नहीं खाया है, है ना? मेरे साथ खा लो,’ उसने कहा और रागप्पा के प्लेटें लगाने तक उससे बातें करती रही।
'आपकी चाची कैसी है?'
'पिछले कुछ दिनों से उसे लगातार बुखार आ रहा है। वह बहुत कमजोर है और छुट्टी पर है।'
'चाचा?'
वह एक या दो घंटे के लिए कॉलेज जाता है। बाकी समय वह अपनी चाची के साथ बिताता है।
‘ओह, इसीलिए तो वो आजकल यहाँ नहीं आए। मैं भी यहाँ व्यस्त होने के कारण नहीं आ सकी।’ तब तक रागप्पा ने सब कुछ तैयार कर लिया था। वो अंदर गईं, दो थालियाँ लगाईं और उन्हें बुलाया। उन्होंने पृथ्वी के साथ दोपहर का भोजन किया। भोजन करने के बाद, वो उन्हें राव के कमरे में ले गईं और उन्हें उस पलंग के पास ले गईं जहाँ उनके पिता सोते थे, और फिर खुद उस पर बैठ गईं। पास की मेज पर रखी राव की किताबों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने पूछा, ‘क्या तुमने अपने पिता की ये रचनाएँ पढ़ी हैं?’
'नहीं।'
'क्यों?'
मैं विज्ञान का छात्र हूं। मैंने इस वर्ष बीएससी में दाखिला लिया है।
वह निराशा में मन ही मन मुस्कुराई। पुत्र को अपने पिता की साहित्यिक उपलब्धियों में कोई रुचि नहीं है, जो उन्होंने विद्वानों के हित में अर्जित की थीं, और जिनके लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। और पुत्र की शैक्षणिक रुचि भी अलग है! हम कहते हैं कि हमारा काम हमारी अगली पीढ़ी के लिए है। उसने स्वयं से पूछा कि वह पीढ़ी कौन सी है। उसके मन में तुरंत यह विचार आया कि यह ग्रंथ उन पीढ़ियों के लिए है जो भारत के सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन करेंगी, और यह केवल जैविक संबंध के कारण बच्चों को नहीं मिलेगा। उसने पृथ्वी का चेहरा देखा। वह नागलक्ष्मी के चेहरे जैसा था। लेकिन उसकी आँखें और नाक उसके पिता जैसी थीं। हालाँकि पुत्र अपने पिता से अधिक हष्ट-पुष्ट था। ज्ञान की खोज में उसके पिता की रुचि उसमें नहीं थी। बैठने की मुद्रा और बोलने का तरीका भी उसके पिता जैसा था। करुणा उसके पास गई और बोली, 'पुत्र, आओ अपना सिर मेरी गोद में रखो और लेट जाओ।' उसने झिझकते हुए अपना सिर झुका लिया। 'संकोच मत करो।' मैं भी तुम्हारी माँ हूँ।’ उसने उसका हाथ

पकड़कर उसका सिर अपनी जांघ पर रख लिया। फिर उसने दोनों हाथों से उसका चेहरा थामकर पूछा, ‘बेटा, तुम्हारे पिता से दूर रहने के कारण तुम्हारी माँ को बहुत कष्ट सहना पड़ा। क्या तुम इसके लिए मुझसे घृणा करते हो?’
'नहीं।'
‘क्या तुम्हारे पिता ने ऐसा मेरी वजह से नहीं किया था?’
लेकिन मुझे बताया गया था कि आपकी वजह से ही वह ये सब लिख पाए। मेरे चाचा और चाची ने मुझे सब कुछ बताया है।
करुणा का हृदय खुशी से भर उठा। वह उसके ऊपर झुकी और उसे गले लगा लिया। दस मिनट तक वह उस अवर्णनीय आनंद में डूबी रही और खुद को भूल गई।
जब पृथ्वी जाने लगा, तो उसने उसका हाथ पकड़कर कहा, ‘चाचा जी को बता देना कि मैं जल्द ही आऊंगी। आप यहाँ आते रहिएगा।’ अब पृथ्वी की झिझक कुछ कम हो गई थी। ‘ठीक है, मैं आऊंगा,’ उसने कहा और चला गया। वह द्वार के पास तब तक खड़ी रही जब तक वह उसकी नज़रों से ओझल नहीं हो गया। जब वह अंदर आई, तो कल तक जो नींद उसे नहीं आई थी, वह आज उसे आ गई। लेटते ही दस मिनट के भीतर वह गहरी नींद में सो गई।
शाम को जब वह उठी, तो उसका मन एक बार फिर भयानक रूप से खाली था। राव के साथ बिताए पलों की यादें उसे घेरने लगीं। अगर वह माँ होती, तो उसके पास सहारा होता। एक समय था जब उसने बच्चा पैदा करने की इच्छा की थी। जब वे नंदी गए थे, तब यह इच्छा अंकुरित हुई और एक विशाल वृक्ष की तरह बढ़ गई। अगर वह तब गर्भ धारण कर लेती, तो अब उसका आठ या नौ साल का बच्चा होता। उससे भावनात्मक जुड़ाव उसके मन को अवसाद से बचा लेता। जीवन इतना भयानक नहीं होता। मैंने मातृत्व की इच्छा को दबा दिया। मैंने गलती की, वह सोचती रही। रात के खाने के बाद जब वह सोने गई, तो उसे नींद नहीं आई। उसका मन, जो इतने वर्षों से लगातार काम में लगा रहता था, सुस्त होना उसे अस्वाभाविक लग रहा था। अगर मैं माँ होती, तो यह ग्रंथ इतनी जल्दी पूरा नहीं हो पाता। चौथे खंड के आधे होने तक ही राव की मृत्यु हो चुकी होती। यह ग्रंथ वास्तव में वह बच्चा है जिसके लिए हम साथ आए थे, और अंततः हमने इसे जन्म दिया। इसने प्रसिद्धि प्राप्त की है और यह जीवित है। वह इसके पिता हैं और मैं इसकी माता। जीवन कभी इतना परिपूर्ण नहीं होता कि सब कुछ दे दे, उसने खुद को दिलासा दिया।

आज रात भी वह टहलने गई। लेकिन हर जगह जहाँ वह गई, पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। उन बीते हुए पलों के सामने उसकी वर्तमान स्थिति और भी भयावह लगने लगी। आधे घंटे में ही वह घर लौट आई। इस कस्बे में कहाँ रहूँ? मेरा साथी अब इस दुनिया में नहीं है। जिस उद्देश्य से मैं यहाँ आई थी, वह पूरा हो चुका है। इन दोनों के अलावा, मुझे किसी से जान-पहचान बनाने, किसी से मेलजोल बढ़ाने या किसी का विश्वास जीतने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरे पास इन सब के लिए समय ही नहीं था। अब मैं अकेली हूँ। इस कस्बे में मेरा अपना कौन है? कौन? जल्द ही, उसे अपने गृहनगर की याद आ गई। हालाँकि उसके माता-पिता गुज़र चुके थे, लेकिन उसका भाई अभी भी जीवित था। वह अब 50 साल का हो चुका था। उसके बच्चे काफी बड़े हो गए होंगे। शायद वे उसे पहचान भी न पाएँ। उसके भाई के साथ कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ था। उसकी यादें ताज़ा हो गईं, और एक ऐसा स्नेह उमड़ आया जो पहले कभी महसूस नहीं हुआ था। उसे सारी बातें बताने का फैसला करके, वह जल्दी से अपनी मेज पर गई और उसे पत्र लिखने लगी। जब उसने देखा कि पत्र पाँच पन्नों का हो गया है तो वह आश्चर्यचकित रह गई। जैसे-जैसे वह पूरी कहानी सुनाती गई, वह भावुक होती गई। अंत में उसने लिखा, 'मैंने अब तक अपना लक्ष्य पूरा कर लिया है। लेकिन अब जो खालीपन आ गया है, उसमें मुझे आपकी संगति की बहुत याद आती है। मैं आपके पत्र का इंतजार करूंगी और फिर आने का फैसला करूंगी। मैं वहाँ किसी विश्वविद्यालय में व्याख्याता के रूप में करियर तलाशूंगी।'

हालाँकि वह राजा के घर जाना चाहती थी, पिछले तीन दिनों से उसका मन नहीं लग रहा था। ज़्यादातर वह बस लेट जाती, यहाँ तक कि बिस्तर को समेटने की भी परवाह नहीं करती थी। चौथे दिन राजा सुबह 11 बजे उसके घर आया। वह इतना दुबला हो गया था कि उसकी गाल की हड्डियाँ साफ़ दिखाई देने लगी थीं।

उन्होंने कहा, 'आपने पृथ्वी के साथ संदेश भेजा था कि आप मिलने आएंगे। आप नहीं आए। मुझे आपकी सेहत को लेकर चिंता होने लगी।'

बैठ जाओ। मेरा मनोबल बिल्कुल टूट चुका है। छह दिन पहले मैंने पांडुलिपि प्रकाशक को भेजी थी। पिछले तीन दिनों से मैं उनसे मिलने जाना चाहती थी, लेकिन मेरे पैर साथ नहीं दे रहे थे। भारी मन से मैं बस इस बिस्तर पर लेटी हुई हूँ। कात्यायनी कैसी हैं?

‘हाँ, वो ठीक है,’ उसने कहा और उसके चेहरे पर निराशा झलक रही थी। ‘वो ठीक से बोलती तो है, लेकिन अगर मैं थोड़ी देर के लिए भी उसके पास न रहूँ, तो वो रोने लगती

है। रात को वो लेटकर मुझे कसकर गले लगा लेती है। जब बुखार तेज़ होता है, तो वो बड़बड़ाती है, "मुझे छोड़कर मत जाओ।"'
उन्होंने धीरे-धीरे उन मुद्दों पर चर्चा की। फिर करुणा ने उसे अपने भाई को लिखे पत्र के बारे में बताया। 'आप मेरी बात समझ सकते हैं। अगर मेरा भाई अभी भी जीवित है और मुझे यहाँ आने के लिए कहता है, तो मैं आ जाऊँगी। मैंने बाकी सब बातों पर विचार कर लिया है। बैंक में अच्छा-खासा क्रेडिट बैलेंस है। मैं इसे नागलक्ष्मी के नाम पर ट्रांसफर कर दूँगी। ग्रंथ से मिलने वाली रॉयल्टी पृथ्वी को मिलेगी। आप यहाँ से फर्नीचर और घरेलू सामान अपने साथ ले जाइए। मैं रागप्पा को 1,000 रुपये का इनाम देकर उसे छुट्टी दे दूँगी। आप चाहें तो उसे काम पर रख सकते हैं। इस घर की किताबें, यह पांडुलिपि और यह टाइपराइटर, कृपया इन सबको अच्छे से पैक करके मुझे भेज दीजिए। अगर वह जीवित होता तो जो भी बचा हुआ शोध कार्य करता, मैं उसे अपने गृह नगर से पूरा करूँगी और अपना शेष जीवन वहीं व्यतीत करूँगी।'
राजा ने पूछा, 'तुम अपने गृहनगर जा रही हो। लेकिन क्या तुम मेरे घर में रुककर ये काम नहीं निपटा सकती?' ठीक उसी समय, एक टैक्सी गेट के पास आकर रुकी। करुणा देखने के लिए उठी। एक सांवले रंग का, हट्टा-कट्टा, तगड़ा आदमी उसकी ओर आ रहा था। उसके हाथ में बस एक छोटा सा चमड़े का थैला था। करुणा उसे पहचान नहीं पाई। जब वह उसके पास पहुँचा, तो उसने सिंहली में कहा, 'मुझे नहीं पहचाना?' करुणा तुरंत समझ गई और उसने उसका हाथ थाम लिया। वह उसका भाई था। उसने कहा, 'मुझे तुम्हारा पत्र मिला। मैं खुद को रोक नहीं पाया। मुझे फ्लाइट का टिकट मिल गया, इसलिए मैं तुरंत निकल पड़ा। मैंने कल रात मद्रास से कोलंबो के लिए दो लोगों के लिए फ्लाइट टिकट बुक करवा लिए हैं। हमें आज रात ही यहाँ से निकलना होगा।'
करुणा ने राजा से उनका परिचय कराते हुए कहा, 'ये मेरे जीजा हैं।' वह हवाई यात्रा के लिए कम से कम सामान ही ले जा सकती थी। रागप्पा ने मेहमान के लिए खाना बनाना शुरू किया। अपने भाई को घर पर छोड़कर, करुणा राजा के साथ टैक्सी में बैठकर अपने बैंक गई। राजा के मना करने के बावजूद, करुणा ने 1000 रुपये अपने पास रख लिए और बाकी रकम उन्हें सौंपते हुए कहा कि वे इसे नागलक्ष्मी को दे दें। वहां से वे राजा के घर गए।
कात्यायनी की हालत करुणा के अनुमान से कहीं अधिक गंभीर थी। उसके शरीर की चमक फीकी पड़ गई थी और वह सूखे सफेद चमड़े जैसी लग रही थी। फिर भी वह बोल रही थी। करुणा ने उससे एक घंटे से अधिक समय तक बातचीत की और फिर

नागलक्ष्मी को देखने अंदर गई। उसके हाथ पकड़कर उसने कहा, 'अब हम दोनों का दिल टूट गया है। मेरी जो भी गलती हो, मुझे क्षमा कर दीजिए।' नागलक्ष्मी को कुछ समझ नहीं आया कि क्या कहे। उसने बस अपने आंसू पोंछ लिए।
जब रागप्पा को 1,000 रुपये दिए गए, तो उसका हृदय कृतज्ञता से भर उठा। करुणा ने पड़ोसी प्रोफेसर और उनके परिवार को विदाई दी।
जब वे दोनों ट्रेन में बैठ गए, तो राजा ने कहा, 'कभी हमसे मिलने जरूर आना।' पृथ्वी का चेहरा हाथों में थामकर और उसके माथे पर चुंबन करते हुए करुणा ने कहा, 'भले ही तुम विज्ञान के छात्र हो, फिर भी एक बार अपने पिता की रचनाएँ जरूर पढ़ लेना।'
जब ट्रेन चलने लगी, करुणा अपने आंसू पोंछ रही थी। राजा भी ऐसा ही कर रहा था। पृथ्वी मूक साक्षी बनकर खड़ी रही। जब वे रेलवे प्लेटफॉर्म से बाहर निकले, तो राजा के मन में करुणा के जन्म से लेकर अब तक की सारी घटनाओं का ख्याल घूम रहा था।

अध्याय 26

1

जब श्रोत्री वंश के किसी भी वंशज के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं मिली, तो श्रोत्री ने उन्हें खोजने का प्रयास छोड़ दिया। अब उनके मन में कुछ और विचार आया। लगभग आठ दिनों में, उनके मन ने उस विचार को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया। जब उन्होंने यह बात लक्ष्मी से साझा की, तो क्रोधित लक्ष्मी ने कहा, 'शीनप्पा, तुम सचमुच पागल हो गए हो। इस संसार में कोई भी तुम्हारे जैसा पागल नहीं होगा।' उन्होंने कहा, 'धर्म के मार्ग बहुत सूक्ष्म हैं, लक्ष्मी। तुम इसे केवल जनमानस के रीति-रिवाजों से नहीं समझ सकतीं।' उनके इस उत्तर के बावजूद लक्ष्मी क्रोधित रहीं।
एक रविवार दोपहर को जब श्रोत्री चीनी को वेद पढ़ा रहे थे, तब उन्होंने कहा, 'बच्ची, तुमने कई बार मुझसे पूछा है कि मेरे मन में क्या बात है। अब मुझे इसका हल मिल गया है। यह सूक्ष्म धर्म का विषय है। जब तक तुम अपनी हार्दिक सहमति नहीं दोगी, मैं इस विषय पर कुछ भी नहीं करूंगी।'
'दादाजी, क्या मैंने कभी आपकी किसी बात का विरोध किया है? मुझे बताइए कि मामला क्या है।'
श्रोत्री एक मिनट के लिए हिचकिचाए, लेकिन अंततः उन्होंने अपने जन्म की पूरी कहानी विस्तार से सुना दी। चीनी स्तब्ध रह गए। "देखिए, मैंने पहले तो एडाटोर या कहीं और किट्टप्पा श्रोत्री के वंशजों को ढूँढ़कर उन्हें संपत्ति का हिस्सा सौंपने का सोचा था। मुझे लगता है कि इस संपत्ति पर मेरा कोई अधिकार नहीं है, यहाँ तक कि एक पीतल के प्याले पर भी नहीं। जब हम किसी विशेष वंश से रक्त संबंधी नहीं हैं, तो हम इस संपत्ति का भोग करने का अधिकार कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यदि किसी विशेष घर पर मेरा अधिकार अवैध है, तो मेरे पोते होने के नाते आप भी उस घर के उतने ही अवैध कब्जेदार हैं। श्रोत्री नाम हमारा नहीं है। उपनयन संस्कार के लिए किसी विशेष वंश के प्रति निष्ठा आवश्यक है। हमें काश्यप-गोत्र के नाम से दीक्षा दी गई थी। हमने इसे निष्ठा और विश्वास के साथ अपनाया है और इसका पालन कर रहे हैं। रीति-रिवाजों की दृष्टि से, हम काश्यप-गोत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करते रह सकते हैं।" यदि हम किट्टप्पा श्रोत्री

के वंशजों से नहीं मिल पाते हैं, तो हमारे पास इस सारी संपत्ति को योग्य लाभार्थियों को दान करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है।'
चीनी ने दो मिनट तक सोचा। वह समझ गया था कि अगर सारी संपत्ति दान में दे दी गई तो उनका क्या हश्र होगा। फिर भी, दादाजी द्वारा ऐसा प्रस्ताव रखे जाने से उसके मन में धर्म की बारीकियों के प्रति सम्मान पैदा हो गया। 'आप जो कह रहे हैं वह सही है। मैं अब 17 साल का हूँ। जल्द ही मैं अपना करियर बना लूँगा और हम तीनों किसी तरह अपना गुजारा कर लेंगे।'
दादाजी को यह सुनकर प्रसन्नता हुई। 'तुम्हारे शब्द वेदों के ज्ञाता के योग्य हैं। जिस क्षण हमें यह पता चलता है कि हमारी संपत्ति हमारी नहीं है, हमें उसे त्याग देना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ उसे अवैध तरीके से बर्बाद कर देंगी। हम इस बात से आश्वस्त नहीं हो सकते कि वे इसे खोने के योग्य थे, क्योंकि इस प्रक्रिया में वे अधार्मिक मार्ग अपना लेंगे। और संचित पापों से बड़ा कोई नुकसान नहीं है। मेरा अब भी मानना है कि हमारे संचित पाप और पुण्य हमारी किसी संतान की तलाश में रहेंगे ताकि वे उन्हें समाप्त कर सकें। इसके अलावा, मेरी दूसरी बात सुनो।'
श्रोत्री ने अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य बताया। 'मैंने तुम्हारे पिता के विवाह के समय से ही संन्यास का मार्ग अपना लिया था। उनकी मृत्यु के कारण मुझे पारिवारिक जिम्मेदारियों की ओर लौटना पड़ा। पिछले आठ वर्षों से मेरे मन में संन्यास लेने की प्रबल इच्छा रही है। अपने जन्म का रहस्य जानने के बाद मेरा संकल्प और भी दृढ़ हो गया है। यद्यपि वंश को सुदृढ़ करने का विचार अब मेरे लिए प्रासंगिक नहीं है, फिर भी मैं इसका आदर करता हूँ। मेरी आयु 75 वर्ष है और तुम जल्द ही अठारह वर्ष के हो जाओगे। मुझे सेवानिवृत्त होने की अनुमति दो।'
चीनी की आँखों में आँसू भर आए। 'दादाजी, मैंने आपके पहले प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लिया था। लेकिन मैंने ऐसा कौन सा पाप किया है कि आप मुझे छोड़ना चाहते हैं? यह स्वाभाविक है कि आप इस जागीर से घृणा करते हैं। लेकिन क्या आपको अपने पोते से दूरी बनानी चाहिए?'
'मैं तुम्हें तुच्छ नहीं समझता। बालक, मैंने अब तक गृहस्थ जीवन व्यतीत किया है। अपने अंतिम दिनों में मनुष्य को युग की पुकार के अनुसार जीना चाहिए, सब कुछ त्याग देना चाहिए और परम आत्मा के ध्यान में लीन हो जाना चाहिए। अपने जीवन के विकास के अनुसार अपने उद्देश्य, मत और जीवनशैली को समायोजित न करना भी पाप है। मुझे संन्यास लेने की आयु प्राप्त किए काफी समय हो गया है। मैं गृहस्थ जीवन के अपने

दायित्वों को पूरा करने के कगार पर हूँ। केवल तुम्हारी सहमति शेष है। यदि मुझे अपने जन्म का रहस्य ज्ञात न भी होता, तो भी मैं संन्यास ले लेता।'
चीनी के पास कोई जवाब नहीं था। उसका दिमाग दादाजी की बातें समझ रहा था, पर उसका दिल नहीं मान रहा था। वह भारी मन से बैठा रहा। श्रोत्री ने आगे कहा, "अभी मेरा तुम्हारे प्रति कर्तव्य पूरा नहीं हुआ है। पहले, मुझे तुम्हारे लिए एक नेक परिवार से उपयुक्त वर ढूंढना है और तुम्हें अगले आश्रम में पदोन्नत करना है। मैं वह करूंगा। इस साल तुम अपनी इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी कर लोगे। अपने बैंक खाते में 5,000 रुपये जमा करा दो ताकि अगले दो साल की पढ़ाई और तब तक के तुम्हारे अन्य खर्चों के लिए पर्याप्त हो। हालांकि यह पैसा श्रोत्री परिवार का है, लेकिन इसके संरक्षक होने के नाते मैंने इसे संभालने का पूरा प्रयास किया है। तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम अगले दो वर्षों में अपनी डिग्री प्राप्त करो और एक नेक पारिवारिक जीवन व्यतीत करो। हेज्जिगे में लक्ष्मी के नाम पर दो एकड़ जमीन है। यह उनकी है। जीवन भर उनकी देखभाल करना तुम्हारा कर्तव्य है। उनकी मृत्यु से पहले, वे इसे किसी भी धार्मिक कार्य के लिए अपनी इच्छानुसार उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं।"
पोते ने कुछ नहीं कहा। 'तुमने मुझसे वेद सीखे हैं। उन पर मनन करो। जल्दबाजी की कोई जरूरत नहीं है।'

2

एक दिन, चीनी ने देखा कि उसके दादाजी आजकल कौन सी किताबें पढ़ रहे हैं। उसने पाया कि वे संन्यासोपनिषद, वैखानससूत्र, धर्मसिंधु और जीवनमुक्तिविवेक का गहन अध्ययन कर रहे थे। विभिन्न खंडों पर मोर के पंख के टुकड़े बुकमार्क के रूप में लगे थे। उन्होंने कुछ श्लोकों पर स्याही से निशान लगाए थे। चीनी ने उन पर एक नज़र डाली। उन्होंने शंकराचार्य की बृहदारण्यक-उपनिषद की टीका में इस श्लोक पर एक बुकमार्क लगाया था:

Atha parivrāḍ vivarṇa vāsāmuṇḍō aparigrahaḥ|
शुचिराद्रोहि भिक्षाणो ब्रह्मभूयाय भवति||

चीनी अब तक संस्कृत श्लोकों को अच्छी तरह समझ सकता था। एक श्लोक में लिखा था, 'संन्यास ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को प्रजापति यज्ञ करना

चाहिए और अपनी सारी संपत्ति ब्राह्मणों, गरीबों और असहायों को दान कर देनी चाहिए।' एक अन्य श्लोक में लिखा था, 'अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर, उसे गांवों से बाहर रहना चाहिए। आश्रयहीन होकर, उसे पेड़ों के नीचे या निर्जन घरों में, या सूर्यास्त के समय जहाँ भी हो, वहीं सोना चाहिए। केवल मानसून के दौरान ही वह एक स्थान पर रह सकता है।' चीनी अपने 75 वर्षीय बेघर, भटकते दादाजी के बारे में सोचकर आह भरता था, जो पूरी रात पेड़ों के नीचे बिताते थे।

एक संन्यासी को पूर्वनिर्धारित घरों के अलावा अधिकतम सात घरों से भिक्षु एकत्र करने चाहिए। भिक्षु देने से पहले, उनकी हथेलियों पर जल छिड़कना चाहिए। फिर भोजन देना चाहिए। भोजन देने के बाद, फिर से जल छिड़कना चाहिए।

उसे कभी भी पेट भरकर नहीं खाना चाहिए। उसे बस इतना खाना चाहिए जिससे उसका पेट भरा रहे। जिन दिनों उसे भोजन मिले, उन्हें प्रसन्न नहीं होना चाहिए। जिन दिनों उसे भोजन न मिले, उन्हें निराश नहीं होना चाहिए।

'उसके पास केवल एक कमण्डल, कपड़े धोने के लिए एक बर्तन, लकड़ी के जूते, एक चटाई और एक फटा हुआ कपड़ा होना चाहिए?'

जब उसने अगला चिह्न पढ़ा, तो चीनी का हृदय दुःख से भर गया। 'एक संन्यासी को ऊँचे स्थान पर सोना चाहिए। यदि उसे कोई बीमारी हो जाए, तो उसे चिंता नहीं करनी चाहिए। उसे मृत्यु को आमंत्रित नहीं करना चाहिए। न ही उसे जीवन से प्रेम करना चाहिए। उसे अपने अंतिम दिन की प्रतीक्षा उसी प्रकार करनी चाहिए जैसे एक बंधुआ मजदूर अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा करता है।'

श्रोत्री ने महाभारत के अनुशासन-पर्व में एक खंड चिह्नित किया था। उसमें संन्यास के चार प्रकारों का वर्णन किया गया था, अर्थात् कुटिचक, बहुदक, हंस और परमहंस। श्रोत्री ने परमहंस के लक्षण इस प्रकार बताए थे: 'परमहंस वृक्षों के नीचे, निर्जन घरों में या श्मशान में निवास करते हैं। वे वस्त्र धारण कर सकते हैं या नग्न रह सकते हैं। वे धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, स्वच्छता-अस्वच्छता आदि के भेद से परे होते हैं। वे सोने, जमीन और हर चीज को आत्मा के समान मानते हैं। वे चारों वर्णों के भिक्षुओं को स्वीकार करते हैं। शास्त्रों में निर्धारित नियम और निषेध उन पर लागू नहीं होते।'

अपने दादाजी द्वारा अपनाई जाने वाली जीवनशैली के हर विवरण को पढ़ते हुए चीनी का मन और भी अधिक दुःख से भर गया। उसने चौथे आश्रम, संन्यास के बारे में पढ़ा था। वह इसके उद्देश्यों और प्रयोजनों से, और संन्यासी के जीवन जीने के तरीकों से अनभिज्ञ नहीं था। लेकिन वह इस बात को सहन नहीं कर पा रहा था कि उसके दादाजी,

जिन्होंने इतने प्रेम से उसकी देखभाल की थी, अपने वृद्ध शरीर को इतनी कठोर जीवनशैली के अधीन करने का निर्णय ले लें। उसे अपने दादाजी द्वारा त्यागे जाने के बाद अपने भविष्य की कोई चिंता नहीं थी।

एक दिन, वह लक्ष्मी को अकेले पिछवाड़े में लगी चमेली की लता के पास ले गया और उसे ग्रंथों में वर्णित संन्यासी के जीवन के बारे में विस्तार से बताया। फिर उसने लक्ष्मी से विनती की, 'तुम उसे समझाओ कि ऐसा क्यों करना है। अगर मैं कोई पेशा अपना लूं, तो हम तीनों सुखी जीवन जी सकते हैं।'

चीनी के वर्णन से उसे चिंता होने लगी। 'अगर वह मुझे साथ ले जाता है, तो मैं शीनाप्पा का अच्छे से ख्याल रखूंगी। लेकिन वह अकेले ही जाने को तैयार है। वह एक धर्मात्मा व्यक्ति है। उसने अपने जीवन में कोई पाप नहीं किया है। क्या वह अब तक अर्जित अपने सद्गुणों से संतुष्ट नहीं है? फिर वह यह सब क्यों कर रहा है? वैसे भी, वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है। हम उसे सलाह देने में सक्षम नहीं हैं। लेकिन हमारा मन यह मानने को तैयार नहीं है,' वह विलाप करती।

चीनी हमेशा की तरह कॉलेज जाता था। उसके दादाजी अब भी उसे कोई काम नहीं करने देते थे; वह रसोई के सारे काम करता रहता था। अब, वह रोज़ रात के खाने के बाद उसे धर्मशास्त्र पढ़ाते थे। वे कई महान ऋषियों के जीवन प्रसंग और पुराणों के पात्रों का वर्णन करते थे। वे कई संस्कृत की किताबें उठाते और कहते, 'इसे कभी पढ़ लेना।' दादाजी के सामने बैठकर, जब भी चीनी उनकी दृढ़ आवाज़ सुनता, उसका मन उनके शब्दों को सही मानता। लेकिन कॉलेज जाने के लिए घर से निकलते समय, दादाजी के जल्द चले जाने के विचार से उसका मन दुखी हो जाता था।

3

श्रोत्री द्वारा अपनी सारी संपत्ति दान करके संन्यास लेने की खबर नंजनगुड के हर कोने में फैल गई। उनके शुभचिंतक उनसे मिलने आए और पूछने लगे, 'क्या बात है? यह निर्णय क्यों?' वे हल्के शब्दों में कहते, 'मैं बूढ़ा हो गया हूँ, और संन्यास लेना ही मेरा धर्म है, और कुछ नहीं। मेरे पोते का कहना है कि उसे ये संपत्ति नहीं चाहिए, इसलिए मैं इसे दान कर रहा हूँ।' कई लोग उनसे इस लहजे में बात करने लगे मानो वे ही इस दान के योग्य हों। उनमें से कोई न कोई हमेशा श्रोत्री के घर पर मौजूद रहता था। चीनी को अपने दादा के दृढ़ संकल्प पर अब कोई संदेह नहीं था। उसके हृदय ने उसे बताया कि केवल

अपने प्रेम के कारण दादा के मोक्ष के मार्ग में बाधा डालना उसके लिए धर्म के विरुद्ध होगा। श्रोत्री द्वारा समय-समय पर धार्मिक विषयों में उपदेश दिए जाने से लक्ष्मी दृढ़ निश्चयी हो गई थी।

अप्रैल के एक दिन, श्रोत्री ने चीनी के माध्यम से विद्यालय शिक्षक अनंतराम को बुलाया। अनंतराम चामराजनगर के निवासी थे और पिछले दस वर्षों से नंजनगुड में रह रहे थे। लगभग तीन-चार वर्षों तक वे स्थानीय माध्यमिक विद्यालय में सेवा करते, फिर अपने वरिष्ठों से संपर्क करके पास के किसी गाँव में तबादला करवा लेते ताकि वे प्रतिदिन नंजनगुड से आ-जा सकें; और एक-दो वर्ष बाद फिर से नंजनगुड में तबादला करवाने का प्रयास करते। अब उनकी आयु 50 वर्ष थी और उन्हें पाँच वर्ष और सेवा करनी थी। वे नंजनगुड के ही एक इलाके में अपने घर में रहते थे और हुल्लाहल्ली में उन्होंने तीन एकड़ जलभंडार भूमि खरीदी थी। श्रोत्री के अनंतराम से मित्रता विकसित करने का एक विशेष कारण था। अनंतराम संस्कृत के ज्ञाता थे। वे धर्मनिष्ठ और परंपरा का सम्मान करने वाले व्यक्ति थे, इसलिए वे धर्मशास्त्र के विषय में स्पष्टीकरण के लिए श्रोत्री से परामर्श लेते थे। उसके गुणों से प्रसन्न होकर, श्रोत्री उसे अपने माता-पिता के वार्षिक मृत्यु संस्कार में दो नामित व्यक्तियों में से एक बनने के लिए आमंत्रित करता था।

जब चीनी उसे आठ साल की उम्र में लेकर आई, तो उसने गुरु को प्रणाम किया और चीनी से कहा, 'चीनी, हम दोनों टहलने चलते हैं।' वे इत्मीनान से मंदिर के पास से गुजरे और नदी के स्नानघर की सीढ़ी पर बैठ गए। गुरु को श्रोत्री के संकल्प के बारे में पता था। जब उन्हें इसकी खबर मिली, तो वे श्रोत्री से मिले और अत्यंत विनम्रता और स्नेह से उनसे विनती की, 'आपको हमें छोड़कर नहीं जाना चाहिए।' लेकिन अंततः वे श्रोत्री की बात मान गए, क्योंकि वे स्वयं धर्मशास्त्र में पारंगत थे। लेकिन वे यह नहीं समझ पाए कि श्रोत्री ने अपनी सारी संपत्ति दान करने का निर्णय क्यों लिया।

दो मिनट के मौन के बाद, श्रोत्री ने कहा, 'अपनी संपत्ति दान करने का कारण केवल लक्ष्मी और चीनी को ही पता है। आज मैं इसे केवल आप दोनों के साथ साझा कर रही हूँ। वास्तव में इसे आपके साथ साझा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, लेकिन मुझे आपसे एक मदद चाहिए।'

'एक कृपा? मेरी ओर से आप? यदि आप अनुरोध करेंगे तो यह मेरे लिए अच्छा नहीं होगा। बल्कि, आपको मुझे नियुक्त करना चाहिए,' शिक्षक ने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर कहा।

‘मेरी बात सुनो,’ श्रोत्री ने कहा और अपने जन्म का रहस्य, किट्टप्पा श्रोत्री के वंशजों को खोजने के अपने प्रयासों और हाल के अपने विचारों को प्रकट किया। गुरु काफी देर तक चुप रहे। अंततः उन्होंने बोलना शुरू किया, ‘आधुनिक युग में मैंने ऐसा कोई नहीं देखा जो धर्म के सिद्धांतों की सही व्याख्या करता हो और उनका पालन करता हो, जैसा आप करते हैं। मुझमें यह कहने का साहस नहीं है कि आपका संकल्प गलत है।’
मैं अपनी एक और इच्छा आपके सामने स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। मैं अपने पोते को गृहस्थाश्रम में दाखिला दिलाए बिना नहीं जा सकता। आप पूरी तरह से भरोसेमंद व्यक्ति हैं। कृपया उदारता दिखाते हुए अपनी सबसे छोटी बेटी, जिसकी उम्र लगभग 12 या 13 वर्ष है, मेरे पोते को दे दें। उसने अभी-अभी इंटरमीडिएट की परीक्षा दी है। मैंने उसकी आगे की पढ़ाई के लिए 5,000 रुपये अलग रखे हैं। कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे श्रोत्री जागीर से ये 5,000 रुपये भी नहीं निकालने चाहिए। लेकिन उसे इतना भी न देना श्रोत्री जागीर का अपमान और तिरस्कार करने जैसा होगा। मैं अपने आप को ऐसे उग्र भावों में क्यों डूबने दूँ? इसके अलावा, धर्म के नाम पर चीनी को दुविधा में छोड़ना धर्म के विरुद्ध होगा। उसके लिए बीएससी की डिग्री प्राप्त करना ही पर्याप्त होगा। मैं हर तरह से प्रसन्न रहूँगा। यह आपका दायित्व है कि आप अपने दामाद को बीएससी की पढ़ाई पूरी करवाएँ और उसे धर्म के मार्ग पर चलने को कहें। मैंने आपसे कुछ भी नहीं छिपाया है।
शिक्षक लगभग दस मिनट तक ध्यानमग्न रहे। फिर उन्होंने कहा, 'आपने कहा था कि आपका गोत्र काश्यप गोत्र है, है ना?'
मैंने तुमसे कहा था। मैं श्रोत्री वंश से संबंधित नहीं हूँ। मेरा उपनयन काश्यप-गोत्र के प्रति निष्ठा के कारण हुआ था।
‘उठो। चलो घर चलते हैं। मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार करती हूँ। चीनी को अपने दादाजी के गुण और सद्गुण विरासत में मिले हैं। ऐसा उत्तम दामाद पाकर मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ। मुझे बस अपने परिवार से पूछने की औपचारिकता पूरी करनी है।’ वह उठ गया। श्रोत्री को राहत मिली।
अगली सुबह, शिक्षक अपनी बेटी की कुंडली लेकर श्रोत्री गए और चीनी की कुंडली से मिलान किया। कुंडली बिल्कुल मेल खा रही थी। उन्होंने चीनी से पूछा, “बेटा, क्या तुम मेरी बेटी ललिते से शादी करोगे?” चीनी को इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसने बस हां में सिर हिलाया। “तुम्हारे दादाजी भी तुम्हें यही सलाह देंगे। हम सब बहुत खुश हैं।

क्या तुम उससे शादी करोगे?" चीनी ने अपने दादाजी की ओर देखा। शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया।

ललिते एक बेहद आकर्षक लड़की थी। तेरह वर्ष की आयु में ही वह हाई स्कूल में पढ़ रही थी। आज के मानदंडों के अनुसार, वह चीनी के लिए बहुत छोटी लगती थी, लेकिन शारीरिक रूप से वे एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे। यद्यपि विवाह शीघ्र ही होने वाला था, श्रोत्री ने प्रस्ताव रखा कि विवाह को तब तक के लिए स्थगित कर दिया जाए जब तक कि वह अपनी बीएससी की पढ़ाई पूरी न कर लें। तब तक दुल्हन हाई स्कूल से स्नातक हो चुकी होगी। अगले वर्ष के चंद्र कैलेंडर के दूसरे महीने के पहले पखवाड़े के एक शुभ दिन पर, श्रोत्री की इच्छा के अनुसार, नंजुंदेश्वर मंदिर में एक सादा विवाह संपन्न हुआ। चीनी गृहस्थ बन गए।

श्रोत्री ने अपनी ज़मीनों का दौरा किया और बटाईदारों की आर्थिक स्थिति का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। उनमें से अधिकांश के पास इसके अलावा कोई और सहारा नहीं था। यदि वे उनके अनुबंध रद्द कर देते, तो उनमें से अधिकांश परिवारों को दिन में दो वक्त का भोजन भी नहीं मिलता। श्रोत्री ने यह निश्चय किया कि दान के रूप में संबंधित ज़मीनें प्राप्त करने के लिए उन बटाईदारों से अधिक योग्य कोई नहीं है। जब उन्होंने कहा कि वे संबंधित किसानों को ज़मीनें दान करने के बाद संन्यास ले लेंगे, तो उनमें से प्रत्येक विनम्रतापूर्वक उनके चरणों में गिर पड़ा। 'गुरुजी, मुझे आप जैसे धर्मात्मा व्यक्ति की संपत्ति नहीं चाहिए। आप ही स्वामी बने रहें। हम अधिकतम फसल उगाएंगे, आपको देंगे, अपना हिस्सा लेंगे और तृप्त जीवन व्यतीत करेंगे।' श्रोत्री ने उन्हें उचित रूप से समझा दिया और घर लौट आए। चीनी के साथ, उन्होंने संबंधित किसानों के पक्ष में ज़मीनों के विलेख बनाए। छह एकड़ ज़मीन मैसूर के एक अनाथालय को दान कर दी गई। यह तय किया गया कि जिस घर में वे रहते हैं, वह तीर्थयात्रियों के लिए निःशुल्क आवास के रूप में कार्य करेगा। उसने हर दस्तावेज़ वकील से तैयार करवाया, उस पर हस्ताक्षर किए, चीनी से भी हस्ताक्षर करवाए, फिर उप-पंजीयक कार्यालय जाकर उसे पंजीकृत करवाया। घर लौटकर उसने राहत की सांस ली क्योंकि वह एक असहनीय बोझ से मुक्त हो गया था।

अब उन्हें अपने संन्यास की तिथि तय करनी थी। संन्यास ग्रहण करने के लिए गुरु से दीक्षा लेना आवश्यक था। उन्हें यह निश्चित नहीं था कि यह दीक्षा किस स्थान पर होगी। अंततः श्रोत्री ने निर्णय लिया कि वे किसी शुभ दिन इस स्थान से प्रस्थान करके हरिद्वार

या बद्री जाएंगे। वहां वे एक योग्य गुरु की खोज करेंगे और औपचारिक रूप से गृहस्थाश्रम की दीक्षा संपन्न करेंगे।
स्कूल शिक्षक अनंतराम की तीन बेटियाँ और दो बेटे थे। बड़ा बेटा चीनी की उम्र का था। वह रोज़ ट्रेन से मैसूर के एक कॉलेज में पढ़ने जाता था। दूसरे बेटे को अगले साल हाई स्कूल की परीक्षा देनी थी। शिक्षक ने श्रोत्री से कहा, 'चिंता मत करो। दामाद बेटे के बराबर होता है। श्रीनिवासा को मेरे बेटे के साथ कॉलेज जाने दो। जब तक वह स्नातक की पढ़ाई पूरी करके नौकरी नहीं पा लेता, तब तक वह और लक्ष्मी हमारे साथ रहेंगे। हम उनका वैसे ही ख्याल रखेंगे जैसे परिवार के सदस्य रखते हैं।'
श्रोत्री इस प्रस्ताव से प्रसन्न हुए। उन्होंने घर में मौजूद चांदी और सोना बेचकर मंदिर के ट्रस्ट फंड में दान कर दिया। बर्तन भी मंदिर की रसोई में पहुँच गए।
श्रोत्री ने अपनी सभी संस्कृत पुस्तकें चीनी को देते हुए कहा, “बच्ची, इसे अपने दादाजी से विरासत में मिली अमूल्य संपत्ति समझो। अब तक मैंने तुम्हें काफी ग्रंथ पढ़ा दिए हैं। आने वाले दिनों में तुम स्वयं इनका अध्ययन करके और विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त करके अपना ज्ञान बढ़ाओ। कल हमें यह घर खाली करना है। आज रात इन पुस्तकों को अपने ससुर के घर ले जाओ।”
यह तय किया गया कि वे तीसरे चंद्र महीने के पहले पखवाड़े के पाँचवें दिन इस स्थान से विदा लेंगे। चीनी और लक्ष्मी ने लाख कोशिश की, लेकिन वे अपने दुख को रोक नहीं पाईं। लक्ष्मी ने अपने शीनाप्पा के सामने न रोने का निश्चय किया था। चीनी ने भी अपने दादाजी को उनके जाने की पूर्व संध्या पर रुलाकर उन्हें दुखी न करने का प्रयास किया। लेकिन वे एकांत में चुपचाप रोती रहीं। श्रोत्री शांति से अपने प्रस्थान के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। नंजनगुड के कई लोगों ने उन्हें जाने से पहले अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। उन्होंने उनके अनुरोधों को स्वीकार किया। किसानों ने अपनी गाड़ियाँ लाकर उन्हें अपने गाँव ले जाकर दूध और फल दिए। उन्होंने मुस्कुराते हुए सभी का अभिवादन स्वीकार किया।
उनके प्रस्थान के दिन अनंतराम के घर में उनके लिए एक साधारण भोज का आयोजन किया गया। अपने वस्त्रों के अतिरिक्त, उन्होंने दो धोती और एक बर्तन को तौलिए में लपेटकर बाँस की छड़ी से बाँधा, हरिद्वार तक के ट्रेन किराए के लिए 100 रुपये निकाले और उनसे विदा ली। अनंतराम की पत्नी, उनके बच्चे और चीनी की युवती फूट-फूटकर रोईं। उन्होंने सबको शांत किया और रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हो गए। जून का महीना था और उस दिन सुबह से ही हल्की बारिश हो रही थी। ट्रेन शाम 5 बजे थी और

बारिश में भी कई लोग उन्हें विदा करने के लिए वहाँ जमा हुए थे। सबने उन्हें घेर लिया; सभी ने उनके चरणों में प्रणाम किया। जैसे ही ट्रेन रुकी और वे उसमें चढ़ने ही वाले थे, अनंतराम ने श्रोत्री के चरणों में प्रणाम किया और विनती की, 'आप मेरे गुरु थे। आपने मुझे जो कर्तव्य सौंपा है, मैं उसका पूर्ण पालन करूँगा। मुझे आशीर्वाद दीजिए।'
चीनी, लक्ष्मी और ललिते ने उनके चरणों में प्रणाम किया। "मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो, ॐ शांति शांति," श्रोत्री ने मन ही मन जपते हुए शांतिपूर्वक ट्रेन में सवार हो गए। ट्रेन चलने पर सभी ने एक साथ 'हरा हरा महादेव' का जाप किया। जब उनके दादाजी का चेहरा ओझल हो गया, तो चीनी का सिर चकरा गया, उन्होंने लक्ष्मी का हाथ पकड़ा और ज़मीन पर गिर पड़े। पास ही खड़े उनके ससुर ने उन्हें संभाला।

4

जब तक ट्रेन दलावई पुल पर पहुँची, हल्की बारिश तेज़ हो गई। श्रोत्री ने खिड़की से नदी को देखा। नदी दोनों किनारों पर घने पेड़ों के बीच बह रही थी। जहाँ तक उन्हें याद था, वे रोज़ाना इसी नदी में स्नान करते थे। जब भी उनका मन उदास होता, वे नदी के किनारे बैठकर अपना मन बहलाते थे। इसी नदी ने उनके बेटे की जान ले ली थी। लेकिन जीवन भर उन्होंने जो अनाज खाया था, वह उन्हीं खेतों से आया था जिनकी सिंचाई भी इसी नदी से होती थी। श्रोत्री की आँखों के सामने उनके जीवन की घटनाएँ कौंध गईं। उन्हें अपनी माँ और नंजुंडा श्रोत्री याद आए। उन्होंने श्यामदास की छवि की कल्पना की, जिन्हें उन्होंने कभी नहीं देखा था। उनकी पत्नी भागीरथम्मा, पुत्र नंजुंडा और बहू कात्यायनी उनके सामने आ गईं। कात्यायनी का ख्याल आते ही वे स्तब्ध रह गए। उन्हें देखे हुए 14 साल हो गए थे! अब वह कहाँ होंगी? सदाशिव राव ने उन्हें बताया था कि वह बैंगलोर में हैं। सांसारिक जीवन त्यागने से पहले उन्हें एक बार कात्यायनी से मिलने का मन हुआ और उन्होंने सोचा: मैसूर में उतरें, सदाशिव राव से मिलें, उनसे कात्यायनी का पता लें, बैंगलोर में उनसे मिलें और फिर वहां से हरिद्वार के लिए आगे की यात्रा करें। चूंकि उन्हें लगा कि हरिद्वार का रास्ता बैंगलोर से होकर जाता है, तभी ट्रेन चामराजपुरा स्टेशन पर आ पहुंची। उन्होंने अपना सामान बांस के डंडे से बांधा और ट्रेन से उतर गए। हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। यह जानते हुए कि सदाशिव राव प्रोफेसरों के बंगले में

होंगे, उन्होंने पता पूछा और वहां चले गए। एक बंगले के द्वार पर खड़े होकर उन्होंने जोर से पूछा, 'डॉ. सदाशिव राव का बंगला कौन सा है?'
मुख्य द्वार के पास बेंत की कुर्सी पर बैठा एक व्यक्ति उसके पास आया और बोला, 'वह यहाँ नहीं है। उसका निधन लगभग आठ महीने पहले हो गया था।'
यह सुनकर श्रोत्री को गहरा दुख हुआ। 'उसकी पत्नी कहाँ रहती है? और उसका भाई कहाँ है?'
'उनकी पहली पत्नी उनके भाई के साथ है। दूसरी पत्नी अपने देश लौट गई है। भाई इसी शहर में, लक्ष्मीपुरा में रहता है।'
श्रोत्री राजा के निर्देशानुसार उनके घर की ओर चल पड़ा। हल्की बारिश नाम के अनुरूप ही हो रही थी। इस समय उसकी धोती पूरी तरह भीग चुकी थी और उससे पानी टपक रहा था। उसने अपने थैले से दूसरी धोती निकाली और उसे अपने सिर पर ओढ़ लिया। 'बस कुछ ही दिन और। उसके बाद तो मैं अतिरिक्त कपड़े भी नहीं ले जाऊंगा,' उसने सोचा। लक्ष्मीपुरा पहुँचकर उसने और पूछताछ की। जब वह राजा राव के घर पहुँचा, तब शाम के 7:30 बज चुके थे। जब उसने दरवाजा खटखटाया, तो मुंडा सिर वाली एक विधवा दरवाजे पर प्रकट हुई और पूछा, 'आप किसे ढूंढ रहे हैं?'
'उन्हें बता दो कि ये नंजनगुड से श्रीनिवासा श्रोत्री हैं। यहाँ एक कात्यायनी हैं, है ना?'
उनकी आवाज सुनकर राजा का ध्यान आकर्षित हुआ और वह अंदर से दौड़कर बाहर आया। श्रोत्री के चरणों में प्रणाम करते हुए उसने कहा, 'आप अकेले आई हैं? आपका पोता कहाँ है? और टैक्सी कहाँ है?'
श्रोत्री को कुछ समझ नहीं आया। 'मुझे कुछ नहीं पता। मैं तो आपसे यूं ही मिलने आई थी।'
राजा उसे अंदर के कमरे में ले गया। वहाँ एक दुर्बल, नाजुक महिला चारपाई पर अंतिम अवस्था में लेटी थी। राजा ने कहा, 'यह कात्यायनी है।' श्रोत्री को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने पूछा, 'क्या हुआ?' राजा ने कहा, 'पहले तुम कपड़े बदल लो। तुम्हारे कपड़े गीले हैं। मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा।' वह उसे बाथरूम में ले गया। श्रोत्री ने अपनी गीली धोती उतारी, उसे निचोड़कर सुखाया और दूसरी कम गीली धोती पहन ली। यह देखकर राजा ने उसे सूखी धोती देने की पेशकश की, लेकिन श्रोत्री ने मना कर दिया। उसने कहा, 'यह ठीक है,' और उस कमरे में चला गया जहाँ कात्यायनी लेटी थी। कात्यायनी कंबल से ढकी हुई थी। उसका शरीर सचमुच दुबला-पतला था। उसकी आँखें बंद थीं और चेहरा कंकाल जैसा था। उसकी साँसें धीमी थीं।

‘कौन सी बीमारी?’ श्रोत्री ने फिर पूछा।
“ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे डॉक्टर ठीक कर सके। उसे दोबारा शादी किए बिना आपके साथ ही रहना चाहिए था। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। उसके मन में धर्म, कर्म, क्या करें और क्या न करें को लेकर लगातार कशमकश चलती रहती है। हमारे सारे प्रयास उसे शांत नहीं कर सकते। मैं आपको बाद में विस्तार से बताऊंगा। डॉक्टर ने कहा है कि उसकी आज रात मृत्यु होने की संभावना है। आज शाम वह आपसे और अपने बेटे से मिलना चाहती थी। मैंने तुरंत एक टैक्सी भेज दी। मुझे नहीं पता कि उसका बेटा आएगा या नहीं। यह हमारा सौभाग्य है कि आप आ गए।”
नहीं। मुझे लगता है कि वह जरूर आएगा।
मुझे उसके असामान्य स्वभाव के बारे में पता चला है। सरकारी कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उसे पता चला कि वह उसकी माँ है। वह उसे यहाँ, इसी घर में लेकर आई थी। उससे कोई संबंध न रखने के लिए, और शायद तिरस्कार के कारण, उसने वह कॉलेज छोड़ दिया और दूसरे कॉलेज में दाखिला ले लिया। आप जानते ही होंगे।
श्रोत्री स्तब्ध रह गए। उनके लिए यह कल्पना करना भी असंभव था कि चीनी के कॉलेज बदलने का कारण यह होगा। उन्होंने कहा, 'मुझे इस बारे में बिल्कुल भी पता नहीं था। उसने सरकारी कॉलेज में कोचिंग अच्छी न होने का हवाला देते हुए दूसरे कॉलेज में जाने की अनुमति मांगी थी।'
राजा ने श्रोत्री को सब कुछ बताया। ‘उसने तीन बार गर्भपात कराया। उसने इसे अपने पाप का फल समझा। अंततः, जब उसके बेटे ने भी उसे ठुकरा दिया, तो उसने सारी उम्मीद खो दी। शायद तभी उसने अंत में आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया। मुझे यकीन नहीं है कि वह आएगा। कम से कम आप तो आईं। यह बहुत राहत की बात है।’ यह कहते हुए राजा की आँखों में आँसू भर आए। ‘मैंने आपके साथ अन्याय किया है। अगर मैं आपको जानता होता, और आपके व्यक्तित्व से परिचित होता, तो मैं उससे विवाह नहीं करता। कृपया मुझे क्षमा करें,’ उसने कहा और श्रोत्री के चरणों में गिर पड़ा।
‘ईश्वर की यही इच्छा थी। इसमें तुम्हारी क्या गलती है?’ श्रोत्री ने उन्हें उठाया। राजा कात्यायनी के ऊपर झुके और उनके कान में ज़ोर से बोले, ‘तुम्हारे ससुर श्री श्रोत्री यहाँ हैं, देखो।’ उन्होंने यह बात फिर दोहराई। उनके चेहरे के भाव से पता चल गया कि वह उनकी बात समझ गई हैं। लाख कोशिश करने पर भी वह अपनी आँखें पूरी तरह नहीं खोल पाईं। ‘बैठ जाओ, लेकिन अपने पैर इस पलंग पर रखो,’ राजा ने कहा। श्रोत्री ने

वैसा ही किया। राजा ने कात्यायनी के हाथ पकड़े और उन्हें श्रोत्री के चरणों पर रख दिया। वह समझ गई थीं कि क्या हो रहा है, क्योंकि उनकी आँखों में आँसू थे।
दरवाजे पर एक टैक्सी आकर रुकी। उसकी आवाज सुनकर कमरे के दरवाजे पर खड़ी नागलक्ष्मी दौड़कर देखने लगी। टैक्सी से उतरकर पृथ्वी और चीनी घर में दाखिल हुए। पृथ्वी चीनी को साथ लेकर कमरे में गया। अपने दादाजी को वहाँ देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।
‘आओ बेटा। कम से कम अब तो अपनी माँ की सेवा करो,’ श्रोत्री ने कहा। चीनी पलंग के पास खड़ी थी। श्रोत्री ने कहा, ‘उसके बगल में पलंग पर बैठो और उसका हाथ पकड़ो।’ उसने वैसा ही किया। कात्यायनी की साँसें अब तेज़ चल रही थीं। राजा ने कहा कि उसे करवट बदलते समय जो ज़ोर लगा, उसी वजह से ऐसा हुआ है। श्रोत्री ने अपनी उंगलियों से उसकी पलकें फैलाईं और कहा, ‘नहीं, ज़ोर लगने से नहीं है। वह मर रही है। क्या तुम डॉक्टर को नहीं बुलाओगे?’
राजा ने कहा, 'डॉक्टर को बुलाने का कोई फायदा नहीं। उसकी जीने की कोई इच्छा नहीं है। तीन दिन पहले ही उसने डॉक्टर को इशारा कर दिया था कि वह अब और न आए।'
‘अगर आपके पास गंगा का जल है, तो मुझे अभी दे दीजिए। कोई और शुद्ध जल भी चलेगा,’ श्रोत्री ने कहा। नागलक्ष्मी चांदी के प्याले और चम्मच में अच्छा जल लेकर आईं। ‘चीनी, यह अपनी माता को पिलाओ,’ श्रोत्री ने कहा। चीनी की आँखों में आँसू आ गए। उसके हाथ काँपने लगे। श्रोत्री ने कात्यायनी का मुँह खोलकर रखा। चीनी ने उन्हें एक चम्मच पानी पिलाया। उन्होंने पी लिया।
अगले दस मिनट तक उसकी साँसें भारी-भारी चलती रहीं। फिर धीरे-धीरे सामान्य होने लगीं। अंततः उसकी साँसें शांत हो गईं। उसके जीवन में जो द्वंद्व व्याप्त था और जिसने उसे जीवन भर परेशान किया था, वह अब मृत्यु में परिणत हो गया।

5

राजा लगातार रोने लगा। पृथ्वी और नागलक्ष्मी एक कोने में जाकर रोने लगीं। श्रोत्री ने सबको सांत्वना दी। अंतिम संस्कार का समय निकल चुका था। ऐसा लग रहा था मानो सबने मन ही मन तय कर लिया था कि सुबह तक किसी को भी यह खबर नहीं सुनाएंगे। शव के अंगों को मोड़कर और वहाँ एक चाकू रखकर, श्रोत्री ने राजा का हाथ पकड़ा

और उसे बरामदे में ले जाकर एक कुर्सी पर बैठा दिया। नागलक्ष्मी कमरे के दरवाजे के पीछे बैठी शोक मना रही थी। पृथ्वी रो रहा था। चीनी एक तरफ बैठा गहरी सोच में डूबा हुआ था। हालाँकि उसके चेहरे पर शोक के भाव थे, फिर भी वह रो नहीं रहा था।
राजा को सांत्वना देते हुए, श्रोत्री ने उनका ध्यान शोक से हटाने के लिए उनसे बातचीत शुरू की। उन्होंने सदाशिव राव की मृत्यु के बारे में विस्तार से पूछा। साथ ही, उनके ग्रंथ और उनकी दूसरी पत्नी के बारे में भी। सब कुछ बताने के बाद, राजा ने पूछा, 'आप अभी-अभी आए हैं! आप कहाँ जा रहे थे?' जब श्रोत्री ने बताया कि वे हरिद्वार या बद्री संन्यास लेने जा रहे हैं, तो राजा को विश्वास नहीं हुआ। श्रोत्री ने उन्हें संन्यास के कुछ नियम समझाए। तब तक आधी रात के दो घंटे बीत चुके थे। आँसुओं का आवेग थम गया था और सभी उनकी बातें सुन रहे थे। आगे क्या कहें, यह न जानते हुए, श्रोत्री ने एक सामान्य प्रश्न पूछा, 'आपका जन्मस्थान क्या है?'
‘बेलूर, लेकिन हम सब कुनिगल में अपने चाचा के घर में पले-बढ़े।’
श्रोत्री के मन में एक सवाल उठा। उसने पूछा, 'क्या आपके यहाँ श्रोत्री उपनाम का कोई व्यक्ति है?'
'क्यों?'
‘वे हमारे रिश्तेदार हैं। मुझे पता चला है कि मेरे पिता के भाई किट्टप्पा श्रोत्री लगभग 80 या 90 साल पहले नंजनगुड से पलायन कर गए थे। मुझे नहीं पता कि उनका क्या हुआ।’
‘आपने किट्टप्पा श्रोत्री कहा था,’ राजा ने अपनी याददाश्त खंगालते हुए कहा। ‘मैंने सुना है कि मेरे दादाजी का नाम किट्टप्पा था। वे आसपास के इलाके... नंजनगुड के रहने वाले थे। लेकिन मुझे नहीं पता कि उनका पारिवारिक नाम श्रोत्री था या नहीं।’ कमरे के दरवाजे के पीछे खड़ी नागलक्ष्मी ने बीच में कहा, ‘जी हां, उनका नाम किट्टप्पा श्रोत्री था। मैंने अपने पिता को ऐसा कहते सुना है।’
श्रोत्री असमंजस में पड़ गया। उसने पूछा, 'तुम्हारा गोत्र क्या है?'
‘काश्यप-गोत्र।’
श्रोत्री के मन में अब कोई संदेह नहीं था। वह एकदम स्थिर होकर बैठ गए। नागलक्ष्मी ने कहा, 'किट्टप्पा श्रोत्री के चार बच्चे थे। दूसरे को छोड़कर सभी की कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी। मेरी चाची का विवाह उनसे हुआ था। ये दोनों उनके बच्चे हैं।'
श्रोत्री एक बार फिर अवाक रह गया। उसका मन इस परिवार के साथ अपने रिश्ते पर विचार करने लगा। लेकिन अपनी इस अवस्था में वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था।

अनजाने में ही उसने कहा, 'कितनी बड़ी नादानी मुझसे हुई!'
‘क्यों, क्या हुआ?’ राजा ने पूछा।
'कुछ नहीं, मान लीजिए।'
लेकिन क्या आपने यह नहीं कहा था कि आप अविवेकी थे?
क्या मैंने ऐसा कहा था? चलिए, मैं सब कुछ कह देता हूँ। किट्टप्पा श्रोत्री के परिवार का मेरी सारी संपत्ति पर अधिकार था। मेरे पिता ने धोखे से उन्हें परिवार से निकाल दिया। मुझे इस बात का पता लगभग आठ महीने पहले चला। तब से मैंने उन्हें ढूंढने की हर संभव कोशिश की। लेकिन मुझे कोई सुराग नहीं मिला। यह सोचकर कि मेरे पास ऐसी संपत्ति होने से मेरी बदनामी होगी जिस पर मेरा कोई अधिकार नहीं है, मैंने और
मेरे पोते ने दो हफ्ते पहले घर समेत सारी संपत्ति दान कर दी। अगर मुझे आपके बारे में पता होता, तो मैं इसे आपको हस्तांतरित कर देता।
राजा को श्रोत्री के विशिष्ट व्यक्तित्व के बारे में अपने भाई से पता चला था। उसने कात्यायनी को स्वप्न में भी यही कहते सुना था। लेकिन उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि धर्म के प्रति उसकी चेतना इतनी उच्च कोटि की होगी। एक पल के लिए उसने अपने सामने बैठे व्यक्ति को ध्यान से देखा। उसे एक अजीब सा भय महसूस हुआ। वह चुप रहा।
तब तक कौवों ने भोर की सूचना दे दी थी। श्रोत्री उठीं, बाहर गईं, आकाश की ओर एक नज़र डाली और वापस अंदर आ गईं। 'लगभग 4 बज रहे हैं। हल्की बारिश रुक गई है। आप अपने अगले काम शुरू कर दीजिए। मैं चलती हूँ।'
‘क्या अब आप हम सबको छोड़कर चले जाएंगे? आपने अभी-अभी हमारे इस अनोखे रिश्ते का ऐलान किया है। आप मेरे लिए पिता समान हैं,’ राजा ने कहा।
“हाँ, रिश्ते का आभास हो सकता है। लेकिन संन्यास का मार्ग अपनाने वाले के लिए कोई रिश्ते मायने नहीं रखते। मुझे आपको इस तरह छोड़कर जाने का बहुत दुख है। लेकिन मैंने चार दिनों में हरिद्वार पहुँचने का निश्चय कर लिया है।” उन्होंने अपनी धोती समेटी, थैला बाँस की छड़ी में रखा और जाने लगे। राजा उनके चरणों में प्रणाम करने के लिए उनके पास पहुँचे। “अभी प्रणाम मत कीजिए,” श्रोत्री ने कहा और नागलक्ष्मी की ओर मुड़कर बोले, “मैं चलता हूँ,” और आगे बढ़ गए। चीनी आधी नींद में थी। श्रोत्री मुख्य द्वार से आगे निकल गए। द्वार पर खड़े राजा उन्हें देखते रहे।
श्रोत्री लगभग आधा फर्लांग पैदल चल चुका था। बारिश के कारण बिजली आपूर्ति बाधित हो गई थी और सभी स्ट्रीटलाइटें बंद थीं। वह अंधेरे में सड़क का रंग पहचानने

की कोशिश कर रहा था और रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। उसी क्षण, उसने पीछे से चीनी की आवाज़ सुनी, 'दादाजी!' श्रोत्री ने हिम्मत जुटाई। पास आकर चीनी बोली, 'मैं अब आपके सामने नहीं रोऊँगी। लेकिन मुझे एक बात बताइए।'

‘क्या बात है, बच्चे?’

‘वह मृत महिला मेरी मां है। उसका जीवन अपने आप ही आगे बढ़ा और कहीं जाकर समाप्त हुआ। क्या मुझे उसकी अंतिम संस्कार की रस्में निभानी चाहिए?’

श्रोत्री दो मिनट तक चुपचाप आँखें बंद करके खड़े रहे। फिर उन्होंने कहा, ‘पुत्र, हमें दूसरों के पापों और गुणों का आकलन करने का कोई अधिकार नहीं है। माता-पिता के पापों और गुणों का आकलन करना पाप है। हमारा एकमात्र कर्तव्य अपने दायित्वों का निर्वाह करना है। तुम्हें अपनी माता के अंतिम संस्कार पूरी श्रद्धा और श्रद्धा से करने चाहिए। अपने मामा को बताना कि मैंने ऐसा कहा है। कपिला नदी के किनारे ये संस्कार करना।’

चीनी अपनी जगह पर डटा रहा।

‘अब आप जाइए। आपको अंतिम संस्कार में भी शामिल होना है,’ श्रोत्री ने कहा और आगे बढ़ गईं।

******* समाप्त *******

sjeet

शब्दावली

अग्नि (90): होम और यज्ञ करने के लिए पवित्र अग्नि उठाई गई (दोनों यहाँ सूचीबद्ध हैं)।

अमरकोश (201): एक छंदबद्ध संस्कृत कृति जो संज्ञाओं और विशेषणों का शब्दकोश सह थिसॉरस है।

आरती (20): पवित्र कपूर/बत्ती की लौ जिसे मंत्रों के पाठ के साथ पूजा अनुष्ठानों के भाग के रूप में मूर्ति पर विधिपूर्वक शुद्ध किया जाता है।

Arundhati, the star (219): See Saptarṣi-maṇḍala listed here.

आर्षेय परंपरा (248): प्राचीन ऋषियों (संतों) द्वारा आरंभ की गई परंपरा। आर्षेय में मूल शब्द ऋषि है, जैसा कि ध्वन्यात्मक रूप से स्पष्ट है।

आश्रम: भारतीय पारंपरिक जीवनशैली के अनुसार किसी व्यक्ति के जीवनकाल को चिह्नित करने वाले चार चरण:

ब्रह्मचर्य: विवाह पूर्व की वह अवस्था जब शिक्षा प्राप्त की जाती है।

गृहस्थ: विवाहित जीवन। एक पूर्ण परिवार के मुखिया के रूप में, गृहस्थ ब्रह्मचारियों (ऊपर 1) और संन्यासियों (नीचे 4) को भोजन (यहाँ सूचीबद्ध भिक्षु देखें) और अन्य सुविधाएँ प्रदान करता है।

वानप्रस्थ: वृद्धावस्था में वनवास।

संन्यास: सांसारिक मार्गों का त्याग और एकांतवासी के रूप में जीवन व्यतीत करना।

अष्टांग योग (435): ऋषि पतंजलि द्वारा अपने पतंजलि-योगसूत्र में प्रतिपादित आठ गुना योग प्रणाली: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि।

आयुर्वेद (11): कल्याण का पारंपरिक भारतीय विज्ञान।

भगवद्गीता (12): भारतीय परंपरा का सबसे पवित्र और लोकप्रिय दार्शनिक ग्रंथ। महान महाकाव्य महाभारत का एक भाग, यह युद्ध के मैदान में गुरु कृष्ण और शिष्य अर्जुन के बीच संवाद है।

भस्म (224): होम/यज्ञ के गड्ढे से एकत्रित पवित्र राख, जिसका उपयोग माथे और भुजाओं तथा धड़ के कुछ भागों पर लेप लगाने के लिए किया जाता है। यह एक शैव प्रथा है।

भिक्षु (495): ब्रह्मचारियों और संन्यासियों को अर्पित किया जाने वाला प्रसाद (यहाँ सूचीबद्ध आश्रम के अंतर्गत देखें)। ये दोनों वर्ग तपस्या का पालन करने के लिए दीक्षित हैं, और उन्हें स्वयं भोजन नहीं करना चाहिए।

बृहदारण्यक (495): प्रसिद्ध दस उपनिषदों में से एक, यह सबसे लंबा उपनिषद है, और इस पर आदि-शंकराचार्य सहित कई ऋषियों और विद्वानों द्वारा टिप्पणी की गई है।

चंद्रवंश (417): विष्णु-पुराण और भागवत-पुराण सहित विभिन्न पुराणों में वर्णित प्रसिद्ध चंद्रवंश।

चूडाकर्म (241): संस्कार के अंतर्गत 8वां यहाँ सूचीबद्ध है।

धर्म (17): चार पुरुषार्थों (जीवन के प्राथमिक उद्देश्यों) में से एक। यह शब्द गैर-भारतीय भाषाओं में अनुवाद योग्य नहीं है। इसे मोटे तौर पर ब्रह्मांडीय नैतिकता या जीवन के ब्रह्मांडीय आधार के रूप में समझाया जा सकता है।

धर्मचक्र-मुद्रा (42): भगवान बुद्ध की मुद्राओं में से एक।

धर्मराय (455): ऋषि भगवान वेदव्यास द्वारा रचित महाकाव्य महाभारत में पांच पांडव भाई-बहनों में सबसे बड़े, धर्मराय को धार्मिकता, सत्य, ईमानदारी, विनम्रता, सहिष्णुता और अहिंसा के लिए जाना जाता है।

धर्मशास्त्र (11): एक ऐसा ज्ञान जो धर्म (यहाँ सूचीबद्ध) और उसके विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करता है।

धोती (20): एक हिंदी शब्द—संस्कृत शब्द धोत्र (जिसे वस्त्र भी कहा जाता है) का ध्वन्यात्मक रूप है, जो बदले में धौत (धुला हुआ) शब्द से व्युत्पन्न है। यह लगभग चार गज लंबा बिना सिला हुआ कपड़ा होता है, जिसे कमर के चारों ओर कई डिज़ाइनों में लपेटा जाता है और यह पैरों तक जाता है।

ध्रुव, तारा (219): ध्रुव तारा।

Gāyatri-mantra (224): See Upanayana, 11th under Saṃskāra listed here.

गोभिला-स्मृति (443): ऋषि गोभिला द्वारा रचित, यह अठारह स्मृतियों में से एक है। स्मृतियाँ धर्मशास्त्र (यहाँ सूचीबद्ध) ग्रंथ हैं, जो बदले में चौदह विद्या-स्थानों में से एक हैं, जो पारंपरिक भारतीय अध्ययन संग्रह का व्यापक हिस्सा हैं।

गृहस्थ (205): यहाँ सूचीबद्ध आश्रम के अंतर्गत दूसरा।

गृहस्थधर्म (115): गृहस्थ के लिए शर्तें (यहाँ सूचीबद्ध) ताकि वह स्वयं, अपने आश्रितों और समाज की समग्र रूप से देखभाल कर सके।

गृहस्थाश्रम (205): जिसे गरहस्थ्य भी कहा जाता है, यह चार आश्रमों (यहाँ सूचीबद्ध) में से महत्वपूर्ण है, और अन्य तीन को सहारा देता है।

होमा (323): दिव्य अग्नि में वांछित देवताओं को आहुति (जिन्हें हवी कहा जाता है) अर्पित करके दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने का एक अनुष्ठान (यहाँ सूचीबद्ध)।

इडली (293): चावल और काले चने के घोल से बना एक लोकप्रिय दक्षिण भारतीय भाप में पकाया जाने वाला नाश्ता। इसका इतिहास एक हजार साल से भी अधिक पुराना है।

कलियुग (50): भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह चार युगों में से अंतिम युग है। इससे पहले के तीन युग कृतयुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग थे। कलियुग को बाकी युगों की तुलना में सबसे बुरा युग माना जाता है।

कामण्डल (495): हैंडल और टोंटी वाला एक छोटा घड़ा, जिसमें पवित्र जल संग्रहित होता है। यह ऋषियों की मूलभूत वस्तुओं में से एक है।

ललितासहस्रनाम (450): सर्वोच्च मातृदेवी ललिता की स्तुति में लिखा गया एक भजन। यह ब्रह्मांड-पुराण का एक भाग है और ऋषि अगस्त्य और भगवान हयग्रीव के बीच संवाद है।

मीमांस (372): पारंपरिक भारतीय शिक्षा के छह रूढ़िवादी स्कूलों में से एक। यह सामान्य रूप से वैदिक प्रथाओं पर, और विशेष रूप से अनुष्ठानों, उनके विवरणों और उनके लाभों पर केंद्रित है।

मृच्छकटिकम् (33): महान नाटककार शूद्रक द्वारा रचित एक नाटक, एक राजा जिसके बारे में माना जाता है कि वह सौ वर्ष तक जीवित रहा।

वर्ष का नाम (444): कई पुराणों (यहाँ सूचीबद्ध) में साठ चंद्र वर्षों (संवत्सर) के नाम सूचीबद्ध हैं। माना जाता है कि वे महान ऋषि नारद के साठ पुत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

नवरात्र (189): नौ दिवसीय क्षत्र (यहाँ सूचीबद्ध वर्ण के अंतर्गत देखें) उत्सव जहाँ देवताओं के साथ-साथ युद्ध शस्त्र, रथ, उपकरण और वाहनों की पूजा की जाती है।

पल्लू (44): साड़ी का सजावटी किनारा जो बाकी हिस्सा पहनने के बाद कंधे पर लटका रहता है। यह एक हिंदी शब्द है।

पवित्र (460): हाल्फ़ा घास से बना अनामिका के लिए उभरा हुआ घेरा, अनुष्ठानों के दौरान पहना जाता है।

पुराण (11): संस्कृत साहित्य का एक बहुत बड़ा हिस्सा बनाते हैं। परंपरागत रूप से यह माना जाता है कि सभी पुराणों की रचना वेदव्यास ने की है, जो महाकाव्य महाभारत के रचयिता हैं। पुराण चौदह विद्या-स्थानों में से एक हैं, जो पारंपरिक भारतीय अध्ययन संग्रह का व्यापक हिस्सा हैं।

रंगोली (20): रंगवल्ली शब्द से व्युत्पन्न, यह एक मंच (रंग) पर खींची गई आकर्षक लता-जैसी (वल्ली) मुक्तहस्त आकृतियाँ हैं। इसे घरों के प्रांगण, पूजा कक्ष आदि में भी लगाया जाता है। इसमें चावल का आटा, सफेद ग्रेनाइट पाउडर, रंगीन पाउडर आदि का उपयोग किया जाता है।

षड्ज (20): भारतीय शास्त्रीय संगीत में सात स्वरों में से प्रमुख स्वर है, और इसे स ध्वनि से जाना जाता है। शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है: अन्य छह (षड्ज) स्वर यहाँ से उत्पन्न (ज) होते हैं।

संस्कार: गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के जीवनकाल में होने वाले सोलह अनुष्ठान:

गर्भाधान: गर्भाधान
पुंसवना: पुरुष प्रधान मुद्दा उत्पन्न करना
सीमान्तोन्नयन: बालों की मांग
जातकर्म: जन्म अनुष्ठान
नामकरण: नामकरण
निष्क्रमण: घर के दरवाजे की चौखट पर पहला कदम रखना
अन्नप्राशन: पका हुआ भोजन का पहला सेवन
चूड़ाकर्म: पुरुष संतान के तीसरे वर्ष में, जब उसके दांत निकल आते हैं और वह सही ढंग से शब्द बोल सकता है, तब सिर मुंडवाने की रस्म। सिर के पिछले हिस्से में बालों का एक छोटा गुच्छा रखा जाता है।
कर्णवेध: कान के निचले हिस्से को छेदना
विद्यारंभ: अक्षर सीखना
उपनयन: उप = निकट, नयन = मार्गदर्शित करना, अर्थात् बालक को गुरु/जीवन मूल्यों की ओर ले जाना। इसे ब्रह्मोपदेश भी कहा जाता है। ब्रह्म का अर्थ है वेद और उपदेश का अर्थ है प्रदान करना। यह वह अवसर है जब बालक को गुरु की शरण में शिक्षा के लिए लाया जाता है। इस अवसर पर, दीक्षा प्राप्त बालक को एक औपचारिक वस्त्र दिया जाता है, जिसे उसे दीक्षा के दौरान धारण करना होता है। इस वस्त्र में यज्ञोपवीत (बाएँ कंधे से लटकता हुआ और दाहिनी ओर बगल से होकर गुजरता हुआ धागों का एक गोलाकार समूह, जो तकनीकी रूप से ऊपरी वस्त्र का काम करता है) शामिल होता है। इसके बाद, उसे भिक्षा (यहाँ सूचीबद्ध) पर जीवन व्यतीत करना होता है। इस दीक्षा की शुरुआत में, व्यक्ति को संध्यावंदन करना चाहिए, अर्थात् प्रत्येक दिन के दो ब्रह्मांडीय समयों (संध्या) की पूजा (वंदन) करनी चाहिए, अर्थात् भोर और संध्या। वह प्रथा के अनुसार गायत्री मंत्र (एक दोहा) का निश्चित संख्या में पाठ करेगा। उसका पाठ्यक्रम विस्तृत रूप से निर्धारित है। वह बारह वर्षों के अध्ययन के बाद स्नातक होगा (नीचे चौदहवें अध्याय में समावर्तन देखें)।

वेदारंभ: वैदिक अध्ययन का प्रारंभ
केशांत: दाढ़ी मुंडवाना
समावर्तन: स्नातक स्तर की उपाधि, अर्थात् गुरुकुल में बारह वर्षों की शिक्षा का समापन। वर्तमान में वे एक स्नातक हैं।
विवाह: शादी

अंत्येष्ठी: मृत्यु के समय किए जाने वाले दाह संस्कार और अन्य अनुष्ठान। अंतिम संस्कार की चिता जलाने के लिए अग्नि उन अंगारों से ली जाती है जो विवाह के दिन विधिपूर्वक उन्हें दिए गए थे और जिन्हें वे जीवन भर जलती हुई अवस्था में संरक्षित रखते थे। दाह संस्कार के बाद बारह दिनों का शोक (सूतक) मनाया जाता है, जिसके दौरान समय-समय पर विभिन्न अनुष्ठान किए जाते हैं।

Sandhyāvandana (14): See Upanayana, 11th under Saṃskāra listed here.

संन्यास (322): यहाँ सूचीबद्ध आश्रम के अंतर्गत चौथा।

सांख्यकारिका (222): सांख्य दर्शन प्रणाली के प्रमुख ग्रंथों में से एक। यह आर्य नामक छंद में अस्सी से कम श्लोकों का एक छोटा ग्रंथ है, और इसे ईश्वरकृष्ण ने लिखा है।

सप्तर्षि-मंडल (219): उर्स मेजर, जिसमें माना जाता है कि सात ऋषि वसिष्ठ, मरीचि, पुलस्त्य, पुलहा, अत्रि, आंगिरस और क्रतु विलीन हैं। इस नक्षत्र में अरुंधति नक्षत्र वसिष्ठ नक्षत्र के निकट स्थित है (वे एक विवाहित जोड़ा हैं)।

शास्त्र (10): ज्ञान का वह संग्रह जिसमें कुछ रहस्योद्घाटन (शंसन) और कुछ नियम (शासन) होते हैं। व्यापक अर्थ में, शास्त्र विज्ञान का कोई भी व्यवस्थित संग्रह है। पारंपरिक अर्थ में, यह शास्त्र ग्रंथ हैं।

पाप और पुण्य (315): पाप के लिए संस्कृत शब्द 'पाप' है। अंग्रेजी में पुण्य के लिए कोई शब्द नहीं है, जो पाप का ठीक विपरीत है। जिस प्रकार व्यक्ति बुरे कर्मों से पाप कमाता है, उसी प्रकार वह अच्छे कर्मों से पुण्य कमाता है। इसलिए स्वाभाविक रूप से पुण्य के लिए भी सद्गुण शब्द का प्रयोग किया जाता है।

शिल्पशास्त्र (36): मूर्तिकला का विज्ञान, यह चार उपवेदों (सहायक वेदों) में से एक है।

श्लोक (300): 32 अक्षरों/सिलेबल्स का एक सबसे लोकप्रिय और बुनियादी प्रकार का छंद। लोग इस शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से किसी भी छंद में नैतिक/भक्तिपूर्ण संस्कृत श्लोकों के लिए करते हैं।
सूर्यवंश (417): एक वंश (वंश) जिसका नेतृत्व सूर्य (सूर्य) करता है। इस वंश का विवरण विभिन्न पुराणों (विष्णु, भागवत और मत्स्य सहित) में उपलब्ध है।
तर्क (372): तर्क; सोचने का व्यवस्थित तरीका। इसे इतना गहन माना जाता था कि इसे भारतीय दर्शन के छह स्कूलों में स्थान दिया गया था।
तीर्थ (20): इस शब्द के साथ अनेक उपसर्ग और प्रत्यय जुड़ते हैं, जिससे इसके अनेक अर्थ निकलते हैं: नदियाँ, पर्वत, तीर्थस्थल, मंदिर, ऋषि, धर्म सम्मेलन आदि। सामान्यतः तीर्थ का अर्थ है 'जो शुद्ध करता है'। इस उपन्यास में इसका प्रयोग इसी अर्थ में किया गया है, और यह पूजा/अनुष्ठानों के बाद भक्तों की हथेलियों में दिया जाने वाला पवित्र जल का एक घूंट है।
Upanayana (261): 11th under Saṃskāra listed here.
वर्ण (496): वर्ण का अर्थ है सामाजिक व्यवस्था, और ये चार प्रकार की होती हैं: ब्रह्मा, क्षत्र, वैश्य और शूद्र। वैदिक साहित्य में ही इनके संदर्भ मिलते हैं। वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति के अनुसार, वैदिक काल में व्यक्ति अपनी पसंद के वर्ण में आस्था रख सकता था। उत्तर-वैदिक काल में वर्णों का विस्तार हुआ, वे जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गए और जन्म से ही निर्धारित होने लगे।
यज्ञ (457): अग्नि (यहाँ सूचीबद्ध) के माध्यम से अर्पण द्वारा देवताओं की स्तुति और उन्हें प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जाने वाला एक विस्तृत अनुष्ठान। अधिकांश यज्ञ तीन गड्ढों में उत्पन्न अग्नि में किए जाते हैं।

Yajñopavīta (61): See Upanayana, 11th under Saṃskāra listed here.

आभार

एस.एल. भैराप्पा जैसे लेखकों की रचनाओं, महाकाव्यों, क्लासिक्स और साहित्यिक पहलुओं के दार्शनिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पहलुओं पर मार्गदर्शन

के लिए विद्वान डॉ. आर. गणेश के सिवा कोई और नहीं है, जो स्वयं एक दार्शनिक, इतिहासकार, कलाकार और विपुल साहित्यकार हैं। इस उपन्यास में व्यापक रूप से प्रयुक्त भारतीय दर्शन, परंपरा, इतिहास और संस्कृति की अवधारणाओं और शब्दावलियों को स्पष्ट करने में मैंने उनकी सहायता ली है (अनुवादक की टिप्पणी देखें)। उनका पर्याप्त धन्यवाद करना मेरे बस की बात नहीं है।

इस उपन्यास के एक महत्वपूर्ण अनुच्छेद के अनुवाद से मैं संतुष्ट नहीं था, जिसमें इतिहास और साहित्य के बीच संबंध का वर्णन था। मैंने अपने मित्र डॉ. जी.एल. कृष्णा से, जो एक चिकित्सक—विशेष रूप से चिकित्सा वैज्ञानिक—हैं और दर्शन एवं साहित्य के ज्ञाता हैं, इसे अनुवाद करने का अनुरोध किया ताकि मैं इसे ठीक से समझ सकूँ। उनकी कृपा से मेरी समझ स्पष्ट हुई और मैं इसे संतोषजनक ढंग से व्यक्त कर सका। उन्होंने उपन्यास में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों से संबंधित शब्दों और वाक्यांशों के अंग्रेजी अर्थों को समझने में भी मेरी सहायता की है। मैं उनका बहुत आभारी हूँ।

उपन्यास में प्रयुक्त संस्कृत श्लोकों को समझने के लिए मैंने अपने एक युवा विद्वान मित्र श्री बी.एन. शशिकिरण से सहायता ली है। इससे मुझे उनका प्रभावी अनुवाद करने में काफी मदद मिली है। मैं उनका बहुत आभारी हूँ।

भाषाविज्ञान के प्रति मेरी रुचि, जिसका परिणाम इस पुस्तक (और इससे पहले ब्रिंक की पुस्तक) के अनुवाद के रूप में सामने आया, संभवतः मेरे बालवाड़ी काल में मेरी अंग्रेजी से अनभिज्ञ माता राजलक्ष्मी द्वारा जागृत हुई थी, जिन्होंने लगन से मुझे अंग्रेजी वर्णमाला के गृहकार्य में चित्रात्मक सहायता प्रदान की थी। मैं उनके चरणों में नमन करता हूँ।

डॉ. एस.एल. भैराप्पा स्वयं को दर्शनशास्त्र का विद्यार्थी और उपन्यासकार मानते हैं। दर्शनशास्त्र के अध्ययन के दौरान वे इस मुकाम पर पहुंचे जहां उन्होंने तय किया कि उनका अगला मार्ग रचनात्मक साहित्य का लेखन होगा। उन्होंने कई उपन्यास लिखे हैं, जिन्हें खूब सराहा गया है और कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवादित किया गया है।

मानव विज्ञान (विशेषकर भारत का सांस्कृतिक इतिहास) और दर्शनशास्त्र के उनके ज्ञान से उन्हें जीवन के सार को समझने की शक्ति मिलती है, जिसका वे साक्षी हैं। जीवन के प्रति उनकी गहरी समझ उनके व्यापक यात्रा और अध्ययन से स्पष्ट होती है। जीवन को समझने की इस प्रक्रिया में, उनके मन में अनेक विचार उत्पन्न होते हैं, जो आगे चलकर एक पूर्ण उपन्यास का रूप ले लेते हैं। उनकी रचना 'नानेके बरयुत्तेने' (मैं क्यों लिखता हूँ) में इन विचारों का विस्तृत वर्णन है।

उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसरशिप, पद्म श्री और पद्म भूषण प्रमुख हैं। वे मैसूर विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुए और मैसूर में रहते हैं।

आर. रंगनाथ प्रसाद एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक में कार्यरत थे। उन्होंने अपने करियर के मध्य में ही स्वेच्छा से इस्तीफा दे दिया और अनुवाद (अंग्रेजी <> कन्नड़ <> हिंदी) में रुचि लेने लगे। समय के साथ, उन्होंने डॉ. एस.एल. भैराप्पा और डॉ. आर. गणेश जैसे विद्वानों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए संपर्क किया। वे साहित्यिक अध्ययन मंडलियों में भाग लेते हैं जहाँ शास्त्रीय संस्कृत और कन्नड़ साहित्य का अध्ययन किया जाता है। डॉ. आर. गणेश द्वारा छंदबद्ध रचना का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने लगभग एक हजार छंदबद्ध श्लोक लिखे हैं और अवधनम नामक साहित्यिक प्रदर्शन कला में प्रचारक के रूप में भाग लेते हैं।
एस.एल. भैराप्पा के एक अन्य उपन्यास, आंचू, के उनके पहले के अंग्रेजी अनुवाद को ब्रिंक (नियोगी बुक्स, 2022) शीर्षक से प्रकाशित किया गया है।

इसी लेखक के अन्य उपन्यास, जिनका अंग्रेजी अनुवाद नियोगी बुक्स द्वारा प्रकाशित किया गया है।

जब तक
साक्षी: साक्षी
तंतु: जीवन का करघा
कगार